दक्खिनी हिन्दी-काव्यधारा

दक्खिनी हिन्दी-काव्यधारा

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

पटना

प्रकाशक
बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना – ३

शकाब्द १८८०; विक्रमाब्द २०१५; खृष्टाब्द १९५९

मूल्य सजिल्द ६·००

मुद्रक
सम्मेलन मुद्रणालय
प्रयाग

वक्तव्य

आजकल अनेक क्षेत्रों में अनुसन्धान की प्रवृत्ति बढ़ रही है। फलस्वरूप कितने ही पुराने तथ्य बदल रहे हैं। बहुत-सी पुरानी परम्पराओं की जगह नई परम्पराएँ स्थापित हो रही हैं। यह कोई अनहोनी बात नहीं है। नई-नई खोजों से पूर्व-निश्चित सिद्धान्त अथवा इतिहास का रूप प्रायः परिवर्तित होता रहता है। पहले भी ऐसा हुआ है और आगे भी यह होता रहेगा। परिवर्तनशीलता का यह सत्य इस पुस्तक में प्रत्यक्ष मुखर है।

इस पुस्तक के विचारशील पाठक देखेंगे कि खड़ी बोली के आदिकवि कहे जानेवाले अमीर खुसरो के सम्बन्ध में जो मान्यता अबतक चली आ रही है, उसमें भी अब परिवर्तन की अपेक्षा होगी। विद्वद्वर राहुलजी के अन्वेषणों से, पहले की बहुतेरी धारणाएँ बदल चुकी हैं। उनके अनुसंधानों ने हिन्दी साहित्य को भी प्रभावित किया है। उसके इतिहास में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। पहले वीरगाथाकाल से ही उसके इतिहास का आरम्भ माना जाता था। किन्तु उनकी खोज से उस काल के चार-पाँच सौ वर्ष पहले का सिद्धकाल माना जाने लगा। इस प्रकार हिन्दी-साहित्य के इतिहास का आरम्भिक समय बारहवीं शताब्दी के बदले सातवीं-आठवीं शताब्दी निश्चित हो गया।

श्री राहुलजी ने विभिन्न रुचि के हिन्दी पाठकों के लिए प्रचुर साहित्य रचा है। बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् से उनके और भी दो बड़े ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं—बौद्ध सिद्ध सरहपाद का 'दोहा-कोश' और दो खण्डों में 'मध्य एसिया का इतिहास'। इन दोनों गवेषणापूर्ण ग्रन्थों से हिन्दी साहित्य के बहुत बड़े अभाव की पूर्ति हुई है। दूसरे इतिहास-ग्रन्थ के लिए भारत-सरकार ने ग्रन्थकार को पाँच हजार रुपये का पुरस्कार भी दिया है, क्योंकि गत वर्ष के हिन्दी प्रकाशनों में वही सर्वोत्तम ग्रन्थ समझा गया।

आशा है कि भाषा-तत्त्व-शोधकों और साहित्यिक अनुसन्धायकों के लिए यह पुस्तक विशेष उपयोगी प्रमाणित होगी और इस विषय में आगे भी खोज करने की प्रेरणा देगी।

शिवपूजनसहाय
(संचालक)

महाशिवरात्रि, शकाब्द १८८०

दो-शब्द

'दक्खिनी हिन्दी-काव्यधारा' को आज प्रकाशित होते देखते बड़ी प्रसन्नता होती है। सात-आठ वर्ष पहले यह संग्रह तैयार हो गया था, और इसके कुछ अंश पत्र-पत्रिकाओं में निकले भी। ऐसी काव्य-धाराओं की बड़ी आवश्यकता थी। यद्यपि अपभ्रंश और दक्खिनी हिन्दी को छोड़ बाकी को मैंने लिखने का दायित्व नहीं लिया था। 'संस्कृत काव्यधारा' भी छप गई, जिसको इसके बहुत पीछे लिखना शुरू किया था।

दक्खिनी हिन्दी-साहित्य की ऐसी कड़ी है, जिसको भुलाया नहीं जा सकता। खुसरो को खड़ी (कौरवी) हिन्दी का प्रथम कवि बतलाया जाता है, पर इसमें सन्देह है। खुसरो के समय अर्थात् १३वीं सदी का अन्त अपभ्रंश और आधुनिक भाषाओं का सन्धि-काल था। उस समय प्राकृत तत्सम शब्दों का प्रयोग ज्यादा होता था। खुसरो के समकालीन फारसी इतिहासकार राजपूत के लिए राउत शब्द का प्रयोग करते हैं, जो स्पष्ट राउत का ही अरबी लिपि द्वारा भ्रष्ट लेख है। ऐसे शब्दों का खुसरो की कविता में अभाव है। दूसरे, खुसरो की कविताओं का कोई भी समकालीन या उससे तीन-चार सौ वर्ष बाद के हस्तलेख नहीं मिलते। इस प्रकार खड़ी हिन्दी के सर्वप्रथम कवि यही दक्खिनी कवि थे। एक ओर उन्होंने बोलचाल की कौरवी को साहित्यिक भाषा का रूप दिया, तो दूसरी तरफ उनकी कृतियों ने उर्दू कविता का प्रारम्भ किया। हमारी हिन्दी उर्दू की, विशेष तौर से गद्य की ऋणी है। दिल्ली के राज्यपालों, सेनापतियों और दूसरे शासकों के साथ कौरवी भारत के भिन्न-भिन्न भागों में पहुँची है, हाँ साधारण बोलचाल के लिए ही, राजकीय कार्य या साहित्य के लिए नहीं। वह काम तो फारसी सँभाले हुई थी। कुरू के अज्ञातप्राय जनपद की दिल्ली को मुस्लिम शासकों ने अपनी और भारत की राजधानी बनाया। इस प्रकार ६ शताब्दियों के कन्नौज के महत्व को मिटा दिया। उपनिषद् और ब्राह्मणकाल में कुरु भारत का सबसे बड़ा सांस्कृतिक केन्द्र था, पर प्रायः अठारह-उन्नीस शताब्दियों से वह अपने महत्व को खो चुका था। दिल्ली के कारण उसका भाग्य लौटा। और आज उसकी भाषा हमारे समस्त देश की सम्मिलित भाषा बन गई।

हिन्दी के साहित्यिक विकास में दक्खिनी हिन्दी और उर्दू का बहुत बड़ा हाथ है। उर्दू को बहुत से लोग हिन्दी का प्रतिपक्षी समझते हैं, जो गलत है। हम हिन्दीवाले उसे हिन्दी की एक शैली मानते हैं। जो विरोध है, वह केवल उसकी अरबी लिपि के कारण ही। वह समय दूर नहीं है, जब उर्दू का समस्त श्रेष्ठ साहित्य नागरी अक्षरों में आकर सबके लिए सुलभ हो जायेगा। कौरवी लोकभाषा से व्यवधान करने के लिए उर्दू ने जो विधि-निषेध बनाये, हिन्दी ने उसे स्वीकार कर लिया। कौरवी में 'आवै है' का प्रयोग आज भी होता है, उर्दू ने 'आता है' कर दिया, तो हिन्दी भी इस लक्ष्मण-रेखा के बाहर जाने की शक्ति नहीं रखती।

भूमिका में लिखी जानेवाली बातों को आगे जहाँ-तहाँ मैंने कहा है, इसलिए यहाँ अधिक कहने की आवश्यकता नहीं रह गई। दक्खिनी काव्य के और भी संग्रह निकले हैं, जिनमें एक हैदराबाद से थोड़े ही दिन पहले निकला है, और बहुत अच्छा है। यदि इन संग्रहों को सात-आठ साल पहले मैंने देखा होता, तो शायद इस कार्य में हाथ न लगाता।

यह संग्रह शायद यों ही कीड़ों के खाने के लिए पड़ा रहता, यदि इसे बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् ने न स्वीकार किया होता, इसलिए मैं परिषद् का कृतज्ञ हूँ।

मसूरी
३-६-५८

—राहुल सांकृत्यायन

कवि-सूची

कवि	काल	पृष्ठ

३: उत्तरकाल (१६५७-१८४० ई०)

भाग १

आदिकाल (१६७०–१८४० ई०)

§१. ख्वाजा बंदानेवाज (१३४३ ई०)

इनका मूल नाम सैयद मुहम्मद हुसैनी था। दक्षिण भारत के यह ख्वाजा मुईउद्दीन चिश्ती (अजमेर) हैं। आमतौर से यह ख्वाजा बंदानेवाज (स्वामी भक्तवत्सल) अथवा लम्बे केश रखने से ख्वाजा बंदानेवाज गेसू-दराज़ के नाम से ही प्रसिद्ध हैं। इनके पिता सैयद यूसुफ शाह एक प्रसिद्ध संत थे, जो दिल्ली के प्रसिद्ध मुस्लिम संत ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया के खलीफा (उत्तराधिकारी) बुरहानुद्दीन गरीब के साथ दक्खिन आये। बंदानेवाज १३१८ के आसपास दिल्ली में पैदा हुए, और अपने पिता के साथ शैशवावस्था में दक्खिन गये। पिता पाँच वर्ष का शिशु छोड़ कर मर गये। उनकी कब्र देवगिरि (दौलताबाद) के पास खुल्दाबाद में आज भी पवित्र मानी जाती है। [खुल्दाबाद (स्वर्गनगरी) में ही पीछे औरंगजेब भी दफन किया गया।] पिता के मरने पर बंदानेवाज अपनी माँ के साथ दिल्ली लौट गये, जहाँ ख्वाजा नसीरुद्दीन चिराग-दिल्ली के शिष्य तथा मरने पर उनके गद्दीनशीन हुए। अपनी विद्वत्ता और संतपन के कारण दिल्ली में इनकी काफी प्रतिष्ठा थी। अस्सी वर्ष के थे, जब मास्को की होली जलानेवाले तैमूरलंग ने १३९८ में दिल्ली में ध्वंस-लीला मचाई। उजड़े दयार को छोड़कर वृद्ध बंदानेवाज सपरिवार गुजरात आदि होते दक्खिन (दौलताबाद) आये। इससे आधी शताब्दी पहिले (१३४७ ई०) हसन गंगू अलाउद्दीन हसन बहमन शाह ने बहमनी राज्य स्थापित किया था। हसन के पोते तथा आठवें उत्तराधिकारी फीरोजशाह (१३९७–१४२२) ने अपने दादा द्वारा स्थापित राजधानी गुलबर्गा में ख्वाजा को बड़े सम्मान के साथ बुलाया, जहाँ ही १०५ वर्ष की दीर्घ आयु (१४२३ ई०) में इनका देहान्त हुआ।

ख्वाजा ने फारसी में कई पुस्तकें लिखी हैं। उनकी निम्न पुस्तकें दक्खिनी हिन्दी में हैं—

१. चक्कीनामा (पद्य)
२. मेराजनामा (गद्य)
३. से: पारा (गद्य)

कविता के नमूने हैं—

देखो वाजिद[1] तनकी चक्की। पीड चातुर होके सक्की[2]।।
सौकन इब्लिस[3] खिंच खिंच थक्की। के या बिस्मिल्ला अल्ला हो[4]।।

---

१. उचित, विहित, २. सखी, ३. शैतान, ४. भगवान्के नामके साथ, हे भगवान्!

अलिफ[1] अल्ला उसका दिसता । म्याने[2] मुहम्मद होकर बसता ।।
पंछी तलब[3] योंकू दिसता । के या बिस्मिल्ला ०।।
बंदानेवाज बंदा हुसेनी[4] । सो बंदगी[5] में रहते
के या बिस्मिल्ला० ।।*

—चक्कीनामा

और गद्य के नमूने*—

(१)

नवी कहे[6] तकहीक खुदा[7] के म्याने सत्तर हजार पर्दे उजियाले[8] के हों[9] अंधोरे के। अगर उसमें ते एक पर्दा उठ जावे, तो उसकी आंचते मैं जलूं। होर एक वक्त ऐसा होता है, समझो और देखो बेपर्वा अंधेरेके उजियालेके आरिफान[10] पर है। वले[11] वासिलान[12] पर पर्दे नूरानी[13] व बेवासिलान[14] का सफा पर्दा होता है। सो मुहम्मद का नूर, ऐ अज़ीज़[15] अव्वल[16] खूबियत[17] को पर्दा। सिवाय तन-जमाली[18] जिस्म[19] के पर्दे कूं अंपडे[20] बाज[21], उस जमाल उलूहियत[22] के पर्दे मुम्किनुल्-वजूद[23] कूं अंपड सकूं। उलूहियत के पर्दे अंपडें, आरिफुल्वज्द[24] कूं अंपड सकें। इस सहुल्कुदस[25] के पर्दे कूं अंपडे बाज उस किब्रियाई[26] के पर्दे कूं उजियाले में तारे उचक कर नहीं दिसतें। यों हो दोनों आलम[27] कूं यों आफताब होकर उसे मालूम हो गया।

—मेराजनामा

(२)

सवाल—जाती ईमान[28] कौन सा और सिफाती[29] ईमान[30] कौन ?

जवाब—अखंड हाल साबिती[31] है, सो जाती ईमान वह है। साबिती आती और जाती है, सो सिफ़ाती ईमान।

सवाल—ईमान के झाडाँ क्या? और ईमान के डाल्याँ क्या? और ईमान के बात और ईमान का वतन[32] क्या? और ईमान का बीज क्या? और ईमान का पोस्त[33] क्या? और ईमान का सिर क्या? और ईमान का जीव क्या?

---

१. अरबी का प्रथम अक्षर, २. बीच में, ३. इच्छा, लोभ, ४. बंदानेवाज (कवि), ५. भक्ति, सेवा।

* (पृष्ठ १९–२० डा० सैयद मुहीउद्दीन कादिरी ज़ोर) के आधार पर ।

*उर्दू शहपारे (पृष्ठ ३१९–२०)

६. पैगंबर मुहम्मद, ७ भगवान् की खोज, ८. प्रकाश, ९. और (कौरवी), १०. ज्ञानी लोग, ११. किन्तु, १२. मुक्त, भगवान्‌को प्राप्त, १३. प्रकाशमान, १४. भगवान्‌को न प्राप्त, १५. प्यारे, १६. प्रथम, १७. सौन्दर्य, अच्छाई, १८. प्रकाशमान शरीर, १९. शरीर, २०. पहुँचे, २१. बिना, २२. ईश्वरत्व का सौन्दर्य, २३. जिसका अस्तित्व संभव हो, २४. जिसका ज्ञान होना संभव हो, २५. पवित्र आत्मा, २६. महत्ता, २७. जगह, स्थान, २८. व्यक्ति-सम्बन्धी श्रद्धा, २९. गुण-सम्बन्धी श्रद्धा, ३०. श्रद्धा, ३१. पक्कापन, ३२. घर, स्वदेश, ३३. चमड़ा।

जवाब—ईमानकी जीव कुरान। ईमानकी जड़ तोबा[1]। ईमानकी डाल्यां सो बंदगी[2]। ईमानकी बात परहेजगारी[3]। ईमानका तुख्म[4] सो इल्म[5]। ईमानका पोस्त सो शर्म[6]। ईमानका वतन सो मोमिन[7] का दिल है।*

—शह्पारे

§२. शाह् मीराँ जी (मृ० १४९६)

ख्वाजा बंदानेवाज के द्वितीय उत्तराधिकारी (खलीफा) ख्वाजा कमालुद्दीन बयाबानी के शिष्य शाह् मीरां जी भी दक्खिन के बड़े संतों में हैं। इन्हें शम्शुल्-उश्शाक (प्रेमियों का सूर्य, भक्त-सूर्य) कहा जाता है। वह कोरे भक्त ही नहीं, बल्कि अच्छे विद्वान् भी थे। इन्होंने मदीना में बारह वर्ष बिताये थे, जहाँ से लौटने पर बयाबानी के शिष्य हो बीजापुर के बाहर रहने लगे। १४९६ (९०५ हि०) में मृत्यु के बाद बीजापुर के पास शाह्पुर में इनकी समाधि बनाई गई, जहाँ हर साल उर्स लगता है। इनकी कुछ पुस्तकें हैं—

१. खुशनामा (पद्य)
२. खुशनग्ज (पद्य)
३. शहादतुल्-हकीकत (पद्य)
४. शाह् मर्गूबुल-कुलुब (गद्य)
५. सबरस (गद्य)

इनके एक शताब्दी बाद **वजही** ने अपना गद्य-ग्रंथ 'सबरस' लिखा था। मीराँ जी के गद्य का नमूना देखिये।*—

जो कोई आशिक कूं इस सात चीजते मना करे, खुदायताले[8] उसे दुनियां में सों[9] फना[10] करे। खूबसूरत देख, राग सुन, खुश्बूई, खुशकर, केफ खा बेपर्वा च और शेर[11] पर खुदा कूं मौन याद कर। मुहब्बत सों बंधा[12] अपने काम में मशगूल[13] रह। किससों नको[14] झगड। यहां आराम, या[15] काम, यां हाल, यां वसाल[16] यां यो खसरे[17] बाले। जो कुछ तूं देखेगा जो सुनेगा, सो सब दर्द-सर[18] है। मुशाहिदी मुराकबे[19] में परखत्या सैर तैर में तू रहेगा। इस ज़माने में किसकूं कश्फे-करामात[20] हुआ, जो तुझे होयेगा, यो जो कीमिया[21] करेगा, धंदा नहीं होता और हुआ च का कर दिलपर आता। सीधे बात पकर, घर कूं आ। तूं कूं[22], जवान में काई कूं[23] जाता। अव्वल तुझे जो कोई सिखलाता है, उसे पूछ—"तूं मुझे सिखलाता, सो तुझ पर खुला है।"

---

१. पश्चात्ताप, अपराध-क्षमापन, २. भक्ति, सेवा, ३. संयम, ४. बीज, ५. ज्ञान, ६. लज्जा, ७ श्रद्धालु भक्त।

***उर्दू शहपारे, पृ० ३२१।**

८. महामहिम भगवान्, ९. से, १०. नष्ट, ११. पद्य, १२. बढ़ा, १३. लगा, व्यस्त, १४. नहीं, १५. यहां, १६. मिलन, १७. झगड़े, हानि, १८. शिर की पीड़ा, १९. साक्षात्कार, समाधि, २०. प्रकटन, सिद्धि, २१. रसायन, पारस, २२. तुमको, २३. क्यों।

इसका काम उस पर नहीं खुल्या, सो तुझ पर क्या खोलेगा ? तूं क्या समझकर भूल्या है ? बहुत सिखेगा, तो इधर-उधर कियां चार हिकायतां[१]। इस हिकायतां सों क्या हासिल[२] ? तूं दुनिया के धंधे में हिल गया[३] है और इसकी बात भी आजाद[४] है। वले[५] यों खबर है, कि उसकी बिसरनी में भी उसी का यार है और अपसते अपे[६] आपकूं याद दिलाता है। तूं भी उसे याद कर। आशिक[७] है, तो उसे बिसर नको[८]। उसकी याद सों[९] दिल कूं शाद[१०] कर और आपसकूं अपे याद दिलाता सो अपसकूं दिखलाता है, कि यों देखो यो मेरी सूरत ही, मुझे देख, काकूं बेदिल होता है। में इता तेरे नजदीक हूं और तू मुझे नहीं देखता ।

§३. अशरफ (१५०३ ई०)

नानक और सूरदास के बीच के काल में शेख शरफुद्दीन अशरफ (कवि अशरफ) हुए। इनके बारे में अधिक मालूम नहीं है। इन्होंने इमाम हुसैन पर पड़ी आफतों के सम्बन्ध में अपना काव्य 'नौ सिरहार' ९०९ हिजरी (१५०३ ई०) में लिखा। पंद्रहवीं शताब्दी के आरम्भ के इस कवि ने अपनी भाषा को हिंदवी कहते हुए लिखा है।

बाचा[११] कीना[१२] हिंदवी में। किस्सा मक़तल[१३] शाह हुसेन ।।
नज़म[१४] लिखी सब मौजूं आन। यों मैं हिंदवी कर आसान ।।
यक यक बोल यह मौजूं[१५] आन। तकरीर हिंदवी सब बखान ।।

अपनी कविता की प्रशंसा में लिखते हैं—

नामां कत्या बोल संबार। जानो[१६] मोतियां केरा हार ।।
सोने की ज्यों घुंटी[१७] घड़। मानिक मोती हीरे जड़ ।।
यक यक बोल यह मानिक मोल। सीम[१८] तराजू संती तोल ।।
बंदऽ[१९] पिरोये सोनेतार। सच्चा हुआ नौसिरहार ।।

'नौसिरहार' में मंगलाचरण है*—

अल्ला बाहिद[२०] हक सुभान। जिन यह सिरज्या भुइ-असमान ।।
चंदा सूरज तारे रूख। बादल बिजली मेह अचूक ।।

खालिक बारी (जिसे गलती से खुसरो की कृति समझा जाता है) की तरह अशरफ ने बाहिदवारी नामक एक कोश-ग्रंथ लिखा है।

---

१. कथाएँ, २. प्राप्ति, लाभ, ३. फँसा, ४. स्वतंत्र, ५. लेकिन, ६. अपने-आप, ७. प्रेमी, ८. नहीं, ९. स्मरण से, १०. प्रसन्न, ११. बंचन, १२. किया (पंजाबी), १३. कर्बला की कथा, १४. पद्य, १५. उचित, १६. मानो, जैसे, १७. अंगूठी, १८. चांदी, १९. बांध ।

*तज्किरा उर्दू-मख्तूतात् पृष्ठ १८।

२०. अद्वैत, एक।

§४. फ़ीरोज (१५६४ ई०)

फ़ीरोज की प्रशंसा **वजही** और **निशाती**–जैसे महान् कवियों ने की है। **वजही** ने अपने कथा-काव्य 'कुतुब-मुश्तरी' में लिखा है*—

कि **फीरोज** आ ख्वाब[1] में रातकूं। दुआ देके चूमे मेरे होठ कूं॥
कह्या है तुं यो शेर ऐसा मुसद्स[2]। कि पढ़नेको आलम करे सब हबस[3]॥

इब्न-निशाती ने भी अपने कथा-काव्य 'फूलवन' (१६६५ ई०) में लिखा है†—

नहीं वह क्या करूं **फीरोज** उस्ताद[4]। जो देते शायरी का कुछ मेरे दाद[5]।

गोलकुंडा का पुराना कवि फीरोज, मुहम्मद कुल्ली कुतुब और राजकवि वजही से भी पहिले इब्राहीम कुतुब शाह के समय (१५५० ई०) में हुआ था। कवि ने अपने गुरु बीजापुर के सन्त मख्दूम जी शेख मुहम्मद इब्राहीम (मृत्यु २३ मई १५६५ ई०) की प्रशंसा में 'तौसीफ-नामा' लिखा। ग्रंथारम्भ में वह कहता है—

तु **पीरोज** खस्ता[6] कु (अति) मान दे। मंगुं दान तुझकने ईमान[7] दे॥
सों **फीरोज** सुपने में पाया रतन। रख्या ढांक सो रतन जिउसों रतन॥

गुरु-महिमा के कुछ पद्य हैं—

बराहीम मख्दूमजी[8] जीवना। कि मैं[9] सिर्फ[10] वहदत[11] सदा पीवना॥
मेरा पीर मख्दूम जी जगमने[12]। मंगुं न्यामतां[13] (मैं सदा) उसकने॥
करें मुझपर प्यार ये पीब जग[14]। कि तुझ प्यार ते होय मन्धीर[15] जग॥
पिया जीव ते तो हमन[16] वास है। तु हम जीव के फूल का बास है।
वही फूल जिस फूल की बास तूं। वही जीव जिस जीवकी आस तूं॥
सो तूं रुख है दीन का बारदार[17]। जो तुझ छाँब तल जग है पकड्या करार[18]॥
अछो[19] मुझ उपर छांव तेरा जरम[20]। कि आधार मेरा सो तेरा करम[21]।
करीमां[22] की मज्लिस करामत[23] तुझे। अमीना[24] की सफ[25] मैं अमानत[26] तुझे॥
सदा मस्त मदहोश[27] दीदार का। सचा तूं तलबगार[28] करतार[29] का॥

---

*उ. श पृष्ठ ८७।

१. स्वप्न, २. अष्टपदी, ३. लालच। †त. उ. म. पृष्ठ १४५। ४. गुरु, ५. न्याय, ६. भग्न, परेशान, ७. श्रद्धा, भक्ति, ८. स्वामी, सेव्य, ९. शराब, १०. केवल, ११. अद्वैत, १२. जग में, १३. न्यामते, सर्वोत्तम पदार्थ, १४. दुनिया के प्यारे, १५. मन्दिर, मनधीर, १६. हमारा, १७. फलदार, १८. धैर्य, १९. रहो, २०. सबा, २१. कृपा, २२. कृपालु, २३. सिद्धि, २४. अमानत रखनेवाला, २५. पांती, २६. अमीनपद, २७. मतवाला, २८. चाहवाला, प्रेमी, २९. भगवान्।

मुहीदीन मख्दूम जी जागना। हमें जीव अस[1] पीवसों लागना॥
अहे पीव मख्दूम जी जाइया। मुहीदीन दूजे पो जम[2] जाइया॥
तुजे राउ[3] ने जग राता[4] जनम। मुहीदीन बूजे सो तूं कसाता जनम॥
मुझे दान दे दीनो दिलशाद[5] कर। दुन्या के गुनाहां ते आजाद[6] कर॥
निगहबान[7] मेरा तुं मुंज रखे निगाह। मुजे देवे दुश्मन ने मेरा पनाह॥
जिसे पीर मख्दूम जी पाक है। उसे दीनो दुनियां में क्या बाक[8] है॥
जिसे पीर मख्दूम जी सांइयां।...

§५. बुरहानुद्दीन जानम् (१५२२ ई०)

बीजापुर के सन्त मीरा जी शम्सुल-उश्शाक के यह पुत्र और उत्तराधिकारी थे। इनका जन्म १५४३ ई० (९५० हि०) में हुआ था, इस प्रकार यह सूरदास से भी पहिले हुए थे। बुरहानुद्दीन अपने पिता की भाँति गम्भीर विद्वान् तथा प्रसिद्ध सन्त थे। इन्होंने कलाम और सूफी ज्ञान पर कई पुस्तकें लिखीं, जिनमें 'सुखसुहेला' और 'इरशादनामा' सुन्दर पद्यों में हैं। 'इरशादनामा' अशरफ के 'नौसिरहार' से इक्कासी वर्ष बाद लिखा गया। जानम् अपनी भाषा को हिन्दी कहते हैं—

यह सब बोलूं **हिन्दी** बोल। पन तूं अनभौ सेती खोल॥
ऐब[9] न राखें **हिन्दी** बोल। माने तूं चख देखें खोल॥
हिन्दी बोलो किया बखान। जेकर फसाद अथा मुंज ज्ञान॥

शाह बुरहान ने दोहे भी लिखे हैं। इस प्रकार वह दक्खिनी के उन कवियों में हैं, जिन्हें देश के साहित्य का परिचय था।

'इरशादनामा' में पुस्तक के बारे में लिखते हैं—

नाम किताब इस आख्या[10] होय। खातिर[11] लिया इस राख्या होय॥
'इर्शादनामा' इसका नाम। लोडे[12] फिकर[13] इसे मुदाम[14]॥
यह सब बोल्या है अनजान। आबिद[15] आजिज[16] है **बुरहान**॥
हिजरत नुह सह नकद[17] मान। 'इर्शादनामा' लिख्या जान॥

अपने गुरु तथा पिता **मीरा जी शाह** की प्रशंसा में लिखते हैं *—

सिफत[18] करूं कुछ अपना पीर[19]। जिसते रोशन[20] होय जमीर[21]॥

---

१. ऐसे, २. सदा, ३. राजा, ४. प्रिय, ५. प्रसन्न, ६. मुक्त, ७. रक्षक, ८. डर, ९. दोष, १०. कहा, ११. दिल, मन, १२. चाहे, १३. चिन्ता, १४. सदा, १५. भक्त, पूजक, १६. हैरान, परेशान, १७. नौ सौ नब्बे ९९० । *त. उ. स. पृष्ठ १९। १८. गुण, १९. गुरु, २०. प्रकाशमान, २१. आत्मा ।

जिन मुंज लीता[1] कर उपदेश। बाई[2] इस चख[3] लेउं गबेस।।
धौं जगमें मुंज बैत[4] वही। सिमरूं ले मन नेत वही।।
तिसकूं सिमरे तन मन शाद[5]। जिसका है मुंज पर शाद[6]।।
जग में अहैं तूं ही रतन। पर्दे में ले करूं जतन।।
राख्या कोंदन कर इस ढांव। तिल तिल[7] सिमरूं ले उस नांव।।
पीर की राजी शम्श उशाक[8]। धौं जग रव[9] नुज किया कशाक[10]।।

आरम्भ में अल्ला की स्तुति की है—

अल्ला सिमरूं[11] पहले आज। कीना[12] जिन यह धौं जग काज।।
जगतर करो तूं करतार। समूंकेरा सिरजन हार।।
अस्तुत ओरूं[13] करने चख। फुर्सत[14] पाऊं बोलने मुख।।
कुदरत[15] तू तुज अंत न पार। अगनित कीना हो परकार।।

"इरशादनामा" में शिक्षा दी गई है—

जे कोई पढ़कर करें सवाद[16]। राहे-हक़ीक़त[17] पर होय शाद।।
बनकी तू ना होवे बाड़। ग़फ़लत केरे खुलें किवाड़।।
इसमें कीता कर सकलाव[18]। ल्या ल्या रच रच स्वालों-जवाब[19]।।

कल्मतुल-हक़ायक़ (सत्यवाणी) को शाहबुरहान ने १५८२ ई० (९९० हि०) में लिखा था। इस प्रकार यह अकबरकालीन गद्य का सुन्दर नमूना है, जिसमें जहाँ-तहाँ पद्य भी हैं। ग्रंथ की भाषा लेखक ने **गूजरी** कही, जिसका अर्थ गुजराती नहीं, बल्कि गुजरात में बसे मुसलमानों में प्रचलित हिन्दी है, जैसा कि निम्न उद्धरण से मालूम होगा—

"यो गूजरी ज़बान। नाम ई किताब कल्मतुल-हक़ायक़"। इसकी भाषा अरबी-फारसी से लदी है।

"इन्शाअल्ला-ताला कि खुदाय-ताला कदीमुल्कदीम क्यों था? ज़ात व सिफ़ात व कुल्ले मख्लूकात इब्तदा-व-इन्तहा, बाक़ी व फ़ानी, कदीम व जदीद, बा-हमा व बे-हमा बदी सबब सवाल-व-जवाब रोशन कर कर देखाया है।

पद्यों में से कुछ हैं :—

"तूं ने देख्या आपस आप। जे घड्या यह तुज पाप।।
आरे[20] तूं इस सफा[21] में नूर। कि जैसा आकाश में सूर।।

---

१. लिया, २. बापी, कुआँ, ३. चक्षु, आँख, ४. पद्य, ५. प्रसन्न, ६. प्रसन्नता, ७. पल-पल, क्षण-क्षण, ८. प्रेमियों के सूर्य, ९. भगवान्, १०. प्रकट, ११. सुमिरन करूँ, १२. किया, १३. चाहूँ, १४. छुट्टी, १५. भगवान् की माया, १६. आस्वाद लेना, १७. सच्चा मार्ग, १८. लाभ, १९. प्रश्नोत्तर। २०. हाँ, २१. स्वच्छता।

अरे तूं अपसे आपस देख। जहूर[1] कूं करता लेखालेख॥
व खाली दिसता ठाँव। वह कइया[2] अपना नाँव॥
यो गफलत मेरी टूटी। जे नजर ऐसी फूटी॥
यह सदक़े[3] मुर्शिद[4] छूटा। यह घोर अंधारा फूटा॥
जैसा खाली फूल। या देखें जैसा डोल॥

§६. एकनाथ (१५४८–९९ ई०)

यह महाराष्ट्र में पैठन (प्राचीन प्रतिष्ठान), जिला औरंगाबाद में ब्राह्मण-वंश में पैदा हुए। इनके दादा भानुदास मराठी के प्रसिद्ध कवि थे। एकनाथ देवगिरि (दौलताबाद) में अपने गुरु जनार्दन स्वामी के पास बारह वर्ष तक शिक्षा ग्रहण करते रहे। इसके बाद गुरु की आज्ञानुसार ब्याह किया। मराठी में इन्होंने रामायण, भागवत आदि बहुत-से ग्रंथ लिखे। इनके बनाये लोकगीत भी प्रसिद्ध हैं। इनकी मृत्यु १५९९ ई० के फागुन महीने में बतलाई जाती है। इस प्रकार यह गोस्वामी तुलसीदास से तीस वर्ष बाद मरे। कहते हैं जिस साल एकनाथ ने वाराणसी में अपने भागवत को समाप्त किया, उसी साल गोस्वामी ने "रामचरितमानस" का आरम्भ किया। उत्तर में रहने के कारण इनकी प्रवृत्ति हिन्दी की ओर भी हुई थी। इनके कुछ हिन्दी पद* हैं—

आदि पुरुष निर्गुण निराधार की याद कर। मेरे गुरु परवर्दिगार की याद कर।
जिने माया अजब बनाई। उस वस्ताद की याद कर।
गैबी खजाना जिसने दिया। उस साहब की याद कर।
सन्त महन्त की याद कर। गुणी गुणवन्त की याद कर।
श्री भगवन्त की याद कर। जोग-जुगत का बांधा तोड़ा।
शम-दम का सिर पर समला छोड़ा। समता सो ही सुहावे तुरा।
गुरु गारुडी बीर पुरा। नैन चीर के पैही मुद्रा।
कान फार के खाये निद्रा। अनहद ध्वनी धुमक बाजे।
नाग-सुर धुंनक गर्जे। चल चल चल।
निरंजन जंगल के जिवड़े। खेलना होय तो उलट दृष्टि से खेल।
आवी करूंगा तेरा तमाशा। पैल तेरी मूंड़ी काटूंगा।
साप सब भुले बिच, किडे। प्रपंच कोठरी में आके दडे।
बड़े बड़े जनावर पाले। हरे, लाल, सफेत।
उजले, काले, पिले, भले, बेभले। हांडीबाग अभिमान जिवडे झुटमुठ चिपीच लढे।
नहिं कहूं तो ब्रह्माण्ड काटने दौरे। देखो मियाँ हाय हाय।
डंख मारा बे डंख मारा। सो बड़े बड़े कू नहीं उतारा।

---

१. प्रकाश, २. कहा गया, ३. नौछावर, ४. गुरु।

* 'दक्खिनी का पद्य और गद्य'—(श्रीराम शर्मा) पृष्ठ ५७—६६।

जब गुरु-ग्यान का लगाया मोहरा। जहर उतारा।
देखो मियां बाजीगिरी विद्या खेल। हांडीबाग बड़ा अलबेला।
हात हलावे के पांव हलावे। भोले भोले लोक भुलावे।
आ बे हांडीबाग। बाप बड़ा क्या बेटा बड़ा?
बेटे आगे बाप खड़ा। गुरु बड़ा क्या चेला बड़ा?
चेले आगे गुरु खड़ा। चेला तो प्रेम महल पर चढ़ा।
धनी बड़ा क्या चाकर बड़ा? चाकर आगे धनी खड़ा।
सास बड़ी क्या बहू बड़ी? बहू आगे सास खड़ी।
बीबी बड़ी क्या बांदी बड़ी? बांदी आगे बीबी खड़ी।
निराधार की ले कर छड़ी। बीबी खसम की छाती पर चढ़ी।
तैं बड़ा क्या मैं बड़ा? मेरे आगे तैं खड़ा।
मैं नहीं मैं नहीं। आलस छाया मेरे गुरु।
ग्यानी कू ग्यान लगाऊँ। लोभे आँधे कू उड़ाऊँ।
फुक मारूं तो जा जा जा। बोध के पहाड़ पर जा।
बच्या जाहाँ आना नहीं, ताहाँ ज्या। मेरे सद्‌गुरु दाता कू शरन ज्या।
मेरे सद्‌गुरु दाता की इतनी-सी लकरी। मूल मंतर हात मो पकरी।
जिदर दौरा उदर दौरी। फेर देखे तो मेरी मेरे सात।
देख अबी करूंगा खबूतर का तमाशा। बिन पर से उड़ता है कैसा?
खेल खेलते अविद्येके खलीते में घुसा। बाहेर कैसा आवेगा?
आव बे, आव बाहर आव। जिसे नहीं हात ना पाव।
जिसे नहीं गांव ना ठांव। जिसे नहीं रूपरेखा नांव।
भाव ना अभाव कुछ नहीं। धीरे धीरे तेरा बी मंतर बोलूँ।
लिंगदेह की गांठ खोलूँ। एक बार ऐसा खेल खेलूँ।
कि मेरे बड़े बड़े खेल थे। हा तो एक, एक के दो।
दो के तीन, तीन के चार। चार के पांच, पांच के पच्चीस।
पच्चीस के छब्बीस, छब्बीस का एक। एक बी नहीं, तो जनार्दन देख।

§७. शाह अली (मृ० १५६६ ई०)

"माशूक-अल्ला" (भगवत्-प्रियतम) उपनाम था। यह अहमदाबाद में पैदा हुये और वहीं इनकी शिक्षा-दीक्षा हुई। एक गांव की जागीर मिली थी, इसीलिये "गांवधनी" भी कहे जाते थे। यह सूफी सन्त थे। इनके उपदेशों को "जवाहर-उल्-इस्रारे-अल्ला" (भगवत् रहस्य-सार) में इनके शिष्यों ने जमा किया। इनकी कविता के नमूने देखिये*—

---

*'दक्खिनी का पद्य और गद्य', पृष्ठ ६७—७०।

आपी खेलूँ आप खिलाऊँ। आपी आपस ले, कल लाऊँ॥
मेरा नाँव मुझे अत भावे। मेरा जीव झुंकी पर जावे॥
मेरी निया मुझी सूँ माती। रह री, अपनई रूप लुभाती॥
ला का निया सो मुंज सूँ मिथ्या। जद का सो धन आपस दीथा॥
जी को अपनइ रूप लुभावे। भइ सो क्यों न आप सुहरावे॥
मैं मुंज रह्या, ना तूँ संघाती। 'शाहअली' जिव ही मुज साथी॥
मुंझ बिन कोइ नहीं जग माँहा। चेरी सुहागिन हूँ तिस नाहा॥
आपन खेले आप खिलावे। आपन आपस ले कल लावै॥

× × ×

हासिल सब कुरान का है इतना जानो।
बहम दुई का दूर करो होर मुंझे पछानो॥
ढूंढन निकली पीव कूँ, अपस गई सो खोय।
जिधर देखूँ (सो) एक हूँ, मुंज बिन और न कोय॥
मैं आपकूँ भाय कह्या, मा-बाप अपस्कूँ कह्या।
तिस आप पद आवे दया, रे भाइयो हौं से करूं॥
जब प्रेम अपने चित धरूं, अपसे दिखाऊं मन हरूं।
यों आपके घूंघट करूं, रे भाइयो, हौं सो करूं॥

× × ×

है सो हो हो होय रही है।
जिधर देखूँ एक वही है॥
मैं तो बहुत छिपाया पन काहू कीजे।
आप माता जब जन दिसूँ कहा थे कल दीजै॥
दीठा पर्या जग सूँ सब रहे सो जोय॥
हुव जे भोत छिपाये सूँ कित माने कोय॥
जैसा कोई होय से सब कोइ कहती।
आवत जनदिसे ओ क्या क्यों छिप्या रही॥
आपें बरकत होय, करे भेस मेरा लेता।
मुंज कूँ आके '**शाहअली**' तइं दिखला देता॥
किन्हें केरे दीठतें जे तिल भी टलता।
कुछ भी छिपाता आपकूँ तो मेरा चलता॥
अभरन मेरा सही सो पिव है। पिव का जिव सो मेरा जिव है।
हार हमेलाँ मुंज शहबाहां। मोतीहार सो तुम गल माँहा॥
मुझ शह अन्तर कछू न भावै। प्यारो चोला चीर उतरावे॥
एकमेक जो राख्या लौ हूँ। सो बुज अभरन क्यों कुछ छोड़े॥

× × ×

जब ज्यों राखे तब त्यों रहिये। लटका पिव का किसे न कहिये ।।
जे कहना होय सो कहिये। मन माहीं, ले न रहिये ।।
कभी सो मजनू होय बिरलावे। कभी लैला होय दिखलावै ।।
कभी सो खुसरो शाह कहावे। कभी सो शीरीं हो कर आवे ।।
कभी सो साथी कहें अली जियो। अली मुहम्मद कहीं कहावे।
कभी सो शाह हुसेनी राजा। एवें तिल-तिल भेस भरावे।
अहरपनवाली जग रतनाली। बेनी बासक हरतिल काली।
इ जो बाँकी भों दो माली। रे जीव सब मुन एवें कीजे ।।
यह जीव 'शाहअली' जिउ दीजै। दोनों जगमाँ तू राज करीजे ।।
आज प्रेम तो तुज सूँ खेलूँ, जो ये वाचा देवे।
जे तूँ जीते मुंज कूँ लीजे, होर धन जीते तूँ लेवे ।।
एक सो बात प्रेम की भारी। दूजा तुज सूँ खेल चढाई ।
तिस पर तैं मतवाली केती। भर भर प्याली प्रेम पिलाई ।।

× × ×

जिसें तिरे दो, नयन हाते. . .सो तो नहीं साथी।
तुज बिन कुछ भी ना जोऊँ, क्या करूँ संघाती ।।
ये यारी होर दोस्ती मेरी।
ये सब यारी दोस्ती तेरी ।।
हब क्या कीजै बात घनेरी।

× × ×

क्या कुछ रूप है मुंझ माँ सहेली।
जे हूं किसमें देख करे हो जाऊँ खेली ।।
रूप लुभाने आपके धन आप दिखावे।
आगे अपने रूप के सो दास कहावें ।।
जग में मुंझ बिन कोइ नहीं हौं अपने दास्सा।
ए जी, महके फूलरी सब मेरा बासा ।।
ये जग मेरी आरसी कर अपस देखूँ।
अपना रूप बखेर करि मुंझ जन धन पेखूँ ।।
सूरज-तारों चाँद-माँही में खाल अछाय।
की उजाली माँझ जगें होर दिया विदाय ।।
इन सब कलियों माँ महीन रँग आप दिखाऊँ।
राती माती होय सही मुंझ वारी जाऊँ ।।
अली मुहम्मद नाम मुझे बन दास कहाऊँ ।।

—"जवाहरु-ल्-इसरारे-अल्ला"

भाग २

मध्यकाल (१५००–१६७० ई०)

§८. वजही (१६०९ ई०)

यद्यपि दक्खिनी हिन्दी कविता का आरंभ ख्वाजा बन्दानेवाज (१३४१ ई०) अर्थात् विद्यापति के समय से होता है, किन्तु उसको उन्नति के शिखर पर पहुँचानेवाला वजही है। वह राजकवि मुहम्मद कुल्ली कुतुब (१५८०-१६११ ई०) के पिता सुल्तान इब्राहीम कुल्ली कुतुब शाह (१५५०-८० ई०) के समय कविता करने लगा था, यही तुलसीदास की तरुणाई का समय है। वजही के दो काव्य-ग्रंथ मिले हैं, जिनमें से एक "कुतुब मुश्तरी" को उसने १६०९ ई० में (अर्थात् अकबर की मृत्यु के चार वर्ष बाद तथा तुलसीदास के निधन से १४ वर्ष पहिले) समाप्त किया था। यह कवि की मौलिक कृति है, जिसमें उसने बगाल की राजकुमारी मुश्तरी और अपने संरक्षक इब्राहीम कुतुबशाह के उत्तराधिकारी मुहम्मद कुल्ली कुतुब के काल्पनिक प्रेम का वर्णन किया है। लेकिन ग्रंथ-समाप्ति के समय मुहम्मद कुल्ली कुतुब युवराज नहीं, बल्कि सुल्तान और ख्यातनामा कवि हो चुका था। वजही की आरम्भिक कविताओं का पता नहीं लगता। जिस समय (१६०९ ई०) कुतुब-मुश्तरी समाप्त की, उससे बहुत पहले से उसने कविता करनी शुरू की होगी। वजही के समकालीन गौवासी आदि और भी कितने ही कवि गोलकुंडा में मौजूद थे, लेकिन वह अपने से पहले के कवियों में फीरोज और महमूद का ही सम्मान के साथ स्मरण करता है। गौवासी को तो वह बहुत नीची निगाह से देखता है, यद्यपि गौवासी का स्थान दक्खिनी हिन्दी-कवियों में वजही से कम नहीं है। आलोचकों का मत है, कि गौवासी के तेज के सामने अंत में वजही इतना धूमिल हुआ कि उसने "कुतुब-मुश्तरी" लिखने (१६०९ ई०) के बाद फिर पद्य-काव्य पर कलम नहीं उठायी और २६ वर्ष बाद (१६३५ ई०) यदि लिखा भी, तो गद्य "सबरस" ही। "सबरस" वजही की मौलिक कृति नहीं समझी जाती, किन्तु वह अपने कवितामय गद्य के रूप में विशेष महत्त्व रखता है। तुलसीदास के तुरन्त बाद या समकालीन गद्य का क्या रूप था, इसका यह एक अच्छा नमूना है। इस प्रकार यह महाकवि गद्य और पद्य दोनों का उत्कृष्ट रचयिता है। गद्य में ऐसा कोई उदाहरण उत्तर के समकालीन हिन्दी-कवियों द्वारा उपस्थित नहीं किया गया।

आजकल हिन्दी-कवियों के ऊपर एक यह आक्षेप किया जाता है, कि ये स्वयंभू कवि किसी को अपना गुरु नहीं बनाते। यद्यपि यह कोई उचित आक्षेप नहीं है, नवीन कवि पुराने कवियों की कृतियों द्वारा ज्ञान प्राप्त कर सकता है। उर्दू-कवियों में तो परिपाटी बन गयी है, कि वे किसी-न-किसी कवि को अपना गुरु बनाते हैं, और गुरुकवि अपने शिष्य की कविता के संशोधन में काफी परिश्रम से काम लेता है; लेकिन वजही और गौवासी के समय गुरु-परम्परा कायम करने की कोई परिपाटी नहीं थी। दक्खिनी हिन्दी के छन्द सभी अरबी छंद हैं, जो मात्रिक होते हैं और स्वरों के खींचातानी करने में कोई रुकावट नहीं डालते, इसलिए जहाँ तक छंद का

सम्बन्ध है, कवि को कोई शिक्षा लेने की आवश्यकता नहीं थी। वजही के समय भी सुल्तान के कवि-दरबार हुआ करते थे, किन्तु इब्राहीम कुतुबशाह का समय वह समय था, जब कि दरबारों में हिन्दी नहीं, फारसी कविता की तूती बोल रही थी। दक्खिनी हिन्दी-कवियों ने उन्हीं अरबी छंदों को अपनाया था, जो फारसी में भी एकाधिपत्य रखते थे। बाकी अलंकार आदि जो कविता के सजाने, गंभीर तथा चमत्कारपूर्ण बनाने के लिए आवश्यक होते हैं, उनका ज्ञान उन्हें पुस्तकों तथा कवि-दरबारों द्वारा हो जाया करता था। फारसी कविता का जिसने रसास्वादन और अवगाहन न किया हो, ऐसा दक्खिनी कवि शायद ही कोई हो।

यद्यपि वजही के बुढ़ापेमें, मुहम्मद कुल्ली के नाती तथा द्वितीय उत्तराधिकारी अब्दुल्ला कुतुब शाह (१६२४-७२) के समय (शाहजहाँ और औरंगजेब के काल में) गौवासी गोलकुण्डा का राजकवि था, और वजही का सितारा डूब चुका था, लेकिन जैसा कि डॉक्टर जोर ने कहा है—

"वजही कई बातों के लिहाज से दक्खिन का एक अद्वितीय साहित्यकार है। उसका विषय स्वयं उसकी मानसिक उपज है। उसको इस बात पर अभिमान था, कि उसने और कवियों की तरह दूसरों से विषय उधार नहीं लिया। दूसरी भाषाओं से अनुवाद करना या दूसरे के विषय को उधार लेना उसकी दृष्टि में चोरी और दगाबाजी-जैसा अपराध था।... वजही वह सौभाग्य-शाली कवि है, जिसकी रचना के गद्य और पद्य दोनों नमूने इस समय मौजूद हैं। ये दोनों उसकी साहित्यिक शक्ति के सबसे अच्छे सबूत हैं। उसके गद्य "सबरस" के गुणों से साहित्यप्रेमी अपरिचित नहीं हैं और उसके पद्य "कुतुब मुश्तरी" के अध्ययन से कहा जा सकता है कि वह गोलकुंडा का बहुत बड़ा शायर है।... वह वस्तुतः दक्खिन का एक आला दर्जे का कवि था।... उसने बहुत अच्छा मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। उसमें बनावटी और रूढ़िग्रस्त विचारों का कोई स्थान नहीं है। उनसे मालूम होता है कि सर्वप्रथम उर्दू (दक्खिनी) कवियों ने हिन्दी-कविता का अनुकरण आरंभ किया था। यदि वह इस पर कायम रहते तो शायद उनकी कविता आज किसी दूसरे ही रंग में होती।"

१. कुतुब-मुश्तरी* (२००० शेर)

(१) गौवासी पर आक्षेप

जो लक[१] बर्स कोई सिर लेवे रंजकूँ। न पावे कधीं[२] इस छिपे गंजकूँ॥
हुआ जीव[३] जब शेर[४] ओ[५] बोलने। खज़ीने[६] लग्या गैब[७] के खोलने॥
अगर गोते[८] लक बर्स **गौवास**[९] खाय। तो एक गौहर[१०] इस धात अमोलक न पाय॥
यो मोती नहीं वो[११] जो **गौवास** पाये। यो मोती नहीं वह जो किस हात आय॥

---

*उर्दूशहपारे, पृ० ८६, ८७।

१. लाल, २. कभी (कौरवी), ३. मन, ४. पद्य-काव्य, ५. यह (कौरवी), ६. खजाना, ७. गुप्त, ८. डुबकी, ९. गोता लगानेवाला, गौवासी कवि, १०. मोती ११. वह (कौ०)।

गौवासाँ कई गोतं खा खायकर । मुयं हैं सो इस समद[1] में आय कर ।।
अपन होके ल्याना सो है झूठ सब । खुदा, गैबतं[2] देवे तो क्या अजब[3] ।।
कि हंस तुमने बीच समद एक आय तो । मरे डूब मिल सिरउ पर पयों[4] हो ।।

इब्राहीम कुतुब शाह (१५५०-८० ई०) की प्रशंसा में वजही कहता है*—

बराहिम कुतुबशाह राजाधिराज । शहंशाह है शाह-शाहाँ में आज ।।
अदलबख्श[5] होर दाद[6] उसतें अछे[7] । सदा खल्क[8] सब शाह उसतें अछे ।।
जितं बादशाहाँ है संसार के । भिकारी हैं सब उसके दरबार के ।।
सुलेमाँते फाज़िल[9] है सब बख्त बल[10] । पड़े देव-जिन सब हैं उस हुक्म तल[11] ।।
उसी शाह आदिल[12] के गुस्से ते डर । लिया है गगन कूँ पवन पेट पर ।।
इता बल है उस अद्‌ल के फ़न मने[13] । कि बिज्त्यां खड़्यां कांपियां पन[14] सुने ।।

(२) तबई द्वारा प्रशंसा

बाद के गोलकुंडा के कवि तबई (१६६९ ई०) अपने कथा-काव्य (मस्नवी) "बहराम गुल्अन्दाम" में **वजही** की प्रशंसा करते लिखा है—

लग्या मैं जो यों[15] मस्नवी[16] बालेनं । यो मोतियां निछल[17] ढाल यो रोलने[18] ।।
यो **वजही** मेरे ख्वाब में आयकर । मुख अपना मो रुखनाद[19] दिखलायकर ।।
सरासर सुन्या जो मेरी मस्नवी । कया[20] "बात तबई है तेरी नवी" ।।
हो खुशहाल[21] सुनकर यो बातां मेरे । अपस के[22] ले हातां[23] में हातां मेरे ।।
बड़े प्यार सों अपना यो मनल । सुन्या सो पड़्या ख्वाब में मे उछल ।।

(३) आत्मश्लाघा

(क) काव्य-प्रशंसा*

कता[24] हूं सुनो कान धर लोग हो । कहावत मने[25] बात जो आये सो ।।
अगर शेर[26] कोई खूब कह कर जो लाय । तो खूबां[27] कू वह सुन रश्क[28] अल्बत्ता आय ।।
एकस कूँ[29] सो एक ढाँक सकते नहीं । एकस कूँ सो एक मान रखते नही ।।
अगर कुछ कहे तो किधर का किधर[30] । कहे तो कते है इसे हेच[31] कर ।।
अराई[32] में इसकूँ ज्यों धीर थे[33] । फ़ज़ीहत करें पांव लग[34] सीर थे ।।
अगर खूब जो बोले तो वों[35] रहे । दिगर[36] जो बुरा बोले तो यों अहे[37] ।।

---

१. समुद्र, २. गुप्त, ३. आश्चर्य, ४. पाद, पैर।

***उ. श. ९२।**

५. न्यायकारी, ६. न्याय, इंसाफ, ७. रहे, ८. संसार, ९. अधिक, १०. उसके सौभाग्य का बल, ११. उसके हुक्म के नीचे, १२. शाह न्यायकारी, १३. में, १४. पुनि, १५. यह (कौरवी), १६. कथा-काव्य, १७. निर्मल, १८. बहाने, १९. समान, २०. कहा (कौरवी), २१. प्रसन्न, २२. अपने, २३. हाथों। *उ. श. पृ० ८८। २४. कहता, २५. में, २६. कविता, पद्य, २७. भले, २८. ईर्ष्या, २९. एक-एक, ३०. ऊटपटांग, ३१. छोटा, ३२. संवारना, ३३. से (सब जगह), ३४. तक, ३५. वैसे, ३६. दूसरा, ३७. हू (व्रज)।

दो जग जिस उतम हीरे का मोल है । वो हीरा सो हर एक मेरा बोल है ।।
रतन बेबदल[1] वो मेरे जाँ[2] बिकायें । वहाँ चाँद सूरज दिलाई न पायें ।।
वचन मोती यो देख[3] निपट लाजते । समद[4] पानी गल कर हुआ लाज ते ।।
जे कोइ जौहरी हैं सो पेछान[5] कर । मँगेगा[6] रतनकूँ कदर[7] जान कर ।।
परख देके तूं काच होर पाव[8] कूँ । बराबर न कर दूद[9] होर[10] छाच कूँ ।।
बहा एक नै[11] काच होर पाच कूँ । लज्जत देक टुक दूद होर छाँच कूँ ।।
जहाँ पाच अछैगा[12] वहाँ काच क्या । जहाँ दूद अछैगा वहाँ छाँच[13] क्या ।।
न यो बात हर एक के सात[14] है । जे कोइ आरिफ[15] है उससूं यो बात है ।।
तु फल चाक[16] देक[17] होर लज़्ज़त कु फ़ाम । न कर मोल सबका सकट तीन दाम[18] ।।
जो करता बकस[19] का हुनर देक कर । हुनरबंद उसे नैं कहते है नर[20] ।।
नवा दिलते ल्याना है मुश्किल कना[21] । कि आसान है देक कर बोलना ।।
जो कोइ यों करे उसमें कुज[22] फ़ाम[23] नैं । हुनर देक सकना बड़ा काम है ।।
हुनरवंद उसकूं क्या[24] जायेगा । जो कोइ अपने दिल ते नवा ल्यायगा ।।
फरक है अवल और आखीर मैं । तफ़ावत[25] अहै नीर होर शीर[26] मैं ।।
हुनर देक सकता है उसताद का । फ़हम चोर[27] है आदमी-ज़ाद[28] का ।।*

× × × × ×

हुनर ग्यान में[29] हैं यों बारीकियां लाफ[30] नैं । वो आदमी नहीं जिसमें इन्साफ़ नैं ।।
कि इन्साफ़ देवे वही रास्त[31] है । कि इन्साफ़ ताअत[32] ते भी ज्यास्त[33] है ।।
न कर बात तूं ना समझ आ मना । बहोत मुश्किल है बातकूं फ़ामना[34] ।।
हुआ शेर[35] का इस वज़ा[36] काम जब । सवाब शेर[37] कहना चहते क्या सबब ।।
वले[38] जीव[39] रहना नैं कहे बाज[40] यों । अजब सरकश[41] है अप खुदी राज[42] यो ।।†

---

१. असमान, २. जहां, ३. देख, ४. समुद्र, ५. पहिचान, ६. चाहेगा, ७. गुण, ८. रत्न, ९. दूध (कौरवी), १०. और (कौर०), ११. मोल एक नहीं (कौ०), १२. रहेगा, १३. छाछ, १४. साथ, १५. ज्ञानी, १६. चाख, १७. समझ, १८. दाम, पैसा, सिक्का, १९. दान, २०. मनुष्य, २१. कहना, २२. कुछ, २३. बुद्धि, २४. कहा, २५. अन्तर, २६. क्षीर, २७. बुद्धिचोर, २८. मानवपुत्र । *उ. श. पृ० ९० । २९. कहा, ३०. आत्म-श्लाघा, ३१. सच, ३२. भगवान् की आज्ञा मानना, ३३. ज्यादा, ३४. समझना, ३५. काव्य, ३६. ढंग, ३७. काव्य का फल, ३८. लेकिन, ३९. मन, ४०. बिना, ४१. बात न माननेवाला, ४२. आप स्वयं राजा ।

†उ. श. पृ० ९१ ।

शेर खूब कहकर जो ल्याना अहै। अपस पर[१] बछा एक ल्याना अहै॥
हुनर में हुनर कोई जोता नई। तरक[२] करने गये तो भी होता नई॥
यो बलवँद[३] वचन इसमें बल भौत[४] है। समझ थोड़े लोगों में जहेल[५] मौत है॥

(ख) आत्म-प्रशंसा करते वजही अपने पूर्व के कवियों (फ़ीरोज़ और महमूद) का स्मरण करते हुये कहता है*—

कि **फ़ीरोज महमूद** अबतें जो आज। तो इस शेर का मौत होता रवाज॥
कि नादिर थे दोनों कि इस काम में। रक्या मैं कने बोल अछों काम में॥†
न पहुंचे न पहुंच्या है गुन ज्ञान में। सो तूती[६] ऐसा हिन्दुस्तानमें॥
कि बातां यो सुनकर मेरे ज्ञानज्ञान। रह्याँ थक हो कुर्बा खुरासंगियान[७]॥
जिते शायरां-शायर[८] हो आयेंगे। सो मुंजते तरज[९] शेर का पायेंगे॥
न मुंज कुछ बडाई न मुंज लाफ़[१०] है। वले[११] आरिफां[१२] पास इंसाफ है॥
दखिन में अथा[१३] कै तरह होर[१४] मैं। दिया यों सलासत[१५] कु भी जोर मैं॥
जेते अक्ल दौडाये अन्दाज[१६] सों। किया नैं[१७] किते[१८] बात इस नाज़ सों॥
न कैं[१९] देक[२०] कर किसते पाया हुँ मैं। तो ताज़ा तरह[२१] दिलते ल्याया हुँ मैं॥
जे कोई फ़हम[२२] में टुक फहम्यां रहें। सो दो सरयां के वह खोशाचीन्यां[२३] रहै॥
अगर टुक जो दौडूं बुलंद धांवकूं। उडूं जगकूं सब बाँद[२४] कर पाँवकूं॥
अगर किसते तल खाम कुच जानता। उसे दिल में उस्ताद कर मानता॥
हुनर से हुनर इस बज़ा[२५] किससेती[२६]। न करसे[२७] कदम कोइ अंगे[२८] इस सेती॥
अगर कोइ ज्ञानी चतुर ज्ञान है। इदे[२९] यां च[३०] गोयाँ च मैदान है॥
दखिन में जो दखिनी मिठी बात[३१] का। अछायें[३२] किया कोइ इस धात[३३] का॥
अदा यों ऐताल[३४] होप तो क्या अजब। कि आलम सुन्या है यो चौफेर[३५] सब॥
जो आकिल[३६] है यो बात माने वही। कदर इस अदा[३७] की पिछाने वही॥
दिवाना[३८] हूँ मैं इस रंगी बात का। कि हरदिल में जिव हो खडे ठार[३९] का॥

---

१. अपने ऊपर, २. तर्क, ३. बलवान्, ३. बहुत, ५. अज्ञता।

* उ. श. पृ० ९१।

† उ. श. पृ० ९३।

६. तोता, ७. खुरासानी, ८. कवियों का कवि, ९. ढंग, रीति, १०. आत्मश्लाघा, ११. लेकिन, १२. ज्ञानियों, १३. था, १४. और, १५. लालित्य, १६. ढंग से, १७. नहीं, १८. किसीने, १९. कहीं, २०. देख, २१. ताजा, २२. बुद्धि, २३. बाली चुननेवाली, २४. बांध, २५. ढंग, २६. किससे, २७. करेगा (पंजाबी), २८. आगे, २९. यह, ३०. यहीं (च), ३१. मधुर भाषा, ३२. पूरा, ३३. भाँति, ३४ अब, इस समय, ३५. चतुर्दिश, ३६. बुद्धिमान्, ३७. ढंग, ३८. पागल, ३९. ठौर।

(४) मंगलाचरण—

(क) ईश्वर-स्तुति*

अपे फूल अपे फल वन अहै। अपे चाँद अपे सूर अपे घन अहै।।
गरज[१] एक आप च[२] सबे ठार[३] है। उसी नूर[४] का सब में झलकार[५] है।।
खुदाया[६] बडा तूँ बडाई है तुज। हमन सब बँदे हैं खुदाई हैं तुज।।
जो जग में सदा काल जीता अछूँ[७]। मुहब्बत केरी मैं[८] कूँ पीता अहूँ।।

(ख) पैगम्बर-स्तुति*—

मुहम्मद नबी[९] नाँव[१०] तेरा अहै। अरश के उपर छाँव तेरा अहै।।
कि चौदह मुलक का तूँ सुल्तान है। अली सा तेरे घर में परधान[११] है।।
असी होर एक लाख पैगम्बर आय। वले[१२] मर्तबा[१३] कोई तेरा न पाय।।
शफ़ाअत[१४] करनहार सबका तूँही। अपे लाडला एक रबका तुहीं... ।।
मुहम्मद कूँ जिस रात मेराज[१५] होइ। न था दूसरा वाँ अलीबाज कोइ।।
इनो तीनों कूँ बात यो फ़ाम[१६] है। समजता वो चौथे का नैं काम है।।

(ग) अली-स्तुति†

तूँ जग का पियारा तूँ जगका अधार। खुदा का तूँ हम्दम[१७] नबी[१८] का तूँ यार।।
अली का मुहिब नै जे कोइ सच तूँ जान। हरामीपनी[१९] का वही है निशान।।

(५) कविकर्म-शिक्षा‡—

कता[२०] हूँ तुजे पंदकी एक बात। कि है फ़ायदा इसमने[२१] घात घात[२२] ।।
जो बेवक्त[२३] बोले तो बतियां पचीस। भला है सो एक बैत[२४] बोले सलीस[२५]।।
सलासत[२६] नहीं जिस केरी बात में। पड्या जाय क्यों जुज[२७] लेकर हाथ में।।
जिसे बात के रब्त[२८] का फाम नै। उसे शेर[२९] कहने सों कुच काम नैं।।

---

*'योरोप में दक्खिनी मख्तूतात्' नसीरुद्दीन हाशिमी (हैदराबाद, १९३२ ई०) पृ० ३०, हस्तलेख ११३४ हि० (१६२४ ई०)

१. अर्थात्, २. आप ही (मराठी), ३. ठौर, ४. प्रकाश, ५. चमक, ६. हे भगवान्, ७. रहूँ, ८. मदिरा।

*यु. द. पृ० २९ (हस्तलेख ११३४ हि०, १६२४ ई०)

९. पैगम्बर, १०. नाम, भरोसा, ११. प्रधान, राजमंत्री, १२. लेकिन, १३. दर्जा, पद, १४. सिफारिश, १५. अल्ला को देखने के लिए मुहम्मद का स्वर्ग जाना, १६. समझ, फ़हम।

†यु. द. पृ० ३१ वहीं।

१७. सखा, १८. पैगम्बर, मुहम्मद, १९. नीचता।

‡उ. श. पा. च—९७। यु. द. पृ० ३१।

२०. कहता, २१. इसमें, २२. भाँति-भाँति, २३. बेसमय, २४. पद्य, २५. कोमल, २६. कोमलता, २७. पन्नों का समूह, २८. संबंध, रीति, २९. पद्य।

नको[1] कर तूँ ले बोलने का हवस[2]। अगर खूब[3] बोले तो एक बैत[4] बस ।।
वो कुच[5] शेरके फ़न[6] में मुश्किल अछे[7]। कि लफ़्ज़ होर मानी[8] यों सब मिल अछे ।
उमी लफ्ज़ कूँ शेरमें ल्याई तूँ। कि ल्याया है उस्ताद जिस लफ्ज़ कूँ ।।
अगर फ़ाम से[9] शेरका तुजकूँ छंद। चुने लफ्ज़ ल्या होर मानी[10] बुलंद ।।
रख्या एक मानी अगर ज़ोर है। वले[11] भी मज़ा बात का और है ।।
अगर खूब महबूब[12] ज्यों सूर[13] है। सँवारे तो नूरे अलानूर है[14] ।।
अगर लाख ऐबाँ[15] अछे[16] नारे में। हुनर[17] हो दिसे खूब सिंगार में ।।
हुनर मुश्किल उस शेर में योच[18] है। कि थोडे अछें हर्फ़[19] मानी[20] सो कँ[21] ।।
दिवाना हूँ मैं इस रँगी बात का। कि हर दिल मे जिव हो खडे ठार आ ।।
कहाँ बात वो चंचल हुआ चुलबुली। कि दिलकूँ न हासूँ[22] करे गुलगुली[23] ।।
मेरी बत सुन बात इस धात[24] बोल। कि जिव[25] कूँ खुशी होर दिलकूँ कलोल ।।
यो न मोल है वाल इसे बोल नै। हर एक बोल है वही[26] यो बोल नै ।।
सखुनगो[27] वही जिसकी गुफ्तार थे[28]। उछल कर पड़े आदमी ठार थे[29] ।।
यो बोल्या हूँ सब गंज नारंज[30] है। अझूँ[31] मेरे दिल में बहुत रज है ।।
जो लक वर्स[32] कोइ सह लेवे रंज कूँ। न पाये कधीं[33] इस छिपे गंज कूँ ।।
नको[34] बोल मजमून[35] तूँ होरका[36]। कि काला है दो जग में मूँ चोर[37] का ।।
जिता चोरी कर चोर अपे साव[38] होय। दगाबाज उचक्के कूँ मानै न कोय ।।
चुरा कर चुराता न कह जोर कोय। यो बाताँ समझते सो हैं होर कोय ।।*

(६) **स्वदेश-प्रेम**†—

दखिन सा नहीं ठार[39] संसार में। निपज[40] फ़ाज़िलां[41] का है इस ठार में ।।
दखिन[42] है नगीना अँगूठी है जग। अगूँठी कूँ हुर्मत[43] नगीना ही लग[44] ।।
दखिन मुल्क कूँ धन अजब साज है। कि सब मुल्क सिर होर[45] दखिन ताज है ।।
दखिन मुल्क मौते च[46] खासा अहै। **तिलंगाना** उसका खुलासा अहै ।।

---

१. नहीं (मराठी), २. अभिलाषा, लोभ, ३. अच्छा, ४. पर्याप्त, ५. कुछ, ६. काव्य-कला, ७. है, ८. शब्द और अर्थ, ९. समझके, १०. अर्थ, ११. लेकिन, १२. प्रियतमा, १३. सूर्य, १४. प्रकाश के ऊपर का प्रकाश, १५. दोषगण, १६. रहे, है, १७. गुण, १८. यही, १९. अक्षर, २०. अर्थ, २१. कई, अनेक २२. वहाँ से, २३. गुदगुदी, २४. भाँति, २५. मन, दिल, २६. ईश्वर, शब्द, २७. वाणी, वक्ता, कवि, २८. वचन से, २९. ठौर से, ३०. नारंगी, थोड़ा, ३१. अजहूं, आज भी, ३२. लाख वर्ष, ३३. कभी, ३४. नहीं, ३५. विषय, बात, ३६. और का, ३७. मुंह, ३८. साधु, सच्चा।

*** उ० श० पृ० ९७।**

† उ० श० पृ० ९८।

३९. ठौर, ४०. उपज, कृति, ४१. निपुण, शास्त्रनिष्णात, ४२. दक्षिण-भारत, ४३. इज्जत, ४४. तक, ४५. और, ४६. बहुत ही (मराठी)।

(७) पानगोष्ठी*—

शहंशह[१] मजालिस[२] किये एक रात। वज़ीरां के फ़र्ज़न्द[३] ते सब संगात॥
हर एक खूबसूरत हर एक खुशलका[४]। सो हर एक दिलकश[५] हर एक दिलरुबा[६]॥
महाबत[७] के कामांमें जम जर्म[८] है ज्यों। शुजाअत[९] के कामाँ में रुस्तम है ज्यों॥
नदीम होर मुत्रिब[१०] सुघड फ़हमदार। अथे[११] शहसो मिलकर यो सब एक ठार[१२]॥
सुराही पियाले ले हाताँ मने[१३]। नदीमां ते मशगूल[१४] बाताँ मने॥
लगे मुत्रिवाँ गाने यों साजसों। कि धरती हिले मस्त आवाज सों॥
जो मुत्रिब वो सेहरा[१५] में इस धात गाय। तो फिर उनकूँ इस शोक ते हाल आये॥
जो गावों वो शह कूँ कमाते[१६] अथे। सो रागाँ प रागाँ जमाते अथे॥
नदीमां लताफ़त में जो चख आयें। तो रोतियाँ कूँ खुशकर घडी में हँसायें॥
शराब होर सुराही नकल होर जाम[१७]। हुये मस्त मजलिस के लोगों तमाम॥
जो हुइ रात आधी बिछी[१८] दोपहर। खबरदारयाराँ हुये बेखबर॥
विसर गये नदीमाँ तरज़[१९] बात का। गँवाये खबर मुत्रिबाँ ज़ात[२०] का॥
न मिलते न खूबाँ झगडते कहीं। यकस के उपर एक पडते कहीं॥
लगे मस्त हो सुटने[२१] मस्ती सँगात। एकसके[२२] सो पावाँ उपर एक हात॥
सो यों कुच वह याराँ हुये बेखबर। कि पानी पीते थे शराब है कि कर[२३]॥
एकसकूँ बुला एक अज़माउँसों। गले लगते थे मस्त हो छांउ[२४] सों॥
वजाओ जो कै[२५] तो उठें गायकर। सुटे मुत्रिबाँ होश खुशी पायकर॥
सुराही पियाले सो हम्दस्त[२६] हो। करां फिरते थे वो दोनों मस्त हो॥
ऐता मस्त साक़ी[२७] हुआ सुध गंवाय। कि प्याला मंगे तो सुराही कुँ ल्याय॥
कह्या शाह दिलने च[२८] धरना भला। किसी पास जाहिर न करना भला॥
किसे कउँ[२९] कि मुंज इश्क उसका अहै। वही जाने मुंज इश्क जिसका अहै॥
जे कोइ राज़[३०] यो बापकन[३१] खोलेगा। 'दिवाना हुआ' कर मुंजे बोलेगा॥
नहीं बात कहन की यो खोलकर। कि समझाउ अब मैं किसकूँ बोलकर॥
अछूँ[३२] सेजपर मौज ज्यों आबमें। कि चटका लगा गइ सकी[३३] ख्वाब में॥
जिता[३४] मुत्रिबाँ[३५] शहकूँ समझी कहे। तगाफ़ल[३६] किये शाह होर चुप रहे॥

---

* उ० श० पृष्ठ १९१–९२।

१. राजाधिराज, २. जल से, ३. पुत्र, ४. सुमुख, ५. चित्ताकर्षक, ६. मनोहर, ७. मुहब्बत, ८. सदा, ९. वीरता, १०. वादक, ११. थे, हुते, १२. ठौर, १३. हाथों में, १४. लगे, व्यस्त, १५. जंगल, १६. भले न लगते, १७. प्याला, १८. पीछे, १९. ढंग, २०. व्यक्ति अपने, २१. फेंकने (पंजाबी), २२. किसी के, २३. क्योंकर, २४. छाया, २५. कहें, २६. हाथ मिले, २७. मदिरा पिलानेवाला, २८. दिल को ही, २९. कहूँ, ३०. रहस्य, ३१. बाप के पास, ३२. रहूँ, ३३. सखी, प्रियतमा, ३४. जितना, ३५. गायक, वादक, ३६. भूल।

कितै कै[1] कि मस्ती की चाले हैं यो। किते कैं पिरीत के उलाले[2] हैं यो।।
कितै कै उसे कुच्च ओछट[3] हुआ। कितै कै उसे इश्क का पट[4] हुआ।

× × ×

छुपी रात उजाला हुआ देस[5] का। लग्या जग करन सेवा परमेस का।।
शफ़क़[6] सुबह का नैहै असमान में। कि लाले खुले सुंबुलिस्तान में।।
जो आया झमकता[7] सुरज वाट कर। अंधारा जो था सो गया न्हाट[8] कर।।
सुरज यों है रंग आसमानी मनै[9]। कि खिल्या कमल फूल पानी मने।।
हर एकस कुं हर एक कुच फाम[10] था। नवल शह कूँ[11] उस नार का फाम था।।
कह्या शाह अब हाल नैं मुंज मने[12]। भला है जो गंज हो अछे गंजमने।।
अपसमें अपे फिक्र[13] कुछ गूँद[14] कर। रह्या गुंत्रे कि निम्ने[15] मुख मूँदकर।।
कि धरता हूं दिलमें जे कुच बात मैं। करूं जा के बात किस सात[16] मैं।।
न कोइ यार दिलसोज[17] मोहरम[18] है मुंज। न कोई हम्नफ़स[19] होर हम्दम[20] है मुँज।।
जिते इस ज़मानेमने[21] यार हैं। दगाबाज ऐबाँ चुननहार[22] है।।
उननको[23] कूँ पत्या[24] बात बोल्या न जाय। उनों के कनें दिल कुँ खोल्या न जाय।।
पत्याना उनोंकूँ कहो क्यों कि कर[25]। कि दिल में बुरे खूब हैं मूं उपर।।
यो यारी में किस धात[26] का कह[27] अछे[28]। जो मूँमें शकर दिलमने ज़हर अछे।।
जे कोइ यार याराँमने[29] नेक है। जवाँ होर दिल दोनों उस एक है।।
न मैं भाई में हूं न मैं माइमें। कि तालिब कूँ[30] है लाफ़[31] तन्हाइ मैं।।
जे कोइ घर में मशगूल अछे[32] यारसों। नहीं काम कुछ उसकूँ बाजारसों।।
जिसे यार का ध्यान नित यार है। जो आलम[33] की सोहबत[34] ते बेजार[35] है।।
किया लोग नज्दीक के दूर सब। नदीम[36] होर मुत्रिब[37] यो है सब अजब।।
अंझू[38] लाल मद[39] नैन प्याला हुआ। नदीम आह मुत्रिब सो बाला हुआ।।*

(८) **प्रेम-स्वप्न**†—

देखी ख्वान[40] में शह की एक बन अहै। वो बन नैं ज़मीं के उपर घन अहैं।।
फिरैं चांद सियाँ सुँदरियाँ उस मने[41]। सितारे नैनक याँ परियाँ उसमने।।

---

१. कहै, २. उल्लास, ३. औझट, ४. रोग, ५. दिवस, ६. सूर्योदय की लालिमा, ७. चमकता, ८. भाग (पं०), ९. आसमानी में, १०. समझ, ११. नये शाह को, १२. मुझमें, १३. विचार, १४. गूंध, १५. भांति, १६. साथ, १७. सहानुभूतिकारक, १८. हृदयभेदी, १९. एक क्षण, २०. एक सांस, २१. दुनिया में, २२. दोष निकालनेवाला, २३. उनको, २४. पतियाकर, २५. कैसे, क्योंकर, २६. भांति, २७. क्रोध, २८. हैं, २९. दोस्तों में, ३०. चाहनेवाले को, ३१. आराम, ३२. संलग्न रहे, ३३. दुनिया, ३४. संगत, ३५. दुखी, ३६. गायक, ३७. वादक, ३८. आँसू (पंजाबी), ३९. मदिरा।

*** उ. श. पृ० १९०।**

† यु० द० म० पृ० ३३, ३६।

४०. भोजन, ४१. उसमें।

रंगारँग चमना मने फूल थे। नवल शाह[1] तमाशे में मशगूल थे ।।
पडी ओ चिते दिष्ट[2] उस नार पर। अखल कम हुई शह हुआ नेच पर ।।
सो इस परी में बी[3] थी वो च[4] धन[5]। कि लब्दाये[6] थी मौत ज़ोरां सों मन ।।
जो देख्या अथा[7] ख्वाब में माह[8] कूं। हुआ ख्वाब में ख्वाब उस शाह कूं ।।
जो इस नींद में होर तक होशियार। न थी उस सबूरी[9] न था उस करार ।।
बराहिम कुतुब शाह मजलिस सिंगार। किये मुस्तइद[10] मोपे[11] अशरत[12] अपार ।।
जित्याँ[13] खूब खुश-शक्ल[14] थ्याँ[15] सुंदरियाँ। सो कर तातक होर कोप कजरा तक्यां ।।
जो चीन होर माचीन[16] कीथी बुताँ[17]। सो खुशतवा[18] खुश-फहम[19] खुश-सूरतां[20] ।।
हरेक खूब महबूब[21] बुत फारसी[22]। बदन ज्यों (कि) जलती[23] अछै आरसी ।।
अजब एक उस वक्त पीर मर्द[24] था। हुनरबंद[25] आकिल[26] जहाँगर्द[27] था ।।
दुनियां के अपन बंद[28] ते आज़ाद[29] हो। फिरे गर्ब ते[30] शर्क़ लग[31] बाद[32] हो ।।
कधन[33] रूममें था कधन शरम में। कि उस्ताद था वों हरेक काम में ।।
अतारद सो नक्काश[34] का नाम था। भला होर बुरा सब उसे फ़ाम था ।।
जो बंगाले का सेह्र[35] जिवधात[36] है। सो इस मुश्तरी नार की बात है ।।
बंगाले शकरकूं[37] जो याँ ल्याती है। सो उसके अधर इसकूं वन पीती हैं ।।
अपस पेनज[38] दिखला वो शोख[39] नार। सुरज, चांद, तारे मिला एक नहार[40] ।।
अतारदकूं शह हाल सब बोलकर। कही ख्वाब देखी थी सो खोलकर ।।
कि उस धनि सों मुंज इश्क इस धात है। कह्या हूं तुजे मैं जो कुच बात है ।।
कि आशिक़ अहै तूं अपे दर्दमन्द[41]। तुजे फ़ाम इस काम की सब है छंद[42] ।।
एताल[43] उसके मिलने की तदवीर कर। तूं बेग[44] हो नको[45] काम ताखीर[46] कर ।।

(९) प्रेमारंभ*—

(क) "कुतुब-मुश्तरी" का नायक इब्राहीम कुतुबशाह का पुत्र तथा युवराज एवं भावी महाकवि मुहम्मद कुल्ली कुतुब है। प्रेमारंभ के बारे में है :—

कह्या इल्म[47] में देक[48] न वो आपते। कि फ़र्ज़ंद[49] यो बख्तवर[50] बाप ते ।।
रखे नाँव करतार कने मंग पनाह[51]। सुलक्खन **मुहम्मद कुली** कुतुबशाह ।।

---

१. युवराज, २. दृष्टि, ३. भी, ४. ही (मराठी), ५. तरुणी, ६. फँसाये, ७. था, हुता, ८. चाँद, ९. धैर्य, १०. तैयार, ११. मुझ पर, १२. आनन्द, १३. जितने, १४. सुरूप, १५. थीं, १६. महाचीन, १७. सुन्दरियाँ, १८. सुमन, १९. सुबुद्धि, २०. सुरूपा, २१. प्रियतमा, २२. पारसी सुन्दरी, २३. उज्ज्वल, २४. बुड्ढा, २५. कलाकार, २६. बुद्धिमान, २७. विश्व-पर्यटक, २८. बन्धन, २९. स्वतन्त्र, मुक्त, ३०. गर्ब से, ३१. पश्चिम तक, ३२. वायु, वात, ३३. कभी, ३४. चित्रकार, ३५. जादू, ३६. जानकार, ३७. मिठास, ३८. अपने से ही, ३९. चंचल, ४०. दिन, ४१. पीड़ित, ४२. ढंग, उपाय, ४३. अब, ४४. जल्दी, ४५. नहीं, ४६. देर।

* यो० द० म० पृष्ठ ३२।

४७. विद्या, ४८. देख, ४९. पुत्र, ५०. भाग्यवान्, ५१. शरण।

करे जम[1] दुआ जीवसों जग उसे। हयात होती है ज्यास्त[2] तिलतिल[3] उसे ।।
जवानी की दरिया कूँ आया अघान[4]। मुहम्मद कुतुबशाह हुआ अब जवान ।।
एता जोर था, उसके एक दस्त सों। उचा[5] के पछाडी मते इस्त[6] कूँ ।।

(ख) प्रेम की पीड़ा*—

न भुइँ पर दिखै वह न असमान में। रह्या शह उसी नारि के ध्यान में ।।
लग्या तलमल्याने बहुत धात[7] सों। कह्या जाय ना बात वो बात सों ।।
न यो बात हर एककूँ फाम[8] होय। वही जानै जिसपर जो यो काम होय ।।
कधीं[9] चख[10] हंसे होर कधीं चख रोये। कधी सुद्द[11] पावे कधीं सुध खोय ।।
इसी धात दिन रात रहता अछे[12]। अपस में अपे[13] वह यों कहता अछे ।।
भुलाई चंचल धनि[14] वो यों शाहकूँ। कि लहराये ज्यों कहरवा[15] काह[16] कूँ ।।
उठे और फिर सोये शह जाय कर। कि वो नारि भी ख्वाब[17] में आयकर ।।
जो हर बार यों ख्वाब में यार आय। तो आशिक[18] कूँ बिन ख्वाब भी कुछ न भाय ।।
परेशान हैरान बेताब था। न कुच उसकूँ आराम ता[19] ख्वाब था ।।
लग्या शाह उसासां भरन आह भर। कि नज्दीक नैं है वो गुनबंत नार ।।
कधीं बेखबर होय कधीं होशियार। कधीं पीव-पीव कै[20] कधीं यार-यार ।।
यों सुन मुत्रिबाँ[21] सब खबरदार होय। जो मस्तान थे वों सो होशियार होय ।।
भौत धात[22] सों बात समझायकर। कहे शहकूँ नज्दीक यूँ आय कर ।।
कि ए शह, तुँ जम[23] शाहखुर्रम हुआ च। नहीं गम तुझे कुच तु बेगम हुआ च ।।
जे कुच तुजकूँ होना सो हाजिर है सब। उसासाँ जो भरता सो तूँ क्या सबब ।।

(१०) प्रेम-पत्र—

(क) गजल†—

पिउ अपने कूँ टुक आज मैं, निस सपने देखी सोय कर।
जब पिउ चल्या[24] सुट[25] सेज मुँज, तब सोती उठी रोय कर ।।
हाथ बढ़ा अपना सारने[26] मुँज चल चल लाग्या मारने।
ना जाऊं साईं कारने भी, अजऊं क्या क्या होयकर ।।
ना पूछूँ वहमन[27] जोसी, कब मिलना पिउसों होसी[28]।
गम विरहा सब मैं सोसी[29], ना जाने दुख यो कोइकर ।।

---

१. सदा, २. ज्यादा, ३. पल-पल, ४. उबाल, ५. उठा, ६. मस्त हाथी।

* उ० श० पृष्ठ १८९।

७. भाँति, ८. समझ, ९. कभी, १०. चक्षु, आँख, ११. सुध, होश, १२. रहे, १३. अपने-आप, १४. तरुणी, १५. चुम्बक, १६. घास, १७. स्वप्न, १८. प्रेमी, १९. था, २०. कहें, २१. वाद्यवादक, २२. बहुत भाँति, २३. सदा।

† उ० श० पृ० १९२।

२४. चलता, २५. छोड़ (पंजाबी), २६. हटाने, २७. ब्राह्मण, २८. होगा, २९. सहूँगी।

क्यूँ टालूँ विरहा झाल[१] सकी,[२] नै सकती हूं सँभाल सकी।
अब क्यूँकर पाऊं लाल सकी, जो बैठी हतते[३] खोयकर।।
एकताई[४] सहेली मरना, दिल दूजै परना धरना।
उस पिउकूँ अपना करना, इस पापी जिव[५] कूँ खोयकर।।
ताकत नहीं अब दूरीकी, अब तूं बेगी आ मिल रे पिया।
तुज बिन मुंजे जीना मौत, होता है मुश्किल रे पिया।।
खाना विरह कैती हूं मैं, पानी अँझू[६] पीती हूँ मैं।
तुजते बिछुड जीती हूँ मैं, क्या सख्त है दिल रे पिया।।
हर दम तूँ याद आता मुंजे, अब ऐश नैं भाता मुँजे।
विरहा यो सँताता मुँजे, तुज बाज[७] तिल-तिल[८] पिया।।
मुँजते तपिश जाते नहीं, मुंज ठार[९] जिव[१०] लाते नहीं।
मुँज दिल मँधिर म्याने[११] नहीं, कीता[१२] है मंजिल हे पिया।।
तू जिउ मेरा मैं सो दिल, तुज सात[१३] रहना क्यों न मिल।
दिन रात में एक तिल नई, तुजते गाफिल रे पिया।।

(ख) प्रेम-चतुष्पदी (रुबाई)*—

खुशहाल हो जिव आज खुशी पाना नहीं। पीता हूँ शराब होर[१४] असर आता नहीं।।
काँटयाँ के जर्ब[१५] डंसते हैं फूल सब। तुम बाज[१६] सकी[१७] बाग मुँजे भाता नहीं।।
तुज याद बिना होर मुँजे काम नहीं। निस जागते जाती है दिन आराम नहीं।।
मैं तो तुजे मँगती[१८] अदिक[१९] जीव वले। तू क्यों मुँजे मँगता है सो कुच काम[२०] नहीं।।
दुनियाँ के सो लोगों में वफा दिसता नैं। धुँद[२१] दीखे जफ़ा वाज जफ़ा दिसता नहीं।।
बे-मह्ले[२२] बनी-आदम[२३] है उस सूँ इसकी। दिल वाँदने में कुच[२४] नफा दिसता नहीं।

११. ग्रंथ-समाप्ति†—

कुतुब-मुश्तरी मैं जो बोल्या किताब। सो है जग में रोशन[२५] कि ज्यों आफताब[२६]।।
अवल[२७] होर आखिर[२८] के कामाँ[२९] पिछान। दुन्या में रख्या हूँ मैं अपना निशान।।

---

१. ज्वाला, २. सखी, ३. हाथ से, ४. एक के लिए, ५. दिल, ६. आँसू (पंजाबी), ७. बिना, ८. पल-पल, ९. ठौर, १०. मन, ११. मन्दिर में, १२. किया (पंजाबी), १३. साथ।

* उ० श० पृष्ठ ९६।

१४. और, १५. घाव, १६. बिना, १७. सखी, १८. चाहती, १९. अधिक, २०. समझ, २१. द्वन्द्व, २२. बे-मुहब्बत, २३. मन, सन्ताप, २४. कुछ।

† उ० श० पृ० ९७–९८।

२५. प्रकाशमान, २६. सूर्य, २७. प्रथम, २८. अन्तिम, २९. काम।

निशानी रखे बाज[1] चारा नहीं। कि दायम[2] कोई रहने हारा नहीं॥
सुनार हो के सुन्ने[3] के लफ़्ज़ाँ[4] घडया। रतन मानी[5] चुन उनन पर जड्या॥
जिने[6] शेर बोल्या उसे क्या है गम। कि जीता रहे नाँव इस जग में जम॥
तमाम[7] इस किया देसे[8] बारह मने[9]। सन् एक हजार और अठारह मने[10]॥

२. सबरस

(१) हिन्दी का प्रथम गद्य-काव्य--

"कुतुब-मुश्तरी" के १६ वर्ष बाद १६३५ ई० (१०४५ हि०) अर्थात् गोसाईं तुलसीदास की मृत्यु (१६२३ ई०) से बारह वर्ष बाद वजही ने अपने गद्यकाव्य "सबरस" को समाप्त किया। इस ग्रंथ में कवि ने कहीं-कहीं अपने और दूसरों के भी पद्य उद्धृत किये हैं। हिन्दी के दोहों से पता लगता है, कि उसे हिन्दी साहित्य और उसकी रीति का परिचय था, यद्यपि तत्सम शब्दों का उसे बहुत कम परिचय था। "सबरस" के सम्पादक मौलवी अब्दुल हक (सेक्रेटरी अंजुमन तरक्की उर्दू) ने इसके स्रोत के बारे में लिखा है :—"मुल्ला वजही ने किस्से की असल[11] की तरफ कहीं इशारा नहीं किया, मगर दोनों किताबों के पढ़ने से साफ मालूम होता है, कि वजही ने किस्से की वारदात[12] हरफ-ब-हरफ फत्ताही[13] से ली है, अपनी तरफ से कोई इज़ाफाह[14] किया है, तो यह कि जा-ब-जा मौका-बे-मौका[15] पन्द व मौजज़ा[16] का दफतर खोल दिया है, जिसका असल किताब में नाम-निशान नहीं है। मेरा कयास[17] यह है, कि वजही को फत्ताही के "हुस्न व दिल", जो नसर (गद्य) में है, हाथ लग गई थी।...वजही ने अपनी नसर (गद्य) में उसीका तर्ज[18] उडाया और मुसज्जा[19] और मुकफ़्फ़ा[20] इबारत[21] लिखी है।*

---

१. बिना, २. सदा, ३. सोने, ४. शब्द, ५. अर्थ, ६. जिसने, ७. सम्पूर्ण, ८. दिवस, ९. बारह में, १०. सन् १०१८ हि० (१६०९ ई०), ११. मूल, १२. घटनाएँ, १३. फारसी कवि, १४. वृद्धि, १५. उचित-अनुचित स्थान में, १६. चमत्कार, १७. विचार, १८. ढंग, १९. अलंकारपूर्ण, २०. अनुप्रासबद्ध, २१. वाक्य।

*** इससे पुराना हिन्दी (व्रज)-गद्य 'सिंगारसुतुक' का नमूना है :—**

"जैसे एक कथा भागवत विषे है, जु एक समय कस्यपु संध्या समय विषे संध्या कै ईश्वर को सुमिरनु करत बैठे हुते। तब इतने बीच कस्यप की स्त्री दितिहि कामु जु अति व्याप्य तब कस्यप के आगें ठाढ़ी भई। ठाढ़े व्है कर कहन लगी, कि "अहो प्राणेश्वर कस्यप, तुम्हारे तईं यह कामु मोहि व्यापो है, सु मेरे काम को सांति करहु। अरु मुषु देषत मेरें परम सन्ताप होतु है। मेरे पुत्र नाहीं, सु मोकहुँ कृपा करि रति दानु देहु, मोपर अनुग्रह करहु।" तब यह सुनि कस्यप यह विचारी कि 'भाई अबहि संध्या समो है रति दानु दीवै कहुँ उचित नाहीं, सु जौ लौं यह संध्या बीतु जाइ, तो लौं याहि बातनि लगाऊं।' यह मिसु करि कस्यपु दितिहि बातन लगाउत हैं—"अहो दिति, बहुतु नीकी तुम भली बात कही है। जो कछू तुम्हारे ईछा है, सु हौं करौं। ता स्त्री कौ मनोरथु को न करै, जा स्त्री की संगति अर्थु धर्मु कामु मोछ होतु है। अरु स्त्री की संगति ग्रहस्थु

फत्ताही (मुहम्मद यहिया) तेमूर के पुत्र शाहरुख के समय नेशापुर (खुरासान) का विद्वान् था, जिसकी मृत्यु ८५२ हि० (१४४२ ई०) में अर्थात् "सबरस" लिखने से १८७ वर्ष पहले हुई थी। फत्ताही ने "दस्तूर-उश्शाक" (प्रेमियों की रीति) नाम से पांच हजार शेरों का एक कथा-काव्य लिखा था। उसने "शविस्ताने ख्याल" (संकल्प रात्रि) और "हुस्न व दिल" लिखे थे, जिनमें "हुस्नोदिल" "दस्तूर-उश्याक" का गद्यमय संक्षेप है। इसका ढंग वही है, जैसे संस्कृत में "प्रबोधचंद्रोदय" "संकल्प सूर्योदय" नाट्य-काव्य का है जिनमें योग वेदान्त की शक्तियों को पुरुषाकार बना कथा रूप दिया गया है।

फत्ताही के नायक, नायिका और प्रति-नायक, प्रतिनायिका हैं दिल[1] और हुस्न[2], अदल[3] और इश्क[4]।

वजही ने अपने इस ग्रंथ को मौलिक कृति कहते लिखा है—

"ग़रज[5] मौन[6] नादिर[7] वातां बोल्या हूं, दरिया होकर मोतियां रोल्यां हूं। मोतियां के मौजाँ[8] का मैं दरिया हूँ, तमाम मोतियाँ सों भरचा हूँ। जे कोई बात हमारी चल्या वो हमारा च है। हर चंद[9] फहमदारी[10] है, चल्या तो क्या हुआ बात हमारी है। अगर नुकता है किसी ते कुछ जान्या, हम जाहिर[11] हम वातिन[12] उसे नै मान्या, तो वो मुसलमान नै, उसे ईमान नै। ऐसेसे डरना, भौत-भौत परहेज[13] करना। यो वी एक चोरी है, यो वी एक हरामखोरी है।"*

अब्दुल हक साहेब टिप्पणी करते कहते हैं—"लेकिन वजही के मुँह से यह बात कुछ अच्छी नहीं मालूम होती। उसने सारा किस्सा शुरू से आखिर तक फत्ताही से लिया, और कहीं इसका इकरार[14] नहीं किया। यही नहीं, वल्कि तहरीर का अस्लूब[15] भी उसीसे उडाया।... बावजूद इसके हम वजही को उस्ताद मानते हैं, और जो काम उसने किया है, उसका एहसान

और तिनिहू आश्रमनि की पालना करतु हैं। अरु अपुनु संसार-समुद्र के पार होतु है, सु स्त्री ऐसी बड़ी है। अरु स्त्री पुरुष कौ अर्धांगु है। अरु स्त्री ऐसी है, जाके बल गृहस्थु बड़े रिपु इन्द्रियनि जीततु है। और तीनिहुँ आश्रमनि इन्द्रिय डगावती हैं। सु तिनि इन्द्रियनि हम तुमारे बल अनायास ही जीतत हैं। जैसे गढ़पति गढ के शत्रुनि जीतत है। तातें सुनहु दिति, जौलौं हमारी सम्पूर्ण आउ बीति है तौ लौं हम तुमहि उरन न व्है सकिहैं। तातें अवहि हमारी एक विनती मानहु। अबहि यह महाघोर बेरा है। सु इहि बेराँ भूत-परेत फिरत हैं, अरु महादेउ फुनि अबहि फिरत हैं। सु महादेव जो देषिहैं, तौ हम पर दुषु पाइहैं। सु तुम घरीकु वेषहु।" इतनीं बात जबहीं कस्यप कही, दिति के मन एकौ न आई। कामु जु अतिही व्याप्यो, सु दौरि कै दिति कस्यपु जाइ गही, अति आतुर व्है रति दानुं मांगन लगी, तब कस्यप मन मध्य दुषु पाइकै ईश्वरसौं अपराधु क्षमाइकै दितु कहूँ रतिदानु देत भए। सु तातें इहिं प्रकार स्त्रीजु कछू कर्यो चाहें, ताकौं अन्तराउ न करहीं।"

—सबरस (भूमिका) : सम्पादक मौलवी अब्दुल हक, हैदराबाद १९३२ : पृ० १२।

१. हृदय, २. सौंदर्य, ३. बुद्धि, ४. प्रेम, ५. अभिप्राय, ६. मृत्यु, ७. दुर्लभ, ८. लहर, ९. सदा, १०. समझदारी, ११. प्रकट, १२. बाहरी, १३. संयम। * वही पृ० ७। १४. स्वीकृति, १५. ढंग।

न मानना हकीकत[१] में ना-इन्साफी[२] है। उस जमाने में उर्दू नस्र[३] का नाम न था, और न नस्र लिखना कोई कमाल की बात समझी जाती थी। एक तो रिसाले जो इसके कब्ल[४] के पाये जाते हैं वह इस काबिल नहीं कि महफ़िले-अदब में जगह पावें। 'सबरस' उर्दू नस्र की पहिली किताब है, जो अदबी एतवार से बड़ा दरजा रखती है*।"

वजही के सबरस के आधार पर ज़ौकी (शाह हुसेन बहरुल उर्फ, ज्ञानसागर) ने १६९७ ई० (११०९ हि०) में "वसालुल आशिकीन" (प्रेमी मिलन) को पद्य-बद्ध किया और मुजुमीं शाह वैरुल्ला बीजापुरी ने १६७५ ई० (१०८६ हि०) में अपनी मस्तवी "गुलशने जश्न दिल" (मनमहोत्सवोद्यान) लिखी।

(२) संक्षेप—

(क) कथारंभ†—

एक शहर[५] था। उस शहर का नाँव **सीस्तान**। उस सीस्तान के बादशाह का नाँव **अकल**[६]। दीनो दुनिया का तमाम काम उसते चलता। उसके हुकम बाज[७] जर्रा[८] कई नैं हिलता। उसके फ़रमाये[९] पर जिनों[१०] चले, हर दो जहाँ[११] में होये भले।...

सो इस **अकल** पादशाह कूँ...एक फर्जन्द[१२] था, कि उसका जोडा दुनिया में कैं न था... नांव उसका **दिल**।...सो एक देस[१३] उस अकल पादशाह आलमपनाह[१४] साहब-सिपाह[१५] जल्लअल्लाह[१६]... के दिल पर कुछ आया, अपना अंदेशा[१७] अपसकूँ भाया। सो उस **दिल** शाहज़ादेकूँ...उस इल्मां[१८] धनी कूँ **तन** के मुल्क की बादशाही दिया, तन के मुल्क का बादशाह किया।...सिर छतर छाया, तखत बसलाया[१९]।...जिधर जिधर दिल जाता, दिल के पीछे तन बी आता।...

(ख) मदिरा-महिमा+—

आशिक दिल कूँ शराब का भौत ध्यान, चतुर सुघरोल[२०], शराब वगैर[२१] नै रहाता एक तिल[२२]। शराब उसे मोत भाया था, शराब पीना उसे आया था।...पादशाहां कूँ शराब पीने का क्या डर? पादशाह कूँ अदल इंसाफ[२३] बगैर होर कुछ पूछ-विचार न होसी[२४]। पादशाह

---

१. वस्तुतः, २. अन्याय, ३. गद्य, ४. पहिले।

* सबरस के सम्पादन करने में जिन हस्तलेखों की सहायता ली गई, उनमें एक १७०५ ई० (१११७हि०) का था, और दूसरा १७६३ ई० (११७७ हि०) का, अर्थात् ग्रन्थ लिखने के समय से ७० साल ही बाद का।

† 'सबरस' (सम्पादक—श्रीराम शर्मा, हैदराबाद, १९५५ ई०) पृष्ठ १३ से तुलना करें।

५. नगर, ६. बुद्धि, ७. बिना, ८. कण, अणु, ९. आज्ञा देने, १०. जो, ११. दोनों लोक, १२. पुत्र, १३. ओस, दिवस, १४. लोकशरण, १५. सेना-स्वामी, १६. भगवत्छाया, १७. विचार, १८. विद्याओं, कलाओं, १९. बैठाया।

+ वहीं पृ० २३, २४।

२०. सुघर, २१. बिना, २२. क्षण, २३. न्याय, २४. होगा (पं० गु०)।

शराब पिया, तो गुनहगार[१] न होसी। पादशाहाँ कूँ खुदा ने प्यार कर कुछ दिया है, दुनिया का सवाद[२] पादशाहों खातिर पैदा किया है।...पादशाहां खुशी पर आये, तो खलक[३] कूँ बी खुशी भाये। हर एक कोई दो प्याले पिया, पादशाहाँ कूँ दुआ दिया। दो देस की दुनिया महजूज[४] हो जिया। जान ताज़ा, ईमान ताज़ा तो सब जहान[५] ताज़ा।...जाँ आशिक[६] होर माशूक[७] अछै[८], वहाँ शराब न अछै तो बड़ा हैफ[९], जो नमक नें सो खाना।... जो कोई आशिक है, उसे शराब भौत भाता। शराब आशिक होर माशूक के दिल के शक दूर करता, शराब दोनों कूँ मुहब्बत में चूर करता। शराब पिये पछी दिल में कुछ खिलाफ नै अछता[१०]। शराब पिये वगैर दिल साफ न अछता। दुनिया का लज्ज़त, तो पी शराब। शराब न अछै तो आशिकां के अंगे दुनिया सब खराब। शराब हरगिज गम[११] कूँ आने नै देता। शराब खुशी कूँ दिल में ते जाने नें देता। अगर मँगता[१२] है गम कूँ मारे, तो शराब पी। अगर मँगता है जफ़ा[१३] तेरे अंगे[१४] हारे, तो शराब पी। अगर मँगता है सखावत[१५] पर आने, तो शराब पी। अगर मँगता है माशूक सौं हिज्र[१६] पाने, तो शराब पी। अगर मंगता है हुस्न का नज़ारा करे, तो शराब पी। दिल में मुहब्बत भरे, तो शराब पी। ऊंचा चडने मंगता है, तो शराब पी। खुदा कूँ अपडने[१७] मंगता है, तो शराब पी *।...

आशिक की इबादत[१८] हुस्न[१९] देखना, राग सुनना, शराब पीना है। आशिक जे मैखाने[२०] में पाया, सो काबे में ज़ाहिद[२१] के हात नैं आया। आशिकी मुसाहिबत होर यारी[२२] है, इबादत बंदगी होर[२३] खिदमतगारी है। महबूबाँ[२४] है सो साहब[२५] की गोद में सोते, चाकर हैं सो हात जोडकर खडे होते।†...

(ग) अमृतसंजीवनी की खोज—

उस वक्त एकाएक ऐन मस्ती[२६] में बादा-परस्ती[२७] में... एक क़दीम नदीम[२८] मौत लताफत[२९] सों,...एक ताज़े **आबेहयात**[३०] का किस्सा पड्या,...सो बोल्या कि जो कोई यो ताज़ा **आबेहयात** पावेगा, दूसरा **खिज्र**[३१] होयेंगा, इस जग में सदा जीवेंगा।...

इस आबेहयात की बात का असर[३२] मौत धात[३३] **दिल** बादशाह... के सिर चढ्या। ...नाँव सुनते च[३४] दिल हुआ बेताब। वास आने च में चड्या शराब।

आशिक पर सबूरी[३५] है हराम। सबूरी का नाँव लेते जीव जावे, आशिक ते सबूरी क्योंकर आवे? बेसबरी[३६] आशिक की सिफ़त[३७], बेताबी आशिक की इज्ज़त, तिलमिलाना आशिक का काम, जलना आलिश का इहतराम[३८]।...

---

१. अपराधी, २. आस्वाद, ज्ञान, ३. दुनिया, ४. स्वाद पाया, ५. दुनिया, ६. प्रेमी, ७. प्रियतमा, ८. रहे, ९. अफसोस, १०. रहता, ११. रंज, १२. चाहता, १३. जुल्म, १४. आगे, १५. दानशीलता, १६. वियोग, विरह, १७. पाना।

* वहीं, पृ० २९।

१८. भक्ति, १९. सौन्दर्य, २०. मद्यशाला, २१. संयमी, २२. दोस्ती, २३. और, २४. प्रेमिका, २५. स्वामी।

† वहीं, पृ० ३१।

२६. मतवालापन, २७. मद्यसेवा, २८. प्रतिहार, २९. कोमलता, ३०. अमृतसंजीवनी, ३१. जलदेवता, ३२. प्रभाव, ३३. भाँति, ३४. ही, ३५. सन्तोष, ३६. असन्तोष, ३७. गुण, ३८. सम्मान।

दिल पादशाह....मौत बेदिल हुआ। दिल पर काम मुश्किल हुआ। शहर सब हैरान, घर पर लोकाँ परेशान। जेते जितना दौडे सर-गर्दा[1] होकर सब सिर फोडे। पेशवा, दबीर, अमीर, नजीर, कोई कर नै सकै उसकी तदवीर*।

...दिल बादशाह कूँ...एक जासूस[2] था। उसका नाँव नजर[3], सब ठांव उसका गुज़र[4], सब जागा की मालूम उसे खबर।...अक़ल भौत धरे, नैं होता सो काम करै। कोई न जा सके वहां जावे, कोई खबर नैं ल्याता सो खबर ल्यावै।...सो वो नज़र जासूस दिल... के हुज़ूर[5] आकर...ताज़ीम कर...भौत अदब[6] सो बोल्या, बात का माया खोल्या, कि "ऐ दिल बादशाह...दिलकूँ रख घट[7], तकवा[8] नको सट[9]।...इस काम पर एताल[10] में राजी[11], देख मेरी ज़बानबाजी[12]। मुझे रुखसत[13] दे। इस काम कूँ मैं जाऊंगा, जिधर तिधर धूँढ़[14], तूँ मंगता सो आबेहयात की खबर ल्याऊँगा†।...

...दिल बादशाह...यो बात सुन्या, उमेद[15] के चमन में ते गोद भर भर फूल चुन्या।

मन के चमन[16] में बाव आ, फलके हैं गुँचा[17] आस का।
डाली च पर फूल हंस पड्या, उम्मेद अब है वास का‡॥

...नजर जासूस कूँ शाबाश कह्या,...रजा[18] दिया कि "तूँ जा, यो खुशखबर लेकर बेग आ।...ताखीर[19] नको कर।..."

जासूस नज़र दिल पादशाह आलमपनाह सों बिदा होकर कदम अंगे धर रवाना हुआ, जों बाब कैं उठा कैं गिरया, जागा जागा ढूँढ्या, आलम सब फिरया।...फिरते-फिरते एक शहर में आया। उस शहर के इमारताँ जैसियाँ किसी शहर में कोई आज लग नैं बंधाया। कि उस शहर के आसपास, तमाम फुलवारी, तमाम फूलाँ की बास। लोकां सब बाँके...नेक-नीयत नेक-कर्दार[20], परदेसी कूँ आये-गये कूँ भौत करते प्यार।...

नजर वहां के लोकां ते लिया खबर कि "यो ठांव क्या है, इस शहर का नांव क्या है?" वहां के लोकां हुये एक कोले[21], सब बोले, कि "इस शहर का नाँव आफ़ियत[22], होर इस शहर के पादशाह का नांव नामूस[23]।"...

नजर (नामूहस पादशाह)...सो जाकर मिल्या, अपने काम खातिर भौत बिलबिल्या[24]। नामूस पादशाह उसे देख कर...भौत खुश हुआ। हँस्या, हिल्या, गुँचा था सो खुशी सो जों फूल खिल्या।...उसे अपने नज़दीक बसलाया[25]। पूछ्या कि "तू कौन है, तेरा मकसूद क्या

---

१. धूल फांकता। * 'सबरस', पृ० ३३।

२. गुप्तचर, ३. दृष्टि, ४. गति, ५. सामने, ६. सम्मान, ७. ठीक, ८. षट्कर्म, ९. छोड़, १०. वस्तुतः, ११. स्वीकारी, १२. दाव, १३. छुट्टी, १४. ढूँढना।

† वहीं पृ० ३४, ३५।

१५. आशा, १६. बाग, १७. कली। ‡ वही पृ० ३५। १८. अनुमति, १९. बेर, २०. सुकर्मा, २१. ओर, २२. मंगल, २३. सम्मान, २४. अफसोस, २५. बैठाया।

है, तू काँते आया? . . ."नजर बोल्या कि "ए नामूस बादशाह. . .आबेहयात जो मैं मंगता हूँ, उसी कूँ पछाने, काँ अछैगा, सो खुदा जाने।"

. . .नजर नामूस पादशाह कूँ. . .सलाम कर कुछ कलाम कर चल्या, निशान उस **आबेहयात** का कई नैं पाया कर भौत तिलमिलाया। . . .

जाते-जाते तिलमिलाते-तिलमिलाते हैफ खाते-खाते बाट में देखा, एक डूँगर अजीमुश्शान, दूसरा आसमान, हर एक खाने में उसके चाँद सूरज का मकान। . . .नजर उसकी बुलंदी पर नैं जाती, कचलाती भी फिर-फिर आती। जीव नैं रह्या, उस डूंगर के नजदीक गया। वहां के लोकाँ कूँ पूछ्या कि "इस जागाँ कूँ क्या कते है।" . . .उनों बोले कि "यो डूँगर पर कुहना बूढा अछता है रात-देस, उससे परसन हुआ है परमेस, उसका नांव **जर्क़** मगर होर उसमें कुछ नैं फ़र्क़।

नजर कूँ भौत थी तलब की आस, बाव हो कर डूंगर पर चड गया **जर्क़** के पास। उन कह्या. . ."ऐ पीर, सलाम, साहब. . .तदवीर सलाम।"

उने कह्या—"ऐ जवान, अलैक सलाम्, अलैक सलाम*।"

वैत (पद्य)†—

यो काँका वो काँका यो दोनों हुवाई।
तमाशा अजब है नवी आशनाई॥

जर्क़ कह्या कि—"यहाँ तूँ क्या आया? कौन तुझे यहाँ लाया? कौन तुझे यो बाट दिखलाया? यहाँ क्या है तेरा काम, हैरान हूँ मैं नैं होता फ़ाम[१]।"

नजर अपने दिल की गांठ खोल्या, उसे ताज़े **आबेहयात** का किस्सा बोल्या।

रिजक ने कह्या‡—वह एक चश्मा तू कता[२] सो बहिश्त में है। तूँ उस चश्मा कूँ धूंढता दुनिया मियाने[३], उसका निशान कोई क्या समजे क्या जाने। . . .अगर तुझे होना चाहे यो पानी, तो आशिक़ के अजूबां[४] में है उस पानी की निशानी। आशिक़ की अंखी का पानी क्या है इश्क की खूम। उस पानी ते क्या अजब जो युवा सो जीवता होय। मसीहा का दम उस पानी ते फ़ेज[५] पाया, मसीहा उस पानी ते मुये कूँ जिलाया। . . .उस पानी सो बे-अदबी[६] ना करना, उस पानी सों भौत डरना। यो पानी अगर मेह[७] की मौज उचावे, तिलमें[८] आलम कूँ गुलिस्ता कर दिखलावे। फूलकूँ फुलवाड़ी करे, बाडकूँ बाडी करे, पातकूँ झाड करे, कंकर कूँ पहाड करे। तेरा सखुन[९] मुझे खुशी दिया, तेरी बात में भौत हिज़[१०] किया। . . .तू कह्या सो बात मेरी बातमें है, दो देस बी उस रात में है। तू जो मोती सुट्या में चुन्या, तूँ जो बोल्या सो मैं सुन्या। वले मेरा मुद्दआ कुछ जुदा है, किसते क्या होवेगा हताल खुदा है।

---

* 'सबरस', पृ० ३५।

† वहीं, पृ० ४२।

१. समझ।

‡ वहीं पृ० ४३।

२. कहता, ३. बीच, ४. विचित्र, ५. बरक्कत, ६. अपमान, ७. कृपा, ८. पल में, ९. वचन, १०. स्वाद।

यो वह् वहाँ तें उठ्या, उसकी खिदमत के बन्द मेंते छुट्या। इस कोम पर यों थी क़ज़ा, 'जाता हूँ' कर मँग्या रज़ा। इस फ़िक्र तें चल्या, भौत तिलमिल्या भी अपने काम कूँ बाव होकर जंगले-जंगल चल्या। उस जंगल में...एकाएक कोट नजर आया, आसमाँ पर पड्या था उसका सामाँ। सात ज़मीन उस कोटे के एक तरफ का पाया, हर एक कँगूरा उसकी अर्श[1] का हमसाया[2]। ऐसा कोट दुनिया मैं आज लगन[3] कोई पादशाह न बँधाया।...उस कोट कने[4] आकर वहाँ के लोकाँ की रविश[5] पाकर, पूछ्या कि, "इस कोट का नाँव क्या है, इस कोट के पादशाह का नाँव क्या है* ।"

लोकाँ बोले कि "इस कोट का नाँव है **हिदायत** और इस कोट के पादशाह का नाँव **हिम्मत** ।"

...जासूस नज़र **हिम्मत** पादशाह आलमपनाह...सों जाकर मिल्या।...नजर खातिर वहाँ टुक जम्या, चन्द रोज हिम्मत की खिदमत में गम्या। गमते-गमते वहाँ **हिम्मत** कने एक देस उस ताजे **आबेहयात** की बात कहा।...हिम्मत सुन हँस्या, हँसकर भी रोया, अँझुवाँ सों मुँह धोया, लहू कू पानी में घोल्या होर बोल्या। उस ताजे **आबेहयात** की वाकने, ताकत नैं मुझ मने।...ए नज़र खूब नज़र कर, इस बातते दर गुज़र कर।...भौत लोकाँ इस बाट में आकर जीवाँ गँवाये हैं।...तुटे दिलकूँ जोड़, इस बात का दुंबाला[6] छोड †...

नज़र यो खबर सुन भौत घबड़ा हुआ, चित का बुरा हुआ।...मामला कुछ का कुछ खड्या[7], अँदेशे में पड्या..."**दिल** के उधर देखता हूँ...आशिक काबिल[8] की बात खातिर मैंकाँ आती हैं, पंद[9] किसी की काँ भाती, दोस्ती जाकर दुस्मनी बसाती। **दिल** मेरी बात कूँ काँ मानेगा, अगर बोलूँगा दुश्मन कर जानेगा।...**दिल**के दिल में मेरी है आस, मैं भी अंपड्या[10] हूँ हिम्मत पास।...

...कुछ अँदेशा अँदेश कर कदम कुछ पेश कर हिम्मत कूँ बोल्या..."तूँ बादशाह, तूँ हिम्मत, तूँ फतह[11], तूँ नस्रता। मुझे मेरे काम कूँ हिम्मत दे, हिम्मत की कुछ मत दे।...खुदा खातिर जों-त्यों उस **आबेहयात** काँ है, उसका निशान बोल।...

हिम्मत नज़र कूँ भौत कस्या, पेट पकड पकड कर होग्या। कहा...शाबाश तुझे।...जिसका ज़फ़र ऐसा अछैगा, उसका साहब कैसा अछैगा।...अल्-किस्सा[12] हिम्मत ने नज़र कूँ, इस खुशखबर कूँ खिलवत में ले जाकर अपने नजदीक बसला कर समझाया, मकसूद[13] उसका पाया।...कहा...मशरिक वलायत में...एक बादशाह है,..इश्क[14] उसका नाँव है, हर दिल में उसका ठाँव, सबसों जोड्या किसी सों नैं तोड्या†...।

वह शाह इश्क है यो सब जहाँ उसका है।
सितारे चाँद सूरज आसमाँ उसका है।‡

---

१. भगवदाज्ञा, २. पड़ोसी, ३. तक, ४. पास, ५. ढंग।

* वहीं पृ० ४४। ६. पीछे। † वहीं पृ० ४५।

७. खींचा, ८. योग्य, ९. शिक्षा, १०. तैयार, ११. विजय, १२. संक्षेपतः, १३. अभिप्रेत, १४. प्रेम।

‡ वहीं पृ० ५३।

इश्क़ आग है, जाँ जाय वाँ जले, इश्क़ की आग कूँ कौन सँभाले ? इश्क़ का जीव हुस्न, उस जीव में लाख-लाख गुन, इश्क़ कूँ झाड है हुस्न पानी, हुस्न ते कायम इश्क़ की जिन्दगानी।... इस दोनों च का है शोर घरें घर ठारें ठार। इश्क आशिक, माशूक हुस्न नारी, इश्क़ के माशूक़ दायम सँवारी सिंगारी।...इश्क़ बादशाह...कूँ एक बेटी है, भौत मकबूल[१] भौत खुश-असूल[२]... भौत खुश-रंग, भौत खुश-ढंग। नूर में सूर नें उसके सम, नाजुक नरम, जों फूल जों अवरेशम[३]।... अँखियाँ कूँ घेरे अगर करनाँ, सुध छोड़ दीवाना होकर फिरना। (बैत)...

घर में हँसते निकले अँगन मने फूलाँ झड़े।
आशिक हो कर चाँद और सूरज दरवाजे पर आकर पड़े।*

...नाँव उसका **हुस्न**, किते बोलूँ उसके गुन।...**कोहकाफके** उधर एक शहर है। उस शहर में एक बाग है, कि उस बागकूँ बहिश्त[४] उस बाग रश्क ते दाग है। उसके फूल देखते जीव आवे, उस बागकूँ बहिश्त सों क्यों तश्बीह दिया जावे। सेहन उसका मोतिया सों भर्‌या, जों तारियाँ सों गगन, बहिश्त उसके एक बाग के कोने का चमन।...जिस दिलरुबा शहर में यो दिलाराम बाग है। उस...शहर का नाँव **दीदार**[५] उस दिलराम बाग का लकब **रुखसार**[६]। इस बाग में एक चश्मा है। उस चश्मे का नाँव धन, मनमोहन जगजीवन। भौतेज मीठा जों नवात[७], इस चश्मे है तूँ मँगता सो आबेहयात, उसका सिंगार, जिस पर झूल्या सब संसार।...इश्क़ की बेटी...भौत नाज़ सों, भौत साज़ सों, लटकती, ठमकती, झलकती, झमकती **रुखसार** की फुलवाली में नाज[८], गजमा[९], इश्वा[१०], अदा[११], हरकत[१२] दिलरुबाई[१३], खुशनुमाई[१४], लताफत[१५] ऐसियाँ चाँद जैसियाँ सुघड़ सहेलियाँ सों मिल-मिल, ऐसियाँ रंगीलियाँ, छबीलियाँ मिल-मिल दायम[१६] तमाशे देखती फिरती। बैत†—

आई घन चमकते आँगन में। फूल फिरता है फूल के बन में।...

हिम्मत यो बात कहा, गुम हो रह्या। नजर सुन्या बेसुध हुआ, सिर धुन्या, दोनों हुए बेहोश। बारे बवत कूँ दोनों हुशियार हुए। दोनों खड़े हुए, दोनों हैरान दोनों परेशान, एक का एक देखे मुँ।...

हिम्मत कहा..."मैं कहा सो अंगे आया...। ऐताल मुझे मैं क्या कहूँ न कहुँ तो चुप क्यों रहूँ। तूँ तो भौत दाना[१७] भौत आक़िल है, वल्ले हुशियार...शहर **दीदार** कूँ अंपडना भौत मुश्किल है। बाट में जिन्सकी मेहनत हायल[१८] है।...अंके[१९] एक शहर के नाँव **सुबुकसार**।... एक देव है बादशाह...उसका नाँव **रक़ीब**...। बले इश्क़ बादशाह फरमाये सो **रक़ीब**[२०] करे।

---

१. स्वीकृत, २. सिद्धान्त, ३. उपमा।

*** वहीं, पृ० ५४।**

४. स्वर्ग, ५. दर्शन, ६. गाल, ७. फल, ८. गर्व, ९. हाव-भाव, १०. भाव-भंगी, ११. ढंग, १२. चाल, १३. मनोहारिता, १४. शोभा, १५. कोमलता, १६. सदा।

† वहीं, पृ० ५५।

१७. चतुर, १८. व्यवधायक, १९. आगे, २०. प्रतिद्वन्द्वी।

दिलरुबा शहर **दीदार** का निगहबान, अगयार कूँ वाँ नै देता आन, हरगिज किसी ते नैं डरता। जो कोई आता उसे मना करता।...जो कोई आता उससों झगड़ता, कुत्ता होकर लड-लड पड़्त्या। जाँ ऐसा आदमी अछै नित, कुत्ता रखने की वहाँ क्या हाजत? न भले ते डरेगा न बुरे ते डरैगा, **एक रकीब** हजार कुत्ते का काम करेगा।...तू अगर उस शहर **सुबुकसारते**...खलासी पावेगा, होर खुदा ले जावेगा, तो...शहर दीदार में जावेगा। याद अछो, वहाँ मेरा एक भाई है, एक माई-जाई है, **क़ामत** उसका नाम, **इस्तकामत**[1] उसका काम, दिलरुबा शहर दीदार में उसका मुक़ाम। क़बूल सूरत मदनमूरत, बुलंद-बाला, भोते च आला, दिलकु लगे, जीव कूँ ठगे, सुध छीने, बुध छीने...क़रार कूँ बेक़रार करे, इन्तज़ार कूँ प्यार करै, सबूरी कूँ लूट लेवे, इज्तिराब[2] कूँ कूवत देवे।...क़ामत मैं वो एक आफ़त है, आशिकों के दिलाँ का ज्याफ़त[3] है। उस क़ामत कूँ...तेरी सिफ़ारिश खातिर एक किताबत[4] लिख देता हुँ, तेरे किस्से की हिकायत लिख देता हूँ। मेरा नाँव ले, यो किताबत उसके हाथ दे, अल्बत्ता तुझसों कुछ मुहब्बत धरैगा, मुरव्वत करेगा।...

(घ) **सुबुकसार में—**

तूँ कहाँ का है, इस जागाँ तूँ क्यों आया? इस शहर की बाट तूँ क्यों पाया? तुझे कौन दिखलाया?

नज़र...समझाया कि यो तुरफ़ा वक्त है, काम भौत सख्त है। यहाँ अक़ल न बिसरना, अँदेश कर कुछ काम करना।...रक़ीब रुसियाह कूँ...सलाम कर कलाम[5] कर चुप नहीं रह्या। क्या कि, "मैं हकीम हूँ, भौत मातवर हूँ, सब हिकमत ते बा-खबर हूँ...। बेजान कूँ देऊँगा जान, शागिर्द है मेरा अफ़लातूँ, अरस्तू, बूअली होर लुक़मान।...खुदा कूँ भाया जो मुझे इस मुल्क में लाया। अगर हिकमत पर मैं ध्यान धरूँगा, तो माटी कूँ सुन्ना करूँगा।...**बगैर पुट बगैर** अग, पीतल कूँ कर दिखलाऊँगा सुन्ने ते ख़ास।"

हिम्मत ने नज़र कूँ उस आबे-हयात का निशान दिया।...नज़र हिम्मत कने रज़ा मंग कर उमँगकर भौत मुहब्बत सों...मशरिक[6] के मुल्क के उधर रुख किया।...नज़र कूँ पकड़्या उचाट, यही अपे और अपनी बाट। देश चलते-चलते तलमलते-तलमलते अपने दिलकूँ तकवा दिया, समझाया। एक देस... उस शहर सुबुक्सार में आया। रकीब बादशाह के लोकाँ...देख, कि यो आदमी इस शहर में नवा आया है,...जासूस है, भेदी है। चोर है आया, इस शहर का क्या माया है? बैत—

पराये शहर में हरगिज़, खुदा किसे न ले जाये।
अगर हज़ार भला है वी, उसकूँ कौन पतियाये*।

...पकड कर जकड कर रक़ीब बादशाह...कने जने मिलकर ल्याये।

---

१. बुज़ुर्ता, २. अधीरता, ३. न्योता, भोज, ४. लेख, ५. वचन, ६. पूर्व।
* वहीं, पृ० ५८।

रकीब...सुन्ने का तालिब[1] था।...नज़र के हुज़ूर उसके मूँ में थे। यां निकाल्या कि "तेरे बातां सुन मैं रहा हूँ आस कर, ऐताल जो तूँ कहा त्यों सुना रास[2] कर"।...

नजर जवाब दिया कि "उस सुन्ने की तरकीब कूँ कुछ-कुछ दारुवाँ का भौत दरकार है, मअदन[3] उस दारुवाँ[4] का दिलरुबा शहर **दीदार** है, होर गुल्शन रुख़सार है।"

रकीब...बोल्या..."अगर सुन्ना रास करना मुयस्सर है, शहर **दीदार** होर गुल्शन रुख़सार भी नज़दीक बल्कि नज़दीकतर है। खुदा क़ादिर[5] है, जो कुछ तूँ मँगता सो सब हाज़िर है। हमें तुमें मिलकर जायें, जो कुछ मुस्तैदी हो शहर दीदार ल्यायें।"

उने बी कहा खूब, इने भी कहा भौत खूब, मतलब पर आया मतलूब[6]। बैत—

ज़बाँ एक थी दोनों का दिल जुदा था।।
समजता हाल उनका सो खुदा था*।।

रकीब...होर नज़र...दोनों मिलकर एक दिल कर...शहर **दीदार** उधर चले। दिल में कोड-कपट मूँ पर दोनों भले...

अगर कोई मरद या स्तिरी है।
दुनिया में सब दग़ाबाज़ी भरी है†।।

वो **रकीब** नापाक यो **नजर सीनाचाक**...दोनों आये, दीदियाँ कूँ दूर ते शहर **दीदार** का तमाशा देख लाये।...क़ामत जो **नजर** कूँ रक़ीब की सँगात देखा, चोरीसों उसके अहवाल की बात पूछ्या।...नज़र अपना किस्सा क़ामत[7] कूँ बोल्या, **हिम्मत** ने मकतूब[8] लिखा था, सो **कामत** के अंगे खोल्या। **कामत** उस मकतूब का मज्मून[9] ख़ातिर ल्याया। **कामत** कूँ एक गुलाम था, **सीमसाक** उसका नाम था। उसे बोल्या कि "नज़र कूँ किधर तो भी पिनूहाँ[10] कर, जीवदान दे मुश्किल इसका आसान कर, कि रक़ीब जितना धूँढे, तो बी इसे क्यों न पावे, रक़ीब के हाथ में नज़र फिर न जावे‡।"

गुलाम ने...नज़र कूँ फर्श...के आसरे छिपाया, जे कोई न पावे उसका माया। **रकीब** देखता है, जो नज़र नैं, जिधर धूँढता बी किधर नैं।...रक़ीब गुमराह रुसियाह परेशान फिकर मैं चौक्या।...आखिर कुछ तदवीर नै दिसी। ला-इलाज नाखुश होकर अपने शहर उधर फिरया।...नज़र रक़ीब के हात ते खलासी पाया, खुश होकर क़ामत कने आया... **रकीब** की मेहनत ते आसूदा[11] हुआ, तेरी मेहर[12] ...का मुजे आज़मूदा[13] हुआ। तू मुझपर लै शफ़क्कत[14] लै प्यार किया, मुझपर तू ने उपकार किया। यो काम करने तू च सके, खुदा तुझे सलामत रखे। मुझे लग्या है शहर दीदार का ख्याल, रज़ा दे ऐताल[15]। भौत जरूर है यो काम, जरूर है मेरा खुदा च कूँ फ़ाम[16]§।...

---

१. इच्छुक, २. ठीक, ३. खान, ४. दवा, ५. शक्तिमान, ६. इच्छित।
* वहीं, पृ० ५९। † वही, पृ० ६२।
७. स्थिरता, ८. पत्र, ९ विषय., १०. छिपा। ‡ वहीं, पृ० ६४।
११. मनभरा, १२. मेहरबानी, १३. परीक्षित, १४. दया, १५. अभी, १६. समझ। § वहीं, पृ० ६५।

कामत कहा. . ."ऐ वल्लाह, बि-स्मिल्लाह. . .खुदा तुझे तेरी मुराद कूँ अँपडावै, जो कुछ तू मँगता सो खुदाते पावै*।. . ."

(ङ) हुस्न के पास—

नजर[1] क़ामत सों बिदा होकर, तस्लीम[2] कर, सिर पर हात धर-कर, अपने ठारते हिल्या। चल्या, सो देखने उस शहर दीदार कूँ, उस रंग भरे गुल्जार कूँ।. . .बारे हजार मशक्कत सों हजार मेहनत सों शहर दीदार कूँ आया, नज़र की जीव भौत खुशी पाया। उस शहर दीदार में देख्या **रुखसार**, अजायब गुल्जार, मगर नवीं बहिश्त पैदा किया है परवर्दगार[3], झाडाँ-डालियाँ सब फूलाँ सों बार, फूलाँ सब नादिर सब अचंबा सब औतार[4]।†

बैत—सिफ़त उस बाग की गर कोई सुनावे।
अजब क्या रश्क जो जन्नत[5] कूँ आवे।।

मक़बूल[6] वहाँ हर फूल फूलता, पातोंपात जीव बहलाना, आशिक़ देख वहाँ जीव खोना, हर फूल में लाक तिलिस्म[7] लाक टोना।. . .नज़र कूँ ऐसी जागा परते गुज़रना भौत मुश्किल हुआ। **नजर** ख्वार आवारा, कुछ नैं दिसता बेचारा‡।

हुस्न नार औतार[8] खुशदीदार खुश-गुफ्तार[9] खुश-रफ्तार[10], दीदियाँ[11] का सिंगार, दिल का आधार, फूल डाली ते खूब लटकती, चलने में हंसकूँ हटकती[12], रावी[13] ते मीठी बोले बात, आवाज ते कुमराँ कूँ करे शहमात[14], कँवल के फूल की फँकुड़ियाँ[15] जैसे हात। चमन में फूल शरमे हुजूर[16], लाज ते आसमान पर चडे चाँद सूर। मस्त हत्ती ते मगरूर[17] माती माती, किसे खातिर[18] नै ल्याती, बाल जानो काले नाग, गाल जानो इश्क़ की आग।

बैत—यो मोहन धन अजायब[19] मोहनी है।
सुरज उसके दरस का दरसनी है।।

. . .उसकियाँ अँखियाँ जानो लाले, जानो शराब के प्याले। दाँताँ देख मोती के दाने, घरे घर फिर कर होते दीवाने§।. . .

सो उस दिलरुबा नार कूँ, दीदियाँ के सिंघार कूँ, चतुर चौसार कूँ, एक सहेली थी, भौत छबीली थी, रात रंगीली थी। नाँव उसका जुल्फ़ था, लट, साँवली निपट, रंगकूँ काली, घूँगरवाली। **कामत** के गुलजार का होर शहर **दीदार** का तमाशा देखती थी, जो व जा देखती थीं, अब व हवा देखती थी, तमाशे सों जीव लायी थी, आसाइश[20] पाई थी। सो उस वक्त धूप की गरमी थी, खपनी नरमी थी, कमर के छाँव तले आई थी। एकाएक **नजर** पर उसकी

*** वहीं, पृ० ६६।**

१. वृष्टि, २. नमस्कार, ३. पालनहार, ४. अनर्घ। † वहीं, पृष्ठ ६७।

५. स्वर्ग, ६. पसंद, ७. जादू। ‡ वहीं, पृष्ठ ६८।

८. सुदर्शनी, ९. सुवचनी, १०. सुगमनी, ११. दृष्टि, १२. हटाती, १३. लजाती, १४. पराजित, १५. पंखुड़ियाँ, १६. सामने, १७. अभिमानी, १८. दिल, १९. अद्भुत। § वहीं, पृष्ठ ६९। २०. आराम।

नजर पड़ी, बैठी थी, सो बिचककर उठ खड़ी।...**नजर** (बोली)—कूँ "तू कौन, किधर ते आया इस बाग की खबर तूं क्यों पाया...तू परेशान सा दिसता, हैरान सा दिसता, कुछ गँवा लिया त्यों दिसता, किसी की चोरी की त्यों दिसता।"

दोनों हैरान दोनों सरगर्दान[1], सकते नैं है एकस कूँ[2] एक पिछान। **नजर** की माँ थी **हिन्दुस्तानी** स्याहपेशानी[3], बाप था **तुर्किस्तानी**। **लट** (जुल्फ़) सों लटपट होकर यार निपट होकर आशनाई व हम्शहरी[4] का इन्तजार किया।

इस वक्त बारे अपनी दस्तगीरी कूँ ठार, जीव लगाकर वालेवाल, बोल्या उसने अहवाल... कि यां लग आकर यों पड्या हूँ, क्या करूँ तदवीर नहीं, अड्या हूँ।...लटकूँ उसकी परेशानगी पर उसकी हैरानगी पर...मेहर[5] आई, उसे गले लाई, कही..."ए भाई, खुदा है कुछ गम न कर, खुश अछ अपने खुदा कूँ नको विसर*...।"

यों बोल बोल **लट** भौत लम्बी भौत बड़ी वहाँ ते पेचाँ खाते-खाते कमर पर चड़ी। वहाँ ते वो चार तार सुट **नजर** कूँ कमर पर ल्याई। कही..."ऐताल खुशी, किधर जाता उधर जा भाई†।"

नजर लटकूँ भौत भली कर जान्या, भौत उसका उपकार मान्या, हिम्मत मंग्या, रुखसत मंग्या। लटने प्यार सों अपने लट में ते चट काड कर थोडे दे बोली..."कैं तुजे कुछ काम मुश्किल पडे, तो यो बाल आग पर जाल, मैं हाजिर हूँगी उस ठार, पेलाड[6] काम करनहार परवर्दिगार। ...डर नको, इस वक्त पर हिम्मत विसर नको‡।"

लट (जुल्फ़) सों बिदा होकर नजर वहाँ ते शहर दीदार के उधर चलने सकूँ कदम किया, खुश हुआ होर गम कम किया। वारे वेग च शहर **दीदार में रुखसार** के गुलजार में...आग्या। ...एकाएक वहाँ कितेक हब्शी बच्चे नजर **नजर** के पडे।...जितने उतने भौत सुहाने, जानो तिल के दाने,...हर एक जानो शराब के बुन्द।...**नजर** पूछ्या कि "तुमें कौन हैं, क्या नाम धरते हैं, क्या काम करते हैं§?"

उनों बोले कि, "**हुस्न** नार, आलम के दिलों का अधार...**हब्श** होर **जंगबारते** भौत मंगाये ये। सो एक तिल धरती है।...वह तिल आफत है, बला है, आशिकाँ के दिलों में उसका गलवला है। सहेर[7] टोने वो एक...आशिकाँ पर करता जुल्म, सब आशिकाँ होते यहाँ हैरान होर गुम। जिस आशिक कूँ उनके मारया वो...न कैं दाद मंग्या न कैं पुकारया। भौत छबीला बड़ा हटीला (है वो तिल), हमें सब उसके गुलामाँ हैं, चमने-चमन पानी देते फिरते हैं। झाड, व पात, फल यहाँ का है हमारे हवाले, यो फल झाडाँ सब पानी देते हमीं पाले।"...

नज़र कूँ एक भाई था भौत खुशफ़ाम[8] ग़मज़ा उसका नाम। न्हानपन ते च जुदा पड्या था, ऐसा कुछ किस्सा खड्या था। आखिर हुस्न की खिदमत उसे रोजी हुई।...कजारा[9] यों

---

१. परेशाँ, २. एक्का एक, ३. काले ललाटवाली, ४. एक नगर का निवासी, स्वदेशवासी, ५. दया। *पृ० ७०। †पृ० ७१। ६. प्रथम। ‡पृ० ७२। §पृ० ७४।
७. जादू, ८. सुरंग, ९. संयोग।

हुआ, जिस वक्त कि **नजर रुखसार** के गुलज़ार का नज़ारा करता था,.. **गमजा नरगिसजार** में ..मस्त फिरता था,...सब ठार **नजर** करता था। नज़र कूँ नज़र सों देखा। गमज़ा नैं पिछान्या, कोई बेगा है कर जान्या। हडबडा उठ्या। अपना लहो आपे घट्या,उस घर उचाया कि "तू कौन है इस बाग में आया?" गमज़ा मस्त गुस्से सों हमदस्त नज़र कूँ मारने के खातिर नज़र की अँखियाँ बाँध्या, तन पर के कपडे उतारघा। मँगता था कि मारे, वले नैं मारया, कुछ दिल में विचारया। न्हानपन में **नजर** होर गमज़े की माँ ने कुछ फिक्र की थी, दोनों को लाल दी थी बाजू कूँ बाँदने मेहर...मुहब्बत सों नाँधने।... गमज़े ने नज़र के बाजू का वो लाल पिछान्या, कि "यो तो अपना भाई है... अपस में होर इसमें क्या जुदाई है।" भौत रोया गले लगाया। ...बोल्या, यो क़िस्सा किसे होगा फ़ाम, खुदा के ऐसे हैं काम? भौत इज्जत सो भौत हुर्मत सों गमज़े ने नज़र कूँ अपने घर लेकर गया, दिलासा दिया। जो तवाज़ा[1] करना था त्यों तवाज़ा किया।...

हुस्न नार गुल-अज़ार[2] ने, अँखियाँ के सिंगारने, दिल के आधार ने, सुनी कि ग़मज़े का भाई जो न्हनपनते बिछुड्या था, सो मिल्या, गमज़े के दिल का गुंचा जों फ़ूल खिल्या।... हुस्न नार चतुर चौसार, साहेब-सूरत[3], साहेब-दीदार[4] दूसरे देस गमज़े कूँ बुलाई, कही... "मैं सुनी हूँ कि भौत देसाँ बिछड्या था सो मिल्या है तेरा भाई। क्या नाम धरता है। क्या काम करता है?"

गमज़ा बोल्या कि—"मेरे भाई का नाँव नज़र, अजब मर्द है बाखबर।"

बोली कि, "क्या हुनर जानता है?"

बोल्या कि, "लाल, मानिक, हीरे, रतन, खूब पिछानता है*।"

हुस्न नार दिल-परवार[5] दिलदार जीव के आधार पास बड़े मोल का भौत तोल का अजब एक जवाहर था, कि किसी बादशाह के खजाने में वैसा जवाहर न था।...बोली कि "मेरे दिल में भौत देसाँ में यो था। खबर लेती थी जा-ब-जा कि कोई मर्द खास पैदा होये, कि जवाहर कूँ जाने, जवाहर की क़दर पिछाने।"...

यो बात हुये पछीं गमज़े ने नज़र कूँ दुसरे देस हुस्न के हुज़ूर लाया। नज़र आया, नज़र का रविश हुस्न में भौत भाया। नज़र की नज़र हुस्न पर पड़ी, हुस्न की नज़र नज़र पर पड़ी। सलाम-अलैक, अलैक-सलाम, ज्यों दुनिया की रविश था, त्यों चला दुनिया का काम†। बैत—

चतुर था गया बेग मजलिस कूँ काम।
रिझाकर लेना दिल चतुर का है काम‡।।

---

१. सम्मान।
२. गाल, ३. शोभावान्, ४. दर्शनीय।
* वहीं, पृष्ठ ७३।
५. हृदयपोषक।
† वहीं, पृष्ठ ७४।
‡ वहीं, पृष्ठ ७४।

हुस्न धन मनमोहन जग-जीवन इल्म की जों जों बूझी बात, नज़र त्यों-त्यों एक-एक बात कूं कहा सौ-सौ धात। छबीली नार रंगीली सेहरकार[1] वो बात सुन हुई शहमात[2]।...हुस्न की बात से दुखिया का दुख जावे, मूँ देखते दिल में है, मामूरत है। खजानेदार बी वेगे च धाया। जो सूरत हुस्न धन मनमोहन मंगी सो लेकर आया, दिखलाया। नज़र की जो उस सूरत पर नज़र पड़ी, हैरान हुआ।...कह्या—मनहरन मूरत यो आशनाई[3] की सूरत मुझे भौत भाई, वले यो सूरत यहाँ क्यों आई? यो पाक सूरत औतार मूरत शाम के पादशाह की है, आलम तमाम के बादशाह की है। इस सूरत के साहेब का नाँव दिल।...नज़र जगा के पर्दे खोल्या, छिपियाँ बाताँ बोल्या। हुस्न यो स्वाद-भरियाँ बाताँ सुन कुछ फिकर दिल पर ल्यायी, **दिल** पिघलाई आशिक़ हुई, **दिल** परते उड गई हुई।*

बैत—हुस्न पर दिल भूल्या दिल हुस्न ऊपर।
पड्या अब काम मुश्किल हुस्न ऊपर।।†
हुस्न कूं दिल का लग्या ध्यान, दिल हुस्न का हुआ परान। ‡

ग़ज़ल—सहेली यार बिछुड्या है मुझे वो याद आता है।
विसर नैं सकती एक तिल म्याने वो सौ बार याद आता।।
जहाँ मैं देखती हूँ वहाँ मुझे उसका च मूँ दिसता।
वही बसता है दिल में वो च ठारे ठार याद आता।।

खाना नैं भाता, पानी नैं भाता, दिल की खातिर हुस्न की जीव जाता।...

हुस्न धन मनमोहन जगजीवन दिल खोली। **दिल** पर जो आशिक़ हुई थी, सो कह कर "मुझे दिल पर आशिक़ किया है, त्यों च ऐताल उसके मिलने की बी फिक्र कर। खुदा तुझे फ़ुर्सत दिया है। मुझे दिल पर आशिक़ करने तुझे आता, दिलकूं मुझपर आशिक़ किया, तो तेरा क्या जाता?...जे कोई चतुर है जे कोई सुजान है, सो तुजे पहिचानता है। तू यों किया, सो वों बी करने जानता है।...

नज़र बोल्या × —"ऐ हुस्न जगजीवन मनहरन, मनमोहन...जीवाँ की प्यारी दिलाँ कूं आराम देनहारी।...दिल लेना हात भौत लेना मुश्किल है। दिल बादशाह, दिल आप भाता, दिलसों दिल मिले बगैर दिल हात नैं आता। दिल तो मिले, जो दिल कूं दिल मिला जाने, जे कोई दिल सों दिल मिलावे दिल कूं पिछानै।...ऐ वन की प्यारी, ऐ नादिर सुन्दरी, ऐ दुनिया के सरग की अपछरी, ऐ गुनवन्ती गुनभरी, तूं दिल लाई है, तुझे भौत हवस आई है। तूं हुस्न, तुजे दिल सों दिल लाना सुहाता है, दिल कूं भी हुस्न भौत भाता है। वले मैं क्यों कर तुजे दिल सों मिलाऊँ? मैं दिल कूं क्यों तेरे कने ल्याऊँ। मैं तुजे क्यों दिखलाऊँ? एकाएक क्यों ल्याया जात है? क्यों मिलाया जाता है?...दिलकूं तेरे कने ल्याना है, सो खूने-जिगर खाना है, एक पाद-

१. जादूगर, २. पराजित, ३. मित्रता।
* वहीं, पृष्ठ ७५।
† वहीं, पृष्ठ ७५।
‡ वहीं, पृष्ठ ७६।
× वहीं, पृष्ठ ७९।

शाही कूँ उलटाना है, एक पादशाही में ख़लल आना है।...खतर है, जिव का डर है। अकल पादशाह जो दिल बादशाह साहेबसिपाह का बाप, उन्ने दिलपादशाह कूँ तनके कोट में असीर[1] किया है, कैं ना जावे कर तदबीर किया है। न किधर जान देता, न किधर आन देता, कि **दिल** आशिक है,...क्या जाने क्या करेगा ?...(दिल) उस बाप के हुक्म में गिरिफ्तार है, अपने भाते में नहीं बे-इख़्तियार है। दिल हज़ार-हज़ार जागा फिरने कूँ तिलमिलता, वले वो बाप है। क्या करेगा, बाप सों कुछ नहीं चलता। माँ-बाप मजाज़ी ख़ुदा, उनों के हुक्म सों क्यों होना जुदा। उनों दुनिया में ले आये, उनों परवरिश किये, उनों बढ़ाये। उनों सों बेअदबी[2] क्यों करया जावे ? बड़ा मक्का बड़ा मदीना सो मा-बाप। सुबा उठ उनों का मूँ देखे तो झड़ते सब पाप। अगर खिदमत में अपना जनम खोयेगा, तो बी मा-बाप का उतराई कोई क्या होयेगा।...

आज बरसाँ हुये।..**दिल** कूँ आबे-हयात[3] की प्यास लगी है, प्यास पकड़्या है...बहुत आस लगी है।..अगर कोई तूँ नजदीक का आदमी देवेंगी मेरी संघात, होर वो आबे-हयातकाँ है, सो बोलेगी बात, तो मैं जाकर समझाकर **दिलकूं** तिल[4] में राम[5] करूँगा, तेरी खातिर यो काम करूँगा, तेरा बी काम होता है, उसे बी आराम होता, मेरा बी नाम होता है...।

हुस्न धन मनमोहन जगजीवन एक गुलाम धरती थी, कि वो एक पल में मश्रिक[6] होर मग़रिब[7] में फिर आवे, आसमान, जमीन, अर्शों कुर्सी की खबर ल्यावे। वेगी में भौत मशहूर, शरम हुजूर, सूरतनवीसी[8] के काम में तमाम ख़्याल उसका नाम, चतुर चौमार, हुस्न का आईनादार, हर एक काम में उसका आड था।

बारे **हुस्न** धन मनमोहन के एक याकूत की अंगुश्तरी थी। उस आबेहयात के चश्मे पर मुहर कड़ी थी। हुस्न हूर[9] ने अँखिया के नूर ने दिल कूँ बुलाने ख़ातिर वो अंगुश्तरी दे **ख्याल** होर नज़र के हात अपने जिव की जो कुछ थी सो बोली बात कि, "आबे-हयात का यह मुहर निशान है। लेकर जाओ दिखलाओ होर **दिल** कूँ मुझ लग ज्यों-त्यों लेकर आओ*।"

हुस्न यों मँगती है जो दिल कूँ बुलाया।
दिल भोला भूल्या सो क्यों न आया।।

ख्याल होर **नजर** हुस्न कनेते रज़ा लेकर दुआ देकर **तन** के शहर कूँ चले।...केतेके देसाँ कूँ चलते-चलते शहर में आये। **दिल** पादशाह का दीदार पाये। नज़र खुशखबर ल्या तस्लीम[10] कर गुज़रया। सो क़िस्सा बयान किया। हाल हक़ीक़ च जो कुछ था, सो सब अयाँ[11] किया।...दिल नज़र कूँ अपने हमराज़[12] किया, भौत सरफ़राज़[13] किया, हज़ार-हज़ार शाबाश दिया, गले लाया। कह्या—"मर्दां जो हैं सो हिम्मत करते हैं, ज्यों बोलते हैं त्यों च करते हैं।... दिल रो-रो कर हँस-हँस कर यो च बात पूछ्या, केता वक्त लग योंच फिर-फिर कर योंच बात

---

१. कैदी, २. असम्मान, ३. जीवन, ४. पल, ५. आराम, ६. पूर्व, ७. पश्चिम, ८. चित्रकारी, ९. अप्सरा। * वहीं, पृष्ठ ९७। १०. सलाम, ११. प्रकट, १२. रहस्यज्ञ, १३. सुभागा।

पूछ्या। उसका बस होय तो सारा देस सारी रात पूछता अछे यो बात।...चाखी सो जानके नहीं चाख्या सो क्या पिछाने।...

आखिर ख्याल होर नज़र दोनों मिलकर एक दिल कर वो याकूत की अंगुश्तरी का निशान कि उस परी ने उन हूर कने आली[1] इस्त्री ने, उन गुनवन्ती गुनभरी ने दी थी, सो दिल के हाथ में दिये, खि़दमत मुजरा[2] किये। दिल वो अँगूठी देख चूम-चाट सिर चढ़ाया।...नज़र ने... जीव के जिगर ने बोल्या कि—"ऐ दिल बादशाह ऐती मशक्क़त ऐती मेहनत मैं इस खातिर किया कि तूं पिछाने तूं मुझे माने। मेरा था सो मैं किया, ऐताल तेरा तूं जाने*।...

दिल पादशाह ने बोल्या कि, "ऐ नज़र...जो कुछ बोलता है, सो खूब बोलता है। मैं बी जानता हूँ..., ज्यों तेरा मँगता है दिल, वों च तेरी मुराद होयेगी हासिल।...माल क्या तुजते ज्यास्त है।...माल खर्च करने कूँ है न कि खाली सन्दूक में भरने कूँ है। मर्द वो जो खुदा दिया सो माल अपे खरचे, अपना नाँव जगावे, न कि यो माल छोड़ जावे। दुनिया दो देस का मेहमान ठीक पिछान, नाँव कर ले, कुछ काम कर ले†।"...

दिल के दिल में भरी थी आस, उस याक़ूत की अंगुश्तरी[3] ते आने लगी आबेहयात की बास। दिल के दिल में जीव आया, ख्याल कूँ नज़दीक बुलाया। पूछा कि—..."तूं क्या काम करता है? क्या हुनर धरता है‡?"...

ख्याल बोल्या कि—"मैं नक्क़ाश हूँ सूरतनवीस मेरा नाँव है, विचित्र हूँ चित्र चित्तरना मेरा काम है। ऐसा चित्र चितरूँ, जो देखे सुध न रहे, जो कोई देखे सो शाबाश कहे।"...

दिल कह्या..."क्या चितरना सो चितर, देखें तेरा हुनर।"

ख्याल खुश-हाल होकर हात में ले कलम उसी दम मनमोहन की सूरत, जगजीवन की मूरत, हुस्न घन की सूरत लिखकर दिखलाया। दिल ऐते च उस हुस्न की अजायब सूरत पर, मनहर मूरत पर आशिक़ हुआ वो नक़श भाया। उस नक़श कूँ जिव लाया, सुध खोया, आहनालें भरने लग्या, दीवानी-दीवानी चालें करने लग्या। अकल सुट्या, कुछ था सो कुछ हुआ।..."हुस्न हुस्न" यो च लगी थी उसकी धुन§।...

आखिर ख्याल नज़र सों विचार कर दिल शहर दीदार सों अज्म[4] किया।...उस वक्त दिल पास एक वज़ीर था, वहम उसका नाम, भरम उसका काम।...उनने सुन्या कि दिल एताल जाता है, आप दिल भाता है।...ख्याल होर नज़र की बात कूँ लगेगा, तो क्या हमारे हातकूँ लगेगा। भौत च पकड़्या है इज्तराब[5], आखिर मुल्क सब करे खराब। पर्वा नहीं करता ताज होर तख्त का, क्या जाने क्या लिखा है बख्त का। बेग-बेग वो अक़ल पादशाह कने जाकर जिव लाकर उन चोरने उन हरामखोर ने चाडी[6] खाया, पछाड़ी खाया, अँखियों में पानी ल्याया, सब खोलकर कह्या था, सो ऐंताल आया है, फ़ितना[7] उचाया है। इश्क़ पादशाह की बादशाही में ते एक घर-घरालू दगाबाज़ ख्याल नाम नक्क़ाश कूँ संघात ल्याया है। यो दोनों जने मिलकर मँगते हैं, जो

१. बड़ी, २. उपस्थिति। * वहीं, पृष्ठ ९८।
† वहीं, पृ० ९९।
३. अंगठी। ‡ वहीं, पृ० १००।
§ वहीं, पृ० १०१। ४. संकल्प, ५. अधीरता, ६. चुगली, ७. संकट।

दिल कूँ बीदार के शहर के उधर ले जावें, इस भरे शहर में कुछ फ़ितना उचावें, तन के मुल्क कूँ खराब करें, एक बला ल्यावें।...बेगे च कुछ इसकी तदबीर कर, जो करना है सो कर आज कुछ भला बुरा हुआ तो पछीं क्या इलाज, नहीं तो वही च मरहठी मसल होता "बहुत झेला झेल झेला, बैल के लापरकी जहून पा केला।"...मैं कता हूँ तुजे, तूँ तो अक़ल है, वले मुझे यों दिसता कि आखर कुछ खलल है। यो नजर का आना जाना, यो ख्याल कूँ संगात ल्याना, यों दिल कूँ फुसलाना हो यो जमाना। खुदा ख़ैर करे, किसी सों न बैर करे।...ऐ अक़ल बादशाह, मेरी बात जान पिछान, कि इश्क़ बादशाह आख़िर तुझसों लड़ेगा। तुझमें होर इश्क़ में कुछ क़िस्सा खड़ेगा, काम मुश्किल पड़ेगा। तूँ राजोट कर इश्क़ सों सुलह किया है, इश्क़ ने तुझे भाग-भरोसा दिया है। ...पादशाहाँ में यों बी एक जिनस का मकर अछता है। इस शक्कर में ज़हर अछता है।... खुदा करे जो यो क़ौलो-क़रार अछो, उसका यों च प्यार अछो, यों च दोस्त अछो। नामुराद क्या मँगता है...मुराद। अड्या क्या मँगता है...हमदाद।...बकौल अहले-हिन्द प्यासा क्या मँगता...पानी।...बोले नें...ज्यों शराब का असर, त्यों बादशाह का प्यार, ऐसे प्यार कूँ क्या एतबार, तिल ते उतरे तिल में चढ़े।...ऐसे प्यार कूँ क्या पतियाना ?...

नफ़र[1] क्या मँगता...साहेब का फ़तेह होय तो मुराद कूँ अँपडे नफ़र।...साहेब वही च जिसे साहेबी करनी आये, नफ़र वही जो कर जानता है नफ़राई। राम जैसा साहेब आपे, तो हनुमंत जैसा नफ़र पैदा होय, दरिया होकर बैठे कोई तो वहाँ आपे गौहर[2] पैदा होय।...इश्क़ पादशाह सों सुलह-सलाह किये हूँ कर बी गमना अछना हरचन्द भाग-भरोसा किये है कर बेगम ना अछना।...

अकल पादशाह ने यो सब सुन वहम कूँ गले लगाया, वहम का अँदेशा भौत भाया। क्या ..."शाबाश वहम, तेरा बहुत खूब है फ़हम। तेरी फिक्र मेरे ख़ातिर आई। तुझे हम[3] वज़ीरी देना हम पेशवाई[4]।...

अक़ल ने वहम कया सो बाताँ...दिल में लाया। फ़िलहाल लश्कर भेजकर दिलकूँ होर नजर कूँ बन्द करने फ़र्माया।...वहम की बाताँ का असर चड्या, जो कुछ वहम कया था, सो उसका मां के ख्याल में पड्या।...जो काम पकडे भी घट पकडना, खूब डट पकड़ना, मर्द दानाई का हट पकड़ना*।...

वो याक़ूत की अंगुश्तरी जो दिल ने हुस्न धन मनमोहन ते आशिक़ हो लिया था, वो अंगुश्तरी कुछ मस्लहत देख नजर कूँ दिया था।...जो कोई वो अँगूठी मूँ में रखे, तो किसी के नजर ना पड़े। होर दुसरी खासियत उसमें यो थी, कि जो कोई वो अँगूठी रखे अपने संघात, उसकी नजर तले दिसे चश्मा आबेहयात। नजर वो अँगूठी मूँ में लेकर सबकी नजराँ को दगा देकर हँसता-खेलता उस अकल पादशाह के बन्द में ते भार आया, ख्याल का वहाँ च ख्याल आया। ...देखने उस हुस्न नार कूँ दीदियाँके सिंगार कूँ, दिल के आधार कूँ शहर दीदार कूँ जाने-अख्तियार कूँ, पाँव सार हुआ। नजर...बेगेच शहर बीदार में रुखसार के गुलजार में आया। सैर करते चश्मा...जिसे आबेहयात कहते हैं, सो उस रुखसार के गुलजार में पाया। नजर लालची लालच

---

१. सेवक, २. मोती, ३. भी, ४. महामंत्रित्व। *वहीं, पृष्ठ ११६।

भरया।...ज्यों आबेहयात पीवने कूँ मूँ पसारया, अपना पत हारया चोरी किया।...क़ज़ा उस वक्त यो घड़ी, कि वो अँगूठी मूँ में ते निकल उस आबेहयात के चश्मे में पड़ी।...दगा दवा कर बहुत पछताकर हूँफी खाने लगा।...लै तरस्या लै तप्या, आबेहयात का चश्मा नज़र तले ते छिप्या। **नज़र** हैरान डँवाडोल, किसे कहे खोल, मूँ में ते भार फर्द[1]*—

गँवा लिया च तूँ अब क्या गमाते पचतावे।
यो वस्तु वो नहीं जो गई सो हात फिर आवै।।†

नज़र निढाल, नज़र का यो हाल। एकाएक **रकीब** कैं देख्या। सो नज़र के लग्या बाल[2] पकडया-जकडयां, आज़ार[3] दिया मार दिया, दंद सारया जाल्या, अपने घर ले जाकर बंदीखाने में घाल्या[4]। कतेक देम यों च टाल्या। **नज़र** का...कोई दस्तगीर[5] नहीं, कुछ तदबीर नहीं। यकायक एक रात जुल्फ (लट) ने जो अपने उस देम बालाँ दिये थे, उसके हात, वक्त पर याद अछो[6], सो उस वक्त वो वक्त याद आया। फ़िल्हाल एक दो बाल लेकर बेग-बेग आग पर जलाया। तो का तो ये च देमता है, जो ज़ुल्फ़ हाजिर हो आई। पूछी कि—"क्या हाल है रे भाई?..."

..."क्या पूछेंगी मेरा हाल, क्या बोलूँ एताल?"

ज़ुल्फ़ कही..."गम नको[7] कर, हिम्मत कम नको कर।...चलता सो च अडता[8] चहता सो च पडता, होआर का खेल जो आग सों है, तो एकादे वक्त जलता बी है।...**गंगा** की धूपकाले में न्हन्नी, वर्षकाले में बड़ी, जंगल का झाड़ उसे कधीं फूल-फल कधीं पतझड़ी।...मर्द वो जो अपने वक्त करे[9] कुल वक्त, अबुलवक्त[10] अछे[11], न (कि) इब्नुल्-वक्त[12]।...मर्द कधीं फूलते नाजुक कधीं फौलादते सख्त अछना, हर एक जा हिम्मत सों रहने मर्द कुं वख्त अछना[13]। जिसमें कुछ नेम है, जिसमें कुछ धरम, ज्यों सुन्ना जैसा व सख्त वैसा च नरम। दोहरा...

सेऊ सतत न छोड़िये, सत छोंड़े पत जाय।
लछमी सतकी दासि है, पग लागै घर आय‡।।

बारे ज़ुल्फ़ ने धर्म करी बहुत करम करी। उस बंदीखाने में ते कुच फंद कर...भार काड़ी, उस रक़ीब कूँ उस बदबख्त-बदनमीब कूँ पचतावे में पाड़ी। नज़र कूँ गले लाई, रुखसार के गुलज़ार होर शहर **दीदार** की बाट दिखलाई। कही—"एताल जा, अपना मुद्दआ पा।" बैत—

मुरव्वत मौत की चोटी की जाई।
बलाते भार काड़ी बाट दिखलाई§।।

---

१. पद्य। * वहीं, पृ० ११७।

† वहीं, पृ० ११८। २. साथ, ३. कष्ट, ४. डाला, ५. सहायक, ६. रहो, ७. नहीं, ८. रुकता, ९. समय को बनावे, १०. समय का पिता, ११. रहे, १२. समय का पुत्र, १३. रहना।

‡ वहीं, पृ० १२२।

§ वहीं, पृ० १२२।

नजर जुल्फ़ सों विदा होकर चल्या। सो **दीदार** के शहर में **रुखसार** के गुलजार में आया। हुस्न धनका मनमोहन का जगजीवन का मुलाकात पाया। घड़ी एक सास भर्या धरी उसास। गुजर्या था, सो क़िस्सा कह्या **हुस्न** छंदभरी औतार स्त्री पास। **हुस्न** नार कूं. . .हैरानगी लगी, परेशानगी लगी, कि मैं जानती थी कि दिल ज्यों त्यों आवेगा, दीदार दिखलावेगा, मेरा दिल **बिल** ते आराम पावेगा। यों नहीं जानी थी कि, कि यो क़िस्सा यों खड़ैगा, भी ऐसा वक्त पड़ैगा।

हुस्न दिल में ल्यायी, अपने **गमजे** कूं नज्दीक बुल्याई, जो बात थी, उसे समझाई। . . .कही—"एताल[1] इसका इलाज यो है, कि तूं होर नजर दोनों मिलकर एक दिलकर **तन** के शहर कू जाओ, होर **दिलकूं** कुछ तदवीर कर, तसखीर[2] कर, कुछ फ़न कर सेहर-टोना-टामन कर ज्यों त्यों मुझ लग ल्याओ*।" फ़र्द—

वार न लगसी दिल कूं आने कूं।
गम्जे कूं भेजी है बुलाने कूं।।

(च) दीदार नगर पर आक्रमण—

ग़मजा होर नजर लोगां चुने-चुने जले-जले भुने-भुने अपनी संघात लेकर शहर **दीदार** ते **तन** के शहर के ऊपर रुख धरे। यों चले सौ मंजिल की एक मंजिल करे। . . .नजर जिस वक्त अक़ल के मदिर में ते भार आया था, अक़ल तोय भेद पाया था कि नजर यहां ते जो जावेगा अल्बत्ता कुछ फ़ितना उचावेगा। . . .उसने या समजकर लिख्या था, अपने सरहद के सरदारों कूं कि चारों तरफ़ के मुस्तैद रक्खो बहादुरां कूं। इस नजर कूं इस निडर कूं इस मुल्क में ते भार जान नको देओ, होशियार अछो।. . .

जहद[3] व रिया[4] का नोकर था एक मुकाम होर रिज्क़[5] (जर्क) का एक बेटा था, **तोबा** उसका नाम, उसे फ़रमाया था, यो च काम, कि नजर कूं सँभाल कि सरहद ते भार न जावे। . . .वारे क़ज़ा यों होता है, जो गमजा होर नजर दोनों. . .उस डूंगर तलें आये। उस डूंगर तलें एक फूलवाड़ी थी। उस फूलवाड़ी में खड़े आसाइश पाये। जागा भौत भाई, रात के जागे थे, टुक नींद आई†।. . .

कितेक वक्त कूं सूरज ने सिर काड्या, आसमान का पर्दा फाड्या, उजाला संचर्या ठारें-ठार रोशन हुआ सब संसार। अजहुँ देस[6] चड्या नहीं पाव घड़ी, जो मुबा पड़ी, उस किला के दीदबान तें देख्या. . . कि नजर निडर बेजिगर संघात लशकर लेकर यहाँ उतर्या है। हैराँ हुआ, कधीं नहीं सो यो क्या हुआ, बेग-बेग **तोबा** कने आकर समजाकर **नजर** कूं ज्यों लशकर सो डूंगर तले देख्या था, त्यों कह्या। **तोबा** कूं उस वक्त बहुत गुस्सा आया, चुप नहीं रह्या, नजर होर गमजे पर जाकर पड्या। **नजर** होर **गम्जा** दोनों अपने लोकाँ सों एकाएक नींद मेंते हुए

---

१. अभी, २. जय। * वहीं, पृ० १४३।
३. पवित्राचार, ४. दिखावट, ५. रोजी। † वहीं, पृ० १२३, १२४।
६. दिवस, दिन।

भड़ते उठे हक्का-बक्का हुये, लड़ते-पड़ते उठे। ...नज़र होर गमज़ा दोनों मस्त दोनों बी दिलावर दोनों...तोबा कूँ ख्वार किये,...घड़ी में झगड़ा हुआ फ़तेह। बैत—

गमज़ा है अपनी बात सुने तो छोड़ेगा।
गमज़ा हज़ार तोबा कूँ एक तल में तोड़ेगा।।

तोबा का लश्कर न्हाट्या, तोबा का सीना फाट्या।...

केता गमज़े की खावें मार तोबा।
बेचारा क्या करे उस ठार तोबा।।

तोबा का कोट लूटे तोबा कूँ नँगाये, तोबा के सिर पर हज़ार-हज़ार बलायाँ ल्याये। तोबा कूँ मुश्किल पड्या सख्त, तोबा कूँ तोबा करने कन अंग्या वक्त। तोबा पैमाल हुआ।*

पछीं रिवाक का जो वहाँ मोमआ था, उसे भी तोड़े, झगड़ा न जीते वो जागा भी छोड़े। वहाँ ते आफ़ियत शहरकूँ जाने अँगे रखे कदम। ग़मज़ा होर नज़र अपना लिबास फिराकर कलंदरी पकड़े रसम। ...आफ़ियत के शहर में आकर बात किये, नामूस[1] पादशाह सों मुलाकात किये। नामूस पादशाह आशिक़सिफ़त साहेब-हिम्मत था, गल्या था, तिलमिल्या था। ... नामूस पादशाह उनोंकूँ देखते च माल-मुल्क सब छोड्या, कुछ लोड्या कलंदर हुआ, समुंदर हुआ, फ़क़ीर हुआ, असीर हुआ। ग़मज़े के हात में सँपड्या। ...नामूसका यों हाल हुआ, नामूस पायमाल हुआ।

बादअज़ाँ[2] नज़र होर गमज़ा शहर तन के उधर चले। ...जो शहर तनके नज्दीक अँपड़े भी अपना लिबास फिराये-बदलाये, फिर कर पैने कपड़े। गमज़ा शराब पिया था आया कैंफ़ी अपने लश्कर पर पड़ फूँका। उस दुआ में था बहुत असर, हरिना की सूरत पकड्या सब लशकर।†...

जिस वक्त तोबा गमज़े के लश्कर ते शिकस्त खाया, सो तन के शहर के उधर रवाना होकर कने आया। तस्लीम किया, खिदमत बजा लाया। ग़मज़े ते जो कुछ बेदर्दी[3] हुई थी, सो सब ब्यान किया, अक़ल कूँ परेशान किया। हैरान किया। ...अक़ल जैसा पादशाह ग़मज़े की यो बेदर्दी सुनकर बहुत वेग दिलकूँ तलब कर्या। जितना सई करना था उतना सब कर्या, दिल के हातपाँवा के बँदा बाँध्या था, सो खोल्या, ग़मज़े की बेदादी[4] का क़िस्सा बोल्या...यो ग़मज़ा है, यों दगाबाज़ाँ हैं, इनों सों जीव लानकर इनोंकूँ पतियानकर पचतावेंगे, दग़ा खावेंगे। अगर इतने पर भी तेरे दिलपर आता च है, कि शहर दीदार कूँ जानाँ च है, होर हुस्न धन मनमोहन का वसाल पानाँ च, उसे गले लानाँ च (हैं)...तो एक बात मेरी सुन, इस बात में बहुत गुन। हमारा लड़ता सो लश्कर, दुश्मन पर पड़ता सो लश्कर, तनके मुल्क में ते अपनी संघात ते होर

---

* वहीं, पृ० १२८। १. सम्मान, २. इसके बाद।
† वहीं, पृ० १२८। ३. अन्याय, ४. मिलन।

शहर **दीदार** के उधर डेरा दे। ...अकेले जाना, बहुत ज्वान है, ...**हुस्न** धन मनमोहन जगजीवन पास लश्कर बहुत है। ...अगर तेरे पास भी लश्कर अछै तो खूब है। ...

दिलकूँ यो बात बहुत खुश भाई, भौत भाई। बापकूँ कया..."एताल मैं अख्तियार अपना तेरे हात दिया, जे कुछ तू कता सो मैं किया। आशिक जानबाज़ी हूँ, जों तू कता है, वोंच राज़ी हूँ। जों तूँ फरमाया है, त्यों च जाता हूँ। खुदा करता है, तो हुस्न मों मिलकर, हुस्न कूँ भी फाँदे में पाता हूँ।" आशिक़ वो जो माशूक़[1] को भावे, आशिक वो जो माशूक कूँ रिझावें, अपे तिलमलाता त्यों उसे भी तिलमिलाये, जों अपे तरसता, त्यों उसे भी तरसावें। आशिक़ जों माशूक कूँ जपै तो खूब, माशूक भी आशिक़ खातिर तपे तो खूब*।

गवालियर के सुभाने, यों बोलते हैं (दोहरा) :

धरती म्याने रीज धर, बीज बिखर कर बोय।
माली सींचै सौ घड़ा, रुत आये फल होय॥

बारे **दिल सबकूँ** बुलाकर लश्कर हाज़िर करने का हुक्म दिया। लशकर अपना सब देख्या, लश्कर की गिनती लिया। हिम्मत कर्‌या, सीने में उमास भर्‌या, शहर **दीदार** के बाट में पाँव की जागा सिर धर्‌या। एकल देख्या कि **दिल** तो रवाना हुआ, मेरी बात उसे बहाना हुआ। बहुत मेह, व मुहब्बत मों...तीन मंज़िल अँपड़ाता[2] आया। दिलकूँ अकल दिया सँभलाया। एते में सँघात लोगाँ के सुद पाये, खबर लेकर आये, कि इस सेहरा, में हरना भौत है ठौरठार।†..

लागे लागां यो बाव पर लेने।
अकल दिल दोनों कूँ दगा देने॥‡

...हरिन तो हैं भौतेच आले, वले हरिनां में हैं आदमी के चाले। जंगल में रहते, इतना च है तो बात नहीं कते। अजब है यो हैवान सब आदमी का धरते ज्ञान। या जिन्नाँ ने हिरनाँ का लिये लिबास, इस बातकूँ खूबी करना तफास। ...**दिल** बादशाह० बात इस धात सुन बहुत पकड़्या उमस, इस तार इस ठार शिकार खेलने की आई हवस। ...अपे नवाँ नौतेका जवान, ताजी पर सवार हो हात में ले तीर हो कमान, हिरनाँ के पीछे घोड़ेकूँ दिया ताब, या बाव पछीं जानो दौड़ी बाव। उनोंकूँ हिरनाँ कते वो हिरनाँ न थे, गमज़े का चश्म, उनोंकूँ पकड़ने कौन कर सकता। ...**दिल** नज्दीक आपे लगन हरगिज दूर नहीं जाते थे। अक्ल होर **दिल** कूँ कहोर उनोके लश्करकूँ वाटवाट यों च खींचते ल्याते थे। दूर गये तो खड़े रहकर अपसकूँ दिखलाते, बहुत नज्दीक आये तो निकल जाते।...

बारे **अक़ल** पादशाह० रह्या थक्या, अकल पादशाह० कूँ बुरा लग्या। ...फ़र्ज़न्द जिगरगोशा, हर दो-जहाँ का तोशा, सीना फोड़्या क्यों जाता है? फ़रज़न्द कूँ छोड़्या क्यों जीता

---

१. प्रियतमा।
*** वहीं, पृ० १३०।**
२. पहुँचता। † वहीं, पृ० १३१।
‡ वहीं, पृ० १३२।

है ? मेहर सो माँ-बाप की, बाकी मेहर पुन-पाप की , दुनिया में सब मिलेंगे तहक़ीक़ जान ना मिलसी सो मा-बाप हो सगे-भाई होर भान[1]।...

अक़ल पादशाह् अपना लश्कर जोड्या, यो भी हिरनाँ के पछी लग्या शहर तनकूँ छोड्या। ...**दिल** होर **अक़ल** दोनों हुये बयाबानी दोनों कूँ लगी हैरानी सरगर्दानी*।

वारे **नजर** होर **गमज़ा** जो **दिल** पादशाह० कूँ बुलाने जातेथे,ल्याने जाते थे, । सो दिलकूँ च इधर आते देख, **हुस्न** धन मनमोहन जगजीवन खातिर तिलमिलाता देखे। कहे...अल्ह-म्दो लिल्लाह् काम पाया सरंजाम, एताल फ़तेह हुआ काम, जिसकी खातिर हमें जाते थे सो वाँ च अँगे आया, खातिर हमारी तसल्ली पाया। ...एताल फ़िक्र यो हो, जो हमें दिलके कने ना जाना, **अक़ल** होर दिल हमना ना देखें, त्यों च इन दोनों कूँ शहर **दीदार** के नज्दीक ल्याना†।... बैत—

नज़र होर ग़मज़े के चाले बला ल्याये।
कि **दिल** होर **अक़ल** दोनों मिल दगा खाये।।‡

यों च चटक लाते-लाते फांदे में भाते-भाते[2] फुसलाते, फुसलाते **दीदार** शहर लगन लाये, अपना काम फ़तेह हुआ कर बहुत खुशहाली पाये। हजार-हज़ार आनन्द मों लाख-लाख छंद सों **हुस्न** धन जगजीवन मनमोहन कने गये, सलाम किये, गुज़र्या सो किस्सा बोले तमाम किये, सुर्खुरु हो आपे बहुत गवामी पाये। **हुस्न** धन० **नजर** होर **ग़मजेकूँ** गले लाई, कुछ बख्शो कुछ दई[3]। होर फ़िक्र अपस में किये कि **अक़ल** बड़ा पादशाह है,...अपने लश्कर सों नज्दीक आया है। ...मस्लहत का काम...यों दीखे, कि...बापकूँ खबरदार करना...कि इस लश्कर कूँ दूर करने का कुछ इलाज करे। ...मक्तूब लिखकर भेजे बाप कने। मज्मून यो था, उस मक्तूब मने कि..."नक्काश खूब सब नक्काशां में अव्वल, मेरा था एक गुलाम...**ख्याल** उसका नाम। आज पादशाह न उसे पानी न उसे खाना देता, न इधर आन देना। ...हमें उसे बुला भेजे बहुत गुस्सा कर, (वो) अपने लश्कर मों आकर बहुत गौगा करता है। ...माँगता है जो शहर **दीदार** कूँ इस गुल भरे गुलजार कूँ लेवे।.....

औरत की जाति कुछ झूठा कुछ सच लेकर बोली बात..."तूँ इश्क है तुझसों **अक़ल** क्या करना। वले अक्ल मकरी है, उसके मकरते बहुत डरना। तूँ मस्त वो होशियार, दगा देने केती बार।...सन्मुख हो जाय आकर सन्मुख हंकारे, दगे से चिमटी हती को मारे। दगे मों बकरी गालिब बाघ पर होये। ...यो बात सब खातिर ल्याना, हुशियार अछना, दगा न खाना × ।...

इश्क बादशाह० यो वाक़्या[1] सुन्या, गुस्से ते सिर धुन्या।...

कह्या—अक्ल कूँ वजूद क्या है, जो ऐसा काम करे, अपसकूँ रिसवा हमना बदनाम करे।...

---

१. बहिन। * वहीं पृ० १३३। † वहीं पृ० १३४। ‡ वहीं पृ० १३५। २. डालते। × वहीं पृ० १३६। ३. पत्र।

वारे **मेहर** नाम...इश्क का एक सिपहसालार था, अपने ढंग पर हुशियार था,... उसे फरमाया कि... मुशक्कत, दर्द मेहनत, गम अलस, ज़ारी, बदनामी...यो वज़ीर बड़े बड़े, सब हाजिर खड़े, उनोंकी जी की बात ले, उनो कूँ अपने सँघात ले...जेता लशकर है, बाकी वजीर-सरदार जितना नर है कारगर है, यो सब यकबार शहर **दीदार** के उधर ले जा।*

बारे अक़ल होर दिल के लश्कर सों टुक झगड़ा बजा, उस लश्कर कूँ बेजान कर...कि दूसरा ऐसे कामतें डरे, दुसरी बार भी कोई ऐसी चाली न करे।

जो ग़मज़ा आये लड़ने कूँ अक़ल उस ठार क्या करना।
उठैगा हात क्यों उस ठार यहाँ तरवार क्या करना।।

वैसे सुबास (खुशबूई) की बास कि दिलकूँ जलानहारी थी, दिलकूँ भौत प्यारी थी, **दिल** में होर उसमें यारी थी। ...वो हुई दिल के उधरकूँ,†

नको डर। या बाव काँ लगते इसे किसके ज़खम का उसे क्या गम...

आडे वक्त **दिलकूँ** मदद आई, बारे सँभाली।

काम हुआ मुश्किल, एताल हिम्मत छोड़ने में क्या हासिल। मारना या मरना, अपना नाँव करना। न्हाटे तो क्या आयेगा, न्हाटे तो क्या बँचने पावेगा। बख्ताँ में लिख्या सो बँधा जावेगा या न्हाटे ते खुदा कूँ भी भावेगा। जीवकूँ कता डरना यो मर्दी का वक्त है, कुछ भी तो भी करना। जीव गया तो गया, बले शर्म न जाना, न कि जीव होर शर्म दोनों गँवाना। यों हुआ तो मर्दा में मर्द क्यो कहवाना होर लोकाँ में भी क्या मूँ दिखलाना।...

दिल कह्या..."खूब कही एक सुवास,...इस वक्त मुझे तेरे च आस में भी दिल हूँ, बड़ा हूँ, कायम होकर खड़ा हूँ। क्या करूँ, इश्क होर हुस्न का लश्कर क़वी है। ...मैं भी यहाँ जीवते झाड्या हूँ, हिम्मत किया हूँ, रन-खम गाड्या हूँ। कूये में पड़कर रसरी काटना नहीं फबता, आशिक कूँ न्हाटना च नहीं फबता। **दिल** तो हिम्मत धरता, देखें एताल खुदा क्या करता" ‡

बारे, ओ **सुवास** जो **दिल** कने आई थी, दिलसों दिल लाई थी। उनने खूब दो-चार हमले करी। ...इश्क के लश्कर कूँ हैरान करी, परेशान करी।

चौथे देस भी यो झगड़ा...निबड्या नहीं च था। ...अपस में अपे लड़ते थे झगड़ते थे, न व न्हाटते न वो न्हाटते। एककूँ एक डराते एककूँ एक डाँठते, आटाअट था कटाकट था।

हुस्न धन० लश्करते ऐसी खबर पाई, बहुत हैफ़ीखाई...कि "आखिर खुशी है गम, इस झगड़े का क्या आलम? यो झगड़ा क्यों आखिर निबडता है? किसपर क्या वक्त पड़ता है। आखिर वो बिन पर की परी अपस में अपे कुछ फिकर करके...**ख्याल** कूँ आलम के कार कूँ... बुलाई, उससों मशौरत लाई।× ...

उन **ख्याल** ने बोल्या कि—"ऐ हुस्न धन...तुझे **कोहक़ाफ़** की परियों में एक हमज़ाद है, तुझसे हमेशा उसका दिलशाद है,...बहुत दिलावर बहुत जोरावर, किसी ते न डरे, जाँ जावे

* वहीं, पृ० १३७।
† वहीं, पृ० १३८।
‡ वहीं, पृ० १३९।
× वहीं, पृ० १४०।

वहाँ फ़तेह करे। . . .जे कोई मैदान में मर्द होकर निकलता, उसके आँचे च ते गलता। सामने आकर कौन दे सकता जवाब, हटीली हटभरी, जे कुछ कही सौ करी। खुश-शकल कबूल-सूरत, मन-हरनमूरत रूप भीतें च आला, जाँ बैठे वहाँ पड़े उजाला। हँसे तो फूल झड़े, बोले तो नवात होर मोती पड़े। . . .वो यहाँ आये तो भौत भला है। . . .उनने ऐसी जग्गह पर करी है घर, कि हरगिज नहीं पड़ता किसी का नज़र। वहाँ जा कोई किसे दिसे ना, उसका निशान कोई किसे दिसे ना। उसका नाँ भी हुस्न च है।* . . . (फ़र्द)—

खोल कर क्या कहूँ कि कैसी है।
हुस्न की भान[१] हुस्न जैसी है।।

वो भी. . .आशिकाँ पर जुल्म करती है। . . .तुझमें क्या इशवा थोड़ा है, वो भी तेरा च जोड़ा है। एक कूँ छिपाना, एक कूँ दिखलाना, नादिर हैं तुमें दुनियाँ में दोनों भानाँ। तुमें दो फूल दो तारे, दो देवें दोनों मांग झमकावे, । दोपरियाँ दो हूर, दो चाँद दो सूर, . . .दो बाद-शाह खूनख़ार, दोनों साहेबसिपाह. . .दो सखियाँ, दोनों भी दो-आलम कियाँ अँखिया, दोनों दो बहिश्त. . .यो दो महबूब नादिर नारियां. .जीवाँकियाँ प्यारियाँ, सब गुनमें सारियाँ। जो कोई उनों मों जीव लावे, वो हर्गिज़ न मरे, दोनो दो आबेहयात के झरे। . . .अगर तूँ होर वो दोनों मिलकर आते हैं, तो अल्बत्ता उस **अक़ल** पर ज़फ़र[२] पाते हैं। दिलमों तो यारी है, दिलक झगड़ा सितारी है। बाप है कर **दिल अक़ल** के पास है, बले उसे भौत तेरी आस है। **दिल हुस्न** के गुलाम का गुलाम है, उसे लड़ने-झगड़ने मों क्या काम है? इधर बाई उधर हुआ है, उसे बेचारे कूँ भी बहुत मुश्किल हुआ है।† . . .

हुस्न धन मनमोहन जगजीवन ने बोला कि "क्या फ़ायदा?"

वो गुलगूँ-वचन ने बोली "क्या फ़ायदा झगड़े कूँ अखाड़े हैं। **हुस्न** होर **दिल**। वो मदद आये लग बहुत मुश्किल। एताल हमें झगड़े की लाफ में, वो हमज़ाद हमारी **कोहक़ाफ़** में, दर्द **खुरासान** में दारु **हिंदुस्तान** में।" वो दारू को आना, उस दर्द को जाना. . .शाबाश तुझसों मशवरत[३] करी सारी रात, तूँ मुझसों बोल्या आखिर ऐसी बात. . .।

ख्याल ने कया. . ."तू हुस्न है, तुझमें नाजुकियाँ बाताँ बहुत हैं। . . .कुछ बात के पछी भी गम करना है, कुछ समझना है, पाना है दिलकूँ बेगम करना है। क्या वास्ते, कि मेरे पास एक अंबर का दाना है, बहुत पुराना है। जिस वक्त कि मैं आग पर रखूँगा उस अंबर के दाने कूँ, तो केति बार हैं तेरे हमज़ाद कूँ तेरे पास ल्याने कूँ। घड़ी में आयेगी पवनवारी, कि वो है परियों में की रहनहारी।" ×

हुस्न धन० यो बात सुन निपट फारिग़बाल[४] हुई. . .बहुत खुशहाल हुई। . . . फ़िलहाल उस अंबर के दाने कूँ आग पर जलाया, उस **हुस्न** के हमज़ाद[५] कूँ हाजिर कर **हुस्न** के

*** वहीं, पृ० १४०।**

१. बहिन, २. विजय। † वहीं पृ० १४१। ३. सलाह। × वहीं पृ० १४२।

४. छुट्टी, ५. बहिन।

हुजूर ल्याया। हुस्न देख हुई हैराँ, यकायक यो किधरते पैदा हुई यहाँ। . . .वो नाज़ वो ग़मजे की घड़ियाँ, एक कूँ एक देख कर दोनों हँस पड़ियाँ। बारे. . .हात में ले हात दोनों सकी चकल-चकल गले लगी। बैत*—

दो बिछड़े दो अज़ीज़ाँ आ मिले हैं।
दो गुंचे दोनों फूल होकर खिले हैं।।

बात में बात अक़ल होर दिल के लश्कर का किस्सा काडा, अपने राज़ का पर्दा फाड़ा, . . .अपने हमदर्द पास दर्द कहा।

(हुस्न) कही—हमना होर दिल में आशिकी[1] होर माशूकी[2] की निस्बत दरम्यान[3] है, दो तन है, वले दो तन कूँ एक जान है। दोहरा. . .

जे मैं कही सो उन कहा, प्रीत अहै इस धात[4]।
दो मनका एक मन भया, दो की एकहि बात।।

दिल बाप के मुलाहज़ों सों चुप झगड़े में आता है, नहीं तो यो झगड़ा उसे कधाँ भाता है।. . .

हुस्न धन० की बात हुस्न की हमज़ाद सुन सब खातिर किया बिचारी, कही. . .खुद है, डर नको, अक़ल क्या अछे बेचारी. . .

मेहू जो इश्क़ का सरलश्कर[5] था,. . .हमजाद हुस्न ने भी अपना नाज़, अपना ग़मज़ा अपना शेवा[6] अपना जाला अपना छंदवंद सब उसकी मददगारी कूँ भेजी, उसकी यारी कूँ भेजी।. . .

होर हुस्न कने भी एक हाजिब था आकिलकारी, खूब करता था कमानदारी. . .नांव उसका हलाल कमानदार, धाक उसकी ठारेंठार, उस शहबाज कूँ भी हुस्न. . ."मदद कूँ जा" कही, "बेग फ़तह कर आ" कही।†

यो हलाल कमांदार. . .मेहू सिपहसालार सों. . .मिलकर. . .हात में तीर कमान लिया। इश्क़ का लश्कर बहुत वरजोर हुआ। . . .हलाल कमांदार. . .अक्ल के लश्कर में जा पड्या। . . .हलाल आशिकों का काल. . .मर्दाना था, दाना था, तवाना था। अकल कूँ जाकर घट किया, तक़वा[7] निपट किया। हुआ खुदा का लोड्या[8], वले अपनी हिम्मत नहीं छोड्या। अक़ल कूँ जाकर हट किया हँकार्या। बाप के जहल ते, अपनी कूबत के बलते, ना देख सक कर इस गल्गाल में. . .एकाएक दिल मियाने में आया। सो (हलाल) ना जानकर. . .दिलकूँ तीर मार्या, दिलकूँ घोड़े पर ते उतार्या, झगड़ा बेग नहीं भँग्या। किसे मारने गया, सो मिलेग्या, जेता कोई ज्ञान धरे, क़ज़ा कूँ क्या करे? . . .अक़ल दिलकूँ घोड़े पर ते पड्या देख्या,. . .घबरा हुआ अक़ल का सीना फाट्या। अकल का लश्कर सब न्हाट्या, क्या न्हन्ना क्या बड़ा एक जना नहीं रह्या। . . .अक़लकूँ एताल अकल आई पचताने लग्या, सिर कूट लिया मूँ में माटी भाने

---

* वहीं, पृ० १४३।

१. प्रेमी होना, २. प्रियतम होना, ३. बीच, ४. भाँति, ५. मुख्य सेनापति, ६. कर्त्तव्य।

† वहीं पृ० १४४। ७. शुद्धाचार, ८. जल्दी।

लग्या : . . .वारे, यो अक़ल आई पचताने हुआ, खुदा जाने किधर गायब हुआ। . . .कोई कता शहर तनकू गया, कोई कता बांई च में पड़्या गिर, कोई कता झगड़े च में मारा गया, कोई कता बाट में किसके हात उतारे गया। 'कूँचे कूँचे यो हिकायताँ, हजार जने हजार बाताँ।'. . .

दिल के बख्ताँ में बी लिख्या था, सो अँपड़्या, दिल बी हुस्न के हात में सँपड़्या आखिर हुस्न का फ़तह हुआ, जो मँगती थी (सो) हुआ। फ़तह का बाजा बजने लग्या, हुस्न का बाजार गज-गजने लग्या। हुस्न धन मनमोहन जगजीवन. . .जुल्फ़ कूँ फरमाया कि, "अक़ल पीर पछीं दौड़ बेग, ना संग देख ना रेग। अपने तारा सों धुयें की धारा सों उसे जकड़ ल्या, पकड़ ल्या।". . .

अक़ल को रूसी के पाँव लगाकर जावे, तो बेचारी जुल्फ़ किधरते खींचकर ल्याये।

बैत :—

जो जो नसीबा में था सो वो अँपड़्या।
अक़ल न्हाट्या फ़क़ीर संपड़्या।।*

हुस्नधन मनमोहन कूँ एक दाई थी, जिसका गुन उसने पाई थी। उसका नाँव नाज़, बहुत चतुर चौसार वरसाज़. . .। हुस्न ने दिल के इश्क़ की कही बात, मशवरत करी उस दाई के संगात, कि. . ."दिल मेरा दीवाना, मैं दिल की दीवाना। दीवाने दोनों मिले जो च दोनों की जिंदगानी। वो भी बेताब मैं भी बेताब, दोनों कूँ खड़्या है इज्तराब।". . .

इश्क बादशाह कने० मेहु सिपहसालार कूँ भेजें। . . .कि हमना में होर अकल में ज्यों निवऱ्या,. . .अक़ल नामर्दी की बाट न्हाट गया, सो खबर अंपडवैं हो इश्क क्या बता सो खबर ल्यावैं, तो देखें इश्क इस बाब क्या फ़रमाता, उसकी खातिर कें क्या आता? बंड्या की बड़ी अकल, न्हनियाँ की अकल में हज़ार खलल। अगर जेता अकल धरेबच्चा, आखिर भीकच्चा सो कच्चा। . . .बड़े नेक हारे बदते वाकिफ हो रहते हैं, बड़्याँ कूँ बड़े चुप नैं कहते है। उनों बी कुछ देखे हैं, बहुत काम किये हैं। दुनिया का भला बुरा सब फ़ाम किये हैं। न्हनेतेकामाँ कूँ हरगिज न जासैं, कौआ दगा देने आया तो दगा ना खासैं। . . .पुख्तकार आदमी टुक अछता है तजर्बाकार, सब जागा अछता है खबरदार। . . .हर कोई अपनी अक़ल में गर्क है, वले तजर्बे का टुक फ़र्क़ है। . . .हर कोई अपनी जागा एक सवाद पकड़ रहया है। बकौल अहले-खुरासान, जिनाँ कूँ सब मुल्क में देते हैं मान। (मिस्रा)†

"कस न गोयद कि दूगे-मन तुर्श-अस्त"।
(कोई नहीं कहता, मेरा दही खट्टा है।।)

बड़्या ते टुक डरना, हर एक काम किये तो बड़्याँ कूँ खबर करना। आखिर खूब अछेगा, तो 'करो' कयेंगे, व अगर बुरा अछैगा, तो ज्वाब ना दे चुप रहेंगे।. . .‡

यो नाज दाई हुस्न धन० कूँ गले लाई, कही. . ."बला लाऊंगी० बहुत खूब फ़रमाई। खूब तुझे यो अक़ल आई। . . .तेरी अक़ल पर मैं वारी, काँ है दुनिया तुज जैसी चतुर नारी? सिर तें पाँव लग गुनभरी, बहुत अंदेशे करी।" ×

---

*वहीं, पृ० १४६।
†वहीं, पृ० १४८।
‡वहीं, पृ० १४९।
×वहीं, पृ० १५०।

हुस्न होर **नाज़** नार यो बात अपस में विचार **मेह्र** सिपहसालार कूँ बुलाय वों च उसे फरमाये। . . .**मेह्र** अफताब-चेहर उसकी बात सुन **इश्क़** लग गया, सलाम किया, कलाम किया। **अक़्ल** यों न्हाटा होर **दिल** यों सँपड्या कर कह्या, नसीबा में जो अंपड्या कर कह्या। इश्क़ बहुत हंस्या **अक़्ल** पर. . .कि "अक़ल अजब जाहिल है, बड़ा नाक़ाबिल है, कि जो काम हातते नें होता, सो काम करने जाता, ऐसे कामाँते क्या हात में आता. . .अक़ल, अकल कहते सो उसकी यो च अक़ल ? उसे क्या गर्ज़ था, कि **इश्क़** के कामों में करता दखल। **हुस्न** मों दावा लाना, अपनी इज्जत अपे च गँवाना।". . .

इश्क़ फ़रमाया कि. . .जुल्फ़ कूँ बोलो कि "दिल के गले में हल्के का तौक भी, तारां का जंजीरों सो जकड़ कर अक़ल जाँ गया अछैगा, वहाँ ते पकड़ कर ल्या। ग़मज़ा, शेवा, इश्वा, छंद, चाला उनोकूँ अक़ल बहुत मुफ़्तिन है।. . .*

मेह्र ने. . .वेग आकर दुआ कर **हुस्न** कूँ सुनाया, . . .समझाया। **हुस्न** यो बात सुन अंदेशा करी, मस्लहत पर नज़र धरी। कि. . ."काम ऐसा करना, जो कुछ काम होये", वही च नाज़ दाई, जिसकी अकल उसकी खातिर आई. देस बुलाई, कही—"इस काम का इलाज यो च है एताल, कि इस जागा अपस कूँ बहुत रखना सँभाल, अपसकूँ बावल न करना, उतावल न करना, बहुत धीर अछना, गँभीर अछना।. . .सबूरी अव्वल कड़वी लगती है, बल्के बहुत मीठी होती है, बीजतें झाड़, झाड़ते डाली, डाली ते पात, पात ते फूल, फूलते फल आता है। देखते-देखते, सुनते-सुनते, खातिर ल्याते-ल्याते फ़िकर करते-करते रहते-रहते मालूम होती है काम की धात। . . .इस **दिल** कूँ. . .चंद रोज बहुत मुहब्बत सों बहुत मुरव्वत सों. . .एक जागा धरें, पछीं अहिस्ता-अहिस्ता जो कुछ **इश्क़** फ़रमायेगा, तो उसकी भी एक फ़िक्र करें। यहाँ बेगी काम नहीं आती। . . .**रुखसार** के गुल्जार में एक कूवाँ है, कुछ सुन्नें सों मुस्तीद हुआ है,. . .चाह **ज़क़न** उसका नाम। उस चाह में दिल कूँ. . .बंद करना। . . .(बैंत)—

अजब चाले बैरियाँ हैं औरताँ यो।
न जानूँ काँते सिकियाँ हिकमतां यो॥ . . .‡

दिल बहुत पकड़कर आस, कुछ कम हेक मास उस चाह में, उस नाले उस आह में गिरिफ्तार था। **हुस्न** धन० कधी याद करें कर उम्मेदवार था. . .कि. . ."मेरा इश्क़ तो बहुत गर्म, कधीं तो भी उसका दिल होयेगा नर्म।" . . .ऐसे में यों हुआ खुदा का फ़रमान, **हुस्न** को भौंते च तिलमिलने लगा परान। **हुस्न** धन० भी आशिक़ थी,. . .**दिल** के दीदार का ग़ालिब हुआ इश्तियाक़[1], सीने में उबल्या फ़िराक़[2]। सरलश्कर, जो था **मेह्र** उसके एक बेटी थी पुरसेह्र, **वफ़ा**, उसका नाम, **हुस्न** सों उसे बहुत उल्फ़त था बहुत आराम, बैत—

***वहीं, पृ० १५१।**

‡ वहीं, पृ० १५३।

१. इच्छा, २. वियोग।

वफ़ा आई वफ़ासों राजवट की ।।
सो दिल सों मिलनं ख़ातिर काम घट की ।।†

हुस्न धन० ने उसे ख़िल्वत[1] में बुलाई, दिल का किस्सा दरम्याने ल्याई। वफ़ा ने कही—"बहुत ख़ूब ऐ महबूब, मैं जफ़ा[2] नहीं हूँ, मैं वफ़ा हूँ। . . . मैं ऐसी नहीं हूँ, तूँ बोले पछीं तदबीर ना करमूँ, जीवसों राजी हूँ, फ़रमा, तक़सीर[3] ना करमूँ। . . .

हुस्न नार दिलका सिंघार . . . कही—"मेरी अक़ल में एक तदबीर आई है, वो तदबीर मुझे भौत भाई है। कि, . . . शहर **दीदार** में एक गुल्जार है, . . . उसमें एक चश्मा है, **आबेहयात** के पानी का। . . . उस बाग के म्यानेम्याँ रोशन एक छजा है ज्यों आसमान, ज्यों चंदर ज्यों भोन, देसकूँ दिसती उस छज्जे कूँ दो खिड़कियाँ हैं, कालियाँ, बहुत आलियाँ। . . . उस खिड़कियाँ में ते यार हुस्न का देखने मँगते दीद्यार। . . . तूँ छिपे-चोरी मों दिलकूँ उस ठार ल्याने सकती है, इतनी कुदरत रखती है।"

वफ़ा बासफ़ा ने बोली—"मेरी अक़ल मेरी संघात है, अगर आदम में अक़ल अछै, तो यो बात क्या बड़ी बात है। . . . **दिल** काँ है। . . . मूँ दिल का भेद पाऊँगी, जहाँ तूँ कहेगी, वाँ दिलकूँ ल्याऊँगी।"

हुस्न नार० ने **जुल्फकूं** बुलाकर बोली कि "दिलकूँ चाहज़क़न मैं ते मार काड़, होर गर्द गर्द उसके पाँव पर की अपने बालाँ मों झाड़, **दिलकुशा** बाग मैं ल्या छोड़, पीलाड़[4] जो कुछ होय खुदा की लोड़। . . .

(छ) स्त्री की महिमा—

जुल्फ बहुत नाज़ सों, निपट अंदाज़ मों गेंठती-मरोडती बालें-बाल जोड़ती धाई। अपनी आधी लट सुट दिलकूं चाहज़क़न में ते भार लेली। वैसे में एकाएक वहाँ वफ़ा बी आई, **दिल** मों अपना दिल मिलाई, दिलकूँ दिलासा दी। . . .

दिलकूँ समजाइ . . . कही—"भाई, इश्क तमाम है जफा, होर जफा देखे वगैर नहीं होता नफा। दुखके पंछी सुख, . . . रंज तो गंज, . . . खारा है तो मीठे का पाया जाता स्वाद, खारा ना अछना तो मीठे का कौन देता दाद। धूप है तो छाँव की कदर जानी जाती, गरमी है तो आदमीकूँ सरदी भाती। . . . **हुस्न** धन . . . जो तुझे बंद में रखी थी, सो लाइलाज[5] थी। . . . क्या करूँगी बाप का मुलाहिज़ा[6] बहुत था। . . . वो अगर यो न करती, तो तुझे भौत मुश्किल था। तू जीवते च मारता, इश्क क्या तुझते डरता, क्या जाने क्या करता? हज़ार तूँ तिल-मिलता, तो इश्क सों तेरा क्या चलता? हुस्न सखी तुझे छिपा रखी, तुझे अपना यार करी, बहुत तुझपर प्यार करी, उपकार करी। उस प्यार का क़दर जानता है, मुहब्बतकूं पिछानता है‡।

‡ वहीं, पृ० १५४।

१. एकांत, २. जुल्म, ३. कसूर, ४. मुल्क, ५. बिना दवा, ६. खयाल।

† वहीं, पृ० १५५-५६।

कैतेक मर्दां बहुत. . .नाकदरी[1] अछते हैं, कदर नहीं जानते, मेहनत[2] नहीं पिछानते। ज्यों खुसरो कहता है। बैत—

पंखा हो कर मैं डुली, साती[3] तेरा चाव।
मुंज जलती का जनम गया, तेरे लेखन बाव।।

उसे प्यार करते। जो कोई मंगती उससों नखरे नाज, उससों बात बोलने जीव नहीं होता उससों बाज। जो मँगती नहीं, वो भौत भाती, उसकी गाली खाने हवस होती, उसके पाँव पडने जाते, उसकूँ अपस की आजिजी दिखलाते। उसकी खातिर आह भरते उसकी खातिर उसास, रात देस फिरते उसके आस-पास। . . .दुनिया में मुहब्बत किसी सों ना लाना, इस जमानें के मर्दों कूँ क्या पतियाना। एक जगा नज़र हज़ार जगा दिल, कौन औरत कैसे मर्द सों रहैगी मिल। . . .औरताँ कूँ कते अक़ल कम जात, ऐय्यारी मर्दाँ की बात। औरत जो मर्द पर नज़र करे तो जीवों मारते, अपे एकस सोना अछ वसां सों हंसते खेलते, यहाँ अपने में कुछ नहीं विचारते। भी औरत कूँ शाबाश कहना, जो अपनी शरम सों अपसकूँ सँभाल लिया, एकम दरे तप घालतियां, एकस खातरे च अपना तन-मन जालतियां, जानी-जोवन गालतियां। बाजी औरतों मर्दां खातिर सतियाँ होइया हैं, अग में जलियाँ हैं। औरताँ में भौत शर्म है, औरताँ में भौत नेम-धरम है। औरताँ विचारियाँ भौत भलियाँ हैं। कौन मर्द औरत मुइ तो . . .अपे बी मुआ। ए मरदाँ में कहाँ है धरम, सौ जनियाँ कूँ दिखलाते अपनी शरम। . . .मरदाँ कूँ सब जागा शरम आती, वले औरताँ की जागा शरम नहीं आती। . . .मरद को मोम का दिल औरत कूँ फौलाद का दिल। . . .मरदाँ की मुहब्बत की झूठी लाफ़, एताल दुनियाँ में क्या रह्या इंसाफ़*। . . .

वारे **वफ़ाने दिल** के दिल कूँ नरम करी, मुहब्बत में पैर गरम करी। बाताँ च में पिरित जोड़ी, दिलकूँ हात पकड, उस बाग में लेकर आकर चश्मेपर होडी। . . .**दिल** उस कुयें में ते भार निकल्या. . .बाग कूँ देखते च मीना खुल्या, वहाँ के फूलाँ पर भौत झुल्या। . . .भौत देसा की मांदगी छाई, उस फूलाँ च पर टुक नींद आई। **दिल** नींद आते च **वफ़ा** ने खुशखबरी दी हुस्न कूँ जाते च कि. . .अब मेरे मन काम भाया, दिलकूँ तो खुदा ने बाग में ल्याया। . . . भौत देसाँ का हलाक था, फूले च पर नींद लगी, अजहूँ भी नींद च में हैं, उसकी नींद नहीं भगी†।

हुस्न लग यो बात आई, खुशियाँ ते अपसमे नहीं समाई। पाँव जमीन कूँ नहीं लग्या, दिलकने बाव पर उड कर आई। . . .देखी कि **दिल** अपने दिल का यार अपने दिल का आराम अपने दिल का आधार, . . .मधुरी उसका सूरत, भौते च पाक-मूरत सिराने हात दिया है, फूलाँ

---

१. मूल्य न समझना, बेइज्जती, २. कष्ट, ३. साथी।
* वही, पृ० १५६।
† वही, पृ० १५७।

पर आसाइश किया है। आह मारी, पुकारी बेचारी भौत की ज़ारी।...जगमग रह्या है, तमाम गुलशन, फूलाँ नहीं यो दीवे हुये हैं, रोशन बाग में पड्या है सब उजाला, आफ़ताब हुआ है हर एक लाला।...अँखियाँ में ते अंजुआँ[1] का बुंद पडता, फूलते जाने शबनम झडता। दोना हुये दो झरे, पानी ही लहू भरे। अंजू ढलते हैं उजले होर लाल, खुदा कूँ मालूम इस विचारे का हाल। दिल हुआ इश्क़ ते दानादान, आँख हुई याकूत होर अत्मास[2] की खान। दीदे दीदार कूँ तरसते, बादल होकर मोती बरसते। दिल के इश्क़ में अपस कूँ जला ली, दोनों पावों पडी अला बला ली। यो हुस्न नार मुहब्बत की मतवाली दिल का सिर गोद में उँचा ली, सीने सों सीना ली। इश्क सिर चड्या, एकाएक दिलके मूँ पर उसकी अँखियाँ में ते अंझू का बुंद पड्या। दिल नींद में ते जाग्या, हैरान होकर देखने लग्या। ज्यों बाग में ते कलियां, सब फूल कर फूल हो करतियाँ रंग-रलियां। ठारें ठार, चारों तरफ झलकते हैं झलकार। झाडाँ ने सब ताजा किये हैं सिंगार, गले में फूलाँ के भाये हैं हार, पानी कालोयाँ में सब शराब हुआ, मगर साय सुट्या उसकी अँखियाँ का खुमार। हुस्न ऐसी नार चाँद जैसी अचंबा औतार, बेइख्तियार मारी रोती है, ज़ार-ज़ार;* बैत—

जो आँखी हुस्न कूँ देखे वो आँखी खुद को खोती च है।
एता तारीफ जग करता अजहुँ तारीफ होती च है॥

(हुस्न) खुशगुफ्तार, वो खुशरफ्तार, तो दीदाँ का सिंगार, जीवका अधार, अलम का मदार, अजब खूबी का सूर, महबूबी का नूर, छंद भरी वाली, लताफ़त के फूल की डाली, नाज़ाँ में कारी, गमजियाँ कूँ उपजान हारी, बाताँ जैसियाँ निवाताँ, फूल की फकुडियाँ जैसे हातां, किरना जैसे बाल, आफ़ताब जैसा जमाल, कमर देख शेर जा शरम हुज़ूर, उसकी चाली ने काडी हत्ती की चाल में कसूर...। इस वजा के महबूब भौत च खूब (कूँ देख) दिलकी सुद नहीं रही, बुद नहीं रही। मुहब्बत कर जोश दिल में उठी रोश, जागा पर नहीं रहे होश, आह मार उठ्या, पुकार उठ्या। इश्क़ का असर भौत चड्या, दौडकर दोनों पाँव पड्या कमर में हात भर्या, चकल कर गले लाया।...कह्या ...हुस्न धन० माशूक आशिक़ पर ऐता बी प्यार करती है, एता बी उपकार करती है।..."ऐ परी, तू मुझे सरफ़राज़[3] करी। जीव के ल्होये का घाव ज्यों त्यों सोंसेगा दिल, बले वसाल के खंजर का जख्म सोसना भौत मुश्किल।"...फर्द—

गले लग सोते होर बेताबी नहीं जाती है यो मुश्किल।
विरह में तिलमिल्या जों त्यों हलाक है वस्ल[4] में बी दिल† ॥

दूर की आग ज्यों त्यों टाल्या जाये, नज़ीक की आगकूँ क्योंकर सँभाल्या जाया। जो

---

१. आँसू, २. पन्ना।
* वही पृ०, १५८।
३. सौभाग्यशाली, ४. मिलन।
† वही, पृ० १५९।

कोई खुदा के कारखाने में जाते, आखिर इस फिक्र पर आते। ...रब ने उनाकूं दिया यो मंसब, आजाद आशिक यो छोड़ दिया सब। दाखिनी दोहरा*...

तेरे करतब करम ते, मैं चुप हुई बदनाम।
मैं म्याने ते उठ गई, तूं जाने तेरा काम।।

जो आशिक यों हुए हैं अस्फियार खुदा का भी उनोंपर प्यार।...फ़िराक[1] के जलनेकूं सब कोई जानता, वसाल में कूं कौन पिछानता† ?

पानी में की जो आग कते सो वसाल है।
इस आग म्याने जलनेकूं किसका मजाल है।।

आल्क़िस्सा[2] दिल कह्या—"मैं आशिक हूँ, अगर होता हूँ, तो सुहाता है, तूं माशूक़[3] तुजे क्यों रोना आता है ? ज़फ़ा[4] आशिक का वतन...मुकाम, तू माशूक तुजे गम सों क्या काम ? माशूक़ शीरीं[5] आशिक़ सलोना, माशूक़ का काम हंसना आशिक़ का काम रोना।... मुहताज माशूक़ गनी, जों आज़ाद होर असीर, जों बादशाह होर फकीर‡...।

हुस्न धन० बोली कि—"सुन ऐ दिल, यो बात समझना है भौत मुश्किल। जानती हूँ किस पानी सों खमीर हुई आशिक़ की खाक, कि हम फिराक़ में हम वसल में दोनों जागे हैं ललाक, न यहाँ आराम न वहाँ आराम।...जल-भस्म होकर वारे पर उडे, जो आशिक़ हाये,... इश्क़ के शहर में पिरीत के नगर में माशूक़ वही च, जो आशिक़ कूं प्यार करे, आशिक़ पर उपकार करे, आशिक़ के दिल कूं गुलज़ार करे, न कि बेज़ार करे ख्वार करे।...अगर आशिक़ मरता, अछैगी बी, हंसतियाँ खडियाँ रहेंगियाँ।...मुआ तो आगमें पड चुप अपस जलता। दिल में नहीं लाता, तोडने नैं जानता भी होर एकम सों जोडने नहीं जानता। तोडने जाता तो तुटता नहीं, छुडा लेता तो छुटता नहीं। दिल में इश्क़ सुलग्या, आशिक़ बेचारा हिलग्या।...इश्क़ का स्वाद उसी ठार, जाँ दो तरफ ते उबलते प्यार। मैं तेरे दीदार की बहुत मुश्ताक़ थी,...सो मुराद बर आया, यहाँ खुदा मिलाया। आशिक़ थी, तेरी खबर चोरी सों तुझे देखने आई थी। इश्क़ का दुःख सहा नहीं गया, जीता रहूँगी तो बी नहीं गया। मैं इश्क़ तुझसों लाई हूँ, जीवपर उठकर आरई हूँ। एताल रज़ा दे जान जाती हूँ, वसाल की जागा खातिर ल्याती हूँ। या तुझे बुला भेजती हूँ या मैं अपे तुजे बुलाने आती हूँ। मैं कही सो तहक़ीक़ जान, दिलमें अपने बुरा नको मान। खलक़ के मूं में आकर पडी बात, असमान टूटया तो कौन देता हात, समुंदर कूं क्यों बांदना पाल, आफ़ताब कूं क्यों रखना संदूक में घाल। दीवा घरमे रोशन हुआ, पछीं जोतकूं काँ ले जाना ? वन में फूल खिला, पछी वासकूं क्यों छिपाना ? मूं में ते बोल निकल्या, पिछीं सो क्या फिकर आता है ? तीर कमान ते छुटया तो क्या सँभाल्या जाता है ? थाल भुई पर पडया, आवाजकूं क्यों पकडया + ।...

---

* वही, पृ० १६०। १. वियोग।
† वही, पृ० १६२।
२. संक्षेप में, ३. प्रियतमा०, ४. जुल्म, ५. मीठा।
‡ वही, पृ० १६५। + वही, पृ० १६५।

...दिल कहा—ओ नार शीरीं-गुफ्तार[१]...आशिक़ों की अँखियाँ का सिंगार चतुर-चौसार, तू ऐसी है, जो कोई तुझसे बुरा माने, तेरी बातकूं झूल कर जाने...। बिस्मिट ल्लह् खुदा हमाराह्[२] जाना वेग कर फिर आजा* ।

हुस्न परी-औतार इस्तिरी ने **ख्याल**, होर **नजर** होर तबस्सुम[३] कूं दिलकने रखकर कमाल के छज्जे पर चडी सारा देस वहां च थी, ता...शाम पडी। फ़र्द...

भुंई परके चंदनी (सो) बिन पर की परी है।
दिल सेती मिल कि दिलसौं क्या क्या अदा करी है ।।

...वो छंद-भरी उस ठार एक अदा[४] करी। **वफा** होर **नाज** उस छज्जे पर **इश्क़** की मजलिस सँवारी। **दिल** होर **नजर** होर **ख्याल** होर **तबस्सुम** उस बाग में व पानी चश्मे पर सुहबत रखते थे।

बारे, **हुस्न** धन० कू भौत मुश्किल लगी दूरी, दिल में कुछ नहीं उवरी सबूरी। "क्या करूँ" कहीं हत जोडी, वे ताकती हुई पूरी अपना दिल खोली, **वफा** कूँ बुलाकर बोली इताल **ख्याल** **होर नजर** होर **तबस्सुम** कू बोले कि दिल का दिल हात लेवों, सब मिल उसे दारुवे बेहोशी देवो। ...होर **जुल्फ़कूं** कहो कि दिलकूं इस छज्जेपर यों लेकर आ कि **दिल** भी न जाने, न अपसकूं समझे न दुसरेकूं पिछाने।†

ख्याल होर **नजर** होर **तबस्सुम** होर **वफ़ा** दिलकूं दारुवे-बेहोशी दिये बेखबर बेसुद किये। **जुल्फ़ दिलकूं** कुल्फ़ होर छज्जे पर खींच ल्याई, कि दिल कूं खबर नहीं आई। ...अपने सीनेपर उसका हात धरी, आह भरी, उसास भरी, टुक हँसी टुक रोई, अपसमें कुछ बातें करी‡। फ़र्द—

तमाशा है अजब कुछ आज इस ठार।
कि आशिक़ मस्त होर माशूक़ हुशियार ।।

(हुस्न ने) कही—"ऐ **दिल** में क्या क्या जफ़ा देखी तेरे बदल, तुझपर भी लई-लई मेहनत गुजरी मेरे बदल। तेरी यारी पर मैं वारी, तेरी अख्तियारी पर मैं वारी। ...यो नवा मिलना, एकाएक फूल होकर क्यों खिलना, मूँ देखते शरम आती, एकाएक क्यों बात बोली जाती।

उसने दिलकूं बेखबर की कि दिलकूं सों कुछ हिज्र[५] पावे। हुशियारी में आँखभर देखते मुबादा[६] लाज आवै। ...वह चतुर परी, ऐसी कुछ फिकर करी, दिल बेखबर मतवाला, हुस्न करती कुछ हातबाजी कुछ ऊपर चला। ...वाँ नजर सों बी कुछ किया जाता। जों भँवरा फूल का रस लेता। ...जो अपसकूँ इश्क़ की मस्ती बहुत चडे, यो खतरा वज्द[७] मैंने कम भार

---

१. मधुर वचन, २. साथ। * वही, पृ० १६६।
३. मुस्कुराहट, ४. हाव-भाव।
† वही, पृ० १६०।
‡ वही, पृ० १६७।
५. वियोग, ६. कदाचित्, ७. तल्लीनता।

पडे। तुरुम-इन्सान, इस तुरुम में लई-लई तमाशे है जान-छान। इस ख़तरेकूँ जोरसो खोलना है अँखियाँ की बाट, इस खतरे कूँ जोर से चडाना है ट घ।...यो तनका वसाल नहीं यह दिलका वसाल है, आ खडे रहना किसका मजाल है।

(ज) इश्क–

ग्वालियर के गुनी, उनों ते बीयो बात गई है सुनी (दोहरा)

जिनकूँ दरसन इत्त है, तिनकूँ दरसन उत्त।
जिनकूँ इत दरसन नहीं, तिनकूँ इत ना उत्त* ।।

आशिक़ ने कोशिश करना कि कहीं इश्क़ की आग खूब सुलगे, ज़ाहिर[1] दिल किसी के फंदे में खूब हिलगे। पछीं अपनी हिम्मत फ़ाम[2], अपनी-अपनी तलब अपना-अपना काम। खुदा ने लै कुछ करचा है, खुदा के आलम में सब कुछ भरचा है, एक है हरचा है, जिधर देखें उधर दरचा है। उसमें तो अव्वल आशिक़ कूँ फ़र्ज़ भौत देखना, खुश करना, शराब पीना होर राग सुनना। यहाँ सब है, यहीं तमाशा अजब है।...माशूक़ नज़दीक अछ कर तपना तरसना न्हन्ना काम नहीं, अँखियाँतली दीदार शेर अंझ बरसाना न्हन्ना काम नहीं। यो इश्क़ जोराँ सों कोई नहीं भाया, जिसे खुदा दिया उसे आया। किसी की बहूबेटीवो, अपने घर में तिलमिलता वो अपने घर में लेटी। यो फिरता घरके आसपास, उसे घर में जांचती ननद होर सास। उसकी सँगात उसका मर्द सोता, यो रात-देस याद कर-कर रोता। इसे न भीतर करार न भार, छिपे चोरीसों कधीं कधीं होता दीदार। यो आशिक़ दीवाना है च बेफ़ाम[3], बहुत मीठा लग्या चोरी का काम। हलाल ते दिल कचाता, हराम भौत सवाद लाता।...मना किये काम सो इँसान कूँ भौत भाया है।... अगर हराम कूँ मना न करते, तो अजब नहीं, जो कोई हराम न करता, हराम कूँ मना करने ते हराम पर जाहिल[4] आदमी एता लज्जत पकड़ कर जिद्द धरता। अगर हलाल कूँ बी मना करते, तो हलाल बी भौत भाता। हराम कूं सब सुट देते, हलाले च खुश आता आदमी। बहुत बुरी बला है। आदमी ते हद हुआ है, मकर ज़नाँ[5] कूँ भाता, मियानेमियाँ मँग-मँग भेजता। उन्ने के खाये सो झूटे पान। उसकी खून लगी सो अंग की चोली, उन्ने खुशबुई लाई सो खुश्बूई उन्ने खाई सो गोली। बुढियाँ लाती इधर इधर की हिकायतों[6], बहुत स्वादकियाँ होतियाँ बाताँ।...एक ज़नी सों जीव नहीं लाते, सौ जनियाँ कने जाते। एक घर में चार भार, यो भी अजब तमाशे का है ठार।...घूँगट मेंते मूँ भार नहीं काढते, बाजार में खडे अछ पर्दे फाड़ते। हटक हटक लोगाँ कूँ बुलाते, एकसकूँ दिखलाकर एकसकने जाते। उस जागा क्यों जीव लाना, यो किसे भाना।...यहाँ इश्क की तो है गरमी, वले[7] भौते च है बेशर्मी। हज़ाराँ की, केते याराँ की, ऐसियाँसों क्या करना यारी, ऐसियाँ सों ते क्या ढूँढना वफ़ादारी? यो बैठियाँ हैं पैके मिलाने, उनों मुहब्बत क्या जाने? यो स्वाद बाजारी, मुबलिग एक रात की यारी। खीसे-किया दुश्मन, घर के लोकाँ के हिस्से कियाँ दुश्मन। ऐसियाँ क्या पतियाना ऐसियाँ कूँ क्यों देना मत, एकसपास

* वही, पृ० १६८।

१. प्रकट, २. समझ, ३. बे-समझ, ४. मूर्ख, ५. स्त्रियां, ६. कहानियाँ, ७. लेकिन।

मन एकस पास तन। ऐसियाँ का का आस, जीव ला कर फुसलातियाँ, महज[1] पैकियाँ च खातिर आतियाँ, जो लगन कुछ अछता[2] तो लगन पातियाँ। एक घड़ी कुछ नहीं तो निकल जातियाँ। जानो कधीं आई न थी, जानो आशनाई[3] च न थी।...ऐसी छिनालाँ के बेरी चालें, ऐसी छिनालाँ ते खुदा सँभाले। यो बुरे चढ, यहां कौन कर कसता दिलकूँ घढ। जेता नेम-धरम होयगा, अगर फजर[4] अछैगा तो यहां नरम होयेगा*।...

यो हूरक जैसी हुस्नपरी, वो देस दिल कूँ बेखबर कर उस वसाल के छज्जे पर ल्याकर हिज्र करी। दिल कूँ बेहोश कल म्हाडी पर ल्यावै ले जावे, किसे ना दिखलावै, किसे न सुनावे। चोरी का काम, किसे नहीं होने दे फ़ाम। जैसे में रकीब की एक बेटी थी, उसका नाम ग़ैर[5], सबसों उसका बैर।...ज़ाहिरी[6] राज़ी सों रहती थी, हुस्न कने[7] दग़ाबाज़ी सों रहती थी। जाँ जावे, दो में झगडा लगावै, मिल्याँ कूँ बिचडावै।...लूतरी चाडीख़ोर[8], दिल में कुछ होर मूँ में कुछ हो...हुस्न धन० कने रहती, वले भेद अपना किसे नहीं कहती। हुस्न नार दिल का अधार चतुर-चौसार समजती कि यो नामाकूल[9]...शर्म नहीं धरती, एकस के अंगे एकस की बात करती।...मूं की बहुत हल्की शोख निडर, अपें च शरम नहीं धरती सो किसकी शरम कि उसे क्या खबर?...हुस्न उसे जानती थी, खूब पिछानती थी। जो हुस्न मनमोहन बाग में आये, उस नापाक कूँ सँभाल न ल्यायें†।...

(२) ग़ैर ने समजी कि हुस्न धन० अपस सों कपट पकड़ी है, अपस सों हट पकडी है, यहाँ तो कुछ प्यार नहीं, एताल कुछ भला बाल नहीं।...जिधर गई भी अकेली जाती, मुझे सँगात नैं ले जाती, मैं उसे नैं भाती। ग़ैर की गैरत[10] उठ खडी, गैर हुस्न के दुंबाल[11] पडी कि देखूँ यो मुजते अपसकूँ छिपाती, अकेली किधर जाती। यों च करते-करते एक रात उस बाग में हुस्न धन मनमोहन दिल सों मिलने जाती थी, यो...बी उसके सँगात चोरी सों लग पछीं आती थी‡।

हुस्न नार चतुर-चौसार जों दायम जाती थी, वो च जाकर उस छज्जे पर चढी, यो बी उस छज्जे पर जाकर एक कोने में मारी दडी। हुस्न होर दिलकूँ के चाले सब खातिर ल्याई, उनो दिनों का भेद पाई।...ग़ैर कूँ बी उन दोनों का चाला देखकर इश्क़ हायल हुआ, ग़ैर का बी दिल दिल पर मायल[12] हुआ। इन कमज़ात ने अपना ज़ात दिखलाई, आखिर अपनी जात पर आई, कि हुस्न की चोरी सों उस म्हाडी[13] पर चड़ना, होर दिल के वसाल की लज़्ज़त कूँ अंपडना : मैं बी हुस्न ते हुस्न में खूब हूँ, दिलरुबा[14] हूँ, महबूब हूँ। मैं बी चुबुलाने जानती हूँ, मैं बी दिलकूँ भाने जानती हूँ। क्या मुजमें नाज़ होर ग़मज़ा नहीं, क्या मुजमें शेवा और इशवा नहीं। मेरा मूँ भी फूल का चमन। अँखियाँ जो लाले हैं। मुंज में बी बाले-बाल छँद होर चाले हैं।

---

१. केवल, २. रहता, ३. दोस्ती, ४. भोग, स्वाद। * वही, पृ० १६७। ५. शत्रु, पर, ६. प्रकट, ७. के पास, ८. चुगलखोर, ९. नालायक। † वही, पृष्ठ १७३।

१०. लज्जा, ११. पास।

‡ वही, पृष्ठ १७४। १२. आकृष्ट, १३. कोठा, १४. मनोहर।

अगर खूबी का दावा धरूँगी, तो हूर-परी सों बात करूँगी। मैं बी आरसी में अपसकूँ देखती हूँ, अपसकूँ जानती हूँ, अपसकूँ की खूबी कूँ खूब पिछानती हूँ।

वारे एक रात हुस्न धन० मन-मोहन जगजीवन शहर में च थी। हुस्न का नहीं हुआ आना,वक्त खाली देखी इस हरामखोर कूँ यो च हुआ बहाना। दिलसों मिलने खातिर वह मौत तडफडी। उस बाग में उस वसाल[1] के छज्जे पर चढ़ी, सेहरटौना भौत जानती थी, वहां हुस्न की सूरत पकडी खड़ी। ख्याल होर नजर होर तबस्सुम[2] होर वफ़ा कूँ जों हुस्न फरमाती थी, वों च अपे भी फ़रमाई। ...दिलकूँ पिलाई, होर जुल्फ[3] कूँ वी हुस्न के नर्मे च बोलकर ज्यों त्यों दिलकूँ उस वसाल के छज्जेपर ल्याई मँगाय गले लई समजाई।...यो बदअस्ल[4], शैतान की नस्ल, हुस्न के तख्तपर दिलसों लट पट हुई, उसका बी दिल दिलसों लग्या, दिलपर आशिक़ लिपट हुई। वैसे में ख्याल जो सोता था जाग्या, 'दिल दिसता नहीं' किधर गया है, कर धूँढने लाग्या*।

दिल की खातिर अजब रखे रखवाल।
ग़ैर जो चोरी किये, तो जाग्या ख्याल।।

(ङ) सौत—

ख्याल का मुश्किल हुआ हाल। धूँढते-धूँढते वसाल के छज्जेपर जो आया, तो मक़सूद[5] अपनी पाया। देखता है जो ग़ैर दिलकी गोद में मस्त पडी है। ख्याल फ़िल्हाल शहर दीदार-कूँ जाकर उस गुलज़ारकूँ जाकर जो कुछ देख्या था, सो हुस्न नारकूँ दिलके सिंघारकूँ दीदाँ[6] के अधारकूँ खबर बोल्या, मामला यों है कर बोल्या। हुस्न यो बात सुन हैरान, परेशान सरगर्दान। ना खाना ना पानी, कडुवी हुई सब जिंदगानी, । आगकी भडकी उठी तन में, आहाँ मारने लगी मन में, । सौकन के छल, नऊज बिल्लाह[7] जीव जावै निकल। इस छलकूँ कौन सँभाले, तन-मन रंग-रूप, सब जालें। अगर मर्द आग में पडो कहे तो आग में भी पडना भाये, वले सौकन की छल सोस्या न जाये। सौकन अछे जिस ठार, उस मर्द ते बी दिल बेज़ार।...जाँ सौकन होती, वहाँ औरत...बेज़ार होकर मर्दकने सोती, न मनका स्वाद न तन का स्वाद। सीना जलता दिल में तडफडी, सेज में आई है जाकर दोज़ख में पडी।...सौकन न सोवै न सोने देवै, सौकन जीवपर उठे सौकन जीव लेवै। सौकन ते मुहब्बत में फ़तूर उठै, सौकनते जुड्या दिल तुटै। इस इधर ते साले उधर ते सालियाँ, चारों तरफ ते बरसतीं गालियां। कोई कुआँ गिरती, कोई बाँई घर में खेलतियां चाईं माईं। यो घर में सुख सों नहीं सोता, मियानेमियां लोगों का हँसना होता। जो देखे तो कलकल, औरत ते ज़ियास्त सासकी झल। साला दुश्मन साली दुश्मन, बजर का उस बेचारे का मन। किसे-किसे समझावै, किस-किसके तगाद्याँ ते भार आवे। बेट बेटी अपनियां मा वां खातिर जुदा लडते, यो जुदा तिलमिलते, वो जुदा चिरफडते†।...

---

१. मिलन, २. मुस्कुराहट, ३. अलकें, ४. दोगला।
* वही, पृ० १७५।
५. इच्छित, ६. नेत्र, ७. खुदाकसम।
† वही, पृ० १७६।

सौकनकूँ देखने का किसे ताब, जिस घर में सौकन आई वो घर खराब।...जिनने असूदगी कूँ दुसरी औरत किया, उनने बतरी अपसकूँ अजाब में दिया। केती जागा अपसकूँ बांट भावै, एक दिल दो जागा क्यों लावै ? एकसों तोडना, तो दुसरे सों जोडना।...इदर यो लडती, उधर वो झगडती। सुबा उठकर घरमें कचाट, आसूदगी का बाराबाट, एकस कने सोता, दिल दुसरी पर होता। एकसकूँ किया प्यार, तो जानो दुसरी कूँ दिया ज़हार। एकसकूँ पान खिलाया, तो दुसरी कूँ जानो आग लाया। एकसकूँ फूल पिन्हाया, तो दुसरी कूँ जानो अंगारियाँ में भाया। एकससों बात किया, तो जानो दुसरी के जीव पर घात किया। एक नज़दीक सोती, तो दूसरी रोती मरने पर राज़ी होती। कलकलाती तिल-मिलाती कईं का कईं नहीं सो झगडा काडती, दोनों को खुशी में खलल पाडती।...सौकन न सोवै न सोने देवे, अपना दावा न छोडे, अपना बैर लेवे। यो बेचारा न इधर का न उधर का, क्या जाने किधर का।...यहाँ खाना खाता, तो वहाँ पानी पीता।...इश्रत गुम हुआ, घर जहन्नुम हुआ।...रात-देस झगडा किसे आता, घर में ते न्हाट जाने का वक्त आता।*

हुस्न धन०इस ग़ैर के रश्क ते अंचल भिगाई अँखियाँ के अश्क ते जलती तिलमिलाती, कपडे फाड लेती, सिंगार तनका काड लेती। गालियाँ देती, रोती हैरान होती वसाल[1] के छज्जे पर आई।। ग़ैर कूँ देखी तख़्त पर मस्त, दिल उससों हम्दस्त, मूँ सों मूँ मिलाये हैं, सीने सों सीना लाये हैं, खुद खो रही, सो रही है। हुस्न नार सुंदरी बहुत नखरे भरी इस्तिरी पुकार उठी, आह मार उठी कि, "आह यो क्या हुआ ? वाय[2] यो क्या हुआ ? इन छिनाल ने मुजे जीवों मारा, इन छिनाल ने अपन दुंद सारी, इन छिनाल ने मेरा घर घाल्ी। इन छिनाल ने मुझे देस-अंतर दी। उसे और जागा न था, जो यहां ख्याल करा गरम, इतना तो बी मेरी आशनाई का नहीं रखी शरम। ...उसे ठार कहीं न थी, क्या अपने जनम में किससों यारी की न थीं।...इसकी चोरी की जागा देखो, इसकी हरामखोरी का जागा देखो। दुनिया ते डरना, नज़दीक का आदमी यों क्या एताल करना। आस्तीन में की आग घरमें दुश्मन, आदमी कूँ आदमी पतियाता, क्या जाने कोई कोई किसके लक्खन, के कुढँग ओलक्खन, बदनीयत बुरे आदमी कूँ केता करता जतन...काम पडे वगैर आदमी जान्या नहीं जाता, कुछ मुश्किल खडे बगैर पिछान्या नहीं जाता। सुन्ना होर पीतल दोनों का एक रंग है, वले इसका और ढंग है उसका और ढंग है। पीतल बी पीला दिस्या तो क्या हुआ ? पीतल बी छबीला दिस्या तो क्या हुआ ? आफ़ताब सबपर परतो सुटता, बले जिसमें जौहर है वो च ज़ाहर होता...में हों ते बुँदले पडते हैं, वले जिसमें कुछ जोत[3] है, वोच गौहर होता...बुरे सों भलाई दुश्मन सौं सगाई†...।

(ब) दिलपर हुस्न का कोप—

... हुस्न कूँ लगी तकबक[4], ग़ैर कूँ गालियाँ देने लगी..."मूं कारी झोंटा-काटी, मेरा बस होय तो इसे बहुत लोकूँ, मेरा बस होय तो इसे छुरियाँ भोकूँ, दो नीमा, करूँ, क़ीमा करूँ।

---

* वही, पृ० १७६।

१. मिलन, २. वाह, ३. प्रभा। † वही, पृ० १७८। ४. घबराहट।

बहुत सिर चडी है, धगड[1] कूँ ले पडी है। बहुत अपसकूँ मुरव्वती है, कुत्ते की खीर चुरौती है। अजहूँ भी जीव नहीं भाग्या, धंगड बहुत मीठा लाग्या। यो छिनाल खुदाते नहीं डरी, क्या बला करी? झगडा लानहारी, दुदकारी, चील होकर हातमें ते झोंटे मारी। इताल में वाई[2] गिरूं के कुवा में? कती थी सो हुवा*।"

ग़ैर, दिल में रखती थी वैर, जो हुस्न का सुनी आवाज़, समजी कि यो हुस्ने च जो करी है इतना नाज़।...यारकूं प्यार दिखलाती है, अपना एतबार दिखलाती है।...औरत की जातकूँ इतना कला, तोबा...यो क्या बला? घडी एक आह भारती, घडी एक उसास भरती। इते ग़मज़े[3] इसमें थे, तो इनने दिलकूँ यों हलाक करी। मर्द भंवर हज़ार फूल की लेवे वास, यो केता पुकारती फिरेगी आसपास? मर्दकूँ कोई रखवाल रख सक्या है, मर्द कूं कोई सँभाल रख सक्या है?..मर्द हज़ार जागा जायेगा, उसे काँका झल आयेगा।...एती चतुरी एनी चौसार, लड झगडकर कोई मंगती है प्यार? लडने झगडनेते क्या प्यार आता है? वल्कि प्यार है सो बी जाता है। वो औरत अजब है गंवार, जो मर्दकने लडकर मँगती है प्यार।...छोरियाँ छारियाँ अजहूँ कुछ तन पर पड्या नहीं, भला बुरा सिरपर कुछ खड्या नहीं। मर्द का दिल हात लेना जानतियाँ, क्या फ़ायदा मर्द कूँ गवाँ लेकर पछीं तापतियाँ।...औरत ने मर्द का जीव पकडे तो अबूदगी ना देखना अपने तन की, खातिर रखना मर्द के मन की।...सवाद समझनहारी औरत काँ है? सब गुन में सारी औरत काँ है?...अपसकूँ घडी-घडी सँवार मर्दकूँ दिखलाना, अपने दिल में का कुछ प्यार मर्द कूँ दिखलाना,...औरत ने मर्द की बहुत मिन्नत करना, पाँव पर हात सुटना, अलावला लेना, सीनेसों सीना चिकलना, हँसना गड देना, खुश्बोई में तमाम महक रहना, अपने दिल की बात खोल कहना।...यो तनसों तन दिलसों दिल मिलने की जागा है, अपसकूँ कली कर वा अछना, यो फूल होकर खिलने की जागा है। मर्द भँवर है, फूल का रस लेने आया है, औरत पर आशिक हुआ है, दिलकी हवस लेने आया है। मर्द सों एक चित्त एक दिल अछना, जों मर्द का दिल मँगता, त्यों मर्द से मिल अछना।...नार उसे कते हैं, चौसार उसे कते हैं।...ऐसियाँ औरताँ खातिर जीवाँ देते हैं मर्दाँ, ऐसियाँ औरताँ खातिर हज़ार-हज़ार सोसते हैं सरदर्दाँ। जिनाँ औरताँ ने यो छन्द नहीं पाई, क्या काम आती रूखी कबूल-सूरताई[4]? कबूलसूरती और उसमें यो छंद, भौते च खूब सुन्ना होर सुगंद। औरत की सिफ़त[5] क्या है? नाज़, गमज़ा शेवा, चाला, नाजुकी, नरमी दिल हात में पकडना, हँस बात बोलना, मिलना लेना होर मुहब्बत की गरमी। औरत में जितनी सिफ़त है, उतनी सिफ़त मर्द कूँ दिखलाना, मर्द ते यो सिफ़त न छिपाना, मर्द कूँ न भुलाना। औरत कूँ यो सिफ़त खुदाने मर्द को भुलाने खातिर दिया है, न कि मर्द ते छिपाने खातिर दिया है।...बहुत पाके हो चले, तो मर्द प्यार करता है, पाँव खाक हो चले, तो मर्द प्यार करता है। खुदा ने कह्या है, मर्दकूँ नीमे-खुदाइ,[6] उसकी बाततें क्यों होना जुदाई।...जो कोई औरत चौसार है होर चतुर, वो यों चलती है,

---

१. संड-मुसंड, २. बापी। *वही, पृ० १७९। ३. चितवन, ४. सुन्दरता, ५. गुण, ६. आधा ईश्वर।

जो मर्द अपें उसका होता शर्म हुजूर घरबार अपना देता सब उसके हात, उसके सामने फिरके भी नहीं करता बात। उसे च जानता है घर की इस्तिरी, लखनवती गुनभरी उसके हातमें देता अख्तियार जो कुछ वो करे सो करी।...जिस औरत कूँ मँग्या घरका धनी, उसके दीवेकूँ क्यों न होसी रोशनी* ?

ग़ैर...अपने दिलमें केतेक वक्त लग तकपग तकपग ऐसियाँ कुछ बातें कहकर असपमें अपस हैरान रहकर भी कही।, इताल यहां रहना खूब नहीं, यो बात किसे पास कहना खूब नहीं। सो साहिर[1] थी, जेतेक बदियाँ में माहिर थी।...भेस अपना फिराई सूरत पकडी होर। हुस्न की नज़र तले में अपसकूँ छिपाई, वसाल के छज्जे परते उतर तले आई। अपने दिलकूँ जो भावना सो करी, भी शहर सुबुकसार[2] के उधर कदम धरी।

हुस्न धन० कूँ दिल का यो रविश नहीं भाया, दिलपर बहुत गुस्सा आया। यो चाँद-सूरज की जाई, जिसपर खतम हुई जेवाई, । ख्याल होर नज़र होर तबस्सुम को फ़रमाई कि "इस दिलकूँ...इस जाहिल कूँ...इस नाकाबिल कूँ, इस बाग में ते बाहर काडो, इसकी दोस्ती का वरक़[3] फाडो। वेग इस बाग में ते इसे भार[4] ले जाओ।...कईं न्हाट[5] जावेगा सँभालो, इसे ग़ज़ब के बंदीखाने में घालो। इस बाग में भी नको देवो आने, अगर कईं निकल आवेगा तो तुमें जाने। तुमें तीन जने च नज़र चारों कधन रखो, होशियार अछा इसे जतन रखो† ।"...

इताल काँका इश्क़ काँकी यारी, काँका दिल काँकी दिलदारी ? काँका ग़मज़ा काँका नाज़, मूँ देखने ते हुई बेज़ार बाज़ ?...वो तो औरत थी, कम-बुद[6] थी, कम-ज़ात थी, अपना जीव दिखलाई, यो तो मर्द था, दिल सँभालना था, इसे यहाँ क्यों हिर्स आई। क्यों उसकी मुहब्बत भाई...होर पर दिल धरना दुरुस्त नहीं है, एक कूँ छोड दूसरे पर नज़र करना दुरुस्त नहीं है।...

दिल होर हुस्न में पडी हुई, असी बाताँ हुई।...जिस वक्त ग़ैर ऐसी करी काडी, उनों दोनों में जुदाई पाडी। (ग़ैर) शहर दीदार ते शहर सुबुकसार कूँ गई, हुस्न होर दिल का किस्सा सब रक़ीब बेनसीब कूँ कई। फ़र्द—

बात का लाख किया करे है यो।
बार जीवाँ की इस्तिरी है यो‡ ।।

(ट) दिल की मुक्ति—

उधर हुस्न होर दिलकूं दगा दी, उधर रक़ीब कूँ ला दी। रक़ीब के दिल में भडका उठ्या, सीना फूट्या। बेटी ते बापकूँ, ज्यास्त उठे झल। अपसमें अपे जलजल हलाक होता.. सीना ते चाक होता। शहर दीदार कूँ आया।...धूँढते धूँढते हुस्न के ग़ज़ब के बंदीखाने में

---

* वही, पृ० १८०-१८२।

१. जादू, २. हलकापन, ३. पन्ना, ४. बाहर, ५. भाग। † वही, पृ० १८३। ६. अल्पबुद्धि। ‡ वही, पृ० १८४।

दिलकूं पाया। सेह्हर में नादिर था, होने पर क़ादिर था, ख्याल, होर तसव्वुर होकर नज़र पर कुछ मंतर सुट्या दाने, यो तीनों हुये दीवाने।...उन नापाक ने फुर्सत पाया, हुस्न के ग़ज़ब के बंदीखाने में ते दिल भार ल्याया।...दिलकूं शहर मुबुकसार कूं ले चल्या।...उसमें एक कोट। उस कोट का नाँव हिजराँ। उस कोट में दिलकूं भाया। दिल बहुत जफ़ा पाया, अपनी जीवनते बेज़ार हो आया, यो आशिक़ी पर बहुत पचताया।...हुस्न क्या सबब मुंजपर एता गुस्सा करी, क्या मेरा गुनाह देख्या कि दीवानी हुई वो परी। क्या मुजते चूक आई नागहानी बला मुंजपर भाई।...खुदाते बी नहीं डरी, दिल में आया सो करी। पूछना, विचारना, एकस के कहे सुने पर क्या नाहक एकसकूं जीवों मारना*।...

हुस्न बी अजब तमाशे की धन है, तमाशे का उसका मन है।..वो मेह्र व प्यार क्या हुआ?†...

वो जीना क्या हुआ? वो तरसना वो तपना क्या हुआ? वो यारी होर बेज़ारी जों बजही साहेबेदर्द अपने ज़माने का फ़र्द कता है, कि :

हर कि रा मन यार करदम् ओ ब-मन अगयार गश्त।
क़ीमते हम् चूं दोस्त को आखिर बमन दुश्मन न शुद ।।२६।। (३)

(त) नारी-निन्दा--

मुंजे बहुत लगता है इस ठार अजब, अजब अजब हज़ार अजब, औरत अजब है शकर, वले इस शकर में तमाम भरे हैं मकर। बोले हैं कि शेर शैतान ते मकरे, ज़नाँ ते खुदा अपनी पनाह में रखे। यो दोनों बलायाँ कूं को जीत सके, उनो कूं समजाने किस आकिल कूं अहै बल, नादान ज़ात। इनों कूं तलबे-अक़ल, समजकर नहिं करतियां काम, खोल बोले बी नहीं होता फ़ाम। यो कौम बहुत जाहिल, कम-अक़ली उनोंकूं हुई है हवाल।...यों क्या दुनिया में औरताँ होकर आइ यो है, यो औरताँ नहीं खुदा कियां बलायाँ[1] हैं। घर में अछ कर एता गलवाल करतियाँ, अगर यो भार निकलतियाँ तो क्या बला करतियाँ? इसी च ते खुदा उनोंकूं छिपाया, 'घर में ते भार नको निकलने देओ' कर फरमाया। अगर घर में ते उनों का पाँव भार पडे, खुदा जाने बेचारे पर मर्दां पर क्या क्या वाक़ा खडे। घर में उनोकूं यों छिपाते, जों शैतानाँ कूं शीशे में भाते।... जानतियाँ, अक़ल उधरे च हैं अपे हैं जिधर", अपनी अक़ल के अंगे दुसरे की अकल किधर?... दावा बड़ा अक़ल न्हत्री।...हज़ाराँ में एक नेक ज़नाँ, उनो च कते[2] हैं गुनवंत धनां, उनो च कूं कते हैं भी इस्त्रियाँ हैं, जिनों दुनियाँ में नाँव करियाँ हैं।... दुनियाँ में ऐसियाँ बीबीयाँ बी हुइयाँ हैं, उनों अजकूं बी जीतियाँ हैं, नहीं मुइयाँ हैं‡।...

---

* वही, पृ० १८४।
† वही, पृ० १८५।
१. आफत, २. कहते। ‡ वही, पृ० १८६।

वारे. . .वो गैर मन में ते काडी वैर, दिल कूं ख्वारी यो जारी, तिलमिलना यो जलना देख जाने क्या दिल में ल्याई, दिलपर बहुत मेहर[1] खाई, अपने कामते आप पचताई, हेफ़ी खाई, कि "दिलते बिचडाई दिल की महबूब, यो काम अछे कुच नहीं करी खूब ।" इधर सो दिल कल-कलाता, उधर सो हुस्न कलकलाती । क्या जाने भी किधर की बला किधर आती । गैर का उतर्‌या रोस, कतेक वक्त लगन बोली अफसोस अफसोस । खातिर[2] करार कर अपस में कुछ विचार कर हुस्न धन० कने यक रुक्का लिख भेजी इस मज्मून सों. . ."अगर तूं मुजपर गुस्सा करी है, तो मेरा गुनाह है, गुस्से का ठार है । वले, दिल बेगुनाह है, पाक है, दिलते तूं यों क्यों बेज़ार है ? . . .मैं तेरी सूरत होकर खडी,तो दिलकूं भरकी पडी । तो दिल इस बेहोशी में हुआ राज़ी, दिल क्या जानता मेरी दग़ाबाज़ी ? दिल बेहोश था, अपस में अपे फ़रामोश था । मस्त पर गुनाह लाज़िम करना दुरुस्त नहीं है । मस्त पर एता कपट धरना दुरुस्त नहीं है । . . . दिल साफ़ है. . .मस्त होर सोते का गुनाह माफ़ है ।. . .जो अगर होशियार अछता, तो यो काम हर्गिज़ ना होता ।. . .मस्त, क्या जाने सोता, मस्त क्या जाने क्या होता । मैं तेरी बी गुनहगार, दिल की बी गुनहगार हूँ ।. . .मैं पाप भौत की, दोनों कूं वो दग़ा दी । दोनों की मुहब्बत में खलल भाई, एकस ते एकसकूं बिछडाई ।. . .तूं चतुर तूं चौसार, तुजे सब नाम है, गुनहगार कूं. . . बखशना बहुत बडा काम है ।". . .

(हुस्न ने) सोच्या, मेरे कामाँ ते च दिल मुंजते पड्या दूर, दिलकूं एताल मूं क्या दिखलाऊं । मैं दिलकी खिदमतगार हूँ, दिल मुंजे बेचैगा तो मैं बे-इख्तियार हूँ । वो मेरा साहेब मुंजे उसकी आस, मैं बन्दी होकर अछूंगी उसके पास ।. . .गुस्से कूं मारना था, किसी सों विचारना था । हर एक काम कूं चार जनियाँ सों मश्वरत[3] करना, मश्वरत में बहुत फ़ायदा है ।. . .अगर अपस ते यो बात मैं न पाती, उस चार जनियां में एकस कूं बी तो अक़ल आती । कोई तो बी कुछ कता, अल्बत्ता चुप ना रहता । चार जने चार बात बोलते, बात का मानी[4] खोलते । . . .किसी की अक़ल में ते बी कुछ काड कर देखना कुछ बुरा नहीं है, यो पर्दा बी फाडकर देखना बुरा नहीं है ।. . . जाँ मश्वरत ना करना वहाँ मश्वरत करने गये, तो कुछ का कुछ होता, रुच का काम सब बेरुच होता* ।. . .

पुनर्मिलन—

बारे. .हुस्न धन मनमोहन कही कि जधाँते[5] जो कोई दुनियाँ में आया अछैगा, अजब है जो कोई ऐसा दगा खाया अछैगा ।. .हुस्न नार दिल के सिंगार ने दीद्यां[6] के अंधारने बी दिलकने हज़ार-हज़ार इश्तियाक़, हज़ार-हज़ार फ़िराक़[7] सों क़िताब लिखी :"तेरी मुरव्वत की सों तेरी मुहब्बत की सों, तेरे जलने की सों, तेरे तिलमिलाने की सों, तेरे वसाल की उम्मीदवारी

१. दया, २. मन, ३. सलाह, ४. भेद । * वही, पृ० १८७ । ५. जबसे, ६. नेत्र, ७. वियोग ।

की सौं, तेरे आफताब जैसे मूं की सौं। तेरे किरनाँ जैसे रों की सौं, तेरे बादल जैसे वालाँ की सौं, तेरे चांद जैसे गालाँकी सौं, तेरे तारे जैसे नैनाँ की सौं, तेरी शकर जैसी बतियाँ की सौं, तेरे अधर की सौं, तेरी कमर की सौं, तेरे धन की सौं, तेरे बदन की सौं, तेरे नाँव की सौं, तेरे छाँव की सौं, कि तूं तहक़ीक़ जान, ऐ यार मेरा गुनाह कुछ नहीं इस ठार। . . .यो बला ग़ैर ने बेसाई[1], यो आग ग़ैर ने सुलगाई। मैं आशिक़ थी, क्या करूँ, कह्या गया, मुँजते रह्या न गया। मुंजेबी झल आई, यो बला. . .अपस पर ल्याई। . . .खुदा न झलकावै झलका झलकार, अपसकूँ मार लेते नहीं आती सार। . . .इश्क़ की बुरी अक़ल जितनी मुहब्बत उतनी झल। जिस मुहब्बत कूँ झल नहीं, उस मुहब्बत कूँ बल नहीं। . . .मुहब्बत झाड झल फूल, फूल झाडका दिसैगा मक़बूल[2]। . . ."

ऐसे नक़श-निगार[3] सौं बहुत प्यारसों किताबत. . .**ख्याल** के हात भेजी, रातोरात भेजी। **ख्याल** जिसकी बावते अगली चाल, फ़िल्हाल उस हिजराँ[4] के कोट में जाकर उस मुहब्बत के मैदान के कोटमें जाकर दिलकूँ, आशिक़ क़ामिल कूँ यो किताबत अँपडाय, ज़बानसों बोल्या। . . .उताल **दिल** दिल न सँभाल हुस्न की किताबत देख आहाँसों सीना जाल्या, अँखियाँ मेंते लहू के अंझू ढाल्या, बैत—

पडन रुक्का दिया **दिल** जीव के हात।
किताबत कूँ कते आधा मुलकात ।।

. . .अपस में अपे फ़िक्र करया, भी इसमें क्या मक्र है कर डर्‌या। **दिल** दोचीता, दूद का जल्या छाछ फूँक पीता। कह्या. . ."वो गुस्सा क्या था, यो प्यार क्या है? ऐसे प्यारकूँ एतबार क्या है? ऐसे प्यारकूँ कौन पतियावै, ऐसे प्यारते एक अधे वक्त जीव जावै। रुक़्क़ा खोल पड्‌या, अपना हात अपे लड्‌या। कहा, 'ग़ैर पर हज़ार हज़ार लानत. .है तो एक बला हो आई, नापाक ने जीवपर ल्याई। . . .दिलने बी समजा कि गुनाह **हुस्न** का नहीं, . . .उस हरामज़ादी कमबख़्त का है, गुनाह उस पापिन बेरहम दिल-सख़्त का है, वले पुख़्त छिनाल, बहुत नाज़ुक चली चाल। हुस्नकूँ टाली, रखवालाँ कूँ बी उछाली। झगडे का झगडा ल्याई, झगडा लाकर बी दोनों कूँ मिलाई*। फ़र्द—

ऐसे चलन्ताँ में कोई अगर आवै।
गर फ़रिश्ता अछै दग़ा खावै ।।

ज्यों तोडें त्यों साँदे, ज्यों खोले त्यों बाँदे। . . .

दिल ने. . .**हुस्न** धन० कूँ लिख्या कि. . ."तेरी खूबी की सौं, तेरी महबूबी की सौं, तेरी मतलूबी की सौं, तेरे मुखमक़बूल की सौं, तेरे सीसफूल की सौं, तेरे नत की सौं, तेरे

---

१. खरीदी, २. पसन्द, ३. रूप-रेखा, ४. वियोग।
* वही, पृ० १९१।

सत की सौं, तेरी मतवाली आँखो की सौं, कबूलसूरत नाक की सौं, तेरे इस नाजुक नरम लाल होटों की सौं, तेरे हातां की मेंहदी लगाई सो उस रंगीले बूटां की सौं, तेरे नबातां जैसे दाँतां की सौं, तेरे अबलो च वैसी बातां की सौं, तेरे फूलां जैसे हातां की सौं, तेरी जुल्फ़ां के तारा की सौं, तेरे गलेके हारां की सौं, तेरे चाँद वैसे जोबन की सौं, तेरे चाँदनी सार के झलकते तन की सौं, तेरे शेरनी वैसी कमर की सौं, तेरी अज़दहा वैसी कमर की सौं, तेरी रानां[1] की सौं, तेरी साक की सौं, तेरे शोक होर इश्तियाक़ की सौं, तेरे पांव की सो, तूं चलती सो उस तेरे पाँव तले के ठाँव की सौं।...तेरे कँठ की सौं, तेरे कँठमाल की सौं, तेरी ठुड्डी की सौं, तेरे गाल की सौं, तेरी नाज़ां भरी चाल की सौं, तेरे घूगरवाले बाल की सौं, तेरी कबूल-सूरत[2] की सौं, तेरी मदनमूरत की सौं, तेरी वफ़ा की सौं, तेरी जफ़ा की सौं, कि जो मैं यो हबका पडया, तो सौ हिस्सा अगला मुंजे मुहब्बत का असर चडया।...यहाँ न गुनाह तेरा है, न कुछ तकसीर मेरा है।... इतना करी सो यो ग़ैर, इताल जान दे यो वैर।...इताल खुदा जानता है कि मेरा दिल तेरे नाँव बहुत है साफ़, मेरे दिल में तेरे बाब नहीं कुछ खिलाफ़। अगर सच पूछेगी, तो ऐ मनमोहन परी, इतना सब तूँ च करी। अगर तूं ख्याल होर नज़र होर वफ़ा होर तबस्सुम कूं कह कर मुंजे दारुये-बेहोशी न पिलाती, तो मुंज पर होर तुजपर एती बला कै आती? तूं करने गई छन्द, ग़ैर ने वहाँ अपस कूं यों करी बन्द। इसी च ने कते हैं, कि औरत नाक़िस-अक़ल है, यो कदीम नक़ल है।... औरत अपने घरबार कूं खूब है, औरत साग सबजी बेसवार कूं खूब है। घर का धंदा उसका काम है, बाकी धंदे का उसे क्या फ़ाम है? घर की रहनहारी, घर का खबर उसे मालूम भारके कामां क्या जानती बेचारी। महबूक की बात, फूल का पात, कुमलाते बारां नई, वास निकल जातै बार नई। बावरा, उस बावरे पर क्यों करना पतियार...(महबूब है) जिसकूं खुदा दिया, मान, जिसकूं खुदा का ध्यान, जिसकूं खुदा की पिछान, जिसका रोशन ईमान, जिसका बडा ज्ञान चतुर सुघड सुजान।...

अक़ल पादशा ह जो शिकस्त खाया, फिरकर शहर तन (वदन) में आया, खुदा जाने किधर जा मूं छिपाया। दिल तीर खा अडया, झगडे में घोडे परते पडया। हो सबूकि अकल का सर-लश्कर[3] था, बहुत दिलावर था, जो इश्क़ के लश्कर ते मोड खाया, शहर हिदायत कूं आया। हिम्मत कूं बोल्या कि दिल तो ज़ख्मी होकर पडया, हुस्न के हात चडया। अकल शिकस्त खाकर तायब हुआ, खुदा जाने किधर गायब हुआ। जो कुछ क़ज़ा थी, सो हुई, खुदा की रज़ा सो हुई। हिम्मत ने सिर धुनकर कह्या कि..."अकल का मुंज पर हक़ बहुत है,...हक़यारी यों है कि इस वक्त अक़ल होर दिल की खबर लेना उनोकूं तकवा[4] देना। बैत—

जिसे जो कोई प्यार करता है।
हक़यारी वो यार रखता है* ॥

...इश्क़ के लश्कर सौं बी फिरकर झगडा करै रगडा करै, यक नाँव करैं, मारैं

---

१. जाँघ, २. दुष्ट आकृति, ३. सेनापति, ४. पतिव्रता।
* वही, पृ० १९३।

या मरै। हिम्मत यो बातकर ल्होआ[1] हात कर अपना लश्कर मुस्तैद किया,. . .एक-एक की गिनती लिया। चारों तरफ ते उठियाँ फौजाँ, जानौ कहर[2] के दरिया की मौजाँ। शहर दीवार की तरफ चल्या,. . .जानो डूँगर हिल्या, ठारें ठार ख़लक खलबल्या। केतेक देसाकूँ क़ामत के बोस्तान[3] जमें आया। भाई कूँ अकल होर दिल का अहवाल पूछ्या गले लाया।

कामत बोल्या कि. . ."ए हिम्मत तू खूब यो पूछया। तुजपर हज़ार रहमत।. . . अक़ल पादशाह एत्याँ कूँ लिया-दिया, खिलाया-पिलाया, बले इस वक्त उसे पूछने तुझ बगैर यहाँ कौन आया?. . .एताल क्या पूछना उसका न हाल? आज यक साल है, कि दिल हिजरां[4] के कोट में बहुत बदहाल है, होर अक़ल बी शहर। तन कूँ गया है अपने कदीम वतन कूँ गया है। इश्क़ का बहुत लश्कर है। इश्क बहुत ज़ोरावर है। इश्क सो जेता कोई लडेगा, पूरा ना पडैगा। इश्क़ सों मिल चले तो च नफ़ा है, नहीं तो बहुत जफ़ा है। इश्क़ ते लड़कर क्या किया, झगडकर क्या किया, अपसकूँ खराब किया। लडकर क्या पाया, अपना मरम गँवाया,. . .बहुत आखिर पचताया।. . .बैत—

अक़ल सों लड अव्वल अकल सों विचार।
अकल जाँ न चले वहाँ तरवार।।

. . .जो दर्द दारू[5] ते खूब नहीं होता, उसे दाग़ देना, यो बात इसते कहे कि बातते कोई कुछ पन्द[6] लेना। एक बात है मेरी फ़ाम कर। जितना सकैगा उतना दोस्ती सों कामकर। इश्क़ बहुत बड़ा पादशाह ज़ोरावर, समज सों लड अक़ल ते नको पड टुक मुलाहिज़ा कर।. . . गरूर कूँ जीवपर आये, तो कोई ल्होये पर हात भाना, चुपे च ल्होये पर भाना सो बला जीव पर ल्याना। यो क्या फ़ाम है? यो क्या काम है?. . .इस फ़ाम नको पड़ नको लड, नको झगड़। सुलह सों काम न होय तो लडना, तदबीर ना चलै तो झगड़ना।. . .लडे कूँ नको कर इज्तराव[7], भीताँ का होयगा घर खराब।. . .इश्क़ का लश्कर बहुत बेनिहायत, जिधर देखैंगे उधर उसकी विलायत। . . .बडे डूँगर पर न्हन्ना डूँगर पडे, फत्तर[8] ते फत्तर जुदा होये न्हन्ना डूँगर बालू होकर सब झडे। . . .सत में पीट रगडकर सूल उठाना, आकिल यो काम क्या माना। . . .एताल तदबीर इसकी यो है कि इश्के च सों इश्क़ होना, इश्के च कूँ समझाना, इश्के च कूँ अपना करना। अगर कोई बडे की अदब रख्या तो न्हन्ना नहीं होता, नै रख्या तो कोई सीके काम में मना नहीं होता। बडयाँ की अदब रखना अपनी बडाई है, यो बडाई बडयाँ ते आई है, यो बडाई न्हन्नाँ कूँ, बडयाँ कूँ सबकूँ भाई है*।. . .

क़ामत हिम्मत का भाई, कामत की नसीहत हिम्मत की खातिर आई। हिम्मत लश्कर सब अपना क़ामत कने छोडया, कामत के कहे पर इश्क़ सों जोडया।. . .दिल का कपट दूर किया, हट दूर किया। इश्क़ कूँ 'बडा है' कर जान्या, इश्क़ की बडाई मान्या। इश्क़ ने हिम्मत

---

१. हथियार, २. क्रोध, ३. बाग, ४. वियोग, ५. दवा, ६. शिक्षा, ७. अधीरता, ८. पत्थर।

* वही, पृ० १९५।

कूँ गले लगाया। इश्क़ कूँ हिम्मत पर बहुत मेहर आई, सच्ची बात सब किसे भाई। रहनेकूँ अजायब नादिर[1] एक जागा दिया, बहुत तवाज़ा बहुत ताज़ीब[2] किया। बाट की माँदगी चडी थी, सो उसका उतार हुआ, हिम्मत दिल करार हुआ।...पछीं इश्क़ ने उसे एक रात खिलवत[3] में बुलाया। हिम्मत ने लईं बाताँ इधर उधर कियाँ, जिधर तिधर कियाँ सुनाया। उस बाताँ में **अक़ल और दिल** की बी बाताँ ल्याया। इश्क़ बहुत खुश होकर राज़ी हुआ। इश्ककूँ बहुत खुश आया। आखिर...करार हुआ कि इश्क पादशाह० के घर **अक़ल** कूँ वजीरी देना, सब पर अमीरी देना, इश्क़ जैसे पादशाह कूँ अकल जैसा वज़ीर होना।...दिलावर लोगों की सुहबत नहीं भाई, बादशाही जाकर वजीरी आई।...**इश्क़** पादशाह० ने अपने मेहर खुर्शेद-चेहर सरलश्कर कूँ...फरमाया कि शहर बदन कूँ वेग जा। होर अकल कूँ बहुत दिलासा देकर, बहुत दिल हात लेकर इज्जत सों समजा कर मुँज लग लेकर आ। होर कह कि दिल आज़ुर्दा[4] नको कर,... तूँ हमें भाई है, हमना तुमना में क्या जुदाई है? हमारी वज़ीरी तेरी पादशाही ते कुछ कम नहीं है, दिल खुश रख कुछ गम नहीं है*।...

मेहर यो बात सुन...शहर **बदन** कूँ रवाना हुआ,...बहुत वेग च जाना हुआ। अक़ल सों मुलाकात किया, जो इश्क़ कया था सो बात किया। अक़ल ने दिल का पूछ्याँ अह्वाल **मेहर** ने कहा..."दिल बी है खुशहाल, तेरा बी बुलंद हुआ अक़बाल[5]।...कर अब अनन्द बढाई, तेरी मकसूद[6] हासिल हुई मुराद घर आई†।...

अक़ल अंदेश देख्या कि लश्कर ढूंढ्या, बादशाही का बंद छूट्या, फिर लडने का सकत नहीं, तदबीर कूँ बी गत नहीं।...मुल्क हुआ परागंदा[7], साहेब होकर बैठ्या हर एक बंदा। घर-घर अमीर, घर-घर राजोत घर घर तदबीर। हर कोई सरखुद कोई नहीं सुनता किसी की बुद। जिसे देखता हूँ वो दिल में बदनीयत करता...इश्क़ बादशाह सों बहुत डरता। जीत देने कते थे जो काम पडे, वो दोस्त सब दुश्मन होकर खडे।...इताल फिर पडे बख्त, इताल काँ की पादशाही काँ का तख्त? इश्क सों मिलने च नफ़ा है।...(अकल ने) कह्या... बहुत खूब...हमें दोनों मिल जावें,...इश्क़ फ़रमाता सो खातिर ल्यावें इश्क़ सों मुलाकात करें, अपने जीव के बारे बात करें‡।...

बादशाही चिन्ता—

मेहर...के संगात **अक़ल**...रातें रात इश्क़ के हुज़ूर आया,...दुआ दिया,

---

१. दुर्लभ, २. सम्मान, ३. एकांत, ४. परेशान।

* वही, पृ० १९८।

५. प्रताप, ६. इच्छित।

† वही, पृ० १९८।

७. उजाड़।

‡ वही, पृ० १९९।

दस्तबोसी किया। इश्क़ कूँ बी भौत भाया। इश्क़ नें बी अक़ल कूँ गले लगाया, दिलासा दिया बहुत बहुत समजाया। कहा..."इताल मैं पादशाह् कूँ वजीर, तेरे हात में दिया अपना मुल्क अपनी सब तदबीर। तुजे भाये सो कर।...मैं मस्त हूँ,...मेरी निगहवानी में अछ। मैं होर शराब, राग होर महबूब, मैं इश्क़ हूँ, मुंजे यो च खूब। बाकी का दर्दसर तूँ जाने। यो दर्देसर मुँज लग नको दे आने। मँगता हूँ, इस दुनिया में दो देस बे-गम हो अछूँ।...कब लग इस दुनिया में गिरिफ्तार हो अछना, अपने दिल की खुशी ते बेसार हो अछना। सुबा उठकर यो लोकाँ का कुचाट, दिल...बहुत पकडचा है उचाट। किस किस सों जंग किस किस सों आश्ती[1] करूं, केताँ कूँ समझाऊं, केताँ की दिल दाश्ती करूँ? जनम यों च किया बरबाद, ना दिल की खुशी न खुदा का याद। एती आरजू सों दुनिया में आना होर तख्त पर बैठ इधर उधर का गम खाना। ...इधर की हाँक उधर का पुकार, मुल्क में गौगा ठारेंठार।...तख्त पर बैठ तो क्या बादशाही, आई ऐशो-इशरत का नांव है बादशाही।...दो देस की दुनिया बादशाहों के घर में दायम[2] धँगाना-अछना, दायम हंसना-खेलना, लेना-देना, पीना-खाना अछना, गाना-बजाना अछना, घर का एक यात्रा एक हाट हो रहना, रात-देस तमतमाट हो रहना।...बादशाह् का घर बादशाह् के जैसा दिसन।...बादशाह् के घर में कोई आये तो यों अछना जानों मेजबानी कूँ आया है, गमकूँ विसर जावे जानो शादमानी कूँ आया है। दुनिया की बहिश्त है बादशाह का घर, न कि बादशाह् के घर में आये बी दर्दसर।...नेम होर धरम की नांव बादशाही है।...बादशाही आती वले बादशाही कर जानना बहुत मुश्किल है, बादशाह होकर अपस पिछानना मुश्किल है। यो जो लश्करी लश्करी धने की झडती देता,त्यों बादशाह बी बादशाही की झडती देता है, यानी अदल होर इंसाफ़ करना, खलक़ कूँ आसूदा रखना, खलक कूँ मुराद कूँ अँपडाना[3], खलक़ की दुआ लेना है।...खलीफ़ा यानी खुदा की जागा पर बैसनहार, हर एक बात कूँ हकसों करना बूज विचार। ...यो खुदा का खलीफ़ा सा दिस आयेगा, उसका चलंत बी खुदाकूँ भायेगा। ...यहां हक़ चलना हक़ पर दिल धरना है, बादशाही करना खुदाई करना है।...एताल मुंजे तुज जैसा वजीर मिल्या है, खुदा है मद देख हुआ है।...

आखिर जिस वक्त कि **इश्क** पादशाह की अक़ल पर वजीरी मुकर्रर हुई, इश्क़ पादशाह० **हिम्मत** कूँ फ़रमाया कि **दिल** कूँ हिजराँ[4] के कोट में **रकीब** ने दुंद सों बंद किया है,...तूँ जाकर...दिलकूँ...वहां ते मेरे हजूर ल्या, होर उसके पांव में का बंद काड[5] कर उस रकीब बे-नसीब के पांव में भा। होर गैर कूँ जो उसकी दुख्तर[6] है...उसे बी खूब कलब जागे में कद कर आ। जो वह कई निकल न जावे, वो कई झाँकने की फुर्सत ना पावे। वो बहुत बुरी है, शकर की छुरी है, जां जायेगी, वाँ बला बेसायेगी।*

हिम्मत ने **इश्क़** पादशाह् कूँ सलाम किया, मुद्दा सब फ़ाम किया। **हिजराँ** के कोट कूँ चल्या।...वहां जाकर लडकर झगड कर कोट लिया, झण्डा फतह किया। दिल कूँ उस कोट में तोभार ल्याया। दिल के पाँव का बंद काडकर **रक़ीब**...के पाँव में भाया। होर **ग़ैर** कूँ बी

---

१. मित्रता, २. सदा, ३. पूरा करना, ४. वियोग, ५. निकाल, ६. बेटी।
* वही, पृ० २०१।

पुराने घर में...छोड्या, चारों तरफ ते कांदान चिन्या, दर्वाजाँ के पाटाँ जोड्या, कि दुसरी बार ऐसी शैतानी न करे, दो देस अदब पावे, टुक डरै। ग़ैर खातिर बी जीव तिलमिलता, बले क्या करना दुनिया का काम है, अदब किये वाज नहीं चलता।...पछीं हिम्मत ने दिलकूँ... बहुत दोस्तीदारी सों इश्क पादशाह० के हुजूर ल्याया, दिलकूँ हार अकल कूँ होर इश्क़ कूँ एक जागा मिलाया। यो सब जो सगे, एकस के गले लगे।...अदावत[1] होर हट दूर हुआ, सब कोड-कपट दूर हुआ।...आखिर अक़ल होर इश्क़ होर हिम्मत मिल देंगे कि दिलका हुस्न सों अकद[2] करना ...(क्यों) कि दिल ने हुस्न खातिर बहुत जफा[3] देख्या है, बहुत साल्या है।*

(क्ष) उपसंहार—

सब मिले, सब हुये खुशहाल। कहे एताल दिलकूँ ना विसरना, यो काम अंदेशे हूँ सो करना। इस काम कूँ सब करकर दिये। व्याह का काज मांडे, डेरे, ठारेंठार दिये घर संवारे। जागा जाग नकश नगारे। सदर[4] बिछाये पाचे, रंभा, उरवसी, मेनका पातुराँ नाचे। ठारेंठार आराइश[5] किये। दिल सूरज का हुस्न चांद सो जलवा दिये नाज़, ग़मज़ा, इशवा, लताफ़त, मेहर छंद यो चंदनियाँ सारियां उस सूरजपर उस चाँद पर तारे वारियाँ।...मुश्तरी तमाशा देखने आई, ज़ोहरा ने जलवा गाई।...इताल गमे विसरने खातिर इशरत की खिलवत करने खातिर फूलाँ सों सेज संवारे छपर पलंग का पर्दा उतारे। दोनों दिल खोल दिये, गुजरा किस्सा बोल लिये। एकसकूँ एक गले लाते, एकस पर एक कुर्बान जाते। एकस की खातिर एक तडफडाते, एकस के एक पाँव पडते...आह मारते उसास भरते। एकसकूँ एक देखते नींद उड गई, नहीं सोते। इताल की खुशी याद आई तो हँसते, अव्वल का दुख याद आया तो रोते। अपस में अपे ज्यों जाते त्यां बहुत सवाद सों सब रात गुजराते। पाँव में पाँव, सीने सों सीना अधर पर अधर हात में हात दोनों मिल यों सोते, जानो एक वजूद एक जाते।...मुरव्वत चुलबुलाने लगी, मुहब्बत आँख्यां में घुलने लगी, बंगाडयां शोर किया। घुँगरू गुल उचाये, कमर ते जर कमर खुलियां, हाराँ सीने पर दुंद लाये, फूलां खूये[6] में भिगें तो का तोये च कुंभलाये। खुश्बोई की डोरी छुटी, चौधर वास की महकार उठी। दो चार प्याले शराब पिये, दुनियां में जो कुछ करते सो गये†।...

हुस्न धन हाँक मारी, चिलचिलाकर उठी। दिल बादशाह चतुर जौहरी...। हुस्न नार करी रोने के बहाने। दिल लग्या गले ला-ला समझाने। रोती थी, सो यकायक हंस पडी भी, अपस में वो गले लगने लगी घडी-घडी भी। वो ही मुहब्बत वो ही प्यार, एकस पर एक सदक़े[7] एकस पर एक बलिहार।...दोनों कूँ हुआ वसाल,[8] अपना दिल खुश तो सब आलम खुशहाल। दिलकूँ मिल्या जीव का जानी।...

दिल ने खातिर करार किया, घरदार किया...दिलकूँ फर्जन्दाँ हुये, फर्जन्दाँ खिरदमंदा[9]

---

१. दुश्मनी, २. ब्याह, ३. जुल्म। * वही, पृ० २०३। ४. फर्श, ५. सजावट, ६. कूये। † वही, पृ० २०५। ७. नौछावर, ८. मिलन, ९. बुद्धिमान्।

हुये । उस फर्जन्दाँ में का बडा फ़र्ज़न्द सो यो किताब (जो) है अपने वक्त का **लुक़मान**... **अफलातून**, अपने वक्त का **खुसरो**... **फ़रहाद मजनूं** अपने वक्त का **खाक़ानी-अनवरी-सादी** ...जो किताब पादशाह कूँ मजलिस में फिरे, मोतियाँ के दरिया में तिरे, आशिकाँ का दिल बहलाता, माशूकाँ कूँ तपाता । सब के दिलकूँ इससो काम, बहुत इसमें अक़ल बहुत इसमें फ़ाम[1] । जाँ यो अछे वाँ दिलगीरी ना आवे, सुहबत इसकी सबकूँ भावे ।...

...वारे जिस वक्त था एक हज़ार व चहल व पंज (१०४५ हि०), उस वक्त जहूर पकड़ाया[2] यो गंज । जो कोई साहेबे-सखुन[3] अछैगा, जो कोई साहेबे-फ़न[4] अछैगा,[5] उसे यो सखुन[6] असर करैगा, मस्त बेखबर[7] करैगा, अपना करैगा अपनी उधर[8] करैगा । वो पिछानैगा...इंमना[9] याद करैगा...अजब मर्द[10] था कहैगा, अजब साहेबेदर्द[11] था कहैगा ।...

हज़ार शुक्र कि वारे अल्हम्दो-लिल्लाहि किताब तमाम हुआ, इताल जों हुस्न होर दिल अपनी मुराद कूँ अँपडे...त्यों पादशाह होर पादशाह के दोस्ताँ...अज़ीजाँ... ख्वेशाँ[12] ...करावंताँ, पादशाह के प्यारियाँ, प्यारे, मांगते, मंगनहारे, पादशाह के खिदमतकाराँ ...सब अपनी मुराद कूँ अँपडो,[13] उनों कूँ गैब की न्यामत सँपडो* ...।

---

१. समझ, २. प्रकाशित हुआ, ३. वाणीस्वामी, कवि, ४. कलास्वामी, कलाकार, ५. रहैगा, ६. वाणी, काव्य, ७. मस्त, बेहोश, ८. अपने को उस ओर, ९. हमको, १०. अद्‌भुत पुरुष, ११. वेदनावाला, १२. मिले, १३. पहुँचे ।

* वही, पृ० २०५ ।

भाग २

मध्यकाल (१५००–१६७० ई०)

§९. मुहम्मद कुल्ली (१५८०–१६१२ ई०)

१. कवि

सामन्तशाही युगमें किसी सामन्त के सहारे साहित्य को आगे बढ़नेका मौका मिलता है। दक्खिनी हिन्दीके लिये ऐसा सुयोग्य तब मिला, जब कि गोलकुण्डाकी गद्दी पर मुहम्मद कुल्ली कुतुब (१५८०–१६१२) बैठा। यह ठीक है, कि मुहम्मद कुल्ली दक्खिनी हिन्दी का प्रथम कवि नहीं है। उससे पहले ख्वाजा बंदानिवाज (मृ० १४२१ ई०) का 'चक्कीनामा', अशरफ (१५०३ ई०) का 'नौसिरहार', फीरोज (१५६४ ई०) का 'तौसीफनामा', बुरहा-नुद्दीन जानम् (१५८२ ई०) का 'इरशादनामा' लिखा जा चुका था। सुल्तान मुहम्मद कुल्ली कुतुब का शासन गोलकुण्डा की बहुत ही शांति और समृद्धि का समय था। उसके दादा कुल्ली कुतुब (१५१८–४३) ने बहमनी राजके ध्वंसावशेष पर अपने राज्य की नींव रक्खी। वह एक साहसिक वीर ईरानी तुर्क था। लेकिन उसका पोता और पाँचवाँ उत्तराधिकारी एक हिन्दू माँ का पुत्र होने से अपने देश और उसकी चीजों का अधिक परिचय ही नहीं रखता था, बल्कि उनके प्रति यथाशक्ति प्रेम भी रखता था। उसके बाप-दादा जहाँ अपनी धार्मिकताके प्रमाण-स्वरूप खूब दाढ़ी रखते थे, वहाँ यह कवि-सुल्तान दाढ़ी से ही मुक्त नहीं था, बल्कि उसकी वेशभूषा भी बिल्कुल स्वदेशी थी। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं, कि वह इस्लाम का भक्त नहीं था। कोई ऐसी कविता नहीं है, जिसमें मुहम्मद कुल्लीने अल्लाह और उसके पैगम्बर की प्रार्थना-स्तुति न की हो।

मुहम्मद कुल्लीका बाप इब्राहीम कुल्ली भाई से जान बचाकर विजयनगर में शरणार्थी हुआ था। गद्दी प्राप्त करनेमें उसे सबसे अधिक सहायता हिन्दुओं से मिली थी, इसलिये हिन्दुओं के साथ उसका अधिक अच्छा संबंध होना स्वाभाविक था। इब्राहीम की एक रानी भागीरथी आंध्र-महिला थी, जिसको ही भविष्य के महान् कवि को पैदा और प्रभावित करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। कहा जाता है—मुहम्मद कुल्ली ने तेलुगु-भाषा में भी कवितायें की थीं, किन्तु उनके उदाहरण उपलब्ध नहीं हैं। अपनी कविता में संस्कृत-शब्दों का इसने जैसा उपयोग किया है, उससे जान पड़ता है, कि उसको भारतीय साहित्य का कुछ परिचय अवश्य था। मुहम्मद कुल्लीका जन्म १५६४ ई० में हुआ था और बाप के मरने के बाद १५ साल की उमर (१५८० ई०) में वह गद्दी पर बैठा। उसके पिताका बहुत-सा समय लड़ने-भिड़ने और राज्यके विस्तार करनेमें बीता था। कवि सुल्तानको शांतिसे कविता करने तथा प्रेम और मदिराके महोत्सवों को मनानेका पूरा अवसर मिला। उसके जन्मके एक साल बाद (१५६५ ई०) दक्षिणकी पाँचों मुसलमान रियासतोंने मिलकर विजयनगर को खतम कर दिया। उसके समकालीन

अकबरने गुजरात तक ही अपनी विजयको सीमित रखा। इस प्रकार दक्षिण और उत्तर दोनों ओरसे किसी बड़े शत्रु का भय नहीं था। हाँ, पाँचों बहमनी रियासतोंकी आपसमें कभी-कभी अनबन होती रहती थी, लेकिन उसने मुहम्मद कुल्लीके समय कोई गम्भीर रूप धारण नहीं किया। मुहम्मद कुल्लीकी बहिन चाँद बीबी अहमदनगरकी प्रसिद्ध वीरांगना थी, जिसने मुगलोंके सामने सिर नवाना स्वीकार नहीं किया। मुगल-साम्राज्यका सीधा संबंध अभी गोलकुण्डा या बीजापुरसे नहीं हो पाया था।

गोलकुण्डाका यह रंगीला सुल्तान कविताकी भाँति दूसरी ललित-कलाओंका भी प्रेमी था। मदिरा, मदिरेक्षणाका प्रेमी तो उसे होना ही चाहिये था? जवानीमें वह गोलकुण्डाके समीप चंचलम् की नर्तकी भागमतीको अपना हृदय दे चुका था। इस प्रेमकी कितनी ही कथायें प्रसिद्ध हैं। इसी चंचलम् गाँवमें मुहम्मद कुल्लीने अपनी प्रेमिका भागमतीके नाम पर भाग-नगर बसाया। पीछे जब भागमती राज-महिषी बनकर हैदरमहलकी उपाधिसे विभूषित की गयी, तो भागनगरको हैदराबादके नामसे प्रसिद्ध करने की बहुत कोशिश की गई। इतिहासकार फरिश्ता तक ने लिखा है कि हैदराबाद नाम रखा तो गया "लेकिन दरम्यान खलायक मशहूर ब भागनगर अस्त, न हैदराबाद" (लेकिन लोगोंमें यह शहर हैदराबादके नामसे नहीं, बल्कि भागनगरके नामसे प्रसिद्ध है)। फरिश्ताकी शिकायत हो सकती थी, लेकिन अब तो दुनियाँ भागनगर को कब की भूल चुकी है और सभी हैदराबाद को जानते हैं। संभव है, आंध्र-प्रदेश की राजधानी होने के बाद फिर उसे भागनगर बनने का सौभाग्य प्राप्त हो।

सुल्तान मुहम्मद कुल्ली (१५८०-१६१२ ई०) अकबर का तरुण सम-सामयिक था। वह गोस्वामी तुलसीदास की मृत्यु (१६२३ ई०) से ११ साल पहिले मरा। कहते हैं, उसने एक लाख से अधिक पद्य (शेर) रचे।

२. कविता

भाषा—मुहम्मद कुल्ली ही नहीं, बल्कि दूसरे भी मुसलमान कवियों के सामने देशभाषा को अपनाने के समय यह सवाल बराबर आया, कि किस रूप में भाषा को अपनाया जाय। दक्खिनी-हिन्दी के इन कवियों की रचनाओं में संस्कृत और हिन्दी के शब्द बहुत अधिक मिलते हैं, जिन्हें आगे चलकर कम-से-कम करते अन्त में केवल व्याकरण **हिन्दी का** रहने दिया गया। पर, पुराने कवियों ने भी हिन्दी-छन्दों को कभी नहीं अपनाया, वह सदा अरबी-छन्दों को लेते रहे। इस प्रवृत्ति को देखने से साफ मालूम होता है, कि यदि हिन्दुस्तान ईरान की तरह पूर्णतया मुसलमान हो गया होता तो हमारे छंदों की भी वही गति हुई होती, जो कि ईरान में हुई। ईरान के फिरदौसी जैसे राष्ट्रवादी कवि भी अरबी-छंदों का ही प्रयोग करते रहे। विद्वानों को बड़ी प्रसन्नता हुई, जब कि मध्य-एसिया की मरुभूमि से मानी की किसी पुस्तक में पुराने ईरानी छंद देखने को मिले। वस्तुतः इन कवियों ने भाषा के हिन्दीकरण की ओर उतना ध्यान नहीं दिया, जितना कि उसके इस्लामीकरण की ओर।

मुहम्मद कुल्ली की कविता पर सूफी विचारों की भी छाप है, इसलिये यह कहना मुश्किल है

कि वह कहाँ लौकिक प्रेम का वर्णन करता है और कहाँ पारमार्थिक प्रेम में चला जाता है। पिया के चरना और साईं समझावना ऐसी ही संध्या-भाषा की कवितायें हैं। इसका असर वियोग-संबंधी कविताओं में भी मिलता है। चाँदनी और पिया भी एक सुंदर कविता है। नखशिख के भी कितने ही वर्णन मुहम्मद कुल्ली की कविता में मिलते हैं। प्रेम और बुद्धि का झगड़ा सभी जगह कवियों के हृदय में रहता है। मुहम्मद कुल्ली बुद्धि-पंथी नहीं, प्रेम-पंथी हैं।

गोलकुण्डा पर ३२ वर्ष शासन करके कुल्ली ने गोस्वामी तुलसीदास के देहान्त से ११ वर्ष पहले शरीर छोड़ा। इसी ने हैदराबाद को संस्थापित कर चहारमीनार, दादमहल जैसे अनेकों सुन्दर प्रासादों से अलंकृत किया, जिनमें से अब थोड़े ही बाकी रह गये हैं। हमारा सौभाग्य है कि हिन्दी के इस महान् कवि की साहित्यिक कृतियाँ अब भी सुरक्षित हैं, यद्यपि वह नागरी-अक्षरों में प्रकाशित नहीं हुई हैं।

सुल्तान मुहम्मद कुल्ली कुतुबशाह की कवितायें दूसरी दक्षिणी कविताओं की तरह अरबी-लिपि में लिखी गई हैं। यद्यपि तथाकथित मुगलों के आदिपुरुष तैमूर के समय अरबी की सुधरी और सुन्दर लिपि नस्तालीक आविष्कृत हो चुकी थी और बाबर तथा उसके उत्तराधिकारियों ने उसका भारतवर्ष में खूब प्रचार किया, लेकिन दक्षिण में बहमनी-राज्य अब भी टेढ़ी-मेढ़ी अरबी लिपि को ही इस्तेमाल करते थे। मुहम्मद कुल्ली का दीवान (अकारान्त क्रम से कविताओं का संग्रह) कवि के जीवनकाल ही में लिखा गया, अब भी मौजूद है। उसके अक्षरों की सुन्दरता देखकर चित्त प्रसन्न हो जाता है। अरबी-लिपिमें स्वरों की कमी के कारण हिन्दी, विशेषकर तत्सम शब्दों का लिखना कठिन था, किन्तु उन्हें शुद्ध लिखने के लिए मुहम्मद कुल्ली के दीवान में उसी तरह स्वर-चिह्नों को बड़े ध्यान से लगाने की कोशिश की गई है, जैसे कुरान लिखने में।

धार्मिक त्योहार और रीति-रिवाजों के बारे में मुहम्मद कुल्ली ने कितनी ही कवितायें की हैं, किन्तु उसका जौहर तब खुलता है, जबकि वह धर्म की लक्ष्मण-रेखा से बाहर जाता है। वसन्त इस्लामी त्योहार नहीं था, जलवा (सोहाग) भी प्रेम से अधिक संबंध रखता है, वर्षाकाल और ठंड-काल (शीत ऋतु) के वर्णनमें कवि मुक्त होकर प्रकृति के क्षेत्र में विचरण करता है।

अन्य राजाओं और सुल्तानों की तरह इस रसिक कवि का अन्तःपुर भी सुन्दरियों से भरा हुआ था। भागमती नृत्यकला और संगीत में उस समय अद्वितीय थी। जिसके लिए मुहम्मद कुल्ली का उस पर उतना ही प्रेम था, जितना उसकी मृत्यु के सात वर्ष पहले गद्दी पर बैठनेवाले जहाँगीर का नूरजहाँ से (अथवा शाहजहाँ का मुमताजमहल से)। भागमती अभी भागमती ही थी, जब कि उसके नाम से भागनगर बसा। किन्तु जल्दी ही सुल्तान मुहम्मद कुल्ली ने अपने हरम में स्थान देकर उसे हैदरमहल का नाम प्रदान किया और जैसा कि अभी कहा, उसने असफल प्रयत्न किया कि भागनगर को हैदराबाद कहा जाय। हैदरमहल की प्रशंसा में कई कवितायें मुहम्मद कुल्ली ने लिखी हैं। भागमती गुण में ही नहीं, रूप में भी विशेषता रखती थी।

३. मंगलाचरण

(१)

चँद सूर तेरे नूर[1] ते[2] निस दिन कुँ नूरानी[3] किया।
तेरी सिफ़त[4] किन[5] कर सके तूँ आपि मेरा है जिया॥
तूंज नाम मूंज आराम है, मूंज जीव सो तुज नाम है।
सब जगकूँ तुझसाँ काम है, तुज नाम जपमाला हुआ॥
तुज याद में जग मोहिया, है जग उपर तेरा मया[6]।
जो जग मँगे[7] सो तूँ दिया, तूँ ही जगत का है दिया॥
जीता हूँ तेरा आसते, आया है रह्मर्[8] अकास ते।
जे कुच मँगूँ तुज पासते, सो है सो मुजकूँ तूँ दिया॥
भौतिक[9] मया सेती अपन, दीता[10] कुतुब कूँ सब दखिन।
सेऊँ[11] नबी[12] का नित चरन, जब लग है तन म्याने[13] जिया* ॥

(२)

दिला[14] मँग खुदाकन[15] कि खुदा काम देवेगा। तुमन मनके मुरादाँ[16] के भरे जाम[17] देवैगा॥
खारिज[18] की अगिन कह[19] के पानी से बुझागा। बराहिम नमूने[20] मुझकूँ सुख आराम देवैगा॥
दु अलम[21] के दुवारे खुले हैं ऐश[22] के खातिर। जो कोई नबी[23] नाममों दिल राम[24] देवैगा॥
जे दिल में मुहब्बत अली व आले-अली[25] वाह्। उसे खूने-जिगर दारुत्रे[26] नाकाम[27] देवैगा॥
न खा गम तुँजमाने[28] का तेरा काम खुदासों। हर एक पस्तिमें[29] तुजकूँ बुलंद नाम देवैगा॥
अपन बख़्त की रोतें[30] कहीं दिल में न कर गम। तुजे दारुत्रे सेहत[31] सों शफ़ाजाम[32] देवैगा॥

रक़ीबों[33] के दुखों सेनी कुतुब शाह तूँ न कर गम।
खुदा सारे रक़ीबाँ के गले दाम[34] देवैगा† ॥

---

१. प्रकाश, २. से, ३. प्रकाशमान, ४. गुण गान, ५. कौन, ६. माया, छोह, ७. चाहे, ८. कृपा, ९. बहुत-कुछ, १०. दिया, ११. पूजूँ, १२. पैगम्बर मुहम्मद, १३. इतने में।

* कुल्लियात सुल्तान मुहम्मद कुल्ली कुतुब : संपादक डॉ० सैयद मुहीउद्दीन कादिरी जोर (भाग १) पृ० ३।

१४. हे हृदय, १५. भगवान् के पास (रुहेलखंडी), १६. अभिलाषाएँ, १७. प्याला, १८. बाहरियों, विद्यार्थियों, १९. कोप, २०. इब्राहीम की भाँति, २१. दोनों लोक, २२. आनन्द, २३. पैगम्बर (मुहम्मद), २४. आराम, २५. अलीकी सन्तान, २६. दवा, २७. बेकार, २८. दुनिया का, २९. अवसाद में, ३०. अपने भाग्य की निकृष्टता से, ३१. स्वास्थ्य की औषधि, ३२. स्वास्थ्यका प्याला, ३३. ईर्ष्यालु, ३४. फंदा, फाँसी।

† वही, भाग २ (दीवान पृष्ठ १)।

४. उत्सव

(१) नौरोज़ (नव-वर्ष)

नवा नौरोज़[1] नवरंग जों कलियाँ-कलियाँ खिलाया है।
बँदा नारियाँ कूँ फूल चुनडियाँ कमल कंचुकियाँ खिलाया है ।।६४५।।
सुरंग फुल प्याले शबनम[2] सों धुला मय[3] भर गुलाली तिस।
सबज़ रंगी निहालाँ[4] नौरँगियाँ हत[5] दे पिलाया है ।।
दिसें जों बुलबुलाँ तिलतिल[6] तलाँ नारियाँकी नरगिस[7] पर।
प्रेममय परमलाँ[8] दे तिनकूँ जीवाँ दे जिलाया है ।।
तरोताज़े[9] तरावतसों कमल, गुललाल नारियाँ कूँ।
बँदावन ताफ़ते हरिये उपर फूलाँ फुलाया है ।।
भँवर फूलाँ के पिछड़ी[10] में हो काला जों कि कोयल हो।
हरी डालाँ उपर फिर फिर सुंदर फुलकर जलाया है ।।
चलाने ते भँवर के भर रहे सरवन[11] हमन कर की।
कयाँ मुख मोड़ि कल्याँ सों फिर खुदा एकजा हिलाया है ।।६५०।।
कल्याँ कंचलियाँ क्वाँर्याँ नार्याँ कल्याँ कूँ नौ रोज आया।
मुहम्मद सदक़े[12] कुत्बा कूँ अनन्दाँ सो मिलाया है* ।।६५००।।

(२)

पिया मुख नूर[13] ते[14] है जावदाँ[15] हम्[16] ईद[17] व हम् नौरोज़[18]।
सूरज आओ हमट[19] या न अवाँ[20] हम् ईदो हम् नौरोज़ ।।१३७।।
मुबारक[21] वन तेरे मुख-नूर सूरज ते हुआ पैदा।
खराजाँ[22] लेके आये हैं शहाँ[23] हम् ईदो हम् नौरोज़ ।।
मुबारकबाद[24] देने आइया नौरोज़ तुज दरबार।
अदिक सुखते करें तारे कुराँ हम्० ।।
यहाँ आये हैं ज़ीनत[25] देखने तुझ बज़्मे-इशरत[26] का।

---

१. नववर्ष, २. ओस, ३. मद, शराब, ४. पौधे, ५. हाथ, ६. पल-पल, क्षण-क्षण, ७. आँख की तरह का फूल, ८. प्रेममद, ९. अभिनव, १०. पंखुड़ी, ११. कान, १२. नौछावर, बलिहारी।

* कुल्लियात, भाग १, पृष्ठ १२९।

१३. प्रकाश, १४. से, १५. सनातन, अमर, १६. भी, १७. महोत्सव, १८. नववर्ष, १९. तुला २०. प्रकट, २१. बधाई, मंगल, २२. कर, २३. बादशाह, २४. मंगल हो, २५. शोभा, २६. आमोद-गोष्ठी।

यहाँका शाह, देवे दौलताँ[1] हम्० ।।१४०।।
उतम हूराँ[2] मजालिस[3] देखने आया हैं छन्दाँ[4] सों।
दिलाओ पान, बटियाँ बाँदे स्वा[5] हम्० ।।
फलक[6] नौ ते सो आये पेशकश[7] अकबाल होर दौलत।
खुशी...शादी...सेती हम् मंजियाँ[8] हम्० ।।
दमेदम[9] मुश्तरी[10] होर ज़ोहरा[11] ल्याये हैं खबर नसरत्[12] ।।२९।।
जो निकले दावसों[13] साहेबक़राँ[14] हम्० ।।
परम मोती समुन्दर दिलते तब लें जोकसों[15] भरभर।
तो आया सिज्दऽ[16] करने आस्ताँ[17] हम्० * ।।१४५।।

(२) सुख-विलास—

सदा होवे शह बज्म[18] में बेह अनन्द। कि दौलत है उस शाह का सदै[19] बुलंद।
सँवारे गगन से रँगीले महल। रतन, जोत झलकै किया सूर चन्द।।
सजन के जशन[20] में सुरज से भगत। दिखावें अजब दीसै सों छंद-बंद[21] ।।
सभी साज बजते हैं गुन भेद सों। निपजते[22] हैं उस सम्जते जिनके छंद[23] ।।
गरजते हैं उम धुन ते सातों गगन। जगत रक्श[24] करता नई कुच गजंद[25] ।।
नहीं बज्म उस सारका[26] होर जकै। नज़र न लगै त्यों सुटो[27] अग...संपद[28] ।।
नबी सदके कुतबा करै सुख विलास। कि दायम[29] अछो[30] ईद के त्यों अनन्द ।।

(३) जलवा (सोहाग)—

परम प्यारी का जलवा[31] गाओ सारे। उसे चँद-सूर सों परियाँ सिंगारे ।।८२१।।
सुहागाँ भाग फुल मस्तक खिले हैं। सहेल्याँ आरती तोरे नवारें[32] ।।
रवा दो तख्त[33] जलबे का खुशी सों। कि चौंधर[34] चौक मोत्याँ सों सँवारे ।।
चढाओ तेल अब सातों सुहागाँ[35]। मशाता[36] हो के ज़ोहरा[37] हत[38] निगारे ।।
पिला शर्बत देओ हाताँ में बीड़े। बंदाओ सारियाँ मोत्याँ किनारे।।
मुहम्मद कुत्ब शह होर उस परी कूँ। खुदाया[39] रख जदाँलग[40] हैं सितारे† ।।८२२।।

---

१. धन, २. देवकन्याएँ, ३. सभा, ४. छल-छन्द, ५. से? ६. आकाश, ७. भेंट, ८. शोक-नाशक, ९. क्षण क्षण, १०. शुक्र, ११. बृहस्पति, १२. विजय का समाचार, १३. दाव से, १४. चक्रवर्ती, १५. शोक से, लालसा से, १६. प्रणाम, दंडवत्, कोरनिश, १७. दरबार, आस्थान।

* कुल्लियात, भाग ३, पृष्ठ २२।

१८. राजसभा, शाह का जलसा, १९. सौ, २०. उत्सव, २१. छंद-बंद, २२. उपजते (गुजराती), २३. रुचि, २४. नृत्य, २५. हानि, २६. सारखा, सदृश, २७. छोड़ो, फेंको, २८. आग में धूप, संपदको धूप की तरह आगमें डालकर भूत भगाया जाता है, २९. सदा, ३०. रहो, ३१. सोहाग या सोहाग रात, ३२. नौछावर करें, ३३. सिंहासन, ३४. चारों धारे, ३५. सोहाग, ३६. नाइन, ३७. बृहस्पतिग्रह, ३८. हाथ, ३९. हे भगवान्, ४०. अबतक।

† कुल्लियात भाग १, पृष्ठ १६१।

(४) कंठमाला—

निपट धीट[1] शोखी[2] सों आकर खड़ी जब । सो औचट नज़र मेरी उसपर पड़ी तब ।।८६७।।
नवेली पिरितला कि है ठैर[3] नै मुज । सकी[4] मिलने तें पिउकूँ जाती करन[5] अब ।।
पियारी रै नाजुक कली जौं चँपे की । तो रेशम ते आले हैं वालाँ के उस खब ।।
दो रुखसार[6] उसके हैं रंगी गुलालाँ । ओ चलने कूँ देस हंसदरियाई होय सब ।।८७०।।
ओ—मुख पाक निर्मल है सूरज के नमने[7] । चँपे की कली जों सोहै नासिका छब ।।
नयन सांई के देख कुमलावै नरगिस । अधर हैं रसीले कि नाबात[8] के छब ।।
नबी सदके[9] कँठमाल जब पैन आई । कुतुब कंठ लाकर चुम्या उसके दो लब[10]* ।।

(५) राग (संगीत)—

मुकट रागाँ पियारी आप रागै राग गाती है ।
मुखारे राग गाती मुक्ख लहराँसों सुहाती है ।।९०१।।
सबाही राग गाकर मुंज सुबा के तख्त बसलाओ ।
धनासी गाके धन मुंजकूँ सुरँग प्याला पिलाती है ।
मेरे सँग मिल न जाती सुन के गाती संकराभरना ।
सिरी रागाँ जो गाती इस्तिरी तूँ मुंजकूँ भाती है ।।
अलापे कानडा गज्जा कमा भौं की चड़ाई है ।
इशक की आग में अब्रू कमाँ कोशी सिकाती है ।।
कि गौरी राग जो गावे, तो गोरियाँ का मुलक जीता ।
सुसारंग नयनि सब रंग में सुरंगों सो सुहाती है ।।
सभी रागाँ के गले फुलहार पाया है सो मल्हारा ।
जो गावै रामकेरी राम कर रावां रिझाती है ।।
सभी रागाँ मुहम्मद कुत्ब शह् कूँ जम सुहाये ते ।
नबी दौलत शेअर मेरा शकर निम्ने जगाती है† ।।९०७।।

५. ऋतु

(१) बसन्त—

बसंत आया सकी[11] जों लाल गाला । कुसुम चोला...... ।।६७५।।

---

१. ढीठ, २. चंचलता, ३. ठहरना, ४. सखी, ५. युग, ६. कपोल, ७. नाई, सदृश, ८. मिसरी, ९. पैगम्बर की बलि जाऊँ, १०. ओठ।

* वही, पृष्ठ १६८।

† वही, पृष्ठ १६८।

११. सखी।

पपीहा गावता है मीठे वैनाँ । मधुर रस दे अधर रसका पियाला ।।
पियारी होर पिया हत[1] में सो हत ले । सरो वन में म्हिजी[2] गल फूलमाला ।।
कँठीं कोयल[3] सरस नाँदा सुनावै । तनन् तन् तन् तनन् तन् तन् तला ला ।।
गरज बादल ते दादुर गीत गावै । कोयल कूके सो फुलवन के खियालाँ ।।
सदा सेवा करै ऐसी गुसाईं । दलिद्दर दूर कर करता निहाला ।।६८०।।
नबी सदके[4] हुआ कुतुबा तेरा जीत । दुँधाँ सीने[5] में सलता दुक्ख भाला * ।।

(२)

उमंगों से बसँत आई नुरानी[6] । कर्‌याँ कसवत[7] सख्याँ[8] सब आरुसानी[9] ।।६८९।।
वसँत के फुल खिले हैं अपरँगीले । हुआ हैरान देख उसतेईं[10] मानी[11] ।।६९०।।
कुंतल के झूले सोहते हैं ओ मुख पर । कि जों फुलपर डुले भँवरा सो ज्ञानी ।।
जड़ित चरक्याँ सों[12] शह पहिले वसंत जब । पिलावे नेह-मद तब शह कि म्यानी[13] ।।
कुहुक कोयल वसँत के राग गाई । कि पाई है उस रुतमें सुख-निशानी ।।
हवा आकर सफा फुलवन कूँ तूँ दे । कि देख ओ-नक्श हो हैरान मानी ।।
नबी सदके[14] कुतुब शह वाईं जमजम[15] । सुहावें सँग भरे हुस्नों सुहानी[16] † ।।६९५।।

(३)

वसँत का फुल खिल्या है सो ज्यों याकूत रुम्मानी[17] ।
करो मिलकर सहेल्याँ सब वसँत के ताईं मेहमानी ।।१९०।।
वसँत का रुत बुझाया है विरह अँगकूँ खुश्याँ सेती ।
नवेल्याँ मिल करो मजलिस नवेला आज शाहानी ।।१९१।।
सकल झाड़ाँ कूँ लागे हैं जवाहर के नमन्[18] फूलाँ ।
सो फूलाँ सों करे तिल-तिल[19] पिया पर गौहर्-अफ़शानी[20] ।
वसँत फूलाँ का शबनम[21] मय[22] सो भर साक़ी[23] सुराही में ।
जो उस मद ते मदन चड़कर हमन रँग होय नूरानी ।।
जो गरजे मस्त हो बादल सुराही नित करै गल-गल[24] ।

---

१. हाथ, २. डाला, ३. कोकिला-कंठी, ४. पैगम्बर की बलिहारी, ५. दुश्मन की छाती।

* कुल्लियात भाग १, पृष्ठ १३६।

६. प्रकाशमान, ७. परिधान, ८. सखियां, ९. दुलहन की, १०. उसको, ११. ईरान का पैगम्बर और प्रसिद्ध चित्रकार (ईसवी तीसरी सदी), १२. चरखियों से, १३. मध्य में, १४. पैगम्बर के नोछावर जाऊँ, १५. सदा, सर्वदा, १६. सौन्दर्य।

† वहीं, पृष्ठ १३८।

१७. रुम्माका पद्मराग मणि (लाल), १८. भांति, नाईं, १९. पल-पल, २०. मोती की बरसा, २१. ओस, २२. मद, २३. मधुबाला, २४. कलकल शब्द।

पियो प्याला ओ गलगल नादसों हें मेघ नैसानी[1] ।।
पिला साक़ी सरासर मय कि ता होय् कश्क[2] हमनाकूँ[3] ।
कि इस मयते दिसै मुंजकूँ सदा सब राज़ पिन्हानी[4] ।।१९५।।
अँबर होर यो दो मुश्को-ज़ाफ़राँ[5] का रुत[6] आया है ।
इसी ते वार् उनोका जग में करता है गुलिस्तानी[7] ।।
निछल[8] फुलके अरक म्याने[9] गलाओ तुम कदम छँदसों ।
वले[10] फितना[11] अरक[12] सब बास में करता है मुल्तानी ।।
बँधाओ हौज़खाने[13] चाँदो सूरज के सहेल्याँ मिल ।
भराओ नीर अँमृत का कि खेलैं रंग-अफशानी[14] ।।१९८।।
वसँत फुलका हमायल पहन कर आई अँगन में छन ।
सौ फुल सिंगार के नकशाँमने हैरान है मानी ।।
बँदी चुनरी पिरित नकशे करी उस पर विगट तारे ।
नवे कद पर सुहाता है फुलाँ चोला अरूसानी ।।
सूरज किरना की चिर क्याँ हात में ले छरल यह चित सों ।
सहेल्याँ सों अछो मुंजकूँ सदा ए खेल अरज़ानी ।।
नज़र है मुस्तफा होर मुर्तज़ा का कुत्ब शह ऊपर ।
कि दुश्मन की पेशानी पर लिखे हर्फ़े-पशेमानी ।।
उनों के दुश्मनाँ ऊपर अजल ते लान वाजिब है ।
अगर होए समरकंदी बुखाराई वो मुल्तानी ।।
नज़ाकत शेर के फनमें खुदा बखशा है तूँ तजकूँ ।।
मआनी शेर तेरा है किया है शेर-खाकानी* ।।

(२) वर्षा—

(१)

रुत आया कलियाँ का हुआ राज । हरी डाल सिर फूलाँ के ताज ।।९४४।।
मेहाँ बुँद का लेओ हत प्याला । रुप नार्याँ साजे एकसते एक साज ।।
तन थंडत[15] लरजत[16] जोवन गरजत । पिया मुख देखत कंचुकी कसब कसे आज ।।

---

१. बैशाखी बादल, २. हृदय कपाट खुलना, ३. हमको, ४. छिपा रहस्य, ५. कस्तूरी और केसर, ६. ऋतु, ७. पुष्पवाटिका, ८. निर्मल, ९. रसमें, १०. लेकिन, ११. झगड़ा, जादू, १२. शराब, रस, १३. कुंडघर, १४. रंग-वर्षा ।

* कुल्लियात, भाग ३, पृष्ठ ३४ ।

१५. ठंडा होता हूँ, १६. कांपता ।

नारी मुख झमकै जैसे बिजली । अंचल बावक में सोहै उस. . .लाज[1] ।।
केसफूल दीखै सितारे आसमाँ । उस ज़माने की परी पद्मनी आये आज ।।
चौंधर[2] गरजत होर मेंहाँ बरसत । इश्क के चमने चमन भौंरा का है राज ।।
हज़रत मुस्तफा[3] के सदके[4] आया वरसकाल । कुतुब शह इश्क करो दिन-दिन राज* ।।९५०।।

(२)

सहेली बनी नीली रुत में शिवार्नी । मेघा छाये अंबर रँगारग निहानी[5] ।।९६७।।
सोहे सीस अँचल धनुर[6] ज्यों गगन पर । मिरिग[7] में मृगनियाँ की कसबत[8] सोहानी ।।
पियारी के खूये बुंद[9] मशाता[10] निगारे[11] । भवाँ कज[12] सोहें यों ज्यों असमाँ समानी[13] ।।
इशिक[14] के बने वन सो पिक नाद गावे । पपीहा के बोलाँसों पिउ-पिउ फगानी[15] ।।
चमन नादसों ताल दारु[16] बजावै । जोवन ले पखावज बजावै समानी[17] ।।
गुलाबी है गालाँ पिया ले मल्हारी[18] । नबेली नबी कौंप्लियाँ ते जवानी ।।
नबी सदके[19] ऐसे मिरियसाल[20] नित नित । अली की दुआते छतर आसमानी† ।।९७३।।

(३)

मिरिगसाल[21] आइया फिरते मिरिग-नयनी सिंगाराँ कर ।
जड़ित मानिक बहुरियाँ लाल मोतियाँ लेके[22] धाराँ कर ।९८१।।
बदल जूड़े में केवड़े फंकुड़ियाँ[23] झमकाओ बिजलियाँ ज्यों ।
छिपा खोपे[24] में फुलतारे बदल के अँधकाराँ कर ।।
रसीले कंठ सों आलाप अब कोयल के कुहकारे ।
पपीहे नाद सों मद पिउ निते बदना[25] खुमाराँ[26] कर ।।
हर्‌या शीशा हर्‌या प्याला हर्‌या कसबत[27] हर्‌या जोबन ।
हर्‌या ज्वानी हर्‌याली में न याँ मोत्याँ के हाराँ कर ।।
निछल[28] मुख नीर पूराँ में मछ्याँ[29] लोचन तेरा चंचल ।
जोवन गज गर्जने ऊपर लटाँ बादल के माराँ कर ।।९८५।।

---

१. उसकी लज्जालुता, २. चारों ओर, ३. मान्य पैगम्बर, ४. नौछावर, बलि ।

* कुल्लियात, भाग १, पृष्ठ १७६ ।

५. गुप्त, अप्रकट, ६. प्रकाश, ७. वर्षा-ऋतु, ८. परिधान, ९. पसीने की बूँद, १०. नाइन, ११. सज्जित करे, १२. टेढ़ी, १३. समाई, १४. प्रेम, १५. क्रंदन, १६. एक बाजा, १७. सुन्दर, १८. मल्हार राग, १९. पैगम्बर की बलिहारी, २०. वर्षा-काल ।

† वही, भाग १, पृष्ठ १९१, १९३ ।

२१. वर्षा, २२. लेकर, २३. पंखुड़ियाँ, २४. जूड़ा, २५. कमीना, २६. मदालस, २७. परिधान, २८. निर्मल, २९. मीन ।

हुवा आना दिखाकर बोंप सों[1] कर साज मल्हारा।
रिझा ले शाह कूँ प्यारी बजाकर जीव के तारां।।
मुहम्मद कुत्ब शह के कंठ लग नित दिन लगे झड़ ज्यों।
दुजें अतिभोग गरमी ते पुहे[2] खुय बुंद[3] बारां[4] कर* ।।९८७।।

(४)

गरज्या मिरग[5] खुश्यां सों सिंगारो आओ सकियां[6]।
पड़ता है मेघ फुइ-फुइ बोली भिगाओ सकियां ।।१०१८।।
अत्तार बाव पन[7] में फूलां के खोल तवले।
महकार[8] उचइया[9] है फिर मन में घाओ सकियां ।।
जों लाल फूल डाल्यां पर त्यों दंडां पड़ अपने।
बाजूबंदा के सिर ते[10] फुंदने फुलाओ० ।।१०२०।।
अस्मान होर ज़मी सब यक रंग हो सोहाता।
है आज ऐश[11] का दिन मल्हार राग गाओ० ।।
कर किसबत[12] अहमरी[13] सब सिर पाँव लग मुकल्लल[14]।
सूरज शफ़क़[15] में ज्यों त्यों हर यक दिपाओ० ।।
याकूत अधर पियाल्यां में भर के मय मुहब्बत।
शाहे नवल मुहम्मद तइं भी पिलाओ० ।।
नटियां[16] कूं नैन पुतल्यां के मद पिला मनी कर।
शह के मँधर-अँगन[17] में नट सों नचाओ सकियां † ।।१०२४।।

(५)

सालां व साल[18] मिरगां[19] आनंद सों कुजाओ[20]।
जोवन तवल[21] खुइयां सों नित नित तुमें बजाओ ।।१०३६।।
तज तनके जल्वे म्याने[22] जल्वेके राग सोहत।
रजनी के हत पियाला मय सबके तइं ले जाओ ।।
चुनरी जो चुनके बाँधी औ चीर उसकूँ सोहता।
बत्तीस वर्न साजां[23] अब तन उपर सजाओ ।।

---

१. चावसे, २. फुहार पड़े, ३. पसीने की बूँद, ४. वर्षा।

* वही, भाग १, पृष्ठ १९५।

५. वर्षा, ६. सखियां, ७. अतरवाली हवा का होना, ८. महक, ९. उठाया, १०. शिर से, ११. आनन्द, १२. पोशाक, परिधान, १३. लाल, १४. सुनहरे, १५. उषा की लालिमा, १६. नर्तकी, १७. मंदिर-आंगन।

† वही, भाग १, पृष्ठ २०१।

१८. प्रतिवर्ष, १९. वर्षा, २०. कूजित करो, २१. यौवन, वाद्य, २२. सोहाग में, २३. आभूषण।

अप खोप[1] में गुंदे है केवडे के फूल छवि सौं ।
छँद सौं[2] प्याला हतेली नाइयाँ के तें ले जाओ ।।
सदके[3] नबी[4] के ईदाँ[5] जलवा[6] तुमन[7] सोहावे ।
कुतुबे जमाँ के ताईं तोहफा[8] तुमें ले जाओ* ।।१०४०।।

(३) शरद —

हवा आइ है लेके भी थंड काला[9] । पिया बिन सताता मदन वाले वाला ।।१०५१।।
रहन न सके मन पिया बाज[10] देखे । होवे तन कूँ सुख जब मिले पीउ बाला[11] ।।
ऐ सीतल हवा मुँज गमे[12] ना पिया बिन । भुलाया है मुँज जीव[13] कूँ ओ उजाला ।।
जो रात आवे चाँदनी कि मुँजकूँ सतावे । कि चंदन[14] मुँजे नईं नयन सोज[15] लाला ।।
मेरे मन कूँ आता है लालन सों मिलना । मुँजे आते हैं पीव हत कंठ माला ।।१०५७।।
नबी सदके[16] कुत्बा अनंदाँ सों मिलकर । अपस साँइ[17] सो पीवे जम मद पियाला[18]† ।।

६. कवि की प्रेमिकाएँ

कुतुब के रनिवास में बहुत सी सुन्दरियाँ थीं। जिनमें कला-निष्णाता होने से भागमती (हैदरमहल) का सम्मान अधिक था। भावुक कवि होने से वह अपनी दूसरी प्रेयसियों पर भी उदारतापूर्वक अपना स्नेह वितरण करता था। कइयों पर उसने कविता की, जिनमें से कुछ यहाँ उद्धृत हैं।

(१) न्हन्नी—

(१)

न्हनी सिरते अपकूँ सँवारी अजायब । मशाता[19] परी हो निगारी[20] अजायब[21] ।।२११६।।
नवेली के कद सम[22] सरो कद न होवे । कि नौ खंड मने[23] है पियारी अजायब ।।
मदन फूल के रंग साड़ी बँदी है । सोहे उसकी मोत्याँ किनारी अजायब ।।
तुमन याद[24] की मस्ती मुझकूँ चड़ी है । नयन मन में खिलती खुमारी[25] अजायब ।।
नबी सदके[26] कुत्बा रिझाने के ताईं । बजाता है ताना दोतारी अजायब‡ ।।२१९०।।

---

१. जूड़ा, २. चाव से, ३. बलिहारी, ४. पैगम्बर, ५. महोत्सव, ६. सोहाग, ७. तुमको, ८. भेंट।

* वही, भाग १, पृष्ठ २०४।

९. सरदी, १०. बिना, ११. बाला, प्रेमी, १२. पसंद, १३. प्राण, १४. खुशी, १५. फूला, १६. बलिहारी, १७. स्वामी, १८. मद्यचषक।

† वही, भाग १, पृष्ठ ८७।

१९. नायन, सिंगार करनेवाली स्त्री, २०. सजावट, २१. अद्भुत, २२. शरीर सदृश, २३. में, २४. तुम्हारी स्मृति, २५. मदालसता, २६. पैगम्बर की बलिहारी।

‡ वही, भाग १, पृष्ठ २२५।

(२)

परम मोती चुवाया[1] हूँ, सक्याँ गूँदो खुश्याँ सेतीं ।
कि मुख रूपाँ के झलकारे[2] झमकते हैं मुरां सेती[3] ।।२१२२।।
इशक[4] दाव पुंजसों खेलती है ओ न्हनी प्यारी ।
चँदा मुख पर नये चँदा दिखाती है नवाँ सेती ।।
कहूँ तुज भेस के बासाँ कि या तुज भेद की कहनी ।
कि तुझ बासाँ के महकारे महकते इश्के-जां सेनी[5] ।।
महकता बास तुज तन यों कि महके सांत[6] का मह ज्यों ।
पेरेम की बात करता हूँ पेरेम के आशिकाँ[7] सेती ।।
तेरे नैनाँ की झमकन में सोहावे भेद काजल का ।
लगे ना चाक[8] दो तन का नयन के मंतराँ सेती ।।
मुहम्मद बालपन ते है मुहम्मद के गुलामों में ।
तो जीता दाव में पंथाँ सों सारे सुन्नियाँ[9] सेती* ।।२२२७।।

(२) **सांवली —**

मेरी साँवली मनकि प्यारी दिसै । कि रँग रूप मैं कँचली नारी दिसै ।।२१५०।।
सोहै सब सहेल्याँ में काली अजब[10] । सरोब्रिच्छ[11] नारी ओतारी[12] दिसै ।।
सक्याँ[13] में डोले नेहावाजी सों जब । ओ-मुख जोत ते चँदकि ख्वारी[14] दिसै ।।
तूं सबमें उतम, नारि तुज सम नहीं । कोयल तेरी बोलाँ ते हारी दिसै ।।
तेरी चाल नेंकी सभी मनकूं भाय । सक्याँ तूं (है)जों फुल्ल भारी दिसै ।।
बहुत रँग सों आप रंग्या सक्याँ । वले[15] काँ[16] तेरे रंगकि नारी दिसै ।।
नबी सदके[17] कुत्बा पियारी सदा । सहेल्याँ में जेवा[18] तुमारी दिसै ।।२१५६।।

(३) **कंवली —**

(१)

ले खड़ी कमली पियारी अपने हत म्याने[19] पियाले ।
ले बिचकती हिल्डोनी में[20] पवन जीवन हरन वाला ।।२१७१।।

---

१. चुन लाया, २. चमक, ३. प्रकाश से, ४. प्रेम, ५. प्राण से, ६. शान्ति, ७. प्रेमियों, ८. टुकड़ा, ९. सुन्नी सम्प्रदाय ।

*** वही, भाग १, पृष्ठ २३२ ।**

१०. अद्भुत, ११. सरो वृक्ष जैसा जिसका शरीर हो, १२. दुर्लभ, अवतारी, १३. सखियां, १४. बदनामी, बरबादी, १५. लेकिन, १६. कहा, १७. पैगम्बर की बलिहारी, १८. सुन्दर, १९. हाथमें, २०. मिलने में ।

इश्क बंसा के मौ फंसा वाक खींचे आब[1] घन जो।
केस म्याने[2] फुल जडी चोटीमने[3] दबना व वाला ।।
कँवलि मुख पर भौं चडाई है यां नूराँ सेती[4] ।
इश्क के फर्र लिखे हैं पूछो तुम उस नादाँकाला ।।
इश्के बुतां[5] तें लगे है मेरे नैन म्याने[6] कुमारी[7] ।
नयन लज्जत[8] मुंज चखाकर मेरे तन में कर उजाला ।।
खिचती खिंचाती खड़ी है प्यारि अपने खज्ज[9] सेतीं ।
अँचल ओझलते नचाती है, नयना-पुतल्याँ का चालाँ[10] ।।
नौ रतन रोशन हुये हैं उसके अँग के रँग सेती ।
चाँद सूरज के हमायल[11] पाये[12] हैं गले कँठमाल ।।
है **मुहम्मदकुत्ब** शह बंदा[13] अली का कमतरीना ।
तो अजलते उडते हैं मुंज सिर पे अस्मानी रुमाला[14]* ।।२१७७।।

(२)

तुज कद्द देख सर[15] वांहाके[16] किये हैं वन में ।.
तुज कद्द सोहावता है जन्नत केरे[17] चमन में ।।२१७८।।
पलकाँ नमद[18] तके कर राख्या हुं मैं तके तैं[19] ।
जो पूतली वो हिन्दी टुक आये मुंज नयन में ।।
दो लब[20] तेरे रंगीले याकूतकूँ एदये रंग ।
ले भीक[21] रंग अकीका[22] रंगीं हुये यमन में ।।२१८०।।
खिल्वत[23] में गमते[24] शह् जब डुबता है चाँद घन पर ।
छुप जाय सूर निसमें निकले जो शह अँगन में ।।
बारीक तुझ कमर देख बारीक हुआ हुं जौं बाल ।
वैसा नहीं है कोई तार एक पैरहन[25] में ।।
काल्यां गोरयां सक्यां कूँ जगमें जो थ्यां सो बिसरयां ।
कांवली सकी[26] कूँ देखत मैं सुद[27] भुल्या दखन में† ।।२१८३।।

---

१. जल, तेज, २. केश-मध्ये, ३. चोटी के बीच, ४. आभा से, ५. सुन्दरियोंका प्रेम, मूर्त्ति-प्रेम, ६. नयनके भीतर, ७. जुआ, ८. नयनास्वाद, ९. खाद्य, १०. गतियां, ११. गलेका आभूषण (हमेल), १२. पाये (पंजाबी), १३. दास, १४. ध्वजा ।

* वही, भाग १, पृष्ठ २३५ ।

१५. सरो वृक्ष, १६. हांके, १७. स्वर्ग के, १८. नम्दा, फर्श, १९. लिये, २०. ओठ, २१. भीख, २२. एक लाल पत्थर, २३. एकान्त, २४. मौज करते, रहते, २५. परिधान, २६. सखी (तरुणी), २७. सुध ।

† वही, पृष्ठ २३६ ।

(४) पियारी—

(१)

सक्यां जा मना ल्याव प्यारी कुँ आज । कि सब छंद भरया का अहै सीस ताज ।।२१९४।।
कहो यों कि मंदिर कुं बहु ज़ेब सों[१] । सँवारे वले[२] ना गमे तुज्ज[३] बाज़[४] ।।
मदन आ सताता है गर म्यान कूँ[५] । करोदाद्[६] अपे आ, तुमारा है रज ।।
अजायब[७] हैं किस्वत तुमाँ हुस्न[८] की । कि उसते सोहातां हैं इश्क्यां[९] का साज ।।
तुं खूबान का रूप में है बादशाह । तो ल्याये हैं सब तेरे ते[१०] नेह-ख़राज[११] ।।
तुमन मुक्ख का नूर जब देखूं मैं । ओ एक छन मुझे सौ बरस का है आज ।।
नबी सदके कुत्बा ते मज्लिस सदा । सोहाता है, जो हुस्न सो[१२] मुल्क लाज* ।।२२००।।

(२)

प्यारी तु बोल मारे तुज बोल नें[१३] पतियार ।
दिसता है बोल तेरा हर एक जों किनारा ।।२२१५।।
चोटी तेरी सो नाग् है होर ज़हर उसमें कडवा ।
ओ घर खेलों में दिसती तूं साचली[१४] सँपारा[१५] ।
फिर फिर भँवर के निमने[१६] तुज बास हूं तो लेऊं ।
उस वास में नहीं हूँ नरगिस्स का खुमारा ।।
देख-देख कर सँदलकूँ लाना[१७] मुशक कि लाना ।
तू-तन की वास आता सचला[१८] जिवाँ सँबारा[१९] ।।
पैनीं[२०] है काँज[२१] की काज अछरी[२२] बंधी सो हत में ।
क्या जानें पाच[२३] होर काच[२४] ओ हिंदवी गंवारा ।।
तुज-बोल में नमक नें तेरे अधर में रस नें ।
तेरे कनक में कसनें होर चोटि है अंधारा ।।२२२०।।
ऐसे रतन रसन[२५] सों दरिया ते कुत्ब काडे ।
दो जग में उसकूँ दायम है मुर्तुज़ा[२६] अधारा † ।।२२२१।।

---

१. सौन्दर्य से, २. लेकिन, ३. तेरे, ४. बिना, ५. उसको, ६. न्याय, ७. अद्भुत, ८. तुम्हारा सौन्दर्य, ९. नाज, नखरा, १०. तेरे से, ११. स्नेह का शुल्क, १२. सौन्दर्य से।

*वही, पृष्ठ २३९।

१३. नहीं, १४. सच्ची, १५. सँपेरा, १६. भँवर की भाँति, १७. चंदन को लगाना, १८. सच्चा, १९. नौछावर, २०. पहिनी, २१. एक वृक्ष, २२. अप्सरा, २३. पन्ना, २४. शीशा, २५. वाणी से, २६. पैगम्बर मुहम्मद।

† वही, भाग १, पृष्ठ २४२।

(३)

पियारी तेरे बिछडने ते रयन मुँज नींद आवै ना।
तुँ कुदरतकी[1] घडी तुज बिन घडी पीरित मो भावे ना ।।२२२२।।
रयन-दिन कूच[2] जाने ना जो कोई जिव आशिक है तेरा ।
लगा है याद[3] यों तेरा कि भी कुछ याद आवै ना।।
पिरित तेरे कुँ लुकमाँ[4] भी सके न दारु[5] देने कूँ।
सेहत[6] क्याँ होये आशिक तें[7] जो लब शर्बत[8] चखावै ना ।।
सची तुम रात का यक रात मुंज सौ रात हो दिसता।
कना[9] किस सेज रहना मैं जो तूँ सेज अब-बुलावै ना।।
तेरी इस आँच[10] ते दिल है जैसा अवलोज का किल्ला।
कि जो नाबत[11] तूँ घट है अपसकूँ पिग्गलावै[12] ना।।
तेरी बाताँ तेरी घाताँ[13] तेरी रीताँ अहै बहु घात[14]।
देती जो कुछ तूँ गाल्याँ दे (अदर-) बांगे दिलावै ना ।।
नबी सदके[15] इशक बातां[16] खुदा तुजतैं[17] दिया खाना[18]।
तुजे कुदरत[19] एता है जो कुतुब कूँ समजावै ना* ।।२२२८।।

(५) गोरी—

सोहाता है मुख-हुस्न[20] गोरी का शबाब[21] । ओ-मुख चंद पड चँदक्याँ है लाजो नकाब[22] ।२२२९।
ओ-कद[23] सर्व नै है कुँदन का निहाल[24] । झमकता है तो उसते सूरज का ताब[25] ।।
तुं रंग रस्स की बाग की है कली । तो चूता है जीवन का तुज मुखते आब[26] ।।
रसाले[27] अधर हैं तेरे मद भरे। सो करते हैं उश्शाक[28]-दिलकूँ कबाब ।।
कहूँ जुल्फ़ या ताज सुंवल सोहे। ओ मुख फूल पर जों कि चँद पर सहाब[29] ।।
तेरी चाल मद-मस्त ते लाजे गज। नहीं उनमें ये भेद होर ए शिताब[30] ।।
नबी-सदके[31] कुत्बा सों गोरी मिली। तो गल बाँह दे उससूँ पीवैं शराब† ।।२२२५।।

---

१. ईश्वरीय शक्ति, २. कुछ, ३. स्मृति, ४. लुकमान हकीम, ५. दवा, ६. स्वास्थ्य, ७. प्रेमी के लिये, ८. अधर रस, ९. कहना, १०. ताप, ११. मिसरी, १२. पिघलावै, १३. ढंग, १४. प्रकार, १५. बलिहारी, १६. प्रेमवार्त्ता, १७. तुझसे, १८. उसका, १९. प्रकृति।

* वही, भाग १, पृष्ठ २४३ ।

२०. मुख सौन्दर्य, २१. जवानी, २२. पर्दा, २३. शरीर, २४. बूटा, २५. प्रकाश, २६. चमक, २७. रसीले, २८. प्रेमीगण, २९. बादल, ३०. जल्दी, ३१. बलिहारी।

† वही, पृष्ठ २४५ ।

(६) छबीली—

छबीली सों लग्या है मन हमारा । कि उस विन नहिं हमन[1] यक तिल[2] करारा[3] ।।
सबूरी[4] कूं नहीं है ठौर दिल में । सबूरी क्यों करे सो करनहारा ।।
अलक फांसी सों पंखी जिव पकडने । दिखाई गाल ऊपर[5] तिल का चारा ।।२२५०।।
बसे मन में सो उसके ख्याल निसदिन । नहीं उस ख्याल बिन मुंज-मन में ठारा ।।
नयन बहरी[6] छोडी सूकी[7] डोरी सों । करै चंचल पंखी दिलकूं शिकारा ।।
मया करना करै माशूक[8] अपे हो । कहो न क्या करै आशिक[9] बेचारा ।।
नबी सदके कुतुब आशिक़ है तेरा । सदा मिल अछ[10] न हो एक तिल[11] बिन्यारा* ।।२२५४।।

(७) लाला (लाली)—

(१)

हिल्या मन तो बाला सकी[12] सुन मो लाला[13] । विरहते मो जाला वली वालि वाला ।।२२५५।।
(जो) वन वन है आला[14] मो कर मत्तवाला । मंगे[15] मेरा ख्याला सुराही पियाला ।।
तरखता[16] है चोला मुंजे बाज ढोला । हुआ है अवोला मेरा साईं बाला ।।
अधर का पियाला दे होठों[17] हवाला । तुं कर फूलमाला तो तन जावै झाला[18] ।।
मो मन तो सों फूल्या गया मन सो तोल्या । बिरह राज[19] खोल्या तुं दे अब वसाला[20] ।।२०।।
मैं गाऊं यलल्ला[21] वले मन तलल्ला । हुआ मन अलल्ला अपें आग ले ला ।।
नबी सदके कुत्बा तु मन सेज बसला । बुला ल्या भुला ल्या नवारो मलाला[22]† ।।२२६१।।

(२)

इश्क में मस्त मतवाला हूँ लाला । तुं अप अधरों ते मुंजकूं लेना प्याला ।।२२६२।।
सुरा के सुर नहीं ओ रस सुरस हैं । अधर-रंग में हयाते आव जाला ।।
भरी जोवन जवानी भेटनी सों[23] । मो दिल मैखाना[24] प्याला देउ गुलाला ।।
खुमारी सुन काहे मुंज दे न बोसा[25] । चमन गालाँ में है दँत फुल कुलाला ।।
जोवन माती पियाले नैन कीती[26] । तेरे हँसने ते होये देस[27] उजाला ।।
नबी सदके[28] रहे तुझ इश्क म्याने[29] । कुतुब सों क्या[30] पिरित देउ कंठमाला ‡ ।।२२६८।।

---

१. हमको, २. पल, ३. धैर्य, ४. सन्तोष, ५. ठौर, ६. बाज (पक्षी), ७. सूखी, ८. स्नेह, ९. प्रियतम, १०. रह, ११. पल ।

* वही, भाग १, पृष्ठ २४७ ।

१२. सखी, १३. मेरी लाली, १४. बढ़िया, १५. चाहता हूं, १६. तड़कता है, १७. अधरों से, १८. झल्लाहट, १९. विरहका भेद, २०. मिलन २१. यला-ला (शब्दानुकरण), २२. रंज ।

† वही, भाग १, पृष्ठ २४८ ।

२३. से, २४. मधुशाला, २५. चुम्बन, २६. किया (पंजाबी), २७. द्यौस, दिवस, २८. पैगंबर की बलिहारी, २९. प्रेम में, ३०. किया ।

‡ वही, पृष्ठ २४९ ।

(८) मोहन—

पिरित ताज़ी लगी है मुंज सकी[1] मोहन पियारी सों।
बँध्या हूँ दिल ओ चातुर छंद छरी गुनवँत नारीसों ॥२३०१॥
उमेदों के अंझू[2] मोती के रासाँ बाध[3] दुह कर ढंक।
रयन सारी सुबह लग मुंज गई है बेकरारी[4] सों ॥
कियाँ[5] किस्बत् सक्यां हर यक परन की उस चंदरमुख कूँ।
सोहानी सब्ज[6] सारी सों शिफ़क़ अंचल[7] किनारी सों ॥
अजहुं दिसत्यां हैं तुज मुखमें निशान्याँ साईं अँग सँग क्याँ।
अजहूँ घुलती अहैं तेरी नयन निस की खुमारी सों ॥
सजन के नेह में विन मस्त होय नै काम हासिल[8] तू।
नहीं है इश्क कूँ कुछ आशनाई[9] होशियारी[10] सों ॥
पिया मिलने के किस्से शौक सों को[11] रँग-रँग सेती।
न को साजन की दूरी की वचन नेह की दुख्यारी सों ॥
नबी सदके हुये हैं मुंजकूँ लाबाँ[12] के ऊपर लाबाँ।
किये हूँ नेह का सौदा **कुतुब** शह नेह भारी सों* ॥२३०७॥

(९) हैदरमहल (भागमती)—

(१)

हैदरमहल मया[13] ते नावात[14] घोल साजे। दिन दिन अनँद सेती तबलाँ मदन के वाजे ॥
उस सर्व-कद्[15] के ऊपर जल्वा[16] है नौरतन का। इश्शकके पातुरों सब उस फास[17] देख लाजै।२३२३
सब आशिकाँ के दिल में है इश्क फूल जल्वा। पुतल्याँ नैन वयाँ मेरे मन में अनँद सों गाजे ॥
इश्शक का टीका लाई अपनी पेशानी[18] ऊपर। चौफेर नौरतन के ताराँ महल सों बाजे ॥
चादर इशक का ओढे जों बिरबहूटी दीसै। तेरे इशक के ल्याजां देखे हैं लाजों भाजे ॥
मावे[19] सो बिर्द[20] बनकर बिरदां सों नाचे नरसन[21]। मावे रुमाल उडते हैं राज करते राजे ॥
सिदके नबी शुकर[22] तुजकूँ मिली ये पातुर। हैदर गुलामी सेती तुज-सीस ताज साजै †॥२३१९॥

---

१. मेरी सखी, २. आँसू, अंजू (पंजाबी), ३. फैली, ४. अधीरता, ५. किया, करी, ६. हरी, ७. उषा (अंचल), ८. प्राप्ति, ९. मित्रता, १०. चाह से, ११. कई, १२. लाभ।

* वही, पृ० २५५।

१३. हैदरमल (भागमती) की माया (प्रेम) से, १४. मिसरी, १५. सरोज-से सीधे सुडौल शरीरवाली, १६. सोहाग, १७. पास, १८. ललाट के ऊपर, १९. २०. २१. नृत्य के रूप, २२. धन्यवाद।

† वही, पृष्ठ २५७।

(२)

भवाँ-अबरू[1] में मावे बिरद बाँदे । इशक के राग तामें भेद बाँदे ।।२३३०।।
तेरे केश में कँवल होर सूर[2] आवे । कमाँ भौंवां में काजलसाज सादे[3] ।।
चोली तँग अँग में नित नारँग निपजे[4] । नयन सूकाँ[5] सों गो चित नित्त फांदे ।।
सुने जाली मने[6] मन में हिलजा । इशक नादान[7] सों नित आनंद ते (वा) दे ।।
तुं घुरकर देख रखी है किन ये तुर्रां । किते[8] काँदयाँ[9] पुछूं न बूझे काँदे ।।
नबी[10] सदके मिली हैदर पियारी । सेव्याँ सेतीं चित्तसों चित्त बाँधे ।।
तेरे अंचल पै हूं चँदनी का छाया । कुतुब डाबाँ[11] सों बिरवाँ कास बाँदे* ।।२३३५।।

(३)

नयन पुतलि हमसों करे एक बात । नयन वनमें दावा[12] के फूलाँ खिलात ।।२३५१।।
इशक किसवताँ[13] ते मुंजे मुस्तरी । इशक अँत अधर मेवा तुजकूँ सोहात ।।
इशक तोरे जोबन की सारा[14] करे । अधर तेरे कौसर[15] का प्याला पिलात ।।
अधर पर तेरे है पेरेम का निशाँ । अधर चूमते ते सो लाजै नबात[16] ।।
उचित चाँद सोहते तेरे दो-दो दिल । तेरा मूखडा प्रेम कहानी सुनात ।।
चतुर नारियाँ में चतुरपन तुझे । कि आपस के[17] मन म्याने[18] माँगू मनात[19] ।।
नबी-सदके मावे[20] चतुर कुत्ब सास । कि रोयाँ मने[21] कुत्ब तारा जँतात† ।।२३५७।।

(१०) हातम—

नारी सो है तुज अताले वाला[22] । झलकार सही...... ।।२३७४।।
संपोली उपर भ्वंग[23] सुट्या[24] चाम । छूटे अलकाँ में फूलमाला ।।
रतन ते अदिक दिपैं होटों पर । अधरों के ऊपर जडे सो लाला ।।
देख चँदनी में चंदमुखी कूँ । सुरज कूँ पिलाये छंद सों पियाला ।।
दिन रात हुआ जो खोले घन केस । निस में जो हँसे पड्या उजाला ।।
नारयां में जो नाज[25] भाग अचकल । अँग सँग सों करै पिया निहाला ।।
नितपीवे अली के सदके हातम । कुत्बा के अधर ते मय पियाला‡ ।।२३८०।।

---

१. भ्रू-लता, २. सूर्य, ३. संधान करे, साज, ४. उपजे (गुजराती), ५. काँटे, ६. स्वर्णजाल में, ७. अज्ञ, ८. कितना, ९. रोये, १०. पैगम्बर की बलिहारी, ११. दाव-पेच।

*वही, पृष्ठ २५८।

१२. कामना, १३. पोशाक, १४. सार, १५. स्वर्गकुंड, १६. मिसरी, १७. अपने, १८. मन में, १९. मिन्नत, २०. शरण, २१. राजाओं।

† वही, पृष्ठ २६२।

२२. उतावली चाल, २३. भुजंग, २४. छोड़ा (पंजाबी), २५. हावभाव ।

‡ वही, पृष्ठ २६८।

(११) हिंदी छोरी—

रँगीली साईं ते तूं रँग भरी है। सुगड़ सुंदर सहेली गुन भरी है ॥२३९२॥
लटकना बिजली निमने[1] उस सुहावै। वो हिंदी छोरी बहु छंद[2] शहपरी[3] है ॥
चँदर-मुख सोहन्याँ जब नाचत्याँ हैं। जो तनमें तूं सुरँगी जों परी है ॥
सभी हूराँ[4] न आसैं[5] आज तुज सम। कि तूं-बालां में सब अंबर[6] भरी है ॥
उपजता है तेरे मुखते जे शाबी[7]। ओ शाबीते सो जोहरा[8] मुश्तरी[9] है ॥
नबी सदके रिझाये कुत्ब शहकूं। तोसकियाँ में तूं जैसी शहपरी है* ॥२३९८॥

(१२) पद्मिनी—

(१)

तुज नाक मोती मुख ऊपर देताहै आबसों[10]। या खिज्र[11]के चश्मेमें तिरता बुडबुडा[12] पुरशाबसों[13] ॥
ओ बुडबुडे का अकस[14] तेरे मुख ऊपर यों छाया। ज्यों चाँदनी की जोतिमने[15] मुश्की कलंक[16] है दावसों।
तुज नैन की रावत[17] चढाई भौं कमाँना रूस कर। सब आशिकाँ में मुज ऊपर राखे चापनाबु[18]सों ॥
जब नाक में मकरा सुहागन पैन आई जल्वे में[19]। वोकुफूलदे मुंज ज्ञान पर सिक्का करे शब-ताब[20] सों।
मुकवा[21] जो लटकाई भुनक वालों में पद्मनि पद्मके। एक तिल[22] में हिलजाई[23] मुंजे उस कमरे के कुल्लावस ॥
कुल्लाव सुट मन में कऊं[24] खैंची अलक डोरीसेती। अप इश्क के खेलाँ दिखाती है अजब लखबाब[25] सों ॥२४०५॥
हस्त्रिन शंखिन होर चित्तिनी भुलकर रहे धन भेद में। वो पद्मिनी मिलकर सोहै अब कुत्बशह नब्बाबसों† ॥२४०५॥

(१३) सुन्दर—

(१)

चंदर-मुख तुज लाल लब हैं, दसन जों तेरे तारे हैं।
कहो यह चाँद काँका है, किस असमाँ ते उतारे हैं ॥

---

१. नाईं, भाँति, २. चतुराई, ३. परियों की रानी, ४. स्वर्ग की अप्सराएँ, ५. होंगी (पंजाबी), ६. एक सुगंधित रत्न, ७. जवानी, ८. बृहस्पति, ९. शुक्र।

*वहीं, पृष्ठ २७१।

१०. तेज से, ११. अमृत कुंडका रक्षक देवपुत्र, १२. बुलबुला, १३. यौवनपूर्ण, १४. छाया-चित्र, १५. प्रकाश में, १६. काला धब्बा, १७. रावट, १८. अंगूर, १९. सोहागरात, २०. ताप, प्रकाश, २१. एक आभूषण, २२. पल, २३. हिलमिल गई, २४. कहूँ (कौरवी), २५. प्रकार।

†वही, पृष्ठ २७२।

अगर यह चांद उस असमां का कहे जग तो कबूलूं क्यों।
समां के[1] के चांद मुख में कवन देख्या जो तारे हैं ।।
सुरज चँद सों[2] सुंदर मुख कूं दिये तश्बीह[2] सब शायर[3]।
वले[4] पूँछे जो मुंजकूं तो उस-अंगे[5] ओ बेचारे[6] हैं ।।
कहे देखे करिश्मा[7] कर वो सुंदर नाज़नी मुंजकूं।
तो उस नैंना के झलकारे झलकते जो कटारे हैं ।।
समा आ बाज के ऊपर हदफ[8] सो सूर[9] करना वो।
भवां के कौस सों तारे के नयनाँ तीर मारे हैं ।।२४१०।।
सुरज होर चांद के किरना झलकते सो दिसें मुज यों।
कि जों मँगते सुंदर कने[10] ओ गदा[11] हो हत पसारे हैं।।
ऐसी सुंदरकूं पाया हूँ खुदा के रहम[12] ते कुतुबा।
जो हूरहोर मलक[13] देखकर हुये हैरान सारे हैं*।

(२)

आई नारी सुलक्खन चंद-पेशानी[14]। हिंदोले चित में लालनकूं पेगाने ।।१९२२।।
वचन-अमृत कुरंग-नयनी सौ वो वार। पेरेम के नांव सों घुंगुरु बजाने।।
सो नारी पद्मिनी अति चंचली है। सुंदर मद गल सुधाकर मद जो आने।।
फरिश्ता देख मुख सुध भूल जावे। सरग आछर[15] हुई है उस-दिवाने।।
पंखी देखत सो मुख परवाज[16] होये। मिरिगनयनी मिरग तन में रिझाने।।
सखी सुंदर नहीं उस सम जगत में। चमक चमकानने जग मन भुलाने ।।१९२७।।

(१४) रंगीली—

मेरी मिठ बोलनी मीठाइ सों प्याला पिलाती है।
खुमारी रात का अपने नयन म्यानें[17] दिखाती है ।। २४२० ।।
मेरी शीरीं[18] कँघी करती कँगन बजते हैं नादाँ सो।
रतन टीला (टीका) धरे मँगमें नबे छँद सों दिपाती है।।
नबी मनवालि मद प्याला पिलाती नैन नकलाँ[19] सों।
नयन खुम्मारि अपने तन चढा धनुक नबाती[20] है† ।।

---

१. घुस के, २. उपमा, ३. कवि, ४. लेकिन, ५. आगे, ६. तुच्छ, ७. चमत्कार, ८. डर, ९. सूर्य, १०. पास, ११. भिखारी, १२. दया, १३. अप्सरा।

*वही, पृष्ठ २७४।

१४. चांद-सा ललाट, १५. अक्षर, १६. सूरज, १७. नयन में, १८. माधुरी, कहीं की प्रेमिका, १९. लीला, नयन-लीला, २०. मिसरी।

†वही, पृ० २७४।

अँचल झंकार की चौवाँ चँदर-सूरज निमन[1] झमकै[2]।
ढलक नार (ओ) लटक चालाँमने[3] चालाँ न पाती है ।।
मदन मालाँ नवे जोवन नवेले तन उपर सोहते।
पवन के राग रँग गाकर मुंजे छँद सों[4] रिझाती है।
रतन की प्यारि मानिक जोत प्याला भर पिलाती है।
रँगीली बिरबहूटी बिरबहूटियों में सुहाती है ।।
नबी सदके मुहम्मद कुत्ब सों मिल अछ[4] घडी अबतूं।
चँदा ऐसी सहेल्याँ तै सुरज सा मुख दिखाती है* ।।२४२६।।

(१५) नाजनी—

धन[5] दीद[6] पर नादीद[7] रख सूरज नहीं रहता खडा।
तारे चँदर सुन यो खबर सब रैन में रहे गडबडा ।।
सो धनका मुख झलकावता निसमें सुरज छुप जावता।
दिनमें चँदा नहिं आवता तारे तुटैं सब झडपडा ।।२४४०।।
सहेली का खोंपा है बदक बुंद-खुय[8] झडे जों मेहों निछल।
देखत चँचल नैना चपल विजली तो जावे कडकडा ।।
बिच नीर कोइ न आये कर कोइ आग फिर ना जाय कर।
बाडी सों पलकाँ लायकर सूका[9] करे आडाअडा ।।
धन सीस पर फूलाँ चडे अंबर पै जों तारे जडे।
हूराँ[10] मलक[11] देखन खडे दिसता तमाशा या बडा ।।
हाताँ में लाली यों बमे कीते[12] शिकार वो सबकसे[13]।
खूनी निशानी सच दिसै उश्शाक[14] ले चँग संपडा[15] ।।
सिदकें नबी का दास हूं मैं दास रासिख[16] रास[17] हूं।
कुत्बा अली का दास हूं पक्कड खडा दिल दिल कडा† ।।२४४५।।

(१६) चंचलनयन—

दो नैन तुज अब[18] तले हैं नारकेरे ख्वाब[19] में।
दो मस्त शोखीसों मुते मस्जिद केरे मेहराब[20] में ।।२४६२।।

---

१. चन्द्र-सूर्य के समान, २. झलकें, ३. चालों में, ४. रह।

*वही, पृष्ठ २८५।

५. तरुणी, ६. आँख, ७. न नजर, ८. पसीने की बूंद, ९. कांटा, १०. देवकन्याएँ, ११. फरिश्ते, १२. किये (पंजाबी), १३. सब किसीको, १४. प्रेमी लोग, १५. पहुँचा, १६. सच्चा, १७. सीधा।

†वही, पृष्ठ २८९।

१८. तेरी भौं, १९. स्वप्न, २०. नमाज पढ़ने का ताक।

तुज नैन चंचल......कानपर दो जुल्फ[1] सों।
खेलै जो धर थुड्डी[2] के कू तुज मुक्ख के महताब[3] में।।
यह क्या अजब पडता नजर जो धूप पडती चांदपर।
या मुख नुरानी[4] जोत भर है नैन केरे शाब[5] में।।
हैं लश्करी नैनाँ तेरे संजोर सलह[6] कला करै।
कोइ रीस[7] तिसकी क्यों कर सों दिस करे असबाब[8] में।।
नैनों धलाती[9] सुँदरी तब कुत्बशह कूँ भावती।
मिल सेज में रीझावती चौसार[10] तूँ हर बात में* ।।२४६६।।

(१७) फितनये-दकिन—

हिल्जाये[11] जीवाँ कूँ सकी अप-चोली केरे ताब[12] में।
पुतली निमन[13] लुडकाय है दिल अप-नयन-मेहराब में ।।२६०१।।
कहिया कि "मुख दिखला मुँजे छाती सों छाती ला मुँजे।"
कहई "अपनि-घर आ मुँजे" बेसुद हुआ इस जाब[14] में।।
सूरज बदन झलकाये जब छुप जाय तारे लाज सब।
देखत सो उसका जोत-छब ताकत न है महताब में।।
क्या चलबली[15] सोधन है तूँ, हर फ़नमने पुरफन[16] है तूँ।
होर फित्नये दक्खिन[17] है तूँ सरज़ोर[18] हर यक बात[19] में।।
सदके नबी कुतबा सों मिल करते रल्यां[20] हर एक तिल[21] ।।
लुब्दाये[22] कर मुज जीव दिल पिघलाय जो कंद आबमें[23] ।।२६५५।।

(१८) तिलंगिन[24]—

पियारी जोहती मैं पन्त[25] तुज पेम[26] । मुँजे जिव देवना है पेम में नेम ।।२६०६।।
गरब[27] सों मैं न बूजी थी पियाकूँ। कि यक था मुज नयनतल कोह[28] होर हेम ।।
ढुंड्यां हूँ मूँ नहीं पाया पिरित जेह। बहुत जोया हूं नै पाया हुँ मैं थेम[29] ।।
पेरेम पियका हमारा जीव संजिवो। पेरेम पँथ में है उश्शाकाँ[30] का यह नेम ।।
नबी सदके[31] कुतुबशह सांवली सों। वचन हिंदी सों बोले एम्म रे एम[32]† ।।२६१०।।

---

१. अलक, २. ठुड्डी, ३. चाँद, ४. प्रकाशमान मुख, ५. जवानी, ६. हथियार, ७. ईर्ष्या, ८. विषय, ९. गिराती, १०. सर्वतोभद्र।

*वही, पृष्ठ २८९।

११. फँसाय, १२. ताब, सौन्दर्य, १३. पुतली-सी, १४ जवाब, उत्तर, १५. चंचल, १६. कलामें, कला-मर्मज्ञ, १७. दक्खिनी की आफत, १८. बली, १९. बात, विषय, २०. रले, मिले, २१. क्षण, २२. खींचे, फँसाये, २३. पानी में, २४. आंध्र तरुणी (गोलकुंडा आंध्र में है), २५. पथ, २६. तेरा प्रेम, २७. गर्व, २८. पहाड़, २९. ठांव, ३०. प्रेमी, ३१. बलिहारी, ३२. क्या रे क्या (तेलुगु)।

†वही, पृष्ठ ३२१।

(१९) दकिनकी पुतली

सदा मुंज मस्त करती है नयन सेतीं नयन पुतली।
वाली गम्ज़े[१] के प्याले पिलाती है जुवन-पुतली ।।२६१६।।
नयन सों 'सब्र[२] कर' कहती करूँ अब सब्र मैं कीता।
नयन होते हैं रोशन देखती तूं है गगन-पुतली ।।
भवाँ कश्तीमने[३] मैं यों रह्या ज्यों नूह[४] कश्ती में।
पिरित दरियामनं[५] पाया परी ऐसी रतन्न पुतली।।
तेरा मुख लोहकलिया[६] या डरूं ना मैं परी-जिनते।
हिंदू पातुर सँपडती नै विचकती ज्यों हरिन पुतली।।
अगर मँगती रिंजाने आशिकाँ के तैं[७] घडी तिलतिल[८]।
अंचल झलकाये रोसा[९] सोंचले डगडग कवन पुतली।।
नयन के हौज़[१०] में पुतली नवी चाल्याँ-सो तिरती है।
नयन आशिक है देखनेकूँ वचन सुनने करन पुतली।।
नबी सदके (जों) सिरते जीतिया नादान[११] बाली[१२] कूँ।
अनन्दाँसों मिली कुतुबे-जमाँ[१३] सेंती दकिन-पुतली* ।।२६१७।।

७. गजलें (प्रेम-गीत)

(१) सौंदर्य—

(१)

मुखमें बनफशा[१४] रँग तिला का नूर[१५] में तूँ पाइया।
ज्यों स्याम रंग चंदासों मिल सब जग प चँदना छाइया ।।२९।।
मुख काबा के म्याने-मने[१६] मकसूद मुज[१७] पाने-मने।
उम्मेद के खाने-मने[१८] गौहर[१९] के दावे लाइया ।।३०।।
कुंतल में केबडे भेस है लोगों कहें निस-देस[२०] हैं।
मानिक उजाले सीस हैं मंतर सों मैं हिल जाइया[२१] ।।
मजनूं सो मेरा नाम है बहशी[२२] तुँ मुजसों राम[२३] है।
इस मुख अलख मुज दाम[२४] है इक वीच में गलवाहियाँ ।।

---

१. कटाक्ष, २. धैर्य, ३. भौं-रूपी नाव में, ४. जल-प्रलय का पैगम्बर, ५. समुद्र में, ६. तावीज, ७. तंई, से, ८. पल-पल, ९. रोष, १० कुंड, ११. बेबूझ, १२. बाला, तरुणी, १३. युगका ध्रुव।

*वही, पृष्ठ ३२३।

१४. एक फूल, १५. प्रकाश, १६. बीच में, १७. मेरी अभिलाषा, १८. घर में, १९. मोती, २०. निशि-दिवस, २१. फंसाया, २२. जंगली, २३. संतोष, २४. जाल।

तुज गाल फुल आले[1] ऊपर लट है सो गुल्लाले[2] उपर।
या है भँवर लाले उपर सो नक्श मुज मन काइया ।।
मुज ख्याल-म्याने तूँ बसे मुज ज्ञान-दीवा तूँ दिसे।
कित्ता कसौटी पर कसे मैं ध्यान तुजसों लाइया ।।
विरहा मआनी[3] मिल अहै उसका दिला मुज दिल अहै।
फुल सँग रक़ीबां[4] हिल अहै क्यों भी तो धुन विलगाइया* ।।३५।।

(२)

जुल्फ़ के जदवल[5] में हिलजा है देखो बादे-सबां[6]।
हिलजता है बाव ऐसा बूझो वो क्या है बला ।।११९।।
नैन मिट्ठाई सों लबदे[7] ज़ाहिदाँ[8] तुज-नेह में।
हम मखी कूँ चाखता है ओ मिठाई सब रवा ।।१२०।।
तेरे मुख के नूरते होता मुनव्वर चाँद अजित[9]।
दिलकी तहकीकाँ सों देखो है बी बातां बेरिया[10] ।।
तेरे मुख मस्हफ उपर[11] खींचे सूके[12] का ज़बर[13]।
जज्म[14] हो रहिया है दिल तशदीद[15] ना कर आ पिया ।।
सब्ज खत अँगे[16] कहते हैं बात लोकाँ सब्जी का।
क्या खबर है उनकूँ क्यों पीला हुआ सब गिया[17] ।।
केस खोले करने कंघी रात है हमना कुँ वो।
माँग काडे जब सकी वो देस[18] हमना कूँ सुवा ।।
तुज केता कों[19] ऐ शमे[20] अप-रोशनी ते सिर न खींच।
मारते हैं दम-बदम[21] गर्दन कि तूँ है बेहया[22] ।।
सीधे कर हुनराँसेती[23] दिखलाते उसका नूर सब।
नूर जाता उफ[24] सेती इसते सदा है बेनवा[25] ।।
रात सारी तेरे गम खींचे[26] सफ़ां हमनाँ उपर।
मीठे वचनाँ ते लिख्या मेरी खलासी[27] का रुखा[28] ।।२७।।

---

१. ताक, २. लाल फूल, ३. कुतुब कविका एक उपनाम, ४. प्रतिद्वंद्वी।

*वही, भाग २, पृष्ठ ४।

५. अकलका फंदा, ६. प्रातः समीर, ७. फँसे, खिचे, ८. संयमी, धार्मिक, ९. आदित्य, १०. निर्लज्ज, ११. गाल, १२. काँटा, सूखा, १३. स्वर का भार, १४. हल् (हलन्त) का चिन्ह, १५. द्वित्व-चिह्न, १६. आगे, १७. तृण, १८. दिवस, १९. कहूँ (कौरवी), २०. मोमबत्ती, दीपबत्ती, २१. क्षण-क्षण, २२. निर्लज्ज, २३. कलाओं से, २४. अफसोस, २५. बेचारा, २६. जुल्म, २७. मुक्ति, २८. रुक्का, लेख पत्र।

अप-गुनाहांसे हमीं खाते हैं गोते रात-दिन।
अपनी कुदरत हात सों मुजकूँ बचावो ऐ खुदा ।।
तेरी अंचल बाव ते है ईसवी-दम जल्वगर[1]।
वो अँचल मुंज हात में है ज्यों कि मूसा का असा[2]।
मैं न जानूँ काबा वो बुतखाना[3] व मैखाना[4] कूँ।
देखता हूँ हर कहाँ दिसता है तुज-मुख का सफ़ा[5] ।।१३०।।
आगे[6] हैं पर्दे अँधारे के मआनी तेरे सब।
शुक्र कर हासिल[7] हुआ है मुद्दआ तूँ[8] उस-दुआ* ।।

(३)

तुज मुखकमलपे फिरता है भौंरा होकर अकास।
दीवै ये, जों पतँग फिरे बेखबर[9] अकास ।।९८४।।
तुज इश्क की वफा[10] में कमर बांद्या है कर।
चंद-सूर का सो वाया[11] अहे ज़र-कमर[12] अकास।।
बहरे खुदा[13] न देख निझा[14] आस्कां दी।
तुज नैन दौलते[15] होतां ज़ेरोज़बर[16] अंकास ।।
तू मेरी वास है सखी होर तेरी वास में।
फिरता है डांवाडोल किधरका किधर अकास।।
तुज दरस देख डरते बेताब[17] होयकर।
सिर तुज चरन सौ लाने कूँ आवे उतर अकास।।
चँद-सूर की अँखियाँ सों तुज देखने केतैं[18]।
लाया है नूर नीर नयन ते[19] बिछड अकास ।।
करता है शाही[20] कुत्ब मुहम्मद के नाँव ते।
तूँ-दास हो रैया है मुहम्मद के घर अकास† ।।

(४)

दीपै जो गाह[21] सूर गहे[22] डूबै क्यों है डर।
मुख सूर[23] हूर नूर[24] सदा दीपै मेरे घर ।।८६६।।

---

१. ईसा की प्रकाशमान सांस, २. लाठी, ३. प्रतिमा-गृह, ४. मधुशाला, ५. स्वच्छता, उज्ज्वलता, ६. पाते (पंजाबी), डालते, ७. प्राप्ति, प्राप्त, ८. तेरी कामना।
*वही, पृष्ठ १४।
९. बेहोश, १०. ईमानदारी, ११. पाया (पंजाबी), १२. सुनहरा कमरबंद, १३. भगवान् के लिये, १४. निध्येनकर, ध्यानकर, १५. दृष्टि फिराते, १६. वारा न्यारा, १७. अधीर, १८. देखने के लिये, १९. आंसुओं से, २०. बादशाही, राज्य।
†वही, पृष्ठ १२६।
२१. स्थान, २२. कहीं, २३. मुख-सूर्य, २४. अप्सरा की पवित्रता।

तुज मुख झलक की साजते सब दिन चंदा सूरज ।
टुक मुख दिखावै लाज छिपै न आवैं तेरे सर ।।
कुदसी[1] लिखे है दिल में तुमन नूर के वरन[2] ।
झलका दिखाओ तिल में[3] जड़ित जेका मौज पर ।।
तुज-अंग वास मनमने[4] फुल ह्वो खिलै सोहन ।
सो वास ना समन मने[5] ना मुश्क[6] ना अंबर[7] ।।
हूरां[8] तवक सो नूर के ल्याइयाँ है चावसों ।
आरति सितारे सूर-चंदा करने तुज उपर ।।८७०।।
आशिक़ कहते हैं वागकूं बहलाने जायें दिल ।
क्या बूझे फूल जाग[9] मगर बू जेतो भंवर ।।
घुंघरू वा घंट मस्त झनक साजकर चले ।
सो नाद सुनके मस्त हती जायँ हार डार ।।
हँस्ति[10] सक्याँ सो घंट सुनत गड़बड़ा उठ्यां ।
बाबर गयंद तन्त पिछान्याँसो सर-कसर[11] ।।
कुत्बा तु दुख विसार बहक्के[12] अलीवली[13] ।।
ले हात खरग मार कमर खारजीयें खर[14]* ।।८७४।।

(५)

सुरज मुख फूलपर फूल्ये हैं अंबर-फूल[15] कुंतलर के ।
न पाये यो अजब[16] फूलाँ सो मुश्की[17] केस अचपल के ।।१८९०।।
घुंगरबाल्याँ छव अलकाँ[18] छव नयन पर फितने[19] कर्तियाँ लख ।
सो जों के मस्त हर्न्याँ गल ज़न्जीर[20] बां पाय है. . . के ।।
चकोराँ होर रावीं[21] हंस सुरंग मुरखाबी[22] फल देखन ।।
चँदरमुख लब-शकर[23] ते सिर सो खूबी. . .न्दवानी चंचल के ।।
जो निर्मल मोतियाँ चोली सों जोबन देख पूछ्या है ।
सो कै छँद सौ छुपा लेकर आय् दिन आज आँचल के ।।

---

१. पवित्र लेख, २. रंग, ३. पलमें, ४. मनमें, ५. चमेली में, ६. कस्तूरी, ७. सुगंधित रत्न, ८. अप्सराएँ, ९. कौआ, १०. हस्तिनी, ११. पूर्णतः, १२. भगवान् के लिये, १३. अली स्वामी, १४. विधर्मी (शिया भिन्न) गदहा ।

* वही पृष्ठ १३३ ।

१५. आकाशफूल, १६. अद्भुत, १७. कस्तूरी-रंग (काले), १८. अलकों की शोभा, १९. धोखा, २०. गलेकी शृंखला, २१. तोता, २२. एक चिड़िया, २३. शक्कर-जैसा मीठा ओठ ।

पदक धन पैन[१] छँदवँद सों फिरे धन ज्वाँ हुआ हैराँ।
मगर ल्याये पकड़ सूरजकूँ मोतियाँ हार तुज-गल के ।।
तिरैं जों बाम[२] आ जल में दिसे रोमावली यों उस।
न जाने दे रखे लहराँ सों कुँदन ज़ेर[३] निर्मल के ।।
छबीली सुन गजल कुत्बा कि खुश हो आ वचन कनमें[४]।
कहूँगा एक गर बोसे[५] दो दे है ओझल अंचल के* ।।१८९९।।

(२) नख-शिख—

(१)

तेरे दो नयन हैं मद मस्त मतवाले । तेरे दो गाल हैं खूबी[६] के गुल्लाल ।।१२५९।।
तेरे मुख की लटाँ नैं हैं कि दो नाग । सुलेमाँ की अँगूठी[७] के हैं रखवाल ।।१२६०।।
भवाँ तेर्याँकूँ क्यों लिखेगा नक़्क़ाश[८] । कमा दो खींचियाँ हैं सख्त अश्काल[९] ।।
सख्याँ के हात में देख प्याली मद की । नहीं देख्या अगिन के तैं जो सय्याल[१०] ।।
तूँ मोती बेबहा[११] तुज बहा[१२] मैं । जगत का माल[१३] है तेरा सो पामाल ।।
जहाँ है सीमिया[१४] का नक्श उसते[१५] । कहे हैं आरिफ़ाँ[१६] सब उसकूँ तमसाल[१७] ।।
नबी सदके कुतुब जम[१८] ऐश[१९] कर ऐश।
कि तुज दर पर पड़े हैं फत्हो-अकबाल[२०]† ।।

(२)

उजाला जगमने[२१] झम्क्या वाँदे बाल भोली जों । हुआ फिर रैन अँधारा बँदे सो केस खोली जों ।।
लटकते जब चलै सो धन सिके हैं चाल हंसीकां[२२] । वेनवन फूल सब भरिये जो हँसकर बात बोली जो
मुंजे जब देखकर सो धन दसन-तल ल्याये लब दीसे । दसन नाबात[२३] अधरामृतके पानी सों धुली जों ।।
करो अब आशकाँ दिल घट[२४] वचन माशूक़[२५] का यक नैं । वफ़ा[२६] अच्छराँ जो थे सो अपने दिलते धोली जीं
मुहम्मद का मुहब्बत आ किया है ठार मुंज-दिल में ।।
अली घर भीक मंगते ते भरी मुंज दिल की झोली जों‡ ।।१५१९।।

---

१. पहनकर, २. एक मछली, ३. सुवर्ण, ४. कानमें, ५. चुंबन।

* वही, पृ० २४८।

६. सौन्दर्य, ७. जादूकी अंगूठी, ८. चित्रकार, ९. आकार, १०. प्रवाह, ११. अनमेल, १२. तेरा मुल्क, १३. मोल, १४. चाँदी, १५. उससे, १६. ज्ञानी, १७. उदाहरण, १८. सदा, १९. आनन्द, २०. विजय और प्रताप।

† वहीं पृष्ठ, १६५।

२१. जगमें, २२. कहाँ, २३. मिसरी, २४. छोटा, २५. प्रिय, २६. ईमानदार।

‡ वही, पृष्ठ २००।

(३)

छबीली है सूरत हमारे सजन की । कि या पूतली उस[1] कहूँ अप-नयन की[2] ।।१७३१।।
न देख्या निछल कोई उस सार[3] सूरत । सराऊँ[4] किते ज़ेब[5] अपने मोहन की ।।
चँदा सा देख्या मुक्ख उस सर्व-कद[6] पर । तो होती है शर्मिदा पुतली गगन की ।।
तेरा हुस्न फुलवन ते नाजुक[7] दिसै तो । न दीसै तेरे अंग[8] छव कोइ वन की ।।
नयन तेरे दो फूल नरगसिते ज़ेबा[9] । नज़ाकत[10] है तुज-मुख में रँगी चमन की ।।
तेरे ज़ुल्फ़ फंदा[11] में दिल आशिकाँ के । रहे हैं सो आशिक हो पिउ के नयन की ।।
नवी सदके **कुतुबा** सों ओ पिउ मिल्या है ।
तो क्या कहूँ सकूँ बात उस-मुख सुमन की* ।।१९३७।।

(४)

पियारी के नैनाँ है जैसे कटारे । न सम उसके अंग कोई हैं दो-धारे ।।१७८७।।
असर[12] तुज मुहब्बत का जिसकूँ चढ़ैगा । तेरे लाल[13] विन उसको कोइ न उतारै ।।
दो लोचन हैं तेरे निसँग चोर रावत । उनोसों दिलेरी न कर सब हि हारे ।।
सुहाता है तुजकूँ गुमाँ होर गरूरी[14] । कि माते अहैं तुज-हुसन[15] के पियारे ।।१७९०।।
सख्याँ में है तू मिर्गनयनी छबीली । सजन तो नहीं होते तुजते किनारे ।
अजब चंचलाई है तेरे नयन में । कि खंजन नमन[16] एक तिल[17] कैं[18] न ठारे ।।
नबी सदके **कुतबा** सो मद पीवे जम जम[19] ।।
ओ चंद-मुख कि जिस मुखतें जोती सिंगारे† ।।१७९३।।

(५)

फुले रयन या तारे धन या भँवरे मुख ले मोगरी ।
या नीलमीं तारों सों भर मोती पिरोये सोक री ।।१८२९।।
सर्वन[20] है ओ या सेंवती फुल या सीपियाँ जौहरियाँ की ।
या चँद नौ[21] दुकान देख पाये जग जौंहरी संतोख री ।।

---

१. उसे, २. अपने नयन, ३. उसके सारखा, ४. सराहूँ, ५. सुन्दर, ६. सरो-जैसे सीधे कदवाली, ७. कोमल, ८. आगे, ९. सुन्दर, १०. कोमलता, ११. अलक के फंदों।
*** वहीं, पृष्ठ २२७। १२. प्रभाव, १३. प्रिय, १४. अभिमान, १५. तेरा सौन्दर्य, १६. खंजन से, १७. पल, १८. कहीं, १९. सदा ।**
† वही, पृष्ठ २३३ ।
२०. कान, २१. नया चाँद ।

भौंवा है ओ या दोनों आँन या मुद्द[1] है दाम[2] के ।
या चँद नवे या भौंरे पर ना समज लई जग जोग री ॥
या मुख है ओ या पुनम या सूल शोलानूरपा[3] ।
या दर्पन ओ या जाम[4] जग या फुल सरग के लोक री ॥
धन का दहन[5] हीर्याँ का तन लब[6] लाल कुँदन है जक़न[7] ।
सुन्ने सीने पर कुच रतन तैं ऐसी कैं[8] किस यो करी ॥
जो ले तँबूरा हातमें गाने लगे सहेल्याँ सों मिल ।
कँठ-ज़ेल[9] अपना तनके जो घोड़ां गले है खोक री ॥
हज़रत नबी के सदक़े सुन बातां कुतुब शहमस्त हो ।
कहिया कि करता रात-दिन ऐसी सखी सों भोग री* ॥१८३५॥

(३) **प्रियतमा आनन्दमयी—**

पियासों रात जागी है सो दिस्ती है सो धन सरखुश[10] ।
मदन सरखुश, सयन सरखुश, अँजन सरखुश, नयन सरखुश ॥१०५७॥
पियारी प्यारसों पी है पियाला पेम का तो है ।
दहन[11] सरखुश, दमन सरखुश, रसन सरखुश, वचन सरखुश ॥
नयन मतवाली हो झुलतीं पियाली पेम पी पी कर ।
जोबन सरखुश है, सो मन सरखुश, तो तन सरखुश, करन[12] सरखुश ॥
सखी लट सुंबुलिस्ता[13] ते बताये[14] बाव परिमल तूं[15] ।
चमक सरखुश है, वन सरखुश, समन[16] सरखुश, अंगन सरखुश ॥१०६॥
चड़ी है नेह की मस्ती सखीकूं पीव के सँगते ।
चरन सरखुश, चलन सरखुश, हिलन सरखुश, डुलन सरखुश ॥
मदन सो सटपटाई सो अजायब कुछ है छव धन का ।
जकन[17] सरखुश, चुमन सरखुश, लगन सरखुश, है मन सरखुश ॥
नवी सदके कुतुब बहु गुन रयन-दिन ऐश करने ते ।
जोवन सरखुश, मदन सरखुश, जगन सरखुश, मगन सरखुश† ॥१०६३॥

(४) **जगमोहनी प्रियतमा—**

जगमोहिनी वो उत्तम सो नारी । शह पेमसेती झगड़ती है भारी ॥१८५७॥

---

१. मुद्री, २. जाल, ३. ज्वाला, प्रकाश, चरणवाला, ४. प्याला, ५. मुख, ६. ओठ, ७. ठुड्डी, ८. कहीं, ९. कंठ के नीचे ।

* वही, पृष्ठ २३८ ।

१०. विभोर, प्रसन्न, ११. मुख, १२. कान, १३. जटामासी (बालछड) का बाग, १४. बिखला दे, १५. तेरी सुगंधि, १६. चमेली, १७. ठुड्डी ।

† वही, भाग २, पृष्ठ १३७ ।

अमृतवचनी मीठी ज़बाँ सों। छन्द-बन्द-अभरन सो आप-सँवारी।।
वो छंद-वंद भरी है पिया रिझाती। कै सूजती उससों तूं गँधारी।।
गर यों करती है छंद छाले। है पेम के पंत में वो सारी।।१८६०।।
हे मृगनयनी गयंदगँवनी। नैनोंसों करै कमान दारी।।
दूतिन तू न खा होशियार बाज़ी। प्यारी व पिया में है सो नारी।।
सदके नबी है कुतुब के मानी ।।
सखियाँ मेंहूँ है शहकि प्यारी* ।।

(५) मस्त प्रियतमा—

मदन मस्त बदिल मस्त कजन मस्त परी मस्त। हुई मस्त पवनमस्त लगन मस्त परीमस्त।।३४३।।
चढ़ी मस्त वही मस्त डुली मस्त रही मस्त। मुखा मस्त सदा[1] मस्त सोहन० मस्त।।
खड़ी मस्त अंचल मस्त ढली मस्त ओ रही मस्त। गजक मस्त नुक़्ल मस्त वचन०।।
परी मस्त विपन मस्त सुरा मस्त हुई मस्त। मिली मस्त खिजी मस्त रसन मस्त।।
खोपा मस्त फुलाँ मस्त कजलमस्त खुली मस्त। लटाँ मस्त नयन मस्त देखन मस्त।।
तिला मस्त[2] तुरा मस्त धरा मस्त धड़ी मस्त। शकर मस्त चुमन मस्त हंसन० मस्त।।
चोली मस्त कमल मस्त भंवर मस्त।
कुतुब मस्त करी[3] मस्त यों मस्त परी मस्त† ।।३४९।।

(६) प्रेमवियोगिनी—

(१)

पिया जों जों मिले त्यों त्यों दुतिन[4]-दिल दाग जाली हैं।
सरासर[5] दूतनी के तैं करो जो ज़ाग[6] काली में।।१४८२।।
पियारे आजकल आवेंगे कर ले आस ला रह कर।
हरेक तिल[7] कूं करन[8] करकर गुसाईं बाज[9] टाली में।।
जपूं मैं जागने में तुज, सेवूं सपनेमने[10] भी तुज।
जनम तुज ध्यान में कट्या[11] नहीं हूँ तुजतैं खाली मैं।।
तुमन बिन देस मुंज निस है तुमन सों रैन मुंज दिन है।
खड़ी एक पाँव पर जों सुर्ख मिलने की उताली[12] में।।
नबी सदके कुतुब कन मैं वचन कह जाति के मुन्किर[13]।
सख्याँ सब ग्वाही हैं तो बात करती देखी हाली में‡ ।।१४८६।।

---

* वही, भाग २, पृष्ठ २४२।

१. स्वर, २. काला तिल, ३. किया।

† वही, पृ० ४७।

४. सौत, ५. पूर्णतः, ६. कौआ, ७. पल, ८. युग, ९. विना, १०. सपने में, ११. कटा, १२. उतावली, १३. इन्कार करनेवाली।

‡ वही, भाग दो, पृष्ठ १९५।

(२)

गुसाईं पास मेरे हैं कि देखी आज सप्ने में।
उठी जब हड़बड़ाकर मैं न देखी सेज अपने में ।।१४८७।।
पिया की छाती लगकर मैं रही थी छिपके छाती में।
तहाँते यों[1] दूतिन काडी जो मत देखे छुपने में ।।
न बूँझूँ तुज पिरित म्याने[2] मेरा चित क्यो बर आवेगा[3]।
न मुंज में सब्र[4] ता तुज मेह[5] जावे कर्न[6] जपनेमें ।।
तुमारी सों तुमनकूँ मैं कधीं भी याद आई थी।
तूमन जपनेते निस-दिन मैंन पुनम-चँद जो है खपनेमें ।।
नबी सदके रे कुतुबा भर्‌या है इश्क का बाजार।
जो कुच मँगता है सौदागर नफा कुछ नै है तपने में* ।।१४९१।।

(३)

पिया किस सात[7] जिव लाये कि समजे किसकूँ[8] जाता नैं।
जो आँसू पोछने जाऊँ उसासाँ बात आता नैं ।।१५०४।।
पिया तो शर्त[9] बोले हैं कि मैं तुज सेज आऊँगा।
बले[10] मुंज सेज आये बाज[11] मेरा दिल पत्याता नैं ।।
कते[12] हैं बाग में गये तो गँवाया जाय दुख दिलका।
वले मुक बाग पिउका देखे बिन मुंज दुक्ख जाता नैं ।।
फूलाँ सब वास के वनमैं खिले हैं मना भलाते[13] तैं।
वले पिउ-वास् अरक् बिन वास विन हरवास भाता नैं ।।
मुहम्मद नाँव दिल में रख मुहब्बत सों मुहम्मत तूं।
अली के इश्क बिन कुच काम भी तुजकू सुहाता नैं† ।।१५०८।।

(४)

तुज बिन प्यारे नींद टुक नैनाँमें मुंज आती नहीं।
रैंनी अंधारी है कठिन तुज बिन कटी जाती नहीं ।।१५२०।।
तेरा खबर[14] ए मोहनी मुंकूँ किया है बेखबर।
दिलते खबर की याद सों अपने के[15] जल्लाती नहीं ।।

---

१. यही, २. बीच में, ३. सफल होगा, ४. संतोष, ५. तेरी दया, ६. युग।

* वही, भाग २, पृष्ठ १९६।

७. साथ, ८. किसी को, ९. वचन, १०. लेकिन, ११. विना, १२. कहते, १३. मन लुभाने।

† वही, पृष्ठ १९८।

१४. विचार, १५. क्यों।

हावे न पावे[1] रोम रोम बजते अहैं तुज याद[2] नित ।
ओ नाद पाव्याँ का मुंजे कै[3] याद दिलाती नहीं ।।
केता सबूरी[4] मैं करूँ जों मीन पानी ते बिछड़ ।
तूँ गल[5] सुनाती है वले[6] कै मुंज गले लाती नहीं ।।
केता अपसकूँ नाज़ होर छँद में पवाँगी[7] ऐ सखी ।
आ सेज पर मिल मिल गमें तुज बिन मुजे राती[8] नहीं ।।
ऐ धन घुंगटमें नाज़के केत्ता छुपा के आपसे ।
कै मुंज नैन-तार्याँ मैं तुज मुखचंद झमकाती नहीं ।।
खाना-नबी[9] सदके कुतुब आशिक कहाता है तेरा ।
उस दिन यकीं[10] पहिचान तूँ भीं[11] कोइ तुज साती[12] नहीं* ।।१५२६।

(५)

तेरे दरसन कि मैं हूँ साईं माती । मुजे लाओ[13] पिया छाती सों छाती ।।१९६०।।
पियारे हात धर सभालो मुंजकूँ । कि तिल-तिल[14] दूती[15] तुज-माती डराती ।
पेरेम प्याला पिलाओ मुंजकूँ दमदम[16] । कि तूँ है दो जगत में मुंज सँगाती ।।
न राखूँ तुज नयन में राखुं दिल में । कि तूँ मेरा पियारा जिउका साथी ।।
पिया के ध्यान सों मैं मस्त हूँ मस्त । मुंजे बिरहे के बैनाँ कै[17] सुनाती ।।
अगर यक तिल पड़े अंतर[18] पिया सों । नयन जलसों सपत समदर[19] भराती ।।

नबी सदके कहै कुतुबा कि प्यारी ।
रिझा दमदम अधर प्याला पिलाती† ।।१९६६।।

(७) **प्रियतमा-दर्शन—**

ऐ नार मोसी नार है तेरा सरस दरस । जिस हीन पर जो दिस्ट[20] करे होय ओ परस[21] ।।९७७।।
दिल लूटे बाज[22] तिल[23] रती[24] नैं शोख[25] सुँदरी । दिल लूटने के काम में तुजकूँ बहुत है जस ।।

---

१. हायहाय, २. स्मृति, ३. क्यों, ४. संतोष, ५. बात (पंजाबी), ६. लेकिन, ७. डालेगी, ८. फिर, ९. पैगंबरके परिवार, १०. विश्वास, ११. फिर, १२. साथी।

* वही, पृष्ठ २०१ ।

१३. लगाओ, १४. पल-पल, १५. सौत, १६. क्षण-क्षण, १७. क्यों, १८. फर्क, भेद, १९. सप्त समुद्र।

† वही, पृष्ठ २५८ ।

२०. दृष्टि, २१. पारसमणि, २२. बिना, २३. पल, २४. रहती, २५. गर्वीली ।

ना जानूं तुज दरस में सखी क्या मंतरा अहै । लैली तुजे सो देख के मजनूं किये अपस ।।
शीरीं है तू व खुसरवे-शीरीं है तेरा नाँव । फरहाद हो के जिव करे तुज सेरी[1] हवस[2] ।।
युसुफ हुसन[3] तेरा है जुलेखा है दिल मेरा । तुज मुज पिरित कसौटी पे देख्या हुँ कसमकस ।।
माशूक़ हो आशिक़[4] हमें मिलके दोनों है । ना आ दूतिन हमनमने[5] तेरा है संग वस ।।

सदके नवी कुतुब के दिल में जो इश्क है ।
ओ इश्क है जगत मने[6] संसार का कलस* ।।

(८) प्रेमी अधीर—

पिया बाज[7] प्याला पिया जाय ना । पिया बाज यक तिल[8] जिया जाय ना ।।१७१।।
कहेते पिया बिन सबूरी[9] करूँ । कहया जाय अम्मा[10] किया जाय ना ।।
नहीं इश्क़ जिस वह बड़ा कूड़[11] है । कधीं उससे मिल बैसिया[12] जाय ना ।।

कुतुब शह न दे मुज दिवाने[13] कुं पंद ।।
दिवाने कूँ कुछ पंद[14] दिया जाय ना† ।।१७३।।

(९) प्रेमी पागल—

बाग दिल में तुज मुहब्बत का अचंबा फुल गया ।
वास सुँघ फूलाँ अरक का[15] मैं हुआ हूँ डगमग्या ।।४९।।
ये इलम[16] होर ये कुतुब[17] होर किसते बूझ्या जाय ना ।
आलिमां[18] बेचारा देखकर उसकी तक[19] में रहे थक्या ।।५०।।
साँवली कद-सर्व[20] कूँ लागे हैं अब मींठे नबात[21] ।
चखने जाकर मैं डराँ सेती रह्या हूँ धकधक्या ।।
शीशे के कुलकुलते पियाले म्याने बाँधे बुड़बुड़े[22] ।
बुड़बुड़ा वो नेह के जोरों सों[23] जगमें जगमग्या ।।
तूँ अँधारे पंथ में ना मँगे रोशनी अग़यार[24] ते ।
रोशनी तुज देवे कौन कुदरत[25] उजाले का लग्या ।।

---

१. तेरे साथ, २. कामना, ३. युसुफ का सौन्दर्य, ४. प्रेमी, ५. हमारे में, ६. जगत में।
*वही, पृष्ठ १२६ ।

७. बिना, ८. पल, क्षण, ९. धैर्य, संतोष, १०. लेकिन, ११. अंधा, १२. मिल बैठा, १३. पागल, १४. उपदेश।

† वही, पृष्ठ २३ ।

१५. शराब का, १६. विद्या, १७. पुस्तकें, १८. पंडित लोग, १९. ताक, २०. सरो जैसे कदवाली, २१. मिसरी, २२. बुलबुला, २३. बल से, २४. पराये लोगों से, २५. शक्ति।

मैं उम्मी[1] कर गिनते हैं सब उम्मियाँ तू इल्म में।
मो जवानी[2] का कलम तुज वस्फ़[3] लिख ना सक भग्या ।।
तुम भवानी के गुनाहाँ का रकम[4] करते हैं कै[5]।
मैं मुहम्मद नाँव ते दोनों जहाँ म्याने जग्या* ।।५५।।

(१०) प्रेमी-समझावना—

सकी[6] आपे तुं साईं समजावना। मंदिर मेरे समजाव कर ल्यावना ।।२१६।।
प्यारी का करना है मनभावना। पिया मुख वचन ते मँगल गावना ।।
पिया हात में है मेरा अख्तियार। मुंज अपना किया है मो मन-भावना ।।
मुंजे गुंचे[7] कूं देख याद आवता। अलंकार सो साईं मुस्कावना[8] ।।
जलाना दूतिन[9] कु अगिन रश्क में। संताने दूतिन मुंजसों रावना[10] ।।
बुलाना बखत[11] मुंज हँसी बाजी सों। दूतिन देखने मुंज मंदिर आवना ।।
नबी सदके[12] कुत्बा तूं उस छोकरी। सयन की सरक में सो हिल्गावना† ।।

(११) प्रेमी-विरह

विरह मुंज जागता[13] है साईं तुम बाज[14]। मेरे मंदिर तुम आ देउ वस्ल[15] का राज ।।५११।।
जो आशिक़[16] साईं कारन जी छिपावे। उसे नैं आशिकाँ के सफ़ मने[17] लाज ।।
जिने साबित कदम[18] है इश्क़ म्याने[19]। धरेगा पेम उसके सीस पर ताज ।।
जिने कामिल[20] किया है पेम अपना। ग़नी[21] है दो जगत में नैं वह मुहताज[22] ।।
पिरितकूं जान आशिक जो अहै फ़र्द[23]। तुं यों बूजे तो तुज दिखलाये मिनहाज[24] ।।
पिरित तुजकूं करे गर तीर-वारा[25]। तुं अपना सीना कर उस ताईं आमाज[26] ।।
नबी सदके कुतुब शह दो जगत में। अली का मेहू तुज सिर दुर्रतुत्ताज[27]‡ ।।५५७।।

(१२) प्रेम बाधा—

सहेली न कर तूं हमनसेती दंद[28]। कि मैं बूझे हूँ तेरे सब छंद-बंद[29] ।।६४१।।

---

१. अनपढ़, २. मेरे मुंह से, ३. तेरे गुण, ४. लिखना, ५. क्यों।

* वही, भाग २, पृष्ठ ६।

६. सखी, ७. कली को, ८. मुस्काना, ९. सौत, १०. राजा, ११. समय, १२. नौछावर।

† वही, पृष्ठ २८।

१३. जाँचता, १४. बिना, १५. मिलन, १६. प्रेमी, १७. पाँती में, १८. दृढ़ पग, १९. प्रेम में, २०. पूर्ण, २१. धनी, २२. गरीब, २३. अकेला, व्यक्ति, २४. मार्ग, २५. तीर-वर्षा से मारना, २६. लक्ष्य, निशाना, २७. तेरे मुकुट का मोती।

‡ वही, पृष्ठ ७४।

२८. द्वन्द्व, झगड़ा, २९. चाल।

मैंतर पढ़ती है दूती पिउ-दिष्ट[1] पर । कि ज़ेबा[2] दिसे उस नयन अपने छंद[3] ।।
सकी चाले न कर मो प्यारेसेती । कि सलता है मुंज सीना में तेरा दंद ।।
पियाकूं सचा नेह आता अहै । दुतिन उसके नैं पिउ अँगे[4] अर्जमन्द[5] ।।
नहीं देखे हैं किस[6] चमन में कंधी । सजन क़द्[7] ऐसा सरो कोइ बुलंद ।।
मुहब्बत पियाला पर्‌याँ ले खड़्याँ । दिसे यों उनन हतमें ज्यों सूर-चन्द ।।
मुहम्मद गुलामी[8] ते कुत्बे जमा[9] । सक्याँगल में पाया[10] है अप नेह-फंद* ।।६४७।।

(१३) बुनाई--

चंदा मुख पर सकीकन[11] देखने वारीते बालाँ कुच[12] ।
गुसेसों उस उपर खींचूं कमाँ अब्रू-हलाला[13] कुच ।।
तुमारा हुस्न मेरे दो नयन में नक्श[14] बाँध्या है ।
जे कोइ देखें तुमनकूं कुच होवे उनके निहालाँ[15] कुछ ।।
न आवे सर्‌ब कूँ हर्गिज कधीं ओ नार का डुलना ।
सोहाते है उनोंकूं नाज़[16] होर चालें व चालाँ कुच ।
जेते हैं समँद[17] होर खुश्की[18] कुँ भी क्या जीते मँगते ।
हमायल[19] नम्ने पाये[20] हैं गले में कंठमाला कुच ।।
गँवाने गम गया में बाग में देखा अजायब[21] कुच ।
पिया के पाँव पड़ने तैं[22] हुये फूल डालाँ कुच ।।
दो दिल होर[23] पूँग के मोती तुमनकन[24] नैं करें बाताँ ।
उमी ते होके निर्मल डुलते हैं खूबाँ[25] के गालाँ कुच ।।
मआनी इश्क के ताराँ मों बुनता है सरासर[26] सब ।
सरासर किन[27] न बुन सकमीं[28] उनों के हैं खियालाँ[29] कुच† ।।१६।।

(१४) प्रेम-विष

तेरी नेहका मुंजकूं बिच्छू लड़्या । मेरे सबही तनमें बिस उसका चड़्या ।।
मैं आई हूँ तुज पास उतारा करन । तुमीं करनेहारा उतारा पियारा ।।
जो देखी मैं उस रूपवन्ता सजन । नयन उस सलोने ते फिर बिस चड़्या‡ ।।

---

१. प्रिय की दृष्टि, २. सुन्दर, ३. चाल, छल-छंद, ४. प्रिय के आगे, ५. सम्मानित, ६. किसी, ७. प्रियतमाका कद, आकृति, ८. दासपन, ९. युग का ध्रुवतारा, १०. पाया (पंजाबी), डाला ।

* वही, पृष्ठ ८५ ।

११. सखी के पास, १२. कुछ, १३. भ्रू, चन्द्र धनुष, १४. चित्र, १५. संतुष्ट, १६. लीला, १७. समुद्र, १८. स्थल, १९. हमेल, २०. पाये (पंजाबी), डाले, २१. अद्‌भुत, २२. तई, लिये (रुहेलखंडी), २३. और, २४. तुम्हारे पास, २५. सुन्दरियाँ, २६. पूर्णतया, २७. किसने, २८. सकेंगे (पंजाबी), २९. विचार ।

† वही, पृष्ठ ६९ ।

‡ वही, भाग २, पृष्ठ २७ ।

(१५) प्रेम-प्रतीक्षा—

करी फड़के[1] आवेंगे मन-हरना। लगूँगी आज पिया के चरना॥
सँवारी हूँ मैं सद्रे सीना[2] तुतैं[3]। मो अंगन में तू पिया पग धरना॥
कि देवो मुजकूँ अमर[4] तुम ललना। कि तुमीं मन के मेरे हैं परना[5]॥
दूतें का कूड़कपट दूतिन कूँ। नेहनगर में तो सकियाँ सों फिरना॥
फूल-वन में तेरा नाजुक है दहन[6]। चुप रहना आह सखी ना करना॥
नबी सदके कुत्बा के मन में।
जो सी नाव[7] सकी[8] जप हरना*॥

(२)

युसुफ़े-गुम[9] फिर आगा[10] अब व कनआँ[11] ग़म न खा।
घर तेरा उम्मेदका होगा गुलिस्ताँ[12] ग़म न खा॥
ऐ हिया, नेह दुख दुख्या मो खूब होगा हाल तुज।
म का चिन्ता हो गया फिर आकि जानाँ[13] ग़म न खा॥
विरहे कहावे दो दिन था दूर अपने पीवते।
दायम[14] एकधा तूँ न रहसी[15] कार मीज़ाँ[16] ग़म न खा॥
जम[17] बहारे-उम्र तुज है फिर कि आगा[18] बाग में।
चत्र[19] फूलका खिलके रँगीं मुर्ग खुशख्वाँ[20] ग़म न खा॥
हाँ तु ना उम्मेद ना हो कौन जाने सिर्रे-गैब[21]।
क्या अछैगा[22] पर्दे ओझल खेल पुतल्याँ ग़म न खा॥
ओ जँगल में शौक सों अब काबा खातिर[23] रख कदम।
तुज अगर बोलें चुभें काँटे मुगीलाँ[24] ग़म न खा॥
ए हिया, मोजों ते न डर मन का भाता होयगा।
तो तुझे है नूह कश्तीबान[25] तूफाँ ग़म न खा॥
बाट तेरा दूर अगर है इश्क़ पथ दिखलायगा।
शाहे रायाँ[26] तूँ है रायाँ में ज रायाँ[27] ग़म न खा॥

---

१. अब, जब, २. कलेजा, छाती, ३. तेरे तईं, तेरे लिये, ४. प्रभाव, ५. प्राण, ६. मुख, ७. नाम, ८. सखी।

* वही, पृष्ठ ७१।

९. लुप्त, १०. आयेगा, ११. कनआँ मुल्क में, १२. पुष्पवाटिका, १३. प्यारी, १४. सदा, १५. रहेगा, १६. काम नापनेवाला, १७. सदा, १८. आयेगा, १९. छत्र, २०. सुभावी, २१. गुप्त-रहस्य, २२. रहेगा, २३. कलाके लिये, २४. बबूल, २५. नाविक, मल्लाह, २६. शाहंशाह, २७. राजाओंसे।

कुत्बशाह इस गंजे फिक्रो खिलवते[1] दीनी मने[2]।
ता अछे[3] दर्दत[4] दुआ वो दर्से कुरआँ[5] ग़म न खा* ।।८०।।

(१६) प्रेम-उल्लास—

तुज रूप देख पाते हैं चित के नयन उमस[6]। अस्तुत तेरी करन केरे तिल-तिल[7] वचन उमस ।।९७०।।
तुज हुस्न केरे दौर[8] में रक्कास[9] होयकर। करता है रक्स मस्ती मों पाकर गगन० ।।
जिस देस[10] ते तुज देख्या उस दिन ते बेसुद हो। भी[11] तुजसों मिलने ताईं करे जीव तन० ।।
हे बेबहा[12] वतन सकी तूँ तो तेरे ऊपर। आपसके तैं[13] निवारने[14] करने रतन० ।
तेरा उमस सको कधीं जासे[15] न मुंजे सेती। राख्या हुं दिलके तब्ले में तेरा जतन० ।।
तुज मुख के नीरते सो तेरी पायकर सदा। पाते हैं ताज़ा होय कि सब फूलवन० ।।
सदके नबी के कुत्ब सदा इश्क़बाज़[16] है ।।
इस काम में मुजे देते हैं पंज-तन[17] उमस† ।।

(१७) प्रेम-प्यास—

सकी, आज प्याला आनन्द का पिला मुंज। ब याकूत अंधरां[18] की मस्ती दिला मुंज ।।५३७।।
महल दिसते हैं नूर के अति सफ़ा[19] सों। सकी ल्या सजनकूं मनाकर बुला मुंज ।।
गगन से तबक[20] मोतियाँ सों भरे हों। पिया आरती ताईं पिउकूं हिला[21] मुंज ।।
तेरे नेह बिन जीवना मुंज न भावै। मसीहानमन[22] आप-दम[23] सों जिला मुंज ।।
अधर तेरे बिन मुंज न भावें अक़ीकाँ[24]। बदन[25] तेरे बिन नैं है नीका तिला[26] मुंज ।।
तेरे हुस्न[27] बिन होर मुंज नैन में कद[28]। न आवे कि है इस सेतीं इब्तला[29] मुंज ।।
नबी सदके कुत्बा अली मेह[30] सेती।
बँधा दिल कही नैं उनन बिन बलाँ[31] मुंज‡ ।।५४३।।

---

१. एकान्त, २. में, ३. रहूं, ४. तेरी पीड़ा, ५. कुरानका पाठ।

*वही, पृष्ठ ९।

६. गरमी, उल्लास, ७. पल-पल, ८. युग, ९. नर्तक, १०. दिवस, ११. तो भी, १२. अनमोल, १३. अपने लिये, १४. रोकने, १५. जायगा (पंजाबी), १६. प्रेमखिलाड़ी, १७. पाँच वीर (मुहम्मद, फातिमा, अली, हसन, हुसेन)।

† वही, पृष्ठ १२५।

१८. लाल जैसे ओठ, १९. अति स्वच्छ, २०. थाल, २१. फँसा, खींचा, २२. ईसा की तरह, २३. अपनी श्वास, फूंक, २४. एक लाल पत्थर, २५. मुख, २६. सोना, २७. सौन्दर्य, २८. कभी, २९. परीक्षा, ३०. अलीकी दया से, ३१. आफत।

‡ वही, पृष्ठ ७३।

(१८) प्रेम-मदिरा—

(१)

सकी तुज अधर ते पिला मुंज नबेज[1]। चुमन के नकल सों पिला मुंज नबेज ।।७६९।।
जिया कूं[2] दिया है सफा[3] नेह-शराब। दिया दिलकूं कौसर[4] जला मुंज नबेज।।
मेरे नैन जों सूर[5] पुरनूर[6] कर। दिलाकूं दिलाकर खिला० ।।
तेरे नैन ते मुंज चड्या है असर[7]।
दिया तुज तिला[8] की कला० ।।
जो वन की सुराही कुतुब हत में दे।
बशारत[9] दिया कुत्कुला मुंज नबेज* ।।७७३।।

(२)

ननाँ के बंद[10] में हिल्ज्या[11] हो किन[12] नहीं है अगाहा[13]। ना बूझ सक कहते मुंजकूं दीवाना गुमराह[14]
नेह खरग-धार उपर चलना बहुत है मुश्किल। चलना सक उसके ऊपर खोये हैं सब अपनी राह।१६७०।
पियार ओ इश्क का होकर नेह सफ़[15] में डरता हूँ। है मुद्दआ यह मेरा सिज्दा[16] करूं ओ दरगाह[17]।
मुखफूल-आसमाँ में दिसते हैं तोरे जौहर। अप काम में हैं फिरते नहीं किसते कोई अगाह।
है मात तेरे जिस्म अँगे कैकवाद व रुस्तम। चेरे[18] बंदे है तेरे हमकुं रख अपने दिलख्वाह[19]।
किन लिख सके हिसाब तेरी सिफ़त[20] के या रब[21]। मुंशी बनो चहें इन्शा[22] कल्माँ होय हैं ज्यों कार[23]।
काफ़िर[24] कहो मुंजे कोई या ज़ाहिद[25] व मुसल्मां। अहराम[26] बांध्या उसका न सूजे[27] होर दरगाह।
तुज नेह सूर[28] कूं झारन कोई जगमें। यक रंग होये सो झाडे तू दीसे सब में जमजाह[29]।
ताकीब है हमारी तरकीब[30] लै तराकीब[31]। टुक नोश दारु[32] भेजो तरकीब होवैगा शाह।
मैं तिफ्ल[33] हो तुम्हारे मक्तबते[34] इल्म बूझ्या। तो देवें आलमाँ[35] सब शाबाशी मुंजकूं गहगाह[36]।
ये सरफ़राज़ी[37] बस है दो जगमने[38] भआनी।
मुंज सीस पर लिख्या है इस्मे[39] मुहम्मद अल्ला† ।।१६७९।।

---

१. जौ की शराब, २. को, ३. स्वच्छ, ४. स्वर्गकुण्ड, ५. सूर्य, ६. प्रकाशपूर्ण, ७. प्रभाव, ८. तेरे तिल, ९. सुसमाचार।

* वही, पृष्ठ १०१।

१०. बंधन, ११. फँसा १२. कोई, १३. जानकार, १४. पथभ्रष्ट, १५. प्रेम-पाती, १६. दंडवत, कोरनिश, १७. दर्बार, १८. दास, १९. मनमाना, २०. गुण, २१. हे भगवान्, २२. लेख, २३. तृण, २४. नास्तिक, अधर्मी, २५. संयमी, २६. हजके समय की पोशाक, २७. सूझे, २८. सूर्य, २९. सदा प्रतापी, ३०. बहुत, ३१. युवतियाँ, ३२. पीने की दवा, ३३. बच्चा, ३४. पाठशालासे, ३५. विद्वान् लोग, ३६. जब-तब, ३७. सम्मान, ३८. दोनों लोकों में, ३९. नाम।

† वही, भाग २, पृ० २२०।

(१९) प्रेम-मस्त—

सजन मेरा चंचल अहै पेम-माता[1]। सक्याँ कूँ पिया बात रंगीं सों भाता ।।१८३।।
मोहन कोप करते हैं, आप नाज़ सेती[2]। दूतिन जा कहे है मगर मेरी बाता ।।
सँताते हैं छंदों सों साजन वलेकिन[3]। सजन का मया नेह मुंज दिल न पाता ।।
मेरी चिन्त[4] करते हैं साजन पिरित सों। उसीते सदा विरह कूँ मैं सताता ।।
दूतिन गलती होर बलती जों मोमबत्ती। गँवाती है जलने मने[5] सारी रात ।।
सदा माँगू मैं जीव होर दिल सों पिउकूँ। कि उस बिन दुजा मेरे मन न समाता ।।
नबी सदके क़ुत्बा सों कह विनती मेरी।
कि तुम हुस्न[6] का छब मेरे मन रिझाता* ।।१८९।।

(२०) प्रेम-सुख—

(१)

ऐ नार मेरे नैन कूँ दे आपना दीदार ऐश[7]।
सरवन[8] भि तपते हैं मेरे इनकूँ भी दे गुफ्तार ऐश[9] ।।२५२६।।
मुंज नाक धन[10] तुज नाक ते दम वाम[11] का धरता हवस[12]।
दम वास देकर तूँ उसे दायम[13] दिये आपार ऐश ।।
तुज दुर अधर[14] तिसमे नबात अम्रीत[15] भर।
मेरे अधर पर धर अधर मँगता हूँ मैं आसार ऐश[16] ।।
मुंज कंठ धन तुज कंठ की कँठकूँ बहुत मंगता अहै।
मुंज कंठ सों हम कंठ[17] होवे सूर का झलकार ऐश ।।
बाहां मेरयां मुश्ताक[18] हैं तुज बाँह के गलहार के।
बाहाँ मने[19] बा[20] ना सके तुज बाँह का गलहार ऐश ।।
मुंज हात मँगता है अदिक[21] तुज हात सों मिलने के तँ[22]।
मुंज हात कूँ अप हात सों करने दे तूँ ऐ यार ऐश ।।
भेटन के दो वट सेति धन कुच कच्च अपना तूल कर।
हम दोनों कुच सों कुच लगा कुछ कुछ करें हरवार ऐश ।।

---

१. प्रेम-मस्त. २. नाजसे, ३. लेकिन, ४. चिंता, ५. जलने में, ६. तेरे सौन्दर्य।
* वहीं, पृष्ठ २५।

७. आनन्द, दर्शनका आनन्द, ८. श्रवण, कान, ९. वचनका आनन्द, १०. तरुणी, प्यारी, ११. श्वास-गंध, १२. लोभ, १३. सदा, १४. मोतियोंवाला ओठ, १५. मिसरी, अमृत, १६. आनन्दका प्रभाव, १७. एक कंठ, १८. चाहनेवाली, १९. बाहोंमें, २०. पा, २१. अधिक, २२. मिलनेके लिये।

छातीं सों छाती एक कर एक जीभ होर यक मीत सों।
तुज नखसेती नख मुंज करन में है ठारेठार ऐश ।।
मेरी तेरी रोमावली जमना बो गंगा जों मिल अहैं।
रौं रौं सो मछली होयकर करते हैं तुज गंगाधार ऐश ।।
दो नाभि दो भंवरे अहैं संग्राम के दरिया मने[1] ।
दो मन तेरा दो तीर तिर करते अहैं इस ठार ऐश ।।
तुज मुंज कमर के कटिमने[2] पीरित एकट सँपडया[3] विकट।
इस कटमने करता अहै दायम[4] मदन का भार ऐश ।।
तेरे मेरे पावाँ सकी[5] जों नाग नागिन मिल रहे।
सदके नबी[6] करता कुतुब करतार ते आपार ऐश* ।।२५३८।।

(२)

सदा मुंज ईद सूरी[7] है कि मैं धन वस्ल[8] पाया हूँ।
वफ़ा[9] के मन्तराँ सेती सो धन का मन रिझाया हूँ ।।२५३९।।
कह्वो चँद-सूर कूँ जा जो यकायक आज ना निकलें।
कि धन-मुख-नूरते अपनी मजालिस[10] में दिपाया हूँ ।।२५४०।।
हजाराँ मिन्नताँ करता तो टुक हँस बोलती नैं थी।
मो आ उतरी है बाताँ में कि मैं मद भी पिलाया हूँ ।।
शराब होर इश्कबाज़ी[11] बाज[12] मुँजते ना रह्या जाये।
कि यो बो काम कर ना कर मैं ले सौगंद खाया हूँ ।।
सकी[13] हरगिज़ नको[14] कह हो कह्या मैं बात तुजकूँ जो।
कि दो तन फट परैंगी वो उसे में आजमाया[15] हूँ ।।
समनदिल[16] म्याने गव्वास[17] होकर गोते मार बरसाँथीं[18] ।
वचन के मोति (निरछल) धुंड साक तुजताँई ल्याया हूँ ।।
सो धन जा ऐश कूँ पूछै कि तूँ आया है किस खातिर।
कह्या हँस ऐश[19] अज़ल[20] ते मैं कुतुब शह खातिर आया हूँ† ।।२५४५।।

---

१. दरियामें, २. कटिमें, ३. पहुँचा, ४. सदा, ५. सखी, ६. पैगम्बरकी बलिहारी।
*वही, भाग १, पृष्ठ ३०३।
७. वीरता-महोत्सव, ८. संभोग, ९. ईमान, १०. जल्से, ११. प्रेम-लीला, १२. विना, १३. सखी, १४. नहीं, १५. परीक्षा किये, १६. समुद्र, १७. गोताखोर, १८. बरसातमें, १९. आनन्द, २०. आदिकाल।
† वही, भाग १, पृष्ठ ३०५।

(३)

रैन सब शह सौं मिलकर जागी सो छब नीका है प्यारी का।
नयन माते अलक बिखरे असर घुलता खुमारी का।।
दिया झूला पेरेम वारा डोले फुलडालि हो नारा।
छुटे गल मोतियां हारा..........।।
चले लटपट लटकवाली सो हो शह मद सौं मतवाली।
अँचल सिर छूट गुल लाली झुले इस मतवारी का।।
चँचल का मुख छबीला है अधर अमृत रसीला है।
अजित झलकार टीला है कि चंदा रात सारी का।।
दसन के दाग[1] गालाँपर भँवर जो फुल गुलालाँ पर।
दिसै फुल् झलक बालाँ पर सो जुगना[2] रात अंधारीका।।२५५०।।
सुलक्खन छँदभरी चंचल खिसाये सीसते अंचल।
मती होय मस्त जों मंगल सो मद पी पिउ की प्यारी का।।
नबी सदके **कुतुब** राजे तबल आनन्द नित गाजे।
सदा फुल गेंद कँठ साजे सो जोवन धन हमारी का* ।।२५५२।।

(२१) प्रेम-रीति—

नयन बुतखाना[3] पुत्ल्याँ कूँ अछूता[4] करता हूँ सेवा।
सिंदुर टीला पेशानी[5] राखे तिल-तिल[6] रीत अदे नेवा[7] ।।२५१२।।
मुसलमाँ रीत काफ़िर रीत क्या रीत ऐ न जानूँ मैं।
कि जग के लोग रीताँ छोड पकडे रीत तुज जीवा।।
धरे हैं कान में मुदरे चडाई है भभूती तन।
कि पुत्ल्यां म्याने[8] दिस्ती है सो सचली पुत्लि जिव् दीवा।।
उमँग नद्दी की कश्ती[9] में सख्याँ चढ़ खेल्त्याँ हैं खुश।
अँचल अर्धंग सुट पकडे उनाका हत सेती रैवा[10] ।।
पिरित मेहतर[11] सों आई है सखी अब दूद जोवन पर।
नयन आ मिल खुला खेती सुराही न सुरा पीवा।।
मेरा अमृत अँचल ओझल लजत मुंजकूँ दिखाये है।
पसारचा हात में आसाँ सों ओ अस मुंजकुं तक रैवा।।

---

१. चिह्न, २. जुगनू।

*वही, भाग १, पृष्ठ ३०७।

३. नयन रूपी प्रतिमा-गृह (मन्दिर), ४. केवल, ५. टीका ललाट पर, ६. पल-पल, ७. नई, ८. पुतलियोंमें, ९. नाव, १०. रहेगा, ११. महत्तर।

नबी सदके पिरित बागाँ में इश्रत करता हूँ करसूँ[1]।
कुतुब शह कूँ खिलात्याँ हैं सहेल्याँ रँग-भरा मेवा* ।।२५१८।।

(२२) प्रेम और बुद्धि—

पेरेम आपना चत्र[2] जगपर सो छाया। जहाँ अपनापनी छाया अपस वाँ दिखाया ।।२५८८।।
पेरेम फूलवन में सुगँद वास महका। पेरेम आपने हात अरगज गलाया[3] ।।
सभी आलिमां[4] अब पडन[5] जानते हैं। नहीं कोई पाया ऐ पीरित का माया ।।२५९०।।
पेरेम के सौ पैमाने[6] सों मद पिलाकर। पिया ताक अब[7] सों सिज्दा[8] कराया ।।
अकल के तखत पर पेरेम तख्त बैठा। इशक अक्ल के हात अपसे नवाया ।।
न आशिककूँ कटता है बिन इश्क एक तिल। वो आकिल[9] सदा जिन पिरित सों गँवाया ।।
पियारे से गमता[10] नबी सदके कुतुबा।
पेरेम उसकूँ साजे जिने यों गमाया† ।।

(२३) प्रेम-स्मृति—

जग जोत इश्क का[11] ओ लाई अँचल क़िनारा।
लब्या[12] जिया पँखी ज्यों उस जोतकूँ हमारा ।।१०३।।
जब तूँ बुलाई हमना[13] पीरित में आपना कर।
जोसी[14] न कर तूँ फिर कर हम खातिर[15] इस्तख़ारा[16] ।।
तुज मुक्ख की झलक[17] होर पेशानि की तजल्ली।
छिपता है सूर निसकूँ ज्यों छिपता देस[18] तारा ।।
ऐ दीदवाँ[19] तअद्दी[20] ना कर मुजे नहीं डर।
नेह शह्र[21] में हूँ काजी कोतवाल हेचकारा[22] ।।
अब आँखियाँ कुँ कह तूँ टुक महेंमत नज़र[23] कर।
ताले[24] लिख्यासो अँपड्या[25] उसकूँ नहीं है चारा ।।
जह्दाद[26] होर आलम[27] हो जौहरी व सर्राफ।
ना बूझें तूँ बुझ्या सो कर बात आशकारा[28] ।।

---

१. करूँगा।

* वही, भाग १, पृष्ठ ३००।

२. छत्र, ३. लगाया, ४. विद्वान्, ५. पढ़ता, ६. प्याला, ७. भ्रू-रूपी, ८. प्रणाम, दंडवत, ९. बुद्धिमान्, १०. पसंद होता।

† वही, भाग १, पृष्ठ ३१७।

११. प्रेमका, १२. फँसा, खिंचा, १३. हमको, १४. ज्योतिषी, १५. हमारे लिये, १६. शुभ-कामना, शुभ-प्रार्थना, १७. चमक, १८. ओस, दिवस, १९. रक्षक, २०. कड़ी, २१. प्रेमनगर, २२. बेकार, २३. दृष्टि, २४. भाग्य, २५. पहुँचना, २६. संयमी, २७. पंडित, २८. प्रकट।

नेहबुंद अंझुवाँ[1] ते जाता फतर[2] तडक गल ।
हैरान है मआनी ओ दिल में नैं है ठारा[3]* ॥१०९॥

(२४) **प्रेम छंद-बंद—**

पिरित जलमें जिने रै[4] होर न जाने । ओ पिरित बातकूँ हरगिज न माने ॥२५५७॥
जिने जम[5] नेह ध्यानाँ में रह्या है । उसे मालूम है सब नेह के माने[6] ॥
हक अप पिरित के तैं दो जग न पाया । बडे भाग उसके जिन ये पंथ पिछाने ॥
इशक की जिन न बूजे उन निकट भाव । पिरित में उन करे भौत[7] आनेभाने[8] ॥
हमारा भेद नैं बुझते न को आव । हमारे होर पियाके दरमियाने ॥
करे सेवा पेरेम का रात-दिन वो । बिरह की रैन जिन कोई बहाने ॥
नबी सदके पियारी कुत्ब आखै ।
पेरेम के छंदबंद सब तूँ पिछाने† ॥२५६३॥

(२५) **मोहिनी तावीज—**

(१)

पिया का रूप निर्मल है सदा मेरे नयन तावीज़[9] । पियारेका पिरित प्यारी के न्हनपनतेमन तावीज[10] ॥
सजन के ओंठ अमृत का लज़त[11] यक देस[12] चाखेते । सो बोल ज़तकूँ अजँउलग किया है मुंज रसन० ॥
सकी मुंज लब पे[13] दिसती सो निशानी बूजती है क्या । दिसे मेरे अधरकूँ प्यारसों पिउ की रसन० ॥
अजब तासीर[14] है तुज नाँवमें प्यार जो सुनने में । सक्याँ भुल जाके लिखलिख लेके करत्याँ हैं अपन० ॥
मेरेबाजू कूँ[15] जब लालन पकडते पाँचों उँगल्याँमों । सो उँगल्याँ है सक्याँ मुंज बाजूके कुंदन रतन० ।
पिया का नेह लग्या बरज़ोर मुंजखू बुंद[16] गोयाँकूँ । कि कुच परिचीत ना होसे[17] हमन पर अप तुमन० ॥
पिया जिसदिन नहीं लगते गले मुंजसों तो दुख है मुंज । गले लगना पियाका है सो मेरा दुखभंजन० ॥
न जाने किसकूँ अपनेह फँदमें सँपडाने मँगते हैं । सुनी हूँ कि लिखे हैं अपस हातों सजन तावीज ॥
मंगी तावीज[18] पिउकन[19] वस्ल[20] का नेहते दिवानी हो । हुये मेरे दिवाने जब दिये मुंजकूँ ललन० ।
सजन यक दिन विसर कर मुंज सलामाँ कैके लिख भेजे ।
सो उस कागजकूँ जिउ नमने[21] जतन करके हुअन० ॥
वसा सौ बरस लग कुत्बे-ज़माँ इस जगमें जीनेतैं । अज़ल दिनते दिये लिखकर दयाते पंजतन[22]‡ ॥७६४।

---

१. आँसू, २. पत्थर (दिल्ली), ३. ठौर।

* वही, भाग २, पृष्ठ १२।

४. रहे, ५. सदा, ६. अर्थ, ७. बहुत, ८. बहाने।

† वही, भाग १, पृष्ठ ३१२।

९. अंतर, १०. मंतरका, तावीज, ११. स्वाद, १२. दिवस, १३. ओठपर, १४. प्रभाव, १५. बाँह को, १६. मेरे पसीनेकी बूंद, १७. होगा (पंजाबी), १८. तेरी तावीज, १९. प्रियके पास, २०. मिलन, २१. जीव समान, २२. पाँच वीर।

‡ वही, भाग २, पृष्ठ ९४।

(२)

मं उस बुतेहिन्दी[1] के राख्या हूँ दिलमें लिख वचन तावीज़ ।
वो मुँजते दूर ना होये त्यों किया बुज[2] पर बँदन[3] तावीज ।।
दुआ होर मंतरां सेती वो चंचल मुँजकूँ सँपडे[4] कर ।
बँध्या हुँ उसके दो जुल्फां सेती मैं जिउ के मनें[5] तावीज ।।
पिरित वरज़ोर धन वरजोर होर वरजोर[6] नाज़[7] उसका ।
बहुत परिचीतकार्[8] होना मुँजे नसरत करन[9]० ।।
इश्क के मारमें जानेकुँ मुँज दिलकूँ नहीं कुच डर ।
किया हूँ उसकी पीरितकुँ मैं आपस का गुमन० ।।
पिरित के कौल[10] देती है, वले[11] मुँजकूँ पत्यारा नैं ।
पत्यारा[12] तो होवे मुँजकूँजो देवे मुँज चुमन० ।।
व पर्दायेत[13] कटरायेत होर चालाक अचपल है ।
नज़र में किस[14] न आवै त्यो रखे हैं दो जोवन तावीज़ ।।
मुहम्मद होर अली का नांव लेकर **कुत्ब**शह जीत्या ।
सो चंचल के दो जोवन गढ तिसउपर के भी तने तावीज़* ।।

(२६) प्रेमालाप—

(१)

सो धुन के लब[15] ते मँग्या बोसा[16] मैं तो पुछी नाम ।
जो कह्या नाम उसे, बोली नाम दे दशनाम[17] ।।१३१५।।
हँसी में सुटके[18] अपस-मस्ती के बहाने सों ।
दिखा के छंद चली हतमें ले सुराही जाम ।।
शराब पीके सूरज कर दिखाई अप तूँ समज ।
अवल तू नैन सितारयां सों मुख था बदर तमाम[19] ।।
जो फूल पेन[20] खडी धन सो जौ निहाल[21] खिल्या ।
सरग में सर्व न तुजसा ऐ मर्व-गुलअन्दाम[22] ।।

---

१. हिन्दी-सुन्दरी, २. भुज, ३. बंधन, ४. प्राप्त, ५. दिलके भीतर, ६. बली, ७. नखड़ा, हाव-भाव, ८. परिचय, ९. विजय करना, १०. करार, ११. लेकिन, १२. पतियाना, विश्वास, १३. अवगुंठन, १४. कैसे ही ।

* वही, पृष्ठ ९७ ।

१५. ओठ, १६. चुंबन, १७. गाली, १८. छोड़कर, १९. संपूर्ण, २०. पहिन, २१. पौधा, २२. सरो और फूल-जैसे शरीरवाली ।

सुमन[1] पै दाल सुंबुल[2] या देसा कि तिल राखे।
जीवाँ के पंखी[3] पकड़ने अलक के मुखपर दाम[4]।।
बैन पै लबद[5] कर ओ लब खंदाँ[6] अज़ल[7] ते कहे।
अबद[8] लगों मुंजे तुजसों है तुजकूँ मुजसों काम।।
नबी के सदके **कुतुब** शह लग्या है धनके गले।
जो लाम अलिफ़ नमन[9] मिल रहे अलिफ़ होर लाम* ।।१३२१।।

(२)

पिरित के दावाँ[10] खेलने तुजसों कहीं ना हारसूँ[11]।
तनमें रखूं क्या काम जिव जो इश्कपर ना वारसूँ[12] ।।१४७५।।
जों मुंज बिसरते हैं तुमीं तुम ना बिसर रहते हमें।
हमना[13] तुमन बिन ना गमें[14] जाता बहुत दुस्वार[15] सूँ।।
जों जीव सेती मिल है तन वो जिउ मँगे तुजसों मिलन।
दो नैन पिया तुज देखन, बिछडा ना अपदीदार[16] सूँ।।
क्यों रह सकूँ तुजसो एकट[17] जाता मुझे हर तिल[18] विकट।
लाये हैं चोराये अजुट[19] तुम आपने पर वारसूँ[20]।।
दाटे[21] मदन सादी मुंजे पानी न अनभावे[22] मुंजे।
यक तिल बरस जावे मुजे क्या पूछते तकरार[23] सूँ।।
जवते जगत में आइया जो जिउ मँग्या सो पाइया।
डोरा ज़िकरका[24] लाइया में हैदरेकर्रार[25] सों ।।१४८०।।
जब लग है तन म्याने[26] जिया तब लग रहूँ तुजसो पिया।
कुतुबा जिया दिल बाँदया हज़रत नबी दरबार सों† ।।१४८१।।

(३)[1]

छोडो बहाने[27] कुतबा तुमन परते वारी[28]। करो मुंज मया[29] मैं हूँ चेरी तुमारी।।२००३।।
जो कुछ हुस्न तुज है, सो किनकूँ नहीं है। तु पिउकी नजरमें है तूँ सबते प्यारी।।

---

१. चमेली, २. जटामासी का दाना, ३. पक्षी, ४. जाल, ५. चिपक, ६. हँसते ओठवाली, ७. आदि (सृष्टि)-काल, ८. अन्त (प्रलय)-काल, ९. भाँति, नाईं।

*** वही, भाग २, पृष्ठ १७१।**

१०. दाव-पेच, ११. हारूँगा, १२. वारूँगा, १३. हमको, १४. पटरी जमे, १५. कठिन, १६. निज दर्शन, १७. अलग-अलग, १८. पल, १९. बाट, २०. वारूँगी, २१. दाह, २२. भावे, २३. बार-बार, २४. स्मरण-तंतु, निरंतर स्मरण, २५. महावीर अली, २६. तन के भीतर।

† वही, भाग २, पृष्ठ १९३।

२७. बहाना, २८. नौछावर, २९. प्रेम।

पिया होर पियारयां के रँगसंग देखत । दुतिन[1] रश्क सों आप सुद-बुद बिसारी ।।
सहेली इशारत[2] करे नैन छँद सों । मुंज यों कि साईं कुँ तिल-तिल[3] रिझा री ।।
पियारी के ताले[4] क़वी[5] हूँ पिरितमें । कि साजन उपर आप तनमन कुँ वारी ।।
न कर भाना[6] पिउ मद देव अप लाल अधंरतो, कि उस मद का मुंजकूँ लगी है खुमारी ।।

नबी सदके कुतुबा तुं ए रुतबा[7] पाया ।
कि तुज दौर[8] में दीन[9] कूँ है इस्तवारी* ।।२००९।।

८. स्फुट कविताएँ

(१) निशा आगमन—

निसके समंद[10] स्याम में सुन्ने की ज़ोरक़[11] डुब्बियाँ । (वो) डुबने में तिरने लगे बुडबुडे कै लख हजार ।
ग़र्ब[12] के चह[13] में पड्या युसुफ़ अंबरका सूर । जग सभें याकूब कै नैननमने[14] अंदकार[15] ।।
आग इब्राहीम का बुजके हुआ फूलवन । रैन सो तिस आग का है धुंये का धुंधकार ।।
चंद हो सिकंदर चल्या इन के ज़ुल्मात में । शमा दीपक मशाला रोशन हुये अपार ।।
चर्ख के खुमखाने[16] में सूर पिया जानो मद । मस्त हो जाकर पड्या ग़र्ब के चश्मे मँझार ।।
घन के लगन शमा चाँद तारे पतँगके नमन[17] । उडते हैं उस आस-पास इश्कते बेअख्तियार[18] ।।
घन के सौ हौज़खाने[19] में रैन भरा नीर जौं । चाँद फुयारा[20] नमन तारे बुंदां नीर सार[21] ।।
घन के मद्रसे कने[22] चांद मुदर्रिसकने[23] । बहस[24] करन तारे आये तालिबे-इल्माँ के सार[25]† ।।

(२) चित्रकाव्य—

नहीं कैं	तुज ऐसी	महेली	छबीली
तुज ऐसी	न अछसे	जगत में	रंगीली
सहेली	जगत में	न देख्या	गहेली
छबीली	रंगीली	गहेली	नवेली

इस बंध से निम्न प्रकार के और कितने ही पद्य बनते हैं—

---

१. सौत, २. संकेत, ३. पल-पल, क्षण-क्षण, ४. भाग्य, ५. वृद्ध, ६. बहाना, ७. दर्जा, ८. युग, जमाना, ९. धैर्य।

* वही, भाग २, पृष्ठ २६३।

१०. समुद्र, ११. नाव, १२. सूर्यास्त, १३. कुआँ, १४. नेत्रोंकी भाँति, १५. अंधकार, १६. मदिरा-गृह, मधुशाला, १७. भाँति, नाईं, १८. बेबस, १९. कुंडगृह, २०. फौवारा, २१. जल-समान, २२. पाठशालाओं में, २३. अध्यापकों के पास, २४. वाद-विवाद, २५. विद्यार्थियों की भाँति।

† वही, भाग ३, पृष्ठ ३८।

नहीं कैं[1] न अछसे न देख्या नवेली । छबीली जगत में जगत में छबीली ।।
नवेली न देख्या न अछसे[2] नहीं कैं । नहीं कै न अछसे न देख्या गहेली[3] ।।
नहीं कैं न अछसे सहेली रँगीली । तुज ऐसी जगत में छबीली रंगीली ।।
छबीली जगत में गहेली गहेली । सहेली रंगीली न देख्या नवेली ।।
सहेली न अछसे न देख्या रंगीली । तुज ऐसी जगत में जगत में गहेली* ।।

(३) **चाँदनी—**

चले चाँदनी में जब लटक पिउ हमारा । उनन अक्स[4] दीपै चँदरते अपारा ।।२४९८।।
बसे जिस हिया में पिरित हम सजन की । बिन् उसकी पिरित कुच नहीं उस पियारा ।।
जिनें साँइ के इश्क का मद पिया है । न करसे[5] उसे होर मस्ती उतारा ।।
जे कोइ मस्त है साईं के हुस्न छविते । उसे मानें नेह पंत में जग्ग सारा ।।
पिया नूर बसता है मुंज दिल झमक[6] में । कि जिस नूरते है सुरज आशकारा[7] ।।
सकी पीड चिन्ता लगा है हमनकूँ । सजन बिन न करसे ले होर कोइ निवारा ।।

नबी सदके **कुतुबा** का मन तुजसों लाग्या ।
कि अप-जीव[8] में तेरा कीता[9] है ठारा† ।।२५०४।।

(४) **अन्योक्ति—**

बाग में आके भँवर फूल सों कह्या यो वचन ।
नाज़[10] कम कर, कि खिले फूल बहुत तेरे नमन[11] ।।१३६६।।
फूल हँसकर कह्या 'सच ना रुठसों[12] वले[13] । आशिकाँ ना कहै माशूक़[14] कूँ यो सख्त वचन ।।
गर हवस[15] है तुजे उस लाल प्याले ते शराब । पलक की अनियाँ सेती बींद[16] तूँ मानिक-रतन ।।
हश्र[17] लग वास मुहब्बत की न आसे[18] उसकूँ । जिन पेशानीसेती[19] झाडचा नहीं मैखाने अंगन[20] ।।
बहिश्तेके[21] बागमें कल बावके अतिलुत्फ[22] सेती ।
लटे सुंबुल[23] का सो बिखरया है सेहर[24] का सो पवन ।।

---

१. कहीं, २. है, ३. गर्वगहिल्ली ।

*** वही, भाग ३, पृष्ठ ५३ ।**

४. रूप, चित्र, ५. करेगा (पंजाबी), ६. चमक, ७. प्रकट, ८. अपने दिल में, ९. किया (पंजाबी) ।

† वही, भाग १, पृष्ठ २९६ ।

१०. हाव-भाव, ११. तेरी तरह, १२. रूठूंगा (पंजाबी), १३. लेकिन, १४. प्रियतमा, १५. कामना, लोभ, १६. बिंधे, १७. प्रलय दिन, १८. आयेगी (पंजाबी), १९. जिसने ललाट से, २०. मधुशाला का आँगन, २१. स्वर्ग के, २२. अत्यन्त स्वाद, २३. सुंबुल जैसी अलकें, २४. प्रातः ।

हाँ कह्या जमके तखतकूँ कि तेरा जाम[1] कहाँ। ज्वाब देता कि तुं चुप हो गये ले ऐसे करन[2]।।
इश्क की बात नहीं ओ जो जबां में उसकी। साकियाँ[3] आके प्याला देके बस कर यों वयन।।
कुतुब के सब्र[4] सो अँझुवाँ[5] दिये दरियाकुँ उमक[6]।।
क्या करूँ इश्क नहीं देता है यो बात छुपने* ।।

(५) बुड्ढी की कहानी—

परियां के बाग म्याने[7] देख्या मंध्रिर[8] गुलाली। वाँ यक परी के मुखते सब वन लिया था लाली।
ओ नार मार चंचल गुल लाल गाल फुलदल। खिडकी मनेते[9] अँचल सिरपर ते सिरते ढाली[10]।।
तारे चंद उपरो कर राखे सो माँग सिर पर। जुगनी जडी मुनव्वर[11] ओढे झना सो आली।।
पडिया नज़र यकायक हिल्ज्या सो जीव[12] बेशक[13]। चंगी उठी ज्यों चकमक हुस्नो हमन हलाली[14]।।
भुख उस लग्या हिलावा वो तन सो देख सोहवा। उस घरमें लाय लावां गत्तां सो जा उछाली।।
सुन अक़्ल उस बुडी[15] की सास आई उस गुडी[16] की। सो जिव मुखी खडीकी खिडकी पै झांप घाली।।
भौंवाकूँ गाँठ बा[17] कर मुंजकूँ निपट दबाकर। गुस्सेते उस जुदाकर दीनी[18] हज़ार गाली।।
मुखपर बुढीकी झुडरी[19] कूशां के टल[20] की झुडरी[21]। मू चंदपे करना तिरडी ओ पापिनी है माली।।
कुत्बे जमां[22] **मआनी** बसकर बुढ़ी कहानी।
शैतान की है नानी आपसकूँ आप जाली[23]† ।।२५८७।।

§१०. अब्दुल (१६०३ ई०)

अब्दुल (अब्दुलगनी) तुलसीदास और मुहम्मद कुल्लीका समकालीन बीजापुर महाराष्ट्र का कवि था, जिसने १६०३ ई० (१०१२ हि०) में अपने संरक्षक इब्राहीम अदिल (१५८०–१६२६ ई०) के सम्बन्ध में अपना काव्य इब्राहीमनामा (७५० बैत) अपने शाह–उस्ताद (राजगुरु) की आज्ञा पर हिंदी भाषा में लिखा। इसमें वर्णित विषय हैं—

१. बादशाहकी दानशीलता
२. बीजापुर नगर
३. दुर्ग और प्रासाद
४. नृत्य, गीत
५. बादशाह का दरबार
६. नौरस महल
७. शाही सभा
८. शिकार और सेना
९. बादशाह के साथी
१०. बादशाहके घोड़े
११. बादशाह के शस्त्रधारी
१२. शाही बागकी मजलिस
१३. वंसतोत्सव
१४. वर्षगाँठका भोज
१५. ग्रंथ-समाप्ति की तिथि।

---

१. प्याला, २. युग, ३. मधुबाला, ४. धैर्य, ५. आँसू, ६. लहर।

*वही, भाग २, पृष्ठ १७८।

७. बाग में, ८. मन्दिर, ९. खिड़की में, १०. डाली, ११. प्रकाशमान, १२. मन, १३. निस्सन्देह, १४. रंज, १५. बुड्ढी, १६. गढ़ी, १७. पा (पंजाबी), डाल, १८. दिया (पंजाबी), १९. झुर्री, २०. ढाल, २१. पापिनी, २२. युग का ध्रुवतारा, २३. जलाया।

† वही, भाग २, पृष्ठ २१५।

"इब्राहीमनामा" का एक महत्त्व अच्छा काव्य होना है, साथ ही इसका ऐतिहासिक महत्व भी बहुत है। अकबर-समकालीन इब्राहीम आदिलशाह (द्वितीय) दक्षिण का एक शक्तिशाली बादशाह था। अपने काव्य लिखने का कारण बतलाता है।

उन्हीं शाह-उस्ताद कर सो नज़र[१]। बुलाया जो अब्दुल कुँ सिर हाथ धर।।
नवी बात मज्मून[२] कर इक किताब। न कोई पिनक[३] गूँध्या है तिसका जवाब।।
न बाकी रहे कुछ तो आलम[४] निशान[५]। अगर कुछ रहे तो वचन शेर जान।
सो यों वचन सुन शाह उस्ताद का। पूछ्या जगत-गुरु, 'शेर कह किस ज़बान[६]।।
जबाँ **हिंदवी** मुझसों होर[७] **देहलवी**। न जानूँ अरब होर अजम[८] मस्नवी[९]।।
कह्या शाह-उस्ताद अब्दुल सों यों। तू हर एक जबाँकार शेर बात यों।।
फने शेर[१०] सब मुल्क में एक धात[११]। इशक[१२] परगटे छिपें रूप बात।।

काव्य के आरम्भ और अन्तकी कुछ पंक्तियाँ—

आरम्भ—

करूँ इबतेदा[१३] शह बराहीम नाम। कि जिस सिफ्त[१४] आल्या[१५] फिर्या है तमाम[१६]।।
सुरग मिर्त पाताल हर एक धरा। रखा रूप सरवर हो आलमभरा।।
इलाही[१७] ज़बाँ गंज तूँ बोल मुझ। अमोलक[१८] वहाँ कर जे बोल मुझ।।
कहूँ विस्म[१९] अव्वल तो अल्लाह लाय। गले मुख खुले जीव[२०] पकड़े सो लाय*।।

§११. अमीन (१६२० ई०)

दक्खिन में अमीन उपनाम के कई हिन्दी कवि हुये हैं, जिनमें एक बीजापुरी "बहराम ...हुस्नबानूं" का रचयिता इब्राहीम आदिल द्वितीय के समय (१५८१-१६२६ ई०) में हुआ, और मुहम्मद कुल्ली, वजही, गौवासी का समकालीन था। दूसरा अमीन गोलकुंडा के अब्दुल्ला कुतुब (१६२४-१७२९ ई०) का समकालीन तथा पहिले के बाद में हुआ, जिसने "अबूशहमा" की कथा पद्यबद्ध की। यहाँ पहिले अमीन से मतलब है। "बहराम व हुस्नबानूँ" को वह समाप्त नहीं कर पाया, जिसे बीजापुर के दूसरे कवि दौलत ने १६३८ ई० (१०४८ हि०) में पूरा किया। अमीन फारसी का भी कवि था।

(१) अमीन दरबारी कवि नहीं बल्कि शाह आलम नामक किसी पीर का अनुयायी था। मंगलाचरण में उसने लिखा है—

---

१. कृपा, २. विषय, ३. चिन्तन, ४. संसार, ५. चिह्न, ६. भाषा, ७. और, ८. पारसी, ९. कथा, १०. काव्य-कला, ११. एकधा, एक भाँति, १२. प्रेम, १३. आरंभ, १४. जिसका गुण, १५. दुनिया, १६. सारी, १७. भगवान्, १८. मूल्य, १९. नाम से, २०. चिह्न।

* ब० उ० म० पू० २६७।

इलाही जगत का करनहार तूं। गरीबां नबीयां[1] का उद्धार तूं।।

(२) बहराम और हुस्नबानू की प्रेम कथा आरम्भ है —

यकायक मेरे दिल पै आया खियाल। किसा यह कहूँ मैं मुकीमीं मिसाल[2]।।
जबाँ पर वचन खूब आता चला। यो मज़मून[3] खुश्तर निभाता चला।।
किसा में किया है जो गुल नामका। सो बानूं[4] हसन शाह बहराम का।।
जो कोई पढ़े सो करे मुंजकूं याद। तअज्जुब से दिलकूं करे अपने शाद।।
अमीं दास्ताने किसा[5] अब करो। खुदा की सना[6] बीच दायम[7] रहो।।
किसा फारसी सुनके पाई खबर। खुदा की जो कुदरत[8] में एक था शहर।।
कि फारस उसी शहर का नाम था। वहाँ बादशाह शाहा बहराम था।।
इसम[9] शाह बहराम उसका असल[10]। उसे गौर[11] के सैद[12] का था अमल[13]।।
लकब[14] तब हुआ शाह बहराम गौर। न था उसके सानी[15] कोई जग में और* ।।

(३) प्रातःकाल का वर्णन

हुआ सुबह[16] का वक्त यकायक तमाम। लग्यां बोलने तूतियाँ खुश-कलाम[17]।।
सुबह पन अपस मुदसों खींचा नकाब[18]। हो मशरिक[19] से निकला तवा आफताब[20]† ।।

(४) प्रथम मिलन

राजकुमारी हुस्नबानू और उसकी तीन सहेलियाँ तालाब में नहा रही थीं। उनमें बहराम की ही बात चल रही थी। बहरामने उनके कपड़े छिपा दिये। बाहर आकर देखती हैं तो कपड़े नहीं हैं। इसी समय की घबड़ाहट को कविने चित्रित किया—

सहेल्याँ जो थ्याँ तीन उसके सँगात। उनों ने निकाले यह उस वक्त बात।।
सुना शहर फ़ारस का है बादशाह। है खूबी मनें[21] खूब ज्यों मेहोमाह[22]।।
कते[23] हैं बहुत खबसूरत है वो। फिरँग चीन की खबमूरत[24] है ओ।।

---

१. पैगम्बर, २. स्थायी रूपका, ३. निबंध, ४. सुन्दरी, ५. कथा-विस्तार, ६. स्तुति, ७. सदा, ८. शक्ति, ९. नाम, १०. वास्तविक, ११. गोरखर, जानवर, १२. शिकार, १३. काम, शौक, १४. उपाधि, १५. जैसा।

* युं. द. पृष्ठ २१९।

१६. प्रातः, १७. सुवचन, १८. पर्दा, घूँघट, १९. पूरब, २० सूर्य।

† वही, पृष्ठ २२०।

२१. सुन्दरतामें, २२. सूर्य-चन्द्र, २३. कहते, २४. सुन्दर मूर्त्ति।

अगर्चे वही आदमीज़ाद है । चँदा उसके आगे सो बी मात है ।।
ले आया उसे देव आशिक़ होर । रखा है लिया कर अपस ठार पर ।।
कबूतर हो उसकू चलो देख आये । पिछूँ अपने घर कूँ अपस सब सिधायँ ।।
उठी बोल बानू हुसन तब शिताब[१] । "मैं देखा है इम् शब[२] परेशान ख्वाब[३] ।।
नहीं कुछ नफ़ा आज इस बात का । मेरे दिल में धोखा है कुछ घात का ।।
कि वल्लाह अअलम्[४] लगे कुछ बला । अपन सब उस ऊपर होयँ मुब्तला[५] ।।
मेरे दिल कूँ दहशत[६] बड़ी आज है । निगहबान[७] अपना खुदा आज है ।।
देखें (गे) किसी ओर दिन आयकर । अछी नेक सायत अपन पायकर"।।
अपस में वह कर आप अपना करार । नहाकर के पानी सों आयीं बहार[८] ।।
न देखा अपस रख्त[९] कूँ ठार पर । उठ्याँ तुरत सीना परा वार[१०] कर ।।
वह रोने लग्याँ व्हाँ निपट ज़ारज़ार[११] । सबर[१२] कर गरेवाँ के तें फाड़फाड़ ।।
लग्याँ दिल में करने अपस के विचार । हुयाँ गम सों रो रो भौत बेकरार ।।
खबर लेवां है कौन ऐसा बशर । जिने दस जग हआ किया है गुज़र।।
लग्याँ ढूढने बाग भीतर तमाम । हरेक ठार गुजर्‌याँ व हर यक मुकाम ।।
वहाँ घूँढ्याँ भौत बेज़ार हो । अपस में वह सब आप लाचार हो ।।
खड्याँ हो उसी ठार की ताअवाज़ । कि "ऐ दुज्दे छंदी व हीलादराज़[१३] ।।
तुं है आदमी या फरिश्ता मगर । कि है जिन परी देव बेदादगर ।।
तु होये अपस की कहे जा मुराद । कसम है खुदा कि करे उसकूँ शाद[१४] ।।
वह सुन शाह वाँ सेती आया बहार । देखत शहकी खूबी गइयाँ सुधविचार ।।
तुरत सेती मिलकर यों कीनी अरज । "कहो तुमकूँ हम साथ क्या है गरज़ ।।
जो कपड़े हमारे रखे हैं छुपा । जो दिल में होवे सो तुम देओ बता"।।
उनों साथ तब शाह उठा बोलकर । छुपे राज़ दिल के सभी खोलकर ।।
"तुमारे जो साथ है बानू हुसन । उने दिल में मेरे किया है वतन ।।
मेरा जीव उसपर हुआ है फ़िदा । खुदा उसमें मुजकूँ न राखे जुदा" ।।
यह सुनकर परि्याँ ने दिया तब जवाब । उठा शर्म का मुखतें दूजा नकाब ।।
"तुँ है बादशाह जग में इन्सान का । तुझे है मरातब[१५] सुलेमान का ।।
तूँ हूं शहखिरदमंद[१६] रोशन ज़मीर[१७] । तूँ है जग के इनसान में बेनज़ीर ।।
हमारी ज़बाँ से कहें क्या तुझे । यो है सब हक़ीक़त हवेदा तुझे ।।
अवस तुमने हमसों किया है खियाल । यही बात होनी निपट है मुहाल ।।

---

१. जल्दी, २. आज रात, ३. स्वप्न, ४. अल्ला जानता, ५. लग्न, फँसें, ६. भय, ७. रक्षक, ८. बारह, ९. वस्त्र, १०. भार, ११. फूट-फूटकर, १२. संतोष, १३. बहानेबाज, १४. खुश, १५. पद, मर्यादा, १६. अधिक बुद्धिमान्, १७. विवेक ।

कहाँ हम परीज़ाद[1] कहाँ आदमी । कहाँ आसमाँ और कहाँ है ज़मीं ।।
देओ कपड़े होर इने देओ रज़ा[2] । खुदा इसका देवेगा तुमकूँ जज़ा[3]" ।।
कहा शह ने "हरगिज़ न होये यह बात । मेरा जी लग्या है इसी के सँगात ।।
मेरे तें इसी साथ अब काम है । मेरे दिल में अब यह दिलाराम[4] है ।।
अगर तुम करो फंद हज़ाराँ हज़ार । न देऊँगा कपड़े तुम्हें एकबार" ।।
देखा तब परियों ने यह अटका है अब । इसे देख शह[5] दिल में हटका है अब ।।
करें क्या अपन अब इसका इलाज । कठिन[6] सरपै मुश्किल पडी आके आज ।।
कहा उसकुँ अपनों में समझायकर । बहुत हिकमताँ सेती[7] बहलायकर ।।
वलेकिन न समझा यही शह-जवाँ । चला छोड़ उसकूँ अपन होय रवाँ ।।
"यह सबपर कछू तुमतो आशिक नहीं । सहेल्याँ हैं हम तेरे लायक नहीं ।।
हमारे देओ कपडे हमन हात में । तुजे हैं नफा देख इस बात में" ।।
कहा शह ने "नूर अला नूर[8] है । यही बात मुजकूँ सो मंजूर[9] है" ।।
दिये कपडे उनके सो होकर खुशहाल[10] । रखा रख्त[11] बानूका शह ने सँभाल ।।
ले कपडे सहेल्याँ गयाँ घर तरफ । हुआ होश उसका सभी बरतरफ़[12] ।।
खिजल[13] हो सरोपा[14] डुबी आब[15] में । पडी गमसों हैरत के[16] गर्दाब[17] में ।।

§१२. गौवासी (१६२० ई०)

१. जीवनी

मुल्ला गौवासी दक्खिनी हिन्दीके तीन महाकवियोंमेंसे एक हैं। वह गोस्वामी तुलसीदास के जीवन-कालमें कविता करने लगा था। इसकी दो कृतियाँ मिली हैं, जिनमेंसे एक "सैफ़ुलमलूक-व-बदीउज्जमाल" को उसने गोस्वामी तुलसीदास के देहान्त के दो साल बाद (१६२५ ई० में) लिखा था। इसकी दूसरी कृति "तूतीनामा" है, जिसे उसने पहली कृतिसे चौदह साल बाद (१६३९ ई० में) समाप्त किया। वह गोलकुंडा का शायर था, जिसके पास हैदराबाद तब आबाद हो चुका था। मुहम्मद कुल्ली कुतुब शाहने हैदराबाद को अपनी प्रेमिका भागमतीके नामपर पहले भागनगर नाम दिया था, बादमें उसने प्रेमिकाका नाम 'हैदरमहल" रख कर नगर को भी "हैदराबाद" प्रसिद्ध करना चाहा था, लेकिन तब वह सफल नहीं हुआ। यद्यपि गौवासीकी रचनाएँ मुहम्मद कुल्ली कुतुब शाह (मृत्यु ११ जनवरी १६१२ ई०) के समय ही शुरू हो गई थीं, किन्तु अभी वह सम्मानित राजकवि नहीं हुआ था। मुहम्मद कुल्लीके उत्तराधिकारी मुहम्मद कुतुबके शासनके चौदह साल (१६१२-२६ ई०) में भी इस महान् कविकी कदर नहीं हुई। अगले उत्तराधिकारी सुल्तान अब्दुल्ला कुतुब शाह के शासन काल (१६२६-६२ ई०)

---

१. देव-कन्याएँ, २. स्वीकृति, ३. बदला, ४. प्यारी, ५. चाल, ६. बहुत, ७. उपाय से, ८. प्रकाशके ऊपर प्रकाश, ९. स्वीकृति, १०. प्रसन्न, ११. वस्त्र, १२. उचाट, १३. लज्जा, १४. सिरसे पैर तक, १५. पानी में, १६. आश्चर्य के, १७. जलके भँवर।

में ही गौवासीका सितारा ओज पर पहुँचा। "तूतीनामा" (१६३९ ई०) लिखने के समय वह राजकवि था।

(१) आश्रयदाता—

गौवासी से पहिले वजहीकी कीर्ति चारों ओर छाई हुई थी। वजही अपने इस तरुण समकालीन कवि से केवल ईर्ष्या ही नहीं करता था, बल्कि भय भी खाता था। उसने अपने ग्रन्थों में उस पर छींटे कसे हैं। सम्भव है, वजही की प्रतिद्वन्द्विता ने भी तरुण कवि को मुहम्मद कुल्ली कुतुब जैसे महान् कवि के सम्मान का पात्र न होने दिया हो, अथवा यह भी हो सकता है कि वह अभी कविता की पाठशाला का एक शिशु-छात्र मात्र था। कवि-सुल्तान का उत्तराधिकारी और दामाद उतना कविता-प्रेमी नहीं था, न अपने ससुर की तरह मुल्लों की खींची सीमा से बाहर जाकर उदारता दिखाना चाहता था। सम्भवतः इसी कट्टरपन के कारण उसने भी गौवासी की प्रथम कृति "सैफुल्मलूक" के प्रकाशित हो जाने पर भी कवि की कोई कदर नहीं की। कवि कुछ निराश सा हो चुका था, जब कि उसने तीसरे सुल्तान अब्दुल्लासे दया की आशा रखते हुए निम्न पंक्तियां लिखीं—

जो सुल्तान अब्दुल्लाऽ इंसाफ कर। मेरे जौहराँ पोते[१] दिल साफ कर॥
देवे दाद मेरा बहुत मान पाँव। उमस दूरते[२] ता गरीबान[३] पाँव॥
कि यो शाह मेरा खरीदार होय। तो ताजा[४] मेरा तब गुल्ज़ार[५] होय॥
कि गमगी[६] हूँ मैं सख़्त संसार ते। धरूँ दगदगे लाख उस आज़ार[७] ते॥
परेशानगी[८] में जम्या ख्याल मैं। ले आया हूँ ऐसे रतन ढाल में॥

—सैफुल्मलूक

गौवासी की प्रार्थना अकारथ नहीं गई। सुल्तान अब्दुल्ला कुतुब ने उसका बहुत सम्मान किया। १६३५ ई० में वह दरबार का राजकवि ही नहीं था, बल्कि इसी साल मुहम्मद आदिल शाह (१६२६–५६ ई०) के दरबार में उसे गोलकुण्डा का राजदूत बना कर भेजा गया। बीजापुर के सुल्तान ने उसकी बड़ी प्रतिष्ठा की, बड़े-बड़े इनाम दिये। गौवासी ने भी सुल्तान की इस कृपा के लिए तारीफ़ के पुल बाँधने में कोई कसर नहीं उठा रखी। अपने दूसरे काव्य "तूतीनामा" में सम-सामयिक दूसरे दरबारी हिन्दी-कवियों की भाँति उसने झूठी तारीफ़ के पुल बाँधे हैं।

(२) वैराग्य उपदेश—

गवासी अगर तूँ है सचला गवास[९]। लगा इश्क़ अपने खुदा साथ खास॥
चलेगा केता नफ़स[१०] के कय मने। केता होयगा नाव के पय मने[११]॥
जे कुच ख्वास्त[१२] तेरा है सब उसपे छोड़। दुन्या के, इलाके[१३] ते तूँ दिलकूँ तोड़॥

---

१. परसे, २. दूरसे, ३. अंचल, ४. नया, हरा-भरा, ५. मनकी फुलवाड़ी, ६. शोकाकुल, दुःखी, ७. उसके कष्ट, ८. हैरानी, ९. गोता लगानेवाला, १०. लोभ, ११. नामके पीछे, १२. अभिलाषा, १३. सम्बन्ध।

२. सैफुल्मलूक

"सैफुल्मलूक व बदीउज्जमाल" २२८५ शेरों के कथाकाव्य को गौवासी ने १६२५ ई० (हि० १०३५) में ३० दिनों में लिखा। मूल कहानी "अलिफलैला" की है।

(१) ईश्वर-स्तुति—

इलाही जगत का इलाही[१] सो तूँ। करनहार जम[२] बादशाही सो तूँ ॥
तेरे हुक्मतल नौगढ़ असमान के। रईयत मलिक[३] तेरे फरमान[४] के ॥
भरया जिस गढ़ाँ बीच तारे हशम[५]। करें नौबताँ[६] सों उलॅंग दमबदम ॥
जहाँ लग जो बादल के हैं गडगडाट। तेरी फ़तेह दौलत[७] दमामे[८] के ठाट ॥
इती तेरे दरबार के पहाड़ सब। छड़ीदार तुझ दार[९] के झाड़ सब ॥
तेरी बादशाहत कूँ कुछ अन्त नैं। तेरे मुल्क में गैरकूँ[१०] निप्त[११] नैं ॥
गवासी जो तुझ दार का खाक[१२] है। तेरी बाट का महज़[१३] खाशाक[१४] है ॥
दिखा की मया[१५] कर तुं मुझ खाक कूँ। दे रंगवास मुझ दिल के फलफाक कूँ ॥

(२) असफलता—

कवि ने, जान पड़ता है, अपनी कविता सुल्तान मुहम्मद कुतुब शाह (कवि मुहम्मद कुल्ली के दामाद—भतीजे) के उत्तराधिकारी के समय आरम्भ की थी, किन्तु दरबार में पुछार नहीं हुई। पहिले उसने लिखा था—

सो सुल्तां मुहम्मद कुतुबशह गँम्भीर। जग आधार होर जग दस्तगीर ॥

किन्तु कुतुबशाह ने दस्तगीरी (हस्तावलम्बन) नहीं की, इसलिए उसे हटा गौवासी ने उसके पुत्र अब्दुल्ला को अपनी कविता अर्पित करते लिखा:—

जो सुल्तान अब्दुल्ला आफ़ाकगीर। सुलक्खन शहंशाह[१६] गदूं सरीर ॥
चन्दा चौदवाँ खुसरवे बुर्ज[१७] का। अमोलक रतन[१८] हुस्न के दूज का ॥
सकल पादशाहाँ में उसका है नाँव। सो कुतब का कुत्ब तारा[१९] है नाँव ॥
सुलेमाँ के जो तख़्त का नाँव है। अता[२०] शहकूँ ओ तख़्त का ठाँव है ॥
परयाँ देव[२१] आवे वतन[२२] छोड़ सब। खड़े होर[२३] हैं डरते हत जोड़ सब ॥
न शहसार[२४] सूरज किस[२५] आसमान है। न शह-सा रतन जग केरे खान है ॥
गवासी जो शायर[२६] है शह का मुदाम। करे यों दुआ शाहकूँ सुब्ह-शाम ॥
जहाँ लग यो दुनिया बसनहार है। जधाँ लग यो अम्बर निराधार है ॥
जहाँ लग अछो[२७] शह की शाही क़रार[२८]। रखे अम्न[२९] सों शहकूँ पर्वर्दगार[३०] ॥

---

१. भगवान्, २. सदा, ३. स्वामी, ४. आज्ञा ५. सम्मान, ६. बाजे, ७. राजपाट, ८. बाजे, ९. द्वार, १०. दूसरे, ११. अधिकार, १२. मिट्टी, १३. केवल १४. तृण, १५. दया, १६. चक्रवर्ती, १७. राजशिखर, १८. मोती, १९. ध्रुवतारा, २०. प्रदान, दान, २१. परी, देवता, २२. स्वदेश, २३. और, २४. शाहके समान, २५. किसी, २६. कवि, २७. रहो, २८. स्थिर, २९. शांति, ३०. पालक।

(३) अपनी कविता के बारे में कविका कथन है—

जो एक द्योस निकले सेहर गाह[1] कर। चल्या फूलवाड़े कदन[2] ख्याल कर ।।
सो यों कुछ वहाँ फूल वार[3] आये थे। सबज़पोश[4] डाल्या पर झलकाये थे ।।
मगर पाच[5] सों शमा के झाड़कर[6]। दिवे ल्याये थे नूर के सरबसर[7] ।।
मेरी रूह परवाना[8] के सारका[9]। जो आशिक़ है नूरों की झलकार का ।।
देख उस शमा के झाड़कूँ नूर के[10]। लग्या फिरने खुद खोल पँख सूर[11] के ।।
मुंज हाल उस ठार पैदा हुआ। सआदत केरा दिन हवैदा[12] हुआ ।।
मेरे बख़्त का सूर[13] झलकाइया। मुख अकबाल[14] चौंधर[15] ते दिखलाइया ।।
किवाड़ाँ खुले सब मेरे फ़ाम[16] के। खुले फूल मक़सूद के[17] काम के ।।
मेरा जीव बुल्बुल हो बोलन लग्या। छुपे गैब के नग़मे[18] खोलन लग्या ।।१७०।।

इस प्रकार किसी बाग में सैर करते समय यह काव्य-तरंग कवि के हृदय में तरंगित होने लगा।

मेरा दिल खजीना जों[19] मामूर[20] है। वचन के जवाहर सों भरपूर है ।।१८४।।
लगा रोलने ताइँ में जोहराँ। दिपाया तजाल्याँ[21] में नौ अँवराँ ।।
किया शेर[22] ताजा बड़ें छन्द सों[23]। हरेक बेंद[24] विसलाइया चन्द सों ।।
खियालाँ के फौजाँकूँ[25] दौड़ाइया। हज़ाराँ नवे पश्बिहाँ[26] लाइया ।।१८८।।
रच्याँ बोलपर बोल यों रस भरे। जो इसते मिठाई के बछराँ[27] झड़े ।।१९०।।
मेरा ज्ञान अजब शक्करस्तान[28] है। जो इसते मिठा सब हिंदुस्तान है ।।
जेते हैं जो तूती हिंदुस्तान के। भिकारी हूँ मुंज शक्करस्तान के ।।
कहूँ ताजे मज्मून[29] यकतिल मने[30]। कि बेहद उबलते हैं मुझ दिल मने ।।२०१।।
हुनर की गवी का सो मैं बाच हूँ। वतन के उतम गंज[31] का ताग हूँ ।।२०२।।
मेरी जीभ अजब खड्ग है आबदार[32]। सदा तेज पानी धरै बेशुमार[33] ।।२०४।।
फ़हम[34] का सो गम्भीर दरिया हूँ मैं। जवाहर के मौजाँ सों भरिया हूँ मैं ।।२०६।।
यो अमृत सो बतिया बड़े शौक सों। मैं लिखने लग्या दिल की अत जौक़[35] सों ।।२११।।
सुनें आशिक़ाँ[36] यो तो हैराँ होयें। पढ़ें पीर-मर्दां[37] तो फिर ज्वाँ होय ।।२१४।।

---

१. टहलना, २. पासकी ओर, ३. बाहर, ४. हरितवसन, ५. पन्ना, ६. मोमबत्ती के झाड़फानूस, ७. बिल्कुल, ८. पतंग, ९. समान, १०. प्रकाशके, ११. सूर्य के पंख, १२. प्रकट, १३. भाग्यका सूर्य, १४. प्रताप का सूर्य, १५. चौधार, चारों तरफ, १६. समझ, १७. अभिलाषा के, १८. अदृष्टके गीत, १९. खजाना जैसा, २०. पूर्ण, २१. प्रकाश २२. पद्य, २३. चावसे, २४. बंध, २५. सेनाओं को, २६. उपमाएँ, २७. वर्षा ?, २८. शंकर.स्थान, २९. विषय, ३०. एक क्षण में, ३१. कोश, ३२. तेज, ३३. असीम, ३४. बुद्धि, ३५. रुचि, ३६. प्रेमी, ३७. वृद्ध पुरुष।

निरंजन जगत का तू सामीतु अहे । दयावन्त दातार नामी अहे ।।
बली जाऊँ उसकी दया के उपर । मेहरबान रबकी मया[1] के उपर ।।२१६।।
जो गौवास[2] हूँ मैं कमर बाँ दिया । सो समूदर[3] में....लिया ।।
सो यों मोतियाँ ढाल लाने लगा । जवाहर के ल्यों रास भाने[4] लग्या ।।२२३।।
पिरोने लग्या बैस[5] अप हात सों । रँगारँग हाराँ बहुत भाँत सों ।।२२६।।
हरेक हार सिंगार संसर का । सुरज हो डुबे जोत हर हार का ।।२२७।।
कि हज़रत सुलेमाँ के वक्त पर अथा[6] मिस्र में राज[7] एक बख़्त पर[8] ।।२२९।।
नगर **मिस्र** का तिस अथा तख़्तगाह[9] । अथे तिस ज़ब्त तल[10] सकल बादशाह ।।
नवल **आसिम** उस राज का नेक नाँव । शहाँ में अथा उस-शरफ़[11] ठाँव-ठाँव ।।२३१।।
सदा राज करता अथा अपसेता । वले[12] उसकुँ बेटी न बेटा अथा ।।२३८।।
सो एक द्योस अपस में अँदेशा किया । फिकर ज़ाद[13] हो मनमें यों लाइया ।।

३. कथा-संक्षेप

(क) ब्याह की चिट्ठी—

कि अपसी[14] मुलक माल पर्वर्दगार[15] । यता कुछ दिया है जो नैं उस सुमार[16] ।।
वले कोइ जतन इस रखनहार नैं । कि मुझबाद मेरा कोइ इस ठार[17] नैं ।।२४१।।
अगर कोइ फ़र्ज़न्द[18] होता मुंजे । तो यह जग में आनन्द होता मुजे ।।२४२।।
बड़ा नाँव होता मेरा ठार-ठार । दुनियाँ में रहता मेरा यक यादगार" ।।
सुबा उठ करे खैर-खैरात[19] बहुत । कि होता कि फ़र्ज़न्द अब से तुरत ।।२४८।।
सदा रात-दिन उसकूँ यही काम है । न निस नींद न दिन कूँ आराम था ।।२५१।।
शहाँ मैं अगरचे[20] हुँ मैं जगपती । वले घर कूँ नैं कोइ दीवा-बती ।।२७६।।
वज़ीराँ सुने शाह सों यो विचार । शहंशाह कूँ धीर[21] दे सब एक बार ।।२७९।।
नजूम्याँ[22] कु एक धरतें[23] हाजिर किये । छुपा शाह का राज़[24] ज़ाहिर किये ।।२८०।।
शहंशाह क ताला[25] कवी[26] पाय कर । बशारत[27] दिये शह कूँ यों आय कर ।।२८२।।
कि "ऐ बादशाह भोगनी[28] बख़्तऽवर[29] । तुँ फ़र्ज़न्द के कारण अब गम न कर ।।
यमन के जो राजे की बेटी है एक । चँदर-सूर खाते हैं रश्क[30] उसकूँ देख ।।
उसे मंग तुज शाहकूँ सो सजे । कि देगा खुदा उसते फ़र्ज़न्द तुझे" ।।२८५।।

---

१. दया, २. डुबकी लगानेवाला, ३. समुद्र, ४. डालने, ५. माला, ६. था (हता), ७. राजा, ८. भाग्यवान्, ९. राजधानी, १०. आज्ञाके नीचे, ११. उसकी दया प्रसिद्ध, १२. लेकिन, १३. फिकर करनेवाला, १४. अपने, १५. पालक (भगवान्), १६. इयत्ता (गिनती), १७. ठौर, १८. संतान, १९. दानपुण्य, २०. यद्यपि, २१. धीरज, २२. ज्योतिषियों, २३. एक ओर से, सब जगह से, २४. रहस्य, २५. भाग्य, २६. शक्तिशाली, २७. खुशखबरी, २८. भोगवाला, २९. भाग्यशाली, ३०. ईर्ष्या ।

महाराज गम्भीर आसिम नवल । चड़्या देख अपस हात अक़बाल बल ।।२८९।।
किया हुक्म आनन्द पा बेहिसाब । लिखे नामा[१] शाहे यमनकूँ शिताब[२] ।।२९१।।
समज शाह के दिल के सूरात[३] कूँ । लिख्या नामा[४] बेगी कर इस धात[५] सों ।।२९३।।
कि "भोगनी शाह समरथ सजन । तुम्हारा सदा गर्म अछो[६] अंजुमन ।।२९४।।
मेरे दिल में यों आवता है एताल[७] । जो ज़ाहिर[८] व बातिन[९] अछै[१०] एक हाल ।।३००।।
तुम्हारा मेरा घर सो है एक घर । तुम्हारा कह्या है मेरे सीस उपर ।।
वलेकिन[११] सुन्या हूँ मैं तुमनाकुँ[१२] एक । उतम पाकदामन[१३] है फ़र्ज़न्द नेक ।।
अगर उसे मेरे अक्द[१४] में ल्यायेंगे । मेरी बस्त[१५] कर मुझकूँ दिखलायेंगे ।।
तुम्हारा वफादार कहलाऊंगा । अज़ीज़ाँ की शर्तें[१६] बजा लाउँगा" ।।३०४।।
जो कुछ खिलअतो[१७] खुसरवानी[१८] अथे । जो कुछ तोहफ़े[१९] नादिर[२०] शहानी अथे ।।
दिये दबदबे साथ[२१] हाजिब[२२] सँगात । तुरत बात लाये मरातिब[२३] सँगात ।।३०८।।
अँगे[२४] मेहतराँ[२५] सों खज़ाना किये । यमन के कदन[२६] खुश रवाना किये ।।३०९।।
एकेक मुल्क एकेक शह एक एक विलायत । एकेक कोट एकेक गढ़ लख धात धात[२७] ।।
उलँगते उलँगते चले ता यमन । खबर किये यमन के शहंशाह कन[२८] ।।३११।।

(ख) यमन शाहजादी से ब्याह--

वो नामा सरासर पढाया तमाम । मो मक़सूद[२९] खातिर[३०] में लाया तमाम ।।३१५।।
हुआ खुश लिखे सो हरेक बैन पर । ले नामा रख्या आपने नैन पर ।।३१६।।
दिया अपनी बेटी कूँ उस शाहकूँ । बँध्या अक्द[३१] सूरजकूँ उस माह[३२] कूँ ।।३२०।।
परचां सी कनीज़ाँ[३३] उतम जात क्याँ । चंचल छंद-भरियाँ[३४] सुरजधात क्याँ[३५] ।।३२३।।
हरेक साफ तन ढाल मोती दिसै । नवे रंग जाली में जोती दिसै ।।
सभी किसबताँ[३६] उनकूँ रँगरेग सब । हरेक खुश्नुमा[३७] होर खुश-आलंग[३८] सब ।।३२५।।
गुलामाँ केतेक खूब साहेब-जमाल[३९] । सुना-बाँदे खंडियाँ[४०] केतेक कर रुमाल ।।
केतेक तबल्े[४१] के मिस्ल[४२] तातार के । केतेक फर्श बेमिस्ल[४३] जरनार[४४] के ।।
दर्याई तुरंग होर हती बेशुमार[४५] । अमोलक केतेक जिन्स[४६] के यादगार[४७] ।।

---

१. चिट्ठी, २. जल्दी, ३. सुरति, मंशा, ४. चिट्ठी, ५. इस भाँति, ६. रहो, ७. इस समय, ८. बाहर (प्रकट), ९. भीतर, १०. है (गुज०), ११. लेकिन, १२. तुम्हारी, १३. सती, साध्वी, १४. ब्याह, १५. हित वस्तु, १६. कर्त्तव्य, १७. परिधान, १८. राजसी, १९. भेंट, २०. दुर्लभ, २१. वैभवके साथ, २२. दूत के साथ, २३. दर्जे के अनुसार, २४. आगे, २५. अमात्य, २६. की ओर, २७. लाख भाँति, २८. बादशाह के पास (द०), २९. अभिप्राय, ३०. दिल, ३१. ब्याह, ३२. चाँद, ३३. लौंडिया, ३४. चतुराई-भरी, ३५. सूर्य-जैसी, ३६. पोशाक, ३७. सुदर्शना, ३८. सुस्वरा, ३९. सुन्दर, ४०. खंड, ४१. बतला, ४२. समान, ४३. अनुपम, ४४. जरदोज़ी, ४५. अनगिनत थी, ४६. जातिके, ४७. स्मृति-चिन्ह ।

जो था मर्तबा[1] जहेज केरा[2] जेता। किया मुस्तअद[3] यक तरफ़ ते वता[4] ॥
बडे मर्तबे[5] सों सऽरा बे-हिसाब[6]। लिख्या मिस्र के शाहकूँ यों जवाब ॥३३०॥
कि "ऐ बादशाह जगपती नामदार। तेरी बादशाही अछो बरकरार[7] ॥
सदा फतहो नसरत[8] सों तूँ राज कर। वसे लग दुन्या नित नवे काज कर ॥
तु दरिया है गंभीर गुन ज्ञान का। कि होता तूँ फ़र्ज़न्द[9] सफ़वान का ॥
दया कर जो मुँजकूँ किया याद तूँ। सो रोम्-रोम्[10] कुँ मेरे किया शाद[11] तूँ ॥३३४॥
मुबारिक तुमन ख्वास्तगरी[12] अछो[13]। यो नारी सदा तुजकूँ प्यारी अछो" ॥३३९॥
लिख्या यो नवाज़िश[14] कर इस घात सात[15]। बडे गलगले[16] होर मरातिब[17] सँगात ॥
अनँदकी खुशी मंग अल्लाहकन[18]। दिया पारकी मेज उस शाह कन ॥३४१॥
जो नज्दीक जों मिस्र के आइये। अँगे[19] एक हाजिब[20] कूँ दौडाइये ॥३४४॥
जो आसिम नवलशह खबर पाइया। उमस सात[21] खुशियाँ मने[22] आइया ॥३४५॥
किया काज का साज खुश ठार-ठार[23]। हुआ जग में यो काज सब आशकार ॥३४७॥
वो महलाँ चितर सों चितारे तमाम। सदा खुस्रवानी[24] सँवारे तमाम ॥३४८॥
बटे बाट धग[25] नौ रतन के विधाये। मुरस्सा के खुश बारगाहाँ[26] उचाय[27] ॥३५०॥
कुदम[28] जाफराँ कँ[29] गलाने लगे[30]। गलाँ हौज़खाने[31] भराने लगे ॥
पिसा मुश्क[32] फुलनीर में घालकर[33]। देखीये नवा एक बरसकाल[34] कर ॥
मिले मज्लिसाँ[35] होर वज़ीराँ तमाम। सलहदार[36] सर्दार अमीराँ[37] तमाम ॥
रँगारँग हुआ शाह का भार[38] सब। झलकने लग्या जडित सिंगार सब ॥३५४॥
मँगा शाहताज़ी[39] पवन सा शिताब[40]। न सावज[41] रखे कोइ उसका रिकाब[42] ॥३५९॥
सो हाता मने पैनकर हस्तकर[43]। उतम जात ताज़ी[44] को उपराल चल ॥३६०॥
यकस तर्फ[45] कैसर जो पकडया है ज़ीन। कि दूजी तरफ शाह फकफूर[46] चीन ॥
चल्या सामने होने उस हूर[47] कूँ। निछल[48] नूर के पाक समदूर[49] कूँ ॥
दमामे लगे पीठ सों गाजने। बजंतर हरेक जिन्स[50] के बाजने ॥
उठे बोल अंबर दो तारे तमाम। लगे गावने गानहारे तमाम ॥

---

१. दर्जा, २. दहेज का, ३. तैयार, ४. उतना, ५. दर्जे, सम्मान, ६. अनगिनत, ७. कायम, ८. विजय, ९. पुत्र, १०. रोम-रोम, ११. प्रसन्न, १२. मँगनी, १३. रहो, १४. कृपा, १५. भाँतिसे, १६. कल-कल, १७. दर्जे, इज्जत, १८. अल्लाके पास, १९. आगे, २०. दूत, २१. जोशके साथ, २२. प्रसन्नता में, २३. जगह-जगह,, २४. राजसी दरवाजे, २५. पांवडे, २६. चँदवे, २७. उठाये, २८. कहीं, २९. केसरको, ३०. घोलने लगे, ३१. कुण्ड, ३२. कस्तूरी, ३३. घोलकर, ३४. वर्षा-ऋतु, ३५. सभाएं, ३६. शस्त्रधारी, ३७. सामन्त, ३८. बाहर, ३९. अरबी घोड़ा, ४०. जल्दी, ४१. जानवर शिकार, ४२. साथ, ४३. हाथोंमें, ४४. ताजी, ४५. एक ओर, ४६. बगपूर, देवपुत्र, ४७. अप्सरा, ४८. निर्मल, ४९. समुद्र, ५०. प्रकार।

अगर-ऊद-अंबर[1] जलाने लगे। बुखारां[2] के असमान छाने लगें।।
देखे लोग उस हूर के शाह कूँ। मिले सामने आके बहुमान सों।।३६६।।
जो आया निकल शाह मैदान में। उजाला पड्या सातों अस्मान में।।३६९।।
महलदार[3] हर एक वो साहेब-जमाल[4]। उडाने लगे शह पै लगटे रुमाल[5]।।३७०।।
रूमाल के अकसाँ[6] झलकने लगे। हवापर सों बिजल्याँ चमकने लगे।।
भरे थे हरेक ठार यों खासो-आम[7]। जो छुपगे थे एक धरते[8] तारे तमाम।।
मती हस्त[9] अंगे[10] सोहाने अथे[11]। पहाडाँ मगर चलकर आते अथे।।
हरेक हस्त बेमिस्ल[12] मकबूल[13] खूब। मुरस्सा[14] की पिठयाँ उपर झूल खूब।।
तुरग बाव के पाव[15] कइ लग हजार। चितर में चितारे सके न चितार।।
बिचकते अपन छाँव देख ठाव में। मुरस्सा कि ठाडे रह एक पाव में।।
नफीरचा बरगम[16] यों (तर-) तराट। सिने आसमाँ[17] के गये फाट-फाट।।
सक़े[18] बादे पै[19] भर ले फुलवीर[20] सों। छिडकने लगे चौकधन[21] धीरसों।।
जो अहिस्ता[22] डग-डग चलाने लगे। चँदर सूर मांत हो सराने[23] लगे।।३७९।।
अपन शहर में शाह ज्यों आइया। महल्ला में सबकूँ बुला लाइया।।३८१।।
जो उस हूर[24] की आइ ज्यों पालकी। खुशी हुइ जियादा नवल[25] लाल की।।३८२।।
तजल्ली देखन वैं हुआ बेकरार[26]। सो दौडाइया दिलकूँ बे-इख्तियार[27]।।
उसी रात उस साथ सोहबत[28] किया। मदन[29] कामनी मद व इशरत[30] किया।।३८६।।
खुशी सों लिया शाहज़ादी के हात। बँध्या उसके गौहर[31] कूँ अल्मास[32] सात।।३८७।।
यकायक जो कुदरत[33] केरा बात हुआ। केतेक दिन कू उम्मेद का फल हुआ।।३९०।।

(ग) पुत्र-जन्म—

इलाही[34] जो साहेब[35] है संसार का। जो देता है मंग्या मँगनहार का।।३९१।।
जो बेटा दिया शाह कूँ बेबदल[36]। चँदर-सूर ते खूब निर्मल निछल।।३९२।।
खुश्याँ साथ अंमृत[37] घडी फ़ाल[38] देक। सो सैफुल्मलूक[39] कर रख्या नाँव नेक।।३९७।।
जो था सालेह उस शाह केरा वज़ीर। खुदा उस के हक़[40] पर हुआ दस्तगीर।।
उसी रात उसे एक बेटा दिया। दिवा उसके घर का सो रोशन किया।।

---

१. धूप, २. सुगंधियोंके नाम, ३. धुएँ, ४. सुन्दर, ५. झंडियाँ, ६. प्रतिबिम्ब, ७. बड़े-छोटे लोग, ८. एक ओरसे, ९. मस्त हाथी, १०. आगे, ११. थे, १२. अनुपम, १३. दिलपसन्द, १४. जरी, १५. हवा जैसे पैरवाला, १६. एक बाजार, १७. आकाशकी छाती, १८. भिश्ती, १९. प्याले, २०. गुलाबजल, २१. चारों ओर, २२. धीरे-धीरे, २३. सराहने, २४. अप्सरा, २५. नूर, २६. अधीर, २७. बरबस, २८. समागम, २९. काम, ३०. आनन्द, ३१. मोती, ३२. हीरा, ३३. भगवान्की माया, ३४. अल्ला, ३५. स्वामी, ३६. अनुपम, ३७. अमृतवेला, ३८. शकुन, ३९. देव-खड्ग, राज-खड्ग, ४०. उसके लिये।

मुबारिक घडी में देखत फ़ाल[1] ओ। सो साअद[2] कर उसका रख्या नाँव सो ।।
जो इस हालते शहकुँ अँपडी[3] खबर। फुट्या[4] सिरते भी खुर्रमी[5] पायकर ।।
बुला भेजिया बेग सालेह के तैं। कह्या यों कि "इस धात[6] मँगता हूँ[7] मैं ।।
जो यो दोनों मिलकर एक ठार अछैं। बँधैं[8] एक दिल हो कि होर यार अछैं[9]" ।।
मँग्या भेज साअद कुँ वैं[10] शह्रयार[11]। दो दायाँ रख्या दोनों कूँ एक ठार ।।४०४।।
बरस सात के ज्यों वो दोनों हुये। मुअल्लिम[12] कुँ यक खूब पैदा किये[13] ।।४१२।।
ले जाकर जो बसलाये मक्तब मने[14]। लगे पडने[15] दिन-रात दोनों जने ।।
किये इल्म तहसील[16] इस धात सों। जो दम मार कोइ ना सके बातसों ।।
हुये खुशनवीसी[17] के यों धात में। जो सातों कलम[18] आये थे हात में ।।
तिर-अंदाज़[19] ऐसे हो निकले वो दोय। बराबर उनके न था जगमें कोय ।।४१६।।

(घ) पद-प्रदान—

सो यक द्योस सैफुलमलुक जग-उजाल। शहंशह के जिउके चमन का निहाल[20] ।।४२४।।
चल्या शह कूँ तस्लीम करने ब-दिल[21]। अदब साथ सिर भूईं धरने ब-दिल ।।४२६।।
देख्या शाह दोनों केतैं जो निझा[22]। सोने होर रूपे की दो कुरस्याँ मँगा ।।
किया अम्र[23] बैसाइ कर[24] दोइ कूँ। लग्या देखने भर नज़र दोइकूँ ।।
हुआ मन में खुशहाल एस धात सों। कह्या जाय न ओ किसी बात सों ।।
उबलने लग्या प्यारका दिलमें शौक। मंगाया खजीनें में ते एक सँदूक ।।४३०।।
वो संदूक खोल एक अंगुश्तरी[25]। झमकता नगीना सो ज्यों मुश्तरी[26] ।।४३२।।
निछल जरजरी[27] खूब जरबफ्त एक। यो दो वस्तकूँ काड अपे शाह देख ।।
सो सैफुलमलूक के दिया हात में। हो खुशहाल भौते च[28] उसी सात[29] में ।।
मँगाया उतम जात तेज़ी[30] अनूप। पवनसार[31] जल्दी में अपरूप रूप ।।
किया पेशकश[32] होर नेवाज्या[33] बहुत। बुलाकर कहा "ऐ मेरे मन के पूत ।।
यो तेजी उतम होर यो अंगुश्तरी। यो जरबफ्त निर्मल निछल ज़रज़री ।।
मेरेतैं दिये ते सुलेमान भेज। परयाँ होर देवा के सुल्तान भेज ।।
अजब[34] कुछ खज़ीने मेरे हैं यो। दिया हूँ तुझे मैं कि तेरे हैं यो ।।४३९।।

---

१. हस्तावलम्बन, २. सुभागा, ३. पहुँची, ४. खुला, ५. खुशी, ६. भाँति, ७. चाहता हूँ, ८. बढ़ें, ९. रहें, १०. वहीं, ११. बादशाह, १२. अध्यापक, १३. बैठाये, १४. पाठशालामें, १५. पढ़ने, १६. विद्याध्ययन, १७. सुलेखकता, १८. लिपि, १९. धनुष चलानेवाला, २०. बूटा, २१. दिल से प्रणाम करने, २२. ध्यान से, २३. आज्ञा, २४. कहकर, २५. अंगूठी, २६. शुक्रतारा, २७. जर्दोजी, २८. बहुत ही, २९. साथ, ३०. ताजी (अरबी घोड़ा), ३१. वायु-समान, ३२. इनाम, २३. नौछावर किया, ३४. अद्भुत।

(ङ) बदीयुल्जमाल के चित्रपर मुग्ध—

यकायक सो दिलकूँ लग्या जो तलाश[१]। सो बेमिस्ल[२] जरबफ्त का वो क़माश[३] ।।
देख्या खोलकर सरबसर[४] ज्यों उने। सो तस्वीर पाया अजब[५] उस मने[६] ।।
वह तस्वीर देखी दिवाना[७] हुआ। वही इश्क़ का उसकूँ भाना[८] हुआ ।।
अपसमें लग्या देखने ज़ार-ज़ार[९]। सो पडने लग्या बेखबर[१०] ठार-ठार ।।
वो मूरत नजर[११] भर ही चूम कर। सो जागा किया दिलमने[१२] खूब कर ।।
दिया संग सार्याँ केरा छोडकर। लिया खींच दम[१३] सबते मुख मोडकर ।।
अँधारे भरी कोठरी में यकट[१४]। सो जा पर रह्या बेखबर हो निपट ।।
जो साअद हुआ नींद में होशियार। लग्या देखने ताइँ अँखियाँ पसार ।।४
नजर नैं पडचा शाहज़ादा कहीं। लग्या ढूँडने हैरान हो हर कहीं ।।
सो पाया अँधारे मने[१५] एक ठार। पडचा था अकेला दुखी बेकरार[१६] ।।
अँझू[१७] अंखियाँ में ते ढुलते अथे। नवां होकर दो मरते चलते अथे ।।
न ज़र्रा[१८] खबर कुछ उसे ज़ात[१९] की। न ताक़त जबाँ को है कुछ बात की ।।
जेता साअद उसकूँ उचाने[२०] कुँ जाय। जेता पाँव पडकर मनाने कूँ जाय ।।
वेताँ[२१] अप सें दिखलाये बेहोश कर। न दे जाब[२२] चुप रह फ़रामोश[२३] कर ।।
उठा सायद उस देखकर तिलमिला! ...... ।।४
जो दरहाल[२४] शह कूँ खबर जा दिया। यकायक शह का सो सीना[२५] तडखिया[२६] ।।४
वो देखन कुँ बेटे के आया नज़ीक। सो बेताब[२७] सख्ते च[२८] पाया अधीक ।।४
देख्या यों बेताब यकबारगी। कमर बैस गई होर लगी तगबगी ।।४
सो उस वक्त किसकूँ ना कर खबर। मुबादा[२९] नजर कुछ लगी होयकर
दवायाँ कुँ धो-धो पिलाने लगा। लिख्या ताविज़ों ल्या बँधाने लग्या ।।४
जेते थे हकीमाँ[३१] अपन शहर के। हलब-चीन (होर) मावरा-नहर[३२] के ।।४
.... । कह्या मेहरवानी सेती ला गले ।।४
करेगा दवा जो कोइ दर्द फ़ाम[३३]। देऊँगा उसे बादशाही तमाम ।।४
हकीमाँ देखन नाडी ज्यों आये हैं। दरद ज़ाहिरा[३४] कुछ नहीं पाये हैं ।।४
हुये एक तरफ़ते पशेमान[३५] सब। रहे दर्द ना फ़ाम हैरान सब ।।४

---

१. खोज, २. अनुपम, ३. कपड़ा, ४. पूरी तौरसे, ५. विचित्र, ६. उसमें, ७. प
८. बहाना, ९. फूट-फूट, १०. बेहोश, ११. आँखोंमें, १२. दिलमें, १३. साँस रोक ि
१४. अकेला, १५. अँधेरे में, १६. अधीर, १७. अश्रु, १८. जरा कुछ भी, १९. अ
२०. उठाने, २१. उतना, २२. जवाब, २३. भूला, बेसुध, २४. उसी समय, २५. कां
२६. फटा, २७. अधीर, २८. सख्त ही, २९. शायद, ३०. मंत्र धो-धो, ३१.
३२. दजला-फुरात या आमू-सिर दरिया के द्वाबे, ३३. समझ, ३४. प्रकट, ३५. हैरान

जो उस दर्द का जिन्स[1] कुछ होवता । तो दारू वा दरमन[2] कुँ रुच होवता ।।
सभी हर दरद कूँ है हरकैं[3] दवा । वले[4] इश्क के दर्द कूँ नें दवा ।।४९२।।
मुसल्लम[5] शहंशाह हुआ लाइलाज[6] । न था काम उसे कुछ बैठे रोये बाज[7] ।।४९४।।
सो एक द्योस[8] आये वज़ीराँ सकल । कहै शाह कूँ यों कि "शाहे नवल ।।४९६।।
भला है जो साअद कु उसके नज़ीक । अछै[9] उसके दुख-दर्द में हो शरीक ।।५०१।।
वही उसके दिल का जो अंत पायेगा । वही उसकूँ मारग मने लायेगा" ।।
शहंशाह कूँ खुश लग्या वो विचार । दिया भेज साअद कूँ बेटे के ठार ।।
गया शाहज़ादे के ज्यों वो नज़ीक । लग्या रोवने ज़ार उसके अधीक ।।
कह्या यों कि "ऐ लाल साहेबजमाल[10] । न सूरज चँदरमें है तेरा मिसाल[11] ।।
तेरा नूर[12] हर ठार मामूर[13] अछो[14] । तेरा दिल खुश्याँ साथ जम[15] पूरा अछो[16] ।।
है मुज नैनकूँ नूर तुज नूर ते । सदा सूर मुजकूँ तुज सूर ते ।।
अधंर खोल मुज साथ कुछ बोल तूँ । तेरे दिलमें क्या है सो कह खोल तूँ ।।
कि तेरा सदा मैं वफादार[17] हूँ । हरेक ठार तेरा मैं गमखार[18] हूँ ।।
यकायक यो आया हूँ क्या फिक्र[19] तुज । लग्या किसूँ ते ध्यान होर ज़िक्र[20] तुज ।।५१०।।
नज़र किस सुरज पर पडी जग केरे । जो यों नित उबलते हैं जल के झरे[21] ।।
तेरा चाँद किनें[22] है तूँ किसका चकोर । . . . . ।।५१२।।
मुजे खोलकर तू कहे तो भला । वगर[23] नें तो मैं काट लैउँगा गला" ।।
कमर में ते वैं[24] अपने खंजर कूँ काड । गया आपना पेट लेने कूँ फाड ।।
देख ये हाल दरहाल सैफुल्मलूक । पकड हात सायद केरा देख मुख ।।
विरह आज सो जल बोला आह मार । अँगारे नयन में ते डाल्याँ हज़ार ।।
पिछान्या कि साअद वफादार है । अपन दुख होर दर्द का यार है ।।
वो जरबफ्त का पारचा[25] लाइया । जो भी सूरत उसमें सो दिखलाइया ।।
कहा "मैं इसी का दिवाना[26] हूँ भौत[27] । अगरचे[28] अपन ठार दाना हुँ भौत ।।५२०।।
यही रूप लबदाइया[29] है मुंजे । यही हुस्न[30] बेसुध किया है मुंजे ।।
कहीं रूप दुनिया में इस सारका[31] । न देख्या है कोई खल्क संसार का" ।।५२२।।
सुन्या राज़[32] साअद अपन यार ते । रज़ा[33] लेकर आया जो उस ठार ते ।।५२४।।
शहंशाह कुँ तस्लीम[34] आकर किया । सो ओ सूरते-हाल[35] सब बोलिया ।।

---

१. जाति, २. औषध, ३. हर कहीं, सब जगह, ४. लेकिन, ५. पूरी तौर, ६. अचिकित्स्य, ७. बिना, ८. दिन, ९. रहे, १०. सुन्दर, ११. समान, १२. तेज, १३. भरा, १४. रहो, १५. सदा, १६. पूंर्ण, १७. सच्चा भक्त, १८. संवेदक, १९. चिंता, २०, स्मृति, २१. झरने, २२. कौन, २३. नहीं तो, अन्यथा, २४. वहीं, २५. कपड़ा, २६. पागल, २७. बहुत, २८. यद्यपि, २९. बुद्धिमान्, ३०. सौन्दर्य, ३१. सारखा, ३२. रहस्य, ३३. सम्मति, ३४. प्रणाम, ३५. अवस्था ।

(च) प्रेमिका की खोज बेकार—

अजायब[१] लग्या शहकूँ उस भेद पर। कह्या खोलते सबकुँ यो सरबसर ।।५२५
मै यक द्योस बैठा अथा तख़्त पर। सो देख्या यकायक उसी वक्त पर।।५२७
. . . . ।केतेक शह पर्‌याँ[२] ऐन[३] झलकारसों।।५३१
मेरे तख़्त के अंगे[४] आइयाँ तमाम। कियाँ मुजकूं देक यक तरफ ते सलाम।।
कह्या मुजकूँ ऐ साहेबे-तख़्तोताज[५]। हमनकूँ सुलेमान भेजा है आज।।
वो ज़रबफ़्त का पारचा[६] लाइयां। मेरे अंगे[७] रख खोल दिखलाइयाँ।।
जो था उस मनें[८] सूरते बेनज़ीर[९]। . . . . ।।५३५
कह्याँ खोल यों मुंज उपर कर करम[१०]। यो ल्यायाँ हैं अज गुल्सताने अरम[११]।।
कि है शहपरी यक **बदीयुल्‌जमाल**। सो यो पाक सूरत है उसका मिसाल।।
बो शहवाल[१२] वन शाह रुख[१३] राज की। सो बेटी है अति शर्म होर लाज की।।
परे होर परियाँ[१४] जहाँ लग तमाम। करैं आके **शहवालकूँ** सब सलाम।।५४०
वो जरवफ्त बेमिस्ल[१५] न होवे कर। यक् अंगुश्तरी यक तुरँग तिस उपर।।
लेकर आयकर पेशकश[१६] मुंज किया[१७]। यकायक्क सब गैब[१८] होकर गियाँ।५४२
अँदेशे मने[१९] पड हो दिलगीर[२०] अधिक। हलों[२१] शाहज़ादे के आया नज़ीक।।५४७
केतेक द्योस[२२] खातिर[२३] कूँ टुक जमा राक। . . . . ।।५४८
जो लेऊँ परे मैं चला हात पाव[२४]। खबर तेरे मकसूद[२५] की ठाँव ठाँव"।।५५३
जो इस धात[२६] सों मंग मुहलत[२७] लिया। सो लोगाँ कुँ मुल्के मुलक भेजिया।।५५४
जो गये थे रसूलाँ[२८] तमाम एकबार। लगे ढूँढने आलमें[२९] ठार ठार।।५५६।।
खुरासान, रुम होर शाम होर खोतन। हबश होर गुजरात दिल्ली दखन।।५६१
इराक होर शीराज़[३०] होर खोजंद। बुखारा-बलख यज्द होर समरकन्द।।
ससंजान काशान संजान सब। हलब चीन तूरान ईरान सब।।
मखा[३१] आगरा होर सकल **पुर्तगाल**। सो मशरिक व मगरिब[३२] जनूब[३३] होर शुमाल[३४]।।
लंका परलंका होर **बंगाला** व **गौड**। बेचारा जिधर के उधर दौड दौड।।
गये यक तरफ ते जगत के ऊपर। न पाये गुलिस्ताँ अरम का खबर।।
बरस एक लग सब परेशाँ हुये। फिर आये **मिसर** कूँ पशेमाँ[३५] हुये।।
सुन्या ज्यों यो अहवाल[३६] सैफुलमलुक। लग्या गम पै गम करने होर दुख पै दुख।।

---

१. विचित्र, २. अप्सराएँ, ३. ठीक, ४. आगे, ५. मुकुट, सिंहासनके स्वामी, ६. कपर
७. आगे, ८. उसमें, ९. अनुपम, १०. कृपा, ११. स्वर्गका उद्यान, १२. परियोंकी रा
१३. नाम, १४. परा और परी लोग, १५. अनुपम, १६. भेंट, १७. करीं, १८. लु
१९. चितामें, २०. दुःखित चित्त, २१. धीरे-धीरे, २२. दिवस, २३. दिल, २४. हाथ-पै
२५. ईप्सित, २६. भाँति, २७. छुट्टी, २८. दूत, २९. दुनियामें, ३०. तेहरान, ३१. मक्का
३२. पूर्व-पश्चिम, ३३. दक्षिण, ३४. उत्तर, ३५. हैरान, ३६. हालत।

अँधारे भरे घरमने[1] जायकर। पड्या धरतिरी सो अडडाय[2] कर।।
सिना गम सेती कूटल ना लग्या। कर उस नार कूँ याद[3] रोना लग्या।।५७०।।
सँगाती कुँ अपने पुकारन लग्या। न सह सक विरह आह भरने लग्या।।५७३।।
करे याद तिल-तिल[4] रोवै ज़ार-ज़ार। पडे बेखबर[5] होयकर ठार-ठार।।
खबर पायकर टुक[6] जो हुशियार होय। नज़ीक आपने तो नहीं देखे कोय।।
वह सूरत[7] रखे आपने नैन[8] तिल। उस ऊपर ते जावे और कह बल-बल।।
कहे यो कि "मुंज मन की दिलदार[9] तूँ। मेरे मन में निस-दिन वसनहार तूँ।।
तु किस सम्द[10] की ढाल मोती हैगी। तुँ किस खान की लाल जोती हैगी।।
किस आसमान की है चंदरभान तूँ। किस अक़लीम[11] की री है सुल्तान तू।।
है फुल डाल तू किस गुलिस्तान[12] की। झमकती[13] है शाम[14] किस शबिस्तान[15] की।।५८०।।
जो इस घात तूँ मुजकू लबदाइ[16] है। मेरे मन कुँ चित अपना लाई है।।
न जानूं तुझे किस घडी पाऊ मैं। सो क्यों ढूंड काडू[17] तेरा ठाँव में"।।५८२।।
दिने दिन इसी धात[18] बैठा अछै[19]। देखीं उस पियारी के जीता अछै।।५८५।।
नवल शाह **आसिम** लग्या तिलमिलन। दुखी पूत कूँ देख फिर फिर जलन।।
रह्या सूख दुबला तुलक-तार[20] हो। निपट जिन्दगानी से बेज़ार हो।।
अपसते अपीं[21] भर ठंडी सर्द उसास। कह्या आयकर अपने फ़र्ज़ंन्द[22] पास।।५८८।।
"लग्या है परी साथ तेरा जिया। न समझे किसी बात तेरा जिया।।५९४।।
परी कूँ किने[23] जाके ल्या ना सके। कहाँ है सो किन[24] खोज पा ना सके।।५९५।।
अगर बादशाहाँ की बिटिया में कँ[25]। दिल अछता[26] तो देता मिला तुजकूँ मैं"।।५९७।।
सुना सरते[27] सैफुल्मलुक ज्यों बात यो। . . . . ।।५९९।।
कह्या "शहनशाह अगर लाख हूर[28]। उतर आये जन्नत[29] ते मेरे हुजूर[30]।।
तो ज़र्रा[31] न हो मेरा किस पै ख़ियाल। मुजे हो तो होना **बदीयुल्जमाल**।।६००।।
मेरे दिलमें आता है अब यो ख़ियाल। जो लेऊं रज़ा[32] तुज कने[33] ते एताल[34]।।६०४।।
फिरूं जाके आलम[35] में चौफेर में। जो लेऊ गुलिस्ताँ-अरम का खबर।।६०६।।
सो कैसा है देखूँ दरया[36] का सफ़रमैं। अपे ही करूँ अपाने तदबीर[37] में"।।
जो था शाह अव्वल[38] ते रंजूर[39] पूर। हुआ सरते भी दुख तले चूर-चूर।।६११।।
कह्या यों कि फ़र्ज़ंन्द[40] मुजे है सो एक। क्यों उस एक कूँ देउँ रज़ा देके देख।।६१३।।

---

१. घर में, २. अरराय, ३. स्मरण, ४. क्षण-क्षण, ५. बेहोश, ६. थोड़ा, ७. तस्वीर, ८. आँखोंके सामने, ९. प्रिय, १०. समुद्र, ११. राज्य, १२. फुलवारी, १३. चमकती, १४. मोमबत्ती, १५. रात, १६. खींचा, १७. कैसे, १८. भाँति, १९. रहे, २०. पतला-सा, २१. आप ही आप, २२. पुत्र, २३. कोई, २४. कौन, २५. कहीं, २६. रहता, २७. फिर से, २८. अप्सरा, २९. स्वर्ग, ३०. सामने, ३१. किंचिन्मात्र, ३२. आज्ञा, ३३. तेरे पास, ३४. अब, ३५. दुनिया, ३६. समुद्र, ३७. उपाय, ३८. पहिलेसे, ३९. रंजीदा, ४०. पुत्र।

सकति है जो विन तख्त विन ताज अछूँ[१]। वले[२] ताव[३] नैं मैं जो इस वाज अछूँ ।।६१
केतेक बारकूँ फिर....सँगात। कि कहने लग्या "क्यों रखूँ कैद सात[४]"।।६१
मुबादा[५] दुखों ते सीना फोड ले। मुबादा यो जिवने ते दिल तोड ले।।
दुजा होर नैं है जो कौं[६] कुच इसे। किया है निपट इश्क यों हिच[७] इसे।।६२
भला जो खुदा पर तवक्कल[८] करूँ। इसे वाट लाने केरा बल करूँ।।६२
दे **साअद** कूँ **सैफुल्मुल्क** के दुँबाल[९]। रवाना किया होर हुआ वैं[१०] निढाल।।६४
लग्या रोने फ़र्ज़न्द के ध्यान सों। बुला भेजा वैं अपने परधान[११] कूँ।।६४

(छ) राजकुमारी की समुद्र-यात्रा—

करनहार सैर उस पिरित घाट का। देवे काड मारग यों उस बाट का।।६५
जो **साअद** व **सैफुल्मुल्क** ज़्हाज़[१२] चड। चले गलगले साथ दरिया में पड।।६४
तलें साफ पानी उपर आसमान। वरसता हुआ माजदिल[१३] दरमियान।।
सफाबख्श[१४] चौधेर मौजा गँभीर। तमाशा केतक उस मने[१५] वेनज़ीर।।
सो देख ज़ौक़ पाने मने[१६] धात धात[१७]। चलाने लगे ज़्हाज़ दिन होर रात।।४६
पयोपै[१८] केतक द्योस कश्त्याँ[१९] चलाय। सो यो ठार दरिया के दरम्यान आय।।७०
यकायक उठा बाव[२०] तूफान का। दरचा कूँ चड्या ताव तूफान का।।७०
निपट आये ते दाट[२१] काले अभाल[२२]। छुपा सूर होर चाँद पकड्या निपाल।।
बरसने लग्या मेघ उपरालते। न बरस्या कधीं यों बरस-काल ते।।
पड्या गिर्द चारों तरफ अंधकार। कडकने लग्या बिजलियाँ ठार ठार।।
न दिन फाम होता समझते न रात। हुआ रात होर द्योस मिल एक धात।।
खुदा सों पड्या आके सारयाँ कुँ फाम[२३]। भरोसा सुटे[२४] जीवने का तमाम।।
कि दरिया उबलने लग्या शोर सों। उठे मौज तूफ़ानके ज़ोरसों।।
होइयां कश्तियाँ दरहम्[२५] यक धार[२६] ते। रह्या खल्क[२७] आजिज़[२८] हो तदबीर ते।।७१
भर आया जहाज़ाँ मने[२९] आव[३०] सब। गवाता गया माल व असबाब सब।।
बडा कुछ हुआ तफ़क़ा[३१] हौलनाक[३२]। हुये लोग लै[३३] यक तरफ ते हलाक[३४]।।
उठ्या मौज ज्यों सो वो वहती वहीं। चली शाहज़ादे की कश्ती[३५] कहीं।।
हुआ ज़्हाज़ तूफानते चूर-चूर। मलिक[३६] होर साअद पडे दूर दूर।।
बिला **साअद** अप सीस ले धात धात। चल्या जो कहीं अपनी कश्ती सँगात।।
तरफ **रूम** के जा के साअद पड्या। **हबश** मुल्क कूँ जाय तख्ता लग्या।।७१

---

१. रहूँ, २. लेकिन, ३. ताकत, ४. कैद साथ, ५. शायद, ६. कहूँ, ७. ऐसा ८. भरोसा, ९. पीछे, १०. वहीं, ११. मंत्री, १२. जहाज, १३. मद्धिम, १४. स्वच्छता १५. उसमें, १६. शौक पानेमें, १७. भाँति-भाँति, १८. लगातार, १९. नावें, २०. व २१. डाट, २२. बादल, २३. समझ, २४. छोड़ा, २५. छिन्न-भिन्न, २६. एक ओर २७. दुनिया, २८. हैरान, २९. जहाजों में, ३०. पानी, ३१. भेद, ३२. भयान ३३. बहुत, ३४. मृत, नष्ट, ३५. नाव, ३६. स्वामी।

(ज) हब्शी बंदीखाने में—

अँख्याँ खोल देखन लग्या ठार-ठार। न लश्कर है अपना न साअद है यार ॥७२०॥
सभी गर्क़[1] हो जाके याराँ पचास। जो बाकी अथे सो मिले आसपास ॥७२२॥
उचा[2] शाहजादे कुं बसलाइया[3]। . . . . ॥७२३॥
न था शाहज़ादे कुं रोय बिन क़रार[4]। कि साअद के उपराल था भौत प्यार ॥७२९॥
यकायक बढे गुलसेती हाक मार। निकल जंगियाँ[5] आये यकघेरते भार[6] ॥७३१॥
सलहपोश[7] सारे बडे धात के। बडे थोबडे[8] होर बडे जात[9] के॥
दरया परके वो चोर सारे अथे[10]। पकड आदम्या खानहारे अथे॥
देखे शाहज़ादे की कश्ती कुला। लगे मारने वाँ तुफंगा[11] बला ॥७३४॥
पकड शाहजादे कूँ यारा सँगात। वही बन्द कर ले चले रातेरात॥
सुबा हो उजाला हुआ देखकर। सब आये किनारे कुँ दरिया उतर॥
निझा[12] देखते हैं जो दरिया किनार। रखे हैं तखत एक ऊँचा सवार॥
कुढंगी जंगी बिलक्खन[13] उस पे चड। बडे मौज बैठा है सख्ती अकड॥
एता कुछ बदशक्ल चेहरा अथा। जो देखन किसे उसकूँ जहरा न था ॥७४०॥
बडा भूत कहते सो था आप वो। कि था सारे भूताँ केरा बाप वो॥
गया होंठ उपरका जो यकधेर[14] कूँ। लग्या था पेशानी उलंग सीरकूँ॥
तले का यों आया अथा लटक होंट। जो था उसके गुरग्याँ[15] मने फर्क योट॥
लँबा कद लँबी नाक चौडे बुलाख। दिसे गारके नाद[16] लब्दाँ[17] फराख[18]॥
बडे डागरे सारके[19] कान दो। उजड घर केरे खोड जो रान दो॥
मसे काले उसके नज्दीक साऱ्या कुं ल्याय। उसे यक तरफ[20] ते सलामा दिलाय ॥७४९॥
बेड शाहजादे कुँ वो देखकर। ले जाओ कह्या अपनी बेटी के घर ॥७२१॥
सो काले जंगी दोय संगात जा। दिये उसकि बेटी केरे हात जा।
लेकर आये जंगिन कने[21] शाह कूँ। मिलाये जोहल[22] साथ ज्यों माह[23]कूँ॥
वले शाहज़ादे का देख ओ जमाल[24]। दिवानी हुई इश्क लाई कमाल[25] ॥७५५॥
बडे शौक होर ज़ौक़[26] सों दौड आय। सो शाहज़ादेकेरा ज्यों निझाय ॥७५९॥
सो देख शाहजादा हुआ वैं[27] निढाल। रगे-रग में यक घोर ते[28] बैठा कँटाल ॥७६०॥

---

१. डूब, २. उठा, ३. बैठाये, ४. धीरज, ५. हब्शी, ६. एक ओरसे, बाहर, ७. कवचधारी, ८. मुँह, ९. जाति, १०. थे (हते), ११. बन्दूक-तोप, १२. ध्यान लगा, १३. अलक्षण, १४. एक ओर, १५. भेंवियों, १६. गढ़हेकी भाँति, १७. ओठ, १८. चौड़े, १९. ढोरके से, २०. एक ओरसे, २१. हब्शिनीके पास, २२. सनीचर, २३. चन्द्र, २४. सौन्दर्य, २५. पूरा, २६. रुचि, २७. वहीं, २८. एक तरफसे।

(ज्ञ) कुरूपा हब्शिन—

. . . . । निपट रूसियाही में अंगुश्त थी ।।७६१।।
कि था थोबडा उसका ज्यों फ़ील[1] का । सर उसका सो काला रँजन नीलका ।।७६२।।
अँख्या डोंगियाँ ज्यों खडी सारके । दो दीदा भीतर ज्यों पथर ग़ार[2] के ।।७६३।।
चडया होंट उपरालका नाक पर । थुडी पर पडया है तलेंका उतर ।।७६४।।
तमाम अंग गोनीकेरा टाट ज्यों । चूच्याँ दो सीनेपर हैं दो माट ज्यों ।।७६५।।
निकल पेट अंगे टलेंक ज्यों आ खडा । अथा पेट थे सख्त पेडू बडा ।।७६६।।
बोंबी[3] खुल रही थी सो ज्यों ओखली । मुसल होके दौडी थी रोमावली ।।७६७।।
लडकती जो चुतडाँ पै चोटी दिसै । सो ज्यों झाडकी पेड़ मोटी दिसै ।।७६८।।
सुये सार[4] पेंड्ल्याँ उपर तेज़ बाल । न थी जगमें डायन कोइ उसके मिसाल ।।७६९।।
सडी बाँस बग़लाँमें ते यों झरे । जिने बास उसकी सुँगे सो मेरे ।।७७०।।
पवन सारका उस कि टुक बास पाय । तो ल्या हल्क़में अँतड़ियाँ न्हास[5] जाय ।।७७१।।
जँग्याँ में कोई ऐसी काली न थी । हो काली कैं ऐसी खुजाली न थी ।।७७२।।
अगर लावें जिस ठार मश्अल हज़ार । उन आवे तो तीरे पड़े अंदकार ।।७७३।।
चली घरमनें[6] शाहजादे कूँ ले । कँदूरे[7] करे बार अपने वले[8] ।।७७८।।
जो बैठे दोनों मिल कँदूरे उपर । सो वो ज्यों हती होर् रयो ज्यों मछर ।।
किआ नामुवाफ़िक़[9] सोहबत घडी । परान उडके जा फिक्र लागी बडी ।।७८०।।
जो फारिग हुये पेट भर खाना खा । मँगाई तुरत मस्त प्याला नि का ।।
सो गडव्यांपे गडवी लगी झेलने[10] । लगी शाहज़ादा सों मिल खेलने ।।
पिये शाहज़ादे सो मिल बैस कर । . . . . ।।७८३।।
कबूल्यां[11] नहीं शाहज़ादा उसे । डरया देख तन परके उसके मसे ।।७८५।।
गुसा साथ अति जंगिया कूँ बुलाय । सो संगीं चकी पीसने कूँ मँगाय ।।७८८।।
"मलिकज़ादे के कने[12] ले जा" कही । "सुबा उठकर आटा पिसाओ" कही ।।
हुआ शाहजादा दुखी लाइलाज[13] । कह्या दिलमें मौत अपनी आई है आज ।।७९०।।
लग्या पीसने आटा ल्हौ आट कर । छले आये हाता कूँ सब दाट[14] कर ।।
सो खलरी निकल आई दोय हात की । मुशक्कत[15] लगी द्योस होर रात की ।।
हतेल्याँ जो नाजुक[16] अथे पानते । नरमतार[17] नरम रुई खतियान[18] थे ।।
गढे पड रहे सख्त पौलाद हो । गई नाजुकी तन कि बरबाद हो ।।७९४।।

---

१. हाथी, २. खड्ड, ३. नाभि, ४. सूये जैसी, ५. भाग, ६. घरमें, ७. आहार, ८. लेकिन, ९. नापसंद, १०. उड़ेलने, ११. स्वीकार किया, १२. राजकुमार के पास, १३. बेदवा, १४. डाट, १५. मेहनत, १६. कोमल, १७. कोमलतर, १८. धुनी।

(ञ) भागकर द्वीप में—

केतेक दिनकुँ ओ जंगिये नाबकार[1]। सुन्या ज्यों सो घरमेंत काडा बहार[2]।।
सो बेटी कई ते[3] बुरा मान कर। कपट दिलमने आपने आनकर।।
मँगाया तबर[4] एक लसडी[5] सँगात। दिया फिर दुखी शाहज़ादे के हात।।
दे याराँ कुँ दुँबाल[6] इसके तमाम। सो लकडया ढुलाने लग्या सुब्ह् शाम।।
रह्या शाहज़ादे केरा हाल सब। दुखों तल हुआ हाल पामाल[7] सब।।
गये कपडे अँग के सबे फाट-फाट। परेशानगी हो लग्या वैं[8] उचाट।।८००।।
किया फिक्र[9] ये अपने याराँके पास। "भला है जो इस ठारते जाये न्हास[10]।।८०३।।
जो सौ बरस अछैंगे[11] हमें इस कने। रहेंगे इसी गिरफ्तारी[12] मने।।
हमन पर किसे[13] प्यार आसे[14] न याँ। हमारा दरद दुक्ख जासे[15] न याँ।।
सकल एक मत होयकर एक बार। किये होडी[16] यक मुस्तयद इस्तवार[17]।।८०६।।
दरया के उपर ज्यों रवाना हुये। सो खुशहाल सबके पराना हुये।।८१०।।
सो हाडी चलाने लगे हात हात। केतेक द्योस चलने लगे रात रात।।
दिसे मौज[18] कहीं ऊँवनीचे होर कहीं। ले जाता खडा बाव आ रहीं कहीं।।
कहीं डूबते होर कहीं तैरते। हलाकी सेती[19] फेरते फेरते।।
केतेक झाड वाँ देखने मेवादार[20]। हरेक झाड़ वा सों आया है बार[21]।।
हो खुशहाल यक दम वहीं दुक्ख छोड। सो मेवे लगे खावने तोड-तोड।।
किये प्यास होर भूँख कूँ दफ़ा[22] वाँ। हुआ दस्त[23] राहत केरा[24] नफ़ा वाँ।।८१७।।
हुई रात देक[25] उस जँजीरे मने[26]। रहने काँ फिकर[27] किये सब जने।।८१९।।
अथा झाड वाँ यक बुलँद सायादार। सो उस झाड पर चढके बैठे हुश्यार।।८२०।।
अँधारा गिरद[28] ज्यों हुआ ठार-ठार। जनावर निकल आये दरिया ते बार[29]।।
निहंगाँ[30] केतेक पहाड वैसे गँभीर। हतीसार के माहिमा बेनज़ीर[31]।।८२२।।
केतक शक्ल में ऐन[32] जैसे शगाल[33]। केतक बद-शकल[34] रीछ केरे मिसाल।।८२४।।

(ट) प्रातःकाल—

केतक उसमने के थे ऐसे बडे। देखे आदमी तो वही जले मरें।।८२५।।
नुरानी सुबा[35] का जो बारा हुआ। चँदरका झलक टुक एतारा हुआ।।८२९।।

---

१. दुष्ट, २. बाहर, ३. पाससे, ४. कुल्हाड़ी, ५. रस्सी, ६. पीछे, ७. बर्बाद, ८. वहीं, ९. चिंता, १०. भाग, ११. रहेंगे, १२. बंधन, १३. किसीको, १४. आयेगा (पं० गु०), १५. जायेगा, १६. नाव, १७. बराबर, १८. लहर, १९. मृत्युसे, २०. फलदार, २१. भार, लटक, २२. खतम, २३. हाथ, २४. आरामका, २५. देख, २६. द्वीप में, २७. चिंता, २८. आसपास, २१. बाहर, ३०. मगर, ३१. अद्वितीय, ३२. बिलकुल, ३३. सियार, ३४. कुरूप, ३५. प्रातः।

सितारे लगे डूबने ठार ठार। पँखी उठ लगे गुल करन यों पुकार ॥८३०॥
अरश का मुरग बाग कहने लगा। सुबा का ठँडा बाब बहने लग्या ॥
सुरज के उजाले कूँ जो खोज पाय। . . . . ॥८३३॥
रयन सब दरिया के देखत यो खलल[1]। छुपे ठार ते शाहज़ादा निकल ॥८३३॥
कहा यों कि "अब याँते जाना भला। बलायाँ ते अपसी[2] बचाना भला ॥८३४॥
सो चुन ल्यो मेवा निछल धात-धात। लिये बाँध तोशा[3] खुशी अपने साथ ॥
रवाना हुये बेग मिल सब जने। चले फिर तवक्कल[4] सों दरिया मने ॥
जफ़ा होर दुख देखते ठार ठार। . . . . ॥८९॥

(ठ) नारी का बन्दी—

. . . . । यकायक होर एक जज़ीरे में आय ॥८४०॥
हवा होर ठँडी छाँव खुश बाकी देख। लगे नींद सों नींद लेने टुक एक ॥८५२॥
सो ऐसे मने आप चोरों वहाँ। पिछाडे[5] बँदे सबके हत[6] जोर सों ॥
चले मारते लेके ख्वारी सँगात। हुवा दुक्ख याराँ कुँ भारी सँगात ॥
बहरहाल इस गुल में ते भार[7] पड। चल्या शाहज़ादा कहीं न्हास[8] कर ॥८५४॥
पकड शाहज़ादे कुँ दीं बंद कर। लेकर आइयाँ अपने राजे के घर ॥८५९॥
सो सैफुल्मलूक देखता हो वाँ। रखे थे तख्त[9] सूर सा दरमियाँ ॥८६०॥
सो बैठी हैं वाँ नार मकबूल[10] खूब। सुरज पाद ते खूब निर्मल सरूप ॥
मुरक्कस[11] ज़रीना[12] वो पेने है नार। खुश-आवाज़[13] सो देख बोली पुकार ॥
"कहाँ ते तुँ आया है ऐ नेकनाम। तुँ किस मुल्क का बोल तेरा मुकाम[14]" ॥
अथ[15] हाल जे दुक्ख का था जेता। सरासर[16] कह्या खोलकर सब वता[17] ॥८६६॥
सो वा नार भी यों कही उसके तैं। . . . . ॥८७४॥
''अगर तूँ मेरा दिल करे खुश एताल[18]। जतन से रखूँगी तुझे ज्यों निहाल''[19] ॥८७५॥
जो कुछ मनाई मनानेके धात[20]। कबूल्या नहीं शह उस आतिश सँगात[21] ॥८७८॥
सुनी नार सैफुल्मलूक से यो बात। गुसे सात दौडाई शह पर सो हात ॥८९४॥
. . . . । रखी क़ैदसों क़ैद कर सातरा ॥८८६॥
जो यक रात आधी रात गुज़री अथे। मँग्या न्हासने नाहै उस बंद से ॥८९०॥
मत्याँ[22] हो पडयां है किसे नैं खबर। निकल भार आया दरियाके उपर ॥८९३॥
यकायक तख्ता दिस्या यक वहाँ। निकल कर चल्या होर हुआ तब रवाँ ॥८९४॥

---

१. बाधा, २. अपनेको, ३. भरोसा, ४. इसी समय, ५. पीछेकी ओर, ६. था, ७. बाहर, ८. भाग, ९. सिंहासन, १०. पसन्द, ११. सुनहरा, १२. आभूषण, १३. सुकंठ, १४. निवास, १५. इसके बाद, (बाद-जाँ), १६. बिल्कुल, १७. उतना, १८. अब, १९. पौधा, २०. भाँति-भाँति, २१. आगके साथ, २२. मस्त।

(ड) राक्षसों के चंगुल में—

दरया में जफ़ा होर दुख देखता। सो डुबता निकलता चल्या तैरता ।।८९६।।
छ महीने पछीं यक जँजीरा[1] दिस्या। जजीरा देखत दिलमने[2] यों हस्यां ।।९००।।
कह्या दिल मने शाह गुर्बतसँगात[3]। "जजीरा यो दिसता है रोशन-सिफात[4] ।।९०१।।
मुबादा अछैगी[5] बलायां कु बल। मुबादा मुझे जाय चिंता निगल।।
चल्या फिक्र[6] करता जजीरे कने। सो रख तख्ता उसपर लग्या फीरने ।।९०३।।
यकायक्क राकस[7] निकल आके भार[8]। सो पा बास आदम की दौड्या पुकार ।।९०५।।
देख्या शाहजादा बलायां कु बल। सो तख्ता बिसर कर चल्या वैं निकल ।।९०७।।
जमीं[9] पर चल्या न्हासता न्हासता[10]। . . . . ।।९०८।।
जहां पर देखे उस बलायां कुँ शाह। पहाड दौडते हैं या बादल सियाह।।
सो फिर देखता होर अधिक न्हासता। अदिक न्हाटता होर सिना फाटता ।।८१०।।
छ म्हीने पछीं न्हासतान्हासता। खडा एक जजीरे[11] कने आसता[12] ।।६१४।।

(ढ) श्वमुखों, पृष्ठपादों और बंदरों के देश में—

जजीरे के भितराल-डरता घुस्या। वाँ सगसार[13] थक दौड उस पर धरया ।।७१९।।
सो सैफुल्मलूक कूँ पकड ले चल्या। मो जिवका भरोसा वहाँ ते टल्या ।।७२०।।
सो रोता वहाँ शहर में आइया। दिल अपना तमाशे सो भूलाइया ।।९२२।।
सो बदशक्ल[14] मूँ हैं कुते सारका[15]। वदन उस लटकता सुवर सारका।।
सो हत-पाव उनके हैं अद्म्यां के सार[16]। . . . . ।।९२३।।
कहा शहर मामूर[17] है जिन्स[18] ते। न थे वहां कोई सगसार ते ।।९२६।।
ले गये सामने अपने राजा के पास। खडे रह गये देखते आसपास ।।९२८।।
"खिला खाना मोटा करो" कर उसे। . . . . ।।९३२।।
. . . . । रखाने कुँ फरमाइया संगदिल[19] ।।९३३।।
रह्या बंदमें शाहजादा वहाँ। सो दिन बीस म्याने[20] यकायक वहाँ ।।९३४।।
खदेडे जो थे राकसां उसके तैं। जंजीरा[21] ह, हरेक ढूंढ आये वैं[22] ।।९३५।।
सो सगसार[23] का शाह पाया खबर। बहुत राकसां आये कर शहर पर।।
वहीं तफत होकर उठ्या सग्गसार। किया लडने ते मुस्तअद अपना भार[24] ।।९३६।।
हलों[25] शाहजादा जो निकल्या बहार। लग्या देखने शहर में ठार-ठार ।।९४०।।

---

१. द्वीप, २. दिलमें, ३. परदेशमें गया, ४. उज्ज्वल गुणोंवाला, ५. रहेगी, ६. चिंता, ७. राक्षस, ८. बाहर, ९. जमीन, १०. भागता-भागता, ११. द्वीप, १२. आकर, १३. कुत्ता, १४. कुरूप, १५. कुत्ते जैसा, १६. आदमी जैसा, १७. भरा, १८. सामान, १९. कठोरहृदय, २०. बीस दिनके बीच, २१. द्वीप, २२. वहां, २३. कुत्ता, २४. बाहर, २५. धीरे-धीरे।

इलाही[1] जा उस पाक आशिक़[2] उपर। मिल्या यक जज़ीरा उसे ख़ूबतर[3] ।।९५७
नज़र नैं पड्या कोइ सगसार वाँ। निकल शहर ते बेग हूवा रवाँ।।९४१
जो उस शहर में जा देख्या हर मकाँ। कि नैं आदमीज़ाद[4] का कुच निशाँ।।९५९
हरेक तरफ रोशन है बाजार चार। . . . . ।।९६०
भरे हैं वहाँ द्वालपाये[5] बहुत। न हिलते न चलते सो बैठे बहुत।।
सो लडने लगे द्वालपाये वहाँ। हलों आके लटपट हुये जो तहाँ।।
गले होर[6] हातां में पावाँ सों पेंच। लगे मारने हात सों खींच खींच।।
जो मादा किये उसकूँ दौडायकर। वहाँते लेगे अपने राजे के घर।।९६४
रखाने कूँ फरमाइया बंद कर। सो यक महल में जा रखे बंद कर।।९६७
केतक दिन उसी बंद में पड रह्या। निकल जाउँ कर फिक्र यक दिन किया।।९७०
. . . . । अधी रात गई फिक्र करने मने[7] ।।९७१
सो मद पी हुये थे मती वो जेते। जो बेसुद हो आसपास सगले सोते।।९७२
वहीं न्हास[8] कर जा जँगल में पड्या। . . . . ।।९७५
चल्या था द्योस न्हासता[9] जो तलक। जो ऐसे मने[10] रात आई बलग।।९७८
छुपा सूर भी शाब[11] ले नूर का। खड्या आ चंदा तब ले नूर[12] का।।९७९
चंदा चौकदन[13] रख्त साधा अथा[14]। तनावा सितारयाँ सों बाँध्या अथा।।९८०
सुरय्या[15] शमाजोत[16] लडकाय[17] कर। जगाजोत असमान पस सरबसर[18] ।।९८१
सो सैफुल्मलूक रैन सगली कट्या। उसी में उजाला रयन का फुट्या।।९८८
चँदर जब निकल रखा बाँध्या तमाम। शफक़[19] में खडा रह किया उस सलाम।।९८९
मती हात की नारके हात सों। शफक खून में थे उचा हात सों।।९९१।।
मुरग अर्श[20] का हाँक मारन लग्या। परिंद्याँ[21] मों अपने विचरने लग्या।।
परंदे लगे कूकने ठार-ठार। दरिन्दे[22] चले सैर करने कुँ भार[23]।
रयन ज्यों जनी सुबहके पूतकूँ। सो रोशन हुआ सुबह की रूत सों।।९९४
अदिक भूक होर प्यासते तिल्लमिल। लग्या सैर करने कुँ जंगले जंगल।।९९९
जो तनहाँ[24] जिधर चलके जाता अछै[25]। उधर का जँगल जगमगाता अछै।।१०००।
जहाँ लग जो बाघाँ दरिन्दे अथे। जहाँ लग जनावर परंदे अथे[26]।
बराबर उसीकेसो फिरने लगे। . . . . ।।१००२।
जंगल में जो कईं कैं फलफलाल[27] अछै। . . . . ।।१००३।
सकल जायें चुन चुन के ल्याने के तैं। मलिकज़ादे[28] कुँ ला खिलाने के तैं।।१००४।

---

१. भगवान्, २. पवित्र प्रेमी, ३. सुन्दर, ४. मानव, ५. पक्षी, ६. और ७. करनेमें, ८. भाग, ९. भागता, १०. इसी समय, ११. जवानी, १२. शक्ति १३. चारों तरफ, १४. था (हता), १५. सप्तर्षि तारे, १६. मोमबत्ती प्रकाश, १७. लटका १८. पूरी तौरसे, १९. लालिमा, २०. स्वर्ग, २१. पक्षी, २२. श्वापद, २३. बाहर २४. अकेला, २५. रहे, २६. थे (हते), २७. फलफलारी, २८. राजकुमार।

सो कहने लग्या "ऐ खुदाबन्दगार[1] । . . . . ।।१००९।।
कहाँ ते मुजे तूँ कहाँ लाइया । सो ला किस बला में सँपडाइया[2] ।।१०१०।।
जिधर देखता हूँ उधर बेक़यास[3] । जंगलके जानवर खडे आसपास ।।
गमूँ[4] क्यों इनन साथ दिन-रात मैं । करूं इस गुंग्या साथ क्या बात मैं ।।१०१२।।
सो यक रात अधीरात गुजरी देखत । जगत नैन[5] कूँ नींद पकडी देखत ।।१०१९।।
जनावर लगे ऊंघने ठार ठार । पडे बेखबर सब न कोइ होशियार ।।१०२०।।
चल्या उस अधी रात वाँते निकल । बडे दगदगे[6] साथ जँगले जँगल ।।१०२२।।
केतेक दिनकूँ जों बाट पाया टुक एक । नज़र तल पड्या दूरते शहर एक ।।१०२४।।
जो उस शहर का कैसरीया था नाँव । सफ़ा जा-व-जा[7] हो हवा ठाँव-ठाँव ।।१०२५।।
जो ल्या सातों अस्मान उसमें छिपाँय । तो यक कोने में उसके सब छुपके जाँय ।।१०२७।।
निछल[8] चौकदा[9] रस्ते बाजार ज़ार । . . . . ।।
वले[10] आदमीज़ाद[11] नैं कोइ वहाँ । भरे हैं वहाँ नादरे जाँ-तहाँ ।।
हकूमत[12] उननका च[13] है ठार-ठार । उननका च चलता है वाँ कारोबार ।।१०३०।।
देखे शाहज़ादे कुँ जो सरबसर । लेगे अपने राजे कने क़ैद कर ।।
जो देखता है वां शाहज़ादा निझा[14] । अजायब तरह का है ऊँचा छजा ।।
रखा है जडत तख्त म्याने मियाँ[15] । ज़मीं वाँ की दिसती है ज्यों आसमाँ ।।
छबीला जवाँ एक ज्ञानी सुगड । खुश उस तख्त उपराल बैठा है चड ।।
सकल बाँदरे दायरा छोडकर । खडे हैं अदब साथ[16] हत जोड कर ।।
बुला बाँदरयां कूँ कह्या ओ जवाँ । कि कुरसी लेकर आ रखो म्याने म्याँ ।।
लेकर आये जो वेग कुरसी निछल[17] । . . . . ।।१०३७।।
मलिकज़ादे[18] कूँ वैसला[19] उस उपर । लग्या पूछने हाल उस सरबसर ।।
कि "ऐ जाँ, तूं काँ ते आया है कि । कहाँ कहाँ ते किस गाँव जाता है कि ।।
तुं किसका है जाया तेरा ठाँव कौन । कहाँ चाँद तेरा है असमान कौन" ।।१०४०।।
जो ऐसी ओ शीरीं-ज़बानी किया । मलिकज़ादे कूँ गाल[20] पानी किया ।।१०४३।।
सो एक धोरेते[21] हाल अपना अथा । जो कुछ तिलमिलाना व तपना अथा ।।१०४४।।
सरासर कह्या खोल उस जान सों । लग्या पूछने उसकूँ फिर ज्ञान सों ।।१०४६।।
सो पूछ्या कि "इस राज इस ठार तूं । मारातिब[22] यो पाया है किस धात सों ।।१०४९।।
तुजे बाँदर्या साथ नमता है क्यों ।" . . . . ।।१०५०।।
कह्या तव वो राजा कि "सुन ऐ अनीस[23] । मेरा बाप था मिल्क केरा-रईस ।।

---

१. स्वामी, २. पहुँचाया, ३. अपार, ४. बिताऊँ, ५. लोकनेत्र, ६. भय, ७. जगह-जगह, ८. निर्मल, ९. चारों तरफ, १०. लेकिन, ११. मानव, १२. शासन, १३. उनका ही, १४. ध्यान कर, १५. बीचमें, १६. स-सम्मान, १७. स्वच्छ, १८. राजकुमार, १९. बैठा, २०. गलाकर, २१. एक तरफसे, २२. दर्जे, २३. मित्र ।

दिया भेज मुंज करने सौदागरी। . . . . ॥१०५
यकायक सो कश्ती[1] फुटी मौज मार। सो तख्ते उपर एक निकल्या बहार[2] ॥१०५
वहाँ बाँदरे फौज आइये। पकड मुंजे बातें यो लाइये॥
सितम-ज़ोर[3] सों बेसला तख्त उपर। दिये पादशाही मुंज एस वक्त पर॥
दोहाई मेरे शहर में सब फिराय। चल्या है रसम[4] इस वज़ा का[5] मुदाय[6]॥
जो मरता है राजा उननका कधीं। करार[7] उनकूँ अछता[8] नहीं है कहीं ॥१०६
उनन के अवलके महाराज की। सो बेटी है अतिशर्म होर लाज की ॥१०६
गमूँ[9] उस सेती मैं कि हम-जिन्स[10] है।" . . . . ॥१०६
दोनों मिलके खुशज़ौक़[11] सों खान खाय। रंगीला शराब अर्गवानी[12] मँगाय ॥१०६
पियाले लगे ऐश सों झेलने। हुये मुस्तअद[13] बाँदरे खेलने॥
अपस में अपस ताल मंडल बजाय। विकट वाज़ियाँके तमाशे दिखाय ॥१०७
कुलाँट्याँ उछलने लगे मेल खूब। . . . . ॥
हुनर-भेद[14] अपना जेता था दिखाय। बहरहाल[15] दोनों कुँ खुश कर हँसाय॥
केतक द्योस शहज़ादे कूँ रख वाँ राज। . . . . ॥
पया पै[16] रख इस धात[17] दिन तीन चार। शिगुफ्ता[18] किया माँदगी सब उतार॥
समज ख्याल उसका कह्या यों उसे। कि "तूँ ज्यों सो आशिक हुआ है जिसे ॥१०७
यहाँ कोइ उसते खबरदार नै। किसी मुल्क में ओ ते इज्हार[19] नै ॥१०७
तवक्कल[20] सों कर आपने मन कूँ शाद। मुलुक ढूँढ़ होर पा तूँ अपनी मुराद" ॥१०८
कर इज्हार अपने जेते मेह्‌र ते[21]। रवाना किया खुश उसे शहर ते ॥१०८
चल्या शाहज़ादा ले बत्या गमी। उठी सिल्गकर विरह की आग भी ॥१०८
सरासर[22] सरीर आपना जालता। अँगारे अँझू[23] गर्म अधिक डालता ॥१०९
निपटे निपट जँगले जंगल झाड। . . . . ॥
उलंगता[24] गया एक जज़ीरे कने। जो देखता है जा उस जज़ीरे मने[25] ॥१०९
भरे हैं मकोडे वहाँ ठार-ठार। हती सारके आदम्याँ खानहार ॥१०९
झुके होते फिरते हैं चारो केतैं। सो खाने मंगे[26] उस विचारे के तैं॥
लग्या फिर वह जिवके डरों न्हासने[27]। सो देख्या पँखी एक ऐसे मने[28]॥
बडा धड शुतुरमुर्ग के सारका[29]। . . . . ॥
किनारे पै दरिया के बैठा है आ। पकड वैं लिया उसके दो पाँव जा॥
चल्या उसकूँ ले मुर्ग[30] उस ठार ते। उड्या होर हुआ गायब संसार ते ॥११०

---

१. नाव, २. बाहर, ३. जुल्म, जबर्दस्ती, ४. रवाज, ५. प्रकार, ६. सदा, ७. बं
८. होना, ९. गुजारा करूँ, १०. सजातीय, ११. सुरुचि, १२. लाल, १३. तैया
१४. गुणका रहस्य, १५. सब तरहसे, १६. लगातार, १७. भाँति, १८. उत्फुल्ल, १९. प्रक
२०. भरोसा, २१. कृपासे, २२. बिल्कुल, २३. आज भी, २४. लाँघता, २५. द्वीप
२६. चाहे, २७. भागने, २८. इसी समय, २९. सदृश, ३०. पक्षी।

उलँगता उलँगता केतक पार[1] वो। चल्या एक समुन्दर[2] के पेलाड[3] वो ॥११०१॥
चल्या जो सो धन पाड वतन आपने। . . . . ॥१११११॥
वहां आपने ठार का खोज काड। . . . . ॥१११३॥
उतार उस उपर शाहज़ादे के तैं। बच्याँ पास अपने चला दौड वैंड ॥१११५॥
अवल ते यक आदम जो वैं मार कर। रख्या था जतन आपने ठार पर ॥१११६॥
सो टुकडे कर उस बाँट भाने[4] लग्या। बच्याँ ताइँ अपने खिलाने लग्या॥
देखत शाहज़ादा जो उस झाडतल। पडै सो जहाँ के तहाँ हाड गल॥
यकायक आया उसे भाने[5] एक साँप। बडा सारखा धड जमीं कूँ ले ढांप॥
धुलारा[6] उचाता[7] वहाँ आइया। बच्याँ कूँ सो खाने केतैं धाइया ॥११२०॥
चडया झाड उपराल दे झार्प[8] मार। सब उसके बच्याँ कूँ निगल एक बार॥
लिया उस मुरग की मुँडी जायकर। भसम कर सुटया[9] तल मने[10] खायकर ॥११२२॥
जँगल बीच पड लाख दुश्वार सात[11]। लग्या न्हासने[12] ताइँ बाकी सँगात ॥११२६॥
. . . . । सो उठता वा पडता हरेक ठाव में ॥११२७॥
अधिक प्यास होर भूक ते तिलमिले। चल आया हलौं एक हरे झाड तले॥
सो वाँ एक चश्मा अथा आबका[13]। ख़जल[14] उस अँग[15] आब-गुल्लाल था ॥११२९॥
पडया था वहाँ गैंबका[16] एक अनार। सो रँग-रस भरया (होर) मिठा दानेदार ॥११३०॥
भुका था सो वैं[17] छील खाया उसे। रग-रग[18] मने जीव[19] आया उसे॥
पिया नीर चश्मे मने जायकर। किया तकिया उस झाड तल आय कर॥
पंखी एक ऐसे में मुरगोल[20] उठा। . . . . ॥
"सुता है जवाँ यो जो साहेबजमाल[21]। हुआ है जो विरहे के गम में निढाल ॥११३४॥
बडा कुछ बला[22] एक यहाँ आयेगा। सो इस बेगुनह[23] ज्वान कूँ खायेगा॥
पँखा दूसरा सुन बुरा मान कर। दरीगें[24] अधिक मन मने आनकर॥
लग्या पूछन उसकूँ यो "क्याहै कना[25]। कि हम बेगुनहका सो क्या है गुना" ॥११३७॥
कह्या वो पंखी खोल इस धात[26] तब। . . . . ॥११३८॥
"सुन्या हूँ कि कैं[27] बाग यक-रुखवन[28]। है उस बाग का नाँव औतार वन ॥११४२॥
वहां झाड एक अन्नार का। लग्या है उस यक फल जो औतार[29] का ॥११४३॥
सो यक जिन ने उस बाग कूँ पाइया। वो औतार फल जाय कर लाइया ॥११४७॥

---

१. पहाड़, २. समुद्र, ३. परे, ४. बहाने, ५. इसी समय, ६. धूला, ७. उठाता, ८. छलांग, ९. फेंका (पंजाबी), १०. नीचे, ११. कठिनाई के साथ, १२. भागने (पंजाबी), १३. पानीका, १४. लज्जा, १५. आगे, १६. दिव्य, १७. वहीं, १८. रग-रगमें, १९. सहारा, २०. कलरव, २१. सुंदर, २२. आफत, २३. निरपराध, २४. पछतावा, २५. कहना, २६. भाँति, २७. कहीं, २८. एकतरफा, २९. अद्वितीय, सर्वश्रेष्ठ।

यकायक प्यासा हो पानी की आस । पिने नीर आया जो चश्मे के पास ।।
वले फिरके जाते वकत नाबकार[1] । विसर कर गया था वो औतार अनार ।।
उसी फल कूँ यो ज्वान खाया अहै । वले[2] भेद इसका न पाया अहै ।।११५०।।
विसर गया सो वो जिन आग हो । बसाने[3] वला उस प आता है वो ।।
अगर अकल कुछ होयगा इसमने[4] । खातम[5] सुलेमान का इस कने ।।
वो जिन फिरके जिस वक्त आयेगा । जो अन्नार ढूँढने के तैं धायेगा ।।
कना[6] यो गजब सों[7] उसे हाँक कर । कि ऐ जिन कुढंगींना[8] जिस नावकर ।।
वो औतार वन था सुलेमान का । दग़ाबाज[9] उसके फल उस ठार का ।
तुजे तोडने हात किस धात[10] आय । तु नकाम रह रह किया हाय हाय ।।
सुलेमान भेजा अछै याँ मुंजे । लेकर आओ बंद कर पिछौडे तुजे ।।
दिया है निशाँ[11] आपना मेरे हात । खडे हो न देसूँ[12] तुजे एक सात[13] ।।
ओ जिन ज्यों सुलेमान केरा निशान । देखेगा तो उड जायेगा वैं[14] परान" ।।११५९।।
सो सैफुलमलूक ज्यों सुना यो विचार । उडी मार कर जा छिपा एकठार ।।
ज्यों आया वो जिन दौड चश्में कने । यकायक आया निकल भार उने ।।
अंगूठा दिखाया उसे हाँक मार । सो हैबतज़दा[15] होके बे-इख्तियार[16] ।।

(ण) प्रेमिका का पता—

जो निकल्या वहां ते सो सैफुलमलूक । पडचा जाके होर एक जंगल में चूक ।।
अकेला जो आँगे[17] हो जाने लग्या । कठिन बाट कूँ चल घटाने लग्या ।।११७०।।
. . . . । नज़र[18] चार तरफ़ा[19] जो दौडाइया ।।११७४।।
सो बेमिस्ल[20] नकशे[21] रँगारंग महल । सफा[22] दार यकायक पडचा दिप्टतल[23] ।।११७५।।
जो नज्दीक आया खुशी साथ जब । अपस ते अपे[24] खुल पडे कुफ्ल[25] सब ।।११७६।।
दरूनी[26] चल्या ज़ौक़[27] था बेशुमार । निझा[28] देखता जो वहाँ ठार-ठार ।।११७७।।
सँवारे अहै गैब[29] ते सब महल । बिछाने बिछाये हैं जाँ-ताँ निछल ।।
रखे हैं तखत होर उसके उपर । सुता है ले मुँह ढांप कोइ बेखबर[30] ।।
न हिलता न चलता है उस ठार ते । न धरता खबर कुच्छ संसारते ।।११८०।।
चल्या धंसके देख्या नजीक जा उसे । सो नारी है मकबूल[31] सोती दिसे ।।११८२।।

---

१. दुष्ट, २. लेकिन, ३. बैठाने, ४. इसमें, ५. अंगूठी, ६. कहना, ७. गुस्सेसे, ८. गंदा, ९. आज्ञा विना, १०. भाँति, ११. चिह्न, १२. नहीं दूंगा (पंजाबी), १३. साथ, १४. वहीं, १५. भयभीत, १६. बेबस, १७. आगे, १८. दृष्टि, १९. चारों ओर, २०. अनुपम, २१. चित्र, २२. स्वच्छ, २३. दृष्टिमें, २४. अपने आप, २५. ताला, २६. भीतर, २७. खुशी, २८. ध्यानकर, २९. देवानुभाव, ३०. बेहोश, ३१. पसंद, मनोहर ।

न उस सार[1] सूरत मने[2] हूर कैं[3]। न वैसी तजल्ली सेती[4] सूर कैं।।
एके बार बैठा नजीक बेकरार[5]। मगर[6] नींद ते होयगी[7] कर होशियार।।१९।।
सो हरगिज वो हुशियार होती नहीं। मुझे त्यों च[8] दिसती है सोती नहीं।।
डरचा होर मँग्या[9] फिरके[10] जाने वहीं। सो देख्या पटी एक सिराने वहीं।।
उधार[11] वो पटी देखता है जो पर। सो बाँध्या है नींद कोइ उसके ऊपर।।
सुटचा[12] फाड जों टुकडे कर वो पटी[13]। वह मकबूल[14] यकायक वहीं जाग उठी।।
अँग[15] हो किया शाहजादा सलाम। मुख उसका देखत जौक[16] पाया तमाम[17]।।
सो हैरान हो बैठी वो उस घडी। अधर खोल ज्यों फूलकी पाँखुडी[18]।।११९०।।
कही यों कि "यां आदमीज़ाद[19] कौन। . . . . ।।
सही कह कि तू कौन किस ठार का। खबर क्यों[20] लिया है तुं इस ठार का" ।।११९२।।
तब उस शाहज़ादा उठा बोलकर। हक़क़त[21] सो अपना कह्या खोलकर।।११९४।।
"ऐ नार, किस्सा[22] है मेरा दराज़[23]। कहूँगा सो मुनने कुँ आसे[24] न बाज।।
हुये बरस तेरह मुझे रात-दिन। जो फिरता हुँ बीताज[25] सर ले कठिन[26]।।
बलायाँ[27] बहुत सोसियाँ[28] विरह क्याँ। . . . . ।।
हुआ इश्कते हाल सब पायमाल[29]। न जानूं होवनहार है क्यों इताल।।
बदीयुल्-जमाल एक है शहपरी[30]। वो सूरत पँ अपने मुजे यो करी।।
कहूँ क्या तुजे ऐ शाह शक्कर-लबा[31]। कि याँ लटपटाती है मेरी ज़बा।।१२००।।
न वो मिलती है न गुलिस्ताँ-अरम। यों उस ताँई खोता हूँ अपना जनम।।
तले धरतरी[32] होर उपर आसमाँ। दुखों पीस जाताँ हूँ म्यानेमियाँ[33] ।।१२०२।।
यकायक अल्ला जो ल्याया मुँजे। सो इस महल में आज पाया तुजे।।१२०५।।
तेरा हाल होर वज़ा[34] क्या है सो बोल। छुपा तूँ न मुजते दिल खोल खोल"।।
वो अँमृत के गुन की सगी मेहरबान। फरासत[35] सों उसका जल्या दिल पिछान।।
कही यों कि "बेटी हूँ मैं लाज की। सिरन्दीप[36] के मुल्क के राज की।।
हमें[37] दरअसल[38] तीन भानाँ[39] अथ्याँ[40]। सो एक दिन रज़ा[41] बाप की ले वत्याँ[42]।।
गिया बाग में सैर करने केतैं। लग्याँ तैरने हौज़ख़ाने[43] में वें[44] ।।१२१०।।
सो दरहाल[45] वहाँ एक वारा[46] उठचा। चमन दर चमन[47] सब धुलाराँ उठचा।।

---

१. वैसा, २. रूपमें, ३. कहीं, ४. तेजवाला, ५. अधीर, ६. कि, ७. जागी, ८. वैसी ही, ९. चाहा, १०. लौटकर, ११. उठा, १२. फेंका (पंजाबी), १३. पट्टी, १४. प्यारी, १५. आगे, १६. प्रसन्नता, १७. पूर्ण, १८. पंखुड़ी, १९. मानव, २०. कैसे, २१. वास्तविकता, २२. कथा, २३. लंबी, २४. आवेगी, २५. दुःख, चिन्ता, २६. कठोर, २७. आफतें, २८. सहा, २९. बर्बाद, ३०. परियोंकी रानी, ३१. मीठे ओठवाली, ३२. धरित्री, ३३. बीचमें, ३४. ढंग, ३५. छुट्टी, ३६. लंका, सिंहलद्वीप, ३७. हम सब, ३८. वस्तुतः, ३९. बहिनें, ४०. थीं, ४१. अनुमति, ४२. वहाँ, ४३. कुंडगृह, ४४. वहीं, ४५. उसी समय, ४६. तूफान, ४७. चमने-चमन ।

सो उस धूल[1] में ते जनावर बडा। उचाकर मुजे ले गया वें उडा।।
हवा पर चल्या दौड पँख मार-मार। रख्या मुँजकूँ ल्याकर सो इस ठार उतार।।
अँगे[2] हो मेरे आ किया वैं[3] सलाम। कह्या "डर नको ऐ चँचल नेकनाम।।
कि आशिक[4] हूँ मैं तुज उतम माह[5] का। कि बेटा हूँ परियाँ के मैं शाह का।।
बहन-भनइ जो यक मुँजे आज है। वह दरियाव कुल्ज़म[6] केरा राज है।।
इसी महलम्याने[7] है मेरा मुक़ाम[8]। न मेरा है यो बल्कि तेरा मुक़ाम।।
रख्या यों लेकर आके इस ठार मुँज। किया यौ बला में गिरि्फतार[9] मुँज।।
यो जागा जज़ीरा है अस्फ़न्द का। फरहबख्श होर लाख आनन्द का।।
महीने कुँ यकबार आता है वो। मुँजे देख फिर फिर के जाता है वो।।१२२०।।
मैं उसका कह्या न सुनूँ देखकर। गुसा[10] बेनिहायत[11] पकड मुँज उपर।।
मँतर सों मेरी नींद कूँ बांध आय। अकेली मुँज इस महल में छोड जाय।।
सो तूँ जिस पटी कूँ सुट्या[12] फोडकर। बँध्या था मेरी नींद उसके उपर।।
इसी वज़ा[13] सों बरस बारह हुये। मेरे द्योस चुपके अवारा[14] हुये।।१२२४।।
न कैं[15] जा द्योस अछ[16] मेरे पास तूँ। न को ल्याव दिलमें बसबार[17] तूँ।।१२२७।।
वो आसे न अजहुँ न हो घाबरा[18]। अझूँ द्योस बाकी हैं यक सातरा[19]"।।
दे शाहजादे कुँ धीर[20] इस घात[21] सों। उठी बोल फिर यों मिठी बात सों।।
कि "इस वक्त पर मैं तुजे ऐ जवाँ। तेरी मोहनीकी जो देउँगी निशाँ[22]।।१२३०।।
कहूँगी वो आगे अरमकी खबर। तो क्या अँपडैगा[23] मुँजकुँ इसका समर[24]"।।
वो गुनवंत सखी जो कही अपनी बात। खुशी सों फुगी[25] शाहज़ादे की ज़ात[26]।।
अदब की रविश[27] साथ सिर मुँह पर धर। दुआ[28] होर सना[29] उसकूँ लै धात[30] कर।।
कह्या यों कि "ऐ मोहिनी, नेकनाम। फ़िदा[31] तुज योते जीव मेरा तमाम"।।१२३४।।
लगी खोल कहनेकूँ "सुन ऐ जवान। कि मुँज पीठकी थी नन्ही एक भान[32]।।१२४२।।
हमें तीन भानाँ[33] में वो खूब[34] थी। सो बेमिस्ल आलम में[35] महबूब थी।।
तन उसका निछल[36] मुख मकाता[37] अछै[38]। अँबर मुश्क[39] का वास आता अछै।।१२४४।।
सो ले यक दिन संगात हमनाकुँ[40] भाइ। खुशी साथ यक बाग में लेकर आइ।।
केतेक द्योस वहाँ दिमानी[41] किये। अधिक जश्न वाँ खुसरवानी[42] किये।।

---

१. धूल, २. आगे, ३. वहीं, ४. प्रेमी, ५. चंद्रमा, ६. लालसागर, ७. महलमें, ८. निवास, ९. पकड़, १०. क्रोध, ११. अत्यंत, १२. फेंका (पं०), १३. इसी प्रकार, १४. बर्बाद, १५. नहीं (मराठी), १६. रह, १७. संदेह, १८. घबड़ाया, १९. थोड़ा, २०. धैर्य, २१. भाँति, २२. चिह्न, पता, २३. मिलेगा, २४. फल, २५. फूली, २६. व्यक्ति, २७. सम्मानके ढंग, २८. आशीर्वाद, २९. प्रशंसा, ३०. बहुत भाँति, ३१. नौछावर, ३२. बहन, ३३. बहनें, ३४. सुंदर, ३५. दुनिया, ३६. निर्मल, ३७. महकता, ३८. रहे, ३९. अंबर-कस्तूरी, ४०. हमको, ४१. प्रसन्नता, ४२. राजसी।

यकाएक औरत इस उस ठार पर। हरे झाड पर ते उतर आयकर ।।
अँगे हो मेरी माँ कुँ कीना[1] इलाम । उठी बोल इस धात[2] हो हम-कलाम[3] ।।
कि 'परियाँ के राजा की औरत हूँ मैं । देखन आइ हूं तेरी बेटीके तैं ।।१२५०।।
सकल शहपरयाँ[4] में मेरा नाँव है। मेरा गुलस्ताने-अरम ठाँव है ।।
जो है मुंज कने एक बेटी नन्ही । सो है वो मेरे नैनकी रोशनी ।।
रखा उसका है नँव बदीयुल्जमाल । है उस साथ मेरा मुहब्बत कमाल[5] ।।
बहुत दिन ते अछती[6] हूँ इस ठार मैं । अधिक खुश किये हुँ यो गुलज़ार[7] मैं ।।
तुझे देख मैं ज़ौक़ पर ज़ौक़[8] पाइ । अछो[9] क़ायम[10] यो आजते आनाइ[11] ।।
यो बेटी सो तेरी बेटी है मेरी । यो बेटी मेरी सो यो बेटी तेरी ।।
पिला प्यारते दूद तेरा इसे । कि मैं देउँगी दूध मेरा उसे' ।।
कर इस वज़ा[12] सो बात एकसकुँ एक । रहे दो जनें मिल अपस एकों एक ।।
बड़ी होगयी वो चंचल आज कूँ । अछेंगी[13] सुरजते निछल[14] आज कूँ ।।१२६०।।
में अपने नगर बीच अछती जो आज । तो करती हरेका वजाँ तेरा इलाज[15]" ।।१२६२।।
सो शाहज़ादा सुन कर हुआ यों खुशहाल[16] । कह्या सुन "ऐ रोशन[17] तँ साहेब-
जमाल[18] ।।१२६४।।
कि मैं अर्ज[19] करने भी मँगता[20] हुँ तुज" । . . . . ।।१२६५।।
कही मोहनी "बोल क्या है सो मुंज । कहूँगी मैं उस बात का जाब[21] तुज" ।।१२६७।।
कहा "जब वो देव आवे इस ठार पर। सो तूँ पूछले उसके जिव की खबर।।
मेरा जीव तुज हाथ में है यहाँ । तेरा जीव मालूम नै मुँज कहाँ ।।
यो खूब[22] खबर उसते ले मुजकना[23] । तो मै कर सुटूँ उसकुँ तिलमें[24] फ़ना[25] " ।७०।१२।।
यो सुन मोहिनी कइ[26] शकरलब[27] कुँ खोल । "लिये हूँ खबर उसते कहती हूँ खोल ।।
कि यक ग्रोस मुंजकूँ रख्या सो परा[28] । लग्या मुंज सों बाताँ करन बहुतेरा ।।
कह्या याँ कि तुज बिन नहीं कोइ मुँज ।' . . . . ।।१२७३।।
मैं इस बातकूँ जाव दी यों फिरा। . . . . ।।१२७५।।
'तेरे हाथ में है मेरा जिव तो यहाँ । वले[29] कह मुंजे है तेरा जीव काँ' ।।१२७७।।
सुन्या मुँज जबाँ[30] ते ओ यो बात ज्यों । उठ्या बोल कर फेर मुंज साथ यों ।।१२८१।।
'मैं ऐ मोहिनी तुज ते अब क्या छिपाऊँ । कता हूँ मेरा जीव रहता सो ठाँव ।।१२८२।।
कि है एक संदूक शीशे केरा । सो उसके दरुनी[31] अहै जिव मेरा ।।१२८४।।
वो संदूक सो है दर्‌या के भीतर। अंगूठी सुलेमान की कोई अगर ।।

---

१. किया (पं०), २. भाँति, ३. संभाषण, ४. परियाँ, ५. पूर्ण, ६. रहती, ७. फुलवाड़ी, ८. प्रसन्न पर प्रसन्न, ९. रहो, १०. स्थायी, ११. मित्रता, १२. ढंग, १३. रहेगी, १४. निर्मल, १५. दवा, १६. प्रसन्न, १७. प्रकाशमान, १८. सुंदरी, १९. निवेदन, २०. चाहता, २१. जवाब, २२. अच्छी, २३. मेरे पास, २४. पलमें, २५. नाश, २६. कही, २७. शक्कर जैसे मीठे ओठ, २८. परीका पुरुष, २९. लेकिन, ३०. जीभ, ३१. भीतर ।

दर्या के नजदीक जाके दिखलायेगा । निकल ओ सँगाते च[1] उपर आयेगा" ।।१२८६।।
सुन्या शाहज़ादा जो इस बात कूँ । कह्या खुश हो उस पद्मिनीज़ात[2] कूँ ।।११२८८।।
कि "ऐ मोहिनी पाक दामान[3] की । अंगूठी तो हजरत सुलेमान की ।।
मेरे पास हाज़िर[4] है दव में इताल[5]" । . . . . ।।१२९०।।
सुलेमान की उस अंगूठी कूँ देख । हुये शाद भौतेच[6] एकस ते एक ।।१२९१।।
पकड़ हाथ वें[7] बाटसारु[8] हुये । . . . . ।।१२९२।।
एकस कूँ यकस[9] जल्द हो पाँवसार[10] । शिताबी सेती[11] आय दरिया-किनार ।।१२९३।।
दिखाये दरिया कूँ अंगूठी निछल[12] । सो दरहाल[13] संदूक आया निकल ।।
जो एक बारगी पाय दोनों जनें । उचा[14] कर लेकर आये दोनों जने ।।
वो संदूक ज्यों देखिये खोलकर । जनावर अथा एक उसके भितर ।।
सुटे[15] उस जानावर की मूँडी मरोड । कि चरा संदूक कूँ तोड़-फोड़ ।।
सो दरहाल पैदा हुआ यक गुबार[16] । बरसने लगा मेह[17] लोहु बेशुमार ।।
पहाड़ सारखा सिर यक उपराल ते[18] । पड्या सो हिल्या धरती पाताल ते ।।१३००।।
खुदा इस बला ते किया ज्यों खलास । सो चलने कूँ बातें किये फिक्र खास[19] ।।१३०२।।
दोनों वें[20] न्हनी एक होड़ी[21] किये । . . .अजायब केतक देखते झाड़पाड़ ।।१३०६।।
छ महीने तलक दुख जफ़ा[22] देख-देख । उलँगते अजायब[23] जँज़ीरे[24] कतेक ।।१३०७।।
हो माँदे बहुत एक जज़ीरे में आय । केतेक द्योस[25] रह (के) वहाँ अम्न पाय ।।१३०९।।

(त) अच्छे दिन—

सो यक दिन निकल शाहज़ादा वहाँ । हलों[26] सैर करने लग्या जान थान ।।१३१२।।
सो आदम केतक वाँ पड़े दृष्टितल[27] । यकायक खुशी आइ मन में उबल ।।१३१३।।
सो नजदीक जा सबकूँ कीता सलाम । . . . . ।।१३१४।।
. . . . । मिले यक ठार बैठे सो ना फाँक[28] वै ।।१३१५।।
हुये यकजहत[29] साथ ज्यों हम-कलाम[30] । सो बोल्या उनन धोरे[31] दुख अपना तमाम ।।१३१७।।
जो यकबारगी[32] लोग उस ठार के । सुने किस्से उसके होर उसनार के ।।१३१९।।
कहे यों कि "ओ जगमगाते शमे[33] । . . . . ।।१३२०।।
है बेटी हमन राज के भाइ की । जनी[34] भाई जीती उस जाई की ।।
सिरन्दीप[35] के बादशाही सँगात । है उसका जीता बाप हाली-हयता[36] ।।१३२२।।

---

१. साथ ही, २. पद्मिनी की जाति, ३. सती, ४. मौजूद, ५. इस समय, ६. बहुत ही, ७. वहीं, ८. बटोही, ९. एकके ऊपर एक, १०. पाँवसे, ११. जल्दीसे, १२. निर्मल, १३. इसी समय, १४. उठा, १५. फेंके (पंजाबी), १६. गर्द, १७. मेघ, १८. ऊपर से, १९. विशेष खयाल, २०. वहीं, २१. नाव, २२. जुल्म, २३. अद्भुत, २४. द्वीप, २५. दिवस, २६. धीरे-धीरे, २७. दृष्टिमें, २८. फरक, २९. एक ढंग, ३०. संभाषण, ३१. उनके पास, ३२. एक ही बार, ३३. मोमबत्ती, ३४. जननी, ३५. सरन्दीप, सिंहलद्वीप, ३६. जिन्दा ।

चचा उस न्हनी का सो एके च[1] है । वो वासित कते[2] सो नगर बीच है ।।
नीका नाँव उसका (है) ताजुल्मुलूक । . . . . ।।
हमें सब हैं रैयत[3] उसीके तमाम[4] । यहाँ ते उसीका है आगे मुकाम[5] ।।
ज्यों ऐसी खबर खल्क[6] ते पाइया । सो दौड़ा सहेली कने आइया ।।
कहा खोल दर-हाल[7] अहवाल उसे । खबर दे किया भौत खुशहाल उसे ।।
फरागत[8] के मिल दोनों होडीपें चढ़ । . . . . ।।
चले शहर वासित कदना[9] जौक सूँ[10] । लगे वाट चलने कूँ अति शौक[11] सूँ ।।१३२९।।
केतक दिन पछी शहर वासित कूँ पाय । . . . . ।।१३३१।।
जो नज़दीक उस शहर के खास बाग । अथा[12] सो रहे वाँ लगे देख चिराग ।।
रयन जाग रब्बी[13] के फिरमान[14] सों । जो आया निकल सूर आसमान सों ।।
सो उस शहर का बेबदल[15] शहरयार[16] । नेकोकार[17] ताजुल्मुलूक नामदार ।।
उसी बाग में खुश्रवीदाब[18] सों । करन सैर आया बड़े लाब[19] सों ।।
सो नागह[20] नजर उसकी उस ठार पर । पड़ी शाहज़ादे के दीदार[21] पर ।।
सो नैना कुँ उसके लगा सुबक[22] भौत । . . . . ।।
बड़ा बख्तबर[23] कोइ है कर पिछान । नजिक बैसला (करके) उस 'कूँ' कह्या ।।
"कहो काँ ते आया ऐ जवान तूँ । सो मँगता[24] है जाने कुँ किस ठाँव तू ।।
क्यों आना हुआ याँ तेरा बोल मुंज । जो कुछ है तेरा माजरा[25] खोल मुंज" ।।१३४०।।
. . . . । लगा बोलने हाल सैफुल्मलूक ।।
कि "ऐ शाह गमगी[26] हो संसार ते । मैं आया यहाँ मिस्र के शार[27] ते ।।१३४२।।
कि लै[28] दिनते फिरता हुँ गुर्बत[29] मने । जनम सब गँवाया हुँ शिद्दत[30] मने ।।
कि होसे[31] न मुजसा दुख्यारा कहीं । . . . . ।।१३४५।।
सुन्या यो जो ताजुल्मलुक शहनवल[32]। . . . . ।।१३५२।।
कि बोल्या जबाँ खोल "सुन ऐ जवाँ । नको[33] डर कि अल्लाह है मेहरबाँ ।।१३५३।।
कि गमनाक[34] हूँ मैं कि लै सालते । . . . . ।।
भतीजी मेरी एक साहेबजमाल[35] । गँवाई गई सो हुये बारह साल ।।
दुख उसका करूँ मुंजकूँ छाती नहीं । कि अजा़ नी वो कैं पाई जाती नहीं ।।१३५६।।
मुई है कि जीती नहीं कुछ खबर । बड़ा दुख है यो मुंज कलेजे भितर" ।।१३५८।।

---

१. एक ही, २. कहते, ३. प्रजा, ४. सारे, ५. निवास, ६. दुनिया, ७. उसी समय, ८. छुट्टी, ९. के पास, १०. शौकसे, ११. प्रसन्नता, १२. था, १३. भगवान्, १४. हुकम, १५. अनमोल, १६. राजा, १७. सुकर्मा, १८. राजसी ठाट, १९. लाभ, २०. यकायक, २१. दर्शन, २२. हल्का, २३. भाग्यशाली, २४. चाहता, २५. हालत, २६. शोकाकुल, २७. शहर, २८. कई, २९. परदेश, ३०. दुःखों, ३१. होगा, ३२. युवराज, तरुणशाह, ३३. नहीं, ३४. रंजीदा, ३५. सुंदर ।

कह्या "दुख न कर ऐ सुखी राज तूँ । खुशी कर यो दुख छोड़ दे आज तूँ ।।१३६१।।
कि तेरी भतीजी कुँ ल्याया हुँ मैं । कौ वल ठार ते उसकुँ पाया हुँ मैं ।।
सो क्यों उसके लेखे सगा भाइ हूँ।". . . . .।।१३६३।।
दरद दुखसों हम-वजाँ गुजरान बात । मिल एकसकुँ एक[1] हात म्याने[2] ले हात ।।१३६७।।
चले इश्तियाकी सों[3] दोनों जने । वहीं आये उस पाकदामन कने[4] ।।१३६८।।
देख्या ज्यों[5] भतीजीकुँ आपें चचा । सो पुतलीकर अँखियाँ की लेता उचा ।।
गले लाग अडडा[6] के रोने लग्या । फ़िदा[7] उसके उपराल होने लग्या ।।१३७०।।
दिल उसका बहुत धात[8] सों हात ले । कलेजे के टुकड़े कुँ संगात ले ।।
लेकर आइया घर में ताज़ीम साथ[9] । . . . . ।।१३७२।।
दिया भेज कासिद[10] कुँ बीं भाइ पास । मेहरबान उसकी जनी माइ पास ।।१३७५।।
शिलाँदील[11] का बादशाह बख्तवर[12] । सुन्या अपनि बेटी केरा ज्याँ खबर ।।१३७७।।
एता कुछ हुआ जो कि बोल्या न जाय । . . . .।।
लगी झड़ने अंबर ते रहमत[13] कि फूह । जलनहार सीने कुँ ठंडक हुई ।।१३७५।।

(थ) नये और पुराने मित्रों का समागम—

भया[14] वस्ल का बाब चौधेर ते[15] । सुखा बाग उनका खिल्या सीरते[16] ।।१३८०।।
हुआ फर्ह रोज़ी[17] जनी माइकूँ । तमाम उसके भाना[18] कुँ और भाइ कूँ ।।१३८१।।
अज़ीज़[19] अर्ज़मंद अपनी बेटी के तैं । बुला भेजनेका किया फिक्र वैं ।।
बुला भेजने उस उतम जाइ[20] कूँ । किया मुस्तइद[21] उसकेरे भाइ कूँ ।।१३८३।।
जो मुश्ताक[22] हो भाइ ल्याने चला । सगी भैन केतै[23] बुलाने चला ।।
चचा के नगर बीच ज्यों आइया । सो देख उस चचा जीव कर पाइया ।।१३८७।।
हज़ार आरज़ू साथ[24] दोनों मिले । खुशी के कल्याँ हर तरफते खिले ।।
बोल्या घरकुँ ल्या सो मिले माइ भान । यकस कुँ यकस[25] दे लिये जीवदान ।।
जो कुछ अथा[26] अपाने दिलमने[27] । सुटे काड[28] सीन्याँ में ते तिलमने[29] ।।१३९०।।
लग्या दिलकुँ हम भान[30] हम भाइ की । चौफिर कर[31] जने पेटते भाइ की ।।
गम[32] एक सातरा लाग[33] इश्रत[34] सँगात । दुआ ले चचा होर चचानी के हात ।।
निकल वाँते संगात ले भान कूँ[35] । चल्या मिलके सैफुल्मलूक जान[36] सूँ ।।

---

१. एकको एक, २. हाथमें, ३. उत्कंठा से, ४. सतीके पास, ५. ज्यों ही, ६. अररा, ७. नौछावर, ८. भाँतिसे, ९. सम्मान-सहित, १०. दूत, ११. सिंहलद्वीप, १२. भाग्यवान्, १३. दया, १४. हुआ (अब), १५. चारों तरफसे, १६. सिरसे, १७. सुखकी रोजी, १८. बहनें, १९. प्रिय, २०. इज्जतदार, २१. तैयार, २२. इच्छुक, २३. बहनको, २४. अभिलाषाओंके साथ, २५. एकको एक, २६. था, २७. दिलमें, २८. निकाल फेंका, २९. पलमें, ३०. बहन, ३१. चारों ओरसे, ३२. रंज, ३३. एक क्षणको, ३४. आनंद, ३५. बहनको, ३६. प्रिय।

पँथे पंथ तीनों कँथे खोलते । गमाते वकत हा किस्से बोलते ।।
सिरां दीप के आये ज्यों वो नज़ीक । उमस पा जनी[1] बाप खुश हो अधीक ।।
निकल घरते लाख इंतिजारी सेती[2] । सो दौड़्या वहाँ बेक़रारी सेती[3] ।।
जिगरगोशा[4] कूँ अपने ज्यों पाइया । छतर कर अपस उसके सिर छाइया ।।
सीने सों लिया उस परीचेह्र[5] कूँ । उने उन लगाया मेहर पर मेहर[6] कूँ ।।
ज्यों आया गया सो रतन हातमें । नवा जीव आया त्यो हुआ जात में ।।१४००।।
बड़े दबदबे साथ[7] ल्याया उसे । सो फुलनीर[8] सों मुख धुलाया उसे ।।
मिल्या दिलसों सैफुल्मलूक जान सों । हुआ आसमाँ उस जमीं भान[9] कूँ ।।१४०१।।

(ब) बिछड़ा मित्र मिला—

कि यक द्योस सैफुल्मलूक शह-सवार[10] । निकल आइया भार[11] खेलन शिकार ।।१४०७।।
यकायक्क बाजारमें यक जवान । नज़रतल[12] पड़्या ज़ार[13] होर नातवाँ ।।१४०८।।
किया याद साअद कूँ उस देखकर । अँझू[14] लाइया दुक्खके नैनभर ।।१४१०।।
अपसमें अपे भाइया[15] सर्द उस । किया अपने मन में गम[16] बेक़यास[17] ।।१४११।।
कह्या अपने लोगों कूँ जा उसकूँ लाव । अपे आपे लग घर लेजा बेसलाव ।।
उसी धात जा उस बुला लाइये । लेजा एक जागे पे बसलाइये ।।१४१३।।
कि ज्यों उस मुबारक सवारी सों फिर[18] । ज्यों आया शिताबी[19] सों अपने मंदिर ।।
किया याद आते च उस जान[20] कूँ । बोलाया नज़ीक उस परेशान कूँ ।।
शफ़क्कत[21] जो उसकी गरीबीनैआइ । कह्या "कौन है तूं सो मुंज बोल भाइ ।।
सो वै वो परेशान जल आह भार । उठ्या बोल . . . . ।।
"कहूँ अगर मैं मेरे दर्द कूँ । तो ताक़त न रहसे[22] किसी मर्द कूँ ।।
भर्‍या है सिना पूर उस दुख सँगात । . . . . ।।
मेरा यार यक शाहज़ादा अथा[23] । वो मिलता तो मुंज दुख न होता एता" ।।१४२०।।
जो अपनी गरीबी वो बोल्या । सो वो शाहज़ादा उतम नेक नाम ।।१४३०।।
. . . . । गले ला उसे आँख में आब[24] ल्या ।।
कह्या यों कि "ऐ यार अब छोड़ दुख । तेरा यार सो मैं हूँ सैफुल्मलूक' ।।१४३२।।
मिले देख यक जीव के दोइ यार । हुआ खुश सिरांदीप का शहरयार ।।१४३७।।

---

१. जनक, २. प्रतीक्षा में, ३. अधीरता में, ४. कलेजे के टुकड़े, ५. अप्सरा-मुखी, ६. दया, मुहब्बत, ७. सम्मान के साथ, ८. गुलाबजल, ९. बहन, १०. असवार, ११. बाहर, १२. दृष्टि में, १३. दु:खी, १४. आँसू (पं०), १५. डाला (पं०), १६. दु:ख, १७. अपरिमित, १८. फिर, १९. जल्दी, २०. प्यारी, २१. मुहब्बत, २२. रहेगा (पं०), २३. था, २४. पानी।

(घ) प्रियतमा का दर्शन—

सआदत[१] के ज्यों द्योस अंगे[२] आय । बख़त[३] रोशनाई[४] सो झलकाय ।।१४६५।।
सुलक्खनवती धन बदीयुल्जमाल । यकायक एक दिन खियाले खियाल[५] ।।१४६६।।
सिरांदीप के राज के घर कुँ आई । सो गुम हुई शाहज़ादी कुँ पाइ १ ।।१४६८।।
सगी माइ[६] कर जानती थी अवल[७] । बड़ी कर उसे मानती थी अवल ।।१४६९।।
कही "ऐ संगातिन ऐते द्योस तूं । अथी[८] किस बज़ा[९] होर किस भेस सूँ"।। १४७१।।
सो वो शाहज़ादी उठी बोल यों । . . . . ।।१४७४।।
कि "ऐ मोहिनी मन की साहेबजमाल[१०] । जो तेरा मुहब्बत है मुजसों कमाल[११] ।।
सदा यो मुहब्बत सो कायम अछो । झमकता तेरा हुस्न[१२] दायम[१३] अछो[१४] ।।
जो मैं हात में उस बला के हुलग[१५] । गिरिफ्तार होकर जो थी आज लग ।।
यकायक उस ठार पर्वदगार[१६] । . . . .।।
. . . . । दिया भेज एक आदमीज़ाद[१७] कूं ।।
सो आ भार[१८] काड्या मुंज उस ठार ते । हुँ शर्मिंदी[१९] मैं उसके उपकारते" ।।१४८०।।
सुन इस बात कू कइ[२०] बदीयुल्जमाल । कि 'आदम कुँ आना था वाँ महाल[२१] ।।१४८३।।
सो किस धात[२२] उस ठार वो आइया । न थी बाट सो बाट क्यों पाइया" ।।१४८४।।
कही शाहज़ादी कि "ऐ मोहिनी । बड़ी बात है यो नहीं कुछ न्हनी ।।१४८६।।
दोनों मिलके चल एक गुलशन[२३] में जाँय । दो बाताँ करें वक्त अपना गमाँय" ।।१४८८।।

(न) उद्यान-वर्णन—

कर इस धात सेती खबरदार उसे । ले जाने मँगी[२४] बीच गुलज़ार[२५] उसे ।।१४९०।।
सो चमने चमन[२६] गश्त[२७] करने लग्याँ । कल्याँ चून-चून गोद भरने लग्याँ ।।१४९४।।
कहूँ वाके चमना कुँ, मैं क्यों चमन । कि था हर चमन साफ़ यकायक गगन ।।
भर अमृत सों चमनों के म्याने[२८] तमाम । जड़त[२९] के अथे[३०] हौज़खाने[३१] तमाम ।।
वने-वन बिरख[३२] लहलहाते अथे । . . . . ।।
पवन झूले खा फूल की डाल हिल । सो पड़ते अथे फूल हर झाड़ तल ।।
मगर[३३] आ अँबर के चितारे तमाम[३४] । चमन में बिछाये थे तारे तमाम ।।

---

१. सुकर्म, २. आगे, ३. भाग्य, ४. प्रकाश, ५. विचार, ६. बहन, ७. प्रथम, ८. थी, ९. ढंग, १०. सुन्दरी, ११. पूर्ण, १२. सौन्दर्य, १३. सदा, १४. रहो, १५. नजदीक, १६. पालक (भगवान्), १७. मानव, १८. बाहर, १९. लज्जित, २०. कहाँ, २१. संभव, २२. भाँति, २३. फुलवाड़ी, २४. चाहा, २५. बाग, २६. चमन ही, २७. टहलना, २८. बागों में, २९. जटित, ३०. थे, ३१. कुंडगृह, ३२. वृक्ष, ३३. मानों, ३४. सारे।

अथे बुंद शबनम[1] के यो पात मे । रतन खास[2] खूबाँ[3] के ज्यों हात में ।।१५००।।
. . . . । पँखी गुल उचाते[4] थे डाल-डाल ।।१५०१।।
वो आशिक सों माशूक[5] के ध्यान सों । मता हो अपस में खुशल्हान[6] सो ।।
जम्या ख्याल इस धात[7] गाता अथा[8] । कि हर रुख हर साल आता अथा ।।
पँखी[9] गुम[10] हुये थे वो अल्हान[11] सुन । बहता नीर बहता न था तान सुन ।।
सुनी वो गला[12] ज्यों बदीयुल्जमाल । गली[13] उस गले के ऊपर रख खियाल ।।
कहीं या यों किसका है नादिर[14] गला । किया है मेरी रुह कूँ मुब्तला ।।
गला यो न होय कुछ बला[15] है गँभीर । कि पानी किया गाल[16] मेरा सरीर" ।। १०७ ।।
कही शाहज़ादी कि माँ तब उसे । "यो नादिर उस किसी का दिसै ।।
जिनै मेरी बेटी कुँ ल्याया अहै । दे जिवदान सिरते निपजाया[17] अहै ।।१५१०।।
जो देखेगी तू उसकुँ दिखलाउँगी । नज़दीक उसके डेरे के ले जाउँगी" ।।
सो वैं आसरे ते वो चंदरबदन । देखन आइ सैफुल्मलूक के कदन[18] ।।
जो देखी निझा[19] खूब उसका जमाल । दिवानी हो दरहाल[20] हुई वैं निढाल ।।
पड़ी उसके इश्क़ के दाम में । . . . . ।।
दिल उसका लग्या तिलमिला तनमने । किया ठार इश्क उसके रे मनमेने ।।
लगा जीव बातिन[21] में उस साथ वैं[22] । चली सैर करती हलों[23] होर कैं ।।१५१६।।
ज्यों उस साथ वह चुलबुली दिन लगाइ । सो वो शाहज़ादी उसी वक्त पाइ ।।१५१९।।
बुला कै नज़ीक उस परीज़ाद[24] कूँ । . . . . ।।
कही "याद है यक हिकायत[25] मुझे । सुनेगी अगर तूँ तो करेगी तुजे ।।१५२१।।
सुनी हूँ कि कोइ मिस्र में बेनजीर[26] । है आसिम गुनी नवलशह[27] गंभीर ।।
सबी कुछ खुदा उसकुँ बख्शा अथा[28] । नज़र कर जो फ़र्ज़ंद[29] वक्त पर दिया ।।१५२५ ।।
. . . . । उसे नांव सैफुल्मलूक कर रखा ।।
जो था उस कने एक दाना वज़ीर । हुआ उसकुं फ़र्ज़ंद एक बेनज़ीर।।
वो साअद कर उसका रख्या नाँव सो । . . . . ।।
केतक धोस कुँ वो जो स्याने हुये । हरेक इल्म[30] में खूब दाने[31] हुये ।।
सो दोनों पे वो खुस्रवे[32] गुननिधान । . . . . ।।१५३०।।
बोला भेज खलअत[33] दे जर्बफ्त[34] एक । दिया सो अथी[35] सूरत एक उसमें नेक ।।

---

१. ओस, २. विशेष, ३. सुन्दरियों, ४. उठाते, ५. प्रिया, ६. सुस्वर, ७. भाँति, ८. था, ९. पक्षी, १०. बेसुध, ११. राग, १२. स्वर, कण्ठ, १३. पिघल गई, १४. दुर्लभ, १५. आफत, १६. गलाकर, १७. उपजाया, १८. के पास, १९. ध्यान (निध्यान) कर, २०. तत्काल २१. बाहर, २२. वहीं, २३. धीरे-धीरे, २४. अप्सरा, २५. कहानी, किस्सा, २६. अनुपम, २७. नया शाह, २८. था, २९. पुत्र, ३०. विद्या, ३१. जानकार, ३२. राजा, ३३. पोशाक, ३४. जरबोजी, ३५. थी।

कि वो ऐन[1] तेरी च[2] सूरत अथी । . . . . ।।१५३२।।
देखत शाहज़ादा यो सूरत वहीं । सो आशिक हुआ . . . . ।।१५३३।।
जुदा[3] होयकर अपने घरबारते । निपट तोड़ ले जीव[4] संसार ते ।।
अथे होर साअद सीना सख़्त[5] कर । विरहसों कलेजे कूँ सदलख़्त[6] कर ।।
जहाँ दर जहाँ[7] फीरता फीरता । दर्या बीच पड़ डूबता तीरता ।।
न चँदना समझता न सूरज की आँच । अधिक बेखबर हो बलायाँ[8] ते बाँच ।।
तुजे ढूंड लेता कहाँ ते कहाँ । हलाकी[9] सेती आइया है यहाँ ।।१५३९।।
वो आशिक सचा है तेरा झूंठ नैं । ज़रा उसके इश्क में तूट[10] नैं ।।१५४१।।
जिने जिव दिया उस इलाही[11] की सों । लग्या जीव बाँध्या है वो दिल तु सों[12]।।१५४२।।
दिखा होर सनद[13] मूख यकबार उसे । . . . . ।।१५४५।।
मेरा होर मेरा माइ का रख वज़े[14] । . . . . ।।
यही अर्ज़ मेरा बड़ा आज है । अगर नैं तो मुजकूँ बड़ा लाज है" ।।
वो चंदरबदन गुनभरी ज्ञान की । वो निर्मल रतन हुस्न[15] के खान की ।।
खुश इस धात[16] सेती उठी बोलकर । दिये जाब ऐसी ज़बाँ खोल कर ।।
कि ऐ भागवन्ती सँगातिन मेरी । मेहरबान दुख-सुख की साथिन मेरी ।।१५५०।।
जो तू मुज पे इज़्हार[17] यो राज़[18] की । सरअफ़राज़[19] की मुज सरफ़राज़ की ।।
बले में परी होर वो है बशर[20] । . . . . ।।
यकायक यो अंतर सुटूँ[21] काड क्यों । पडूँ भार[22] पदकूँ में फाड़ क्यों ।।
अगर यों सुनेंगे मेरे माइ-बाप । गलेंगे हयासों[23] वो आपसमें आप ।।
मेरा हाल रहसे न कुछ तारते । गुज़रसे[24] न वो मेरे आज़ार[25] ते ।।
दूजे वार कूँ भेज देसे न भी । मेरा नाँव रोसों लेयें न भी ।।
नकों[26] हां तूँ इस बात के पैमने[27] । कि हरगिज न आँसू[28] तरे कये[29] मने ।।
वो जाहिर तो यों एतराजी[30] अथी । बले[31] दिल सो बात[32] में राज़ी[33] अथी ।।
समज अक्ल सों खूब इसका ख़ियाल । सो माँ होर बेटी लगं फिर दुंबाल[34] ।।
कि "ऐ शहपरी, काड सुट दग़ादग़ा । नको अपने आशिक कूँ दे तूँ दग़ा ।।१५६०।।
हमन बाज[35] कोई तुजकूँ हमराज़[36] नैं । न करसें हमें फाश[37] यो राज़ कैं[38] ।।१५६१।।
ले जायेंगी तुज ऐसे ख़लवत[39] के ठार । जो कोई न अछे बाज पर्वरदिगार[40] ।।
देखा यक नज़र[41] टुक दीदार[42] उसे । बिना धार है वो दे आधार उसे" ।।

---

१. ठीक, २. तेरी ही, ३. अलग, ४. मन, ५. कड़ा, ६. सौ टुकड़ा, ७. देश-देश, ८. आफतें, ९. नाश, १०. टूट (मरा०), ११. भगवान्, १२. तुझसे १३. प्रमाण, १४. तारीफ, १५. सौन्दर्य, १६. भाँति, १७. प्रकट, १८. रहस्य, १९. भाग्यशाली, २०. आदमी, २१. फेकूं, २२. बाहर, २३. लज्जा से, २४. गुजरेगी, २५. दुःख से, २६. नहीं, २७. पीछे, २८. आऊँगा, २९. कहे, ३०. विरोधी, ३१. लेकिन, ३२. भीतर, ३३. सहमत, ३४. पीछे, ३५. हमारे बिना, ३६. रहस्य जाननेवाला, ३७. खोल, ३८. कहीं, ३९. एकान्त, ४०. पालक, ४१. एक दृष्टि, ४२. दर्शन।

बहरहाल[1] फुसला के राजी किया । लगा इश्क रीते[2] ताजी किया ॥१५६६॥
कि ज्यों वो छबीली चंचल गुलअजार[3] । करार[4] आपना छोड हुई बेक़रार ॥
उताली[5] हो आशिक़के दीदार की । सुटी[6] लाज हुई यारनी यार की ॥
यकेली नजीक जा आधी रात कूँ । उचा[7] उस सँगातिन उतमजात कूँ ॥१५७०॥
कही यों कि मैं तो तेरे बोल पर । जो थी गाँठ दिल में सुटी खोलकर ॥
गँवाऊँ ऐते दिनकी क्यों आशनाई । कि बजगी[8] है आलम[9] में सब यो शहनाई[10] ॥१५७२॥
जो देखूँ उसे यकनजर आज मैं । कि हूँ उसके दर्शन की मुहताज[11] मैं ॥१५७४॥
न जाने नमन[12] कोई मिल जायें चल । उसे दूरते देख फिर आँय चल ॥
कि तूँ होश टाली[13] है जबते मुजे । नहीं जर्री[14] आराम तबते मुजे ॥
यो गत क्या छिपाऊँ तुज अंगे ऐताल[15] । . . . . ॥
न जानूँ उसे किस घडी मैं निझाइ[16] । नहीं नींद अँखियाँ कु तेरी दुहाइ ॥
तुसों[17] मिलके मैं गर्चे[18] बैठी हूँ याँ । बले[19] दिल मेरा सैर करता है वाँ" ॥
लगी उसके दुंबाल पड हात पाँव । चली ले उसे ढूँढती ठाँ-ठाँव ॥१५८०॥
जो आशिक़ के डेरे के नज्दीक आइ । खबर हो या ना त्यौं उसे खुश[20] निझाइ ॥

(प) पुरुष-सौन्दर्य--

सो बैठा देखी मस्त उस ठार उसे । चडया है मदन का सो खुल्हार[21] उसे ॥
तजल्ला[22] उपर मुख बरसता है खुश । लियाँ अंखियाँ नाजो[23] हँसता है खुश ॥
लगे है शमे[24] चौदन[25] नैदके[26] । झमकते[27] हे रुखसारे[28] ज्यों सूर के ॥
अपन मनमें झलता[29] अथा मस्त ख्याल । सो ढलकी है पगडी खुल्या है जमाल[30] ॥
खुले हैं सफा[31] के किवाडा तमाम । . . . . ॥
खुले हैं रँगा रंग चमन आसपास । महकता है महकात वाँ बेक़यास[32] ॥
डुब्या है सबी बाग खुश-बास[33] में । सो दौड्या है महकार आकास में ॥१५८८॥
नजर जो पया यो तमाशा महाल । सो उसे चुलबुली का हुआ होर ख्याल ॥
देखत यो तमाशा[34] **बदीयुल्जमाल** । हो हैरा अपसकूँ न सकसी[35] संभाल ॥१५९०॥
मती[36] होके वाँ थारके वासते । पडी थी जो फूलाँ की ज्यों रासते ॥
न थी कुछ खबर उसके तन की उसे । जमी से जगी उस चमन की उसे ॥

---

१. हर तरह से, २. फिर से, ३. फुलवाड़ी, ४. धीरज, ५. उतावली, ६. फेंका (पंजाबी), ७. उठा, ८. बज गई, ९. दुनिया, १०. शहनाई, ११. इच्छुक, १२. जैसा, १३. हटाया, १४. जरा, थोड़ा, १५. इस समय, १६. ध्यान किया, १७. तुमसे, १८. यद्यपि, १९. लेकिन, २०. अच्छी तरह, २१. गर्मी, २२. प्रकाश, २३. नाज से, २४. मोमबत्तियाँ, २५. चारों तरफ, २६. प्रकाश के, २७. चमकते, २८. कपोल, २९. चमकता, ३०. सौन्दर्य, ३१. स्वच्छता, ३२. अपरिमित, ३३. सुगंधित, ३४. दृश्य, ३५. सकेगी (पंजाबी), ३६. मस्त।

खडी थी सी यों सर्द भरकर[१] उसास । पडी जाखमन में हो फूला की रास ।।
जो सैफुल्मलूक आशिक़े बख्तवर[२] । मदन मद की मस्ती ते पाया खबर[३] ।।
यकायक सेहरगाह[४] बेइख्तियार[५] । दरुनीते[६] डैसे के निकल्या बहार[७] ।।

(फ) स्त्री सौंदर्य—

सुती देखकर उसकुँ आशिक़ गंभीर । लगा रोवने उसपे चौफेर फीर ।।१६१८।।
दो दीदाँ[८] के अँझुआँ[९] सों मश्गूल[१०] कर । छिनकने[११] लग्या शबनम्[१२] उस फूलपर ।।१६२०।।
जो वो शहपरी बास आदम की पाइ । यकायक उठी नाज़ सों दी जमाइ[१३]।।
निझाँ देखती है जो अँखियाँ पसार । नजीक आके बैठा है वह दोस्तदार[१४] ।।
घुँगट में छुपा मुँह वही नाज़ सों । हलों[१५] खोल अधर नर्म आवाज़ सों ।।
कही "यों तो वाजिब[१६] नहीं है तुजे । जो नज़दीक आकर निझावे[१७] मुझे ।।
मैं औरत शरम की हूँ होर मर्द तूँ । न मैं तुजकूँ जानूँ न मुँजकूँ तूँ ।।
निपज[१८] में तू आदम है होर मैं परी । नहीं मुहरम[१९] आदमसेती कैं[२०] परी ।।
सबब क्या अथा आने इस रात कूँ । कना[२१] मुजकूँ तै खोल यो बात तूँ ।।
वफ़ादार[२२] ओ आशिक़े नामदार[२३] । जो माशूक़[२४] ते पाइयाँ यो अधार ।।
सो खुश बेनिहायत[२५] हो पाया उमस[२६] । रगो रग में दौड्या वा रंग रस ।।
जवाँ खोल बाताँ लग्या बोलने । रतन जीव के राज़[२७] के रोलने ।।१६३०।।
कि "ऐ बेबदल[२८] मोहिनी जग-उजाल । जो है नाँव तेरा बदी युल्जमाल ।।
तेरे नाँव परते हुँ बलिहाल में । सुटूँ[२९] जीव कूँ तुजपर वार[३०] वार मैं ।।
नज़र कर मेरी घेर[३१] जो अमन[३२] पाउँ । देखूँ दीद पर दीद टुक दुख गँवाउँ ।।
कि धरता हुँ सीने में दुख कड ज़मी[३३] । हुआ हुँ परित आग में जल मुड[३४] जमीं ।।
एता कुछ भर्या है मेरे मन में सोज़[३५] । जो सुलगे असू लाख भडकेहर रोज़ ।।
अँझू मुँज नयनते जो ढलते अहै । तेरे इश्क़ के बाट[३६] उबलते अहै ।।
तेरे ल्ये च फिरता हुँ मैं रात-देश[३७] । लिये हूँ तेरे ल्ये च वित्याग भेस[३८] ।।
यक़ी[३९] जान में आशिक़े[४०] पाक हूँ । तेरे इश्क का पाक बेबाक हूँ ।।
तेरे ल्ये च एता रंज देख्या हुँ मैं । जो देख्या नहीं कोई दुनियामें कैं[४१] ।।
न यो कुछ आया है मुंज घोर ते[४२] । कि नाज़िल हुआ है यो तक़दीर ने ।।१६४०।।

---

१. पा (डाल) कर, २. भाग्यवान्, ३. होश, ४. प्रातः, ५. बेबस, ६. भीतर से, ७. बाहर, ८. आँखें, ९. आँसू, १०. लग.र, ११. छिड़कने, १२. ओस, १३. अम्हाई, १४. प्रेमी, १५. धीरे-से, १६. उचित, १७. ध्यान करे, १८. उपज, १९. विहित, २०. कहीं, २१. कहना, २२. भक्त, २३. यशस्वी, २४. प्रियतमा, २५. अत्यन्त, २६. उत्साह, २७. रहस्य, २८. अनमोल, २९. फेंकूँ (पंजाबी), ३०. नौछावर, ३१. मेरी ओर, ३२. शांति, ३३. कड़ी भूमि, ३४. रेत की जमीन, ३५. जलन, दर्द, ३६. रास्ता, ३७. रात्रि दिवस, ३८. बुरा भेस, ३९. सच्ची, ४०. सच्चा प्रेम, ४१. कहीं, ४२. मेरी ओर से।

तेरे वस्ल[१] का देख मुंज मनकूँ आस । दिया है खुदा भेज मुज तेरे पास ॥
नको[२] देख अपसते बेगाना[३] मुंजे । भला है जो अपना कवाना[४] मुंजे" ॥
वचन बोल ओ आशिक इस धात[५] सो । हुआ उसपे कुर्बान सब जात[६] सों ॥
चतुर चलबली धन **बदीयुल्जमाल** । छुपा मन में रख यो मुहब्बत कमाल[७] ॥
उबलते पेरेम कूँ सो मनमें जिरो[८] । बहाने सैतीं यों उठी बोव वो ॥
कि "ऐ शाहज़ादे गुनी बख्तवर[९] । अपसमन के सूरति[१०] पर रख नज़र ॥१६४६॥
यकायक तेरी बात कूँ क्यों पत्याऊँ । यकायक तुज सात क्यों मन लगाऊँ ॥१६४९॥
फिरया है बहुत मुल्क तूँ तूट[११] कर । मुबादा[१२] तेरा दिल अछै[१३] झूट पर ॥१६५०॥
तु जा याँ ते संभाल ले आपकूँ । कि डरती हूँ मैं अपने माँ-बाप कूँ ॥
अगर कोई देखेंगे याँ मेरे लोग । तो आज़ार अँपडाँय[१४] दोनों कुँ ठोक" ॥१६५२॥
लगा रोने **सैफुल्मलुक** सुन यो बात । निकल तनते गइ त्यों हुआ उस हयात[१५] ॥
गोता खाइया वै मुँडी ढाल पर । सुट्या[१६] विरह अगन सों अपस जाल कर ॥१६५७॥
हुआ सिरते[१७] संगीत[१८] दुख उसपे यों । रखे पाँड[१९] कूँ लाके गाड़ी पे ज्यों ॥
रह्या जीव होटाँ मने[२०] आ उसे । हो बेसुध अक़ल सिर चढ़ी जा उसे ॥
देख ये हाल मोहन **बदीयुल्जमाल** । हो मन में मुसल्लम्[२१] परेशानहाल[२२] ॥१६६०॥
पिछानी कि यो कुछ तो बाज़ी[२३] नहीं । हक़ीक़ी[२४] पिरीत है मजाज़ी[२५] नहीं ॥
उचाई[२६] नज़िक जा उसे हात सों । गले लागती जिवके सूरति[२७] सों ॥
देती लाख बज़ा[२८] साथ जिवदान उसे । सो तहक़ीक़ कर पाई ईमाँ उसे ॥
मुहब्बत जो जागह किया दिलमने[२९] । रखी पाँव यारी[३०] के मंज़िलमने ॥
पलूँ[३१] साथ अँजु[३२] उसके पोंछन लगी । भरोसा दे धीरक[३३] सों बोलन लगी ॥
कि "ऐ मेरे मन के सँगाती एताल[३४] । न कर दुख तूँ होर नको हो निढाल ॥
तूँ आशिक़ मेरा कर सची पाई मैं । . . . . ॥
बले[३५] क्या करूँ नैं मुजे इख्तियार[३६] । परयाँ मुँज मुवक्कल[३७] हैं कइ लख हज़ार ॥
न तदबीर है कुछ जो हीला[३८] करूँ । यकायक तुसुँ क्यों वसीला[३९] करूँ ॥
मेरी एक दादी सो है एक ठाँव । **शहरबान्** उसका अहै नेक नाँव ॥१६७०॥
जो सीमींपटन शहर है एक गँभीर । वह करती है वाँ खुस्रवी[४०] बेनज़ीर[४१] ॥
है सारों कूँ उसका बड़ा एतबार । कि है सब कबीले[४२] की वह नामदार[४३] ॥

---

१. मिलन, २. नहीं, ३. पराया, ४. कहलाना, ५. भाँति, ६. सब तरह, ७. पूर्ण प्रेम, ८. छिपा, ९. भाग्यवान्, १०. रुचि, ११. टूट, १२. शायद, १३. रहे, १४. दुख पहुँचेगा, १५. जीवन, १६. फेंका, १७. फिरते, १८. कठोर, १९. पहाड़, २०. ओठों में, २१. पूर्ण, २२. दुःखी, २३. खेल, २४. सच्ची, २५. बाहरी, २६. उठाई, २७. रुचि, २८. सच्चा, २९. दिल में, ३०. दोस्ती, ३१. अंचल, ३२. आंसू, ३३. धीरज, ३४. इस समय, ३५. लेकिन, ३६. अधिकार, ३७. मुंजा पर नियुक्त, ३८. बहाना, ३९. सम्बन्ध, ४०. राजसी, ४१. अनुपम, ४२. जन, जाति, ४३. प्रसिद्ध ।

बले जाँ तलक शहर की बाट है। वहाँ लग अगिन का च[१] एक घाट है॥१६
वही त्यों करैगा जो ऐ जान[२] तू। त्यों है लाख मुज पैं एहसान[३] तूँ॥
भला है जो वाँ लग[४] अपे जाय तूँ। ....॥
कि वो गुनभरी बख्तवर[५] नेकनाम। करेगी तेरा काम हर क्यों [६]तमाम॥१६
कि धरती है ओ दोस्त इन्सान कूँ। करैगी बहुत प्यार तुज जान कूँ॥१६
मेरी माय होर बाप कूँ मंग ले। मलायक करैगी मुजे होर तुजे॥१६
बले[७] तुज यकेला केरा नैं है काम। ... ...॥
सलामत[८] सों अँपडाये तुज मीत कूँ। देऊँगी सँगात एक अफरीत[९] कूँ॥१६
तेरे तै वो शहज़ादी होर उसकी माइ। ... ...॥
केते बजा[१०] सों कर सिफारिश तेरा। पड़े थे गले अन्त[११] लेने मेरा॥१६९
अभी तू नको[१२] बोल कुछ उनके घेर।" ... ...॥१६९
"कह्या शाहजादा मेरा क्या मजाल। जो ठेलूँ[१३] तेरी बात ऐ जग-उजाल"॥१६९
वचन घट[१४] करे यों हुये एक दिल। सुबा लग गमे बाग में दोइ मिल॥१६९
उजाला हुआ जग में ज्यों सुबह का। रहे लेट अपनहार अंजान जा॥१६९
अलामत[१५] सों नेक अख्तरी का ज़हूर[१६]। किया ज्यों जहाँ में जहाँ बाब सूर[१७]॥
सो उसकी सँगातिन सों मिल उसकी माइ। भितर उस परीज़ाद[१८] के डेरे आइ॥१६९
कही शर्त[१९] कलकी बजा ल्यावना। तेरा दर्स उस आज[२०] दिखलावना॥१७०
नको ठेल दे तूँ मेरी बात एताल। ... ...॥१७०
तूँ आज उस दुखी प्यारकूँ याद कर। दिखे दर्स तेरा उसे शाद[२१] कर॥१७०
ज्यों इस बात परते छुटी गुदगुली[२२]। सो राज़ी हुई वह चँचल चुलबुली॥
मुहब्बत मने[२३] देख उसका खियाल। क़बूली[२४] वो कये[२५] त्यों **बदीयुज्जमाल**॥१७१
जमाकर खुशी[२६] मनके सोरात[२७] की। किये गर्म मजलिस यखश उस रात की॥
कदूरत सों ज्यों आरसी पाक[२८] हो। ... ...॥
सो चारों मिले खुश होवीं एक ठार। सो बैठे लताफ़त[२९] सों मज्लिस सँवार॥१७१

(ब) रात्रि-वर्णन—

डुब्या सूर महताब[३०] आया निकल। बरसने लग्या साफ चँदना निछल[३१]॥१७१
सितारे झमकने[३२] लगे ठार-ठार। छुपा जाके जुल्मात में अंधकार[३३]॥
उजाला हुआ साफ यों चौकदन[३४]। ज़मीं कूँ मगर[३५] लाये थे[३६] घिस चँदन॥१६१

---

१. आज का ही, २. प्यारे, ३. उपकार, ४. वहाँ तक, ५. भाग्यवान्, ६. हर त जैसे भी हो वैसे, ७. लेकिन, ८. खैरियत, ९. भूत, १०. कार, ११. भेद, १२. नहीं, १३. ट १४. कम, १५. चिह्न, १६. सौभाग्य का प्रकाश, १७. जगत्-प्रकाश, १८. परियाँ, १९. ब २०. अब, २१. प्रसन्न, २२. गुदगुदी, २३. प्रेम में, २४. स्वीकार, २५. कहे, २६. ख २७. मैल, २८. शुद्ध, २९. मंजुलता, ३०. चाँद, ३१. निर्मल, ३२. चमकने, ३३. अँधे ३४. चारों ओर, ३५. मानों, ३६. लगाये थे।

हरेक ठार पर शमा[1] की रोशनाई । जकाजोत[2] सो चौकधन[3] जगमगाइ ।।१७१९।।
मँगाये निछल मस्त रंगी[4] शराब । सुराया भरे पाच क्यों बे हिसाब ।।१७२०।।
फिराने लगे प्याले याकूत के । सुटे[5] म्याने[6] बादाम[7] ल्या कूत के ।।
वो गुणवंत शाहज़ादि होर उसकी माइ । अधी रात लग वक्त अपना गमाइ ।।
रजा[8] ले चल्या वाँ ते अपने मँदिर । हुई यों खुशी ज्यास्त दोनों कुँ फिर ।।
असर[9] मंद मनमें हुये मस्त ख्याल । वो सैफुल्मलूक होर बदीयुज्जमाल ।।
जो देखन लगे खूब एकसकूँ एक । अँख्याँ में रहे खोब एकसकुँ एक ।।
कि थे एक ते एक साहेब-जमाल[10] । मती[11] हो मुहब्बत के ओ जग-उजाल ।।
हलौं हात में हात लेने लगे । चुमैं लग मुहब्बत सों देने लगे ।।१७२७।।
मदन दो तरफते जो आया उबल । हुये महूव आपसमें आपें पिघल ।।
हुये सुध गँवा बेखबर दो जने । सुते मिलके वैं यक बिछौने मने ।।
वलेकिन[12] उनन में न था कुच खियाल[13] । कि थे पाकदामन[14] में दोनों कमाल[15] ।।१७३०।।
सुवा जो रयन में ते पैदा हुआ । जो मशरिक[16]वन्दन से ते हवेदा[17]हुआ ।।१७३३।।
छुपा चाँद जा सूरकी ताब ते । यकायक उठे जाग वो ख्वाव[18] ते ।।
चले अपने खेमाँ में झट फांक हो । . . . . ।।१७३५।।

(भ) अन्तिम संकट—

जो उस बावरे की परीज़ाद कूँ । लग्या बाव उस साद् आज़ाद[19] कूँ ।।१७४२।।
हुई ज्यों कि लैला सो इस लाल की । भँवर होके उस फूल की डाल की ।।१७४४।।
दिवानी हुई सुध[20] सुटी[21] जातकी । लगी खूब सोहबत असर रात की ।।१७४७।।
जो पाई खबर फिर केतक बार कूँ । . . . . ।।
सगी[22] अपनी दादी कुँ तब याद कर । सखी[23] नामा[24] ले नामा बुनियाद[25] कर ।।
करी खुश इबारत[26] सों तहरीर[27] यों । लिखी इश्क़ ताज़ा[28] की तक़रीर[29] यों ।।१७५०।।
अदब की रविश सों सदा बेहिसाब । लिखी अपने हाताँ सो[30] दादी कुँ जाब[31] ।।१७५।।
बुलाकर कही एक अफरीत[32] कूँ । मेरा मीत[33] है एक इस मीत कूँ ।।
लेजा काड सीमीं पटन लग शिताब[34] । मिला मेरी दादी सों होर ल्या जवाब ।।१७५५।।
वो फरमाइ[35] थी त्यों च अफरीत[36] सो । मलिकजादे कन आइया दौ ड़वो ।।१७६३।।
दुआ मँग ले अफ़रीत की पीठ पर । चड़्या जो कह्या ओ अँख्याँ मोंच[37] कर ।।१७६५।।

---

१. मोमबत्ती, २. अति प्रकाशमान, ३. चारों ओर, ४. लाल, ५. फेंके, ६. बीच, ७. भोजन, ८. सहमति, ९. प्रभाव, १०. सुन्दर, ११. मुग्ध, १२. किन्तु, १३. विचार, १४. सदाचार, १५. पूर्ण, १६. पूर्व की ओर, १७. प्रकट, १८. स्वप्न, १९. स्वतन्त्र, २०. स्मरण, २१. फेंकी, २२. अपनी, २३. तरुणी, २४. पत्र, २५. कारण, २६. सुवाच्य, २७. लेख, २८. नया, २९. कथन, ३०. अपनी ओर से, ३१. पंक्ति, ३२. जादू, ३३. मुहब्बत, ३४. जल्दी, ३५. हुकुम दिया, ३६. भूत, ३७. मीच।

उलँग आग का मर्म समदूर घाट । पकड रास्त सीधीं[1] पटन घेर बाट ।।१७६८।।
उतारया जो उस शहर में जा उसे । ... ... ।।१७७०।।
न था शहर आलम[2] में उस धात कैं[3] । हुआ देख शहज़ादा हैरान वैं ।।१७८१।।
अखँड पाच का वाँ देख्या एक तख़्त[4] । उस उपराल[5] ओ मावली नेक-बख़्त ।।१७८४।।
शिगुफ्ता हो[6] बैठी है खुश दाब सों[7] । ... ... ।।१७८५।।
अँगे हो किया शाहज़ादा सलाम । सो देती अलैकी[8] फिर ओ नेकनाम ।।१७८८।।
कही "तूं सलाम आ न करता मुंजे । तो करती बिला उज्र[9] टुकड़े तुजे ।।१७८९।।
अथा[10] सख़्त[11] तेरा कलेजा बड़ा । जो आकर मेरे सामने तूँ खड़ा" ।।१८९१।।
सो यों आ कहा शाहज़ादा उसों[12] । कि "मुंजते हुआ है गुनह[13] बख़्श[14] तूँ" ।।
बदीयुज्जमाल उस लिखी सो जवाब[15] । दिया हाथ में जाकर उसके शिताब[16] ।।
पढ़ी सरबस[17] ज्वाब वो खोल ज्यों । ... ... ।।१७९४।।
वो मतलब[18] उसे खुश मुनाफ़िक़[19] लैग्या । यो आशिक़[20] ओ माशूक़ लायक[21] लग्या ।।१७९६।।
देख उसकी कधन[22] मेहरबानी[23] में आय । नज़िक बैसला[24] हम-जबानी[25] में आय ।।
शकल[26] सूरत उसके निझाने[27] लगी । अधिक फर्ह[28] पर फर्ह पाने लगी ।।१७९८।।
कि "तू कौन है होर किधर का अहै । जो इश्क़ उस सहेली सों धरता अहै ।।
तेरी ज़ात आदम दिसे वो परी । तुसों[29] जुफ्त[30] क्यों होवै वो गुनभरी ।।१८००।।
कि है वह चँचल पद्मिनी आतिशी[31] ।। ... ... ।।१८०१।।
सुनी हूँ पर्याँ ते मुंजे याद है । बड़ा बेवफा[32] आदमीज़ाद[33] है ।।१८०४।।
सुन्या शाहज़ादा जो इस बात कूँ । उठया बोल उस वक्त इस धात सों ।।१८०७।।
कि "ऐ बख़्तवर[34] माइ गुनज्ञान की । तु समूदर[35] सचली है उर्फ़ान[36] की ।।१८०९।।
मैं उस नार का पाक आशिक़[37] हूँ कर । बजा है ढिंढोरा नौ आकास पर ।।१८१४।।
मैं वो आदमी हूँ जो सबते अवल[38] । देऊँ जीव उस शहपरी के बंदल ।।१८१८।।
बहुत दूख देख्या हूँ मैं उसके तैं । जंगल घाट कोई नैं न देख्या सो मैं ।।१८२०।।
फिर्या डूँगरा डूँगरा दूर के । किया दौड़ लै गश्त समूदर के ।।१८२१।।
तुही त्यों सुनैंगी मरा दर्द अगर । अजब[39] क्या जो जावे मीना तड़ख[40] कर" ।।१८२९।।
देखी शहरबानू की सख़्ती च[41] यो । हुआ है गुम उसके पिरीत बीच यो ।।१८३०।।
समज ली उसे आशिक़े पाक[42] कर । ... ... ।।१८३१।।

---

१. सीधा, २. दुनिया, ३. कहीं, ४. पन्ना, ५. ऊपर, ६. खिला, ७. दर्प से, ८. अलैक, सलाम, ९. बिना ननु नच, १०. था, ११. कठोर, १२. उससे, १३. अपराध, १४. क्षमा कर, १५. उत्तर, १६. जल्दी, १७. पूरा, १८. अभिप्राय, १९. पसन्द, २०. प्रियतम, २१. योग्य, २२. उसके पास, २३. कृपा, २४. बैठा, २५. संभाषण, २६. आकार, २७. ध्यान से देखने, २८. आनन्द, २९. तुमसे, ३०. मिलन, ३१. आग्नेय, ३२. बेमुरौवत, ३३. मानव, ३४. भाग्यशाली, ३५. समुद्र, ३६. ज्ञान, ३७. पवित्र प्रेम, ३८. प्रथम, ३९. आश्चर्य, ४०. तड़क, ४१. कड़ाई ही, ४२. पवित्र प्रेमी।

नज़ीक आपने प्यार सों वैं[1] बुलाइ । बहुत मानदे तख़्तपर बेसलाइ ।।१८३३।।
कही "गम नको[2] कर तूँ खुशहाल[3] आछ[4] । खिल्या ताजा ज्यों फूल का डाल आछ ।।
कि हर क्यों[5] करूँगी तेरा काम मैं । दिलाऊँगी तुज ओ दिलाराम मैं ।।
खिलाऊँगी गुँचा[6] तेरे आस का । दिपाऊँगी तारा तुज-आकास का "।।१८३५।।
तलब[7] सारे देवा कुँ कर एक बार । जमा करने फ़रमाई सब एक ठार[8] ।।१८४०।।
हवा के उपर दो तरफ बाँध सफ़ । चली वैं गुलिस्ताँ अरम की तरफ़ ।।१८४२।।
नज़िक गुलस्ताँने अरम के ज्यों आइ । सो यक ठार शाहज़ादे कुँ बेसलाइ[9] ।।
चली शहर में आप खुशहाल सों । मिली जा के फ़र्ज़ंद[10] शहवाल सों ।।१८००।।
कि जिस ठाँव[11] ओ आशिक़े नेकनाम । यकेला रह्या जो अथा कर मुकाम ।।१८४७।।
सो वो ठाँव औतार[12] कुछ ठार था । जनतके गुलिस्तानके सार[13] था ।।
खिले थे केतक जिन्स[14] के फूल वाँ । बूके बिन न थी नाँव कूँ धूल वाँ ।।
व डुबे थे चमन सरबसर[15] फूल में । केते जिन्सकी वास हर फूल में ।।१८५०।।
पवन बाज[16] वाँ कोई माली न था । किसी फूल ते वन वो खाली न था ।।
कहीं रायचंपा, कहीं सेवती[17] । कहीं मोगरा होर कहीं रेवती ।।
कहीं यास्मिन[18] होर मदनवान कैं । कहीं ताजसुर्ख होर रैहाँ कैं ।।
कहीं लाल होर कैं रँगीले गुलाल । कहीं फूल सदबर्ग के बेमिसाल[19] ।।
केतक उसमने[20] फूल केतक कल्याँ । देखें तो नयन कूँ उठे गुदगुल्याँ[21] ।।
कहीं तख़्ते[22] अंगूर के बेबदल । कैं इंजीर व अन्नार शीरीं निछल ।।
कहीं सेव होर कैं अनन्नास खूब । ... ... ।।
कैं अखरोट, बादाम, पिस्ते नफ़ीस । कहीं जोज, चिलगोज, दिसते नफ़ीस ।।
खुश ऐसे अचम्बे[23] गुलिस्तान में । लग्या सैर करने अपन ध्यान में ।।
ठंडी कुछ हवा बाँकी ज्यों उसकुँ भाइ । सो यक झाड़तल खुश[24] उसे नींद आइ ।।१८६०।।
क़ज़ारा ओ अस्फ़ंद[25] केरा परा[26] । जो उस शाहज़ादी कुँ लेकर उड़ा ।।
रखा जो अथा कैद कर बंद सों । ... ... ।।
दुखी उस परे को बड़ा हाइ हो । ... ... ।।
तलब कर पऱ्याँ कुँ सो कई लख हज़ार । किया सबकुँ ताकीद[27] यों बे शुमार ।।
कि मारचा जो है भाई कूँ मेरे कोइ । सो वो आदमी बाज[28] दुसरा न होइ ।।
ढूँढो जाओ मशरिक[29] ते मगरिब[30] तलक । ... ... ।।१८६६।।

---

१. वहीं, २. नहीं, ३. प्रसन्न, ४. रह, ५. हर तरह, ६. कली, ७. बुलावा, ८. पाँती, ९. बैठा, १०. पुत्र, ११. निवास, १२. अद्भुत, १३. सदृश, १४. प्रकार, १५. पूरा, १६. हवा बिना, १७. शतपत्र गेंदा, १८. चमेली, १९. अनुपम, २०. उसमें, २१. गुदगुदी, २२. क्यारी, २३. अनुपम, २४. मीठी, २५. संयोग से, २६. परी पुरुष, २७. फिर-फिर कहना, २८. बिना, २९. पूर्व से, ३०. पश्चिम।

उनन में ते केतक परयाँ पाइयाँ । ... ... ।।
यकायक आया उसी वनमने[1] । सुता उसकूँ पाया उसी वनमने ।।१८७
नज़ीक आ तमाम उसकुँ कीता हुशयार[2] । कह्या "कौन है तूँ, तेरा कौन ठार" ।।१८७
न था उस बेचारे के तैं फ़ाम कुछ । ... ... ।।
समज[3] यो पिछान्याँ कि सब यो पर्‌या । इसी ठार क्याँ होयँगी मुदर्‌याँ ।।
जे कुछ था किसा[4] आपना सरवसर[5] । कह्या उस परयाँघेर[6] नाज़ान कर ।।
वहाँ वो परयाँ उस उपर टूट पड़याँ । हवा के उपरले उसे वैं उड़याँ ।।१८७
बहरहाल उसे ले गियाँ राज पास । सो देख राज उसे तुन्द[7] हो बेक़यास ।।१८८
कह्या वेग जल्लाद[8] कूँ "मार उसे" । वो जल्लाद ना मार कर प्यार उसे ।।१८८
कह्या उस शहंशाह कुँ इस धात[9] जा । कि "इस मारना खूब नैं इस बजा[10] ।।
सो रखें ज्यों उसके तँई बन्द कर । जे झुरझुर अज़ाबाँ[11] ते यो जाय मर ।।
इसे मारना खूब नैं एक बार । अज़ाबाँ सो रखना इसे एक ठार ।।
जो झुरमुर अपसमें अपें सुबहो शाम । देवे छोड़ दिक़्क़त सों जिवड़ा तमाम" ।।१८९
जो जल्लाद ते शह सुन्या यो वचन । सो फरमाइया त्यों च[12] करने जतन ।।१८९
रख्या शाहज़ादे कुँ ज्यों बन्द मैं । ... ... ।।१८९
पड़्या दूर ज्यों आपने[13] ख्वेश ते । ... ... ।।१९०
जो वो मावली गुनभरी बेनज़ीर[14] । सुलक्खनवती शहरबानू गँभीर ।।१९०
मिली जाके ज्यों अपने फ़र्ज़ंद[15] कूँ । ... ... ।।
हुआ माँ कुँ देख शाह यों शादमाँ[16] । जो गुलगुल हो कीता[17] दुआ सासमाँ ।।१९०
सो कुरसी उपर बेसला[18] बात कूँ । ... ... ।।१९०
कही हाल **सैफुल्मलूक** का तमाम । सुनाई किसा[19] उसके दुख का तमाम ।।
सो शहवाल ओ सायत[20] उस तिलमने[21] । मुहब्बत पकड़ आपने दिलमने[22] ।।१९१
कह्या अपना माँ कुँ कहाँ है वो ज्वान । देखन उसकुँ तपत है मेरा परान ।।
कही शहरबानू "मैं उस ज्वान कूँ । सो आते वकत साथ ले आई हूँ ।"
फलाने[23] चमन में रखी हूँ उसे । यकायक डरी ल्याने तुजकन उसे" ।।१९१
सो दरहाल शहबाल शह बख़्तवर[24] । परयाँ कूँ क्या मुज उस ल्याव कर ।।१९१
देख्या ढूँड चमनेचमन ठारेठार । न पाये कहीं सो लग्या ख़ार-ख़ार[25] ।।१९१
कह्या शाहे शहवाल कूँ जाइकर । कि "वो ज्वान दिसता नै उस ठार पर" ।।१९२
... ... । कह्या एक परा[26] सामने होके वाँ ।।१९२

---

१. वन में, २. जगाया, ३. समझा, ४. कथा, ५. पूरा, ६. परियों के पास, ७. क्
८. वधिक, ९. भांति, १०. प्रकार, ११. दुःख, १२. वैसे ही, १३. सगे, १४. अनुपम, १५. पु
पुत्री, १६. प्रसन्न, १७. किया (पंजाबी), १८. बैठा, १९. कथा, २०. घड़ी, २१. पल में, २२ दि
में, २३. अमुक, २४. भाग्यवान्, २५. काँट-ही-काँटा, २६. परी पुरुष।

कि "देख्या हुँ मैं खूब उस ज्वानकूँ । निछल हुस्न[1] के उस उत्तम भान कूँ ॥
परी एक जमायत[2] की जाती अथी । हवा पर उडा उस ले जाती अथी ॥
शिगुफ्ता[3] न था सख्त दिलगीर[4] था" । ....॥१९२४॥
सुन इस धात[5] उस ज्वान के हाल कूँ । ....॥
सो शहवाल बिन शाहरुख[6] ज्यों यो बात । सुन्या सो लग्या तिलमिलन धात धात[7] ॥
जो था शाह खशहाल ज्यों फूल खिल । सुट्या[8] सोच आपें हुआ वैं[9] खिजिल[10] ॥
कमर शह्वानू की पैठी वहीं । परेशानगी दिल मैं बैठी वहीं ॥
जो इस हालते धन बदीयुल्जमाल । खबर पाइ सो सुध गवाँ होइ निढाल ॥
पड़ी भुइँ उपर जो न था ताब उसे । सो छिड़क्याँ परयाँ मूख गुल्लाब उसे ॥१९३०॥
केतक बारकूँ फिर जो टुक होश आइ । सो उठकर हलों[11] अपनी दादी कन आइ ॥
कही 'ऐ सगी क्या करूँ मैं इताल[12] । कि दिसता है उस बाज[13] जीना महाल[14] ॥
मेरा जीव था सो वही पीव था । कि उस पीव पर लै मेरा जीव था ॥
उसे वाँ एकल[15] छोड़कर आइ तूँ । सँगात आपने कै[16] न उसे लाइ तूँ ॥
कीती[17] किस बजा[18] काम तूँ हाय हाय । कि याँ ना रखी फ़ाम[19] तूँ हाय हाय ॥
करी[20] काम अम्मा न पूरा करी । धतूरा दे मुजकूँ दिवाना करी ॥
दिवानी हूँ मैं जो दिवाना कहाँ । वो दानिश्वरी का है दाना कहाँ ॥१९३७॥
किधर गइ वो रोशनज़मीरी[21] तेरी । यो किस धात की दस्तगीरी[22] तेरी ॥
अधर लग मेरे ल्याके अमरीत कूँ । फिराकर लेकर गइ तु इस रीति क्यों ॥
अगर होसे[23] तो फिर तुजसों होना यो काम । नहीं तो मेरा काम है याँ तमाम[24]" ॥१९४०॥
ज्यो इस धात वो चलबली बोल उठी । छिपे राज़[25] कूँ आपने खोल उठी ॥
सो लख धात दिलगीर वो मावली । हुई वैं पिघल नीर वो मावली ॥
चली आपने पूत शहवाल कन । ....॥
कही "ऐ मेरे मन के वन के निहाल । कि यो काम तुजसों है निस्बत एताल ॥
यकायक जो याँते हुआ ग़ैब[26] वो । सो तुज शाहकूँ है बड़ा ऐब यो ॥
तेरे मुल्क में ते है कुदरत किसे । जो यों काड चोरी ले जावे उसे ॥१९४६॥
हर एक धात सों कर तु पैदा उसे । ....॥
कि आशिक है उसकी बदीयुल्जमाल । मुबादा होवे उसके तैं पायमाल ॥[27]
मगर शाह दरियाय कुल्ज़म के लोग । अदावत सों सो राखते हैं यो रोग ॥
कि उसके जीवें मारकर भाइ कूँ । सिरंदीप के राज की जाइ कूँ ॥१९५०॥
यकेला अपें काड ल्याया अथा । सो माँ-बाप सों ल्या मिलाया अथा ॥१९५१॥

---

१. निर्मल सौन्दर्य, २. समूह, ३. प्रसन्न, ४. दुःखी, ५. भाँति, ६. शाहरुख-पुत्र, ७. भाँति-भाँति, ८. फेंका, ९. वहीं, १०. लज्जा, ११. धीरे, १२. अभी, अब, १३. उसके बिना, १४. असम्भव, १५. अकेला, १६. क्यों, १७. किया, १८. प्रकार, १९. समझ, २०. किया, २१. बुद्धिमानी, अक्लमंदी, २२. हस्तावलंबन, २३. होगा, २४. सारा, २५. रहस्य, २६. अदृश्य, २७. दुर्दशा-ग्रस्त ।

तु फ़र्जंद[१] है गर मेरे पेट का । तो यों नेट कर वक्त है नेट का ।।१९५४।।
मेरे मन कुँ सन्तोस सों पूर कर । यो शर्मिंदगी मुजते तूँ दूर कर ।।१९५६।।
कि नादान बाली **बदीयुल्जमाल** । तेरा जाव है होर तेरा मुल्क माल ।।१९५७।।
सो शहावल शह-फतह के खर्ग का । दिलावर निपट बाघ के वर्ग का ।।१९६४।।
फतह के दमामे पै लकड़ीकुँ लोक । चल्या लाट का थाट सँगात लोग ।।
गुसा ला होर शमशेर कुँ हात ले । सरब दलकुँ सब अपने सँगात ले ।।१९६६।।
यकायक जागे पैते ज्यों हिल्या । ज्यों असमान बादल के दल सों चल्या ।।१९६८।।
मुबादा नवीं कर ज़मीं भार सों । हवा पर रह्या आपने भार सों ।।
जो देखे दल उस शाह के कोट के । सो बिचके मलक अर्श के कोट के ।।१९७०।।
देखत सिलह संजोत का लकलकाट । गया सूर केरा सीना फाट फाट ।।
यकायक नज़र ज्यों पड़्या वो हजूम । हुए घाबरे खलबला सब नजूम ।।
उठ्या गुल जहाँ का तहाँ बेकयास[२] । गई यो खबर शाह कुल्ज़म के पास ।।
कि शहपाल बिन शाहरुख बादशाह । ....।।
तेरी सब विलायत कुँ पामाल कर । वो आता है तेरे उपर जाल कर ।।
सुन्या शाह कुल्ज़म जम इस बात कूँ । दिया भेज हाजिब कुँ इस धात सों ।।
कि "आना तुम्हारा हुआ क्या सबब । ....।।१९७६।।
किसी कूँन था आज लग यो मजाल । जो मुज मुल्क उपराल[३] कर आये चाल ।।
खुलासा जो कुछ है सो कह खोल कर । शिताबी[४] सेती भेज देउ बोलकर" ।।१९७९।।
खबर इस बजा की ले हाजिब शिताब । ....।।१९८१।।
सो शहवाल शह खुस्रवे बेनज़ीर[५] । दिया जाव कुँ यों कर गँभीर ।।
कि "तुम जो गुलिस्ताँ अरम से जिसे । पकड़ ल्याये हैं भेज देओ उसे ।।
जो वो आदमी है मेरे प्यार का । नहीं कोई दुनिया में उस सारका ।।
मुरौवत सों देवेंगे तो जाऊँगा । वगर नैं तो तुमना प चड़ आऊँगा ।।१९८५।।
दिये बाज उसे याँ ते हिलसूँ न मैं । कि गाड़्या है रन थाँभ टलसूँ[६] न मैं ।।१९८६।।
सुन उस बातकुँ शाह-कुल्ज़म वहीं । ....।।१९९३।।
कह्या "जाके इतवार यों बोल उसे । कि आया है तूँ धुँड लेता जिसे ।।
सलामत सों वो नैं है इस ठार पर । कि लै दिन हुए उस जीवन मार कर ।।
तुँ अपने सरबदल सों जा याँ ते भाग ? नहीं तो तुजे मैं करूँगा हलाल" ।।१९९६।।
गुसे साथ इस धात कह भेज वैं । हुआ मुस्तअद[७] बेग लड़ने के तैं ।।२००३।।
किस शहवाल बिन-शाहरुख बे-नज़ीर । जो हाजिब ते कडुवे सुन्या बोर फेर ।।२००६।।
हुआ तुंद होर तेज अधिक आग ते । गुसाला होकर अज्दहा[८] बाघते ।।२००८।।
उचा दल-पै-दल खुश चुपा रास्ता । किया हर तरफ ते सफ़ आरास्ता ।।

---

१. पुत्र, २. अपरिमित, ३. ऊपर, ४. जल्दी, ५. अनुपम, ६. टलूँगा, ७. तैयार, ८. अजगर।

(म) युद्ध-वर्णन

हुए जमा जंगी हज़ारां तमाम । क़बीदस्त खूंख्वार शूरां तमाम ।।२०१०।।
किये रुख दुंदे पर जो हर ठारते । ज़मीं वैस गई थी उसी भार ते ।।२०१२।।
ग़ज़बनाक हो ज्यों अँगे दल हुए । कलेजे पहाड़ाँ के फट जल हुए ।।२०१३।।
सलहपोश पौलाद के कोट ज्यों । बड़ा शोर समूदर की लोट ज्यों ।।२०१५।।
उताले हो आफ़त भरे अज़्म सों । खड़े आके मैदान में रज़्म सों ।।
बह्या बाव जो क़ह्र का शोर साथ । शितत की अगिन सुल्ग उठी जोर साथ ।।
उठ्या गुल जहाँ का तहाँ "मार मार" । कयामत ज़मीं पर हुई आशकार ।।
झलक देख बिज्ल्याँ सी तरवार के । उड़े फ़ाख़ते सख़्त संसार के ।।
जो दो राज दो घेरते[1] बरहम[2] हुये । गगन सातो हैबत ते[3] दरहम[4] हुये ।।२०२०।।
जो दौड़ उसके सफ़[5] पर दिलेराँ[6] पड़े । तो बकर्‌या[7] उपरजा के शेराँ पड़े ।।२०२३।।
सुटे खास होर आम कूँकाटकाट । जो किसकूँ[8] न समझा अथा बाट घाट ।।
दिलेराँ जो शहवाल के पाये बल । सो फौजाँ कुं एक घेर[9] ते उसके खँडल[10] ।।
सुटे[11] धड़पोते[12] यों मुंड्याँ काट-काट । न थी बाट जाने किसे बाँते न्हाट[13] ।।
जो दर्‌या लोहू हो उबलने लग्या । गगन इसपै कश्ती हो चलने लग्या ।।
सराँ तैरते लोहु के समदूर[14] ते । जो दिसते अथे बुडबुडे दूर ते ।
धड़ाँ सब निपट मौज के लोट भार । थे डुबते निकलते निहंगा के सार[15] ।।
बलायाँ के बाना[16] कुं ज्यों आग लाइ । ज़मीं होर ज़माने कुं बेताग लाइ ।।
ग़ज़ब पर ग़ज़ब का जो वारा हुआ । सो ऐसा बड़ा कुछ धुलारा हुआ ।
दुन्या गैब[17] हुई उस धुलारे[18] मने । गँवाता गया देस अँधारे मने ।।
लिया गर्द जा ढाँप असमानकूँ । धुआँ साँप हो नीगल्या भानकूँ ।।
सो दरिया कुल्ज़म कुं हैबत[19] छुटी । ज़मीं के तले गाय[20] अडरा उठी ।।
बड़ा रन पड़्या सख़्त रगड़ा हुआ । कहीं नैं सों नादिर[21] यो झगड़ा हुआ ।।
हो देवाँ[22] के हातों के बरहम तमाम । गया औट दरियाय कुल्ज़म तमाम ।।
फ़तह[23] पाये शहवाल के लोग सब । किये चूर शमशेर सों ठोक सब ।।२०३७।।
जो कुदरत के बल सों अधिक फ़तह पाय । पकड़ शाह कुल्ज़म कुं दरहाल ल्याय ।।
नज़र उसपे शहवाल की ज्यों पड़ी । सो[24] अरवाह[25] उस राज की ज्यों उड़ी ।।२०४०।।
बोला कर नजीक उस उठा बोल यों । .... ।।
कि "औतार था जग में ओ नेकनाम । वफ़ादार[26] था आदम्याँ में तमाम ।।

---

१. तरफ से, २. छिन्न-भिन्न, ३. भय से, ४. छिन्न-भिन्न, ५. पाँती, ६. बहादुरी, ७. बड़े-छोटे, ८. किसी को, ९. एक ओर, १०. तोड़ा, ११. फेंके, १२. धड़ पर से, १३. भागा, १४. समुद्र, १५. सदृश, १६. तीर, १७. लुप्त, १८. गर्द, १९. भय, २०. भूमिधारक, २१. दुर्लभ, २२. भगवान्, २३. विजय, २४. त्यों, तत्क्षण, २५. प्राण, २६. भक्त ।

तुजे छोड़ हरगिज़ न देसू[१] इताल[२] । करूँगा मिला धूल में पायमाल ।।
कि सँपडचा[३] है तूँ आज मुज हात में । तुं सच बोल झूठी न हो बात में ।।
उसे क्या किया मारकर काँ[४] सुट्या[५] । .... ।।२०४६।।
गले पड़ लग्या यों मुसल्लम[६] दुंवाल । सो वो राज है त्यों कहा खोल हाल ।।२०४९।।
कि "वो जान तेरा तो भीता अहै । मुवा नै कि अजऊँ वो जीता अहै ।।२०५०।।
उसी के बदल में मँगाया अथा । जो भाई को मेरे वो मारचा अथा ।।
गुसा था सो बँद में रख्या मैं न भार । सलामत सों है वो जतन[७] एक ठार ।।
जो तुज ते रज़ा[८] टुक अगर पाऊँ मैं । तो ल्या उसकुं दरहाल दिखलाऊँ मैं" ।।२०५३।।
बोला "भेज उस मेरे मन-मीत कूँ । मुहब्बत सो कर ताज़ा फिर रीत कूँ" ।।२०६०।।
यकायक खुले वख़्त[९] के ज्यों किवाड़ । सो ल्याये उसे बंद म्याने[१०] ते काड ।।२०६२।।
देख्या ज्यों अो दीदार[११] शहवाल का । खिल्या सिरते[१२] वैं[१३] फूल ज्यों डाल का ।।
पड्या आइ के शाह[१४] के चर्न पर । कह्या यों कि "ऐ खुस्नवे बहोवर ।।
बड़े बख़्त मेरे देख्या आज तुज । .... ।।
गया सब मेरा ग़म तेरे घेर[१५] ते । कि जिवदे बँचाया मुजे सीरते"[१६] ।।२०६६।।
शह इस बात ते ज़ौक़[१७] पा बेशुमार । सो पाया उसे अपने फ़र्ज़ंद सार[१८] ।।
उचा[१९] लेके छाती कुं लग्या वहीं । कि औतार कुछ है कि पाया वहीं ।।
फ़ज़ीलत[२०] मैं अज़मा[२१] के देखन लग्या । जे कुछ पूछिया सो वो बोलन लग्या ।।२०७०।।
हरेक बात पर उसकी हैराँ हुआ । .... ।।
केते लग खुश्याँ दिलमने[२२] आनकर । केतेक देस उस शह कुं बहुमान कर ।।
दे उसका मुलक उस रवाना किया । अपें आपने मुल्क जाना किया ।।
उठ्या फतह के ज्यों दमामें कुं ठोक । हुये शाद[२३] तिरलोक म्याने[२४] के लोग ।।२०७४।।
चल्या आपने शहर में नीट सों । ले सैफुल्मलूक कूँ पीट सों ।।२०७६।।
खलक[२५] सब गुलिस्ताँ अरम का तमाम । हो खुशहाल पाया अनँद ख़ासो-आम ।।२०७८।।
बदीयुल्जमाल आपने तनमने[२६] । खुली ज्यों कली फूलकी वनमने ।।

(य) विवाह-भोज—

उतम[२७] शहवान गुनी हक़्क़-गुज़ार । रोमारोम पाई खुशी बेशुमार ।।२०८०।।
कता लख बज़ा[२८] ज़ौक़[२९] के हाल सों । दुआ अपे फ़र्ज़न्द शहवाल कूँ ।।
कही यों कि "ऐ शाह, आफ़ाक़गीर[३०] । .... ।।
जो कँवली सहेली बदीयुल्जमाल । पुतली तेरे नैन की जग उजाल ।।२०८३।।

---

१. दूंगा, २. अभी, ३. पड़ा, ४. कहाँ, ५. फेंका, ६. पूरी तौर से, ७. जतन से, ८. आज्ञा, ९. भाग्य, १०. बंधन के बीच, ११. दर्शन, १२. फिर से, १३. वहीं, १४. जल के राजा, १५. तेरे पास, १६. फिर से, १७. प्रसन्नता, १८. पुत्र-सरीखा, १९. उठा, २०. बड़ापन, २१. परीक्षण, २२. दिल में, २३. प्रसन्न, २४. त्रिलोक में, २५. दुनिया, २६. मन में, २७. सच्ची, २८. लाख प्रकार, २९. प्रसन्न, ३०. चक्रवर्ती।

. . .   . । सौ सैफुल्मलूक सो मिला तू ताल[1] ॥२०८६॥
उनों दोनों यक होवना साज है । दुन्या दीन[2] में यम बड़ा काज है ॥२०८९॥
सो शहवाल माँ ते सुन्या यो जो बात । कबूल्याँ[3] वहीं लाख खुशियाँ सँगात ॥२०९०॥
खबर यो तुरत जगमें जाने लग्या । ज़मीं का निकल गंज[4] आने लग्या ॥२०९५॥
नगर सब गलिस्ताँ अरम का तमाम । हुआ साफ़ ज्यों जामेजम का तमाम[5] ॥२०९९॥
परे होर परयाँ जगके सारे मिले । मराये मज़ालिस[6] बिले-दर-बिले ॥२१००॥
परयाँ चुलबुल्याँ का सभा साज सों । लग्याँ नाचने मिलके यों नाज सों ॥२१०१॥
पंखे पंख[7] जडत के सदर[8] जगमगाहट । लग्या होवने चौकदन[9] तमतमाट ॥
पर्‌याँ बेबदल याँ सों धाइयाँ तमाम । . . .   . ॥
दहन[10] तंग कर मांग वारी कतर । शबेक़द्र[11] ते बाल बारीकतर ॥
हुई मस्त मजलिस खुशावाज़[12] सों । दिवानी कियाँ पातुराँ[13] नाज़ सों ॥
डुमकन्याँ मिल्याँ डोमनियाँ लोलियाँ । शकर शहद शीरीं[14] ते मिठ[15] बोलियाँ ॥
एकस एकते एक तरुन्याँ[16] अहै । सो कर्तार क्याँ मोर हरन्याँ अहैं ॥
सो पुरपे च जुल्फ़ाँ[17] कुँ देख गाल पर । कुँडल घाल बैठा भुजंग भाल पर ॥
पड़े लाल काले सो जाँ ताँ[18] तले । सो ज्यों नाग लड़ने है पावाँ तले ॥
न जानूँ कहाँ कूड मंतर सिख्याँ । पदम पाँव ना किसके जंतर सिख्याँ ॥२११०॥
लग्याँ नाचने[19] तैं जो सदरे-सदर[20] । तिरकने लग्याँ खुश जिधर का तिधर ॥
जो गत ले उठे मेंडले[21] फिर तमाम । सुटे[22] होश जागे पोते[23] धर तमाम ॥
मँदल काड मंदल[24] बजाने लगे । गीताँ[25] काड[26] पकर्‌याँ सो ल्याने लगे ॥
जँतर काड सों जाँ उचाये हलों । सो मजलिस[27] कुँ मस्ती में ल्याये हलों ॥
जो खेलन लगे नग्मे हर ठार ते । हिल्याँ सुन चतुर पुतलियाँ ठारते ॥
केता जो अथीं तान पर तान क्यों । रहीं डाल पँख सूर असमान क्याँ ॥२११६॥
देख उस बज्म का खुश सोहावा वो नूर[28] । लगे भेजने मर्‌हबा चाँद-सूर ॥
जो मजलिस कूँ खाना खिलाने प आय । सफा[29] खुश कँदूरया सो ल्या ल्या बिछाय ॥
कँदूरयाँ शहाने[30] सो लख जिन्स क्याँ[31] । रँगारँग शीरिनियाँ[32] हर एक जिन्स क्याँ ॥२१२०॥
जो फुलनीर[33] सों हात सबके धुलाय । कँदूरे खिलाने ले जा बैसलाय ॥२१२२॥
सो अस्मान बादल कुँ सँगात ले । चँदर-सूर के जाम[34] दो हात ले ॥

---

१. अब, २. लोक-वेद, ३. स्वीकार, ४. खजाना, ५. जमशेद का प्याला, ६. सभा, ७. प्रत्येक पंख में, ८. आँगन, ९. चारों ओर, १०. मुख, ११. दूज का चाँद, १२. सुस्वर, १३. नर्तकियाँ, १४. ईरानी, १५. मधुर, १६. तरुणियाँ, १७. अलकें, १८. जहाँ-तहाँ, १९. हँसने, २०. आँगन-आँगन, २१. मँड़राने, २२. फेंके, २३. जगह पर से, २४. पखावज, २५. करुण रस, २६. राग, २७. सभा, २८. प्रकाश, २९. शाबाश, ३०. अच्छे, ३१. प्रकार की, ३२. मिठाइयाँ, ३३. गुलाबजल, ३४. प्याले।

कमर बाँध खुश हो अपें आबदार[1] । नज़र सारी मजलिस पै रख ठार-ठार ॥
जल अमृत ल्या ल्या पिलाने लग्या । पिला प्यास भर-भर चलाने लग्या ॥
खलायक़[2] बले-दर-बले[3] खासो-आम[4] । कँदूरे ते फारिग[5] हुए खुश तमाम ॥
जड़त[6] के तबक[7] हर एक असमानते । भर उस म्याने[8] तिगटे बट्याँ[9] पान के ॥
अँबर[10] होर खुशबू कदम फूल-माल । फिराने लगे जान साहेब जमाल ॥
जहाँ लग अथ्याँ[11] जग में फुलवाड़ियाँ । जहाँ लग जो गँभीर पन्वाड़ियाँ ॥२१३०॥
सो यों खर्च तिल शह के आये वहीं । जो यक पान होर फुल उबर्‌या नहीं ॥
मनव्वर[12] किये अंजुमन[13] कूँ तमाम । ज़बरजद[14] के शीशे जमुर्रद[15] के जाम ॥
मदनमस्त साक़ी[16] छबीले जवान । अधिक छँद भरे खुश-रँगीले जवान ॥
मदन मद पियाले भरा साज सों । खड़े आके मजलिसमने[17] नाज़[18] सों ॥
फिराने लगे दौर-पर-दौर खुश । किये सारी मज्लिस केरा तौर[19] खुश ॥
अजब वो रँगी मद असरदार[20] था । मता वासते उसके संसार था ॥२१३६॥
पियाले जवाहर के फिरने लगे । मती[21] होके जानाँ सो गिरने लगे ॥
सो पड़ते थे जाँ मद के बुंद तूटकर । ज़मीं नाचती थी वहाँ ऊठकर ॥
हुए थे मती कोइ न थे होशियार । जे कोइ पीवे वह क्यों रहे होशियार ॥

(र) सोहागरात—

तजल्ली सों जलवे की ज्यों रात[22] आइ । सो वैं ग़ैबते[23] फ़ैज़[24] लख धात[25] पाइ ॥२१४३॥
मुरादाँ[26] जो धरते थे जग दिल मने[27] । सो पाये उसी रात यक तिल[28] मने ॥२१४५॥
निछल रूप क्याँ चुलबुल्याँ शहपरयाँ[29] । उतमजात, उतमज्ञान क्याँ गुनभर्‌याँ ॥२१४७॥
बदीयुल्जमाल अचपली[30] नार कूँ । डुबाया ज़रीने[31] में झलकारसों ॥
जो जलवा दिलाने होयाँ मुस्तअद[32] । महल जलवे कारन किया मुस्तअद ॥
जवाहर के मँडवे सो छायाँ तमाम । मुरस्सा[33] के पर्दे बँधायाँ तमाम ॥२१५०॥
हरेक महल सोफियाँ[34] मने रंग-रंग । जड़त के रचे ल्या छपर के पलंग ॥२१५१॥
मिल्याँ खुश हो मायाँ वा बायाँ तमाम । शो[35] आरुस[36] के पास आयाँ तमाम ॥
दुन्याँ उस घड़ी जाँ हुई सीरते[37] । खुलें बख्त गोतियाँ[38] के एक घेरते[39] ॥
उत्तम डोमनियाँ मिल के गानै लग्याँ । सुरेले[40] शहाने सो गाने लग्याँ ॥

---

१. चमकदार, २. जनता, ३. भीड़-पर-भीड़, ४. बड़े-छोटे, ५. छुट्टी पा, ६. जड़ाऊ, ७. थाल, ८. उसमें, ९. बीड़े, १०. एक सुगंधित पदार्थ, ११. थीं, १२. प्रकाशमान, १३. सभा, १४. एक पन्ना, १५. पन्ना, १६. मधुबाला, १७. सभा में, १८. लीला, १९. ढंग, २०. प्रभावकारी, २१. मस्त, २२. सोहागरात, २३. अदृष्ट से, २४. वरदान, २५. भाँति, २६. अभिलाषाएँ, २७. दिल में, २८. क्षण, २९. पक्षी, ३०. चंचला, ३१. अ भूषण ३२. तैयार, ३३. सुनहरी, ३४. सजावट, ३५. दुलहा, ३६. दुलहन, ३७. फिर से, ३८. भाई-बंदों, ३९. एक ओर से, ४०. एक गीत।

नवलजात सैफुलमलूक बख़्तवर[१] । उमस[२] सात आ बैठिया तख़्त पर ।।
बनी होर बने लोक पलाने[३] लगे । शौ-आरुस के तें सराने लगे ।।
असादत के सायत[४] हवैदा[५] हुआ । सो क़ाज़ी[६] मसीहा[७] हो पैदा हुआ ।।
लिया शौं केरा हात अपन हात में । खुशी सों पढ़या अक्द[८] उस सात[९] में ।।
दुआ सर किया[१०] ज्यों खुश-आईन सों[११] । मलायक[१२] किये ख़त्म[१३] आमीन[१४] सों ।।
मिले शहके चौधर[१५] सब गोतियाँ । लगे वारने शौ[१६] उपर मोतियाँ ।।२१६०।।
चले जलवे[१७] के महल में शौ कुँ ले । किवाड़ाँ सो अकवाल[१८] केरे खुले ।।
खडा मुश्तरी[१९] नाज़ का साज़[२०] कर । सुरज जगमगाता सो असमान पर ।।
मशाता[२१] हो ज़ोहरा उतर आई बेग । चमक नूर का ल्या के झमकाइ वेग ।।
निछल नूर का ल्याके पर्दा बँदाय । शौ-आरुस[२२] दोनों कुं ल्या बेसलाय ।।
जो पर्दे में ते हात हलने लगे । मो लख धात[२३] फूलाँ उछलने लगे ।।
देखु जलवा मशाता जो निरवाल[२४] हुई । मो भोगी नवलशाह की वाँ चाल हुई[२५] ।।
नबी[२६] पर हज़ाराँ दरुद[२७] भेज वें । चल्या लेके आरुस कूँ सेज वें ।।२१६८।।
दे मुख ज्यों शौ ने आरुस का । खुल्या सिरते[२८] ज्यों फूल फिरदौस[२९] का ।।२१७१।।
चिड़ी खूब महबूब[३०] देख हाथ में । रिझाने लग्या बातकर बात में ।।२१७२।।

(ल) बरात-बिदाई—

हुआ जग में मशहूर हर ठाँव यों । बसे लगा दुनिया में रह्या नाँव यो ।।२१९५।।
शिगुफ्ता हो शहवाल शह नेक-नाम । उमस[३१] पा खुलाये खजाने तमाम ।।
.... । लग्या बाँटने माल मन भाये त्यों ।।
किसे नौ रतन होर किसे मोतियाँ । किसे हतकडक[३२] होर पदक जोतियाँ ।।
किसीकूँ[३३] जडत के उतम कण्ठमाल । किसीकूँ जड़त की पटी जग उजाल ।।
किसे जात तेज़ी[३४] किसे मस्त हस्त । किसे खूब तोहफ़े[३५] किसे खूब[३६] बस्त ।।२२००।।
किया दान बेमिस्ल यकधेरते[३७] । दिया खिलअताँ[३८] सबकूँ यों सीरते[३९] ।।
किस मेहमान सबकूँ किया सरफ़राज़ । .... ।।२२०२।।
रज़ा[४०] ले जो मेहमानदाराँ[४१] चले । दुआ शाहकूँ कर हज़ाराँ चले ।।२२०४।।
डुबी थी सोने में ज़मीं जाँ-तँहा । कि ऐसा सखी[४२] बेबदल[४३] है कहाँ ।।२२०५।।

---

१. भाग्यवान्, २. उत्साह, ३. गाने, ४. शुभ मुहूर्त्त, ५. प्रकट, ६. पुरोहित, ७. प्राणद, ईसा, ८. ब्याह, ९. उसके साथ, १०. शुरू किया, ११. अच्छे ढंग से, १२. फरिश्ते, १३. समाप्त, १४. एवमस्तु, १५. चारों ओर, १६. दुलहा, १७. सोहाग, १८. प्रताप, १९. शुक्र तारा, २०. सज्जा, २१. नायन, २२. दुलहा-दुलहन, २३. भाँति, २४. अदृष्ट, २५. थी, २६. पैगम्बर, २७. प्रशंसा-वाक्य, २८. फिर से, २९. नंदन, ३०. प्रिय, ३१. उत्साह, ३२. हाथ के कटक, ३३. किसी को, ३४. अरबी घोड़े, ३५. भेंट, ३६. सुन्दर वस्तु, ३७. एक ओर से, ३८. परिधान, ३९. फिर से, ४०. आज्ञा, ४१. मेहमान, ४२. सुन्दरी, ४३. अनुपम।

जो गँभीर शहवाल दाना नरेन्द[1] । केतक दिन शौ-आरुस कूँ रख नज़ीक ।।२२०७।।
मँग्या भेजने उसके माँ-बाप पास । दिया खूब बस्ताँ[2] जो थे अपने पास ।।
चँदर-सूरते दर्जकाँ[3] कइ हज़ार । जवाहर भरे सँदुकाँ बेशुमार ।।
केतेक जिन्स के खूब बाँदी-गुलाम । केतेक पातुराँ जिल्द नादिर[4] तमाम ।।२२१०।।
मुकल्लल[5] जड़ित की अमीरी[6] गँभीर । कराया तुरत मुस्तइद[7] बेनजीर[8] ।।
दुआ पर दुआ कर गले लाय कर । शौ-आरुस कूँ उसमें बसलायकर ।।२२१२।।
बड़े गलगले सों रवाना किया । .... ।।२२१३।।

(ब) सिंहलद्वीप से अपने देश में—

जो अँपड़े सिरंदीप के राज पास । महाराज गँभीर सिरताज पास ।।२२१६।।
बड़ी शान सों लाइया शह में । हुआ आशकारा[9] यो चौंधेर[10] में ।।२२१८।।
मिला शाहज़ादी सों आ भाइ वो । तेखत भाइ कूँ खुश गले लाइ वो ।।२२१९।।
नेके यार सायद वफ़ादार[11] सों । मिलाया खुश सीने लाइया प्यार सों ।।२२२०।।
केतक दिन वहाँ माँदगी दूर कर । .... ।।
समज खूब सायद दुख्यारे की धात[12] । चलाया हलों[13] ख्वास्तगारी[14] की बात ।।
सो ओ जगपती राजा राज़ी हुआ । .... ।।
किया खुश हो शह मेज़वानी[15] शुरू । .... ।।
जो जाँ लग कलावन्त ते वाँ भरे । तमाम आपने तायफाँ सों[16] खड़े ।।२२३२।।
उचाने लगे इस वज़ा[17] तमतमाट । जो तिरलोक का वाँ भर्‌या आके हाट ।।२२३३।।
भर्‌या वास खुश्बूइ[18] का ठार-ठार । सिरंदीप सारा हुआ नौबहार[19] ।।२२३७।।
सआदत[20] की सायत[21] में खुशहाल यों । पढ़्या फूलका अकद उस डाल सों[22] ।।२२४०।।
मिले ज्यों ओ शहज़ादी होर यो जवाँन । हुआ शाद[23] सैफुल्मलूक का परान ।।
समेट मालधन बाँते ले बेहिसाब[24] । चल्ले मिस्र के मुल्क कूँ फिर शिताब[25] ।।२२४२।।
जो आसिम नवलशाह दुखी झूक-झूक । हुआ था जो काड़ी नमन[26] सूख-सूख ।।
यकायक खुशी होर आनंद की । सुन्या ज्यों[27] खबर अपने फ़र्ज़ंद की ।।
फुग्या[28] होर आया रगे-रग परान । बुढ़ा ढोंडा था सो हुआ फिर जवान ।।२२४५।।
गया सामने होर मिल्या पूतकूँ । गल्ले ला किया पूतकूँ गुल तिसूँ[29] ।।२२४८।।
खुश्याँ सों बुला शह में लाइया । .... ।।

---

१. पुरुष एक, २. अच्छी वस्तुएँ, ३. बराबर का, ४. दुर्लभ, ५. सुनहरी, ६. हौदा, ७. तैयार, ८. अनुपम, ९. प्रकट, १०. चारों ओर, ११. भक्त, १२. भाँति, १३. धीरे, १४. मँगनी, १५. आतिथ्य, १६. सामाजिकों के साथ, १७. प्रकार, १८. सुगंधि, १९. नववसन्त, २०. शुभ, २१. मुहूर्त, २२. जैसे, २३. प्रसन्न, २४. अगनित, २५. जल्दी, २६. तीली-जैसी, २७. जैसे ही, २८. प्रफुल्लित हुआ, २९. तिससे।

दिया आपनी बादशाही उसे । सलामाँ किये सब सिपाही उसे ।।२२५०।।
लाया करने सैफुलमलूक राज खुश । ....।।
खुदा उसके मन की दिया ज्यों मुराद[1] । देवे हर तलबगार का वों मुराद ।।
कहाँ आसमाँ होर कहाँ धरतिरी[2] । कहाँ आदमी होर कहाँ शहपरी[3] ।।२२५३।।
खुदा यो मिलाने जो आता अहै । सो इस धात[4] सों ला मिलाता अहै ।।

(श) कविकी ओरसे—

लिख इस धात सों दास्ताँ बेनजीर[5] । रिसाला[6] लताफ़त[7] भर्‌या दिलपज़ीर[8] ।।२२५७।।
जो लिखने न सक वो रसन[9] का क़लम । सो माँदा हो पड़ता अथा दम-बदम[10] ।।
निझाँ दिलकी अँखियाँ सों देखी[11] मने । तो हर एक बैत[12] इस सफ़ीने मने[13] ।।
जगा जोते महबूब[14] हें बकदार[15] । मेरे फ़िक्र पर्दे तें[16] निकली बहार[17] ।।२२६०।।
मलायक[18] सो बालाय चर्खे-बरी[19] । कहें इस सफ़ीने कुँ देख आफ़री[20] ।।२२६२।।
रतन पारखी बेबदल[21] मुश्तरी[22] । मेरे जौंहराँ[23] का हुआ मुश्तरी[24] ।।
कि मेरे चतुर शहनवल लालतें । बुलँद[25] उसके गंभीर अकबाल तें ।।
न कैं ऐसे जौहर[26] हैं झलकार के । न किस खान में होयें संसार के ।।
कि निकले हैं नादिर[27] हो जौहर मेरे । ....।।२२६६।।
हरेकस[28] कुँ है कुर्ब[29] घनमाल का । मुजे कुर्ब इस जौहराँ लाल का ।। २२६८।।
कि चोराँते इस माल कूँ है दग़ा[30] । ....।।२२६९।।
जो सुल्तान अब्दुल्ला इन्साफ़[31] कर । मेरे जोहराँ पोते[32] दिल साफ[33] कर ।।२२७१।।
देवे दाद मेरा बहुत मान[34] पाउँ । ....।।
कि यो शाह मेरा खरीददार होय । तो ताज़ा मेरा तबा गुलज़ार होय ।।
कि गमगीं[35] हुँ मैं सख्त संसार ते । घरूँ दग़दग़ा[36] लाख इस आज़ार[37] ते ।।
परेशानगी में जम्या ख्याल में । ले ले आया हुँ ऐसे रतन ढाल मैं ।।२२७५।।
जो भोगी नवलशाह सेती फहे[38] पाउँ । तो इसते रतन खास घुँड घुँड[39] ल्याउँ ।।
अगर्चे[40] हूँ शह के बद्याँ[41] में हक़ीर[42] । बले शेर के फ़न[43] में हूँ बेनज़ीर ।।

---

१. मनश्कामना, २. पृथ्वी, ३. परी नारियों की, ४. भाँति, प्रकार, ५. अनुपम, ६. पुस्तिका, ७. मंजुलता, ८. मनोहर, ९. रसों का, १०. क्षण-क्षण, ११. ध्यान से देख, १२. शेर, पद, १३. कागज में, १४. प्रिय, १५. सम्माननीय, १६. चिंतन के भीतर से, १७. बाहर, १८. फरिश्ते, १९. ऊपरी स्वर्ग, २०. शाबाश, २१. अनुपम, २२. शुक्रतारा, २३. रत्न, २४. खरीदार, २५. ऊँचा, २६. प्रताप, २७. दुर्लभ, २८. हरेक को, २९. स्नेह, नजीकपन, ३०. धोखा, ३१. न्याय, ३२. रत्नों पर से, ३३. न्याय, ३४. चित्त, ३५. शोकाकुल, ३६. भय, ३७. दुःख, ३८. आनन्द, ३९. ढूंढ-ढूंढ, ४०. यद्यपि, ४१. दासों, ४२. छोटा सा, ४३. कला।

कि मुंह खोल यों मैं कहूँ क्या अपें । गवाही देवें शेर[1] अपें ना छुपें ।।
बहरहाल यो नज्म[2] अल्हाम[3] सो । किया मैं नवलशाह के नाम सों ।।
बरस यक हजार हो पंजतीस[4] (११३५ हि०) में । किया खत्म[5] यो नज्म दिन तीसमें ।।२२८०।।
पढ्या कूँ तो सब आवे यो कामकूँ । देवे ज़ौक़[6] अधिक खास होर आम[7] कूँ ।।२२८२।।
लिखनहारा यो लाभ पर लाभ पाय । .... ।।
मुबारक अछो[8] शाहकूँ यो सुदाम[9] । बहक़कै मुहम्मद अलैहिस्सलाम[10] ।।
मुबारिक[11] घड़ी में किया मैं तमाम[12] । मुहम्मद नबी पर हजाराँ सलाम ।।२२८५।।

२. तूतीनामा*

(१) कथा-आरंभ

कते[13] हैं जो था कोइ सौदागर एक । बजाहतमने[14] पाकसीरत[15] में नेक ।।१४७।।
उतम भाग का भोगिनी[16] बख़्तवर[17] । घर उसका सो था ऐन[18] बंदर के सार[19] ।।
जेते उस ज़माने के सौदागराँ । ओते उसके अंग थे जो चाकराँ ।।
किया था खुदा यों उसे सर्फ़राज़[20] । जो थे सातों दरिया[21] उपर उसके जहाज़ ।।१५०।।
शहाँपास[22] नें कुछ सो उस पास था । यकल[23] नौरतन गंज[24] नौ रास था ।।१५१।।
हुआ घरमने[25] एक फ़र्ज़ंद उसे । सो वैसा हुआ आज लग नें किसे ।।१५४।।
घर उसका झमकने[26] लगा नूर[27] ते । सितारा चल आया मगर[28] दूरते ।।१५६।।
केतक घोस कूँ जों हुआ वह जवान । .... ।।१५७।।
न्हनी एक महबूब[29] महताब से । लताफ़त[30] में निर्मल निछल आब[31] से ।।
.... । किया लाख खुशियाँ सेती कार खैर[32] ।।
केतक दिनकूँ घरमें ते जों वो जवान । निकल भार[33] आया ... ।।१६०।।
सो बाज़ार घेर सैर करता चला । .... ।।
सो रावी[34] एकस के देखा हात में । जो मुरगोलता[35] है वो हर बात में ।।१६२।।
हवस[36] अपने दिलमें धरा[37] बेशुमार[38] । लिया मौल रावीकूँ दे हुन[39] हजार ।।
खुशी सों जो आया फिर अपने मंदिर । उठन बोल रावाँ कि "ए दस्तगीर[40] ।।

---

१. पद्य, २. कविता, पद्य, ३. भगवद्‌वाणी, ४. ११३५ हिजरी सन्, ५. समाप्त, ६. स्वाद, आनन्द, ७. छोटे-बड़े, ८. रहो, ९. सदा, १०. उस पर सलाम, ११. शुभ, १२. समाप्त ।

*** 'तूतीनामा'—सिलसिला यूसुफ़िया, हैदराबाद, १३५७ हि० ।**

१३. कहते, १४. दर्जे में, १५. सदाचार, १६. ऐश्वर्यवाली, १७. भाग्यवान्, १८. ठीक, १९. बंदरगाह-सदृश, २०. भाग्यशाली, बड़ा, २१. समुद्र, २२. शाहों के पास, २३. अकेला, २४. खजाना, २५. घरमें, २६. चमकने, २७. प्रकाश, २८. मानों, २९. प्रियतमा, ३०. मंजुलता, ३१. चमक, पानी, ३२. शुभकार्य, ३३. बाहर, ३४. तोता, ३५. कलरव करता, ३६. लालसा, ३७. रखा, ३८. अपरिमित, ३९. दक्खिनी स्वर्ण-मुद्रा, ४०. अवलंबन देनेवाले ।

नुमाइश में[1] गरचे[2] मुठी पर[3] हुँ मैं । बले[4] इल्म[5] के फ़न[6] में बेहतर हूँ मैं ।।
जहाँ लग जहाँ[7] में हैं अहले-कलाम[8] । है हैरान[9] मेरे वचन ते तमाम ।।
कमीना[10] हुनर कुछ जो है मुज में एक । कहूँगा तुमों[11] खोल अज़मा के[12] देख ।।
कि जैसा अंगे[13] होनहार हैं काम । समत है जो अब खोल बोलूँ तमाम ।।
कि दो तीन दिन के पछे देख याँ । कि आता है यक कें सेती[14] कारवाँ[15] ।।१७०।।
जिनन पास अंबर[16] हैं इस शह्र बीच । खरीद आ करनहार है सब बहीच ।।
वो ना आये लग हो खबरदार तूँ । वो अंबर सो ले मोल यकबार तूँ ।।
मेरी बात सुन होवेगा कामयाब[17] । है इसमें तुझे फ़ायदा बेहिसाब[18] ।।
हो खुशहाल[19] इस बातते वो जवान । जिनन पास अंबर अथा पा निशान[20] ।।
लिया मोल एक घर सेती[21] बेशुमार[22] । लेजा अपने घरमें भराया अँबार[23] ।।
यकाएक ऐसे में वो कारवाँ । सो आया वो रावाँ[24] कहे त्यों च वाँ ।।१८६।।
वो अंबर बजा[25] चौगुने भोलसों । दिया उनकूँ सुन्नेकेरे तोलसों ।।१८८।।
जो हर एक छिन दिल मने[26] शौक आन । चल्या फेर बाज़ारकूँ वो जवान ।।१९०।।
देखा एक मैनाँ कुँ मिठ बोल खूब[27] । उसे भी लिया होर दिया मोल खूब ।।
मुरस्साके खुश एक पिंजरे में छोड़ । रख्या ल्याके राँवी के नज़दीक जोड़ ।।
बले अवल राखी में कुछ और था । .... ।।
.... । कहै हर घड़ी वो हिकायत[28] नबी ।।
जो नागाह बाताँ में उस ज्वान साथ । कह्या दरिया[29] की जो तिजारत की बात ।।
सो बहुत च आया उमस[30] उसके तें । दर्या के सफ़र का सो कर अज़्म[31] वैं ।।
लिया बोल दिलमें जो बेहतर है जाउँ । तमाशा देखूँ माल ले कुछ मैं आउँ ।।१८७।।
अपस में अपे फ़िक्र[32] कर इस वजा । .... ।।
ले तोते कुँ मैना कुँ वें हाथ में । सो औ रतकन आया उसी साथ मे ।।
गले ला मुहब्बत सों गुज़रान बात । वो दोनों पँख्याँ कूँ सो दे उसके हात ।।
हो मुस्तैद[33] घरमें ते बाहर हुआ । सो वेगी सेती वें मुसाफिर हुआ ।।
सफ़र में लगा मर्द कू जो दरंग[34] । सो औरतके तैं घर लग्या सख़्त तंग ।।
न गमता देखत वक्त हैरान होय । .... ।।
जो थी घर में म्हाड़ी[35] सो जा वाँचढी । हलों[36] खोल खिड़की निझाती[37] खड़ी ।।
सो ऐसे मने[38] यक छबीला जवान । परी उसकूँ देखे तो देवे परान ।।१९७।।

---

१. देखने में, २. यद्यपि, ३. पंख, ४. लेकिन, ५. विद्या, ६. कला, ७. दुनिया, ८. वाणीपुत्र, ९. चकित, १०. छोटा-सा, ११. तुझसे, १२. परीक्षा कर, १३. कठिन, १४. कहीं से, १५. सार्थ, १६. एक सुगंधित वस्तु, १७. सफल, १८. अपरिमित, १९. सुखी, २०. पता, २१. एक ओर से, २२. असंख्य, २३. राशि, २४. वैसे ही, २५. प्रकार, २६. दिल में, २७. सुन्दर, २८. कथा, २९. समुद्र, ३०. उत्साह, ३१. ईरान, ३२. विचार, ३३. तैयार, ३४. भय, ३५. अटारी, ३६. धीरे, ३७. देखती, ३८. इसी समय।

निझ्या रुख[1] उसका वह चंचल जवान । सो मार्‌या वही इश्क़ का तेज़ बान ।।२००।।
जो उस बान की घाव कारी[2] लगी । अंतर ते च[3] दोनों में यारी लगी ।।२०१।।
बहरहाल[4] उस इश्क फाँदे में मेल[5] । चल्या अपने मंदीर ताज़ी[6] कूँ ठेल ।।
बोला एक बुढी मक्रजन[7] कूँ शिताब[8] । दिया उस टके खुश किया बेहिसाब ।।
कहा खोल राज़[9] अपना उसके घेर[10] । .... ।।२०६।।
जो वह मक्रजन उस सो धन के घरआइ । .... ।।२०७।।
बला ले[11] हलों वें रिझाने लगी । वचन मक्र के सो चलाने लगी ।।२०९।।
बहरहाल बाताँ सों उस नर्म की । मुहब्बतमने[12] ज्वान के गर्म की ।।२११।।
सो जाँ मोम उसके पिघल ध्यान में । कही उस बुड़ीकूँ हलों कान में ।।

(२) नारी-निंदा--

'नारि नरक की खान' गौवासी के ज्येष्ठ समसामयिक कवि भी कह गये थे, किन्तु इसका दोष हम व्यक्तियों को नहीं दे सकते। पुरुष द्वारा स्त्री के अधिकार-वंचित हो पुरुष की दासी बनने, अर्थात् मातृसत्ताक समाज के स्थान पर पुरुषसत्ताक समाज बनने के साथ ही नारी को सारे अवगुणों की खान बतलाया जाने लगा। गौवासी और तुलसीदास ने सहस्राब्दियों से चली आती इसी धारणा को दुहराया। गौवासीके उद्‌गार हैं—

गवासी अगर नार घातक पर[13] आय । तो सच बातकूँ झठकर यों हराय ।।९५१।।
जो फुट जा सचाँ[14] का सीना चर होय । बुरी जात है यो अगर हूर[15] होय ।।९५२।।
गवासी है औरत बड़ी ही लागर[16] । कि इब्लीस वैसों[17] का है इसका डर ।।९९९।।
जों असमानकूँ ऐसी औरत निझाय[18] । फरिश्ता[19] उतर भुँइ पो हरगिज[20] न आय ।।१०००।।
गवासी जेती खूब[21] औरत अछे[22] । रहै ना बगैर कुछ हीला[23] रचै ।।१०४१।।
जवान[24] होर औरत ते डरना भला । कि है जे बला बद[25] सो है यो बला ।।१०४१।।
गवासी सख्याँ[26] पर न धर एतवार[27] । कि हैं इन्द्रायन के यो फल के सार[28] ।।१०७४।।
मीठ्याँ गरचे दिसत्याँ है जों शक्र आज । बले दिलमें कुछ नैं है कड़वाई बाज ।।१०७६।।
गवासी जो नार्‌याँ केरा मक्र कोय । लिखे सो किताबाँ तो पूरा न होय ।।११५०।।
भला होजो तायब इननतें छुटे । कलम तोड़ कर कागजाँ धो सुटे ।।११५१।।
गवासी यक़ीं जान औरत है साँप । फबे बल तो नलदे बिला उज्र जाप ।।११९२।।
न जा उनकी जा हिरकी खूबी पो भूल । कि काँटे ते हैं तेज यो गर्चे फूल ।।११९३।।

---

१. चेहरा, २. गहरा, ३. भीतर से ही, ४. हर तरह, ५. डाल, ६. अरबी घोड़े, ७. धोखेबाज स्त्री, ८. जल्दी, ९. रहस्य, १०. पास, ११. बलैय्या ले, १२. प्रेम में, १३. घात करने पर, १४. सच्चों का, १५. अप्सरा, १६. बहानेबाज, १७. शैतान-जैसों, १८. देखे, १९. देवदूत, २०. कदापि, २१. सुन्दर, २२. है, २३. बहाना, २४. जीभ, २५. बुरी, २६. स्त्रियों, २७. विश्वास, २८. सदृश।

वासी जफ़ावर है औरत अगर । खड़ी होय आ मक्र के सीस पर ।।१२३८।।

(३) सेठानी को रोकना—प्रोषितपतिका सेठानी को तोता बार बार रोकता है, इसे वासी कहता है—

ो ओ सरव्-कद[1] नार सुंदर सुधन । जड़ित आभरन[2] साथ सिंगार तन ।।१३२८।।
ही धकधकाते ज़रीने सेती । चली रावीकन[3] जलते सीने सेती ।।
बाँ खोल उसों[4] बोल उठी इस तरीक[5] । कि "ऐ मेरे मनके मुवाफ़िक[6] रफ़ीक़[7] ।।३३०।।
जानूँ कि क्यों है मेरे भाग आज । लगी है सीनेकूँ विरह आग आज ।।
ो अक़ल[8] आज लग थी मेरे हात में । किधर गई कि दिसती नहीं ज़ात[9] में ।।
गर तूँ न कुछ मेहरबानी करे । .... ।।
इस वक्त ऐ सा हेबे अक़्लराय[10] । न काम आय तो मुँजकूँ क्या काम आय ।।
ज़ा[11] दे जो में वाँ तलक जाउँ आज । वसाल[12] उस नवे यार का पाउँ आज ।।३३५।।

—कथा २

ागुफ्ता[13] हो तब चलबली ओ निगार[14] । लटकती[15] चली छवसों राँवीं के ठार ।।४५६।।
नटे शक्र ऐसे अधर खोल उसों[16] । लगी बोलने यों मिठे बोल उसों ।।
क "ऐ मेरे पंखी, खुश-आवाज़[17] कँ । ऐ बुलबुल मेरे गुल्शने-राज़[18] के ।। ४६० ।।
हीं ठारता मन मेरा आज कँ[19] । मेरे दर्द ते तुज खबर है कि नैं ।।
ऐ वक्त ने जो करै कुछ दरंग । रज़ा दे तुरत मुँजकूँ आई हुँ तंग ।।
हीं इसते पलाड[20] कुछ मुजमें ताब[21] । कि इश्कोंते[22] उसके हुई हूँ खराब" ।।

—कथा ३

न इस बातकुँ पंखी बेबदल[23] । कह्या यों जो "ऐ मदकी माती चंचल।।
बब[24] आपना मन तुँ लेती है गाल । अपस[25] के[26] तु करती है यों पायमाल।।
.... । वले[27] वेग जा आज निस पाड्गंज[28] ।।
ादा[29] सफरसे तेरा मर्द आय । तेरी हौस[30] रह यों तेरे मन में जाय ।।४६७।।

—कथा ४

ा फिर ओ चंचल । जुलेखा[31] हो राँवी कने आइ चल ।।६०५।।
ही यों कि "ऐ बेबदल[32] हमजलीस[33] । .... ।।
कर नागा[34] हर रात आ तेरे पास । जो तब्दीद[35] देती हूँ मैं बेकयास[36] ।।
मैं सोऊँ ना तुजकूँ देउँ न सोन । बजुज़[37] तूँ जफ़ा[38] यों सके सोस[39] कौन ।।

---

१. सरो जैसे सीधे कदवाली, २. आभूषण से, ३. सुग्गे के पास, ४. उससे, ५. तरह, अनुकूल, ७. साथी, ८. बुद्धि, ९. अपने, १०. बुद्धि-मंत्रणावाले, ११. अनुमति, १२. मिलन, ३. प्रफुल्लित, १४. चित्र-सी १५. झूमती, १६. उससें, १७. सुध्वनि, १८. रहस्यो-द्यान, १९. कहीं, ०. अनुमति, २१. शक्ति, २२. प्रेम से, २३. अनमोल, २४. कारण, २५. अपने, २६. क्यों, ७. लेकिन, २८. छोड़, खजाना, २९. शायद, ३०. लालसा, ३१. मिली, सुन्दरी ३२. अनमोल, ३. साथी, ३४. चूकना, ३५. दुख, ३६. अपरिमित, ३७. सिवाय, ३८. जुल्म, ३९. सहन।

अजब कुछ मुरौवत है तुज-जात[१] में । तेरी शरमिंदी हूँ मैं इस बात में ।।
बले[२] फिक्र[३] कर कुछ मेरे काम का । जो वल होय तुजकूँ भी आराम का ।।६१०।।

—कथा ५

फिर ओ विरहिनी इश्क के ख्याल सों । चली रांवीकन मुज्तरिब[४] हाल सों ।।७७१।।
कहीं यों कि "ए दर्द होर दुख के यार । पड़े मुज कलेजेकूँ रोजन[५] इज़ार ।।
हुआ छीज पिजरां मेरा तन तमाम । गले बिरह के अगते जोवन तमाम ।।
वगैर तूँ[६] तो मोहरम[७] मेरा कोइ नैं । तेरी आससों जिउ पकड रही हूँ मैं ।।
रज़ा[८] दे जो घर यार के जाउँ आज । जो राहत[९] फरागत[१०] से टुक पाउँ आज" ।।
सुन ऐ बात हँस पड ओ राँवा[११] उसे । कह्या यों कि "ऐ नार, मुंज यों दिसे ।।
अगर इश्क अछता[१२] तेरे दिल में कूछ । तो करती गुपत काम यो किस न पूछ ।।
कि है सख्त अल्लड होर नादान[१३] तूँ । है जाने मैं अपने परेशान[१४] तूँ ।।
न कै तुझते हो यार वों नाउमेद[१५] । .... ।।७८०।।
.... । ...सो फिर गमज़दी[१६] हो वाँ नार ।।८७५।।
दे दुख समद[१७] कूँ जोश सीनेमने[१८] । अँजू[१९] ढालती आई राँवी कने ।।
कही यों कि "ऐ मेरे खिल्वत[२०] के दोस्त । मेरा मांस गल जा रह्या तनवो पोस्त[२१] ।।
सीना कोंडता है मुसल्लम[२२] मेरा । कयामत[२३] ले आया है यो ग़म मेरा ।।
न जानूं उसे किस घडी मैं निझाइ[२४] । उसूँ[२५] किस बुरे वक्तपर जीव लाइ ।।
कहाँ ते नज़र उसपो मेरी पड़ी । यो कैसी बला आ मेरे सिर खड़ी ।।८८०।।
कधीं[२६] सुखमें विरहे जली हुइ न मैं । निपजते च[२७] के अंधली हुइ न मैं ।।
यो दीदे[२८] जो दिन-दिन रसीदे[२९] हुये । सो दंदे[३०] होकर मुजपो सीधे हुये ।।
जो इस घात[३१] सों दुख उंडेले बहार[३२] । .... ।।८८३।।

—कथा ६

फिर ओ विरहिनी नार रावाँकिन आइ । सो दिलगीर[३३] अपसते उसे सख्तपाइ[३४] ।।
रगेरग में फिर बेकरारी[३५] छुटी । निपट चटपटी[३६] साथ यों बोल उठी ।।१२८०।।
कि "ऐ मेरे गमगीनके[३७] गमगुसार[३८] । तूँ किस फिक्र[३९] ते आज है बेक़रार[४०] ।।
मैं आई जो तूँ फिक्र मेरी करे । न की[४१] मुज दुखी फिक्र तेरी करे" ।।
सुन इस बातकूँ ओ पँखी भा उसास । कह्या यों कि "ऐ मोहिनी हक़शनास[४२] ।।
तुँ महबूब[४३] है जातवंती[४४] गंभीर । .... ।।

१. स्नेह, २. लेकिन, ३. चिन्ता, ४. अधीर, ५. छंद, ६. तेरे बिना, ७. नर्म सचिव, ८. आज्ञा, ९. सुख, १०. छुट्टी, ११. सुग्गा, १२. रहता, १३. निर्बुद्धि, १४. हैरान, १५. निराश, १६. दुखी, १७. समुद्र, १८. सीने में, १९. आंसू, २०. एकान्त, २१. चमड़ा, २२. पूरा, २३. प्रलय, २४. देख, २५. उससे, २६. कभी, २७. उपजते ही, २८. आंखें, २९. पाये, ३०. झगड़ा, ३१. भाँति, ३२. बाहर, ३३. दुःखी, ३४. कठोर, ३५. अधीरता, ३६. जल्दी, ३७. शोकाकुल, ३८. संवेदक, ३९. चिंता, ४०. अधीर, ४१. नहीं की, ४२. सच पारखी, ४३. प्रियतमा, ४४. बड़ी जाति का।

ले[1] यार तेरा है किस धातका[2] । मुजे काम[3] नें उसकी कुछ जातका ।।
गर जात वनता है तुज सारखा । तो यार उस कह्या जाय तुज नार का ।।१२८६।।

—कथा ७

फर वो नार ज्यों मीन विन नीर की । हदफ़[4] बेकरारी[5] की हो नीर की ।।१३८५।।
लब[6] सों जो रुखसत[7] की राँवीकन आइ । अँजू विरहके दाट[8] अँखियाँ मैं ल्याइ ।।
ही यों कि "ऐ मस्लहत[9] के अज़ीज़[10] । मेरी ज़िन्दगानी तो कुछ हुइ न चीज़ ।।१३६०।।
क तंग आइ मैं यारके बिरहते । बँचाले मुंजे आज इस गिरहते[11] ।।

—कथा ८

फर ओ विरहनी नार गजचाल की । "लँबे बाल होर गुद-गुदे गाल की ।।१४५४।।
ठी बोल तोते सों इस धात[12] आ । केता दुख कहूँ तुजकूँ हर रातका ।।
क कहने होर जाने ते तुज ठाँव कूँ । घट्ठे तो पडे जीभ होर पावकूँ ।।
ो आऊँ तो बातामें भाता[13] है मुंज । खजल[14] हर रयन कर फिराता है मुंज ।।
ंगूं[15] मैं जो तुजधेर[16] ते कुछ पाउं सुख । वलेकिन[17] न देखूँ बग़ैर[18] दुख यो दुख ।।
कया जो विरह साँप हो मु जयो कह्[19] । उतार आज तूं मुंजते हरक्यों[20] वो ज़ह्र ।।

—कथा ९

ज़ा के बदल[21] आई रावीकने[22] । ज़बाँ खोलकर यों लगी बोलने ।।१५५०।।
क "ऐ दोस्त मुंज दर्द होर दुक्ख के । करनहार फिक्रा[23] मेरे दुख के ।।
धाँ लग[24] अछूँ[25] इस जले भाग सों । होऊँ राख जल बिरह की आगसों ।।
क दिन-दिन दिल इस विरह के जब्रते[26] । रह्या लो मुआ[27] हो वजर सब्र[28] ते ।।
ाज़क है जो वारा[29] मेरी आहका । सुटे[30] मुंज उड़ा गर्द[31] कर राह का ।।
हीं कुछ मेरे मनकूँ ताक़त एताल[32] । खुदाताई[33] दे मुज इजाज़त[34] एताल" ।।१५५५।।

—कथा १०

ो ओ नार दिलगीर[35] राँवीकन[36] आई । सो बोली कि "ऐ भाइ, तेरी दुहाई ।।१६७८।।
ो किस घातकी[37] आके बाज़ी[38] खड़ी । किधरकी बला आ मेरे सिर पड़ी ।।
क हर सात[39] दिसता है मुंज गम नवा । यो क्या काम की मुंजकूँ (यो) क्या हुआ ।।
ो क्या इश्क़[40] भया मेरी जात[41] में । कि आता नहीं यार अंजू[42] हातमें ।।

---

१. लेकिन, २. प्रकार, ३. समझ, ४. प्रलय, ५. अधीरता, ६. लालसा, ७. विदाई, . डाट, ९. सलाह, १०. प्यारे, ११. फंदे से, १२. भाँति, १३. पाता, डालता, १४. लज्जा, ५. चाहूँ, १६. तेरे पास, १७. लेकिन, १८. बिना, १९. कोप, २०. हर तरह, २१. अनुज्ञा लिए, २२. तोते के पास, २३. चिताएं, २४. कब तक, २५. रहूँ, २६. जुल्म से, २७. मरा, ८. धीरज, २९. आघात, ३०. फेंके, ३१. धूल, ३२. अब, ३३. खुदा के लिए, ३४. आज्ञा, ५. दुःखी, ३६. सुग्गे के पास, ३७. भाँति, ३८. खेल, जुआ, ३९. साथ, ४०. प्रेम, ४१. हृदय, २. आज भी।

न मुंज बेकरारी[१] कुँ है ठौर[२] कुछ । न कोशिश कुँ तेरी है तासीर[३] कुछ ।।
हुआ फ़िक्र ते[४] चूर सीना मेरा । यो किस धात[५] का आइ जीना मेरा ।।
मुअम्मा[६] यो खुलता नहीं खोल तूं । मेरी आकबत[७] क्यों है सो बोल तूं ।।१६८६।।

अझू मेघ अँखियाँते बरसावती । चली राँवीकन[८] फेर धुंडला वती ।।
कहीं यों कि "ऐ तैर[९] गुन ज्ञान के । ऐ थंडेक[१०] मेरे दिलोजान के ।।
हो निर्जीव अछूं कब तलक इस वज़ा[११] । तुरत आज की रात दे मुंज रज़ा ।।
जो निपजी[१२] में अछती[१३] अगर संगते[१४] । तो कर दिलकुँ घट[१५] चुप रहती नंग ते ।।
वले[१६] क्या करूँ है निपज खाक[१७] ते । इसी वास्ते बिरह की धाक[१८] ते ।।
अपस में अपे गल के होती हुँ नीर । तू ऐसे मने[१९] गर न होय दस्तगीर[२०] ।।
तो सीना मेरा तड़खते बार[२१] नैं । कि सुखसों रहने जीवकूँ ठार नैं ।।
मिलाया अगर ना अछै[२२] यार साथ । तो क्या काम आवै क' ना यो हयात[२३] ।।
रहया आके होठाँ मने[२४] जीव आज । भला जो मिले मुंजकूँ वो पीव आज" ।।१७५९।।

—कथा १२

सो ओ ग़मभरी नार गम आ सो फेर । निझा[२५] देखती है जो राँवी के घेर[२६] ।।१८४८।।
मूँड़ी शहपराँ[२७] की तरफ खींच वैं । हैं मशगूल[२८] अपस में अँख्या मोंच[२९] वैं ।।
देख अहवाल बोली कि "ऐ सब्ज़पोश[३०] । एती फ़िक्र[३१] क्या है जो है तू ख़मोश[३२] ।।१८५०।।
मैं आई जो तुजसों[३३] करूँ बात कुछ । वले[३४] देखती हूँ तेरा धात कुछ ।।
मैं आई जो अपना कहूँ दुखकूँ खोल । तु बत्तरी किया मुंजकूँ गमगीं न बोल ।।
मैं आई जो तुजसों सफ़ा[३५] पाउँ आज । तु लेना च[३६] मेरा सुट्या[३७] नाँव आज ।।
मैं आई जो विरहा करे दूर तूं । किया सिरतें[३८] मुज दुख के समदूर[३९] तूं ।।
मैं आई जो कुछ जमा चित्त[४०] होय । किया फिर परेशाँ न कह मुंजकूँ कोय ।।
मैं आई जो लेवे मेरा भार उतार । सो पूरा उचाया[४१] मेरे सिर पो भार ।।
मैं आई जो तुजते खुलै यो नसीब[४२] । किया कैं[४३] तग़ाफुल[४४] तुं यों ऐ हबीब[४५]" ।।

—कथा १३

---

१. अधीरता, २. ठहरे, ३. प्रभाव, ४. चिन्ता से, ५. भाँति, ६. पहेली, ७. भविष्य, ८. तोते के पास, ९. पक्षी, १०. ठंडक, ११. इस प्रकार, १२. उपजी, १३. रहती, १४. पत्थर से, १५. कम, १६. लेकिन, १७. मिट्टी, १८. ज्वाला, १९. ऐसे समय, २०. सहायक, २१. देरी, २२. रहे, २३. जीवन, २४. ओठों में, २५. ध्यान से, २६. पास, २७. बड़े पंखों, २८. लगा, २९. भीत, ३०. हरित-परिधान, ३१. चिन्ता, ३२. मौन, ३३. तुम से, ३४. लेकिन, ३५. सफाई, ३६. लेना ही, ३७. छोड़ा, ३८. फिर से, ३९. समुद्र, ४०. खातिर-जमई, ४१. उठाया, ४२. भाग्य, ४३. क्यों, ४४. बेपर्वाह, ४५. मित्र।

.... । (आई) सो वह नार साहेब-जमाल[1] ॥१९८७॥
दर्या इश्क़[2] का फिर कीता[3] देख जोश । गरजते बदलसार[4] करती खरोश[5] ॥
जो रावी के आ पास यों बोल उठी । कि "जलती अछूँ[6] कब तलक जों भठी ॥
जो है आशिक़ाँ का नवी आज तूँ । दवा कर मेरी ऐ हबीब आज तूँ ॥
कि इल्लत[7] बिरह का लिया वैर मुंज[8] । किया सरते[9] बेताब[10] दुख फेर[11] मुज ॥
पड़ी भार[12] ताकत निकल जातते[13] । पँखी उड़ गया सब्रका हात ते ॥
गर ऐसे में देता है तूँ मुंज रज़ा[14] । सँभालूँगी इस जीव कूँ हर वज़ा[15] ॥
जनम जानते उस धात[16] सों फ़ौत[17] होय । न की हर घड़ी यों मेरी मौत होय' ॥

—कथा १४

फिर ओ धन परेशान हो बेहिसाब । जो नज़दीक रावीं[18] के आई शिताब[19] ॥२०९१॥
कही "ऐ मेरे मन के जूने[20] अज़ीज़[21] । सुनी हूँ जो संसार में चार चीज़ ॥
छुट्या तीर होर मूँ ते निकली सो बात । हुआ सो क़ज़ा[22] होर गई सो हयात[23] ।।
फिर आना अजब[24] यो फिरनहार नोय[25] । फिरा था[26] नहीं आज लग[27] उनकुँ कोय॥
गुज़रती है नित गमसों[28] मेरी हयात । कधाँलग[29] अछूँ गमसों लेउँ जोर हात ॥
कि दिन-दिन कुँ मेरे उपर घात क्या[30] । गुजरत्याँ हैं रातां बुरी घात क्या ॥
जो ज़ौक़[31] आज की रात तें न पाउँ । अजब क्या है जो मर सीना तरख जाउँ॥
न जाया[32] कर ये उम्र बाकी[33] तेरी । कि घटती है नित इश्तियाक़ी[34] मेरी ॥
नज़र आज कर मुजपो टुक प्यार सों । मिला हर सनद[35] वेगउस यार सों" ॥२०९९॥

—कथा १५

वह विरहे जली दिलरुबा[36] बादअज़ाँ[37] । हो पज़मुर्दा[38] जों फूल वक्ते-खज़ाँ[39] ॥२२१५॥
जो राँवीकने आई अधी रातकूँ । चलाई अधर खोल यों बातकूँ ॥
कि "ऐ तू जे दाना है हर बाब[40] आज । मंगनहार[41] मेरा जो है लाभ आज ॥
जो धुँड़ती हुँ हिज यार की ज़ात ते । तो जाता अहै मर्द मुझ हात ते ॥
अगर मँगती हूँ हिज़[42] यारकी जात[43] ते । तो जाता अहै मर्द मुझ हातसे ॥
अगर मँगती हूँ मर्दकूँ बेक़यास[44] । तो होती हुँ उस यारते मैं निराश ॥
हुँ हैरान इस ठार अपन ज्ञान में । कि दो खांड़े[45] भायेंगे यक म्यान में ॥२२२०॥

---

१. सुन्दरी, २. प्रेम-समुद्र, ३. किया (पंजाबी), ४. बादल-जैसा, ५. शोर, ६. रहूं, ७. देरी, ८. मेरा वैर, ९. फिर से, १०. अधीर, ११. पुनः, १२. बाहर, १३. भीतर से, १४. आज्ञा, १५. प्रकार, १६. भाँति, १७. मरा, १८. तोते के नजदीक, १९. जल्दी, २०. पुराने, २१. प्रिय, २२. मौत, २३. जीवन, २४. अद्भुत, २५. नहीं, २६. लौटा था, २७. आजतक, २८. दुख-सहित, २९. कब तक, ३०. चोटीलो, ३१. सुखी, ३२. बर्बाद, ३३. अवशिष्ट, ३४. लालसा, ३५. प्रमाण, ३६. मनोहर, ३७. इसके पश्चात्, ३८. मुर्झाया, ३९. पतझड़, ४०. विषय, ४१. चाहनेवाला, ४२. लज्जत, ४३. व्यक्ति, ४४. बिना विचारे, ४५. खड्ग।

यो पर्वा मेरी शुबह्[1] का काड तूं । नको[2] दगदगे[3] में मुंजे पाड[4] तूं ।।
कि इस राज[5] का यार सो तूं च[6] है । अज़ीज[7] ओ वफ़ादार[8] सो तूं च है ।।
कर ऐसा नसीहत जो खुशहाल[9] हूं । तरोताज़[10] यो फूल का डाल हूं ।।२२२३।।

—कथा १६

फिर ओ मोहिनी दुखके समदूर[11] हो । बिरह साथ सब देस अधिक चूर हो ।।२३३०।।
कही आ को राँवी कुँ "ऐ कारसाज[12] । हुआ हृदते[13] पेलाड[14] मेरा नियाज ।।
फतर[15] गम[16] के ढो ढो यो काँधे गये । मेरा अक्ल के पाँव बाँधे गये ।।
जधाँते[17] पिरित दिलमें खाना[18] किया । मेरे होश[19] ते मुंज बेगाना किया ।।
न देखी किसी रात मों ख्वाब[20] का । जो टुकडे कलेजा हुआ ताब[21] का ।।
सकत[22] नै जो कुछ मूं सों बोलूं तुझे । अबस[23] क्या कि बाता में घोलूं तुजे ।।
अगर है तेरे दिलमें मूं आस पाउँ । रजा[24] दे जो उस यार लग आज जाउँ ।।
अगर नै तो कह मुंज सरीहन् एताल[25] । जो उस यार का छोड़ देऊँ खियाल[26]" ।।

—कथा १७

फिर ओ नार मजनूं केरे शक्ल[27] साथ । दे अपसें[28] निपट बेक़रारी के हाथ ।।२४३९।।
कही आ को राँवी कुँ "ऐ होशमन्द[29] । शिकंजा[30] किया मुंज विरह का कमंद।।२४४०।।
अगरचे[31] मेरा अक्ल जों है चिराग । बले[32] इसते हों हर घड़ी दाग-दाग ।।
कि जब इश्क़ का बाव[33] उसपर वहै । हिला उस बुझावै बगैर[34] नार है ।।
करूँ फिक्र[35] क्या मैं कि मुतलक अडी । कि दिल कूं मेरे नै क़रार[36] एक घड़ी ।।
गुजरता है गम[37] मुंज पो जेते च यों । न जानूं मुये पर मेरा भाग क्यों ।।
रहे ना जनूं[38] सिर चढे बाज[39] मुंज । खुदा ताईं ल्या होश में आज मुंज" ।।

—कथा १८

.... । ....फिर ओ निगार[40] ।।२५७०।।
तफ़क्कुर[41] सेती आइ राँवीकने । कही "आज यों है मेरे दिलमने[42] ।।
जो तुजसों सरीहन्[43] करूँ जंग मैं । देऊँ छोड़ पूरा तेरा संग मैं ।।
कि जिस रात आती हुँ उस रात तूं । तगाफुल[44] में भाता[45] मेरी बातकूं ।।

---

१. संदेह, २. नहीं, ३. संदेह, ४. डाल, ५. रहस्य, ६. तूंही, ७. प्रिय, ८. भक्त, ९. प्रसन्न, १०. नया, ११. समुद्र, १२. काम ठीक करनेवाला, १३. सीमा से, १४. आगे, १५. पत्थर, १६. रंज, १७. जबसे, १८. स्थान, १९. समझ, २०. स्वप्न, २१. शक्ति, २२. शक्ति, २३. व्यर्थ, २४. अनुज्ञा, २५. साफ, इस समय, २६. विचार, २७. रूप, २८. अपने, २९. चतुर, ३०. जंजीर, ३१. यद्यपि, ३२. लेकिन, ३३. वायु, ३४. बिना, अतिरिक्त, ३५. चिन्ता, ३६. धीरज, ३७. रंज, ३८. पागलपन, ३९. बिना, ४०. तस्वीर, ४१. रूपसी, चित्त, ४२. दिल में, ४३. प्रत्यक्ष, सीधे। ४४. भूल, ४५. पाता, डालता।

रयन टालता नित हिकातों[1] सँगात । मगर[2] दन्द[3] धरता है कुछ मुंज सात।।
कता[4] है कि हर क्यों[5] मिलैगा वो यार । वले मुंजकुं लगता नहीं एतबार[6] ।।

—कथा १९

.... । ... फिर ओ विरहणी सुधन ।।२७०२।।
जो नज़दीक पिंजरे के जाकर खड़ी । सो राँवा[7] वहीं हँस पड़्या उस घड़ी ।।
लग्या वो हँसा उसकुं पूरा अजब । सो पूछन लगी उस हँसी का सबब ।।
उठ्या बोल वो यों कि "ऐ गुलअज़ार[8] । खतर[9] आज दिन खुश सुबा[10] की पहार[11] ।।
अवल का मेरा यार हमजिन्स एक । उड उस बात जाता मुंज इस ठार देख ।।
मिल्या आइकर होर कह्या एक किसा । मुंज वो याद आया सो आया हँसा[12]" ।।

—कथा २०

सो विरहे जली ओ दिलाराम फेर । अँख्याँ लाल कर आइ रावी के घेर[13] ।।२८३७।।
कही "ऐ जो पिंजरे में खुशहाल तूँ । मेरे ग़म[14] ते बैठ्या है निर्वाल[15] तूँ ।।
जलूँ में तो हर देस अट जों अदीत[16] । गलूँ रातकूँ चाँद से सार[17] नीत ।।
भूकी होऊँ तो खाउँ ग़म बेशुमार[18] । लगे प्यास तो पीउँ अँझुआँ[19] की धार ।।२८४०।।
जो होवे हवस[20] राग पर जिस घड़ी । तो नाले[21] सुनूँ दिल के बेसुध पडी ।।
बादल[22] सैरके जो करूँ याद बाग । दिसे फूल हो मुजकूँ सीने के दाग ।।
मेरा हाल इस धात[23] है सो तो यों । है फ़ारिग़[24] करूँ तुजपो गुस्सा न क्यों ।।
भला जो करै आज तूँ कुछ इलाज । कि कोंड्या[25] है पूरा च बिरहा मुंज आज" ।।

—कथा २१

वो मुश्ताक[26] ताक़त[27] ते हो फेर ताक़[28] । सो रावींकन आ सोस[29] ना सक फ़िराक़[30] ।।२९१६।।
कही "मैं जो पंजर हुई सूख-सूख । मेरा ग़म[31] किया कम न तेरा सलूक[32] ।।
मेरा मुद्दआ[33] था जो तूँ हर तरीक़[34] । मेरी बेक़रारी पो होगा शफ़ीक़[35] ।।
हुआ टुकड़े सीना तो बिरहेते फूट । मुकर्रर[36] कहूँ क्या तुझे रोज़ उठ ।।
कि आती है मुज लाज इस लाजते । तेरा देखसूँ[37] मुख न मैं आजते ।।२९२०।।
कि मुज तुजते यक निस बी सुख ना हुआ । क़यामत[38] तलग मुज यो झकना[39] हुआ" ।।

—कथा २२

---

१. कथायें, २. क्या, ३. द्वेष, द्वंद, ४. कहता, ५. हर तरह, ६. विश्वास, ७. तोता, ८. गुलाबी गालोंवाली, ९. भय, १०. प्रातः, ११. पहर, १२. हंसी, १३. तोते के पास (धीरे), १४. रंज, १५. निर्लेप, १६. आदित्य (सूर्य) १७. सरीखा, १८. अगिनित, १९. आँसू, २०. लालसा, २१. क्रंदन, २२. विलमें, २३. भाँति, २४. छुट्टी, मुक्त, २५. खौला, २६. अभिलाषिणी, २७. शक्ति से, २८. हीन, २९. सहते, ३०. वियोग, ३१. रंज, ३२. बर्ताव, ३३. अभिप्राय, ३४. तरह, ३५. मित्र, ३६. फिर-फिर दुहराके, ३७. देखूंगी, ३८. प्रलय, ३९. झंखना।

जो ओ फिर सहेली रँगामेज़ हो । रज़ा के बदल[1] गर्म होर तेज़ हो ॥२०१४॥
कही आको राँवी कूँ "ऐ हक़गुज़ार[2] । पकड़ जीव जोड़ी हूँ भा[3] तुजपो प्यार॥
नज़िक है जो बिरहा करे मुंज पो जोर[4] । ले जा मेरा जिउ तुजपो राखे हूँ योर[5] ॥
मेरे दर्द कूँ आज ऐ ग़मगुसार[6] । नको[7] जान दुसर्‌याँ केरे दर्दसार[8] ॥
कि सारयाँ की यकसार सूरत[9] नई । दुन्या बीच उश्शाक़[10] यक धात[11] नई ॥
सुना यो गया है जो मछली की ज़ात । धरे इश्क[12] जलसों पतँग आग साथ ॥
वले[13] जल सो मछली कूँ राखे सँभाल । अगिन सो पतँगकूँ करे भुर्ज़ जाल[14]" ॥३०२०॥

—कथा २३

फिर ओ हंस सी आपने साज़[15] सों । जो राँवीकन आई अधिक नाज़[16] सों ॥३११७॥
कही "ऐ पँखी गुन भरे दिलनेवाज़[17] । बुझनहार है तूँ दरूनी[18] के राज़[19] ॥
यो दुख भी किसे न कहा जाय कर । कहूँ तुजसे हमराज़[20] कूँ आय कर ॥
कि तदबीर[21] में अक़्ल होर राय में । है बेमिस्ल तूँ कम नहीं काइमें[22] ॥३१२०॥
मेरी मश्वरत[23] के तू लायक हैं कर । करूँ मश्वरत तुजसों कुछ शक न कर ॥
अगर तूँ न होता मेरा ग़मगुसार[24] । तो मरती सीना फूट वैं एक बार ॥

—कथा २४

.... । बो मदन की मती[25] ॥३१८९॥
तती हो गुसे[26] की अगिन साथ फेर । कही आके राँवी कूँ इस धात[27] फेर ॥३१९०॥
कि "ऐं बेवफ़ा[28] दोस्त, सच बोल मुज । तेरे दिलमें क्या है सो कह खोल मुज ॥
जो मैं दिलसो मिल देखती हूँ तुजे । निपट संगदिल देखती हुँ तुजे ॥
न तुजते मेरा काम होता दिसे । मेरे हक़[29] में तू ऐन सोता दिसे[30] ॥
यो तेरी अज़ीज़ी[31] है किस रीत की । कहूँ खोल किस रीत तुज मीत की ॥
तूँ दायम[32] वफ़ादार[33] मेरा कला[34] । सबब क्या जो करता है फिर यों गिला[35] ॥
तेरे दिलमें कुछ मेह अछता अगर । तो सूक-सूक[36] मैं यों न होती पँजर ॥

—कथा २५

जो ले फलफुलाली सँगात ओ सखी । फिर आई ले राँबी के नज़्दीक रखी ॥३३२०॥
कही "नोशे[37] कर है यह तेरा ख़ोरिश[38] । है जम[39] उस ख़ोरिश सों सदा पर्वरिश[40]" ॥

---

१. लिए, २. सच बोला, ३. पा डाल, ४. जबर्दस्ती, ५. भरोसा, ६. संवेदक, ७. नहीं, ८. शिरकी पीडा, ९. शकल, १०. प्रेमी, ११. भाँति, १२. प्रेम, १३. लेकिन, १४. जलाके, भूना (भूँजा), १५. सज्जा, १६. लालित्य, १७. दिलपर, कृपालु, १८. भीतरी, १९. रहस्य, २०. रहस्य जाननेवाला, २१. उपाय, २२. किसी में, २३. सलाह, २४. संवेदना रखनेवाला, २५. माती, २६. क्रोध, २७. भाँति, २८. विश्वासघाती, २९. बारे में, ३०. बिलकुल, ३१. मित्रता, ३२. सदा, ३३. भक्त, ईमानदार, ३४. कहला, ३५. शिकायत, ३६. सूख-सूख ३७. खा ३८. भोजन, ३९. सर्वदा ४०. पालन-पोषण ।

ओ राँवी कह्या तब कि "मुंज ऐ सनम[1] । खिला न्यामताँ[2] मुंजकुं पाली है जम ।।
अगर जीभ हर बाल होये मेरा । तो करना सकूं शुक्र हर्गिज़[3] तेरा ।।
वले[4] आज मुंज भूक चन्दा[5] नहीं । कि दिल फ़िक्रते[6] ज़र्रा[7] खन्दाँ[8] नही ।।
बरे[9] खोल कह क्या ग़रज़[10] है तेरा । जो होये जमाखातिर[11] परेशाँ[12] मेरा ।।
कही बाद्अज़ाँ[13] यों कि "ऐ दोस्तदार[14] । जो मोती थी मैं आजके दिन दोपहार[15] ।।
सो यक ज्वान खुशरूप[16] का दिलफ़रेब[17] । ले यक हतमने[18] अंब यक हत मैं सेब ।।
नज़िक आ मेरे हातमें भा[19] ओ फल । गया कुच्छ ना बोल सीधा निकल ।।
जो देखी हो बेदार[20] उस सात[21] मैं । न ओ अंब ना सेब था हात मैं" ।।
ओ राँवाँ कह्य तबकि "ऐ माहरू[22] । हुआ खुश मैं इस ख्वाब[23] ते मू-ब-मू[24] ।।३३३०।।
कि ओ ज्वान जो था अधिक दिलफ़रेब । तेरा बख्त[25] है होर आँब होर सेब ।।
यकन मर्द तेरा है यकन सो (है) यार । यो दोनों तुरत तुजसां है मिलनहार ।।
अजब[26] ख्वाब देखी है यो ख्वाब तूं । कि पावेगी इस ख्वाब का लाभ तूं" ।।

—कथा २६

सो ओ नार तन नौरतन सों सिंगार । मुकल्लल[27] जोहो आइ राँवी[28] के ठार ।।३५३५।।
कही "ऐ फ़रासत[29] के दरियाके दुर[30] । जो मिठबोल पँखियाँ मैं तूं है सुघर ।।
ज़बाँ खोल कर मुझसे करता है बात । तो सुनती हुँ मैं तुजते ताज़े हिकत[31] ।।
हुआ नैं गरज़[32] गरचे[33] हासिल[34] मेरा । वले[35] तुजते पकड्या सफ़ा[36] दिल मेरा ।।
गुजरता[37] है खातिर मने[38] यों एताल[39] । जो उस यारका छोड़ देऊँ खियाल[40] ।।
कि नैं फ़ायदा[41] कुछ हलाकी[42] बगैर[43] । न जासे[44] हलाकी यो पाकी[45] बगैर ।।
यो गर्द[46] आपने पाक-दामनते झाड़ । भला यां जो सौदा[47] सुटूं[48] दिलते काड" ।।

—कथा २७

फिर ओ नार बिरहेते बेताब[49] हो । परेशान उस यार के बाब[50] हो ।।२७३१।।
जो राँवी कन आई अजूं[51] ढालते । लगी फिक्र राँवी कुं इस हाल ते ।।
मुबादा[52] मैल्या ताब बेइख्तियार[53] । सुटे[54] घरकी दहलीजते पाँव बहार[55] ।।

---

१. प्यारी, २. नियामतें, ३. हर्गिज, ४. लेकिन, ५. यो, यद्यपि, ६. चिंता से, ७. थोड़ा, ८. प्रसन्न, ९. अर्थ, १०. अभिप्राय, ११. दिल, १२. विकल, १३. इसके बाद, १४. मित्र, १५. पहाड़, १६. सुरूप, १७. मनोहर, १८. हाथ में, १९. पा, डाल, २०. जागी, २१. उसके साथ, २२. चन्द्रमुखी, २३. स्वप्न, २४. रोम-रोम २५. भाग्य, २६. अद्भुत, २७. सजी, २८. तोते, २९. समझदार, ३०. मोती, ३१. कहानी, ३२. मतलब, ३३. यद्यपि, ३४. लाभ, ३५. लेकिन, ३६. स्वच्छ, ३७. बीत रहा, ३८. दिल में, ३९. इस समय, ४०. विचार, ४१. लाभ, ४२. मरण, ४३. बिना, ४४. जायेगा (पंजाबी), ४५. पवित्रता, ४६. धूल, ४७. पागलपन, ४८. फेकूं, ४९. बेबस, ५०. विषय, ५१. आँसू, ५२. शायद, ५३. बेबस, ५४. फेंके, ५५. बाहर।

मुबादा निपट शर्म ते हात धोय । मुबादा मेरा कष्ट[1] नाचीज़[2] होय ।।
समज बेकरारी[3] कूँ उसकी शिताब[4] । उठ्या बोलकर यों कि "ऐ महताब[5] ।।
मुबारक[6] है यो रात बेगीसों जा । न कर बात मुँज साथ वेगी सों जा ।।
कि कोंड्या[7] है तेरा सीना विरह आज । तेरे दिलते कर दूर यो गिरह[8] आज ।।

—कथा २८

.... । निकल घरते ओ बिरहनी नार तब ।।३८१८।।
न कर दिष्ट[9] सीधे[10] व बावें कधन[11] । चली फिक्र[12] सों नेट[13] राँवी कधन ।।
तलें होर ऊपर जों निझाई[14] उसे । सो पूरा च[15] दिलगीर[16] पाई उसे ।।३८२०।।
कही यों कि "ऐ बेकटर[17] यार, तूँ । अजब कोई पंखी है मक्कार[18] तूँ ।।
सबब[19] क्या है जो यों है दिलगीर आज । कना[20] खोल कर बारे[21] मुजधर[22] आज ।।

(४) चार कहानियों का संक्षेप—

पहिली कथा में सौदागर की स्त्री का एक नागरिक तरुण से प्रेम कह चुके हैं, और यह भी कि स्त्री ने रातमें आने का वचन दिया था। घर से निकलने से पूर्व अभिसारिका ने मैना और तोता से राय लेनी चाही—

सो वह बेबदल[23] नार चंदरबदन । हलौं[24] लाजती आइ मैना कधन[25] ।।
कही यों जो "ऐ तूँ है शीरीं-ज़बान[26] । .... ।।२१९।।
लग्या दिल मेरा एक नवे यारसों । भुले हैं नयन उसके दीदार[27] सों ।।२२१।।
कहाँते महाडी[28] यो जा मैं चडी । जो आ मुँज उपर ऐसी बाजी[29] खडी ।।
.... । मिल उस यारसों क्यों गमूँ[30] मुजकूँ बोल" ।।
सुनी वो जो मैना न सुनने की बात । बज़ाँ[31] यों उठी बोलकर उसके साथ ।।
कि "ऐ मोहिनी तूँ है नारी असील[32] । सुट[33] तू नक़श[34] अपने सीने सेछी ल ।।
तेरा मर्द होय त्यों तुजे कोइ न होय । कि तुज नारकूँ ना सजे मर्द दोय ।।
कि है पाकदामन[35] तु नार्याँ में आज । बडाई बडी तुज है सार्याँ में आज" ।।
वो शारू[36] के मूँ ते सुनी जों यो बैन । नसीहत[37] पर उसकी गजब[38] में हो ऐन[39] ।।
सुटी[40] भुइँपे वैं पंख उसके मरोड । सो मैना दिये थरथरा जिवकूँ छोड ।।
कि बाँते बज़ाँ[41] आई तोते के पास । मगर[42] आवे उसके कधीं[43] ते बरआस ।।२३०।।
शताल्या[44] पिरित का जो तपना उसे । कहीं खोल सब हाल अपना उसे ।।

---

१. तकलीफ, २. बेकार, ३. अधीरता, ४. जल्दी, ५. चंद्रमा, ६. धन्य, ७. खोला, ८. गाँठ, ९. दृष्टि, १०. दाहिने, ११. तरफ, १२. चिन्ता, १३. सीधे, १४. ध्यान से देखा, १५. पूरा ही, १६. दुःखी, १७. कठोर, १८. धोखेबाज, १९. कारण, २०. कान, २१. अर्थ, २२. मेरे पास, २३. अनमोल, २४. धीरे, २५. मैना के पास, २६. मधुरभाषी, २७ दर्शन, २८. अटारी, २९. खेल, ३०. कैसे बिताऊँ, ३१. इसके बाद, ३२ कुलीन, ३३. छोड़, ३४. चित्र, विचार, ३५ सती, ३६. सारिका, मैना, ३७. शिक्षा, ३८. क्रोध, ३९. बिलकुल, ४०. फेंकी, ४१. इसके बाद (बाद अज़ाँ), ४२. शायद, ४३, पास, ४४. कोढा सा।

वो तोता पिछान उसके मन का खियाल । न हो गर[1] बुरा, अक्ल अपना सँभाल ।।
कहा गर इसे मना[2] करता हुँ मैं । तो मैना के नमने च[3] मरता हुँ मैं ।।
भला है च अब काल[4] से पेश आऊँ । उसीके च वे ख्याल में मेल जाउँ ।। २३४ ।।
कहया यों कि "ऐ शहपरी[5] नेकनाम[6] । तुँ आक़िल[7] हो के यों गलत[8] की तमाम ।।२३७।।
वो शारू[9] तुसों[10] गरचे[11] जिन्स[12] थी । वलेकिन[13] कहाँ अक्ल उसकूँ एती ।। २३८ ।।
कि थी सख़्त[14] कोदन[15] वो तो, उसके साथ । न कहना अथा[16] आपने दिलकी बात ।। २४० ।।
छिपा राख तूँ आजते राज़[17] यो । मुबादा[18] सुने कोइ आवाज़[19] यो ।।
कि हरक्यों[20] करूँगा तेरा काम मैं । न कर बातिन[21] अपना परेशानवैं ।। २४२ ।।
बज़ाँ[22] होयगा क़ज़िया तेरा बुरा । हुआ था जो उस एक राँवी केरा[23] ।।२४४।।
कता हूँ सुन वो कज़िया ऐ धन, तुजे । .... ।। २४५ ।।

—कथा १

सुन्या था जो सौदागर यक बेनज़ीर[24] । अथा उसकने एक तोता गँभीर[25] ।।
वफ़ादार[26] खुशफ़ाम[27] शीरीं-कलाम[28] । हुनर गैब[29] के था समज में तमाम ।।
करे घरकी सब दीदबानी[30] वही । .... ।।
जो एक दिन वो सौदागरे नामदार । चल्या करने सौदागरी एक ठार ।।
लगे देस लै[31] वेग पाया न आन । थी ज्वांउसकी औरत लगी तिलमिलान ।।१२५०।।
जवाँ उसके बाडे[32] में था एक खूब । लगाई छिप्या इश्क़ उसे देख खूब ।।
मँगे जीव तो घर बुला भेज उसूँ[33] । करे ज़ौक़[34] फूलाँसों भर सेजकूँ ।।
वो तोता जो कुछ उनकेरे सो निझाय[35] । वले मूँपे औरत के हर्गिज़[36] न लाय ।।
मुँडी शहपराँ[37] में वो गरदान[38] कर । न जाने च त्यों चुप रहे जानकर ।।
जो आया वो सौदागरे नेकनाम । खबर घर के राँवी कुँ पूछा तमाम ।।
कने[39] का जो कुछ था कहया उसके साथ । वले[40] ने किया पास[41] औरत की बात ।।
कतेक दिन कूँ वो राज़[42] ज्यों भार[43] ते । हुआ मर्द पर ज़ाहिर[44] यक तारते ।।
दिल उसते वहीं तोड लेने लग्या । हलों[45] उसकुँ आज़ार[46] देने लग्या ।।
ओ नादान[47] ना जान यों दिलमें ल्याइ । कि राँवी च[48] ते यो बला मुज पो आइ ।।
कह्या है यही राज सब खोल उसे । किया घात मुजपर यही बोल उसे ।।

---

१. शायद, (गर्हां पंजाबी), २. वर्जित, ३. मैना के सदृश ही, ४. उपाय, ५. परियों की रानी, ६. सुनाम, ७. बुद्धिमान्, ८. भूल, ९. मैना १०. तुझसे, ११. यद्यपि, १२. सजातीय, (स्त्री-जातिकी), १३. लेकिन, १४. भारी, १५. मूर्ख, १६. था, १७. रहस्य, १८. शायद, १९. शब्द, २०. हर तरह, २१. हृदय, अन्त, २२. इसके बाद, २३. तोते का, २४. अनुपम, २५. संजीदा, २६. भक्त, २७. सुसमझ, २८. मधुरभाषी, २९. दैवी विद्या, ३०. देखभाल, ३१. बहुत, ३२. मुहल्ले, ३३. उससे, ३४. प्रेम, ३५. ध्यान से देखा, निध्यान ३६. कदापि, ३७. परों के राजाओं, ३८. छिपा, ३९. कहने, ४०. लेकिन, ४१. प्रकट, ४२. रहस्य, ४३. बाहर से, ४४. प्रकट, ४५. धीरे, ४६. कष्ट, ४७. मूख, ४८. तोता ही।

जो पकडी वहीं दंद[१] रांँवी ऊपर । सो पिजरे में तैं काड उपाँइ उसके पर ॥
छजे तल दिये मल[२] ज़ाया[३] उसे । ....॥
जो पूछ्या उसे मर्द रांँवा कहीं । .... ।
हुआ क्या वो कह खोल हाली[४] मुंजे । कि दिसता है पिंजरा सो खालीमुंज ॥
जबाँ मक्र[५] गों वैं वो औरत फिराइ । 'बिली खाइ' कर ल्या के वो पर[६] दिखाइ ॥
वो पर देख खा लाख अफ़सोस मर्द । गुसा दिलमें उबल्या सो नासोस[७] मर्द ॥
कबाहत[८] सों आजार दे बेशुमार । वहीं घरते औरतकूं भाया[९] बहार ॥
जो वो भार[१०] कद[११] घरते निकली न थी । गली होर बाज़ार चिकली[१२] न थी ॥
भुकी होर प्यासी नँगे पाँव साथ । अकेली निराधार ना कोइ सँगात ॥
निकल शह ते जो एकट[१३] भार आइ । अथा एक रौज़ा[१४] सो उस ठार आइ ॥ २७० ॥
कही यों तो नैं आदमी का निशान । ....॥
यो रौज़ा सो है मठ किसी खास का । कि दिसता है यो ठार इखलास[१५] का ॥
भला है जो मैं इस वली[१६] खास सों । लगा दिल करूँ खिदमत[१७] इखलास सों ॥
कि शायद मुंज ऊपर मेहरबान होय । ....॥
छिनक[१८] नीर-अँजु[१९] उस सफ़ादार[२०] ठाँव । रही दुखसों गरदान[२१] ले हात-पाँव ॥
वो रावाँ[२२] जो पिंजरे में ते भार[२३] काड़ । निकाली जो थी उसके शहपर[२४] उपाड़ ॥
न ज़ाया[२५] होके सब बलायाँ ते बाँच । रह्या था वतन[२६] करके अव्वलते वाँच ॥
देखा जों उसे झाड़-उपरालते । उतर आइया वैं[२७] हरी डालते ॥
छिप्या जाके रौज़े केरा एक ठार । हलों[२८] आसरे ते उठ्या यों पुकार ॥
कि "ऐ मोहिनी यों जो तू आई है । जो इखलास[२९] हमनासेती ल्याई है ॥ २८० ॥
तेरे सीस पर है सो सब कैस काड । भवाँ होर पलकाँ के ले वाल उपाड ॥
मुजावर[३०] हो याँ बीस चालीस दिन । किसी बाब दिलकूं न कर ले सँगीन ॥
तेरा मर्द तुजसों मिलनहार है । तुजे फ़तहयाबी[३१] इसी ठार है" ॥
सुनी यो जो आवाज दरहाल[३२] ओ । सुटी काड सब तनपो के बाल ओ ॥
हुआ बेवज़ा[३३] रूप जाँ का तहाँ । न पलकाँ न सिरकूं पट्याँ ना भवाँ ॥
रखी छीज सब तन सों भालूके सार[३४] । निकल आइया मूं तँबालू के सार ॥
बुरी सख्त दिसने लगी ऐब[३५] ते । हुई मस्खरागी बड़ी गैंव ते ॥
ओ रावाँ बज़ाँ[३६] आसरे ते निकल । निझा[३७] उसकुं याँ-वाँ उपर होर तल ॥

---

१. झगड़ा, द्वेष, २. फेंक, ३. बर्बाद, ४. तुरंत, ५. फरेब, ६. पंख, ७. सहन, ८. परेशानी, ९. पाया (डाला), १०. बाहर, ११. कभी, १२. घूमी, १३. अकेली, १४. समाधि-मंदिर, १५. मुहब्बत, १६. सन्त, १७. सेवा, १८. छलक, १९. आँसू के जल, २०. स्वच्छ, २१. परेशान, २२. तोता, २३. बाहर, २४. उड़ने के पंख, २५. बर्बाद, २६. घर, २७. वहाँ ही, २८. धीरे, २९. स्नेह, भक्ति, ३०. पुजारी, ३१. सफलता, ३२. इसी समय, ३३. बुरे ढंग का, ३४. सरीखा, ३५. दोष, ३६. इसके बाद, ३७. ध्यान से देख।

अधिक तेज काँटे ते भी सख्त बोल। लग्या बोलने ताइँ मिन्कार खोल॥
कि "ऐ बेकटर[1] धन ओ रावाँ हुँ मैं। निकाली जो थी बेगुनह मेरे तै॥२९०॥
मेरे हक़पो[2] तूँ कुछ भी नेकी न की। खुदा का हुआ खेल कैमा देखी॥२९१॥
सकत है जो अब मर्दसे तुज मिलाउँ। तुजे होर उसे एक दिल कर दिखाउँ॥२९८॥
रंजानी[3] तो तू क्या हुआ मुँजकूँ। अजूँ[4] भी वफादार[5] हूँ तुज्झ सूँ"[6]॥२९५॥
दे धीरज[7] उसे इस वज़ा[8] बेहिसाब[9]। उड्या वाँते दरहाल[10] रावाँ शिताब[11]॥३००॥
सो उतर्या कदीम आपने घरमें जा। वली-न्यामत[12] अपने कूँ देखा निझा[13]॥
कया बेनिहायत[14] दुआ[15] उसके तै[16]। कह्या यों ऐ साहेब, औ रावाँ हुँ मैं॥
जो पिंजरे में ते खींचकर भार[17] काड। बिली खाई थी मूँजकूँ फाड-फाड"!॥
सुन्या जो वली न्यामत उसते यो बात। अजायब[18] लग्या उसके तै धात धात[19]॥
सो बोल्या "अझूँ तो क़यामत[20] है दूर। हुआ क्यों कना[21] फेर तेरा ज़हूर[22]"॥
कह्या तब कि "ऐ भोगिनी[23] नामदार। तेरा नाँव रोशन अछो[24] ठार-ठार॥
जो अपनी पियारी सुंदर नार कूँ। ग़ज़ब बेसबब[25] कर सुट्या भार[26] तूँ॥
फलाने वली के सो रौजे में आ। रही है पकड गोशा[27] भी कैं न जा॥
मेहरबान हो वो वली उस उपर। मुंज अपनी दुआ[28] साथ फिर ज़िंदा कर॥
दिये भेज तुजकन[29] देउँ कर गवाह। कि है पाक[30] तुहमत ते[31] ओ वेगुनाह[32]॥३१०॥
जधाँ लग[33] तेरे घरमने[34] में अथा। न देख्या कधीं कुच्छ उसते खता[35]॥३१२॥
चल उस पाक-दामन[36] केरे ठार तूँ। वफ़ादार[37] हो मिल वफ़ादार सूँ॥
लगी सब उसे दिलकुँ रावी की बात। उसी तिल[38] चल्या वैं शिताबी[39] सँगात॥
देखत अपनी औरतकुँ लाया गले।
केते वज़ासों[40] उज्रख्वाही[41] किया। ले जा घर उसे बादशाही दिया॥
ओ रावाँ उसे काम आया है ज्यों। तुजे काम मैं आनहारा हुँ यों॥३१७॥
गर ऐ मोहिनी, इश्क सों तुज है काम। अँदेशा न कर काम कर ले तमाम"॥३१८॥
जो उस बात पर ओ चँचल छँदभरी[42]। जो रूख[43] यार के घरकूँ जानेकरी॥३२१॥
यकायक सुबा[44] का उजाला हुआ। उसे उजाला सौ जाला[45] हुआ॥

---

१. क्रूर, २. मेरे ऊपर, ३. रंजीदा, किया, ४. आज भी, ५. भक्त, ईमानदार, ६. शक्ति, ७. धीरज, ८. इस प्रकार, ९. बहुत, १०. उसी समय, ११. जल्दी, १२. महान् सत्ता, १३. ध्यान से देख, १४. बहुत-बहुत, १५. आशीर्वाद, १६. उसके लिये, १७. बाहर, १८. अचरज, १९. भाँति-भाँति २०. प्रलय, २१. क्योंकर, २२. प्राकट्य, २३. भोगस्वामी, २४. रहो, २५. अकारण निर्दोष, २६. बाहर निकाल फेंका, २७. को पकड़ना, ध्यान-पूजामें रमना, २८. आशीर्वाद, २९. तेरे पास, ३०. निष्पाप, ३१. पास से, ३२. निरपराध, ३३. जब तक, ३४. घर में, ३५. अपराध, ३६. सती, ३७. भक्त, ३८. पल, ३९. वहाँ जल्दी, ४०. कितने ही प्रकार से, ४१. प्रार्थना, ४२. चतुराई भरी, ४३. मुंह, ४४. प्रातः, ४५. ज्वाला।

परेशान हो फेर चित ग़म[1] सों लाइ । निकल देस आया सो जाने न पाइ ।।
गवासी उतम रैन काली दराज़[2] । यकी[3] जान है ऐन[4] आशिक़नेवाज़[5] ।।
रयनते तो है देस रोशन सही । वले[6] काल[7] सो आशिक़ाँ[8] का यही ।।

—कथा १

सुन्या था जो एक नौरसीदा[9] जवान । अथा[10] उसकी सूरत पो हैरान[11] भान[12] ।।२५९०
मुसल्लम[13] अथा हुस्नमें बेबदल[14] । सो अपने नगरते यकेला निकल ।।
किया शह्र बाबुल मने[15] जा मुकाम । हुआ शाद यक खल्क़ वाँका तमाम ।।
सो फूलाँ के हंगाम[16] में एक दिन । गया सैरकूँ बागशाही[17] में उन ।।
यकायक्क बाबुल के राजा की जाइ[18] । उसी बागमें सैर करनेकुँ आइ ।।
नज़र उसकी उस ज्वान पर जों पडी । लगा जीव, आशिक़ हुई उस घडी ।।
जो देख्या वो ज्वाँ उस गुलंदाम[19] कूँ । दिवाना[20] हो खोया वहाँ फ़ाम[21] कूँ ।।
जब ओ नार घर आइ उस सैरते । छुपा दिलमें उस इश्क़ कूँ ग़ैरते[22] ।।
अपसमें च बेताब[23] होती अछै । अँख्याँ मीच अँझुवाँ[24] जे रोती अछै[25] ।।
परेशान[26] हो वो बेचारा बहार[27] । लग्या फिरने चौधेर[28] बारे के सार[29] ।।
न उसकी खबर उस अँपडती[30] दिसे । नज़र उसकी उसपर न पडती दिसे ।।२६००।
जो एक साहिर[31] उस शह्र म्याने[32] गँभीर[33] । अथा[34] सेह्र[35] के फ़नमने[36] बेनज़ीर[37] ।।२६०२
लग्या खिदमत[38] उसकी करन रोज़ जा । . . . .
सो यकदिन जवाँ वो खुशी साथ खोल । कह्या "क्या है मक़सूद[39] तेरा सो बोल" ।।
तब वो दर्दमंद[40] इश्क के दाग़[41] का । कह्या खोल किस्सा सब उस बाग़ का ।।
सुन ओ साहिर उसका हक़ीक़त[42] तमाम । कह्या मुँज अँगे सहल[43] कुछ हैयो काम ।।
जो मँगता चँदर सूरँकू कोइ सार[44] । तुजे आसमाँ परते देता उतार ।।
मिलाना तुज उससों केता काम है । वो सीता तेरी जान तू राम है" ।।
कह इस धात दरहाल वो सेह्रगर[45] । दिया काड यक मोहरा कुछ सेह्र कर ।।
कह्या "नर हो पकडे यो मूँमें उसे । दिसे नार हो हर किसीकूँ उसे ।।२६१०।
जो नारी हो रख लेवे मूँमें उसे । तो सार्‍याँ की अँखियाँ में नर हो दिसे ।।

---

१. दुःख, २. लम्बी, ३. विश्वास, ४. बिलकुल, ५. प्रेमी पर दयालु, ६. लेकिन, ७. मौत ८. प्रेमियों, ९. नवागत, १०. बिल्कुल, ११. चकित, १२. सूर्य, १३. पूरा, १४. अनुपम १५. बाबुलमें, १६. बहुतायत, १७. राजोद्यान, १८. पुत्री, १९. फूल जैसे शरीरवाली २०. पागल, २१. समझ, २२. दूसरे से, २३. अधीर, २४. आँसू, २५. रहे, २६. हैरान २७. बाहर, २८. चारों ओर, २९. सरीखा, ३०. पहुँचती, ३१. जादूगर, ३२. शहर के बीच, ३३. संजीदा, ३४. था, ३५. जादू, ३६. विद्या में, ३७. अद्वितीय, ३८. सेवा ३९. चाह, ४०. दुःखी, ४१. जलन, ४३. बातें, ४३. आसान, ४४. सरीखा, ४५. जादूगर

उसी सात[1] ले बरहमन की मिसाल[2] । वो मोहरा सो उस ज्वान के मूंमे घाल ।।
चला लेके बाबुल के राजा के थान । कह्या "नाँव मेरा है अष्टावधान ।।
जो मुज एक बेटा अथा[3] नौजवान । गया है निकल कैं सो मेरा परान ।।
परेशान है उस बदल[4] रात-दिन । उसी नूरदीदे[5] की औरत है इन ।।
है पाँवाँ कूँ मेरे यो बेडी के सार[6] । महाराज, अगर तूँ धरै मुंजपो प्यार ।।
रखाये हरम[7] के दरूनी[8] इसे । तो उपकार बँदे पो लै[9] कुछ दिसे ।।
फरागत सेती[10] बादजाँ[11] ठाँउ-ठाँउ । धुँडूँ होर फ़र्ज़ंद कूँ अपने पाँउ"[12] ।।
वो कये त्यों च[13] राजा क़बूल[14] उसकी बात । दिला राहख़र्ची[15] उसे मेह्र[16] साथ ।।
उस औरत के तैं दीं उसी तिलमने[17] । हरम[18] में दिया भेज बेटीकने[19] ।।
जों उस रुपसों जा हरम में वो ज्वान । देख्या उस सखीकुं सो पाया परान ।।
हुआ उसकी सेवाकुं मशगूल[20] यों । जो सेवा देख उसका खिले फूल ज्यों ।।
बले[21] राज़[22] दिलका न भा[23] भार[24] वो । दुँबाल[25] उसकी फिरता अछै[26] झाँव हो ।।
मुहब्बत लग्या दो में इस धात[27] का । जो पर्वा न था म्याने[28] किस बात का[29] ।।
सो यक देस पूरा च हो ग़मगुसार[30] । कह्या यों कि "ऐ मोहिनी, गुलअज़ार[31] ।।
लताफ़त[32] की है डाल की फूल तूँ । वले जिवते अछती[33] है मख़मूल तूँ ।।
गुलाली तेरे गाल जो ज़र्द[34] है । मगर[35] इश्क़ का कुछ तुझे दर्द है ।।
कि है मुज खबर इश्क़ के दर्दते । कि मोसी[36] हुँ में आपने मर्द ते ।।
कहेगा तेरा राज़[37] मँजकुँ न लाज । तो हर क्यों[38] करूँगी मै उसका इलाज[39]" ।।
मुहब्बत की जो गुदगुली[40] उस छुटी । समाया[41] सो उस बाग का बोल उठी ।।२६३०।।
.... । कह्या यों कि "ऐ माहरुमाँ[42] की भान ।।
गर उस ज्वानकूँ तुजकूँ दिखाउँ एताल[43] । तो क्या दान दे मुंज करेगी निहाल ।।
कही वो जो मेरी नज़र में बसे । अगर तूं हो दिखलायेगी मुंज उसे ।।
तो जीते तलक जिवके मानूँ तुजे । सदा नैन की पुतली जानूँ तुजे" ।।
सो वो मोहरा[44] मूँ में ते वैं भार[45] काड[46] । दिखाया उसे रूप अव्वल के सार ।।
वह आशिक़ सहेली हो हैरान वैं । कर उस रूप पर अपसे[47] क़ुर्बान[48] वैं[49] ।।

---

१. साथ, २. रूप, ३. था, ४. उसके लिये, ५. आँख की रोशनी, ६. बेड़ी-जैसी, ७. अन्तःपुर, ८. भीतर, ९. बहुत, १०. छुट्टी से, ११. इसके बाद, १२. कहे, १३. वैसे ही, १४. स्वीकार, १५. यात्रा का खर्च, १६. मेहरबानी, १७. क्षण में, १८. अन्तःपुर, १९. बेटी के पास, २०. लगा, व्याप्त, २१. लेकिन, २२. रहस्य, २३. पा (पंजाबी), २४. बाहर, २५. पीछे, २६. साया, २७. भाँति, २८. बीच में, अंदर, २९. किसी बात की, ३०. सहानुभूति रखनेवाला, ३१. फूल से गालोंवाला, ३२. मंजुता, ३३. रहती, ३४. पीला, ३५. क्या, ३६. सही, ३७. रहस्य, ३८. हर तरह, ३९. दवा, ४०. गुदगुदी, ४१. दृश्य, ४२. चंद्रमुखियाँ, ४३. इसी समय, ४४. गुटिका, ४५. बाहर, ४६. सरीखा, ४७. अपने को, ४८. नौछावर, ४९. वहीं।

कही "मुंजकुं ज़र्रा[१] न उम्मेद था। वले[२] बोल क्या यो तेरा भेद था"॥
सो खुश हो गुलिस्तान[३] के सार[४] खिल। लगे दोइ हिज़्[५] करने रातां कु मिल॥
सो ओ ज्वान उस धनके मूं ते यो बोल। समाया सरासर कह्या खोल-खोल॥
सुवा हुइ तो मोहरा वो मूं में सुटे। यकायेक औरत का ले रूप उठे॥२६४०॥
केतक देस चल्या ज़ौक़[६] बेदगदगा[७]। दिया नागहाँ[८] यों फलक[९] ज्यों दगा[१०]॥
सो एक देस चल्यां न्हावने कूं वो ज्वां। देखा भाई उस नार का एक ठाँव॥
चुम्या आँख में हुस्न[११] उस अपरुपका। सो आशिक़[१२] हुआ उसके वैं रूप का॥
दिवाना[१३] हो यकबारगी जीभ खोल। दिया भेज यों दाइ के हाथ बोल॥
कि "मुंज आज ऐ हुस्न के आफ़ताब। करेगी तेरे वस्ल[१४] सों कामयाब[१५]॥२६४५॥
. . . . । दिया ज्वाब[१६] यों दाइकूं ज्ञान साथ॥
कि मैं आप औरत हूँ यक मर्द की। . . . . ॥
कि सुसरा सो मेरा पत्या राजकूं। यहां रख गया है शरम-लाज सूं॥
ख़यानत[१७] करे आँख सेती मुंजे। निशाना[१८] तो वाजिब[१९] न था यों तुजे"॥२६५०॥
सुन यो ज्वाब फ़र्ज़ंद[२०] उस राज का। दिया छोड सुध काम होर काजका॥२६५१॥
जों उस राजकूं अँपडी[२१] यो खबर। हो हैरान अपस में अपे सरसबर॥२६५३॥
कह्या "यो तो परमर्द की नार है। करूँ क्या ख़यानत[२२] कि नाकार है॥
मैं कहता हुँ यो राज किस धेर[२३] खोल। हो मेरी दियानत[२४] पर आता है बोल॥
अगर चुप रता[२५] हूँ, तो कर दिलकुं चाक[२६]। जिगर-गोशा[२७] होता है मेरा हलाक"[२८]॥
पशेमान[२९] इस घात[३०] हो आकबत[३१]। . . . . ॥
दिया भेज यों बोल उस नार कूं। कि फ़र्ज़ंद मेरेकुं कर प्यार तूं"॥२६५८॥
जों इस धात की बाज़ी[३२] उस आई पेश[३३]। फरासत[३४] सों तब अपने मनमें अँदेश[३५]॥
ले राजा की बेटीकुं वो पुख़्ताकार[३६]। चल्या खुश[३७] उसी सेह्रगर[३८] के दयार[३९]॥२६६६॥
सो दरहाल[४०] वां सेह्रगर बेनज़ीर[४१]। वही मोहरा उस ज्वान कनेते[४२] ले फीर॥
सुट्या मूं मनें[४३] उस सहेली के सो। लगी दिसने सिर पाँव लग मर्द हो॥
. . . . । उठ्या शह्रमें गुल जहां का तहाँ॥
कि "राजा की बेटी होर ओ नार जो। अमानत थी यकबारगी आजसों॥२६७०॥

---

१. जरा, थोड़ा, २. लेकिन, ३. फुलवाड़ी ४. सरीखा, ५. आनंद, ६. आनंद, ७. विना भय के, ८. यकायक, ९. आकाश, १०. धोखा, ११. सुन्दरता, १२. प्रेमी, १३. पागल, १४. मिलन, १५. सफल, १६. उत्तर, १७. धरोहर मारना, १८. ध्यान से देखना, १९. उचित, २०. पुत्र, २१. पहुँची, २२. विश्वासघात, २३. किसी के पास, २४. ईमानदारी, २५. रहता, २६. फाड़, २७. कलेजे का टुकड़ा (पुत्र) २८. मरण, २९. लज्जित, ३०. भाँति, ३१. अंतमें, ३२. खेल, ३३. सामने, ३४. समझदारी, ३५. चिंता, ३६. सिद्धहस्त, ३७. प्रसन्न, ३८. जादूगर, ३९. जगह, ४०. तत्काल, ४१. अनुपम, ४२. जवान के पास, ४३. डाला मुंह में।

हुयाँ हैं हरम में ते[1] दोनों च ग़ैब[2] । ....॥
किये धूँढ धूँढ शह्र सब तल-उपर । पड़्या नै किसे खोज उनन का नज़र ॥२६७२॥
केतक दिन पछीं कूँ जो वो गलबला[3] । हुआ सर्द[4] सो फिर वो साहिर[5] बुला ॥
ले उस ज्वानकूँ पीठ[6] सों साज साथ । मिल्या जायकर तुर्त उस राज साथ ॥
कि पहिले दुआ मों जवाब खोलकर । उठा बादजाँ[7] इम वज़ा[8] बोलकर ॥
"जो बेटा मेरा गुम हुआ था सो फेर । मिल्या...................॥
वो फ़र्ज़ंद[9] मो है यही नौनिहाल[10] । वो औरत अमानत[11] है उसकी हलाल[12] ॥२६८०॥
सआदत[13] भर्‌या आज का दिन दिसे । मिलाना भला आज उसे होर इसे" ॥२६८१॥
हुआ वायला[14] जों वो यो बात बोल । ज़बाँ[15] राज़ तब उज्रख्वाही[16] सों खोल ॥२६८३॥
कह्या कैफ़ियत[17] दोई का उस धरी[18] । वो सुनत्या च वैं चाक[19] करले सरी ॥
सितम[20] धरतिरी के उपर डाल अपस । दिखाया ख़लक़[21] बीच बेहाल[22] अपस ॥
कह्या "मैं भरोसा तेरे सतपो कर । गया उस-न्इनी ताईं इस ठाँव धर ॥
जो तूं राजा हो यों ख़यानत[23] करे । तो क्यों बेनवा[24] आवे तुज आसरे" ॥
.... । हो गमगीं[25] वो राजा उतम जात का ॥
बुज़ुर्गी कूँ इस काम के म्याने सट[26] । उसे लाख हुन[27] दे किया दूर झट ॥
चडे लाख हून जो वो साहिर[28] के हाथ । खुशी आन ले मनमें कइ लाख-लाख ॥२६९०॥
जो फिर आइया वाँ ते अपने मुकाम । सो बख्शा[29] उसी ज्वान कूँ वो तमाम ॥२६९१॥
जों वो दोइ मिल यक हुये ए निगार । हो तूँ बी मिल उस यार सों आज यार ॥२६९५॥
न ला वार[30] उठ वेग जा दोस्त पास । ....॥
उठी कस्द[31] कर जावने जों वो धन । उजाला हुआ सुब्ह का चौकधन[32] ॥
न जा मक रही तिलमिलाती वहीं । सुटी[33] गम सों लइ फोड छाती वहीं ॥
गवासी उतम रैन काली दराज[34] । यकीं[35] जान है ऐन[36] आशिकनेवाज़[37] ॥
रयनते तो है देस रोशन सही । बले काल सो आशिकाँ का यही ॥२७००॥

—कथा २६

.... । "किसा[38] राय[39] का क्या है कह मुंज सही" ॥३३३६॥
सो बोलन लग्या "राय **माचीन**[40] का । जवाँमर्द[41] भोगी[42] खुश-आईन[43] का ॥

---

१. अन्तःपुर में से, २. अन्तर्धान, लुप्त, ३. हल्ला, ४. ठंडा, ५. जादूगर, ६. पीछे, ७. इसके बाद, ८. इस प्रकार, ९. पुत्र, १०. नया पौधा, ११. धरोहर, १२. विहित, १३. न्यायानुमोदित, शुभ, १४. बावेला, १५. जीभ, १६. माफी, १७. हालत, १८. पास, धीरे, १९. फाड़, २०. अन्याय, २१. दुनिया, लोग, २२. विकल, २३. विश्वासघात, २४. गरीब, २५ दुःखी, २६. फेंक, छोड़, २७. अशर्फी, (दक्खिन की स्वर्णमुद्रा), २८. जादूगर, २९. प्रदान किया, ३०. देर, ३१. इरादा, ३२. चारों ओर, ३३. फेंकी (पंजाबी), ३४. लम्बी, ३५. विश्वास, ३६. बिलकुल, ३७. प्रेमियों पर दयालु, ३८. कहानी, ३९. राजा, ४०. महाचीन, ४१. तरुण, ४२. भोग, ऐश्वर्य-सम्पन्न ४३. सुन्यायी।

उतम उसके औसाफ़[1] होर उसके गुन । थे हैरान तिरलोक के राय सुन ।।
जो यक देस निकल्या ओ खुलन शिकार । चिड़या एक नादिर[2] पँखी नामदार ।।
सो नाज़ुक होर नर्म ऐसा च था । समूर[3] उसके अंगे[4] शर्मिदा साँ च[5] था ।।३३४०।।
लगी रायकूँ उसकी नर्मी अजब[6] । कह्या.................. ।।
कि रूये-ज़मीन[7] पर कहीं इसके धात[8] । न होसे[9] ऐती नर्म आदम की ज़ात ।।
जो था पीरमर्द[10] एक हाज़िर[11] वहाँ । उठा बोल कर यों........... ।।
कि 'ए राय, तन आदमीज़ाद[12] का । हवा खाइकर मुख्तलिफ़[13] वाद[14] का ।।
पकडता है सख्ती, अगर नैं तो चर्म । सो इस जानवरते भी अछता[15] यो नर्म ।।
वले[16] आज तन एक उतम नार का । न नर्मी में कैं फूल उस सारखा ।।
लताफ़त[17] के आलम की है राज़ ओ । उतम पद्मिन्याँ की है सरताज[18] ओ" ।।
सुन ओ बातकूँ राय बोल्या "ओ धन । है किस मुल्कमें, काँ है उसका वतन[19] ।।
उसे नाँव क्या है ओ किसकी है जाइ" । कह्या तब ओ शख्श[20] "ऐ जहाँगीर राइ ।।
है इस धर्तिरी के तले यक नगर । सो नाँव उस नगर का है दीपकनगर ।।३३५०।।
वहाँ एक राजा है गंभीर आज । है उस राज का नाँव सो रामराज ।।
वो महबूब[21] साहेब-जमाल[22] आज की । है बेटी उसी बेबदल[23] राज की ।।
जो रों- रों[24] अगर जीभ होवे मेरा । न कर सकसूँ[25] तारीफ़[26] उस धनकेरा" ।।
जो उस राजकन[27] था वज़ीर यक जवान । सुन्या उसकी तारीफ़ दे खूब कान ।।
सो आशिक़ हो वैं[28] उस उतम नार का । रख्या दिल उपर क़स्द[29] उस शह्र[30] का ।।
जो अव्वल ते[31] जादूगरी ओ वजीर । सिख्या था............... ।।
फिर्या राज ज्यों खेल कर वो शिकार । सो वैं सेह्र सों वनके च्युँटी के सार[32] ।।
चल्या एक सूराख में पैसकर । उसी नार के जा को पहुँचा नगर ।।
वले[33] रायकूँ कुछ न था फ़ाम[34] जो । कि ऐया रगी सों किया काम वो ।।
जो गये देस दो-तीन म्याने[35] गुज़र[36] । सरीर आपना खूब सिंगार कर ।।३३६०।।
सो दर्पन मने[37] औरत उस राय की । निझा देख छब अपनी ज़ेबाइ[38] की ।।
कही "ऐसी सूरत किसी नार में । न होसी[39] कहीं आज संसार में ।।
मेरा मर्द जो रायरायाँ[40] है आज । इस ऐसा भी कोइ जगमें होसे[41] न राज ।।

---

१. गुण, २. दुर्लभ, ३. अतिकोमल चमड़ा (साइबेरिया का), ४. आगे, ५. सा ही, ६. अद्भुत, ७. भूमण्डल, ८. भाँति, ९. होगा (पंजाबी), १०. बुड्ढा, ११. उपस्थित, १२. मानव, १३. भिन्न, १४. बात, वायु, १५. रहता, १६. लेकिन, १७. मंजुता, १८. शिरोमणि, १९. घर, २०. आदमी, २१. प्रिया, २२. सुन्दरी, २३. अनुपम, अनमोल, २४. रोम-रोम, २५. सकूँगा, २६. प्रशंसा, २७. राजा के पास, २८. वहीं, २९. इरादा, ३०. नगर, देश, ३१. पहिले से, ३२. चींटी के सरीखे, ३३. लेकिन ३४. समझ, ३५. बीच में, ३६. बीते, ३७. दर्पण में, ३८. सुन्दरता, ३९. होगी (पंजाबी), ४०. राजाधिराज, ४१. होगा (पंजाबी) ।

जो नज्दीक था एक रावाँ[1] वहाँ । सुन इस बातकूँ हँस पड्या नागहाँ[2] ।।
सो औरत की खातिर[3] कुँ लागा बुरा । कही वो हँसा रायके धरे[4] दोरा[5] ।।
जो पूछा उसे राय, सो फेर तब । ओ रावाँ कह्या "मैं हँसा इस सबब[6] ।।
जो भागीरथी राय की कर मनम्[7] । कही हुस्न[8] में कोइ नैं अपने सम ।।
न रायाँमने[9] आजकूँ कोइ राय । कहाँ है जो तेरे मुकाबिल[10] कुँ आय ।।
कि जग में नरो नार कूँ जुल्जलाल[11] । तफ़ावत[12] सों रोजी[13] किया है जमाल ।।
जो अछता[14] है तूँ जिस ज़मों के उपर । उसीके तले ऐ गुनी बख़्तवर[15] ।।३३७०।।
है दीपकनगर कूँर नगर यक गँभीर । वहाँ राय है एक रोशन-ज़मीर[16] ।।
कि जोड़ा नहीं इस धरति पर उसे । ....।।
निका नाँव उसका है सो रामराज । अजब[17] एक धरता है बेटी वो आज ।।
है उस नार का रूपसमदूर[18] नाँव । कि थोड़ा दिसे उस, जेता मैं सराँव[19] ।।
मेरी जानकूँ[20] हुस्नो खूबी में देख । उस ऐसी न होसे[21] कहीं जग में येक" ।।
सुन्या राय रावीं ते जिस तिल यो बैन । दिलोजाँ[22] से उसका दिवाना[23] हो ऐन[24] ।।
जे कोइ खास हो मातमद[25] था हुज़ूर[26] । हवा लेकर[27] उस सल्तनत का अमूर[28] ।।
यकट[29] जोगियाँ का लिया भेस वैं । चल्या मम्लकत[30] छोड़ परदेस वैं ।।
जो नज्दीक[31] दरिया की कड़की[32] पो जा । ....।।
न कैं बाट जो जाय मारग पकड़ । न होड़ी जो पेलाड[33] होय उस प चड़ ।।३३८०।।
किया उस दरया कूँ जो हक़[34] मेह्रबान । वो **माचीन** का राज है कर पिछान ।।३३८२।।
तुरत अपनी सरहदते[35] उलगाइया[36] । जों ओ राय दरिया उतर आइया ।।३३९२।।
देख्या बाग फिरदौस[37] के सार[38] एक । सो उस बाग में जाके बैठा टुक एक ।।
यकायक ऐसे में[39] वहाँ दो जवान । सलाम आ किये..........।।
उठे बोल यों "ऐ गनी[40] हक़-शिनास[41] । हमें तुजसों धरते हैं यक इल्तिमास[42] ।।
कि दोनों हमें सो सगे भाइ हैं । जो मीरास[43] कुछ बापते पाये हैं ।।
सो लड़ते हैं उसके बदल[44] आइ दोइ । बराबर नहीं बाँट सकता है कोइ ।।
हमन के दो म्याने[45] तुँ हाकिम[46] हो आज । ओ तक़सीम[47] कर दे......." ।।
कह्या राय "क्या है सो बोलो वो चीज़ । ....।।

---

१. तोता, २. यकायक, ३. दिल, ४. पास, ५. दुहराना, ६. इसके कारण, ७. मैं हूँ, ८. सौन्दर्य, ९. राजाओं में, १०. प्रतिपक्ष में, ११. सुन्दरी, १२. फर्क, १३. सदा, १४. रहता, १५. भाग्यशाली, १६. समझदार, १७. अद्भुत, १८. रूप-समुद्र, १९. सराहूँ, २०. प्राणों को, २१. होगा, २२. मन-प्राण, २३. पागल, २४. बिलकुल, २५. विश्वासी, २६. सम्मुख, २७. सुपुर्द, २८. काम, २९. अकेला, ३०. देश, ३१. पास, ३२. तट, ३३. प्रस्थान, ३४. सत्य-सरीखा, ३५. सीमा से, ३६. उल्लंघन किया, ३७. स्वर्गोद्यान, ३८. सरीखे, ३९. इसी समय, ४०. धनी, ४१. सच के पारखी, ४२. प्रार्थना, ४३. दायभाग, ४४. उसके लिए, ४५. हम दोनों में, ४६. शासक, ४७. विभक्त।

कह्या तबकि वह चार चीज़ हैं अवल[१] । सो ख़र्का[२] अहे उसमने[३] बे-बदल[४] ।।३४०
अगर दिलमँगे सोन टके दस हज़ार । वो झाड़े तो उसमें ते निकले बहार[५] ।।
दूजा एक कचकोल[६] ऐसा है जो । मँगे[७] जैसी न्यामत[८] तो होइ पूर वो ।।
है तिसरा खड़ावाँ केरा जोड़ यक । जो कोइ पाँव अपना उस उपराल रख ।।
करे क़स्द[९] जिस मुल्क जिस शह्र का । अछै[१०] वाँ च[११] हाज़िर[१२] हो यकबार का ।।
है चौथा असा[१३] एक इस धात का । अगर वक्त होवे जो कँ[१४] रात का ।।
जो मारे ज़मीं में उसे जैसे ठार । तो दरहाल होय शह्र वाँ आशकार[१५]" ।।
यो बाताँ सुन्या कान धर राय ज्यों । अधिक शाद[१६] हो ल्या लिया दिल में यो ।।३४०
कह्या बादज़ाँ[१७] उनकूँ "औ चार चीज़ । रखे मूँ अँगे[१८] ल्या जो देऊँ तमीज़[१९] ।।३४०
जो यो ल्या के आँगे रखे राय के । समज ख़्यालकूँ[२०] उस दोनों भाइ के ।।३४१
यकसकूँ कह्या "रास्त ता धेर[२१] दौड़ । यकसकूँ कह्या यो चपाधेर[२२] दौड़ ।।
जे कोइ तीर के खाम[२३] जा वेग आय । ओ अव्वल जे कुछ खुश लगे सो उचाय[२४] ।।
जो राज़ी हो करते हैं यों मुँज हज़ूर[२५] । तो होता है दोनों में का झंज[२६] दूर" ।।
चले दौड़ते वोंच[२७] दोनों जने । हुआ राय कूँ फ़ुर्सत[२८] ऐसे मने ।।
सो उस चार बस्ताँ[२९] कुँ सोरात[३०] कर । ओ कचकोल[३१] खिर्क़ा[३२] असा[३३] हाथकर ।।
कदम उस खड़ावें के उपराल रख । निपट अपने मकसूद[३४] पर ख़्याल रख ।।
चल्या नेट[३५] दीपकनगर बीच पैस । ....।।
जों ओ रायके कस्र[३६] कन आइया । वज़ीर आपनेकूँ वहाँ पाइया ।।
कह्या तूँ क्यों इस ठार आया कना[३७] । घड़्या क्यों तुझे यो समाया[३८] कना ।।
दिया ज्वाब ओ यो कि ऐ राय, मूँ । देखन आया यां के तमाशा के तैं ।।३४२
अजब कुछ सो रौनक़[३९] था इस ठार का । अजब कोइ राजा है इस शहार का ।।
ज़मीं का मगर यो है देवेन्द्र आज । पुनम[४०] का यही है मगर चन्द्र आज ।।
जो बेटी अहे एक इस राज कूँ । सो है बेबदल[४१] हुस्न[४२] में आज कूँ ।।
नियत[४३] यों है उसका जो तुज राज बाज[४४] । न लोडे[४५] किसी मर्द दुसरे कुँ आज ।।
येते कुछ हैं औसाफ[४६] तेरे यहाँ । इस यक जीभसों कह सकूँ मैं कहाँ" ।।
इसी गुफ़्तगू[४७] में थे मिल दोइ सूँ । वै[४८] ऐसे मने[४९] पा खबर कोइ सूँ ।।

---

१. प्रथम, २. पोशाक, ३. उसमें, ४. अनमोल, ५. बाहर, ६. दरियाई नारिय का पात्र, ७. चाहे, ८. दुर्लभ भोग, ९. इरादा, संकल्प, १०. रहे, ११. वहाँ १२. उपस्थित, १३. डंडा, १४. कहीं, १५. प्रकट, १६. प्रसन्न, १७. इसके बाद, १८. मेरे आ १९. विवेक, २०. विचार को, २१. दाईं ओर, २२. बाईं ओर, २३. विशेष, २४. उठ २५. मेरे सम्मुख, २६. झंझट, २७. वैसे ही, २८. छुट्टी, २९. वस्तुएँ, ३०. पसन्द, ३१. पा ३२. पोशाक, ३३. डंडा, ३४. अभिप्राय, ३५. सीधे, ३६. प्रासाद, ३७. कहना, ३८. म आया, ३९. रमणीय, ४४. पूर्णमासी, ४१. अनमोल, ४२. सौंदर्य, ४३. इच्छा, ४४. वि ४५. ब्याहे, ४६. गुण, ४७. बातचीत, ४८. वहीं, ४९. इसी समय।

कहै वाँ के राजे कुँ जा नागहाँ[१] । कि "माचीन का राय आया यहाँ" ।।
वो राजा सुन्या यो खबर जिस घडी । खुशी आपने दिलमें लिया ले बडी ।।
चल्या वैं अपे[२] सामने रायके । ....।।
देखत रायकी शान के धात[३] कूँ । गया भूल कर आपनी ज़ातकूँ[४] ।।३४३०।।
मुहब्बत सों मिल बैस[५] यक तख़्त पर । खुशी सों गमा[६] वक्त इस बक्त पर ।।
दुजे दिन गुना[७] मेज़बानी[८] बडी । दिया बेटी उस देख अमृत घडी[९] ।।
जों ओ राय खुर्शीद[१०] के नूर का । देख्या रूप उस रूपसमूदर का ।।
हुआ शाद[११] यों जो कह्या कुछ न जाये । ....।।
जो वो चार बस्तां[१२] थे उस रायकन[१३] । निझा[१४] देख यक देस वो गुलबदन[१५] ।।
कह्या तब कि "ऐ नार, यो चार सो । मेरे जीव के ऐन[१६] हैं यार सों ।।
अगर पूछती है मुँज उसका तू मोल । है तेरी मेरी बादशाही की तोल ।।
कि अज़मत[१७] उनों का जो कुछ है तमाम । अँगे[१८] यकबयक होवेगा तुजकुँ फ़ाम[१९] ।।
अहानत सेती[२०] तूँ इननकूँ न देख । यो चारों हैं औतार[२१] एकसते एक[२२]" ।।
कि इस धात[२३] गुजरे[२४] देखत चंद रोज़ । ....।।
रुख[२५] अपने नगर होर मुलक धेरे[२६] कर । जो महबूब[२७] कूँ ले चल्या फेरकर ।।
वज़ीर अपने दिलमें हुआ तब दुखी । फिरा रूप यकबारगी हो मखी[२८] ।।
गुपत राज़[२९] अपना छिपा रायपर । लग्या रायके दौर[३०] कूँ जायकर ।।
जो अंगे[३१] हो मंज़िल यो मंज़िल चले । वो दो भाइ आ बाट म्याने[३२] मिले ।।
नज़र राय की जो उनन पर पडी । सो यक झाड के तल उतर उस घड़ी ।।
कह्या उज्रख्वाही[३३] सों "ऐ भाइ हो । हुँ माचीन का मैं अपे राय सो ।।
जरूरत बदल[३४] मैं वो बस्ताँ चहार[३५] । गया लेके तुमनासों[३६] कुछ ना विचार ।।
इनों सों च[३७] थी सरफ़राज़ी[३८] मेरी । ....।।
मेरा चूक[३९] बख्शो[४०] न मानो बुरा । खुशी सों तुमें[४१] ल्यो यो बस्ताँ फिराँ ।।३४५०।।
कहे तब वो दो भाइ "ऐ हक-गुज़ार[४२] । हमें तुजते खुशनूद[४३] हैं बेशुमार[४४] ।।३४५२।।
कि लै[४५] दिनते इस चार बस्ताँ बदल । हमन दोनों भायाँ में था जो ख़लल[४६] ।।

---

१. यकायक, २. स्वयं, ३. भाँति, ४. अपने-आप, ५. मिल बैठना, ६. बिता, ७. गिनवाकर, ८. बात, (आतिथ्य), ९. शुभ घड़ी, १०. सूर्य, ११. प्रसन्न, १२. वस्तुएँ, १३. राजा के पास, १४. ध्यान से, १५. पुष्पतनु, १६. बिलकुल, १७. बडप्पन, १८. आगे, १९. समझा, २०. अपमान से, २१. अद्वितीय, दुर्लभ, २२. एकसे एक, २३. भाँति, २४. बीते, २५. मुँह, २६. मुल्क के पास, २७. प्रियतमा, २८. मक्खी, २९. रहस्य, ३०. द्वार, ३१. आगे, ३२. बाट में, ३३. क्षमा-प्रार्थना, ३४. जरूरत के लिए, ३५. चार वस्तुएँ, ३६. तुमसे, ३७. इनसे ही, ३८. सौभाग्य। ३९. भूल, ४०. क्षमा करो, ४१. तुम, ४२. सत्यवादी, ४३. सौभाग्यशाली, ४४. अत्यधिक, ४५. बहुत, ४६. बाधा।

जधाँ ते[1] जो तूं लेव कर वो गया । तधाँ ते[2] खलल बरतरफ़[3] हो गया ॥
मुबारक[4] अछो[5] तुज यो वस्ताँ चहार[6] । कि ऐसे हमन पास हैं बेशुमार ॥
यो ना हो मँगँगा तुँ भी कुछ फ़तुह[7] । तो सिकलायेंगे तुज हमें नक्लरुह[8]" ॥
मुहब्बत के मारग में जो आये ओ । सो वैं नक्लरुह उसकूँ सिकलाये ओ ॥
मखी हो को जो लग रहा था वज़ीर । सो वो भी सिख्या वो हुनर[9] बेनज़ीर[10] ॥
रज़ा[11] तुर्त दे रायकूं दोनो भाय । सो भी वो खडावें उमस[12] साथ राय ॥
किया कस्द[13] माचीन का दिल मने । सो अँपड्या उसी शह्र जा तिलमने[14] ॥
हुआ देख नज़दीक कइँ[15] एक ठार । जो बैठ्या वहाँ टुक खडावें उतार ॥
वैं ऐसे में हो आदमी ओ वज़ीर । किया रायकूं आको तस्लीम[16] फीर ॥
कह्या देख राय उसकु कि "इस ठार को । तु आया सो क्यों" 'वो दिया ज्वाब[17] "यों" ॥
कि "मैं तुजते अंगे च[18] आया हूँ यां । .... ॥
भला जो तूं खेले हरिन का शिकार । कि हैं इस जँगल में हरिन बेशुमार ॥
ख़यानत[19] सों वैं दिल फिरा तब वज़ीर । कह्या यों कि "ऐ राय गर्दू-सरीर[20] ॥
हुनर एक दीपकनगर बीच मुंज । चड्या हात सो कहने मँगता[21] हूँ तुज ॥
अगर मुंजकुँ होवे इशारत[22] तेरा । मखी होउँगा अपनी सूरत फिरा" ॥
रज़ा[23] जो दिया राय भोगी सखी[24] । सो दिखलाइया उन अपस कर मखी[25] ॥३४७०॥
देख्या उस हुनरकूं जो ओ गुननिधान । कह्या "यो हुनर सहलकुछ है कि जान ॥३४७२॥
मेरे पास ऐसा च[26] है यक हुनर । चढा जीव मुर्दे के धडके भितर ॥३४७३॥
करूँ ज़िन्दा होर फिर अपन धड में आउँ" । .... ॥
सुन्या रायते बात ज्यों ओ वज़ीर । कह्या रायकूँ फिर कि "ऐ दस्तगीर[27] ॥
मेरी जात म्याने[28] अथा[29] जो हुनर । सो दिखलाइया तुजकँ....... ॥
अगर लुत्फ़[30] कर ओ हुनर तूँ दिखाय । मेरा जीव भी तुजते टुक अमन[31] पाय" ॥
मो वैं राय हो अपने धडते बहार[32] । उस आहू[33] के धडमें किया जाको[34] ठार ॥
देख्या रायके धडकुँ खाली उने । सो दरहाल[35] जा सपड्या[36] उसमने ॥
निकल वाँ ते आ राय के रूप सूँ । ले अपने सँगात उस उतम जाइ कूँ ॥३४८०॥
नमक राय का कर अपस पर[37] हराम[38] । .... ॥
कदम शूम[39] रख उस खडावे उपर । चल्या राय म्हाडी मने[40] पैसकर ॥३४८२॥

---

१. जबसे, २. तबसे, ३. अलग, ४. धन्य, ५. रहो, ६. चार, ७. विजय, ८. शरीरांतर में आत्मा का प्रवेश, ९. विद्या, १०. अनुपम, ११. अनुज्ञा, १२. उत्साह, १३. इरादा, १४. पलमें, १५. कहीं, १६. अभिवादन, १७. जवाब, १८. आगे ही, १९. विश्वासघात, धरोहर हड़पना, २०. आकाश-शरीरी, २१. चाहता हूँ, २२. संकेत, इशारा, २३. अनुज्ञा, २४. तरुणी, २५. मक्खी, २६. ऐसी ही, २७. हस्तावलंबन देनेवाले, २८. व्यक्तियों में, भीतर, २९. था, ३०. कृपा, ३१. शांति, ३२. बाहर, ३३. हरिन, ३४. जाकर, ३५. तत्काल, ३६. घुसा, ३७. अपने ऊपर, ३८. अभोग्य, ३९. मनहूस, ४०. अटारी में।

सब यक धेर ते[1] अरकाने-दौलत[2] मिले । ....॥
धरे कोइ सिर भूइँ कये कोइ सलाम । वले[3] राज[4] किसकूँ हुआ कुछ न फ़ाम[5]॥
जो दिन जाको[6] संचर[7] हुआ शाम का । हुआ देखकर वक्त आराम का॥
चल्या रूपसमदूर की सेज धीर[8] । अदा परते उसके ओ रोशन-ज़मीर॥
समझ दिलमने[9] ली जो यो राय नोंय । लिया है उसीका मगर रूप कोय॥
लेती उसके नज्दीक ते अपसें[10] काड । उठी बोल यों उसकुँ बाताँ में पाड[11]॥३४९०॥
"सही रायका कालबुद[12] तूँ तो होय । वले[13] इस भितर राय का रूह नोय॥३४९१॥
अगर तूं वही राय सचला[14] अछे[15] । हुँ तेरी च कर जान मुँजकूँ सचे॥३४९३॥
मेरी बात ना सुन तुँ ज़ोरी पो[16] जाय । तो सच जान इस तिल मेरा जीव जाय"॥
सुन यो बात वैं उसकुँ लरज़ा[17] छुट्या । ज़रूरत मो उसके नज़िकते उठ्या॥
वैं अव्वल की[18] औरत के घारमें चल्या । सो उन बी रविश[19] उसकी खातिर[20] में ल्या॥
हो दिलगीर[21] सख्त उसके आने पोते[22] । लेई खींच अपस एक भाने सेते[23]॥
न रोज़ी[24] हुआ देख उनन का वसाल[25] । दिया छोड उस दोइ का ओ ख़ियाल॥
वले देखने रोज़ आता अछे । यो दोनों के तैं[26] देक जाता अछै॥
यकायक अँगे[27] दिन जो खूबी के आय[28] । हरिन होके जो था जँगल में वो राय॥३५००॥
सो रावाँ देख्या यक मुआ सो कहीं । हरिनके निकल जिस्म में तो वहीं॥
सँचर[29] तनमें रांवी के पाया क़रार[30] । उड्या वाँ ते खुशहाल[31] पँख मार-मार॥
उतर आपने कस्र[32] के वाम[33] पर । नवी अपनी महबूब कूँ फ़ाम[34] कर॥
यकट[35] देख उसे खोल मिन्कार[36] वै । किया सब जफ़ा[37] उसपो इज्हार[38] वैं[39]॥
कही राव ओ औरत कि "ऐ राय तुज । गवाँ ले दुखी थी सो फिर पाइ तुज॥
वले[40] रूप तेरा है राँवाकेरा[41] । मुलाक़ात क्यों रोवे तेरा मेरा"॥
कह्या फिर ओ राँवा कि "ऐ हमजलीस । जब आगा महल में तेरे ओ खबीस[42]॥
नज़िक बैसला[43] कर मिठीं बात तूँ । ओ खुश होय त्यों बोल इस धात[44] तूँ॥
वो मुज दलमें था दगदगा होर गुमान[45] । हुआ आजते दूर कर तू पिछान[46]॥
मेरा मर्द तहक़ीक़[47] सों तूँ च होय । बगैर[48] तूँ नहीं है मुजे गैर[49] कोय॥३५१०॥
वले रूह के नक़ल[50] का जो हुनर[51] । अथा[52] तुजमें दिखला मुँजे यक नज़र॥३५११॥

---

१. एक ओर से, २. राजामात्य, ३. लेकिन, ४. रहस्य, ५. समझ, ६. जगह, ७. संचार, ८. रूप-समुद्र की शय्या के पास, ९. दिल में, १०. स्वयं, ११. डाल, १२. शरीर, १३. लेकिन, १४. सच्चा, १५. है, १६. जबर्दस्ती, १७. कंप, १८. पहिली, १९. चाल-ढाल, २०. दिल, २१. दुःखी, २२. आने पर से, २३. बहाने से, २४. प्राप्त, २५. मिलन, २६. दोनों को, २७. आगे, २८. भले, २९. प्रवेश, ३०. निश्चय, ३१. प्रसन्न, ३२. महल, ३३. कोठे, ३४. समझ, ३५. अकेली, ३६. चोंच, ३७. अत्याचार, ३८. प्रकट, ३९. वहीं, ४०. लेकिन, ४१. तोते का, ४२. दुष्ट, ४३. बैठा, ४४. भाँति, ४५. सन्देह, ४६. पहिचान, ४७. सचमुच, ४८. बिना, ४९. दूसरा, ५०. स्थानान्तरण, ५१. विद्या, ५२. था।

मुजं यो हुनर जब तुँ दिखलायेगा । मेरा रूह[१] तब तुजते सुख पायगा ।।३५१३।।
छुपा रख मुँज उन आये लग एक ठार" । ....।।
सुन इस बात कूँ ओ सोहागिन सखी । कर अप जीव[२] पिंजराँ छुपा उस रखी ।।
जो मजलिसतें[३] उठ दूसरे देस फिर । जो आया ओ उस पद्मिनी के मँदिर ।।
उसी धात बाताँमनें[४] घाल[५] कर । अधिक उस सियहदिल[६] कुँ खुशहाल[७] कर।।
जो बोली तो राज़ी[८] हुआ नाबकार । उसी तिल[९] जिवाँ एक गधड़े[१०] की मार ।।
निकल राय के तनमने तें[११] सो फेर । जो गधड़े के तनमें गया पैस कर।।
सो दरहाल[१२] ओ राय आलीतबार[१३] । निकल कालबदमें ते रावीं के भार[१४] ।।२५२०।।
किया आपने तनमें जाकर मुकाम । ....।।
ओ गधड़ा जो था कर कुतक मार उसे । कुत्याँ हाथ खडडा[१५] सुटे[१६] भार[१७] उसे ।।
कमल के नमन[१८] बादज़ाँ[१९] राय खिल । ...लग्या राज करने.......।।३५२४।।

—कथा २९

सुन्या हूँ जो यक कोइ ज़ाहिद[२०] गँभीर । ....।।
यक औरत थी उस होर बेटा भी एक । बले था ओ न्हनवा ताले[२१] में नेक[२२] ।।३८३०।।
गुज़रता अछे[२३] उसपो फ़ाक़ा[२४] मुदाम । वग़ैर'ज़[२५] हलाल[२६] उन न खावे हराम[२७]।।
मुसल्लम[२८] पड़्या बेनवाई[२९] सों घर । सो यक रात सुपने में वक्ते-सहर[३०] ।।
वशारत[३१] दिये कोइ आ इस वज़ा[३२] । कि "ऐ जो गुज़रता है तुजपर जफ़ा[३३] ।।
खतर[३४] आज उट जा मु तुँ सहरा के धेर[३५] । अँख्याँ खोल कर देख चोधेर फेर ।।
पँखी हफ्तरंगी[३६] ले कोइ नागहाँ[३७] । शिकारी मिलैगा तुझे यक वहाँ ।।
ले उस पासते ओ पँखी मोल तूँ । वले भी[३८] किसी धेर[३९] नको[४०] बोल तूँ ।।
कि जिस घरमन[४१] वो जनावर अछे[४२] । तो न्यामत[४३] से भर दायम ओ घर अछे ।।
जो कुछ है ख़वास[४४] उस पँखी मूँ तमाम[४५] । अँगे दिन वो दिन होयेंगे तुजकुँ फ़ाम[४६]।।
जो इस घात[४७] का ख्वाब[४८] उसकुँ हुआ । खतर उठ उसी धातओ बेनवा[४९] ।।
जो सहरा कधन[५०] सर करता चला । सो नागाह वाँ यक शिकारी मिला ।।३८४०।।
नज़र जो पड्या उस पँखी पर सों वैं । लिया मोल,.............।।३८४१।।

---

१. आत्मा, जीव, २. अपने जीव, ३. सभा से, ४. बातों में, ५. डाल (हरियानी), ६. काले दिल, ७. प्रसन्न, ८. सहमत, ९. पल, १०. गदहे, ११. तन में से, १२. तत्काल, १३. महामहिम, १४. बाहर, १५. घसीट, १६. फेंके, १७. बाहर, १८. कमल-सदृश, १९. इसके बाद, २०. पूजापाठ-रत, २१. भाग्य, २२. इच्छा, २३. है, २४. निराहार, २५. सदा, २६. विहित, २७. निषिद्ध, २८. पूरा, २९. गरीबी, ३०. प्रातःकाल, ३१. खुशखबरी, ३२. इस प्रकार, ३३. विपत्ति, ३४. सबेरे, ३५. जंगल के घोरे, ३६. सप्तरंगी, ३७. यकायक, ३८. लेकिन, तो भी, ३९. किसीके पास, ४०. नहीं (मां), ४१. घर में, ४२. रहे, ४३. उत्तम भोग, ४४. गुण, ४५. सारे, ४६. समक्ष, ४७. भाँति, ४८. स्वप्न, ४९. गरीब, ५०. जंगल की ओर।

. . . . । दिया छोड़ आँगन में उस मुर्ग कूँ ।।३८५०।।
लग्या मुर्ग जों फिरने पर झाडकर । झडे दो रतन सों लिया काड कर ।।
चल्या ओ उमस साथ[1] बाजार कूँ । जो दिखलाइया जा खरीदार कूँ ।।
बड़े मोल के दो रतन देख ओ । दे पैंके[2] बहुत उस लिया मोल ओ ।।
ओ माया चढ्या हात वैं एक वार । दलिदर[3] ते फ़ारिग[4] हो पाया क़रार[5] ।।
फ़रागत सों[6] औक़ात[7] चलने लग्या । घर उसका सो जों दूध उबलने लग्या ।।३८५५।।
किया कामयाब[8] आखिर[9] ओ ख्वाब[10] उसे । . . . . ।।३८६०।।
कतेक नौबहार[11] होर केतक ख़ज़ाँ[12] । खुशी साथ गुज़रान कर बादज़ाँ[13] ।।
मुराद[14] अपनी हासिल[15] हुई देखकर । नियत[16] हज[17] की ओ ज़ाहिद नेक[18] कर ।।
कह्या अपनी औरत के घेर[19] खोल हाल । कि "वाजिब[20] हुआ हज मुंज उपराल[21] एताल[22] ।
जो मक्का के असबाब[23] का सज करूँ । अपस वाँ लग अँपडूँ होर हज करूँ ।।
मेरी गैब[24] अछ[25] घरमने[26] तूँ हुशयार । न भा[27] पाँव दहलीज में ते तुँ भार[28] ।।३८६५।।
अँगे[29] देख कर खर्च घर का चला । . . . . ।।३८६८।।
चली है रविश[30] पाक बीब्याँ की जों । चला अपने वाडे[31] के लोगाँ में वों ।।३३६९।।
किसे गैर के घेर[32] नको झाँक तूँ । रख अपनी असालत[33] उपर आँख तूँ" ।।३८७०।।
जं कुछ बोलना था सो बोल्या तमाम । चल्या आप मक्के कुँ ओ नेकनाम[34] ।।३८७१।।
कतेक दिन गुज़र गये पँछी एक दिन । ओ औरत यकाएक चुप एक छिन ।।३८७३।।
निकल घरते दहलीज में आ खड़ी । सो यक ज्वान सर्राफ़ पर उस घड़ी ।।
पड़ी आँख उसकी सो लब्दी[35] वहीं । सो बाँदी कुँ वेग भेज करदी वहीं ।।
बुला जा ओ बाँदी जो ल्याई उसे । . . . . ।।
हलों[36] बादजाँ[37] बोल उठी उसके धिर[38] । "भला जो तुँ रोज आये मेरे मंदिर" ।।३८७७।।
सुन्या जो ओ सर्राफ उसते यो बात । घर आने लग्या वों च[39] दिन होर रात ।।३८७९।।
अवल[40] मुफ़लिस[41] उन थी, कि था जानता । सो वैं बात में बात गुज़रानता[42] ।।३८८०।।
लग्या पूछने खुश उसे एक दिन । कि "थी मुफ़लिसी[43] तुजकुँ अव्वल[44] कठिन ।।
यकायक यो बरकत[45] हो ऐ मुखसिरी[46] । किधर ते तुज आई कि ऐ गुनभरी" ।।३८८२।।

---

१. उत्साह के साथ, २. पैसे, ३. दारिद्र्य, ४. मुक्त, छूट, ५. धीरज, सन्तोष, ६. आराम से, ७. समय, ८. सफल, ९. अन्त में, १०. स्वप्न, ११. नववसंत, १२. पतझड़, १३. इसके बाद, १४. मनोकामना, १५. प्राप्त, १६. इच्छा, १७. मक्का-यात्रा, १८. भला भगत, १९. स्त्री के पास, २०. उचित, २१. मेरे ऊपर, २२. इस समय, २३. सामान, २४. अनुपस्थिति में, २५. रह, २६. घर में, २७. पा (पं०), २८. बाहर, २९. आगे, ३०. चाल, व्यवहार, ३१. महल्ले, ३२. दूसरे के पास, ३३. कुलीनता, ३४. सुनाम, ३५. फँसी, खिंची, ३६. धीरे, ३७. इसके बाद, ३८. उसके धोरे, ३९. वह भी, ४०. प्रथम, ४१. गरीब, ४२. डालता, करता, ४३. गरीबी, ४४. पहिले, ४५. अभिवृद्धि, ४६. मुखश्री।

ओ नादान[१] कमअक्ल[२] यकबारगी[३] । ....॥३८८९॥
कही "हफ्तरंगी[४] जो है मुर्ग यो । है उसकी तरफते यो सामान[५] सो" ॥३८९०॥
वैं[६] ए राज़[७] रख दिल में सर्राफ़ का । ....॥
गया अपने घर सो उस्[८] यक हकीम[९] । धरनहार था आशनाई[१०] क़दीम[११] ॥
कह्या खोल उस मुर्ग की बात उसे । ओ हिकमत मने[१२] देख उस सात[१३] उसे ॥
कह्या इस वज़ा[१४] सों ज़बाँ खोलकर । "सिर उस मुर्ग का कोइ खावे अगर ॥
तो होय बादशाह इसमें कुछ शक[१५] नहीं । ....॥३८९६॥
सुन्या उसते सर्राफ़ यो[१६] बात जों । ....॥३८९९॥
न आने पोते[१७] उसके उड़ जा परान । ओ ज़ाहिद[१८] की औरत लगी तिलमिलान ॥३९००॥
सीना बिरह दाट्या[१९] देखत बेक़यास[२०] । किसीकूँ दई भेज सर्राफ़ पास ॥३९०१॥
कह्या तब ओ सर्राफ़ "ऐ गुलअज़ार[२१] । अगर सच मुंज उपराल तेरा है प्यार ॥
तो दौड़्या है मेरा दिल उस मुर्गपर । खिलागी तूँ उस मुर्गकूँ काटकर ॥
तो तेरे उनम दरस कूँ आउँगा । अगर नैं तो यो शह्र सुट[२२] जाऊँगा" ॥
सुन यों बात पूरा हो दिलगीर[२३] सो । निपट तिलमिलाने लगी फेर ओ ॥
जहाँ उस लेखे सब अँधारा हुआ । जनम उस बगैर[२४] उसपो खारा हुआ ॥३९०९॥
दई छोड़कर मुल्लक[२५] इंसाफ[२६] कूँ । ज़रूरत[२७] सों राजी हो सर्राफ सूँ ॥३९१०॥
बोला भेज उस मुर्गकूँ काट खुश । लगी मेहमानी कुँ वैं दाट[२८] खुश ॥
पका मुर्गकूँ जो रखी देग उतार । सो फ़र्ज़ंद दो भूखते बेक़रार ॥
लग्या शोर उचा[२९] जोरसों हट करन । लेजा दाइ उसे तुर्त उस देगकन ॥
सिर उस मुर्ग का काड़ कर उस खिलाय । धुलवा सूँ किनारे ले जा बेसलाइ ॥
ओ अँपड़्या सो हंडा बजाँ[३०] देग झाड़ । जे कुछ था सो सब एककासे[३१] में काड़ ॥
रखी आँगे[३२] सर्राफ के ल्याइ कर । न था उसमने[३३] सिर सो ना खाइ कर ॥
वों यो बात सुनता च कासे[३४] कुँ फोड । हो दरहम[३५] चल्या वाँ ते ले मूँ मडोड़ ॥
कि जिस ठार अछता अथा[३६] ओ हकीम । ....॥
कह्या खोल यो कैफियत[३७] उसके धरे[३८] । सो बोल्या हकीम इस वज़ा[३९] उससों फेर ॥३९२०
कि "खाया है उस मुर्ग का सिर जो कोय । सिर उसका जिने[४०] खाय सो राज होय" ॥३९२३।
यो हीला[४१] जो पाया सर्राफ़ ने । लिया खींच पूरा न जा उसकने[४२] ॥

---

१. मूर्ख, २. निर्बुद्धि, ३. तुरंत, ४. सप्तरंगी, ५. द्रव्य, ६. वहीं, ७. रहस्य, ८. उसका, ९. वैद्य, १०. मित्रता, ११. पुरानी, १२. वैद्यकों, १३. साथ, १४. प्रकार, १५. चिन्ता, १६. भाँति, १७. आने पर से, १८. भगत, १९. जला, २०. उत्कंठा, २१. गुलाबी गालोंवाली, २२. छोड़, २३. दुःखी, २४. उसके बिना, २५. बिलकुल, २६. न्याय, २७. गरज, २८. ठाट, २९. उठा, ३०. बाद-अजाँ, इसके बाद, ३१. कटोरे, ३२. आगे ३३. उसमें, ३४. कहना, ३५. कुपित, ३६. था, ३७. बात, माजरा, ३८. उसके पास, ३९. प्रकार ४०. जिसने, ४१. उपाय, ४२. उसके पास।

उस औरत कुँ बतरी[1] लगी छटपटी । बिरह के अँगारा ते जल होय भठी ।।
दई भेज पैगाम[2] फिर उसके पास । कि "ऐ संगदिल, तपते हुइ मैं निरास ।।
तेरे ताँइ उस मुर्ग का सीस काट । कीती[3] अपनी ज़िंदगी बाराबाट ।।
सिर उसका जो खाया न्हना कुछ न जान । मुँज उपराल हर्गिज़[4] बुरा तू न मान ।।
जे कुछ तूँ कह्या था सुनी वो च[5] मैं । लिया खींच यों क्या सबब[6] आप तैं[7] ।।
बहरहाल[8] आ दर्स दिखला तेरा । कि होटों में आ जीव रहया है मेरा' ।।
दिया भेज सर्राफ यों बोल फिर । जिने मुर्ग का सो जो खाया है सिर ।।
सिर उसका अगर काट देगी मुँजे । तुँ माशूका[9] मेरी कि समझुँ तुझे ।।
अगर नैं तो बस है तेरी आशनाइ ।" .... ।।
जनी[10] माँ हो बेटे के सिरते उठी[11] । सों दिलकूँ लगी दाइ के छटपटी ।।
अधीरात गफलत[12] में उस पाडकर[13] । न्हनेकूँ चली वाँ ते ले काड कर ।।
सो परमुल्क में दूर जा की मुकाम[14] । लगी पालने चावसों सुबहो शाम[15] ।।
जो न्हन बाद केतं[16] ओ शाना[17] हुआ । अदबगार[18], दाना[19], तवाना हुआ ।।
तिरंदाज़[20] ऐसा हो निकल्या गंभीर । जो उस दौर[21] में कोइ न था उस नज़ीर[22] ।।
क़ज़ारा ओ यक देस खेलन शिकार । चड्या रक्श[23] उपराल जो आशकार[24] ।।
जो बेटी थी उस शह्रके शाह की मगर[25] । जाई[26] थी मेह्र[27] होर माह[28] की ।।
निकल सैर कूँ उस दिन आइ थी बहार[29] । देख उस ज्वानका रूप हुइ बेक़रार ।।
जो देखी नज़र[30] भर सो उस ज्वान कूँ । उतम दिलरुबा[31] धरति के भान[32] कूँ ।।
मुहब्बत लगा जीवसों बेकयास[33] । दई भेज मख़फ़ी[34] किसे[35] इसके पास ।।
कि "तू कौन होर काँ है तेरा वतन[36] । है किस खान का जोतवन्ता[37] रतन ।।
मेरे दिलमें यों है, जो लोडूँ[38] तुजे । पिरित जिव सों जोडू न छोडूँ तुजे ।।
वले[39] शर्त[40] यों है जो यों एक ठार । फ़लाने[41] जँगल धेर है कल्बे[42] गार[43] ।।
वहाँ अज्दहा[44] एक ऐसा गँभीर[45] । जो रुये-ज़मीं पर[46] नहीं उस नज़ीर[47] ।।
निगलता ओ यकदम में दस-पाँच । सके सोस[48] उसकी न कोइ आँच कूँ ।।
येते आदम्याँ खाइया है जो हाड । पहाडाँ हो नीचे है चौंधेर[49] उजाड़ ।।

---

१. बहुतेरी, २. संदेश, ३. किया (पंजाबी), ४. कदापि, ५. वैसे ही, ६. कारण, ७. अपने को, ८. जैसे भी हो ९. प्रियतमा, १०. प्रेम, ११. जानपर, पड़ी १२. धोखे, १३. डालकर, १४. निवास, १५. प्रातः सायं, १६. धीरे-से, १७. जवान, १८. शिक्षा-सम्पन्नों, १९. चतुर, २०. धनुर्धर, २१. जमाने, युग, २२. उसके जैसा, २३. घोड़े, २४. प्रकट, २५. मानों, २६. बेटी, २७. सूर्य, २८. चंद्र, २९. बाहर, ३०. आँख, ३१. मनोहर, ३२. भानु, सूर्य, ३३. अत्यधिक, ३४. चुपके, ३५. किसी को, ३६. घर, ३७. द्युतिमान्, ३८. ब्याहूँ ३९. लेकिन, ४०. वरदान, ४१. अमुक, ४२. शरीर के भीतर, ४३. गुहा, ४४. अजगर, ४५. भारी ४६. भूमण्डल में, ४७. उस जैसा, ४८. सह, ४९. चारों ओर।

कता[1] है मेरा बाप जे कोइ उसे । जो मारे जीवाँ, देउँ बेटी उसे ।।३९५०।।
अगर तूँ करेगा कुछ इसका इलाज । तो तेरी हुँ तूँ मर्द मेरा है आज" ।।
सुन ए बात उम्मस में आ वो जवान । कह्या मुंज है आसान[2] यो काम जान ।।
अगर शर्त तेरा है यो बरक़रार । तो उस साँपकूँ चूर करता हुँ मार ।।
कि है मुंजकुँ तौफ़ीक़[3] करतार का । ले आता हुँ सिर काट उस मार[4] का" ।।
कह इस धात[5] दुसरे दिन उस गार पास[6] । चल्या मुस्तइद[7] होको रासीके रास[8] ।।
सो ऐसे में उस शाहकेरा वज़ीर । गया था तफ़क्कुर[9] कुँ सहरा[10] के धीर[11] ।।
गुज़रगाह[12] में उस बहादुर कुँ देख । .... ।।
कहया "कौन तू होर जाता है का । कहाँ है वतन होर तेरा ठिडकाँ ।।
कह्या "में सिपाही हुँ मर्द गरीब । सुन्या हुँ जो इस शह्र के अनक़रीब[13] ।।
है यक गार म्याने[14] बड़ा अज्दहा । .... ।।३९६०।।
मेरे दिल में आया सो जाता हूँ मैं । सिर उसका ले शहपास आता हुँ मैं" ।।
कह्या तब वजीर उस कुँ "ऐ नौजवाँ । फिर इस कामते, तूँ, कि है तुज ज़ियाँ[15] ।।३९६२।।
मगर[16] हफ्तरंग मुर्गका सिर जे कोइ । जो खाया अछे उसते यो काम होय' ।।३९६४।।
चढ्या सिरते उम्मस[17] उसे बेशतर[18] । न सुन बात उसका हुआ पेशतर[19] ।।
जो अँपडाइया[20] अपसें[21] उस गार कन[22] । देख्या दूरते अज्दहा[23] के कधन ।।
शिकम सीर कर[24] सुस्त हो बेशुमार[25] । पड्या है आँख्याँ मींच[26] बेइख्तियार[27] ।।
उतर रक्श परते[28] लिया हथ कमान । चलाया केतक तीर उसकर निशान ।।
सो बैठे कलेजे में कारी[29] ओ तीर । हो निर्जीव ओ अज्दहा बेनज़ीर[30] ।।३९७०।।
रह्या सुस्त हो जों ओ फिर हिल[31] न सका । हुआ दर्मियाने तें[32] जों दूर शक[33] ।।
मुंडी काट उसकी छुपा छोड धड । फिर्या वाँते खुशहाल तेज़ी पो[34] चढ ।।३९७२।।
दुजे दिन उठ्या शह्र में गलबला[35] । जो कोइ शख्स[36] कीता दफा[37] ओ बला[38] ।।३९७५।।
जब उस शाहकूँ जो खबर अंपडी[39] । सो नज्दीक था ओ वज़ीर उस घडी ।।
कि बोला कि मैं सैर करने कुँ कल । गया भार[40] सो यक जवाँ बेबदल[41] ।।
मिल्या बाट जकूँ.............. । .... ।।३९७८।।
है अल्बत्ता यो काम उसी ज्वान का । शुजाअत[42] में रुस्तम के था मान का" ।।३९८०।।
जो शहकूँ हुआ आरज़ू लख उमे[43] । धुंड[44] होर इज्जतसों[45] ल्याये उसे ।।

---

१. कहता, २. सहल, ३. दया, ४. साँप, ५. भाँति, ६. गुहा के पास, ७. तैयार, ८. सीधे, ९. चिंता, १०. जंगल, ११. पास, १२. रास्ते, १३. पास, १४. गुहा में, १५. हानि, ज्यानि, १६. हाँ, १७. उत्साह, हिम्मत, १८. बहुत, १९. पहिले, २०. पहुँचाया, २१. अपने को, २२. गुहा के पास, २३. अजगर, २४. भर कर, २५. बहुत, २६. मीच, २७. बेबस, २८. घोड़े पर से, २९. गहरा, ३०. अद्वितीय, ३१. हिल, ३२. भीतर से, ३३. सन्देह, ३४. घोड़े पर, ३५. हुल्ला, ३६. आदमी, ३७. खतम, ३८. आफत, ३९. पहुँची, ४०. बाहर, ४१. अनुपम, ४२. वीरता, ४३. लाखभाग, ४४. ढूंढ, ४५. सम्मान-सहित ।

शिगुफ्ता[1] हो दिलमें... । चल्या देखन उस अज्दहा कुँ वहाँ ।।
वो अज्दहा बल्कि था यक पहाड़ । किया था हवेली[2] कुँ चौंधेर[3] उजाड़ ।।
पड्या है धड़ अम्मा[4] न था उसपो सिर । जो सिर काँ है कर पूछिया शाह फिर ।।
छुपाया सो जागे पो ते[5] ओ जवाँ । सिर उसका ले कर आ सुट्याँ[6] दरमियाँ[7] ।।
हज़ार आफ़रीं[8] भेज शाह उस उपर । फिर्या वाँ ते ले उसकुँ दुंबाल[9] घर ।।३९८७।।
दिया उसकुं बेटी किया सरफ़राज़[10] । ....।।३९९३।।
ओं उस शाह की उम्र पूरी भरी । उसी ज्वानकुँ अपनी दे सरवरी[11] ।।३४९४।।
चढ़ी बादशाही ओ जों उसके हाथ । सो यक दिन सवारी के भाने सँगात ।।३९९६।।
ले दुँबाल उस दाइकूँ नागहाँ । चल्या आपना शह्र था जाँ वहाँ ।।
जो ज़ाहिद जो अपना जन्या बाप था । ओ माई जो उसतं हुआ पाप था ।।
बोला भेज दोनों कुँ अपने हजूर[12] । कह्या बापकूँ .... ।।
कि है घर तुम्हारे सुन्या हूँ जो यक । पँखी हफ्तरंगी[13]............... ।।४०००।।
अगर मुँजकूँ दिखलायेंगे यक नज़र । तो ममनन[14] हो जाउँगा फेर कर" ।।
कह्या जाहिद[15] "ऐ सर्वरे खुशमक़ाल[16] । मेरे घर में था सच वले नें[17] एताल ।।
जो मक्के गया था बदल हज्ज के[18] । मुआ है फिर आये तलक घरमें नै ।।
जो था यक जिगर-गोशा[19] होर एक दाइ । मुये वो भी अब मैं हुँ होर उसकी माइ ।।
जब ओ फूल हुआ गुम[20] मेरे बाग ते । रयन-देस झकता[21] हूँ उस दाग[22] तें" ।।
सुन्या बापके मँ ते यो बात जो । कह्या बापकूँ फिर को इस धात[23] यो ।।
"मुये कर को दोनों कहे तुजकूँ किन । जो फ़र्ज़ंद[24] मैं हूंअ दाई सो इन" ।।
देख उस दाइ का मुख वही कर पिछान । गले ला के बेटेकुँ पाया परान ।।
लग्या हाल पूछन सो फ़र्ज़ंदकुँ फेर । कहया कैफियत[25] खोल सब बाप धेर" ।।
वैं उस मादरे-नहस[26] ग़द्दार[27] कूँ । होर उस हीन सर्राफ़ मुर्दार कूँ ।।४०१०।।
सियासत[28] की तरवार सों पाक[29] कर । उसी ठार नाबूद[30] दर ख़ाक[31] कर ।।
फिरयाँ बातें वैं[32] बापकूँ ले सँगात । लग्या बादशाही करन ज़ौक़[33] सात ।।
ओ रावी[34] सफ़ा[35] बोल इस धात सों । जबाँ खोल फिर.............. ।।
कह्या यो कि "ऐ नार हर क्यों[36] तुं आज । तेरे मनके मक़सूद[37] कुँ दे रवाज[38] ।।
शिताबी[39] सों जा यारकूँ शाद[40] कर । येते दिनकी बारी न बर्बाद कर ।।

---

१. प्रफुल्लित, २. घर के, ३. चारों ओर, ४. लेकिन, ५. जगह पर से, ६. फेंका (पं०), ७. बीचमें, ८. शाबाश, ९. पीछे, १०. भाग्यशाली, ११. सर्दारी, १२. सामने, १३. सप्तरंगी, १४. कृतज्ञ, १५. भगत, १६. सुभाषी सरदार, १७. लेकिन, १८. हज के लिए, १९. दिल के टुकड़े, २०. लुप्त, २१. झँखता, २२. रँज, २३. भाँति, २४. पुत्र, २५. हाल, बात, २६. मनहूस, २७. विश्वासघातिनी, २८. दण्ड, २९. साफ, ३०. नष्ट, ३१. मिट्टी की चीजें, ३२. वहीं, ३३. आनन्द, ३४. तोता, ३५. साफ, ३६. हर तरह, ३७. अभिप्रेत, ३८. पीछे, (छेवट, गुज०), ३९. जल्दी, ४०. खुश।

तुरत दूर कर दिलमें का दग़दग़ा ।" .... ।।
जो ओ मोहिनी विरहिनी गुल्बदन[१] । हुई मुस्तइद जावने यारकन ।।
शिफ़क़[२] शर्क़पेरते[३] हवेंदा[४] हुआ । सो गौगे सों वें[५] मर्द पैदा[६] हुआ ।।
हुये शाद सब घरके बाँदी[७] गुलाम[८] । खुशी ना खुशी सों कर अपसे कुदाम[९] ।।
पड्या मर्द का घरमने[१०] जो कदम । खुशी ना खुशी सों कर अपसे कुदम[११] ।।
रखी सीस जा मर्द के पाँव पर । ले जा बेसला सेज के ठाँव पर ।।
अदब साथ[१२] उसके अँगे[१३] हो खडी । खुशामद सो कर गुफ्तगू[१४] यक घडी ।।
जो कुछ था सो ल्या मेवा उसकूँ खिलाइ । मुहब्बत के प्याले में शर्बत पिलाइ ।।
हो आसूदा[१५] घर में घडी तीन-चार । चल्या बादजाँ[१६] मर्द रावीं[१७] के ठार ।।
उठ्या बोल "ऐ तैर,[१८] शीरीं-कलाम[१९] । किया सर्फ[२०] मुँज बाद क्यों सुब्होशाम[२१] ।।
तेरा लाड किस धात[२२] खाँतूँ[२३] चलाइ । तुजे वक्त बेवक्त क्यों काम आइ ।।
म्हने होर बडे घर के थे किस तरीक़[२४]" । .... ।।
ओ रावां कर अव्वल[२५] सना[२६] होर सलाम । .... ।।
कने[२७] का जो कुछ था सो कहा खोलकर । उठ्या सेवट[२८] इस धात सों बोल कर ।।
कि "ऐ ख्वाजा,[२९] मैं तेरी गैबतमने[३०] । किया खिदमत[३१] ऐसी जो वैसी किने[३२] ।।४०३०।।
किया नैं है इस दौरम्याने[३३] अज्हूँ । .... ।।
मुँज आज़ाद[३४] इस पींजरे ते अगर । करैंगा तो कौंगा[३५] तुजे सरबसर" ।।
किया शर्त[३६] उससों इसी धात उन । सो बोलन लग्या तब कि "ऐ ख्वाजा सुन ।।
जो है घर में खातून[३७] तेरी हलाल[३८] । तेरे बाद अपसें[३९] न रख सक सँभाल ।।
जो म्हाडी[४०] पो चड खोल खिडकी निकाई[४१] । नज़र कोई पड्या सो उसूँ इश्क़ ल्याइ ।।
यकायक जो हुइ इश्क़ ते बेकरार[४२] । चली भार[४३] अव्वल[४४] सो शारू[४५] के ठार ।।
कीती[४६] मश्वरत[४७] भार जाने बदल । तेरा नंगोनामस[४८] खाने बदल ।।
ओ शारू नमक खाइ थी कर तेरा । न जाने दे माने[४९] हुई बहुतेरा ।।
सो मारी जिवाँ[५०] पंख उसके मडोड । बजाँ[५१] आइ मेरी तरफ उसकूँ छोड ।।
कही, दे रजा[५२] मुँज जो टुक भार[५३] जाउँ । नवे यार सों यक घडी गमके[५४] आउँ ।।४०४०।।

---

१. फूल-जैसे शरीरवाली, २. आकाशीय लालिमा, ३. पूर्व ओर, ४. प्रकट, ५. वहीं, ६. प्रकट, ७. दासी, ८. दास ९. बौखलाहट, १०. घर में, ११. देखी, १२. सम्मानपूर्वक १३. आगे, १४. बातचीत, १५. विश्रांत, १६. उसके बाद, १७. तोता, १८. पक्षी, १९. मधुरभाषी, २०. व्यतीत, २१. प्रातः-सायं, २२. प्रकार, २३. बेगम, २४. तरह, २५ प्रथम, २६. प्रशंसा, २७. कहने, २८. तुरंत, २९. स्वामी, ३०. पीठ पीछे, ३१. सेवा, ३२. की, ३३. समय के, ३४. मुक्त, ३५. कहूँगा, ३६. समय, प्रतिज्ञा, ३७. बेगम, ३८. विहित, ३९. अपने को, ४०. चौबारा, ४१. प्रेम, ४२. अधीर, ४३. बाहर, ४४. प्रथम, ४५. मैना, ४६. किया, ४७. सलाह, ४८. इज्जत, ४९. बाधक, ५०. जीवित, ५१. इसके बाद, ५२. अनुज्ञा दे, ५३. बाहर, ५४. कविता के।

तब इस बातमें दूर अंदेश[1] कर । .... ॥
हिकातांमने[2] कर गिरिफ्तार[3] उसे । दिया घरते जाने न मैं भार[4] उसे ॥४०४२॥
है तूं मर्द उसका ओ तेरी हलाल[5] । तुजे भाये त्यों राख उसकूं एताल ॥
खुदा तैं रिहाकर जो मैं यां ते जाउँ । जो इसग़मतेफ़ारिग[6]हो कुछ अमन[7]पाउँ ॥
कि इस औरतां मों न जीता कोई ।" .... ॥
सुन ऐ किस्सा ओ ख्वाजा[8] दिल सबते तोड । दिया उस कफस में ते[9] रावी कुँ छोड ॥
जो गैरत की आग उसके सीने लगी । सुटचा[10] तोड औरतकुँ एकबारगी ॥
लुटा घर फकीरां[11] कुँ सब एक बार । गले घाल[12] ले खर्का[13] सूफ़ी के सार[14] ॥४०५०॥

५. अपनी सफलता के बारे में—

जो तूती मेरे तबा[15] का बेनज़ीर[16] । है शक्करफ़शानी मने[17] दिलपज़ीर[18] ।४०५४॥
किया शक्कर अफशान[19] इस धातमों[20] । कि दम कोइ उचावे[21] न यां बात सों ॥४०५५॥
जो अफ़साना[22] इसमें जो है रस भर्या । मो जों शहद होर दूधका है दर्या ॥४०५७॥
न अफ़साना हैं बल्कि अफसूं[23] है यो । हलावत[24] में हलवेते अफजूं[25] है यो ॥
कि जिस वक्त पर यो अथा नातमाम[26] । उसी वक्त ख्वाहा[27]थे सब खासो-आम[28] ॥
जो सबका किया आरजू[29] मंजपे ज़ोर[30] । ज़रूरत बदल[31] मैं लिया सरपो शोर[32] ॥४०६०॥
जो यो दास्तां[33] बेबदल[34] फारसी । मेरे इम्तिहां[35] का हुआ आरसी ॥
हिकायत केतक इसमें के खूब देख । सरस होर रसदार मरगूब[36] देख ॥
परागंदा[37] खातिर[38] न कर इस बदल[39] । किया तर्जुमा मुख्तसर इस बदल ॥४०६३॥
हवस होय अगला पढनहारकूं । न होये कदूरत[40] लिखनहारकूं ॥४०६५॥
कि थोडे में लज्ज़त अहे होर स्वाद । कि करता अहे इश्तिह[41] कूं जियाद ॥
यो गुलदस्ता खासा मेरे बाग का । दवा दर्दमंदां के है दाग़ का ॥४०६७॥
कहां आज है यो सकत हर किसे[42] । जो इस धात सों देवे ज़ीनत[43] इसे ॥
यो अफ़साने जब दिलते करते थे जोश । तो कहते अथे मर्हबा[44] अक्लो-होश[45] ॥४०७०॥
यो नामा[46] रंगारंग निर्मल निछल । हुआ इस जमाने में सब बेबदल ॥
मेरे फ़िक्रम्याने[47] ते 'बे-इख्तियार[48] । निकल आइया है यो नक्शोनिगार[49] ॥४०७२॥

---

१. दूर तक, २. कथाओं में, ३. फँसा कर, ४. बाहर, ५. धर्मानुमोदित, ६. मुक्त, ७. शांति, ८. स्वामी, ९. पिंजड़े में से, १०. छोड़ा, ११. गरीबों, १२. डाल (हरियानी), १३. गुदड़ी, १४. कलंदर-जैसा, १५. मन, १६. अनुपम, १७. चीनी बरसाने में, १८. मनभाती, १९. शक्कर बरसाना, २०. भाँति, २१. उठावे, २२. कथा, २३. जादू, २४. मिठास, २५. बढ़कर, २६. अपूर्ण, २७. इच्छुक, २८. बड़े-छोटे, २९. आकांक्षा, ३०. दबाव, ३१. के लिए, ३२. भार, ३३. कथा, ३४. अनमोल, ३५. परीक्षा, ३६. स्वादिष्ठ, ३७. बिखरे, ३८. दिल, ३९. इसके लिए, ४०. कष्ट, ४१. भूख, ४२. हर किसी को, ४३. शोभा, ४४. शाबाश, ४५. बुद्धि, ४६. पुस्तक, ४७. चिन्तन में से, ४८. स्वतः, ४९. चित्रण।

अगर यो चढ़े नुकतादाने[1] के हात । सीनेके पर सुने के लिखें नीर सात ॥४०७४॥
हुये हज़रते नखशबी मुज मदद । दिया मैं उसे तो रवाज[2] इस सनद[3] ॥
बरस यक हज़ार हो चालीस पर नौ[4] । हुये थे यो मोतियाँ पिरोये हुँ मैं तो ॥
लताफ़त[5] भरी मस्नवी यो अजब[6] । मुरत्तब[7] किया खुशसो पहिली रजब[8] ॥४०७७॥
जो अबयात[9] हैं इसमने अल्फ़चार[10] । बराबर है लख बैत के हर चहार[11] ॥
अज़ीज़ां कने[12] जम[13] यो मकबूल[14] है । ....॥
जवाहर जो हैं इसमने जिन्स-जिन्स[15] । ....॥४०८०॥
कि इस धात[16] के नौ रतन रोलिया[17] । होर ऐसी नवी मस्नवी[18] बोलिया ॥
मेरा काम है इस ज़माने में आज । कि साजे न यो काम किस[19] मुंज बाज[20] ॥
जो सुल्तान अब्दुल्ला इस दौर का । है राजा सुलेमान के तौर का ॥
शिगुफ्ता[21] किया देख इसका करम[22] । सो झमक्या[23] मेरी तबा[24] का जामेजम[25] ॥
करूँ क्यों न मैं शुक्र हर दम हज़ार । जो सुन खुश हुआ यो शहे-रोज़गार[26] ॥
जो उस शह की खातिर[27] पड्या[28] यो कबूल । गगन ते हुआ मुंजपो रहमत[29] नजूल[30] ॥
जब यो नज्म मेरा अरूमी[31] किया । सूरज मुजसों आ दस्तबोसी[32] किया ॥
कह्या "ऐ सखुनमंज, साहबतमीज़[33] । वचन के सो है मिस्र का तूँ अज़ीज़[34] ॥
तेरी तबा[35] पर सदहज़ार[36] मर्हबा[37] । ....॥
कोई इस बातकूँ लाफ[38] जानो नको । बुरे होर बुरादिल मानो नको ॥४०९०॥
कि जिसके सदफ़[39] में रतन साफ है । करै लाफ़ अगर उन तो इन्साफ[40] है ॥
छिपाऊँ केता अपसें[41] कोंड[42] मैं । कि छुपती नहीं फूल की बास कै ॥
जेता चाँद बादल तें अपसे छिपाय । रहे जोत उसका न बिन भार[43] आय ॥
सखुन-पर्वराँ यकते हैं यक ज़ियाद । वले[44] और है मुंज ज़बाँ का सवाद ॥
यो अफसाना[45] जो ऐब[46] ते दूर है । सलामत[47] के अस्मान का नूर[48] है ॥४०९५॥

६. गौवासी के अन्तिम काल के विचार*—

गवासी अगर तूँ है सचला गवास[49] । लगा इश्क़ अपने खुदा सात खास ॥४०९७॥
तेरे दर्द का तूँ अपे हो तबीब[50] । ....॥

---

१. मर्मज्ञों, २. प्रचार, ३. प्रमाण, ४. १०४९ हि० (सन् १६३९ ई०), ५. मंजुता, ६. अद्भुत, ७. पूर्ण तैयार, ८. अक्तूबर, ९. अर्धालियाँ, १०. शेर, १०. चार हजार, ११. चार, १२. प्यारों के पास, १३. सदा, १४. पसन्द, १५. इसमें जाति-जाति का, १६. भाँति, १७. रौला, १८. कथा-काव्य, प्रबन्ध-काव्य, १९. किसी को, २०. मेरे विना, २१. प्रफुल्लित, २२. अनुग्रह, २३. चमका, २४. मन, २५. जनशेद का प्याला, २६. दुनिया के राजा, २७. दिल, लिए, २८. पड़ा, २९. कृपा, ३०. उतरे, आवे, ३१. दुलहिन का काम, ३२. हस्तचुंबन, ३३. विवेकी, ३४. वजीर, ३५. मन, ३६. लाख, ३७. शाबाशी, ३८. डींग, ३९. सीपी, ४०. न्याय, उचित, ४१. स्वयं, ४२. बन्दकर, ४३. बाहर, ४४. लेकिन, ४५. कथा, ४६. दोष, ४७. लालित्य, ४८. तारा, प्रकाश, *तूतीनामा। ४९. गोता लगानेवाला, ५०. वैद्य।

चलेगा केता नफ्स[१] के कैमने[२] । केता होयगा नाँवके पै मने[३] ।।
केता शायरी[४] पर धरैगा खियाल[५] । केता होगा दरपये[६] खत्तोखाल[७] ।।४१००।।
न दिनकूँ समज होर ना रातकूँ । धुँडेगा केता इस्त आरात[८] कूँ ।।
के ता होयगा यों तुँ दूदे-चराग[९] । केता खुश्क अपना करेगा दिमाग़ ।।
केता फ़िक्र[१०] सों हर शबे-तार[११] तूँ । करैगा सुका तन्कूँ जौं तार तूँ ।।
अछैगा[१२] केता दर रियाई[१३] हनोज़ । करेगा केता खुश्नुमाई[१४] हनौज़ ।।
हो बेदार[१५] यक बार इस ख्वाब[१६] ते । निकल भार[१७] इस ग़म के गर्दाब[१८] ते ।।४१०५।।
मगर नैं[१९] सुना है जो ईसा नबी[२०] । बजिद[२१] एक दिन हो कहे "ऐ रबी[२२] ।।४१०९।।
दुन्या किस वज़ा[२३] की है दिखला मुँजे । है उस देखने का तमन्ना[२४] मुँजे" ।।४११०।।
निदा[२५] गैबते[२६] आइया इस वज़ा । "नज़र[२७] कर फलाने[२८] जँगलधेर[२९] जा ।।
कि निपजे[३०] खलक में जिस जात[३१] सों । ओ दिखलाई देगी इसी धात सों[३२] ।।
जो ईसा गये उस जंगल धेर गुज़र । पडी एक बुर्की[३३] सों औरत नज़र ।।
कहे "कुन[३४] है तू होर तेरा नाँव क्या । यकेली तूँ करती है इस ठाँव क्या" ।।
सो दरहाल[३५] ओ रुख नबीधेर[३६] कर । दई ज्वाब इस धातसों[३७] फेर कर ।।
"दुन्या जिस कते हैं सो मेरा है नाँव' । कहे "काड बुर्की[३८] जो तुजकूँ निझाउँ" ।।
जो बुर्की सुटी[३९] काडकर उस घडी । बुरी शक्लसों[४०] तब नज़र तल[४१] पडी ।।
डुबाई है खुश लहुमने[४२] एक हाथ । दुजा हाथ रंगी है मेंहदी सँगात ।।
जो ईसा नबी कूँ लग्या यो अजब[४३] । कही खोल ईसाकूँ इस धात तब ।।
"जो यो हाथ लहुसे भर्‍या है मेरा । सो कर खून आई हूँ यक शौ[४४] केरा[४५] ।।४१२०।।
जो मेंहदी दुजे हाथकूँ ल्याइ हूँ । नवा यक मनुस लोड[४६] कर आइ हूँ ।।
इसे भी न खुश कर जीवाँ[४७] मार मैं । होर एकस के होती हूँ मल्हार मैं ।।
मेरा काम है लोडना[४८] छोडना । मेरा रस्म है जोडना तोडना ।।
ऐते मनुस क्ये अदद[४९] फ़ाम नैं । किसी का मुँजे याद भी नाम नैं ।।
उनो सात मिल कर तो सोती हुँ मैं । वले बकर सों वोंच अछूती हूँ मैं ।।४१२५।।
मेरी आरजू[५०] में जे कोइ उम्र खोय । थे नामर्द उनमें न था मर्द कोय ।।४१२८।।

---

१. लालच, २. कहे में, ३. नाँव के पीछे, ४. कविता, ५. ध्यान, ६. पीछे पड़नेवाला, ७. रंगरूप, ८. उपमा, उत्प्रेक्षा, ९. दीपक के धूम, १०. चिंतन, ११. अंधेरी रात, १२. रहेगा, १३. पाखंड में, १४. आत्म-दर्शन, १५. जागृत, १६. स्वप्न, १७. बाहर, १८. भँवर, १९. लेकिन, २०. ईसा पैगंबर, २१. हठ करके, २२. मेरे भगवान्, २३. प्रकार २४. लालसा, २५. शब्द, २६. परोक्ष से, २७. देख, २८. अमुक, २९. जंगल के पास, ३०. उपजे, ३१. व्यक्ति, ३२. भाँति से, ३३. घूंघट, ३४. कौन ३५. तत्काल, ३६. पैगम्बर की तरफ, ३७. भाँति से, ३८. घूंघट, ३९. फेंकी, ४०. रूप से, ४१. दृष्टि में, ४२. खून में, ४३. विचित्र, ४४. वर, पति, ४५. का, ४६. ब्याह, ४७. जीते को ४८. ब्याहना, छोड़कर, ४९. संख्या, ५०. लालसा।

न कर एतमाद[१] इस गुज़रगाह[२] का । यों फांदा है दर्वेश[३] होर शाह का ।।४१४९।।
सँभाल अपसे ऐ यार इस दामतें[४] । नको[५] ग़ाफ़िल[६] अछ[७] आपने कामतें" ।।४१५०।।
इलाही[८] जो दाना है इसरार[९] का । देवे तुज असर[१०] मेरी गुफ्तार[११] का ।।४१५३।।
सर-अफ़राज़[१२] दोनों जहां पर करे । जो रहे आरजू कुछ न दिल में भरे ।।
दुआ सों किया खत्म[१३] मैं यो किताब । इलाही दुआ यो करे मुस्तजाब[१४] ।।४१५५।।

§ १३. तुकाराम (१६०८–४९ ई०)

तुकाराम महाराष्ट्र के बहुत प्रसिद्ध संत हैं। इनकी वाणी कबीर और नानक की तरह वहाँ प्रचलित है। इनका जन्म १६०९ ई० (शक १५३०) में पूना के पास इन्द्राइन नदी के किनारे बसे देहुग्राम में हुआ था। इनके जीवन का बहुत-सा समय लोहगाँव में बीता। उसी साल महाराष्ट्र के दूसरे सन्त समर्थ रामदास का भी जन्म हुआ था। तुकाने व्यापार करके जीविका चलानी चाही, लेकिन उसमें उन्हें हानि उठानी पड़ी और साथ ही अपमानित होना पड़ा। किसी समय देश में भयंकर अकाल पड़ा, जिसमें अन्न के विना उनकी पहली पत्नी रखूमाई मर गई। धीरे-धीरे भाभी, पुत्र तथा परिवार के दूसरे लोग भी अन्न विना तड़प-तड़प कर मरे। दूसरी पत्नी जिजाई जीवित रहीं, जिनका स्वभाव बहुत कठोर था। तुकाराम के लिए कविता और भजन आत्मशान्ति के लिए बड़े साधन थे। इन्होंने हिन्दी में भी कुछ पद लिखे हैं —

१. मंत्र तंत्र नहिं मानत साखी।
प्रेम भाव नहिं अन्तर राखी।।
राम कहे त्याके पग हौं लागूं।
देखत कपट अभिमान दूर भागूं।।
अधिक-जाति कुल-हीन नहिं जानूं।
जाने नारायन सो प्रानी मानूं।।
कहे तुका जीव तन डारूं वारी।
राम उपासिहूँ बलियारी।।

२. आपें तरे त्याकी कोण बराई।
औरत कूं भलो नाम धराई।।
काहे भूमि इतना भार राखे।
दुभत धेनु नहिं दुध चाखे।।
बरस मेघ भलते हि बिरखा।

---

१. विश्वास, २. रास्तो, ३. साधु, ४. फंदे से, ५. नहीं, ६. प्रमादी, ७. रह, ८. भगवान्, ९. रहस्यों, १०. प्रभाव, ११. बातचीत, १२. सम्मानित, सफल, १३. समाप्त, १४. स्वीकृत।

कोन काम आपनी उन्होते रखा ।।
काहे चंदा सुरज खावे फेरा ।।
खिन एक बैठण पावत घेरा ।।
काहे पारस कंचन करे धातु ।
नहिं अमोल तुटत पावत धातु ।।
कहे तुका उपकार हि काज ।

× × ×

३. सब कर, कर रहिया रघुराज ।।
वैकुंठ-नायक काल कों सासुर का ।
देत डुबाय सब मँगाय गोपिका ।
स्तंभ फोड़ पेट चिरिया कश्यप का ।
प्रहलाद के लिये कहे भाई तुका याक ।
लोभी कें चित धन बैठे कामिनी चित काम ।
माता के चित पूत बैठे तुका के मन राम ।।
तुका राम बहुत मीठा रे ! भर राखो शरीर ।

× × ×

४. तन की करूँ नावरी उतारूँ पैले तीर ।।
सन्त जन पन्हियां ले खडा राहूँ ठाकुर-द्वार ।
चलत पाछे हूं फिरों रज उड़त लेउं सीर ।।
राम कहे सो मुख भला रे, खाये खीर खांड ।
हरि बिन मुख पो धूल परी रे क्या जनी उस रांड ?
राम कहे सो मुख भला रे बिना राम सें बीख ।
अब न जानूं राम ते जब काल लगावे सीख ।
कहे तुका मैं सौदा लेवे केनन हार ।

× × ×

५. मीठा साधु संत जन रे मूरख के सिर मार ।।
कहे तुका भला भया हम हुआ संत का दास ।
क्या जानूं केते मरते न मिटती मन की आस ।।
तुका और मिठाई क्या करूं पाले विकार पिंड ।
राम कहावे सो भली सखी माखन खीर खांड ।।

§१४. मीराँ हुसेनी (१६२३ ई०)

कवि सुल्तान मुहम्मदकुल्ली कुतुबशाह (१६८२-१७११ ई०) के समय सैयद मीराँ हुसेनी गोलकुण्डा में आकर सौ फ़कीरों के साथ एक मस्जिद में रहने लगे। इनके सन्त-पन्थ की ख्याति झोपड़ी से लेकर बादशाह के महल तक थी। इनका अधिक समय मलकापुर गाँव में बीता। मरने पर गोलकुण्डा के नजदीक लंगरहौज में इनकी कब्र बनी। इनकी काव्य-कृति 'मरनवी बशीरतुल् मनबर' है, जिसके कुछ पद्य हैं*—

जिब का बी ओ जिवाला, रूपों में रूप आला।
सब के ऊपर है बाला, नित हँसत रह तुँ मीराँ॥
अकुलाय रूप सब सूँ, ओ रूप देक जब तू।
बेरूप के तूँ तब सूँ, नित हँसत रह तुँ मीराँ॥
बच्चा बगल में होकर, ढुंढ़ते नगर में रोकर।
सारी उमर यों खो कर, नित हँसत रह तुँ मीराँ॥
कोई नाक के ऊपर ज्यों, नित बांदते नजर क्यों।
दिसते ही जोत कर यों, नित हँसत रह तुँ मीराँ॥
उस नूर[१] कूँ फ़ना[२] है, सूरत जिसमें[३] बना है।
नूर ऐन कूँ मना है, नित हँसत रह तुँ मीराँ॥
सो नूर खास होर, रंग रूप कुछ न आया।
सूरत-शकल न माया, नित हँसत रह तुँ मीराँ॥
ओ नूर खास आला, सब सूँ ऊपर है बाला।
काला न लाल-पीला, नित हँसत रह तुँ मीराँ॥
जिसमें नूरा यो सारे, जिसे है चाँद-तारे।
कुन्दन सूँ ज्यों चितारे, नित हँसत रह तूँ मीराँ॥
सब गज का धनी है, धरता वो सब धनी है।
कादर[४] उसे मने है, नित हँसत रह तुँ मीराँ॥
ऐ नूर खास तूँ है, दिसने में आये सो है।
पैदा हुआ सो वो है, नित हँसत रह तुँ मीराँ॥
कीं ठाँव नाँव नै है, नित हँसत रह तुँ मीराँ॥
कोइ देखत हवा में, दिखते ज़र्रा सफ़ा में।
कहते है जात उसमें, नित हँसत रह तुँ मीराँ॥
सूरत दिसे हवा में, साया किते खुदा में।
फिर गैब[५] होइ सफ़ा में, नित हँसत रह तुँ मीराँ॥

---

* 'दक्खिनी का गद्य और पद्य' (श्रीराम शर्मा, हैदराबाद १९५४ ई०)

१. प्रकाश, २. नाश, ३. शरीर, ४. शक्तिमान्, ५. गुप्त।

दिसते कूँ क्या तू देखे, दिसते कूँ देख देखे।
फिर देक अपकूँ लेखे, नित हँसत रह तुँ मीराँ ॥
पैदा जो कोइ हुआ है, वो सब उनों किया है।
ना के अपै आ है, नित हँसत रह तुं मीराँ ॥
कोई जोत देक सारे, उस देक अपको हारे।
रह-रास्ता[1] फिर निहारे, नित हँसत रह तँ मीराँ ॥
वो जोत जीव कहते, उस देक अमन[2] सूँ रहते।
कइ लोग याँह बैठे, नित हँसत रह तुँ मीराँ ॥
मुर्शद[3] बगैर कामिल,[4] कर खूब रह सूँ शामिल।
तब होएगा तु आमिल,[5] नित हँसत रह तुँ मीराँ ॥
जब रूह को तूँ पाया, है नूर का वो माया।
वो नूर जात पाया, नित हँसत रह तुँ मीराँ ॥
नै उसको आना जाना, अला न कमा काना ॥
उस नूर का निशाना, नित हसत रह तूँ 'मीराँ' ॥
है जात वो इलाही, उसकूँ है बादशाही।
सब चीज पर गवाही, नित हसत रह तुँ मीराँ' ॥
तुज...देक ओ देखे, दिसता सो तूँ न तेखे।
बेजान हो तुँ देखे, नित हसत रह तुँ मीराँ ॥
जैसे दरिया व मौजां[6], झलते हैं लाख तूफाँ।
वो ही समन्द के सूरो, नित हसत रह तुँ 'मीराँ' ॥
मौजां कूँ अन्त नै है, रहने के अन्त नै है।
दिसने कूँ अन्त नै है, नित हसत रह तुँ मीराँ ॥

§ १५. अफजल (१६२६ ई०)

अफ़ज़ल उत्तर का कवि है या दक्खिन का, इसका निर्णय मुश्किल है; क्योंकि उसने अपने बारे में कुछ नहीं लिखा है। भाषा देखने से वह दक्खिनका अधिक मालूम होता है। अफ़ज़ल ने अपना बारहमासा गोस्वामी तुलसीदास के देहान्त के तीन वर्ष बाद लिखा। उसकी कविता में बहुत कम अरबी-फारसी के शब्द मिलते हैं। उसके कुछ अंश देखिए:*—

सखी री चैत रुत आई सोहाई। अजहुँ उमेद मेरी बर न आई ॥
बआलम[7] फूल्या फुवारियां सब। करें सैरां पिया संग नारियां सब।
रहे हैं भँवर फूलों के गले लाग। मेरे सीना जुदाईका लगा आग ॥

---

१. सन्मार्ग, २. शान्ति, ३. गुरु, ४. सिद्ध, ५. अभ्यासी, ६. तरंग।* उ० श० पृ० २००। ७. दुनियामें।

निहायत दर्द-दुख हमने सही री । गमे-हिजरां[1] मुझे हर दम रहे री ।।
सखी दिन-रैन मुज नागन डसत है । फिरूँदूरी तमामी जग हँसत है ।।
मेरे गलमों पडी है परेम फांसी । भया[2] मरना मुझे और लोग हांसी ।।
अरे यह इश्क सों डरती फिरूँरी । नसीहत[3] अपने कूँ आपे करूँ री ।।
कि पंजी[4] सों लगन हर्गिज[5] न कीजे । अरी दिल दे हज़ारां गम न लीजे ।।
बरस दिन भी पहर चलता रहेगा । सदा गममों[6] जिगर[7] जलता रहेगा ।।
जिन्होंने दिल मुसाफिर सों लगाया । उन्होंने सब जनम रोते गँवाया ।।
अरी ए नैन वरजें ना रहे री । मुझे संग ले पराई बस पड़े री ।।
अगर मैं जानती यह बेवफाई । खुदा की सों न करती आशनाई[8] ।।
अरे इस आग ने रुसवा[9] किया री । पियाके इश्क में यह जिव दिया री ।।
बबीं हालम्[10] सबा[11] बहरे खुदा[12] री । पियाकूँ जा सुना बाते हमारी ।।
कि तुजकूँ लाज जग की कुछ न आई । करी दिलन हममसे बेवफाई ।
अरे अनजान खाई में दगा रे । कि तुजसें संगदिलकूँ[13] दिल दिया रे ।।
सजन अब गर कही[14] की लाज कारे । मरूँ हूँ दर गमत[15] टुक आव घर रे ।।
अरे बल-बुद्धि तनमों ना रहे रे । तमामी देह खाकस्तर[16] भये रे ।।
मेरे जिव का भरोसा दम[17] नैंकीजो । सबेरे आय कर दीदार[18] दीजो ।।
अरे यह चैत रुत चलती रहेगी । तुमन बिन विरह ते जलती रहेगी ।।
अरे भादों कहां सावन कहां रे । मिलो टुक आप के फ़ानी[19] जहां मे ।।
देखूँ अब जेठसों धूयाँ पड़त हैं । हमें हैरा वसरगर्दा फिरत ।।
जिन्हों के हैं सखी इस रुत पिया घर । उन्हों कूँ सर्दखाने[20] हैं मुयस्सर ।।
हमारे पाँव नंगे धूप सर[21] पर । फिरुँ हूँ दौडते पिउ बाज[22] घर-घर ।।
भमोले[23] सर उपर छाले पगन मों । फफोले हो चले सारे बदनमें ।।
उठन-बैठन की ताकत ना रही है । न जानूँ जाँ-व-तन[24] कब लग रही है ।।
सखी री कोई कहे जा दिल-रुबा[25] सों । सितमगर पुरजफ़ा[26] व बेवफ़ा[27] सों ।।
कि बारह मास भी तुम बिन निभाये । अरे जालिम कहो तुम क्यों न आये ।।
तेरे गम[28] ने निपट मुजकूँ दहा रे । यह मुख से जीव लबों पर आ रह रे ।।
गमत[29] सों जों जे तन[30] बाहर पडैगा । कहो यह खून किसके पर पडैया ।।
जो अपनी आकबत[31] का खैर चाहो । रुखे जाँ बख्श[32] कूँ अपने दिखाओ ।।

---

१. वियोग-दुःख, २. हुआ, ३. उपदेश, ४. पक्षी, उड़ंतू, ५. कदापि, ६. दुःख में, ७. दिल, ८. प्रेम, ९. बदनाम, १०. देख मेरी हालत, ११. प्रातःसमीर, १२. भगवान के लिए, १३. कठोर हृदय को, १४. कही बात, १५. तेरे गम में, १६. राख, १७. क्षण भर, १८. दर्शन, १९. नाशवान्, २०. ठंडे घर, २१. प्राप्य सुलभ, २२. प्रिय बिना, २३. लूह, २४. शरीरमें प्राण, २५. मनोहर, २६. जालिम, २७. विश्वासघाती, निर्मोही, २८. दुःख, २९. तेरे गम, ३०. शरीर से, ३१. भविष्य, ३२. प्राणप्रद।

§ १६. मुकीमी (१६२७ ई०)

मिर्जा मुहम्मद मुकीम मुकीमी ने अपने कथा-काव्य 'चन्द्रबदन व महियार' को गोस्वामी ,लसीदास की मृत्यु (१६२३ ई०) के चार वर्ष बाद पूरा किया। मुकीमी ईरान का निवासी फ़ारसी ा बड़ा शायर था, किन्तु सत्रहवीं सदीके आरंभ होने तक हिन्दी की महिमा दक्खिन के दरबारों में ाढ़ गई थी, इसलिए अपने दूसरे स्वदेशी शायर तथा बीजापुर के सरकारी (फातूहात आदिलशाही) ;तिहासकार की तरह मुकीमी ने भी हिन्दी में काव्य लिखना शुरू किया। इस कवि के बारे ां इतना ही मालूम हुआ, कि वह असमाबाद (उत्तरी ईरान) में एक सैयदवंश में पैदा हुआ था। ापने बाप के साथ अरब के तीर्थों की यात्रा करता शीराज (दक्षिणी ईरान) में पहुँचा। पिता ; मरने पर अनाथ हो गया। दक्खिन के दरबारों में फारसी और ईरानियों की बडी प्रतिष्ठा थी। ुकीमी बीजापुर चला आया। यहीं वह पढ़-लिखकर एक अच्छा कवि हो गया। उसके ारसी-कविता-संग्रह (दीवान) की प्रशंसा समकालीन इतिहासकारों ने की है, किन्तु हिन्दी-कविता का उन्होंने जिक्र नहीं किया। फारसी के लेखक अभी हिन्दी को इस योग्य नहीं समझते थे, के उसका जिक्र अपने ग्रंथों में करते। गौवासी ने अपने काव्य 'सैफुल्मुलूक' को गोलकुंडा में ान्द्रबदन से दो ही साल पहले समाप्त किया था। इसलिए शायद मुकीमी ने उसे देखा हो। ऐसा ानुमान किया जाता है, कि 'चन्द्रबदन' के कवि के समकालीन आतिशी ने फारसी में अनुवाद केया था, जिसे बीजापुर के दूसरे कवि बुल्बुल ने हिन्दी में किया। बुल्बुल ने अपनी पुस्तक में ाह स्पष्ट जिक्र किया है*—

;रीरे-हिन्दवी[1] पर कर तूँ तस्वीर। लिबासे-पारसी[2] है पाय-ज़ंजीर[3]॥
; हो मुज-बाग में टुक नग्मा-परवाज[4]। सितारे-हिन्दवी[5] दो दम नवा साज॥
ाढा था इश्क का हिन्दी रिसाला[6]। पिया नैं[7] फारसी का मैं[8] दो साला॥
;आ बुल्बुल उपर उसने जरूरत[9]। दिखाना फर्स की हिन्दी में सूरत॥

उसने 'चन्द्रबदन व महियार' को १६८८ ई० (११०० हि०) से पहले लिखा था†।
?. मुकीमी ने मंगलाचरण करते हुए लिखा है††—

ुझे फ़ैज[10] कुछ बख्श[11] तुझ-ध्यान का। इलाही[12] तु हाफ़िज[13] कहे ईमान का॥
ोरा दीनो-ईमान[14] सारा सो तूँ। मेरे जीव में कीता है ठारा सौ तूँ॥

कविने अपने उपनाम मुकीमी को कई जगह इस्तेमाल करते लिखा है—

ुन्या तो फ़ना[15] है मुकीमी सभी। रहेगी वचन की निशानी यही॥

---

*स० उ० पृ० ४०।

१. हिन्द रेशम, २. फारसी पोशाक, ३. पैर की बेड़ी, ४. संगीत की उड़ान, ५. हिन्वी सेतार, ६. पुस्तक, ७. नहीं, ८. मदिरा, ९. उससे कम।

†स० उ० म० पृ० ३८। ††वहीं, पृ० ३७।

१०. अनुग्रह, ११. प्रदान कर, १२. भगवान्, १३. रक्षक, १४. दीन-धर्म, १५. नाशवान्।

मुकीमी पिरित-बीच अंपड्या[1] हुँ मैं । पिरिति के कमँद[2] बीच सँपड्या हुँ मैं ॥
मुकीमी वचन का तरंग साज तूँ । हविस कां[3] चल्या है तुँ महियार कूँ ॥

मुकीमी की कविता एक प्रेम-कथा है। एक हिन्दू-राजकुमारी, चन्द्रबदन पर एक मुसल्मान व्यापारी महियार (मुहीउद्दीन) आशिक हो जाता है। सामाजिक कठिनाइयों के कारण ब्याह नहीं होता और दोनों तड़पकर मर जाते हैं। मुकीमी समय के शिष्टाचार के अनुसार किसी बादशाह की प्रशंसा नहीं करता, न वजही और गौवासी की भाँति आत्मप्रशंसा करता है। वह कहता है—

किसना मुँज पिरित का कहा एक उन । जो बिसरे तु लैला-मजनूँ को सुन ॥
हुआ दिलपे यों कर तफ़क्कुर[4] करीब । .... ॥
वचन दुर[5] हो दिलते उबलने लगो । नवी तर्ज़-खुश[6] तब निकलने लगी ॥
जुबाँ कां एता[7] हूँ सचा जोहरी । करूँ नित जबाँ सों[8] गुहर-किसरवी[9] ॥
किसा यह कहूँ मै गुहरबार[10] का । सो चंदरबदन होर महयार का ॥
सुने कोइ मुज कां दुआ याद कर । रहेंगे तअज्जुब सौं दिल शाद[11] कर ॥
ततिब्बा[12] गवासी का बाँध्या हुँ मै । सखुन मुख़्तसर[13] त्याके सांध्या हुँ मैं ॥
बले[14] मै अपसकूँ सराया[15] नहीं । शेयर[16] में किसी को फिराया नहीं ॥
सराना-फिराना[17] नन्हा काम है । करे उन अमल[18] यों कि जो खाम[19] है ॥

२. कविता के कुछ नमूने*—

सुना हूँ यक शह्र सुन्दर पटन । अथा[20] राच वहाँ ए हिन्दू वरन ॥
करे राज पूजा सो उस देवका । तमाशा अजायब[21] दिसे सेवका ॥
कि राजों में ओ राज जग-राज था ।

प्रथम प्रेम में पागल महयार को देखकर किसीने कहा—

कया[22] जा उसे "ए दिवाने बशर[23] । कहाँ सूँ तु आया चल्या है किधर" ॥
उने जाब[24] फिरकर दिया शाहकूँ तूँ । चेत चल पकड़ अपनी बात कूँ" ॥
"तुँ आशिक हुआ है सो किस हूर[25] का । हुआ मुब्तला[26] कह तूँ किस नूर का ॥
तेरा मन लग्या है सो कह तूँ मुझे । जो माशूक[27] तेरा मिलाऊँ तुजे" ॥

प्रेमी के देश-देश में घूमें का वर्णन—

हरेक शहरमें जो वो जाने लगया । वहाँ क्यां जोजो ब्याँ[28] देखाने लग्या ॥

---

१. पहुँचाया, २. फंदे, ३. कहाँ, ४. चिंतन, ५. मोती, ६. नये अच्छे ढंग, ७. इतना, ८. वाणीसे, ९. राजमोती, १०. मोतीकी वर्षा, ११. प्रसन्न, १२. ततिम्मा, परिशिष्ट, १३. संक्षिप्त, १४. लेकिन, १५. सराहा, १६. कविता, पद्य, १७. सराहना, बुराना, १८. काम, १९. कच्चा।

*यु० ह० म० पृष्ठ, १४।

२०. था, २१. अदभुत, २२. कहा, २३. आदमी, २४. उसने जवाब, २५. अप्सरा, २६. फँसा, २७. प्रियतमा, २८. बयान।

देखा रोम होर शाम संजाम हम[1]। देखा गज़नवी होर दखिन दमबदम[2]।।
अरब होर अजम[3] वो बुखारा बलख। कि मुल्तान लाहोर हवश[4] हिंद बदुख[5]।।
दिल्ली होर बंगाला देखाय उसे। ....।।
बिजापुर सितारा व अहमदनगर। बुरहानपुर गोलकुंडा बीजेनगर।।
न किस्सूँ ओ बोली न देखी किधर। ....।।

चन्द्रबदन और महियार के वार्त्तालाप में कवि का चमत्कार*—

नज़िक[6] जाको बोल्या कि "सुन ए परी। मुजै तुझ लताफ़त[7] दिवाना करी।।
दिवाना हूँ तेरा दिवाने के तैं[8]। अपसते न कर दूर जाने के तैं।।
धर्‌या आस तेरी निरासी न कर। जफ़ा पर मुझे तूँ कि आसी न कर।।
सो तुझ-बिन मूँजे कोइ होना नहीं। कि बिन जल मछी का सो जीना नहीं।।
कता हुँ तुझे मैं "कि ए गुनभरी। तुँ करना एता कुछ मेरी दिलबरी"।।
सो यों कह अदब सों निवलकर उने। धर्‌या सीस उसके कदम पर उने।।
मगद मार उसकूँ उठी बोल यों। "समझ कुछ अपसकूँ रे बेडौल तूँ।।
हिन्दु में कहा और तुरग में तूँ कहाँ। कहाँ राम-सीता मुरख तूँ कहाँ।।
कहाँ मैं चँदरमां कहाँ तूँ देवा। कता क्या मुये तूँ दिवाना हुआ।।

महियार निराश होकर प्राण दे देता है, उसकी अरथी चंदरबदन के द्वार पर रुकती है और मृत प्रेमी का प्रेमिका से मिलन होता है--

रवाना हुआ शह जनाज़ा कुँ ले। सो मंज़िल कु ले आ उतारी तले।।
मिले लोक सारे सो यकबारगी। सँवार खूब तुर्बत सो महयार की।।
हुआ जों अमल कब्र का सब तमाम। उठा दफ़न करने कुँ शह नेकनाम।।
मँगा जों कबरसों उतारूँ उसे। दफन कर दुन्या ते बिसारूँ उसे।।
जो देखे जनाज़ा में महयार कूँ। ओ है जुफ्त मिलकर उसी नार सौं।।
कफन बीच आकर ओ चंदरबदन। गले लग सोती है सो जों एक तन।।
गले उस गले लग पिरित प्यार सों। पिरित मद-मुहब्बत की महयार सौंउ।।
जुदा उनकूँ हरचंद करने मंगे। कि दोनों कुँ दो ठोर धरने लगे।।
तो यों लग अपसमें ओ सोते अथे। जुदाई किये तो न होते अथे।।
देखत हैरां हों इस हाल कूँ कन्या दफ़न करना उसी। ....।।

---

१. भी, २. तुरंत, ३. ईरान, ४. अबीसीनिया, ५. बदख्शाँ। *उ० श० पृष्ठ २०० और स० उ० म० पृष्ठ ३९। ६. पास, ७. मंजुता, ८. पागल को।

§ १७. कुतुबी (१६३४ ई०)

कुतुबी गोलकुंडा का कवि था। इसने दिल्ली के प्रसिद्ध संत ख्वाजा नसीरुद्दीन के शिष्य शेख युसुफ देहलवी की धार्मिक 'पुस्तक तोहफतुन्नसाहय' (सीखों की भेंट) का उसी नाम से दक्खिनी में पद्यबद्ध अनुवाद किया।

बीवी के चुनाव के बारे में सीख है—

जो लख संभाल्या जाय तुझ औयत में सौं मिलने सब्र कर॥
आफत बला गम कर खूबसूरत पारसा। ············॥
साथी हो तुझ- भाई चले खिदमत करे शामो-सेहर॥
ना ल्याय दुखका आँज, उनके गम दुख में ले जाये सब।
ऐसे न होसे[1] ना रचे देना तिलाक उस जूदतर[2]॥
जो तु नारी करे धूँढ़[3] चार चीज अपने से कम।
सिन[4] जात[5] कद[6] तुजते तलें चौथा सो क्या[7] धन-मालोज़र[8]॥
करता च[9] नारी तूँ अगर हर्गिज न कर ऐसे बगैर[10]।
कर खौफ़[11] हँस मत बोलरे दीदार ऐसे ज़ो खर॥
करते हो मोटी जन नको[12] पतली हो ऊँची खौफ नै।
होर काली जन हर्गिज न कर फर्जंद[13] जनेंगी बद-बतर[14]।
महिने देवनहारी न कर होर बाल जिस पदड्या[15] पैं है।
होर मालवंति भी नको होय ढीठ मुखडी जश्ततर[16]॥
इस धात[17] की भरी, समझ वारकें जो पंदर बात धरे।
मूँपर जो बारी ज्वाब दे दायम रहे सर बाँधकर॥
जो तूँ बुलावे सेजपर भाना[18] मलोल[19] होकर करे।
हर बात में उज्रा करे मकराँ भरी करती उजर॥
आहिस्ता जों तूँ बात कै फिर जाब[20] दे उठ्ठी तडक।
होर भार[21] आवे बे रज़ामन्दी यकेले दरबदर[22]॥
जंते आये उसके सामने करती शिकायत होर गिला।
कहे है दुखिया हुँ मर्दते ओ अगर्चे खूबतर[23]॥
ओढे न अंचल सीस पर मुखडा न धोये हाथों पा[24]।
ना नैन में काजल करे कदना[25] रखे पटियासों सर॥
तुझते छिपाकर राखे सजन मेहमाँ कूँ दुश्मन धरे।
तुजते अव्वला[26] खाये जब भर पेट तुजते बेशतर[27]॥

---

१. होगा, २. जल्दी, ३. ढूंढ़, ४. आयु, ५. जाति, ६. आकार-प्रकार ७. कहा, ८. सम्पत्ति, ९. करता ही, १०. ऐसे के बिना, ११. भय, १२. नहीं, १३. पुत्र-पुत्री, १४. अधिक बुरे, १५. पैरों पर, १६. फूहड़, भोंड़ी, १७. भाँति, १८. बहाना, १९. रंज, २०. उत्तर, २१. बाहर, २२. जगह-जगह, २३. सुंदरी, २४. हाथ-पैर, २५. कभी नहीं, २६. पहिले, २७. अधिक।

ऐसी जिस औरत अछै[1] दोजख[2] यकीं सीना-बसे।
कर नेक होवे नार तो जों होर पाय मुश्कतर॥
राहत[3] जो लोडें[4] अपस जा मोल ले सीरत परी[5]।
महताब जों चंदा-पुनम[6] मीठी वचन की सीमतर॥
कि होवेगी वो पारसा[7] काने[8] अछै खिदमत[9] करे।
उस साथ मिल जैतर करे नै तो खरीद यक होर कर॥
बेगाना[10] नार्या पर कधीं[11] ना देख शहवत[12] की नजर।
ना देख भी अमरद[13] तरफ नज्दीक ते रह दूरतर॥

§१८. अब्दुल्ला कुतुब (१६३९ ई०)

महाकवि सुल्तान मुहम्मद कुल्ली कुतुब (१५८०-१६१२ ई०) की कन्या हयात बख्शी बेगम प्रसिद्ध नर्त्तकी हैदरमहल (भागमती) से पैदा हुई थी, जिसका ब्याह उसने अपने भतीजे तथा उत्तराधिकारी मुहम्मद कुतुब (१६२६-३६ ई०) से किया था। सुल्तान अबदुल्ला हयात बख्शी का पुत्र तथा कवि मुहम्मद कुल्ली का नाती, नाना की मृत्यु के दो वर्ष बाद, १ दिसंबर (१६१४ ई०) को पैदा हुआ था। फर्वरी, १६२६ ई० को बारह वर्ष की उम्र में महम्मदी महल में वह गद्दी पर बैठा। नाबालिगी के समय राजकाज का प्रबन्ध उसकी माँ हयात बख्शी बेगम करती थीं। अब्दुल्ला कुतुब बारह साल की आयु तक पीरों और सन्तों के घर में पला। उसका बाप नाना की तरह स्वतन्त्र चिन्तक न हो इस्लाम का बड़ा पक्षपाती था। ससुर ने दाढ़ी मुँड़ा डाली थी, किन्तु दामाद ने उसे रखी थी। नाना मुहम्मद कुल्ली ने सुन्नी धर्म को छोड़ शिया-मत स्वीकार किया था। संभव है, बाप ने अन्तःपुर से हटकर मुस्लिम सन्तों के घर में इसीलिए अपने पुत्र को रखा हो, कि वह इस्लाम, विशेष कर सुन्नत जमात का अधिक पक्षपाती हो। किन्तु अब्दुल्ला ने अपने नाना को ही अपना आदर्श चुना और दाढ़ी के स्थान पर गलगुच्छा और मोंछ रखी। उसके चेहरे को देखने से कोई उसे मुसल्मान नहीं कह सकता था। अब्दुल्ला की तमाम आयु ऐशो-इश्रत सैरो-तफ़्रीह में गुजरी। हर बरसात के मौसम में वह तफ़्रीह के लिए दारुस्सल्तनत के बाहर जाता था। तख्तनशीनी के पहले साल बाग-लिंगमपल्ली की सैर हुई, वहाँ ऐशो-इश्रत के तमाम सामान मुहैया किये गये थे। दूसरे साल सालगिरह की रस्म बड़े शान से मनाई गई, जिसमें हजारों रुपये खर्च हुए। रक्सो-सरूद और आराइशो-जेबाइस का पूरा इंतिजाम हुआ। तमाम इमारत और बागान में रोशनी की गई। दो साल के बाद, सन् १६२७ ई० में कोहनूर की सैर हुई। यहाँ एक महीना बसर हुआ। अब अब्दुल्ला पन्द्रह वर्ष का था। सन् १६२८ में बरसात का मौसिम शुरू हुआ, तो फिर बाग की तफ़्रीह शुरू हुई और उसमें भी कई महीने सरफ हुए। १६३० ई० में

---

१. रहे, २. नर्क, ३. सुख, ४. चाहे (पंजाबी), ५. अप्सरा स्वभाव की, ६. पूर्णिमा का चन्द्रमा, ७. सती, ८. कहने में, ९. सेवा, १०. पराई, ११. कभी, १२. कामुकता, १३. छोकरा।

(१६ वर्ष की आयु में) एक और बहुत बड़ी रस्म (संस्कार) मूय-तराशी (मूँछ-दाढ़ी बनवाने) वगैरह की रचाई गई, जिसका इंतिजाम और खर्च हयात बख़्शी बेगम ने बर्दाश्त किया था। इसका इंतिजाम हयातबाद में हुआ। हैदराबाद से हयातबाद को जलूस गया और वहाँ कई महीने दरबार जलूस रक्स और सरुद की महफ़िलें हुईं।

लेकिन अब दक्खिन की रियासतों के दिन खतम हो चुके थे। शाहजहाँ ने दक्खिन को अपने अधीन करना चाहा था। वह स्वयं इसके लिए दक्खिन गया और जरा-से हीले-हवाले के बाद, १६३६ ई० में अब्दुल्ला कुतुब ने दिल्ली की अधीनता स्वीकार की। फिर ३२ साल का दीर्घ शासन मुगल-सामन्त के तौर पर बीता। उसके उत्तराधिकारी तथा दामाद कुतुबशाही वंश के आठवें एवं अन्तिम शासक अब्दुल हसन तानाशाह (१६७२-८७ ई०) के शासन के साथ राज्य-वंश का उच्छेद औरंगजेब द्वारा हुआ।

नाना की भाँति अब्दुल्ला के कोई पुत्र नहीं था। उसके केवल तीन पुत्रियाँ थीं, जिनमें से जेठी का ब्याह हजाज (अरब) के एक कुलीन तरुण तथा दरबारी के साथ हुआ था। दूसरी पुत्री का ब्याह औरंगजेब के बड़े बेटे मुहम्मद सुल्तान से हुआ था, जो शादी के बाद ही उत्तर चली गई। तीसरी बेटी बादशाह बीबी का ब्याह कुतुबवंशी तरुण अबुलहसन के साथ हुआ था, जो अब्दुल्ला का उत्तराधिकारी बनने में सफल हुआ।

अब्दुल्ला अपने नाना के भाँति फारसी और हिन्दी में कविता करता था, यद्यपि उतनी सफलता के साथ नहीं। वह कवियों और कलाकारों (संगीतज्ञों) का संरक्षक और प्रेमी था। वजही, गौवासी, कुतुबी, निशाती, तबई, सनअती जैसे महाकवि इसके दरबार के रत्न थे। दरबार में मुशायरे (कवि-सम्मेलन) तो रात-रात चलते थे।

अब्दुल्ला की कविता के नमूने--

अगयार[1] ना पासे[2] उसे आशिक सो अपने यारका।
जो जन्नत[3] होर दोजख[4] कूँ तुज तालिब[5] है दीदा[6] का।।

और

गुफ़्तम[7] कि ऐ परी तूँ है फ़ित्नये जमाना[8]।
गुफ़्ता[9] कि रास्ता गुफ़्ती[10] ऐ गुन भरे सजाना।।
गुफ़्तम कि दरजहाँ[11] या लैला ही आई है तूँ।
गुफ़्ता कि मन् जूँ मजनूँ[12] पाई हूँ तुज दिवाना।।
गुफ़्तम् कि खाली-जुल्फ़त[13] क्या है सो बोल मुंजकूँ।
गुफ़्ता कि जुल्फ राहत[14] होर खाल[15] सो है दाना।।
गुफ़्तम् की दर-दहान-त[16] अमरीत का है चश्मा।
गुफ़्ता कि खिज्र हो तू इस चश्मेपो रधाना[17]।।

१. पराया, २. पायेगा, ३. स्वर्ग, ४. नर्क, ५. इच्छुक, ६. दर्शन, ७. मैंने कहा, ८. दुनिया का फसाद, ९. बोली, १०. सच कहा, ११. दुनिया में, १२. मैं मजनूँ-जैसी, १३. अलक, १४. तेरा राह, १५. काला तिल, १६. तेरे मुख में, १७. दौड़ना।

कुफ़्वम् की कीस्त ई जा[1] तेरा परान प्यारा।
गुफ़्ता कि शाह अब्दुल-ला है तेरा पुराना ॥

इश्रतमहल (प्रासाद) के सम्बन्ध में—

बोल दिलकुशा[2] इश्रत-महल मत्बूअ[3] औ तारा[4] हुआ।
जोती जमीं की पठिसों ज्यों मुश्तरी भारा हुआ ॥
हर ताक[5] यां खुश तरह[6] का दिसता दरीचा फर्हं[7] का।
आजिज हो इसकी शरहका[8] है बान से न्यारा हुआ ॥
अँखिया सों चंदर-सूरके देख आस्माना[9] दूरके।
आशिक है इसके नूर के क्या खूब यो ठौरा हुआ ॥
देवें सफा दीवार सों लख नकश[10] ठारेठार सो।
खुश मान यां अत्तार[11] सो फिरदौस[12] का हारा हुआ ॥
नाजुक अचंभा बेबदल लिक्खे भर्‍या ऐसा-महल।
बांध्या न कोई आखिर अवल जमशीद या दारा हुआ ॥
ज्यों फूल ताजा वनमने[13] ज्यों पूतली पूजनमने[14]।
त्यों आज इस दखिनमने यो महल उतम सारा हुआ ॥
सदके नबी[15] के पा अमाँ[16] इस महल म्याने[17] हर जमाँ[18]।
जम[19] अब्दुला शाह तुर्कमाँ[20] भोगी[21] गमनहारा[22] हुआ ॥

§ १९ सनअती (१६४५ ई०)

इस कवि ने अपना परिचय नहीं दिया है। पर अपने संरक्षक सुल्तान इब्राहिम आदिल-पुत्र मुहम्मद आदिल की प्रशंसा की है। इससे जान पड़ता है कि वह आदिलशाही (बीजापुर) वंश के सातवें सुल्तान का कृपापात्र था, जिसने १६२७-५७ ई० तक शासन किया और शाहजहाँ के चरणों में नत हो १६३६ ई० में दिल्ली की आज्ञानुवर्त्तिता स्वीकार की। प्रसिद्ध इतिहास-लेखक मुहम्मद कासीम फरिश्ता इसके पिता इब्राहीम आदिल द्वितीय (१५८०-१६२७ ई०) का दरबारी था, लेकिन उसने सनअती के बारे में कुछ नहीं लिखा है। शायद अभी वह प्रसिद्धि नहीं पा सका था। हाँ, बीजापुर के इतिहास 'बिसातीनुस्सलातीन' में सबई उपनामधारी इब्राहीम का वर्णन किया गया है, जो अक्षरों में गलती से सनअती का सबई पढ़ लिया गया। यह कहकर लोग सबई और सनअती को एक सिद्ध करना चाहते हैं। सबई की कोई कृति अभी नहीं मिली है और सनअती की भी यही एक कृति 'किस्सा बेनजीर' उपलभ्य है। सनअती ने यह कथा-काव्य (मस्नवी)

---

१. कौन है यहाँ, २. दिल खोलनेवाली, ३. उचित, ४. शुकतारा, ५. कमरे, ६. अच्छे ढंग से, ७. आनन्द, ८. बखान, ९. आकाश, १०. चित्र, ११. गंधी, १२. स्वर्गोद्यान, १३. वन में, १४. मूर्तिपूजा में, १५. बलिहारी, १६. आप, १७. महल में, १८. हर समय, १९. सदा, २०. मुसलमान, २१. ऐश्वर्यशाली, २२. मौजी।

१६४५ ई० (१०५५ हि०) में लिखा, अर्थात वजही के प्रथम काव्य 'कुतुब मुस्तरी' से ३६ साल बाद और गौवासी के प्रथम ग्रंथ 'सैफुलमुलूक' से बीस साल बाद। वजहीका 'सबरस' इससे दस साल और गौवासी का 'तूतीनामा' पाँच साल पहले लिखा गया। हो सकता है, उक्त दोनों कवियों का यह तरुण समसामयिक था। 'किस्सा बेनज़ीर'* में प्रयुक्त भाषा के बारे में उसका कहना है—

इसे फारसी बोलना शौक था। बले[1] के अजीज़ाँ[2] कूँ यो ज़ौक[3] था ॥३६७॥
कि दखनी ज़बाँ सों इसे बोलना। जो सीपी तें मोतीनमन[4] रोलना ॥३६८॥
रख्या कम सहंस्कृत[5] के इसमें बोल। अदिक बोलने ते रख्या हूँ अमोल ॥३७०॥
जिसे फारसी का न कुछ ज्ञान है। सो दखनी जबाँ[6] उनकूँ आसान है॥
सो इसमें सहंस्कृत[7] का है मुराद[8]। ....॥
किया उसते दखिनीमें आसान कर। जो ज़ाहिर[9] दिसें इसमें कैकै[10] हुनर[11] ॥३७३॥

वह फारसी में अपना जौहर दिखलाना चाहता था; क्योंकि विदेशीपनप्रेमी दरबार में उसका ही बोलबाला था, किन्तु कवि ने अपना इरादा दोस्तों के कहने से छोड़ दिया। हो सकता है, इसमें पारसी-भाषाभाषी दरबारी कवियों के सामने असफल होना भी कारण रहा हो। सनअती ने दक्खिनी में से और सहंस्कृत (संस्कृत) शब्दों को चुन-चुन कर ही नहीं निकाला, बल्कि अनावश्यक फारसी-अरबी शब्दों की भरमार की, यह वजही, मुहम्मद कुतुब, गौवासी की भाषा से तुलना करने पर स्पष्ट हो जायेगा।

कवि ने काव्य (किस्सा बेनजीर) करने का प्रयोजन 'यश से' बतलाया है, किन्तु वह 'अर्थकृते' (धन के लिए) भी था। तभी वह शाहजहाँ की शरण में गया। सनअती मुहम्मद आदिलशाह की प्रशंसा में लिखता है—

मुबारक[12] ओ है झाड जिस छांवतल। खलक[13] आयें आसूदगी[14] के बदल ॥२६४॥
अवल[15] उनकूँ ल्या छांव में अन्करीब[16]। बजाँ[17] पाक मेव्या[18] सो बख्शे[19] नसीब[20]॥
वही जगमें है आबेहैवाँ[21] तमाम। कि जिसते सदा फ़ैज़[22] है खासो आम[23]॥
उसी सुब्हतावाँ[24] की है जगकूँ आस। कि जिसते अछै[25] गम कै निसकूँ[26] उदास॥
अछो[27] झाड सरसब्ज़[28] ऐसा मुदाम[29]। कि जिस जग में है फ़ैज़[30] उसते तमाम[31] ॥२७०॥
अछो क्यों न ओ झाड यों बारदार[32]। कि है जिससों आराम संसारकार॥
कि है जगपो ओ सायपे कर्दगार[33]। अचंबा है यो छाँव पर्वर्दगार[34]॥

---

*अब्दुलकादिर सर्वरी द्वारा संपादित, सिलसिला यूसुफिया, हैदराबाद, ११५५ हि०। उ० श०, पृ० ४४। तमीम अंसारी।

१. लेकिन, २. प्यारों, ३. इच्छा, ४. मोती-जैसा, ५. संस्कृत, ६. दक्खिनी, ७. हिन्दी (भाषा), ८. अभिप्राय, ९. प्रकट, १०. कई-कई, ११. विद्या १२. धन्य, १३. दुनिया, लोग, १४. आराम, १५. प्रथम, १६. पास, १७. इसके बाद (बाद-अज-आ), १८. फल, १९. प्रदान करे, २०. भाग्य, २१. अमृत, २२. कृपा, २३. बड़े-छोटे, २४. प्रकाशमान प्रातः, २५. रहे, २६. बिताके। २७. रहो, २८. हरा, २९. सदा, ३०. कृपा, ३१. सारा, ३२. फलवाला, ३३. छाया करनेवाला, ३४, पालक।

मुहम्मद शहे दादगार[1] दों पनाह। ....॥
बराहीम के बादज[2] हुआ नामदार[3]। जगतमें मुहम्मद शहे कामगार[4]॥२७४॥
किये सब शहाँ फ़ख्र[5] अपस बख्तसों[6]। करें बख्त नित फख्र तुज-तख्त सों॥
दखिन का तुँ है खुस्रवे ताजदार[7]। जते ताजदाराँ बेते बाजदार[8]॥
अहै हुक्मतल[9] तुज अरब होर अजम[10]। शहाँ तुज सुलजकन[11] सितारयाँ ते कम॥२७८॥
जेते खुस्रवाँ[12] बंदगी[13] तुज करें। ....॥२८६॥
दिला के नगरमें शही[14] तुज सोहाइ। पेरेम के नगर में भरी तुज दोहाइ॥२९०॥
मदन का चमन जबते पाया जमाल[15]। न देख्या है तुज सारखा नौनिहाल॥
करे जम[16] तुज उपलार ऐ जगपती। गुहर[17] का तबक[18] ले चँदय आरती॥२९३॥
सखुन परवराँ[19] का तुँ परखे सखुन[20]। रतनपारखो ज्यों परखता रतन॥३०७॥
तेरा प्यार है यों हुनरमंद[21] पर। पिदर का नहीं प्यार फ़र्जन्द[22] पर॥३१२॥
अखिर[23] जग है तब लग तूं ऐ जगपती। चंदरभान अछै दरपो[24] तुज दरपती[25]॥३१४॥

कीर्त्ति के लिए काव्य पर लिखता है—

........................। कहे दिल ने मुज खोल॥३२५॥
कि मुदाम[26] जीने की तेरी बरात[27]। नहीं लिख दिये आजलग किसके हाथ॥३२८॥
वलेकिन[28] है उसके एवज़[29] काम एक। सो दुनिया में बाकी रहत नाम नेक॥
नहीं जग में जीना किसे[30] पायदार[31]। मगर यो कि जिसते रहे यादगार॥३३०॥
रहना नाँव बाकी[32] बड़ा काम हो। ....॥
सदा जिंदगानी[33] उसे है शरफ[34]। जो दुनिया में उसते रहे यक खलक़[35]॥३३२॥
जो बोले हैं यों आरिफ़ाने सलक[36]। कि है शेर[37] बेहतरसों बेहतर खलक॥३३४॥
अगर तुजते कुछ ना रहे यादगार। तो जीना न जीना तेरा एकसार॥३३५॥

काव्य कैसा हो—

कहा तब[38] असों दिल ने यों बात जब। हुआ मुज तबीयत कुँ एक जोश तब॥३३९॥
किया वाँते[39] मैं फिक्र इस बात में। कहूँ कौन किस्सा सो किस धात में[40]॥३४०॥
छोड़ू किस किस्से के तराने कुँ मैं। तैरूँ किस हिकमत[41] के दरिया[42] कूँ मैं॥
जो किह मनमोहन कि हिकायत कहूँ। सो किस गुलबदन[43] की रवायत[44] कहूँ॥३४२॥

---

१. न्यायी, २. पश्चात्, ३. कीर्त्तिशाली, ४. इच्छापूर्वक, ५. गर्व, ६. अपने भाग्य से, ७. मुकुटधारी, ८. करद, ९. आज्ञा के नीचे, १०. ईरान, ११. सूर्य के पास १२. राजा, १३. सेवा, १४. बादशाही, १५. सुन्दरता, १६. सदा, १७. मोती, १८. थाल, १९. वाणीपुत्र, २०. वाणी, काव्य, २१. गुणी, २२. पुत्र, संतान, २३. अन्त, २४. द्वार पर, २५. द्वारपाल, २६. सदा, २७. छुट्टी, २८. लेकिन, २९. बदले, ३०. किसीका, ३१. स्थायी, ३२. शेष रहता, ३३. जीवन, ३४. बड़ा, ३५. उत्तराधिकारी संतान, ३६. पुराने ज्ञानी, ३७. पद्य, काव्य, ३८. तबियत, ३९. वहाँ से, ४०. भाँति में, ४१. कथा, ४२. सागर, ४३. पुष्पतनु, ४४. कथानक

सो किस बिरह की आजग सुलगा शिताब[1] । करूँ मैं फिराकी[2] दिलाकूँ कबाब ॥
सो किस वस्ल कि मैं खिलाऊँ गुलाँ[3] । ....॥३४५
सो इतने में मुलहिम[4] ने ने मुज दिल भितर । कहा...................॥३५३
कि प्यारे नबी[5] की खायत है यों । ....॥
यो किसा अजब[6] पाक है दिलपजीर[7] । जो पाकाँ[8] कहे हैं जिसे बेनजीर[9] ॥

इस प्रकार सनअती दूसरे फ़जूल के पुरुषों को छोडकर हजरत मुहम्मद के समकाली तथा अनुयायी तमीम अन्सारी को अपने काव्य का नायक बनाया।

१. कथा-संक्षेप

'किस्सा बेनजीर' के शब्दों में कथा-संक्षेप करने की आवश्यकता नहीं है; क्योंकि व आकर्षक नहीं है। सारा किस्सा—यदि देव-परियों तथा पीरों-फरिश्तों की रूखी बातें छो दें—तो यही है, कि मदीने में एक पुरुष तमीम अन्सारी था। एक दिन जाड़े में उसने अपन बीबी को पानी गरम करने के लिए कहा। बेचारी ने झुंझलाकर कहा—पानी गरम करती हूं थोड़ा ठहरो, तुम्हें देव (भूत) नहीं उठा ले जा रहा है। सचमुच ही बेचारे तमीम को देव उठ ले गया। चार वर्ष तक पता न लगा। औरत ने खलीफा उमर से कहा कि मेरा कोई अवलम्ब नहीं, मुझे दूसरे के साथ ब्याह करने की अनुमति दें। उमर ने खर्च देकर पहिले तीन साल, फि चार महीने और रुकवाया। अन्त में ब्याह एक तरुण से करवा दिया। सोहागरात की जग दोनों ने उस रात को व्रत-प्रार्थना में बिताना चाहा और उसी रात देवों-परियों के देश से घूमता भागता सात वर्ष चार महीने बाद तमीम आ धमका। झगड़ा होना ही ठहरा। अन्त में मामल फिर खलीफा के पास पहुँचा। तमीम का किस्सा सुनकर जोरू उसे लौटा दी गई। सारी कथ १६१५ शेरों में है।

सनअती के कविकर्म के उदाहरण के तौर पर यहाँ कुछ पद्य उद्धृत किये जाते हैं। भाष अरबी-फारसीके शब्दों से बेहद लदी है —

२. रचयिता की रंगीन प्रकृति

पलकमें केती नक्शबंदी[10] करे । हरेक नक्श[11] सारे अदम[12] में धरे ॥६३।
रँगादे[13] जो सब रंग बना ल्याय हैं । तेरे रंगते रंग सब पाये हैं ॥६८।
तुज तुजे बेरंगी का जो एक रंग है । जो उस रंगकू ऐस रंगते रंग है ॥
न तुझ सारखा रंग कोई रंग सके । जो रंगरेज उस रंगकू ना पा सके ॥६८।
हरेक रंग में है रँग उस शहा का । अजब रंग है सिनअतुल्लाह[14] का ॥७१।

---

१. जल्दी, २. वियोगी, ३. फूल, ४. अन्दर अन्तर्यामीवाले, ५. पैगम्बर मुहम्मद ६. अद्‌भुत, ७. चित्तप्रसादक, ८. पुण्यात्मा, ९. अनुपम, १०. चित्रण, ११. चित्र १२. अभाव, १३. रंग, १४. अल्ला की कारीगरी ।

३. वाणी की महिमा

सखुन[१] बादशाहे जहांगीर[२] है। ....॥
सखुन अतिमिठाई में हलवा अहै। ....॥
इज़ाना है हक़[३] का सखुनका बयाँ। कि है जिस खज़ानेकूँ कीली[४] जबाँ[५] ॥२१८॥
सखुन[६] एक का सदा सब्ज[७] गुल्ज़ार[८] है। सखुन का सदा गर्म बाज़ार है॥
जो कुछ है शहादत[९] में होर गैब[१०] में। सखुन के समाता है आ जेब में ॥२२०॥
रखनहार सरसब्ज दिलका चमन। सखुन है सखुन है सखुन है॥२२४॥
न हर कोइ[११] सखुन का सज़ावार[१२] है। न हर कतरा[१३] लूलूय[१४] शहवार[१५] है॥२२७॥
सखुनमें का भी को काडे रतन। सखुनदाँ[१६] समझते हैं कद्रे-सखुन॥२३६॥

४. जिन्नों का बीभत्स रूप

सखुन का सदा सूरपर नूर[१७] है। ....॥
अँख्याँ खोलकर देखता हूँ तो वाँ। न था आदमीज़ाद[१८] का वाँ निशाँ[१९] ॥५०५॥
मगर देव होर जिन वा शैतान थे। ....॥
........................। कलेजा तो उसका दिसे पेटबार॥५०७॥
मी देख्या कतेक खल्क[२०] कै धात[२१] के। सौ कै शक्ल के भाँत के जात के॥५०९॥
केत्याँ की अँखाँ सरपो मूँ पेटसम। केत्याके नंगे हाथ उलटे कदम[२२] ॥५१०॥
केतेक रंग होर रूपमें भीलसे। केत्याके बडे कान जों फ़ील[२३] के॥
केतक शक्ल में खूक[२४] से नाबकार[२५]। केत्याँकी बडी जीभ सीने तलार॥
केत्याँक्याँ अथ्याँ[२६] सूरता मार क्याँ[२७]। केत्याँ क्याँ दुमाँ[२८] कज्दुमाँ[२९] सारक्याँ॥
केतक सूरताँ[३०] का करूँ क्या विचार। सिराँ दो अँख्याँ तीन हो हात चार॥
केतक फ़ील[३१] सी शक्लो सूरत धरें। कतेक ऊंटसी काट गर्दन फिरें॥
कतेक शक्ल में गाव[३२] सिरमें तुरंग। कतेक रूपमें रीछ तनमें पलंग[३३] ॥५१६॥
केताके सिराँ हरिनसार[३४] पो साख। ....॥५१९॥

५. युद्ध-वर्णन

अथा लश्कर उस देव का भाँत-भाँत। कुदाल्या सी नक होर तँशाँ[३५] से दाँत ॥५८१॥
सो करवे[३६] कुँ देवा उपर मारमार। चल्या दल पर्‍याँ का हज़ाराँ हज़ार ॥५९०॥

---

१. वाणी, कविता, २. चक्रवर्त्ती, ३. सत्य, ४. कुंजी, ५. वाणी, ६. वाणी, ७. हरा, ८. फुलवाड़ी, ९. प्रकट, १०. परोक्ष, ११. सभी, १२. पात्र, १३. बूंद, १४. मोती, १५. राजोपयोगी, महार्घ, १६. काव्य, १७. सूर्य के ऊपर प्रकाश, १८. मानव, १९. पता, २०. लोग, २१. कई प्रकार, २२. पैर उलटे, २३. हाथी, २४. सूअर, २५. बदमाश, २६. थीं, २७. मारने वाली, २८. पूंछ, २९. बिच्छू, ३०. रूप, ३१. हाथी, ३२. गाय-बैल, ३३. शेर, ३४. हरिन-सरीखा, ३५. सींग, ३६. बसूले।

परया के तरँग जब हवाते उठे । कहे तूँ गगनते शहावाँ[1] छुटे ।।५९२।।
चल्याँ स तरफते भी परियाँ खन[2] । कतेक भार[3] तेवाँ का बादल नमन[4] ।।५९३।।
बजे जब धमाधम तुरंगान तल । सुरग लोग देखे जो यो क्या है गुल[5] ।।
सो देवा पर्‍याँ मिल जमीं पर दो रँग । .... ।।
होया रूबरू[6] जब शफाँ बेशुमार । हत्यारा सँभाले सो मारे हहंकार ।।
उचाये[7] तुरंगाकुँ ओ बेफ़सूस । गगन हो रह्या गर्दसों आबनूस[8] ।।
गुसेसों पडे यक यक सरबसर[9] । परे देव परदेव पर्‍याँ उपर ।।
जो सीनेते कीना अपस सारने । लगे यक पो यक बेजिगर[10] मारने ।।
चलाये जो तीरां अपस मानपर[11] । पहाडांकुँ फोडे तुये जानकर ।।६००।।
हुये कुछ हवा पर येते तीर डाट[12] । जो पडने कु रुई धूप पर तंग बाट ।।
दिसें ल्होंसों यों लाल[13] तीरां के भाल । कि तंबूल[14] खाये हैं जों जीभ लाल ।।
अपसमें अपे सख्त रज सों लडे । .... ।।
हमाहमसों ओ यक धमाधम हुआ । हवापर धुलारे[15] का यक खम[16] हुआ ।।
ओ घमसान था एस वजा[17] सरबसर । कि भिमसेन सा वाँ पड्या बेखबर ।।
नजर ताब ना ल्या ओ भार[18] देख । अजल[19] वेवजल[20] हुई ओ मार देख ।।
दसासुर[21] से इक देव उसमें पडे । कधों राम-लछमन भी यों नैं लडे ।।
कतेक वक्त ऐसा कडाकड हुआ । जों सीना मंगलका धडाधड हुआ ।।
ओ देवां अगर्चे जबर्दस्त थे । वलेकिन[22] पर्‍याकेअगे पस्त थे ।।
इधरते उधर होर उधरते इधर । पर्‍या जायँ दो सफ़[23] चीरकर ।।
पर्‍या योंचला देवमें हर रुखन[24] । कि टुक अब्र[25] में जल्द बिजल्या नमन ।।६१३।।
धसी सब पर्‍यां पीर देवाँमें यों । सितारे रयनके अँधेरेमें ज्यों ।।
सो कइ देव हरयक परी बेदरंग[26] । करें कत्ल यक शमा जों कइ पतंग ।।
यकायक पके पानसे सब झडे । जेते सरकशाँ[27] सर-कुशाँ[28] हो पडे ।।
पडे यकपो-यक रनमें कै ठाट-ठाट । तूँ बोले मुटे ताडके झाड काट ।।
अथ्याँ[29] सब पर्‍याँ जो अगिन-सूर-ताप । कियों राख उस कौलसियाँ[30] कू शिताब[31] ।।
लहूसों उननके हुआ बेदरंग[32] । जेता दश्त[33] मखमल नमन[34] सुर्ख रंग ।।६२०।।
हुआ जब अधिक लहुके दरियाकुँ जोश[35] । मुये सो चले जों अछयाँ ज़िरापोश[36] ।।६२३।।

---

१. तारे, २. अप्सरा-जैसे मुखवाली, ३. बाहर, ४. बादल-जैसा, ५. शोर, ६. आमने-सामने, ७. उठाये, ८. आबनूस की लकड़ी-जैसा, ९. बिलकुल, १०. हृदयहीन, ११. जोर से, १२. घने, १३. मोती, १४. पान, १५. धूल, १६. खम्भा, १७. इस प्रकार, १८. बाहर, १९. मृत्यु, २०. शोर, २१. रावण, २२. किन्तु, २३. पंक्ति, २४. हर तरफ, २५. बादल, २६. निर्भय, २७. अभिमानी, २८. सिर तोड़नेवाला, २९. थीं, ३०. कोयले सी, ३१. जल्दी, ३२. निर्भय, ३३. जंगला, ३४. मखमल-जैसा, ३५. उबाल, ३६. कवचधारी।

लग्या जब पर्‌या इस वज़ा[1] मारने । तो आजिज़[2] हो देवा के सरदार भे ।।६२४।।
चल्या न्हाट[3] परियाके मूँते निकल । ....।।६२५।।
हुआ फतेह[4] परिया देवा पो यों । रयन पर अछे[5] सुब्हकूँ फतेह ज्यों ।।६२७।।

६. परियों का सौन्दर्य

हरयक नूर[6] में हूर[7] पर तानाज़न[8] । हरेक चांदते साफ निर्मल बदन ।।६८२।।
दिसे शोलेमें नूरस्याँ[9] ओ पर्‌याँ । ....।।
ओ नार्‌याँ अगर नूर में नार थ्याँ[10] । वलेकिन[11] बराहिम का गुल्जार[12] थ्या ।।
अधर पौ दौर[13] हरेक बरग-गुल[14] धरे । वले काँ[15] है गुल-वर्ग[16] शक्करभरे ।।
दसन मस्त उनके हरे जायेपात[17] । वले काँ है हर्‌याँ[18] में यों आबताब[19] ।।
दिसे जुल्फ[20] उनकी हरेक गालपर । तूँ बोले कि संबूल है गुल्लाल[21] पर ।।
देखत चख चंचल शोख[22] उनके चरण । भुली ऐसी सब चंचला ईके फ़न[23] ।।
दिसें यों जवानीमों जोबन नवल । उमंग आये जो जलते कँवले कँवल ।।
कमर उनकी शेरज़े[24] ने देख्या मगर । जो शर्मो रिलया हात अपस मूँडपर ।।६९०।।
अथ्‌या[25] नूरमें सोसियाँ[26] ओ पर्‌या । सकल सीतते नखलो सीसते नखलो छंदो भरयाँ ।।
जे ल्याँ बोलल्याँ थ्‌याँ मिठ्या बोलियाँ । मिठ्‌याँ बोल्‌याँ होर शकर-घोलियाँ ।।६९२।।

७. वनशोभा

अथाँ[27] वाँ अजब सब्ज यक मुर्गज़ार[28] । दरख्ताँ थे कै भाँतके बारदार ।।७८६।।
दिसे सब्ज रंग आसमासा जमीन । सितारयाँसे उसमें गुले यास्मीन[29] ।।
हरेक कालबाँ जो कि जल सीम का । ....।।
दिसें जल्‌यों बारेत इस धात मौज । कि चंचल की जों चखमें ग्रमूज्या की फ़ौज ।।
दिसे पेच सुँबुल के लाले में यों । अरूसां के रुखासार पर जुल्फ जों ।।७९०।।
हरेक पात पर बूँद बरसात के । हरेक शाख पर मुर्ग कै भाँतके ।।
वचन आयें हर मुर्ग के सीनेत साफ । सफ़ाई में फकनूस पर उनके लाफ़ ।।७९३।।

८. उद्यानशोभा

(१)

.... । दिस्या बाग सेहरा[30] में यक सब्जतार ।।१४२।।
हरेक झाड तो सब्ज जों नौबहार[31] । हरेक शाख तूबानमन[32] बारदार[33] ।।

---

१. इस प्रकार, २. हार मान, ३. भाग, ४. बिजय, ५. रहे, ६. प्रकाश, ७. अप्सरा, ८. व्यंग्य करनेवाला, ९. ज्वाला में प्रकाश-सी, १०. थीं, ११. लेकिन, १२. फुलवाड़ी, १३. चक्कर, १४. पत्र-पुष्प, १५. कहाँ, १६. पुष्प-पत्र, १७. उगे पत्र, १८. हरों, १९. चमक, २०. अलक, २१. लाल के फूल, २२. तीक्ष्ण, २३. कला, २४. शेर-बच्चा, २५. थीं, २६. सराबोर, २७. था, २८. चरागाह, २९. चमेली, ३०. मरुभूमि, ३१. नववसंत, ३२. कल्पतरु-जैसा, ३३. फलदार।

दरख़्तों जो पातासों बान्धे नकाब[१] । न देखी जमीं ओ कधी आफ़ताब[२] ।।
सुरगवन जो थी धूपकूँ बाट तंग । अथा अर्शते[३] फर्श लग सब्ज रंग ।।
सो लालेके याकूत[४] जैसे चमन । सौ नीलम-नमन[५] सब यो नकशेके[६] वचन ।।
दिसे नर्गिस उस यों चमन खूब[७] के । जो झलके[८] नयन खूब महबूब[९] के ।।
लटक सुंबुल यों थे गुले लाल पर । कि जों जुल्फ़ महबूब के गालपर ।।
पियाले सो लालेके भरते मदन । .... ।।१४२८
चमन में रहे खिल को सारे गुलां[१०] । खुशावाज[११] यथ उस पर बुलबुला ।।१४३०।
पुकारे किते फाखते सरसरी[१२] । .... ।।
अथे खुशनुमा[१३] उसमें शमशाद वो सर्व । .... ।।
अनारां थे जो बेवदल कूत[१४] के । सो हुक्का[१५] अथे लाल याकूत के ।।
पक्याँ खुमरका[१६] यों दिसें तावदार[१७] । सो कचकने जों हेकलां तावदार ।।
घरे खोश[१८] अंगूरके सब्ज बेल[१९] । गगन सब्ज में जो सुरैया[२०] की छैल ।।
सो मेवे थे इस भांति (के) हर रुखन[२१] । ना काना सुने कोई न देखे नयन ।।
दरख्ता हज़ारों जिनस[२२] के थे बार[२३] । सो मेवे[२४] थे यो शाखपर कई हज़ार ।।
सकल कालुवे[२५] जो खाँ थे सो वाँ । सो परे लगे जों कि उम्रवां ।।
दिसे सब्ज सब्जी[२६] में साफ़[२७] जल । रुपेके ज़मुर्रद[२८] के तख्ते पो जल ।।
दिसे झाड चश्मापों यों सरबसर[२९] । कि जो खिज्र[३०] अमृतके चश्मे उपर ।।१४४०
अजब खुशनुमा[३१] सब्ज ओ बाग था । अरम[३२] दिलमें जिस बागका दाग था ।।१४४१

(२)

यकायक दिख्या एक सेहरा[३३] उपर । यो एक बाग फिरदौस[३४] सम जल्वागर[३५] ।।१४५८
अगर होर चंदन हवो संदल के झाड । .... ।।
नज़र जाँ तलक जाय वाँ जिस रुखत । जमीं सय दिसे सब्जजूती नमन[३६] ।।१४६०
दिसे उस लहलते सब्जे उपर । हरे पाँच[३७] के ये जों यो रूयेगुहर[३८] ।।१४६१
अथे बूँद शबनम[३९] लाले पो यों । झलकते सितारे शिफक[४०] में ते जो ।।
थके सब्जसब्जे में उस देख हिरण । मदन के जमन में जों आहूनमन[४१] ।।

---

१. घूँघट, २. सूर्य, ३. स्वर्ग से, ४. लाल, ५. नीलम-जैसा, ६. चित्र के, ७. सौंद
८. चमके, ९. प्रियतमा १०. फूल, ११. मधुरभाषी, १२. मामूली, १३. सुदर्शन, १४. अमृ
१५. डिबिया, १६. किमरिख, १७. चमकदार, १८. गुच्छे, १९. हरी लता, २०. सप्तर्षि
२१. वृक्ष, २२. जाति २३. फल-बाहर, २४. फल, २५. नहरें, २६. हरे, २७. हरियाल
२८. पन्ना, २९. बिलकुल, ३०. अमृतरक्षक देवता, ३१. सुदर्शन, ३२. स्वर्गोद्यान, ३३. जंगल
३४. स्वर्गोद्यान, ३५. प्रकाशमान, ३६. हरे तोते-जैसी, ३७. पन्ना, ३८. मोती के मु
३९. ओस, ४०. आकाश की लालिमा, ४१. हरिण-जैसा।

गुलाँसों ज़मीं सब्ज[1] सब बेगुमाँ। दिसे जों सितारयाँ सों सब्ज आसमाँ।।
अथे लाल हर यक गुल शाखपर। छके[2] नैन नर्गिस के पीपी शराक।।
मये नाब[3] शबनम[4] अथी जों गुलाब। सुराही मये लाल[5] की सरबसर।।
डुले बावसों गुलके कै शाखभार। मदन पी को जों नाज़नी[6] गुलअज़ार[7]।।
दिसे सुर्ख गुल सब्ज डालीमने[8]। रुखे खूब[9] जों सब्ज़वाली मने[10]।।
अथे सुर्ख गुलनार के पात सब। कि जों पान खाये सो खूबाँके लब[11]।।१४७०।।
कँवल पर दिसें पर पसारे भँवर। कि जोस्याम अबरू[12]का मलन नैन पर।।१४७२।
अथे खुशनुमा[13] गुल हर एक डाल के। जमीराँ होर सुँबुल होर गुललाल के।।१४७६।
गुलाबी गुलाँके खिले कै चमन। फुले यास[14] में हो खिले यास्मन[15]।।
बनाँ क्योडयाँ के जो थे आसपास। किये थे अपस धामना[16]का लिबास।।
दिसें झाड चंपा के यों पसों। कि जो लाजवर्दी[17] तिला धूपसों।।
खुले मुख पो अरगंदसों[18] सेवतीं। फुले जाइ जूई सो मिल रेवती।।१४८०।।
खुले कै वज़ा[19] के गुलां चावसा। झडे कै वज़ा के पते वावसों।।
रंगारंग फूलाँ के झडझड पते। जमीं रही जमीं रही सुरंग दामिनी[20] मुद्दते[21]।।
गुलाँपर सों चू-चूके शबनम[22] की नम। ....।।१४८३।।
येते हर तरफ़ झाडके वारदार[23]। जो ना कर सके कोइ उनका शुमार[24]।।
येते डाट झाडा सों झाडा[25] डुले। जो बिछुडे सों जों मिलके लगते गले।।
सौ के झाड मेवेके थे मायादार[26]। जेते मायादाराँ वेते सायादार[27]।।
सआदात[28] मेवे अधिक वार थे। सो अमृत के चश्मे हरेक ठार थे।।१४८९।।
दिसें कालवे सब्ज-सब्जमें यों। पट्यामें अरूसां कै है मांग ज्यों।।१४९४।।
फिरैं जल जो कर मौज सों गलगला। चलावे हरेक इश्क का सिलसिला।।१४९६।।
मछ्या रक्स करतै थयां जों मिल सकल। कते जन वजावे जो ताल हो मंदल।।१४९८
घरे हर मझछी वाँ कि ऐसा हुनर। कुलाटी करैं क्या कुलाट उस उपर।।
देखत खुश-अदा इस मछा का सकल। गगनकी मछी हो गई है पिघल।।१५००।।
तिरे जलमें खुशहाल गर्दन फ़राज़। बगूले वतक ओ लिया होर काज।।
अथे कै परिंदा जो वां सरबसर। कि जो हल्ला-पोशाँ हैं कौसर उपर।।
क हे तो दरख्तांकु इस जल संगात। कि ओ खिज्र होर यो है आबेहयात।।
अजब खुश लगे झाड चश्मे उपर। सो आवाज मुर्गा का शाखाँ उपर।।
जेते मुर्ग रंगासों खुशरंग थे। अदामें गले सबके जो चंग थे।।

---

१. हरा, २. अत्यधिक, ३. अंगूरी शराब, ४. ओस, ५. लाल शरबत, ६. सुंदरी, ७. गुलाबी गालों की, ८. डाली में, ९. सुंदरमुख, १०. हरियाली में, ११. सुंदरियों के अधर, १२. भौं, १३. सुदर्शन, १४. निराशा में, १५. चमेली, १६. धामिन साँप, १७. पुष्पराग, १८. सुवर्ण, १९. कई प्रकार, २०. बिजली, २१. चिरकाल, २२. ओस, २३. फलदार, २४. गिनती, २५. घने, २६. धनी, २७. छायावाले, २८. अच्छे-अच्छे।

हूरे लाल मुर्गी सों सब शाखसार । दिसे सब्ज होर सुर्ख जों नौ बहार ।।१५०६।।
सो मैना टिटोरी व कुव्के दरी । भी नूरीसों मिल फाखते सर्सरी ।।१५०९।।
करे गुल पो बुल्बुल सना बेसुमार । अज़ारा पढें दास्ताँ के हज़ार ।।१४१०।।
सो मोरा लगी नाचने देख मोर । पपीहा करें पीव-पीव उस समोर ।।
खुशावाज़ कुमर्‌या कियाँ आशकार । रहूया कूक त्याँ कोइलाँ ठार ठार ।।
खुश्याँ कर अपस दिलमें हर यारका । हंसी हंस हंसा देख गुलजार का ।।

९. निशा-आगमन

जो ऐसेमें अफ़ताब जरीं-बरन । किया मुर्ग के आशियामें वतन ।। ८०६ ।।
गया रोज का बाज़ जब छोड बाग । किया तब वतन रातका आ को जाग ।।
चल्या जगते खुर्शीद साहेबजमाल । हुआ खम पो रोशन चंदरका हलाल ।।
फुली जब रयन सब जो नक्शे नमन । खुले तब गगनके चमकने समन ।।
गगन पर निकल यों सितारे फिरे । हरे बाग में जों चिरागां धरे ।। ८१० ।।
कि आखिर को अँपड्या[1] वहाँ रोज सब । उतार्‌या गगन पर्दये शाम[2] जब ।। १०२ ।।
पडी जिस वकत शाहतुर्कों[3] की घाल[4] । ....।।१०२२।।
जो सूरज का कंचन हुआ बेनिशान । दिस्या तब शिफक[5]लाल रूम्या के खान।।१०२४।।
कंचन शमा[6] जब गइ ठंडी हो निकल । रुपेरी[7] शमादान[8] सुलगे सकल ।।
छुपा ग़र्ब[9] में जों गुहर-आफ़ताब[10] । भरी दर्ज म्याने[11] ओ दुर्रे खुशाब[12] ।।
जवाहर का दर जग[13] हुआ जब गगन । रयन नार गौहार का पेनी[14] भरन[15] ।।
सियाही भरी आयगे चार जाम[16] । जज़मीं अंबरी[17] आसमाँ मुश्कफाम[18] ।।

१०. जहाज तूफान में

कहे देख कश्ती[19] कुँ तूँ सरबसर[20] । कि यक शह चलता है पानी उपर ।। ९७९ ।।
अगर बेग जाने का हम[21] आपडे । वहम सात कश्ती ओ कश्ती करे ।। ९०८ ।।
सुटी ओ मुजेल्याका करके उपर । निकल पलमें गई यों सियाँ सर्बवसर ।।
फिरे जहाज़ ओजो ज़ने[22] बारदार[23] । सो एक पेट में उस तिफिल[24] के हज़ार ।।
करे पाँव यों पेटमें लेको घाँब । कि जों पेट में सांपिनी लेकों पाँव।। ९८३ ।।
सुरज के दिसें ताबसों[25] मौज तों । रुपेरी टिकट[26] साफ चंदनी में जों ।। ९८६ ।।
रयन में ज़मीं यीं दिसै ताबदार[27] । दिसै जल पो दीपक हज़ारा हज़ार ।। ९८७ ।।
सों लहरों खुशीकी आदिक फ़ौज-फ़ौज । चली दिलपो मुज जों के दरियाकी मौज।।९८९ ।।

---

१. पहुँचा, २. पर्दे में, ३. तुर्कों का बादशाह, ४. चोट, ५. उषा, ६. दीप, ७. रुपहली, ८. दीपधानी, ९. पश्चिम, १०. सूर्य-मोती, ११. में, १२. सुजल, १३. जैसा, १४. पहिना, १५. आभरण, १६. प्याला, १७. पीली, १८. कस्तूरी रंग की, १९. नाव, २०. बिलकुल, २१. भी, २२. मारता, २३. भारवाला, २४. बच्चा, २५. जोर से, २६. गोल, २७. चमकीली।

यकायक एक रोज दरिया भितर। दिस्या एक डूँगर अजब सख्ततर।।९९२।।
सकल कूहकूँ[1] देख रोने लगे। उमेदाँ अपस दिल सों धोने लगे।।९९४।।
दिलाकूँ लगी आग उस कलमने[2]। चल्या दिल हरेक का उस पलमने।।९४६।।
हरेक दिलपो बेशक हुआ यो अयाँ[3]। कि कश्ती फुटेगी एता[4] जा को वाँ।।९९७।।
हुआ बादे शर्फ़ा[5] समुँदर कूँ जोश। यो देखत गया अहलेकश्ती[6] सों होश।।
टुटे बंध कश्तीके लग और खाम[7]। तफ़र्का[8] हुये अहलेकश्ती तमाम।।

§ २०. खुशनूद (१६४६ ई०)

१. कवि

मलिक खुशनूद ने अपने कथा-काव्य (मस्नवी) 'हश्त बहिश्त' को गोस्वामी तुलसी-दास की मृत्यु से २३ वर्ष बाद लिखा था। इससे पहले यूसुफ जुलेखा लिख चुका था, जो कि अब अप्राप्य है। खुशनूद पहिले गोलकुण्डा में शाही गुलाम के तौर पर रहा और बढ़ा। किन्तु इन गुलाम छोकरों के बारे में यह खयाल करना गलत होगा, कि वह साधारण गुलाम थे। मध्य-एसिया में दसवीं सदी से पहिले भी इस अनोखी गुलामी प्रथा को देखते हैं, जिसमें होनहार बच्चों को लेकर दरबार में उनकी शिक्षा-दीक्षा इस प्रकार दी जाती थी, कि आगे चलकर वह सैनिक-असैनिक बड़े-बड़े दर्जों को सँभाल सकें। किसी शाही वंश से संबद्ध न होनेके कारण इनसे शाह को कम खतरा रहता था। दिल्ली का प्रथम राजवंश इसी प्रकार के गुलाम का था। मलिक खुशनूद उस वक्त जवान था, जब कवि सुल्तान मुहम्मद कुतुब (१६१२-२६ ई०) की लड़की खदीजा सुल्तान मुहम्मद आदिलशाह (१६२६-५६) के साथ ब्याह होने पर इसे भी दहेज में दिया गया। खदीजा सुल्तान स्वयं भी साहित्य से प्रेम रखती थी। खुशनूद अपनी योग्यता के कारण दरबार का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गया, और १६३५ ई० (१०४५ हि०) में इसे राजदूत बनाकर मुहम्मद आदिल ने अपने महा मंत्री खवासखाँ की स्वैरिता से मुक्त होने के लिए सहायता माँगने को गोलकुण्डा भेजा। गोलकुण्डा में इसका अभूतपूर्व स्वागत हुआ और एक बेदीन हिन्दू सामन्त के महल में ठहराया गया। अब्दुल्ला कुतुब ने इस कवि-राजदूत को हर मुलाकात में बहुमूल्य भेंट-इनाम दिये। खुशनूद ने कुतुबशाह की प्रशंसा में कसीदे (कविताएँ) पढ़े होंगे, इसे कहने की आवश्यकता नहीं। खुशनूद अपने उद्देश्य में सफल हुआ। जब वह बीजापुर लौटने लगा, तब गोलकुण्डा का दरबारी कवि उसके साथ भेजा गया।

२. हश्त बहिश्त

हश्त-बहिश्त (अष्ट सर्ग) को मूलतः अमीर खुसरो (१२५४-१३२५ ई०) ने फारसी में लिखा था, जिसका हिन्दी-अनुवाद खुशनूद ने सुल्तान मुहम्मद आदिल की

१. पहाड़, २. समयमें, ३. प्रकट, ४. अब, ५. आँधी, ६. नौकारोही, ७. कच्चा, ८. भेद।

प्रेरणा से किया। उपलब्ध पुस्तक में १०००शेर (अर्धालियाँ) पाये जाते हैं, यद्यपि उनके ३२२५ होने का उल्लेख मिलता है। खुशनूद फारसी का भी जबर्दस्त शायर था। ईरान के सासानी वंश (२२८-६४२ ई०) में बहराम गौर (४२१-३८ ई०) और खुसरो नौशेरवाँ (५३१-७९ ई०) कृष्ण कन्हैया बने, जो अनेक प्रेमकथाओं के नायक हैं। हश्त-बहिश्त का नायक बहराम गौर है, जिसकी और हुस्नबानू की प्रेमगाथा को अमीन ने पद्यबद्ध किया, इसे हम बतला आये हैं।

(१) मंगलाचरण—

मंगलाचरण में खुदा और रसूल की स्तुति करते कवि कहता है*—

सराऊँ[1] तुझ जो तूँहै पाक माबूद[2] । हुआ समब खल्को-आलम[3] तुझसों मौजूद[4] ॥
सँवार्‌या घनउपर तूँ चाँद-तारे । किया पैदा अरस-कुर्सी-चमारे[5] ॥
ज़मीं पैदा किया होर कोह अलवंद[6] । फ़लक[7] सब छंद[8] सों कीता[9] तूँ पैवंद[10] ॥
मुहम्मद मुस्तफा महबूब रबका[11] । कहे सारे नबी[12] तूँ ताज[13] सबका ॥
मुहम्मद सब नबयोंके सीसका ताज । .... ॥

(२) संरक्षक सुल्तान—

अपने संरक्षक सुल्तान मुहम्मद आदिलशाह के बारे में लिखता है†—

तु सुल्ताँ (है) मुहम्मद शाह गाजी[14] । जहाँ कूँ शाहसों है सरफ़राजी[15] ॥
कहूँ सानी सिकंदर[16] या कि जम[17] है । नहीं शाहाँ कि जिसके दरसों तुम है ॥
कह्‌या यक रोज मुँज शाहे जहाँगीर[18] । .... ॥
"अमोलक तुज्ज धरता है सबाती[19] । कलम है तेज करता मूशिगाफ़ी[20] ॥
हुनर नादिर[21] जो करता जिवकुँ ताज़ा ।" .... ॥
किये जब हुक्म आदिलशाह मुझकूँ । अचंबे खुस्रवी[22] का माह[23] मुँजकुँ ॥
खज़ीना[24] कर रख्या हूँ ध्यान में सब । कि ज्यों मोति है जिवकी खान में सब ॥
लगे दरिया उबलने शौक[25] के तो । .... ॥
कहानी आठ बोल्या सुन सखुनवर[26] । कि जो है आठ जन्नत[27] आठ कौसर[28] ॥

जिस समय खुशनूद इन पंक्तियों को लिख रहा था, उससे दस साल पहले बीजापुर शाहजहाँ का करद बन चुका था, किन्तु उससे क्या? कवियों की झूठी चाटुकारिता को उनके आश्रय-दाता खूब पसंद करते थे।

---

* यु० द० म०, पृष्ठ २२५। वही, पृष्ठ २२६।

१. सराहूँ, २. पवित्र देवता, ३. लोक, ४. विद्यमान, ५. स्वर्ग-सिंहासन, ६. अलवंद गिरि (ईरान), ७. आकाश, ८. युक्ति, ९. किया (पंजाबी), १०. जोड़, ११. भगवान् का, १२. पैगंबर, १३. मुकुट।

† यु० द० म०, पृ० २२६।

१४. धर्मवीर, १५. दाता, १६. द्वितीय सिकंदर, १७. जमशेद, १८. चक्रवर्ती, १९. स्थिरता, २०. बाल की खाल उतारना, २१. दुर्लभ, २२. राजसी, २३. चंद्र, २४. निधि, २५. आनन्द, २६. कवि-वाणी, भक्त, २७. स्वर्ग, २८. स्वर्ग-निर्झर।

(३) आत्मश्लाघी—

खुशनूदने अपने और अपनी कविताओं के बारे में लिखा है—

दिला[१] तुज लुत्फ[२] का दारू[३] नबी पाक[४] । बंदे[५] खुशनूदका जिव है दरदनाक[६] ।।
बंदे खुशनूद पर शहका नज़र है । मेरा जन्नत नगर[७] के बीच घर है ।।
बंदे खुशनूद का नादिर[८] वचन है । जो कोई समझे उसे सब नौरतन है ।।
उननके[९] जीवके तोतेका चारा । किया खुशनूद ने अतमाम[१०] सारा† ।।
खुदा मुंज फाम[११]कूँ अति बल दिया (है) । कलम तो अंबरऽफसानी[१२] किया है ।।
बका[१३] का सत्त देख बुनियाद कमज़ोर । बंध्या में यो इमायरत भौत बरज़ोर ।।
लिख्या हूँ अक्लसों नादिर बहुत खूब । हुआ है तो किताब यों आज महबूब[१४] ।।
किया मैं तो किताब यों जगमें मशहूर । रह्या दुनियाँमें जों धन-उपर सूर ।।
लिख्या कातिब[१५]अजब खुशखत[१६] ज़ेबा । मुहम्मद शाह इब्ने[१७] हाजी बाबा* ।।

(४) कथारंभ—

कवि कथा का आरम्भ करते कहता है‡—

अथा[१८] यक बादशाह संसार म्याने[१९] । सोरनका फूल जों गुलजार[२०] म्याने ।।
किया था अद्लसों[२१] (रोशन) जहाँकूँ । कि जों रोशन किया सूर आस्माकूँ ।।
अथा ओ खुशखराम[२२]होर नेक फ़रजाम[२३] । अचम्बा नाँव उसका शाह बहराम ।।
करे मज्लिस - शराबे - अगवानी[२४] । पिबे निसदिन करे जर्रेऽफ़शानी[२५] ।।
फलातूं बू-अली[२६] से थे हकीमा[२७] । चतुर शायर गुनी नादिर नदीमा[२८] ।।
रतन-धन-माल-लश्कर कुछ न कम था । नहीं उसके शहर में मिलता गम था ।।

(क) नायक-नायिका × —

छबीली बेदिले नाजुक[२९] गुलन्दाम[३०] । अजब या नाव उस धनका दिलाराम ।।
अथा ओ रोज़ शंबाका नूरानी[३१] । अर्पे मुश्की[३२]किया अंबर-फशानी[३३] ।।
दिखाया ताले[३४] अपनी शाह यक रोज़ । किया उस रो जमें बहराम नौरोज[३५] ।।
किया मुश्की इमारत में नवलशाह । कि जो नादिर अचंभा बुर्ज में माह[३६] ।।

---

१. हे हृदय, २. कृपा, ३. दवा, ४. पवित्र पैगम्बर, ५. दास, ६. दुःखी, ७. स्वर्गनगर ८. दुर्लभ, ९ उनके, १०. समाप्ति । † यु० द० म०, पृ० २२३ । ११. समझ, १२. अंबर (सुगन्ध) बरसाना, १३. जीवन, १४. प्रियतमा, १५. लेखक, १६. सु-अक्षर, १७. पुत्र । * वही, पृ० २२७ । ‡ वही, पृ० २२९ । १८. था, १९. संसार में, २०. फुलवाड़ी, २१. न्याय से, २२. सुन्दर गमन, २३. दबदबा, २४. लाल मदिरा, २५. सुवर्णवर्षा, २६. दार्शनिक सीना, २७. दार्शनिक, २८. गायक । × वही, पृष्ठ २२७ । २९. कोमल, ३०. पुष्पतनु, ३१. प्रकाशमान, ३२. कस्तूरी-जैसा, ३३. अंबर बरसाना, ३४. भाग्य, ३५. नववर्ष, ३६. नक्षत्र में चन्द्र ।

अपे सूरज किया किसवत ज़री[1] का । दिया तरतीब[2] सब साकी[3] सेतीका।
सिके[4] हिन्दी नहीं रोमी परीका । कमर जो बाल नाजुक इस्तरी का।

(ख) स्वार्थी संसार*—

अजब[5] बेमेह्र[6] दुनिया बेवफा[7] है । मुहब्बत ऐन[8] इसका सब जफ़ा[9] है
जेते हैं दोस्तां फर्जंद[10] साती[11] । सकल है गोरलग[12] ओ सब संगाती।
निछल[13] नेकीके घरका डाल बुनियाद । तेरे बाद अज़[14] करे सब खल्क[15] तुज याद
न कर ऐसा बदी जो सिर धुनाये । मुये पीछे तेरा कोई गम न खाये
मिले है बाप भाई सब मिरासी[16] । बले कोई गोर[17] में हर्गिज न आसी[18]
कहां दारा सिकंदर शाह ग्यानी । गकहां जमशीद जम हातिम दुरानी
कहाँ खुमरो[19] कहाँ ओ रुस्तमेज़ाल[20] । सुन्या नौशेरवाँ का क्या हुआ हाल
जदालग[21] है सकत[22] हातामने[23] जोर । तदाँ लग[24] उचाते[25] सब दोस्ताँ शोर
चले जों नेकमर्दां चल तु खुशनूदा । खुदा हासिल करेगा दिल का मकसूद[26]

(५) कथाएँ—

हश्त बहिश्त' की आठों कहानियों में से कुछ के उद्धरण है†—

अवलके[27] दौर में यक बादशहा था । अथा मशहूर जो सूर-मह[28] था
अथा आकिल[29] चतुर परबीन ज्ञानी । न था दुनिया में उसका कोई सानी[30]
गुन एक जिसमें दिसे दानिश्वरी[31] का । उसे मसब दिलावे सर्वरी[32] का
अजब खूबी[33] का दिलमें रंग रस था । बुजुर्गी साथ मिलने का हवस[34] था
अथे उस शाहकूँ सब फ़र्जंद[35] । यकमते एक[36] आकिल होर खिरदमन्द
तवंगर[37] इल्म होर थे माल-धनमें । न थेआजिजे[38] हरेकहिकमत केफनमें[39]
सकल आकिल उनत कि ज्यों कुली[40] थे । कि ज्यों दाना[41] फलातै -बू अली थे
न जानों क्या नवलशह दिल में अया । जुदा हर यक जवाकूँ शह बुलाया
कह्या हर एक जवाँकूँ आजमाना । जो है कलजुग का यो खोटा जमाना।
घरु में) कौन करता है सियाही । करूंगा कौन करता बादशाही
बडे फर्जदकूँ बोल्यां खिरदमंद । कितूं आकिल सखी[42] आदिल[43] हुनरमंद

---

१. पोशाक, २. क्रमबद्धता, ३. मददायक से, ४. सीखे। * उ० श०, पृ०
५. विचित्र, ६. बेमुरौवत, ७. विश्वासघाती, ८. बिलकुल, ९. जुल्म, १०. पुत्र, ११
१२. कब्र तक, १३. निर्मल, १४. अनंतर, १५. दुनिया, १६. दायभागी, १७. कब्र, १८.
१९. नौशेरवाँ, २०. रुस्तम और जाल २१. जब तक, २२. शक्ति, २३. हाथोंमें, २४.
२५. उठाते, २६. कामना, † उ० श०, पृ० २०३। २७. पुराने जमाने, २८. १
२९. बुद्धिमान्, ३०. समान, ३१. बुद्धिमानी, ३२. सर्दारी, ३३. सौंदर्य, ३
३५. पुत्र, ३६. एक से एक, ३७. धनी, ३८. अशक्त, ३९. कला में, ४०. दास, ४
४२. दाता, ४३. न्यायी।

जबानी से दिया हक मुँजकँ पीरी । खुदा तुजकूँ किया है दस्तगीरी ॥
बहुत आकिल है तूँ कर बादशाही । सकल खुबी सों रख तँ मुर्गों माही[1] ॥
जो राजी जम[2] अछै माबूद[3] तुझसों । जहांका इल्क सब खुशनूद[4] तुझसों ॥
ज़ईफा कूँ बहुतकर दस्तगीरी । जे कोई दाना है उसकूँ वज़ीरी ॥
धर्‍या सिर के न क्या दाना खिदरमंद । बहादुर पादशहाका नेक फ़र्ज़ंद ॥
जदाँ लग है गगनपर चाँद तारे । जदाँ ग है अयश-कुरसी[5] चमारे ॥
तदाँ लग कर तुँ जगमें बादशाही । अछै तुज शहाका आलम हिपाही ॥
अजब यां तख्त अफसर-बख्त हुशियार । बगैरज़ तुज[6] नहीं किमकूँ सजावार[7] ॥
तवंगर कोई कहे (गर) बेनवाकूँ[8] । न देसे[9] बादशाही कोई गदा[10] कूँ ॥
अगर नादान[11] कूँ जीनेमों काम है । बगैर दाना[12] उसे जीना हराम है ॥
झलकता[13] है जहां तुज सारका[14] सूर[15] । सितारे जिसमें दिसने त्यों है बेनूर[16] ॥
बहुत जग राजकर होर शादमानी[17] । खिज़र[18] का तुझ अछो[19] जम[20] ज़िन्दगानी ॥
सरासर[21] आजमाया[22] शाह गुफ्तार[23] । किया दिल में कि है यो नेकवर्दार[24] ॥
किया दिलमें खुशी जब आज़माया । वले[25] ज़ाहिर[26] गज़ब[27] कर भार[28] आया ॥

(क) द्वितीय राजपुत्र से—

अथा फ़र्ज़ंद दूजा तिस बुलाया । कनक-दिल[29] का खुशीसों आज़माया ॥
बहुत अफमूँगरी[30] सों दिल फुलाया । वले ज़र[31] खता उसमें न पाया ॥
सवालों जो किया शाहे-खिरदमंद[32] । जवाबाँसो किया फ़र्ज़ंद जबाबंद[33] ॥
कह्या "जो तूँ कहे सो मैं करूंगा । तेरा फ़रमान[34] मैं सिर पर धरूँगा ॥
वले यो बादशाही तुझ[35] रवा[36] है । जे कोई दूजा मंगे[37] ओ नासज़ा[38] है ॥
एता काँ[39] ज़ोर है बंदेके दमकूँ । धरेगा तख्त पर जिव[40] के दम कूँ ॥
फ़लक[41] बेमेह्र[42] गर तुजसों फिरेगा । किया दुसर्‍यासों वों तुजसों गरैगा ॥
किया नै कोइ अदब[43] लग ज़िन्दगानी[44] । वफ़ा[45] किसकूँ किया दुनियाय-फ़ानी[46] ॥
अगर होये कधों शाह राज़ी[47] । करे दे तख्त[48] जगमें सरफ़राज़ी[49] ॥
बडे फ़र्ज़ंदकूँ दे तख्त क्यानी[50] । तेरे बादज़[51] करेंगा जग नुरानी[52] ॥

---

१. पक्षी मीन, २. सदा, ३. भगवान्, ४. प्रसन्न, ५. स्वर्गसिंहासन, ६. तेरे विना, ७. योग्य, ८. गरीब, ९. देगा (पंजाबी), १०. फकीर, ११. मूर्ख, १२. ज्ञानी, १३. चमकता, १४. तेरे सरीखा, १५. सूर्य, १६. आभाहीन, १७. प्रसन्नता, १८. अमृत के देवता, १९. रहो, २०. सदा, २१. बिलकुल, २२. परीक्षा की, २३. कथन, २४. सुकर्मी, २५. लेकिन, २६. प्रकट, २७. क्रोध, २८. बाहर, २९. सुवर्ण-हृदय, ३०. जादूगरी, ३१. जरा कुछ। ३२. बुद्धिमान् राजा, ३३. बोलना बंद, ३४. आज्ञा, ३५. तुझे, ३६. उचित, ३७. चाहे, ३८. अयोग्य, ३९. कहाँ, ४०. मन, ४१. आकाश, ४२. निर्दयी, ४३. अनंत काल, ४४. जीवन, ४५. साथ देना, ४६. नाशवान्, ४७. पसंद, ४८. सिंहासन, ४९. भाग्यशाली, ५०. ईरानी, ५१. अनंतर, ५२. प्रकाशमान।

(ख) तृतीय राजपुत्र से*—

किया शह हरव[1] जिधर था खुर्द[2] दाना । किया जिन अक्लमें जगकूँ पिवाना ।।
लग्या शह मौंत छंद[3] सों आज़माने । कनक जिवका कसौटी पर लगाने ।।
दिया ज्वाब (उनने) "ए शाहे सुब्हानी[4] । कि तिफलाँ[5] सों न होसे[6] का रवानी ।।
जब इस फ़र्ज़न्द कूँ शाह आजमाया । बहुत कुछ शादमानी[7] दिलमें यारा ।।

(ग) पुत्रों का निर्वासन—

कह् या शह तीन गौहर[8] है शरफनाक[9] । .... ।।
हुआ खुशहाल अपने बख्त[10] परसों । किया सिज्दा[11] खुदा तख्त परसों ।।
वले[12] फरमाँ दिया तीनों रतनकूँ । निकर जाओ तुमें हर यक पटनकूँ ।।
जहा लग है मेरा सब मुर्गो-माही[13] । जहां फिरता है मुँज शहक दोहाई[14] ।।
रहेंगे वाँ तो मारूँ ख्वार[15] कर में । सयासत[16] कर धरूंगा दार[17] पपर में ।।

(घ) निर्वासित राजकुमार और हब्शी—

कहें जब बात उस शहकी पियादे । सियाहपोश[18] हो चले ओ शाहजादे ।।
बंधे तोशा[19] चले सुट[20] तमा[21] घरका । तमाशा देखने सब बहोबरका ।।
गये जब शाहजादे शहसों भार[22] । बगैर जंगल-पहाड उन कोइ न था ठार ।।
जे शुक हर शहरमें आवे सो लेते । खराबे[23] मे कधी शेर सोते ।।
अथा सब मग्न[24] सिरमे सर्वरी[25] । का वले पकडे हुनर सौदागिरीका ।।
हुआ एक दिन क जमए आसमानी[26] । चले एक ठार मिल यो यारजानी[27] ।।
जो मिल सहरके नज्दीक आये एक । बंधे घोडे वहाँ आराम पाये ।।
अथा उस सहरके नज्दीक जंगल । रहे उस वनमें यों जो मस्तमंगल[28] ।।
यकायक एक जंगी[29] दौड आया । कि जो शैतान अपना मुख दिखाया ।।
हटे सब थासने सुन उसके हाँकाँ । रतन[30] ज़ंगीके जों गाडोके चाकाँ ।।
ल्योयेकी कानमें यक बाबली थी । मुसल[31] हँसी पेटपर रोमावली थी ।।
बँध्या था झाडके जो गिर्द पाताँ । हती[32] के दाँत सों कुछ कम थे दाँताँ ।।
अथा बदशक्ल काला जों हिपाही । देखत शैताँ डरे होर मुर्गों-माही[33] ।।
क्या[34] "ऐ सूर बेटे सूरज़ादे[35] । हरेक जों चाँद है या शाहज़ादे ।।

---

* उर्दू शहपारे (१), पृष्ठ २०५-२०६। १. मुँह, २. छोटा, ३. युक्ति, ४. भला, ५. बच्चों, ६. होगा, ७. हर्षित, ८. रत्न, ९. बड़े, १०. भाग्य, ११. दंडवत्, १२. लेकिन, १३. पक्षी मीन, प्रजा, १४. शासन, १५. बर्बाद, १६. शासन, १७. सूली, १८. काला कपड़ा पहने, १९. पाथेय २०. छोड़, २१. लालच, २२. बाहर, २३. वीरान स्थान, २४. दिमाग, २५. सर्दारी, २६. भवितव्यता, २७. प्राणप्रिय, २८. मस्तमौला, २९. हब्शी, ३०. नथने, ३१. मूसल, ३२. हाथ, ३३. पक्षी-मीन, ३४. कहा, ३५. सूर्यपुत्र।

मेरा यक ऊँट इस बाटों गया है । निशाँ देओ तो मुँजपर लख मया[1] है ॥
गया है काँ अगर बोले तो जानूँ । महीने का खबर एक पल में लाऊँ ॥
क्या उस तीनमें का यक खिरदमंद[2] । जो थे आदिल[3] हुनरमंद शहके फ़र्जंद ॥
"क्या दाना शुतुर[4] वरजोर है ओ । क्या एक आँख उसका कूर[5] है ओ ॥
क्या दुसरा चतुर कहना धरम है । जो उसके मूमने[6] यक दाँत काम है" ॥
क्या तिसरा जो आरिफ़[7] रंग-रंग है । "वले उस ऊँट का यक पाँव लंग है" " ॥
हर एक आरिफ वचन जब यो सुनाया । ढूँढन हारेकुँ जानों जीव आया ॥
पवन त्यों मैं व कीता[8] कामकूँ ओ । चल्या जो शातिर[9] अपने कामकूँ ओ ॥
चरन के ओ तरंग करते नथे गर्म । कदम पर धर कदम चलते अथे नर्म ॥
चले आपे वहाँ यों तीन ज्ञानी । अथा एक बाग नादिर[10] साफ पानी ॥
दिसा यक झाड ऊँचा जो गगन था । हा हवा होर झछाँव चांधर फुलवन था ॥
बयक तुबा मगर था नाम उसका । जो यक यक कोस दौड़्या छाँव उसका ॥
कुछ यक खाये-पिये मुख हात धोये । बंधे घोडे वहाँ टुक सुखसों सोये ॥
हुये हुशियारसों सों भी बात करते । खुशीकुँ याद कर गमकूँ बिसरते ॥

× × ×

गया सो सारखा फिरफिरकर आया । बहुत कुछ शोर होर गांगा उचाया[11] ॥
ग़ज़ब[12] की आगकूँ रोशन कराकय । जबाँकी तेगकूँ पानी दिलाकर ॥
क्या[13] दो कोस दौड़्या हूँ इधर में । जहाँबोले तुमें देखा उधर मैं ॥
नहीं देख्या हूँ बीछू सांप झाडाँ । नहीं देख्या हुँ काँटै सख्त ठारा ॥
वले देख्या नहीं मैं गर्द उसका । मर्‌या हर बाल में सब दर्द उसका ॥
पवन त्यों मैं बहुत जल्दी सों धाया । उड्या क्या धन-उपर या भुंइ छिपाया ॥
क्या "जाना मैं का एक ज्वान दाना[14] । जे कुछ समछ्याहुँ मैं सो ना छिपाना ॥
घडा हाउका भर्‌या है इस तरफ जान । शहदका उस तरफ लाद्या मरतबान" ॥
क्या दूजा कि उसपर इस्तरी है । चतुर बागे अरम[15] की शहपरी[16] है" ॥
क्या तीसरा "जो है वो पेटसों नार । शिकम[17] के भारसों होता है आज़ार[18]" ॥

(ङ) चोरी का अपराध—

निशान्याँ थे जेते पाया ओ जंगी[19] । क्या तावत[20] उननपर ओ करन की ॥
नहीं समजा उननमें है अमीरी । .... ॥
क्या "यो चोर हैं दिसते भले यो । बशर[21] के काटते फिरते गले यो ॥

---

१. लाख दया, २. बुद्धिमान्, ३. न्यायी, ४. ऊंट, ५. अंधा, ६. मुंह में, ७. ज्ञानी, ८. किया (पंजाबी), ९. चालाक, १०. दुर्लभ, ११. उठाया, १२. क्रोध, १३. कहा, १४. ज्ञानी, १५. स्वर्गोद्यान, १६. परियों की रानी, १७. पेट, १८. दुःख, १९. हब्शी, २०. तकलीफ, २१. मनुष्य।

तुरंग-मानिक-रतन जिसका जो पावें । ओ जों सुरमा नयनम्याने[१] छुपावें ॥
मिठे बातों सों करते दिल-नवाजी[२] । ....॥
हरा कान फाटे हो संन्यासी । जंगलमें खल्क[३] कूँ देते हैं फांसी ॥
बडे साहिर[४] बुरे हैं चोर सहजोर । चुरा मुर्दा कफन खाली करें गौर[५] ॥
ज़बां का कर ढंढोरा शोर उचाया[६] । तमाशा देखने सब खल्क[७] धाया ॥
मिले हाले नमन[८] सब खल्क सारे । अथे जों चाँद म्याने[९] ओ बेचारे ॥
केतक कहते एते हैं शाहज़ादे । केतक कहते हैं चोर पयादे ॥
कहे सब मिल कि तीनों कूँ जकडकर । ले जा तूँ शहकने[१०] सबकूँ पकडकर ॥
जब आये शाहगकन तीनों जवानां । नजर कर खूब देख्या शाह दाना ॥
क्या[११] तो सारवां[१२] सब गिमनके घातां[१३] । निशान्या टूटकर बोले सो बातां ॥
सकल बातां वल शहकन क्या ओ । जिता कहना अथा कह चुप रहया ओ ॥
क्या तीनोंकूँ शह "यो हाल क्या है । कहो इस बात का अहवाल क्या है ॥

(च) मुक्ति का रास्ता—

दुआ अव्वल किये उन तीन यारां । जो अपने मुल्क के थे ताजदारां ॥
"जदाँलग[१४] रातदिन है मुर्ग-माही[१५] । तदाँ लग कर तुँ जग में बादशाही ॥
जदां लग है धरत होर सूरका नूर । अछो[१६] तुज शाह का यो मुल्क मामूर[१७] ॥
हमें तीनों मुसाफिर है गरीबाँ । जहाँके फ़ैज़[१८] सों है बेनसीबाँ ॥
बहुत बरसाँ के फिरते हैं उदासी । रियाज़त[१९] की गलेमें घाल फाँसी ॥
हमें देखे तमाशा सब नगरका । अज़ायब होर ग़रायब[२०] बह्रो-बर[२१] का ॥
नही हमनाकुँ भाता शह्रगोशा[२२] । तमा[२३] का नें हमारे पास तोशा[२४] ॥
खुदाका है बहुत हमनापों[२५] साया । जो शहके शह्रके नज्दीक लाया ॥
अवल आया यो ज़ंगी[२६] जों सिपाही । डरे जंगल के सारे मुर्गोमानही ॥
क्या देखे तो मेरा ऊंट बोलो । दरीचे रास्तीके[२७] खूब खोलो ॥
ज़राफ़त[२८] का उडाये मान से ज़ाग़[२९] । कहे हँसते लग्या बदनाम का दाग ॥
गुनहका तो लगी हमनाकुँ झोली । नहीं देखे सो बातां झूठ बोली" ॥
गजब[३०] में आ क्या[३१] तो शाह ज्ञानी । "नहीं देखे सो बोले क्यों निशानी ॥
कहो यक बार किस्सा ध्यानसों मैं । सुनूँगा जीवके दो कानसों मैं ॥
जो कोइ सूरत नहीं देखे हरिनका । निशानी क्यों कहे उसके वरन का" ॥

+ + +

---

१. नेत्र में, २. दिल पर दया, ३. लोगों, ४. जादूगर, ५. कब्र, ६. उठाया, ७. लोक, ८. कुंडलाकार, ९. चाँद में, १०. शाह के पास, ११. कहा, १२. ऊँटवान, १३. भाँति, प्रकार, १४. जब तक, १५. प्राणी, १६. रहो, १७. समृद्ध, १८. दया, १९. तपस्या, २०. अद्भुत, २१. जल-थल, २२. शहर का कोना, २३. लोभ, २४. पाथेय, २५. हमारे पर, २६. हब्शी, २७. सत्य के, २८. दिल्लगी, २९. कौआ, ३०. क्रोध, ३१. कहा।

किये सिज्दे[१] दिखाये ख़ास ख़इलास[२] । कहे "बंदे हमें हैं शाह के ख़ास" ।।
उननमें का चतुर यक मर्द हुशियार । क्या मीठे वचनसों नेक गुफ्तार ।।
"बहुत जग राजकर छत्तर सुटे[३] सों । तुरंग जम[४] दान गरमाते हटे तें ।।
क्या "एक बात फिर अंधला सो मैं हूँ । समज उस ऊँटके इस धात[५] परसों ।।
जेता ओ गश्त[६] जंगलमें कर्या है । जहाँ ताँ यक तरफ अक्सर[७] चर्या है ।।
बँध्या मैं नकश[८] अकसर[९] ऊँट है कूर[१०] । जो चरता एक तरफ का सख्त है जोर ।।
कया दूजा कि "सुन ऐ नेक फरहंग । किया मै ऊँटका यक पाँव है लंग[११] ।।
चल्या था पांव खर्रीता सुवहानी । दिसा मुज रेत पर उमकी निशानी ।।
समज इस बात परसों मैं जो बोल्या । कि ज्यों ग़ायब चतुर शतरंज[१२] खोल्या ।।
जो था सितारा चतुर आकिल खिरदमंद[१३] । क्या था दांत यक कम है हुनरमंद ।।
क्या ओ शाहका सुन खुशजबानी । ....।।
दिस्या मुंज एक ठार ओ ऊँट आया । वहाँ के शाख-पात ओ तोड खाया ।।
जुगाल उसका पड्या था एक किनारे । बहुत पाता झडे थे उसमें सारे ।।
क्या मै यो समज तूँ शाह जम है । जो इसके मूँ मने[१४] यक दाँत कम है ।।
सून्या सब बात बोल्या शाह दिलदार । "कहे है यो समझ यो तीन गुफ्तार[१५] ।।
क्या अव्वल जो किस्सा[१६] शहद-घिउका । समज बोल्या छिपामों राज़ जिउ का ।।
अथा यों ज़मीके खाक ऊपर । पड्या था कज शकल[१७] खाशाक[१८] ऊपर ।।
मख्या भी यक तरफते शोर उचाये । जरापोशाँ-निमन जों दिलदिलपने धाये ।।
अथ्या दूजे तरफ चिमट्याँ[१९] का तूँदल[२०] । पवनकूँ तिल न था जाने वहाँ वल ।।
जिधर चिमट्याँ अथ्याँ समझा कि घिउ है । जो अकसर[२१] घिउ चिम्टियाँका सो जिउ है ।।
क्या दूजा जो बोल्या महपरी[२२] है । चतुर असवार उमगर इस्तिरी है ।।
जिधर मख्याँ अथे बोल्या शहद जो... । जो मख्यां तिफ्ल[२३] शहद उसका सो जिउ है ।।
दिस्या मुँज यो जो बैठाऊँ कनानी । धर्या करका फिर पायां के निशानी ।।
जहाँ बैठा अथा संद[२४] ऊँट भारी । अराफ्त[२५] वाँ कमर किये थी ओ नारी ।।
परन ना सक मैं उसका बास लाया । मेरे रोम्-रोम्में सब शौक[२६] ढाया ।।
क्या मैं हुक्म उसमें शहतिरी[२७] है । नहीं असबार मर्द ओ इस्तिरी है ।।
क्या तिसरा जो बोल्या पेटसों नार । हुआ मालूम यो सुन शाह गुफ्तार[२८] ।।
उठी भुँइ परसों जब असवार होने । लगी तब फिक्र[२९] के मोती पिरोने ।।

---

१. दंडवत्, २. मुहब्बत, ३. फेंके, ४. सदा, ५. इस भाँति, ६. घूमना, ७. प्रायः, ८. चित्र, खयाल, ९. प्रायः, १०. अंधा, ११. लँगड़ा। १२. शतरंज (खेल), १३. बुद्धिमान्, १४. मुँह में, १५. बात, १६. दिल का रहस्य, १७. टेढ़े आकार, १८. तृण, १९. चींटियाँ, २०. झुंड, २१. प्रायः, २२. चंद्रपुरी, २३. बच्चा, २४. संधाकर, २५. ऊँचाई, २६. आनन्द, २७. राजस्त्री, २८. बातचीत, २९. चिन्ता।

जहाँ था नक्श दो पग सुब्हानी[1] । अंगे दो हाथके थे नक्श क्यानी ॥
चरन देख चार उसके राज़[2] खोल्या । अहे सो पेटसों कर बात बोल्या ॥

§ २१. रुस्तमी (१६४९ ई०)

कमालखाँ दबीर उपनाम रुस्तमी बीजापुर के एक प्रसिद्ध खत्तात (सुलेखक) वंश से संबंध रखता था। इस खानदान को खत्तात की उपाधि प्राप्त थी। इसका पिता इस्माइलखाँ खत्तात पाँच पुस्त से बीजापुर दरबार में खुशनवीसी (सुलेखक) का काम करता आया था। रुस्तमी दूसरों की पुस्तकों को उतारने की जगह स्वयं एक सिद्धहस्त कवि हो गया। उसने और भी कितनी ही गजलें और कसीदे लिखे होंगे, किन्तु वह जीवित है अपने महान् कथा-काव्य (मस्नवी) 'खावरनामा' से, जो पच्चीस हजार शेरों (अर्धालियों—वाल्मीकिरामायण से थोड़ा ही छोटा) में समाप्त हुआ। 'खावरनामा' का एक हस्तलेख इंडिया-ऑफिस-लाइब्रेरी (लंदन) में है, जिसमें प्रायः प्रत्येक पृष्ठ पर रंगीन तस्वीरें हैं, यद्यपि वह उतनी सुन्दर नहीं है। रुस्तमी का खावरनामा इसी नाम की फारसी मस्नवी का अनुवाद है, जिसे इब्नहसाम ने इससे सवा दो सौ वर्ष पूर्व १४२६ ई० (८३० हि०) में लिखा था। खावरनामा में फिरदौसी के शाहनामे की नकल में हजरत अली की काल्पनिक विजयों का वर्णन है। सुल्तान इब्राहिम कुतुबशाह के तरुण पुत्र मिर्जा मुहम्मद अमीन की पुत्री खदीजा सुल्तान शह्र बानू (बडे साहब की) प्रेरणा से रुस्तमी ने अपनी पुस्तक को डेढ़ वर्षों में लिखकर १६४९ ई० (१०५९ हि०) में समाप्त किया।

रुस्तमी ने अपने और अपने काव्य के बारे में लिखा है*—

किया तर्जुमा[3] दखिनी दिलपजीर[4] । बोल्या मोजजा[5] यो कमालखां दबीर ॥
खलक[6] कहती है मुज कमाल खां दबीर । तखल्लुस[7] सो है रुस्तमी बेनज़ीर[8] ॥
नबी[9] की जो हिजरत[10] थी किता खयाल । हजार पर पचास और नौ की थी साल[11] ॥
कहा रुस्तमी उस वक्त यो किताब । बँध्या बानकी गौहरां[12] बे हिसाब ॥

और भी †—

फलक[13] कूँ वफ़ादारी[14] अँदेशा[15] नें । बगैर अज़ जफ़ा[16] उसको कुछ पेशा नें ॥
अथी खूब यो जिंदगी होर हवस[17] । अगर मर्ग[18] का डर न होता ज़पस[19] ॥
अजल साथ[20] कोई जिव छुपाया नहीं । अपस दर्दकूँ दारु[21] खाया नहीं ॥
जो हस्तीके[22] कूँचे रख्या है कदम । बाहर जावना है ज़-राहे-अरम[23] ॥

---

१. शुभ, २. रहस्य। * यु० द० म०, पृ० २४१; उ० श०, पृ० २२१। ३. अनुवाद, ४. मनोहर, ५. चमत्कार, ६. दुनिया, ७. उपनाम, ८. अनुपम, ९. पैगंबर, १०. नगर-त्याग, ११. १०५९ हि० (१६४९ ई०), १२. रत्न मोती। † उ० श०, पृष्ठ २२०। १३. आकाशदेव, १४. विश्वासपात्रता, १५. संदेह, विचार, १६. जुल्म, १७. लोभ, १८. मृत्यु, १९. पीछे, २०. मृत्यु के पास, २१. दवा, २२. हाथी के, २३. नेस्ती की राह।

जो खुर्शीद[१] है तो भी पागा ज़वाल[२] । जो रुस्तम है तो भी उसे मर्ग-जाल[३] ।।
बिछानाँ भी कोइ यों तख्त होर ज़ौक नाज़[४] । पड्या एक तख्ते पे करता निमाज़[५] ।।
दोनों ओंच[६] आखिरकूँ माटी होवें । मरें होर दुनिया कूँ भी छोड देवें ।।
जो बेहतर वही है कि जों भार[७] में । दुन्यामें छोडूँ इसकूँ यादगार में ।।
जो इस देखनेमें बुढा होय जवां । अकलकूँ भी होय इसते ताजां रवाँ[८] ।।
इसी नाम[९] सो नाम मुज होय बुलंद । होवे खल्क भी इस सेती बहरामंद[१०] ।।
जो भर ज़र्रा मारी[११] ते मुज होय गुबार[१२] । दुन्यामें अछे[१३] मुजकूँ यो यादगार ।।
जो-शायर था फिरदोशियाँ पाक ज़ाद[१४] । अछो हककी रहमत[१५] सों आ भौत शाद[१६] ।।
दुन्यामें हुई बात उससे बुलंद । हुआ शेरते[१७] भी उने बहरामंद ।।[१७]
हुआ शेर उसे खूब आवे रवाँ[१८] । . . . . ।।
कि या नामा ओ खल्क में नामदार । रह्या जगमें उसते च[१९] यो यादगार[२०] ।।
बुलंद-मर्तबा[२१] उसते है बातकूँ[२२] । किया शेर[२३] जगमें ओ इस घात[२४] सों ।।
हुआ खत्म उस मस्नवी बोलना[२५] । मोती बातके रासकर[२६] रोलना ।।
बोल्या जगमें तोहीद[२७] ओ होर पंद[२८] । . . . . ।।
छोड्या जों कि ओ काबिले-खाक[२९] कूँ । खुदा बख्श्या[३०] फिर्दौं पै पाक कूँ ।।
दुन्या कूँ बुलंदी वो पस्ती[३१] तुई । सभी नेस्त[३२] है आंच[३३] हस्ती[३४] तुई ।।
इस एक बेत[३४] पर भिश्त[३५] उसकूँ दिया । ।।
क्या बोलूँ जो मैं बोले सो नै रह्या । विधे नै सो मोती कहीं नै रह्या ।।
अबल शायरों[३६] कुछ नहीं छोडे हैं । जो कुछ बोलना सो सभी बोले हैं ।।
नैं अब रया है बुस्ताँ[३७] में एक फूल । जो उस पर नहीं बोले बुल्बुल बोल ।।
अकल यार[३८] इस बात में होये ह्य । करे लुफ्फ़सों मुजकूँ तालीम ओ ।।
कि ऐ बातके ख्यालके नक्शबंद[३९] । जो तुज बातते इल्क होय बहरामंद[४०] ।।
कुये ते तबीयत[४१] के उपराल आ । जों हारुत[४२] जादूगरी कर दिखा ।।
तूँ भी बातकूँ बातसों सांधकर[४३] । . . . . ।।

---

१. सूर्य, २. पायेगा अवनति, ३. धोखा-फरेब, ४. आनंद-मौज, ५. दया, ६. वैसे ही, ७. बाहर, ८. प्रस्थान, ९. पुस्तक, १०. लाभोचित, ११. मिट्टी के कण से, १२. धूल, १३. रहे, १४. सुजात, १५. कृपा, १६. अतिप्रसन्न, १७. पद्य, काव्य, १८. बहता पानी, १९. उससे ही, २०. कीर्ति-स्मारक, २१. दर्जा, पद, २२. वाणी को, २३. पद्य, कविता, २४. भाँति, २५. प्रबंध-काव्य-रचना, २६. राशि, २७. अद्वैत (इस्लामी), २८. शिक्षा, २९. मिट्टी का शरीर, ३०. प्रदान किया, ३१. उन्नति और अवनति, ३२. अभाव, ३३. गर्मी, ३४. अस्तित्व, ३४. शेर, पद्य, ३५. स्वर्ग। * यु० द० म०, पृ० २३९ ।

३६. कविगण, ३७. फुलवाड़ी, ३८. बुद्धि का दोस्त, ३९. चित्रकार, ४०. लाभान्वित, ४१. मन, ४२. हारुत-मारुत, ४३. साध।

तु भी मार ला गंज[१] वीरानाते[२] । ... ...॥
किया तूँ नियत काममें जिस दुरुस्त[३] । न को डर कि अवलो खिरद[४] बार तुस्त[५] ॥
सखुन[६] की अगर तबा तुज[७] है रवाँ[८] । तो यारी करेंगे बखत[९] तुज निहाँ[१०] ॥
हुआ ताज़ा दिल अक्लके ज्वाबते । जों प्यासा होये खुश दिवे आबते[११] ॥
न देख्या किसी मर्द इस सातमें । जो इस दास्ताँ[१२] कें बंधे बात में ॥
सखुनके[१३] घोडे-पर हुआ हूँ सवार । जो इस बाटकूँ तै करूँ एक बार* ॥

रात्रि-वर्णन†—

आया था जमीं पर बी जोंशाहज़ंग[१४] । ज़मी[१५] होर जमाँ कूँ लिया था ... ॥
सफेदी की खिच्ची थीं मुखपर नकाब[१६] । परिन्दा[१७] सफेद फँस्या था आफ़ताब[१८] ॥
ज़मींपर अंबर[१९] का मंडप था तमाम । .... ॥
ज़मीं पर तो सुम्बुल था नैं था सुमन । .... ॥
गया था महलके भितर शाहचीन[२०] । सबाही[२१] का था मुर्ग भी ख्वाबमें ॥
ज़मी होर जमाँ[२२] में भी काजल भऱ्या । अँगार जाके जगमें धुआ भर रह्या ॥
जेते मुर्ग माही[२३] कुँ था भौत ख्वाब । जमींकूँ दरंग[२४] आसमाँ बाशिताब[२५] ॥
फलक नौ तबक[२६] गौहरा[२७] हमों सवार । .... ॥

युद्धकाल में दो अपरिचित सवारों को सीमा के भीतर देखकर दुर्गपालों की घबराहट का चित्र है—

पुकाऱ्या कि "ए नामवर महतराँ । बोलों नांव अपना ब-नाम-आवराँ[२८] ॥
बोलो अव्वल-आखिर[२९] भी अपना तमाम । के[३०] आये है इस मुल्क में क्या है काम ॥
कहाँ जाते है और कहाँ आये है । क्या झगड़े पर है या खुशी ल्याये हैं ॥
हमें भी कमर बाँध आये है याँ । निशानी तुमारा जो पाये हैं याँ ॥
अगर झगडेकूँ आये है तो कहो । वगर[३१] सुलह[३२] सों आये है तो कहों ॥
दिया ज्वाब भी यों उसे याद शेर । बुरे दिल का डरता है देखकर दिलेर ॥
दिलावर[३३] न डरता है देख मर्दे-जंग[३४] । जो डरता है देख छांव अपनी पलंग[३५] ॥

---

१. खजाना, २. उजड़ते, ३. ठीक, ४. धी, बुद्धि, ५. तेरा फल है, ६. वाणी, काव्य, ७. तेरी तबियत, ८. जारी, ९. भाग्य, १०. गुप्त, ११. पानीसे, १२. कथा, १३. वाणी।

*** उ० श०, पृ० २२२। †यु० द० म० के (संपादक, श्रीनसीरुद्दीन हाशमी दखिनी हिन्दी में साथ लगाने के लिए सबसे अयोग्य व्यक्ति हो सकते थे। उन्होंने पाठों की हत्या कर डाली है) पृष्ठ २३९, उ० श०, पृष्ठ २१९।**

१४. युद्ध का राजा, १५. भूमि और काल, १६. घूँघट, १७. पक्षी, १८. सूर्य, १९. आकाश, २०. चीनराज, २१. प्रातः, २२. नींद, २३. प्राणी, २४. भय, २५. जल्दी में, २६. नवो लोक, २७. मोती, २८. नामियों के साथी, २९. आदि-अन्त, ३०. क्यों, ३१. और यदि, ३२. शान्ति, ३३. वीर, ३४. युद्ध के आदमी को, ३५. शेर।

किसीकी बुराईसों हमन का मने[1] । इस अंगे[2] भी कुछ बोलना नामने ।।
चले हैं भी मग्रिब-जमीं[3] कूं हमें । हमन पर नको[4] बदगुमां[5] हो तुमें ।।

\+ + +

बोला ले चल्या दीनोंकूँ शाहकन । सितारे निमान[6] गये दोनों माहकन[7] ।।
जिसे भेजा था शह सौ अंगे हुआ । दोनोंकूँ भी दरबारकूँ ले गया ।।
देखे उसके दर्बार-मैदानकूँ । महलों गये हैं कि असमानकूँ ।।
महलकूँ रंगाया है सबजर संगात[8] । महल उसके असमानसों बोलों बात ।।
देखे भौत घरकूँ संवार्‌या अहे । उसे चार सफ्फा[9] बनाया अहे ।।
किया था फ़र्श भी सात रंग । सातों रंगके भी बिछाया था संग ।।

§ २२. निशाती (१६५६ ई०)

उत्तर में खड़ी (हिन्दी) बोली की कविता १९वीं सदी के अन्त में नाममात्र और सो भी बेमन से हुई। वस्तुतः उसका आरंभ २०वीं सदी के आरम्भ से होता है, जिसमें पहली दो दशाब्दियाँ अभ्यास करने की थीं। लेकिन, अलाउद्दीन और मुहम्मद तुगलक की दक्षिण-विजय के साथ जो लाखों मुसलमान सामन्त, सैनिक, शिल्पकार आदि के रूप में दक्षिण गये, उनके ही कारण दक्षिण में गुलबरगा, गोलकुंडा और बीजापुर में खड़ी हिन्दी की कविता उस वक्त शुरू हुई, जिस वक्त मैथिलकोकिल विद्यापति अपने मधुर गीतों से प्राची को मुखरित कर रहे थे। किन्तु उसकी प्रौढता का जमाना वही है, जब कि सूर और तुलसी की कविताओं के रूप में व्रजभाषा और अवधी की कविताएँ उन्नति के शिखर पर पहुँचीं। इस दक्षिणी खड़ी हिन्दी-कविता के सूर और तुलसी, वजही, सुल्तान मुहम्मद कुल्ली कुतुब (१५६५-१६१२ ई०) और गौवासी (१६२५ ई०) थे। यह कविता-प्रवाह तबतक विकसित होता चला गया, जबतक कि औरंगजेब ने दक्खिन की इन मुसलमानी रियासतों को १६८६-१६८७ ई० में खत्म नहीं कर दिया। दक्खिनी का अन्तिम महाकवि वली (१७००ई०) उर्दू-कविता का आरंभ भी करता है।

निशाती या इब्न-निशाती १७वीं सदी के मध्य में गोलकुंडा में हुआ था। वह समय सुल्तान अब्दुल्ला कुतुब (१६२४-७२ ई०) का था, जो कि स्वयं ऊँचा कवि न होते भी कविता-प्रेमी था। निशाती सुल्तान अब्दुल्ला के दरबार में एक उच्च पदाधिकारी था। इसकी एक ही मस्नवी (कथाकाव्य) मिली है, जिसका नाम 'फूलवन' (फुलवाड़ी) है। कवि ने इसे फारसी की मस्नवी 'बिसाते' के आधार पर लिखा है। अप्रैल, १६५६ ई० (रजब १०६६ हि०) में आरम्भ करके तीन महीने बाद ईद के दिन (२३ जुलाई, १६५६ ई०) को उसे समाप्त करते लिखा है—

---

१. दिल में, २. आगे, ३. पश्चिम के देश, ४. नहीं, ५. बुरे विचारवाला, ६. सितारे-जैसा, ७. चाँद के पास, ८. सोने-सहित, ९. साफ।

अथा तारीख लाया तो यो गुलजार,
इग्यारह सौं कु कम थे तीस-पर-चार।

निशाती अपने बारे में लिखता है कि मैं गजलें (प्रशंसात्मक पद्य) नहीं कहता, लेकिन इससे मेरे सिद्धहस्त होने में कोई बाधा नहीं; क्यों कि निज़ामी और सादी जैसे (फारसी के महा-कवियों ने) भी गजलें नहीं कहीं। मैं भी उन्हीं की तरह मस्नवी ही के द्वारा प्रसिद्धि और सन्मान प्राप्त करूँगा। यदि मैं बादशाह के दरबारियों और शायरों में होता, या जीविकार्जन के झमेलों से पूरी तौर से मुक्त होता, तो निश्चय ही कोई अत्यन्त महान् कृति अपनी कीर्ति के लिए छोड़ जाता।

१. फूलवन

दक्खिन के वजही और गौवासी जैसे कवि अभिमान में चूर थे, किन्तु निशाती एक निर-भिमान कवि था। उसे इतने ही से सन्तोष था, कि वह बड़ा आदमी नहीं है, तो भी लोग उसका सम्मान करते हैं। वह अपने समसामयिक कवियों—वजही, गौवासी, नस्रती, सनअती—से प्रशंसा की आशा नहीं रखता, न अपने ग्रंथ में उनका नाम ही लेता है, लेकिन अपने से पहिले के कवियों फिरोज, महमूद, खलील अहमद और शौकी के लिए सम्मान प्रदर्शित करता है। 'फूलवन' लिखने का खयाल उसे कैसे आया, इसके बारे में वह लिखता है*—

'बिसाते' जो हिकायत[1] फारसी है।
मुहब्बत[2] देखने की आरसी है।
इबारत[3] सब किसी के ने समझता।
तुझे है फारसी में दस्तका[4] आज।
न करसी[5] तरजुमा भी कोई तुझ बाज[6]।
इसे हरक्स के तैं[7] समझा कुँ तुँ बोल।
इसे हरक्स के तै समझा कुँ तुँ बोल।
दखिन की बातसों सार्या कूँत खोल।
खुदा के पास मँग हिम्मत बुलन्दी।
नजाकत सों कराय मैं नक्शबन्दी।
अहै ताजा चमन पैवस्ता[8] मेरा।
शगुफ्ता[9] है सदा गुलदस्ता मेरा।
लताफत[10] में है ज्यों खूबाँ[11] की अबरु[12]।
हरेक मिसरा[13] जो है बर्जुस्ता[14] मेरा।

---

* यु० द० म०, पृ० ८४।

१. कथा, २. प्रेम, ३. वाक्य, ४. अधिकतर, ५. करेगा (पंजाबी), ६. तेरे बिना। ७. हरेक के लिए, ८. सुबद्ध, ९. प्रफुल्लित, १०. मंजुलता, ११. सुन्दरियों, १२. भौं, १३. वाक्य, १४. सोर्निर्मित।

दिया है जगकूं रौनक यकतरफसे[१]।
है यो बाज जो वो रास्ता मेरा।
करम[२] सों हक के[३] पाया आज राहत[४]।
फलकसौं[५] था जो खातिर[६] खस्ता[७] मेरा।

'फूलवन' की रचना में कवि सफल हुआ है, इसमें शक नहीं। १६-१७वीं सदी की दूसरी क्खनी कविताओं की तरह फूलवन में भी अरबी-फारसी के शब्दों का अगाध प्रयोग हुआ है, केन साथ ही हिन्दी-शब्दों का भी खुलकर उपयोग किया गया है, जैसा कि 'फूलवन' नाम मालूम होता है। प्रोफेसर ज़ोर (हैदराबाद) ने निशाती और उसकी कविता के बारे में खा है—'फूलवन' निस्संदेह उन थोड़े से पद्यों में से है, जो सच्चे अर्थों में गम्भीर छानबीन के रणाम हैं। इसके लेखक का वास्तविक उद्देश्य था, एक सुन्दर साहित्यिक तथा मनोरंजक तक लिखना, न कि फारसी कहानी का सूखा अनुवाद करना।...भाषा और वणन-शैली के ुसार यह दक्खिन के सर्वश्रेष्ठ मसनवियों में से है। इसका छन्द भी खास और चित्ताकर्षक है। वे अपने मन की कल्पना और वास्तविक भावोद्रेक को पग-पग पर प्रकट करने का इच्छुक खलाई पड़ता है। रीति-रिवाजों और विवाह-प्रथाओं के जो वर्णन उसमें आये हैं, वे बिलकुल ाभाविक तथा मानव-जीवन के अनुकूल हैं। वहाँ कुतुबशाही शासनकालीन जीवन और ति-रिवाजों के बढ़िया चित्र हैं*।

कवि के सौ बरस बाद सिघोट (कड़पा, आन्ध्र) की एक जागीरदारनी की प्रेरणा से ुम्मद हैदर जाफर-पुत्र ने 'फूलवन' में समनवर और हुमायूँ का ब्याह और जोड़ दिया। जागीर-रनी ने अपने हस्तलेखों को सुन्दर चित्रों से अलंकृत कराया। यह मूल सचित्र हस्तलेख लन्दन इंडिया ऑफिस-पुस्तकालय (संख्या १०३) में अब भी मौजूद है।

अपने समकालीन दूसरे दरबारी कवियों की तरह निशाती ने भी सुल्तान अब्दुल्ला ुब की प्रशंसा में कुछ पंक्तियाँ लिखी हैं, जैसा कि—

करूँ तारीफ में उस ताजवर का।
समझता है जिने कीमत गुहर का।
शाहों का शाह अब्दुल्लाह ग़ाज़ी।
अछो जम हक्सों उसके पेशवाज़ी।
सआदत के नयन का नूर है तूँ।
शुजाअत के गगन का सूर है तूँ।
अजब नैं देख तेरी नौशेरवानी।
करें बकर्‍याँ की गुरगाँ पासबानी।

---

१. सर्वत्र, २. कृपा, ३. सत्य, भगवान् की, ४. आराम, शान्ति, ५. आकाशसे, भाग्यसे, दिल, ७. श्रांत। *उर्दू शहपारे, पृ० १०९।

अगर देगा जो तेरे अदुल हद बाँध।
रखेगा कर जतन केतनाकूं (तू) चाँद।
जघाँ लग मेहर चरखे अख्तरी है।
जघाँ लग घन पे जौहरा-मुश्तरी है है।

(१) कथा—

कंचन पटन नगर का बादशाह एक फ़क़ीर को स्वप्न में देखकर उसका भक्त बन गया। बड़ी खोजके बाद उसे फ़क़ीरका साक्षात्कार हुआ। फ़क़ीर ने उसे कितनी ही कहानियाँ सुनाई—जिनमें से एक को फूलवन का विषय बनाया गया है। कश्मीर के बादशाह के बाग में एक फूल का पौधा था, जिसपर मुग्ध हो एक बुलबुल रोज़ आकर उसे छेड़ती थी। बेचारा फूल कुम्हला जाता था। इस अपराध के लिए बुलबुल को पकड़कर बादशाह के सामने लाया गया। बुलबुल ने अपनी रामकहानी कही—मैं खुतन के एक सेठ का लड़का हूँ। वहाँ एक भगत की कन्या पर मुग्ध हो गया। दोनों एक दूसरे से मिलने में सफल हुए। जब यह बात भगत को मालूम हुई, तो उसने शाप दे दिया, जिससे लड़की फूल बन गई, और मैं बुलबुल। बादशाह ने इस्म-आजम (महामंत्र) की अंगूठी का पानी छिड़क दिया, और दोनों असली रूप में हो गये। बादशाह के कहने पर वह और भी कितनी ही कथाएँ सुनाता रहा। अन्तिम कथा अजम (ईरान) की राजकुमारी समनवर और मिस्र के राजकुमार हुमायूँ के ब्याह की है।

कविता के नमूने देखिए (प्रियतमा का नख-शिख वर्णन)*—

मेरा बाप था सौदागर खुतन का। न था पर्वा उसे कुछ मालो-धन का॥
बडा था भौत सब सौदागरोंमें। अथा मशहूर सालम[१] बंदराँ[२] में॥
होकर मशहूर था सौदागरी सूँ। कते[३] थे कारवाँ-सालार[४] उसकूँ॥
बडे थे उसनके[५] मोहराके अंबार[६]। देगाँ सो थे रुपय्ये होर दीनार[७]॥
तिजारत[८] की बहुत सोरात[९] सों वो। गया इक मर्तबा गुजरात कूँ सों॥
अथा मैं उस सफर में उसके संगात। घड्या[१०] सो क्या कहूँ उस ठार पर घात[११]॥
मेरी उस वक्त थी अव्वल जवानी। नवी अँपडी[१२] थी मुजकूँ शामदानी[१३]॥
अथी उस ठार यक ज़ाहिद[१४] कूँ बेटी। फ़रिश्ताखूय[१५] तिस आबिद[१६] कूँ बेटी॥
चतुर, चंचल, सरगकंठल[१७] सुहानी। न उसका कोई था सूरत में सानी[१८]॥
चँदर आधा कहूँ मैं क्यों पेशानी[१९]। चँदर आधा नहीं वैसा नुसानी॥
मँवाँके क्यों कहूँ मोहराब[२०] थे कर। कहाँ वो नूर[२१] मेहराबा के ऊपर॥
नयनकूँ नरगिसाँ कहना है नासाज़[२२]। चमकने नरगिसाँ में काँ है वो नाज़[२३]॥

---

* उ० श०, पृष्ठ २२७–२८। १. सारे, २. बन्दरगाहों, ३. कहते, ४. सार्थवाह, ५. उसके पास, ६. राशि, ७. अशर्फी, ८. व्यापार, ९. रुचि, १०. घटित हुआ, ११. घटना, १२. मिली, १३. हर्ष, १४. भक्त, १५. देव-स्वभावा, १६. पुजारी, १७. स्वर्गकंठी, १८. समान, १९. ललाट, २०. धनुषाकार द्वार, २१. प्रकाश, २२. अनुचित, २३. लालित्य, कटाक्ष।

कहूँ रुखसार कूँ क्यों उसके लाला । हरेक लाले के हैं दरम्यान[1] काला ।।
मैं सिरते पाँव लग उस मोहिनी का । कि था त्यों, क्या सिफत[2] करने सकूँगा ।।
हवस[3] उस देखने का मुजकुँ आया । तमाशे कुँ मेरा दिल सिर उचाया[4] ।।
अवल था हार कुछ आखिर हुआ होर । पिरित की चटपटी मुजकूँ लगी जोर ।।
जो याद आती अथी[5] वो चुलबुली[6] मुज । तो होती थी सीने में गुदगुली[7] मुज ।।
पियारीका पिरित प्यारा लग्या सो । पिरितका थंड होर बारा[8] लग्या सो ।।
लगे च मा होर नयनाँ उबलने । लग्या जो शमा होकर जीव जलने ।।
धुआँ आहाँका सिरपर हो बदल छाय । गरम भायाँ हसों होंटों पर छले[9] आय ।।
कली नमने[10] हुआ दिल तंगो-नाशाद[11] । हुआ टुकडे गरे-बाँ[12] फूलकी नाद[13] ।।
पिरितकी आग मो दिल जल हुआ राख । सबूरी[14] का जो था दामन[15] हुआ चाक ।।
जो उसकूँ देखने का मुज हुआ ज़ौक[16] । जो आया दिलमने मेरे अपन[17] शौक ।।
हरेक निस जाउँ चंचल की गली कूँ । हलो[18] छुपकर देखन उस चुलबुली कूँ ।।
यकेला उस गली में कोइ न दूजा । जलूँ मैं चाँदनीकी धूपमें जा ।।
कर उस चंदरबदनके घर तरफ मूँ । हरेक निस नैनके तारे बिखेरूँ ।।
हरेक शब[19] ग़म सों मै वो न अछै[20] जां । धुयें मों आह के बाँधूँ खुला वाँ ।।
करूँ हर शब नयन सों आबपाशी[21] । उसासोंकी करूँ दमसों फराशी[22] ।।
केतक दिनके पछीं उम्मेद[23] का सूर । मेरे बख्ताँ[24] के नैनाकूँ दिया नूर ।।
यकायक झाँक कर देखी मुजे नार । मेरे होर उसके दो दीदे[25] हुये चार ।।

पुस्तक को समाप्त करते हुए निशाती लिखता है*—

किया यो इब्तिदा[26] देख माहरज्जब । कमालत कूँ पऊँच्या ईदकूँ सब ।।
यो 'फूलवन' तीन महीने तक लिकाया । पुनम का चाँद हो पूरा तो आया ।।
गनितमें आली सो यकबार बेताँ[27] । है सत्रासो पो दोबीस आर (१७४४) बेताँ ।।
अछो[28] शह कूँ मुबारक[29] 'फूलवन' यो । नजर में जम[30] अछो शहकी चमन यो ।।
उनो पर भी अछो दायम[31] मुबारक । जो को इस बातका धरता है पारक ।।
लिखना रेकूँ जम[32] बख्शो[33] सआदत[34] । देवे दायम[35] पढ़नहार कूँ राहत ।।
मुसल्मानों सों उम्मेद है मुज । सखुनदानाँ[36] सो यो उम्मेद है मुज ।।
करेंगे तो मेरा यो 'फूलवन' सैर । कहो यक बार अछो कर आकबत[37] खैर[38] ।।
किया मै खत्म[39] खातिम[40] के इसम[41] सों । मुहम्मद मुस्तफ़ा मौलल्-अजम[42] सों ।।

---

१. बीच में, २. गुण, ३. लालसा, ४. उठाया, ५. थी, ६. चंचल, ७. गुदगुदी, ८. वर्षा, ९. छाले, १०. फूल-जैसी, ११. दुःखी, १२. अंचल, १३. फूल की भाँति, १४. संतोष, १५. किनारा, १६. लालसा, १७. अपने को, १८. धीरे, १९. रात, २०. है, २१. जल सींचना, २२. फर्श बिछाना, २३. आशा, २४. भाग्य, २५. आँखें। * यु० द० म०, पृ० ८६–८७। २६. आरम्भ, २७. शेर, २८. रहो, २९. मंगल, ३०. सदा, ३१. सदा, ३२. सदा, ३३. प्रदान करो, ३४. सौभाग्य, सदाचार, ३५. सदा, ३६. वाणी-मर्मज्ञों, ३७. भविष्य, ३८. शुभ, ३९. समाप्त, ४०. दिल, ४१. नाम, ४२. मुहम्मद, सिफारिश करनेवाले दुनिया के स्वामी (गूँगों का स्वामी)।

भाग ३

उत्तरकाल (१६५७–१८४० ई०)

§२३. नस्रती (१६५७ ई०)

१. जीवनी

(मुल्ला मियाँ) नस्रती (मृ० १६७१ ई०) बीजापुर के ही नहीं, सारे दक्खिन के कवियों में बहुत ऊँचा स्थान रखता था। वह उस समय मौजूद था, जब औरंगजेब दक्षिण-विजयमें लगा हुआ था। इसने अपने 'अलीनामा' में मुगलों के साथ हुए युद्ध का भी वर्णन दिया है। यद्यपि १६३६ ई० तक शाहजहाँ ने बीजापुर और गोलकुंडा को अपना करद बना लिया था, किन्तु जब औरंगजेब ने दक्खिनी रियासतों के अस्तित्व को मिटाना चाहा, तब 'मरता क्या न करता' के अनुसार बीजापुर और गोलकुंडा ने तलवार उठाई। नस्रती जहाँ 'मनोहर-मधुमालती' के वृत्तांत को 'गुल्शनेइश्क' के नामसे लिखकर शृंगारी कविता का सफल रचयिता है, वहाँ 'अलीनामा' तथा 'नौ कसीदे' (प्रशस्ति-काव्य) उसे वीर रस का कवि सिद्ध करते हैं।

नस्रती को गारसाँ-द-तासी ने ब्राम्हण बतलाया है, किन्तु उसके अपने वाक्यों से वह और उसके कई पीढ़ी के पूर्वज नौमुस्लिम नहीं मालूम होते। उसका परिवार दक्षिण के महान् सन्त ख्वाजा बंदानेवाज गेसूदराज का अनुयायी था*—

ब-हम्दुल्ला[१] कुरसी-ब-कुरसी[२] मेरी। चली आई है बंदगी में तेरी॥
जो हूँ मैं भी बंदा असीरा[३] हुआ। जो आया हुँ तुज बंदगी में सदा॥

नस्रती का खानदानी पेशा सैनिक का था। उसके सैनिक पिता ने पुत्र की शिक्षा-दीक्षा की ओर बहुत ध्यान दिया था—

जो मैं असल में सिपाही अथा। फ़िदाचर[४] दर्गहे-पादशाही[५] अथा॥
जो था मुंज पिदर[६] यक शुजाअत-मआब[७]। कदीम[८] यक सलहदार[९] जमए-रिकाब[१०]॥
ओ शह-कामपर जिन्दगानी मने[११]। कमरबस्ता[१२] था जाँफशानी मने[१३]॥
बनाने जनम अपना नेक काम। अपस-जिन्दगी[१४] में किया खूब काम॥
नज़र धरके मज तबियत[१५] में सदा। रख्या नें मुंजे अपसते कर जुदा॥
.... । फिरे ले बुजुर्गों[१६] के मज्लिसमने[१७]॥
मुअल्लिम[१८] जो मेरे जिते खास थे। धरनहार ओ मुंज सों इख्लास[१९] थे॥

---

* उ० श० पृष्ठ ५२, ५३।

१. अली की स्तुति के साथ, २. पीढ़ी-दर-पीढ़ी, ३. बंधा, ४. नौछावर, ५. शाही दरबार, ६. पिता, ७. वीरतास्रोत, ८. प्राचीन, ९. शस्त्रधारी, १०. असवार, ११. जीवन में, १२. कटिबद्ध, १३. प्राण नौछावर करने में, १४. अपनी जिंदगी। १५. हृदय, मन, १६. वृद्ध, बड़े, १७. सभा में, १८. अध्यापक, १९. स्नेह।

नस्रती दक्खिनी हिन्दी का महान् अन्तिम कवि है। यह प्रसन्नता की बात है, कि जहाँ दूसरे हिन्दी (दक्खिनी या उत्तरी) कवियों की वैयक्तिक बातों का पता लगाना मुश्किल है, वहाँ नस्रती ने अपने बारे में काफी सामग्री जमा कर दी दै। नस्रती स्वाभाविक कवि था। उसका मन कैसे सैनिक जीवन में लगता? कविता की ओर अपने रुझान के बारे में उसने लिखा है*—

कुछ एक जब सँभाला मैं अपना शऊर[१]। गया कर किताबा पे अकसर अबूर[२]॥
निझाया[३] हरेक तरहका फूलवन[४]। रख्या दिलमें तिस बागबानी के फ़न[५]॥
देख्या जों जो हर बज्म[६] में कर खियाल। हरीफाँ[७] क्यों हैं सो सरमस्त[८] हाल॥
(सो) भी मुंजपे माशूक हो शौक था। अपसके नजारे[९] में नित जौक[१०] था॥

नस्रती को एक और सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह और युवराज अली प्रायः एक ही आयु के थे। ऐसे प्रतिभाशाली तरुणों को साथ रखना शिक्षा के लिए उपयोगी समझ उसे युवराज के साथ रख दिया गया। अली को नस्रती ने अपना गुरु कहा है, जिसमें कितनी सभ्यता और कितना दरबारी शिष्टाचार है, यह कहा नहीं जा सकता। अली १९ वर्ष की आयु (१६५६ ई०) में औरंगजेब के बादशाह बनने के दो साल पहले अली आदिल शाह द्वितीय के नामसे गद्दी पर बैठा। अली आदिल के मरने (१६७२ ई०) पर सिकन्दर आदिल (१६७२-८६ ई०) बीजापुर का अन्तिम बादशाह हुआ। इसी के समय औरंगजेब ने बीजापुर विजय कर आदिलशाही राजवंश को खतम किया।

नस्रती ने अली आदिल को गुरु मानते कहा है†—

सुरजबाज[११] ना पकडे रंग रतन। चंदर बिन न खुशबू धरे फूलबन॥
किये बाज[१२] उस्ताद कोई तबियत[१३]। न कोई हो सके काबिले-हैसियत[१४]॥
ब-हम्दुल्ला[१५] यह क्या बडे बख्त[१६] आज। न उस्ताद कोइ मुझअलीशाह बाज॥
कि शह मुज तबीयत की तेज़ीकुँ पाल। सिखाया है जबते बडे दौड चाल॥

अली आदिल ने गद्दी पर बैठते ही अपने वयस्क कवि की ओर विशेष ध्यान दिया और वह उसे बराबर संरक्षण-प्रोत्साहन देता रहा‡—

तिलक तख्त[१७] शहकूँ मुबारक हुआ। अपन सायमें-हक बतबारक हुआ॥
तो था ऐन[१८] शह कामरानी मने[१९]। जहाँ बानी वो शादमानी[२०] मने॥
बुला भेजे बंदेकु तिस हालमें। नज़र हर मेरे बेबहा[२१] माल में॥
परखता चल्या यों रतन सरबसर। ....॥
वहीं जगमें बंदा रहे बेनियाज़[२२]। रख्या अपनी खिदमत मने[२३] सरफराज़[२४]॥

---

*वही, पृ० ५४। १. होश, २. पारंगमन, ३. ध्यान से देखा, ४. फुलवाड़ी, ५. कला, ६. सभा, ७. शत्रु, ८. मतवाला, ९. दृश्य, १०. शौक।

† यु० ब० म०, पृष्ठ ५६। ११. सूर्य बिना, १२. किये बिना, १३. शिक्षा, १४. पद में योग्य, १५. अला की प्रशंसा से, १६. भाग्य, ‡ वही, पृष्ठ ५८। १७. तिलक-सिंहासन, १८. बिलकुल, १९. प्रताप में, २०. जगपालन, २१. अनमोल, २२. अभागा, वंचित, २३. सेवा में, २४. भाग्यशाली।

फिर लिखता है—

जनम खाम[1] था सो दखिनका कलाम[2] । हुआ पुख्ता[3] तुज-तर्बियत ते तमाम ।।
बडे शासरां शेर नाजुक[4] बनाये । कि जिस वस्फ[5] कालिब[6] में खूबाँ[7] के जाय ।।
समझना है बारिक दुनिया का फन[8] । जो अव्वल[9] अथा[10] क्या सो शेरे-दक्खिन[11] ।।
इताके जो कै शेर सो सरसरी[12] । सुने तो कहे मह्‌बा[13] अनवरी[14] ।।

तथा†—

लगाया तेरा तुँ च[15] अपस[16] हितसों पाल । जोजो जौहरी जगकुँ होय हर निहाल[17] ।।
शहा[18], गर्चे एक जूना पाता[19] हुँ मैं । वले[20] नाँव सो तुज बिकाता हुँ मैं ।।
न तूँ जानता है कि हर हाल में । जो तेरेच[21] खासा[22] का हूँ माल मैं ।।
मुझे तर्बियत[23] तूँ किया है कि कर[24] । दिखाया हुँ कर आज ऐसा हुनर[25] ।।
जो तारिफ़ सुन जिसकी धर इस्तियाक[26] । ज्ञँगावें समझ तुहफ़ा[27] अहले-इराक[28] ।।
तेरे दौर[29] में बेहुनर[30] बाद[31] है । हुनरमंद है सो जिते शाद[32] है ।।

और भी*—

अँगे[33] तब निकल मुंज उपरते चली । सुसूखी शाख जब बार[34] धरते चली ।।
मेरा मन दिस्या साफ़ गौहरका खन[35] । अँगे देनहारा अमोलक रतन ।।
रतन खनते ते निकले जो अव्वल सुनो । ले जावें शहाके अँगे राहरो[36] ।।
मेरा शाह यो जोकि अहै जौहरी । वो शहजादगी में अथा मुश्तरी[37] ।।
नवे जाँद सा शह जो बाला[38] अथा । चरंत बद्र[39] दिन-दिन उजाला अथा ।।
मे ी तव्यकी खन[40] ककुँ काबिल[41] पिछान । "न कोइ खन है" कह इस मुकाबिल[42] पिछान ।।
धरनहार अक्सर[43] असर-मेह्र[44] की । रख्या मुंज तरफ़ नित नजर मेह्र[45] की ।।
जो बखशा[46] जम[47] उस मेहने आबो-ताब[48] । हरेक फ़ेल[49] रंगी हुआ आफ़ताब[50] ।।

o o o

मुंजे यो सखुन[51]-बादशाह याद है । पछे पीर[52] के वस्फ उस्ताद[53] है ।।
मुज-उस्ताद उस्तद-आलम[54] अछै[55] । किया इल्म[56] अज्बर[57] जिसे जम[58] अछै ।।

---

१. कच्चा, २. वाणी, ३. परिपक्व, ४. कोमल, ५. जिसका गुण, ६. हृदय, ७. सुन्दरियों, ८. कला, ९. प्रथम, १०. था, ११. दक्खिनी कविता, १२. साधारण, १३. शाबाश, १४. फारसी का कवि। †वही, पृष्ठ ५९। १५. तू ही, १६. अपने, १७. सफल-मनोरथ, १८. ऐ बादशाह, १९. पुराना पत्ता, २०. लेकिन, २१. तेरे ही, २२. निजी खेती, २३. शिक्षा, २४. कैसे करके, २५. शिल्प, २६. शौक, २७. भेंट, २८. इराकवाले, २९. शासन-काल, ३०. शिल्पविहीन, ३१. नहीं, ३२. प्रसन्नता। *वही, पृष्ठ ५४, ५५। ३३. आगे, ३४. फल, ३५. खान, ३६. बटोही, ३७. खरीदार, ३८. युवा, ३९. पूर्णचंद्र, ४०. खान, ४१. योग्य, ४२. समान, ४३. प्रायः, ४४. कृपा का प्रभाव, ४५. कृपा, ४६. प्रदान किया, ४७. सदा, ४८. चमक, ४९. कार्य, ५०. सूर्य, ५१. वाणी, ५२. गुरु, ५३. गुरु का गुण, ५४. जगद्‌गुरु, ५५. है, ५६. विद्या, ५७. याद, ५८. सदा।

मुंजे तर्बियत[१] तें किया है अगर। देखाया हुँ कर आज ऐसा हुनर॥
मेरा तबा यक बागे-महकबूब है। जिसे बार-फल-फूल अपरूप हैं॥
लगाया तेरा तूँच पस तपसों पाल। जोजो जौहरी जगकुँ होय हर निहाल॥
मुंजे तर्बियत कर तुँ ज़ाहिर किया। शऊर[२] इस हुनर का देश शायर किया॥
वगर्ना[३] न था मुंज यो कस्बे कमाल[४]। कता[५] हुँ एता में सखुन[६] हस्बे हाल[७]॥
खसूसन[८] अलीशाह आदिल अली। तेरा नाँव कारी जो है अतिबली॥
ओ मुंज मनकुँ पर्वर्दा[९] बेहतर किया। सुबासाँसों सब जग मुअत्तर[१०] किया॥

नस्रती दरबार का महाकवि, सुल्तान का कृपापात्र ही नहीं लंगोटीयार था, तो भी जान पड़ता, शिवाजी और औरंगजेब से लोहा लेने के कारण अलीआदिल उदारता-पूर्वक आर्थिक सहायता कवि की नहीं कर पाता था, अथवा कंजूस था या नस्रती स्वयं फ़जूल-खर्च था; क्योंकि नस्रती घर की अवस्था से असंतुष्ट था। ऊपर से असंस्कृत पास-पड़ौसी उसके मन को चैन नहीं लेने देते थे*—

ऐ शह रतनका खन[११] हुआ मुज-मन सो तैरा फ़ैज़[१२] हैं।
कुछ कस्ब[१३] मौरूसी[१४] न होय हक्का[१५] कि तुज यो शायरी॥
चुन चुनके आज यों क़ाफिग्रा[१६] क़िस्सा क़सीदे[१७] में किया।
यो बार[१८] ना हल्का लगे पन तबा[१९] की ज़ोरावरी[२०]॥
हक्क़ा कि ज़ाहिर[२१] यों करूँ सेह्रे[२२] हलाल इस बातमें।
जो मुज क़लम हो अज्दहा[२३] बिसराये सेह्रे - सामरी[२४]॥
पन क्या करूँ ऐ शाह, मैं कै बात बे - सामान[२५] हूँ।
अव्वल तो ऐसा घर नहीं जहँ ठार हो राहत[२६] भरी॥
घर भी नन्हा यकहै वले[२७] दायम[२८] है कइ इल्लत[२९] उसे।
लड़का नूँ[३०] हम्साया[३१] बद वैसी च भुइँकी बदतरी॥
मुतलक़[३२] अराजल[३३] कौम वो है गिर्द[३४] ऐसे बेहया[३५]।
समझें वो गाली खावकूँ समझें गमत[३६] होर मस्खरी॥
जिनकी ज़बाने लाम-काफ़[३७] आता है शैताँ सीखने।
साँची बने जब (वो) कर तालीम[३८] जंगे-ज़र्गरी[३९]॥

---

१. शिक्षा, २. होश, ज्ञान, ३. नहीं तो, ४. काम की पूर्णता, ५. कहता, ६. वाणी, ७. वस्तुस्थिति के अनुसार, ८. विशेषतः, ९. पालन कर, १०. सुगंधित। * वही, पृष्ठ ६१–६२। ११. खान, १२. कृपा, १३. पेशा, १४. पैतृक, १५. सचमुच, १६. तुकबंदी, १७. प्रशंसात्मक काव्य, १८. भार, १९. तबियत, २०. जबर्दस्ती २१. प्रकट, २२. जादू, २३. अजगर, २४. सामरी का जादू, २५. साधनहीन, २६. आराम २७. लेकिन, २८. सदा, २९. कई कठिनाइयाँ, ३०. नालायक, ३१. पड़ोसी, ३२. बिलकुल, ३३. नीच, ३४. चारों ओर, ३५. निर्लज्ज, ३६. मौज, ३७. उच्चारण, ३८. शिक्षा, ३९. सोनारी युद्ध।

सोने मँगे[1] तो घरम टुक ना-तनमें उपरी ल्हो छिटक।
हो जोंक लगता हर मकन करता है हर पिउ नश्तरी॥

अपनी कविता के सम्बन्ध में काव्य-मर्मज्ञ मित्र इब्न अब्दुस्समद की बात उद्धृत करता है*—

दखिनमें तु है आज नस्रत[2] क़रीं[3]। बुलंद[4] शेरके फ़न[5] का सेह्रफरी[6]॥
जो जिस ठार परगट तेरा छंद होय। वहाँ हासिदाँ[7] की ज़बाँ बंद होय॥
ग़नम[8] का ग़नीमाँ[9] में तुझ फ़न[10] अछै[11]। तेरे सामने तानाज़न[12] ज़न[13] अछ॥
ददे[14] तेरी शोहरत[15] सो बूटे रहें। देखें आंखिया रूप फूरें[16] रहे॥
रखेगा तूं जिस ठार पर आक़दम। सकत किस जो वाँ आ सके मार दम[17]॥

'अलीनामा' में अपनी कविता के बारे में खुद कहता है†—

मेरी बातमें लाफ़[18] नहीं बेखिलाफ़[19]। कि नादान[20] का है हुनर ऐन[21] लाफ़॥
कि यो शेर में आज इस धात सात[22]। कहया सो बड़े दबदबेके सँगात॥
किया मैं तो क़िता-नज़र[23] लाफसों। वले[24] दाद[25] है अह्‌ले-इन्साफ़[26] सों॥
कि क्यों मैं पकड़ आज बात यकनबी। ज़बूं[27] बातकूं कर दिखाया क़बी[28]॥
अवल के अगर लोग बरनाव पीर[29]। कते[30] थे कि है शेर-दखिनी हक़ीर[31]॥
हक़ीक़त में उनकी तरफ़ हक़[32] अथा[33]। कि तब शेर बेमाया[34] मुत्लक़[35] अथा॥
हुआ जबते उस्ताद-आले[36] **अली**। सखुन कूँ सकत दे किया महबली॥
सज़ावार[37] तहसीन[38] है ये शेर आज। न कोइ रख सके बात हासिदके बाज[39]॥
पसँद शेर करना है बस-आक़िलाँ[40]। अपस ठार अछो[41] हासिदाँ[42] जाहिलाँ[43]॥

नस्रती की योग्यता को उसके समकालीन फारसी 'तारीख अहवाल सलातीन बीजापुर' का लेखक खानी खान एवं 'बिसातीनुस्सलातीन' के लेखक जुबेरी ने भी माना था।

२. **कृतियाँ**—नस्रती की तीन कृतियाँ मिलती हैं—

(१) 'गुल्शने-इश्क', सन् १६५७ ई० (१०६८ हि०) में लिखी।

(२) 'अलीनामा', सन् १६६५ ई० (१०७६ हि०) में लिखी।

---

१. सोना चाहे। * वही, पृष्ठ ६२। २. विजय, ३. नजदीक, ४. ऊँचा, ५. कवि-कर्म, ६. आलाधारी, ७. ईर्ष्यालु, ८. घन, ९. शत्रु, १०. कला, ११. है, १२. ताना मारनेवाला, १३. औरत, १४. द्वंद्वी, शत्रु, १५. प्रसिद्धि, १६. फूहड़, १७. साँस। † वही, पृ० ५८। १८. डींग, १९. विरोधी, २०. मूर्ख, २१. बिलकुल, २२. इस ढंग से, २३. अलगाव, २४. लेकिन, २५. न्याय, २६. न्यायियों, २७. बुरी, २८. कभी, २९. गुरु, ३०. कहते, ३१. हीन, ३२. सच्चाई, ३३. था, ३४. प्रतिष्ठाहीन, ३५. बिलकुल, ३६. जगद्‌गुरु, ३७. पात्र, ३८. प्रशंसा, ३९. ईर्ष्यालु के बिना, ४०. बुद्धिमानों के बस, ४१. रहो, ४२. ईर्ष्यालु, ४३. मूर्ख।

३. 'क़सीदे', (युद्ध-वर्णन), की संख्या नौ है।

२. गुल्शने-इश्क (प्रेमवाटिका)

(१) कथा का उद्गम—

यद्यपि पुस्तकका नाम फारसी है, किन्तु है यह मनोहर और मधुमालती की प्र प्रेमकथा। भूवभूति के 'मालतीमाधव' (माधव-मालती) का प्रभाव इस प्रेम-कथा पर किसी अवश्य कुछ रहा, किन्तु आगे कथा बहुत बदल गई है। हिन्दी में ऐसी प्रेमकथाओं के लिखने सर्वप्रथम कुतुबन, मंझन, जायसी जैसे मुसल्मान कवि थे, जिनके सामने फारसी में लिखी मस्न (कथाकाव्य) मौजूद थीं। कुतुबन ने अपनी 'मृगावती' जौनपुर के बादशाह हुसेनशाह के आ रह १५०१ ई० (९०९ हि०) में लिखा था, उससे १८ वर्ष बाद १५१९ ई० (९२७ हि० जायसी ने अपनी 'पद्मावत' लिखनी शुरू की, जिसकी समाप्ति शेरशाह के शासनारंभ (१५ ई०) के बाद हुई। १५१९ ई० में जायसी के सामने 'मृगावती', ''मधुमालती'' मौजूद थीं‡ -

राजकुँवर कंचनपुर गयऊ। **मिरगावति** कहँ जोगी भयऊ॥
साधे कुँवर खंडावत जोगू। **मधुमालति** कर कीन्ह वियोगू॥

'मिरगावती' और 'पद्मावती' की भाँति मधुमालती भी अवधी भाषा में लिखी गई और जौनपुरकाल में—मधुमालतीके कवि (मंझन) के बारे में विशेष मालूम नहीं है, और सम्पूर्ण मधुमालती भी उपलब्ध है। उसके कई फारसी अनुवाद तथा नसती का यह व बतलाते है, कि मंझन की कविता का बहुत आदर हुआ था*।

(१) मंझन की 'मधुमालती' का प्रथम फारसी पद्यबद्ध अनुवाद शाहजहाँ के १६४९ ई० (१०५९ हि०) में किसी अज्ञात व्यक्ति ने 'कुंवर मनोहर व मदुमालत' के नाम से था, जिसके दो हस्तलेख ब्रिटिश म्युजियम (लन्दन) में मौजूद हैं। यह ग्रंथ शेख मंझन ग्रंथ का अनुवाद है, यह स्वयं बतलाया है†—

तुफ़ैले हज्रते औलादे आदम। व-यम्नो हिम्मते असहाब अकरम्॥
चुनाँ अन्देशा बरमन् गश्त रौशन। कि मधुमालत ज़बाँ हिंदीऽज़-मंझन॥
बगोयम् फारसी दर शेर-अबयात। ....॥
हज़ाराँ आफरीं बर-शेख **मंझन**। जे-शेरे हिंदवी बूदास्त पुर-फ़न॥

(२) मंझन की कृति का दूसरा फारसी अनुवाद आकिल खां राज़ी ने १६५४ (१०५६ हि०) में 'मेह्रो माह' (सूर्य-चन्द्र) के नाम से किया। इसके हस्तलेख लन्दन में इं ऑफसि और ब्रिटिश म्युजियम के अतिरिक्त बोडलियन पुस्तकालय (ऑक्सफोर्ड) तथा पेरि बिब्लोथिक नाश्योनल में मौजूद हैं।

(३) तीसरा फारसी अनुवाद माधोदास गुजराती ने सन् १६८६ ई० (१०९८ हि में किया, जिसकी एक प्रति इंडिया ऑफिस-पुस्तकालय में मौजूद है।

---

‡ पदमावत।* देखिए 'हिन्दी-साहित्य का इतिहास' भी (रामचन्द्र शुक्ल, बना २००५ संवत्, पृष्ठ ९८)। † यु० द० म०, पृ० २७४।

(४) चौथा गद्य-अनुवाद किसी अज्ञात लेखक ने 'मेह्रो माह' के नाम से किया, जिसकी एक प्रति ब्रिटिश म्युजियम में है।

मंझन की कृति के फारसी अनुवाद नस्रती के ग्रंथ के पहिले हो चुके थे। नस्रती ने यह नहीं लिखा है, कि उसने मंझन की 'मधुमालती' या उसके अनुवाद के सहारे अपने ग्रंथ को लिखा। किन्तु, उसके सामने फारसी और हिन्दी की 'मधुमालती' थी*—

मआनी[१] की सूरतकी है आरमी। कह्या शेरे दक्खिनकूँ जों फारसी॥
फसाहत[२] में कर फारसी खुशकलाम[३]। धरे फ़ख्र[४] हिन्दीवचनपर मुदाम॥
वगर शेरे हिन्दीकी बाजी-हुनर[५]। न सकती हैं तथा फारसीमें सँवर॥
मैं इस दो हुनर[६] के खुलासा[७] कुँ पा। कह्या शेर ऐसा दोनो फ़न मिला॥
देवें दाद[८] सुन फ़ारसी-शेरदाँ[९]। जो हिन्दी सुनें भी कहें दिलसों ताँ॥
आ देखा अगर हो हसद सों कबाब। रखी बोल तना जो बखिनी किताब॥

(२) **कथा-संक्षेप—**

पंडित रामचन्द्र शुक्ल ने मंझन के काव्य पर लिखा है†—

"मृगावती के समान मधु मालतीमें भी पाँच चौपाइयों (अर्धालियों) के उपरांत एक दोहेका क्रम रखा गया है। पर मृगावती की अपेक्षा इसकी कल्पना विशद है और वर्णन भी अधिक विस्तृत और हृदयग्राही। आध्यात्मिक प्रेमभाव की व्यंजना के लिए प्रकृति के भी अधिक दृश्यों का समावेश मंझन ने किया है। कहानी...संक्षेप में...है। कनेसर नगर के राजा सूरजभान के पुत्र मनोहर...को अप्सराएँ रातोरात महारस नगर की राजकुमारी मधुमालती की चित्रसारी में रख आईं। वहाँ जागने पर दोनों...एक दूसरे पर मोहित हो गये। पूछने पर मनोहर ने अपना परिचय दिया।...बातचीत करते-करते दोनों एक साथ सो गये। अप्सराएँ राजकुमार को उठा कर फिर उसके घर पर रख आईं।...राजकुमार वियोग से विकल होकर घर से निकल पड़ा और उसने समुद्र के मार्ग से यात्रा की। मार्ग में तूफान आया, जिसमें इष्टमित्र इधर-उधर बह गये। राजकुमार एक पटरे पर बहता हुआ एक जंगल में जा लगा, जहाँ एक स्थान पर एक सुंदरी स्त्री पलंग पर लेटी दिखाई पड़ी। पूछने पर जान पड़ा कि वह चितविसरामपुर के राजा चित्रसेन की कुमारी प्रेमा थी, जिसे एक राक्षस उठा लाया था। मनोहर कुमार ने उस राक्षस को मारकर प्रेमा का उद्धार किया। प्रेमा ने मधुमालती का पता बताकर कहा कि मेरी वह सखी है, मैं उसे तुझसे मिला दूँगी। मनोहर को लिये हुए प्रेमा अपने पिता के नगर में आई। दूसरे दिन मधुमालती अपनी माता रूपमंजरी के साथ प्रेमा के घर आई और प्रेमा ने उसके साथ मनोहर कुमार का मिलाप करा दिया। सबेरे रूपमंजरी ने चित्रसारी में जाकर मधुमालती को मनोहर के साथ पाया।... रूपमंजरी अपनी कन्या को भला-बुरा कहकर मनोहर का प्रेम छोड़ने को कहने लगी। जब उसने न

*** यु० द० म०, पृष्ठ २७७–७८।**

१. अर्थ, २. लालित्य, ३. सूक्ति, ४. गर्व, ५. कला का खेल, ६. विद्या, ७. संक्षेप, ८. न्याय, गुणग्रहण, ९. फारसी पद्यज्ञाता।

† **'हिन्दी-साहित्य का इतिहास', पृष्ठ ९५–९६।**

माना तब माता ने शाप दिया, कि तू पक्षी हो जा।...वह पक्षी होकर उड़ गई।...कुँवर ताराचंद ने..उसे एक सोने के पिंजड़े में रखा। एक दिन पक्षी मधुमालती ने प्रेम की सारी कहानी...कह सुनाई।...अन्त में वह पिंजरे को लेकर महारस नगर पहुँचा। वह फिर पक्षी से मनुष्य हो गई।...मधुमालती की माता सारा हाल लिखकर प्रेमा के पास भेजती है। मधुमालती भी उसे अपने चित्त की दशा लिखती है।...राजकुमार मनोहर योगी के वेश में आ पहुँचा। मधुमालती का पिता अपनी रानी सहित दलबल के साथ राजा चित्रसेन (प्रेमा के पिता) के नगर में जाता है और वहाँ मधुमालती और मनोहर का विवाह हो जाता है।...एक दिन...ताराचन्द प्रेमा और मधुमालती को एक साथ झूला झूलते देख प्रेमा पर मोहित होकर मूर्छित हो जाता है। मधुमालती और उसकी सखियाँ उपचार में लग जाती हैं।"

शुक्लजी आगे लिखते हैं—"इसके आगे प्रति खंडित है, पर कथा के झुकाव से अनुमान होता है, कि प्रेमा और ताराचन्द का भी विवाह हो गया होगा।"

नसीरुद्दीन हाशिमी ने नस्रती के 'गुल्शने-इश्क़' के अनुसार कथा का संक्षेप जो किया है, वह अरबी-फारसी शब्दों के हिन्दी रूपान्तर के साथ निम्न प्रकार है*—

"पुराने समय में एक राजा विक्रम था। उसकी राजधानी कनकगिर थी। राजा शूरवीर भी था। दान-दक्षिणा में उसकी ख्याति थी।...बड़े-बड़े राजा उसकी सेना के सर्दार थे।...मुल्क और खज़ाने की कमी न थी।...सब कुछ था, मगर कोई सन्तान न थी।...एक दिन खाने का थाल—एक साधु के पास ले गया।...फकीर ने जवाब दिया—'बाँझ के घर का खाना विहित नहीं है।'

"फिर कितने समय तक शोक-दुःख करते राजा (ने) जोगी के भेस में परदेश की राह ली।...राजा को साधु के पास पहुँचाया गया।...फकीर ने...कहा—"...तेरे सिर पर जो फल है,...उस फल को रानी के साथ खा।...नौ मास बाद...एक सुन्दर राजकुमार पैदा हुआ,...कुँवर मनोहर...नाम रखा गया। जब (वह) चौदह साल का हुआ, तो एक रात कोठे पर आराम कर रहा था।...परियों ने उसे...मधुमालती की बगल में सुला दिया। वह जागे। चकित हुए। उसके बाद दोनों का वियोग हुआ। मनोहर योगी बनकर खोज में चला। सैकड़ों कष्ट सहते अन्त में अपने अभिलषित अर्थ को पाया। सफलतापूर्वक लौटा और राज करने लगा।"

(३) काव्य का उद्देश्य

नस्रती ने काव्य लिखने का उद्देश्य बतलाते हुए लिखा है†—

यके इश्कको बात कते[१] सो नक़ल[२]।
वलेकिन[३] दखिन यो रह्या (है) कुहन[४]। न कोइखूब किस्सा कहा नेक-फ़न[५]।।
वरे कुछ गवासी[६] पतीकर खयाल[७]। किया ताज़ा[८] बाग़े, बदीयुज्जमाल।।

---

* यु० ब० म०, पृष्ठ २६३–६४। † यु० ब० म०, पृ० २६८।

१. कहते, २. अनुकरण, ३. लेकिन, ४. पुराना, ५. सुन्दर कला, ६. एक कवि, ७. विचार, ८. नया।

दक्खिनी साहित्य में इस कमी को देखकर इब्न-अब्दुस्समद ने इस काव्य के लिखने के लिए प्रेरण और प्रोत्साहन दिया।

(४) प्रेमारंभ—

मनोहर कुंवर को जब मधुमालती ने अपनी शय्यापर देखा, तब उसने उससे पूछा*—

कहे "कौन है तूं सो इज्हार[1] कर। परा[2] है कि देव या है बशर[3]॥
गुपत रूप ल्याया है भी कुछ बला। मँतरते मुंज आया है कर मुब्तला"॥
कहा बात यो सुन मनोहर कुंवर। कि "तूँ कौन अपे (है) देखाती सो डर॥
मेरा बाप विकरम करे राज याँ। कवाता है राज्यांका सरताज याँ॥"
कही "बेहोश क्या तुँ खाया अहै। हो दिवाना चुपमें गँवाया अहै॥
महारस नगर इस नगरका है नाँव। अहै इस महल में सो मेरा च[4] ठाँव॥
धरमराज मुंज बाप है जगपती। अहै नाँव मेरा भी मधुमालती॥

मंझन ने इस सवाद को और चामत्कारिक रूप में वर्णित किया है†—

देखत ही पहिचानेउ तोही। एक रूप जेहि छंद-यो मोही॥
एही रूप बुत[5] अहै छिपाना। एही रूप सब सृष्टि समाना॥
एही रूप सकती और सीऊ। एही रूप त्रिभुवन कर जीऊ॥
एही रूप प्रकटे बहुभेसा। एही रूप जग रंक नरेसा॥

मनोहर ने राजकुमारी चंपावती (मंझन की प्रेमा) को शत्रु के चंगुल से मुक्त किया था। इस उपकार का प्रतिशोध करने के लिए चंपावती और उसकी माँ मधुमालती और उसकी माँ को अपने यहाँ निमंत्रित करती हैं, जिसमें मनोहर और मधुमालती का परिचय हो सके। गवासी की मसनवी 'बदीयुज्जमाल' में भी सिरन्दीप की कुमारी के उद्धारक के सैफुलमुलूक को बदीयुज्जमाल से मिलाया जाता है‡—

उधर साथ थी माँके मधुमालती। इधर माँके संगात चंपावती॥
बहुत दिनकु जिस वक्त बिछुड़े मिले। यकस यक[6] लगाये चिकल[7] कर गलै॥
उनौ क्याँ[8] सख्याँ चूँकि सौ साथ थ्याँ। इनोंके कने भी इसी धात[9] थ्याँ॥
चल्याँ जब वो रुनझुन लटक नाज़[10] सों। निहालों[11] धरे हाल आवाज सों॥
दोनों घेर[12] बीब्याँ जो थ्याँ मुख्तसर[13]। बुज़ुर्गी[14] सो बैठ्याँ वो जा सद्र[15] पर॥
दोनों घेर कियाँ[16] खुश सहेल्याँ तमाम। खड़्याँ खिदमती घर अपसका मुकाम॥
यो चंपावती होर मधुमालती। बैठ्याँ मिलके ना फरक़ घर एक रती॥

---

* यु० द० म०, पृ० २६६। १. प्रकटन, २. परी पुरुष, ३. मनुष्य, ४. मेरा ही। † 'हिन्दी-साहित्य का इतिहास", पृ० ९७। ५. मूर्ति। ‡ उ० श०, पृष्ठ २२९–३२। ६. एक से एक, ७. चिपक, ८. उनकी, ९. भाँति, १०. लीला, ११. पौधों १२. दोनों पास, १३. संक्षिप्त, १४. बड़प्पन, १५. मुख्य स्थान, १६. दोनों ओर की।

दोनों कियाँ सो मावाँ भी एक ठार मिल। सो यों रंग उसमें लगा दिलसों दिल॥
अचंभा न हो क्यों चँदर-सूरकूँ। मिल यक ठार देख्या है किन नूरकूँ॥

० ० ० ०

खुश इखलास[1] सों आ वो खाला केकन[2]। लगी गोदमें बस बाताँ करन॥
उने सिरते तिस पीठ लग हाथ उतार। बला लेके कुर्बान जा बार-बार॥
मुहब्बत की बाताँमें ल्याई उसे। अपसके कहे मैं फिराई ससे॥
निसँक तब कही जायँ चल सर तें। "वो सब सुन ले किस्सा कहूँगी जो मैं॥
जो हर बात सुन दिल तेरा ताजा होय। अधिक इश्क का तुझमें अंदाजा[3] होय॥
करे फूल-राहत[4] सों दिल बाग़-बाग़[5]। भले होय बिछड़नके पुरसोज़[6] दाग़॥
अपस दिलकी बिसराट कूँ याद दें। हरेक ठार इन्साफ़ सों दाद[7] दे॥
छुपी छंद सों यों बशारत[8] करे। अपस साथ चलने इशारत[9] करे"॥
उठी वाँते तिस साथ करते च बात। चली लेके छब सों पकड़ हतमें हात[10]॥
सहेली जो कोई साथ आने मँगी[11]। फिराई[12] उसे नैं ले चाने मँगी॥
गइयाँ मिलके दोनों यकल्याँ गवन। तमाश सों फिरत्याँ चमन-दर-चमन[13]॥
यकत[14] ठार खातिर[15] मेंचेल्या यक तरफ़। बठ्याँ मिलके दोनों अधिक धर शरफ़॥
तब उन पाके फुर्सत[16] यो करनेकी बात। लगी बोलने यों कि "ऐ धन सुजात॥
जो बेटीका दर्शन हुआ सो हमन। यो सब फ़ज़्र-बख्शिश[17] है तेरे चरन॥
न होता ते तुज-पगते यो फ़ैज़ अगर। वो काँ[18] फिरके पड़ती हमारी नजर[19]॥
हमन सिर तेरा यों है उपकार आज। जो होइ तुज-अँगे[20] बात करनेकी लाज"॥
यो सुन बात मधु-मालती वह अजब[21]। कही "उज्रख्वाही[22] ऐती क्या सबब॥
कि मेरे सवालाँकु दे पेच-ताब[23]। अजों लग[24] भी देती है होर कुछ जवाब॥
मगर बातका मुँज में नैं कर समझ। हिकायत[25] वो कहने तुज आई है रज[26]"॥
लगी फिर यो कहने कुँ "ऐ धन सची। समज बात पुख्ती[27] है कि होय कची॥
कती हूँ जो यो बात अछे[28] झूट कर। तो सौगंद खाती हुँ तुज हुस्न[29] पर"॥
सुनी जो वो मधुमालती फिर यो बात। विचाराँ सों तज्बीज़[30] कर लाख धात[31]॥
अपसमें अपस[32] सख्त हैरान हो। लगी पूछने 'फर परेशान हो॥
कि "अब चुप न रह तूँ मुअम्मा[33] च बोल। कि मुश्किल[34] दिसे गर न दिखलाय खोल"॥
तब इस बात पर धनके जा मुख पे बल। कही "मैं तो करती हुँ मुश्किल यो हल॥

---

१. सुस्वभाव, २. मौसी के पास, ३. अनुमान, ४. आराम का फूल, ५. प्रसन्न, ६. जलन-भरा, ७. न्याय, ८. सुसमाचार, ९. इशारा, संकेत, १०. हाथ में हाथ, ११. चाही, १२. लौटाई, १३. बाग़े-बाग़, १४. अकेला, १५. दिल, १६. छुट्टी, १७. कृपा, दया, १८. वह कहाँ, १९. दृष्टि, २०. तेरे आगे, २१. अद्‌भुत, २२. क्षमा माँगना, २३. टेढ़ा-मेढ़ा, २४. आजतक, २५. कथा, २६. चाहकर, २७. पक्की, २८. रहे, २९. सौंदर्य, ३०. विचार कर, ३१. भाँति, ३२. अपने-आप, ३३. पहेली, ३४. कठिन।

वले[१] पूछती हूँ अवल[२] तुज सों बात । खुदाके बदल[३] कह तु सचमुच सगात[४]।।
कि तुजसों हमें जिव[५] सों हमराज़[६] हैं । होर अकसर[७] तो दुसरयाँ सों कम-राज़ हैं ।।
हम पर तुमन लुत्फ़[८] जों पेश[९] अछे[१०] । हमें जिव भी तुम-काजपर पेश अछै ।।
कवाना[११] तुमन खैर-अंदेश[१२] हम । तुमन-काजपर जिवसों हैं पेश हमें ।।
यो सब सच कतीहूँ, नको[१३] जान झूट । न कैं जाय हमनाते यो बात फूट" ।।
सुनी उस दुलक्खन[१४] न यो बात जब । अधिक ताबिया[१५] हों बुरा मान तब ।।
कही "यों तु इस धात[१६] वाजिब[१७] न था । बड़ेपनका तेरे मुनासिब[१८] न था ।।
कि ले हीला[१९] मूँजपर जब इस धात सों । न्हने जिव पे[२०] करने मँगी[२१] धात तूँ ।।
मुज-ऐसी तुजे जाइ बाली[२२] अहै । होर इतने पे तूँ बद-खियाली[२३] अहै ।।
न कह फिर तूँ ऐसी वचन आजते । कि मैं पलमें जिव देउँगी लाजते" ।।
यो सुन बात ख़ाला[२४] कही फिर वचन । कि "ऐ पाकदामन[२५], सुजाती सुधन ।।
उतमपन[२६] में यक घाल[२७] मोती है तूँ । निछल चाल[२८] में चाँद-जोती है तूँ ।।
म गर मुँज दो तन कर तूँ जानी अहै । मुँज-इख़लास[२९] झूटा पिछानी अहै ।।
तूँ समजी है शायद मुँजे यों यकी[३०] । कलँक ला जो तुज मह[३१] कूँ होउँ ऐबचीन[३२]।।
कि हैं अस्ल[३३] गौहर सों ना हो ख़ता[३४] । नको हो सुटूँ[३५] अस्लपन[३६] का वफ़ा[३७] ।।
सची बातकूँ चुप न कर झूट तूँ । खुदा वास्ते मुँजते मत टूट तूँ" ।।
यो ख़ाला ने सब बात कही च में । अधिक आके मधुमालती बीचमें ।।
छुपा उससों दिल गर्चे राज़ी[३८] घरी । वले मुँपे कैं एतराज़ी[३९] घरी" ।।

मौसी को तब मधुमालती ने अपने मन की बात कही—

किसे दुख यो कहना न देखी दवा । लगी मनमें जलने च हो ला-दवा[४०] ।।
यकत[४१] नित रहूँ ग़म[४२] से गर सर तलार[४३] । न कोइ बाँट लेवे मेरे दिलका बार[४४] ।।
टले दिन तो हर क्यों[४५] सहेल्याँ के साथ । पड़े पन[४६] बजरसिल[४७] हो सीने पे रात ।।
ज़रीना[४८] अगिन तन पे सारे लग । गुलाँ[४९] सेज के सब अँगारे लग ।।
चँदर मुँज उपर ज़ह्र[५०] का हूआ बाग । देवे हर सितारा मेरे दिल पे दाग़ ।।
अछै[५१] निस तो दोज़ख़[५२] ने काली कठिन । दिसे दिन तो रोजे-क़यामत[५३] का दिन ।।

---

१. लेकिन, २. पहिले, ३. खुदा के वास्ते, ४. साथ, ५. दिल से, ६. रहस्य जानकर, ७. प्रायः, ८. कृपा, ९. पहिले-जैसी, १०. रहे, ११. कहलाना, १२. भलाई चाहनेवाला, १३. नहीं, १४. दुर्लक्षणा, १५. चिस्त, १६. भाँति, १७. उचित, १८. उचित, १९. बहाना, २०. छोटे से प्राण पर, २१. चाहा, २२. पुत्री, बाला, २३. बुरा विचार होना, २४. मौसी, २५. सती, २६. उत्तमता, २७. बढ़िया, २८. निर्मल गति, २९. मेरी मुहब्बत, ३०. विश्वास, ३१. चाँद, ३२. दोषदर्शी, ३३. सच्चे, ३४. दोष, ३५. छोड़ूँ, ३६. सच्चापन, ३७. भक्ति, अनुरक्ति, ३८. सहमति ३९. असम्मति, ४०. बे-इलाज, ४१. अकेला, ४२. रंज, ४३. सिर तक, ४४. भार, बोझ, ४५. जैसे-तैसे, ४६. किन्तु, ४७. वज्रशिला, ४८. आभूषण, ४९. फूलों, ५०. विष, ५१. है, ५२. नर्क, ५३. प्रलय-दिन।

मेरे सिर टले[१] यों कठिन माहने-साल[२] । खुदा बिन कहूँ किस सों मुँज-दिलका हाल ।।
न बोले कि मुँज-तनपे ह पोस्त[३] जम[४] । कि जलते अँगारे पे वह है भसम ।।
हुआ रंग मुँज जाफ़रानी[५] क़रार[६] । सुरज हँस पड़े देख बे-इख़्तियार[७] ।।
जो देखूँ निझा[८] तो दिसे नैन में । जो बोलू वचन तो बसे बैनमें" ।।

कथा पुरानी है, जिस पर पहिले के कवियों का प्रभाव हो सकता है, किन्तु उसमें नसती का अपना कवि-कौशल कम नहीं है। उसने ऋतुओं का भी सुन्दर वर्णन किया है। जैसे—

(५) ग्रीष्म ऋतु*—

न कह सूर[९] बल[१०] आग-बादल अथा । न वो धूप यक आतशीं जल[११] अथा[१२] ।।
मगर खींच दोज़ख़ के दरियाते बीर । बरसता अछे जग में जलता च[१३] नीर ।।
किरन है सो सब जलकी धाराँ दिसें । हरेक ज़री क़तराते[१४] बदराँ[१५] दिसें ।।
जमीं[१६] ते फ़लक[१७] लग सब यक धात[१८] सों । भरी सर्द आतिश[१९] की बरसात सों ।।
लगे मारने जब सुराबाँ[२०] के मौज । चले चौकधन तब हरारत की फ़ौज ।।
वले इस अबर में है यक-तर्फ़ा घात । लजाता है फिर नीज़ खींच अपने साथ ।।
न धरता तो यो नीर-आलम त फ़र्क़ । तो होती जहाँ तब हरारत स ग़र्क़[२१] ।।
गगनके अँगन पर न तारे दिसें । उठे जीके लोगाँ सो सारे दिसें ।।
कह अस्ल में क्या यो सीमाब[२२] है । रूपा गलके तिसते हुआ आब है ।।
खत कोह होली निराली हुई । ज़मीं देख हैराँ दिवाली हुई ।
भरे लाल खोरी देस[२३] आई है यों । हयाँ में अगिन धकधकाती है जयों ।।
यक़ीं आफ़ताब आफ़ते आब था । तो हर चाह[२४] पर आफ़ते-नाव था ।।
देया कहिं न था रूये गीतीं[२५] पर आब । मगर थी नद्याँ जों हवापर सुराब ।।
अजब तेज़ गरमी जला संगो-खाक । करे संग का चूना माटीकुँ आब ।।
अयी गर्म कँकरी अँगाराँ ते तेज़ । दिसे तप्त बालू हो चिंगियाँ[२६] की रेज़ ।।

३. अलीनामा

यह सुलतान अली आदिल का चरित-सा है, जिसमें १६५६ से १६६६ ई० तक की घटनाएं वर्णित हैं। इस मस्नवी (कथाकाव्य) में (युद्ध-वर्णन) औरंगजेब, शिवाजी और मलाबार के राजा के साथ के महत्त्वपूर्ण युद्ध-सबंधी सात कसीदे सम्मिलित हैं। 'गुलशने इश्क़' से अलीनामा बड़ा है। सातों कसीदे निम्नलिखित हैं—

---

१. गुजरे, २. महीना-वर्ष, ३. चमड़ा, ४. सदा, ५. केसर-जैसी, ६. निश्चय, ७. बेबस, ८. ध्यान से। * उ० श० पृ० २३३, ९. सूर्य, १०. बल्कि, ११. अग्नि-ज्वाला, १२. था, १३. जलता ही, १४. छोटी बूँद, १५. वर्षा, १६. पृथिवी, १७. आकाश, १८. एक-सा, १९. आग, २०. बालू, २१. डूबना, २२. पारा, २३. दिवस, २४. कुआँ, २५. संसार, २६. चिनगारियाँ।

(१) पनाला-विजय, १६६१ ई० (१०७२ हि०) में लिखा गया; १५७ शेर।

(२) आदिलशाही विश्वासघाती सेनापति सलाबतखाँ का पतन, यह १६६४ ई० १०७५ हि०) में लिखा गया; ५५ शेर।

(३) युद्ध से विजयी बादशाह की वापसी १६६३ ई० (१०७४ हि०) में लिखित; !८ शेर।

(४) शरद का सुंदर वर्णन, १६७४ ई० में लिखित; २४ शेर।

(५) विजयोत्सव-वर्णन : यह तीसरे कसीदे का अंश है; ६ शेर।

(६) मुहर्रम की मजलिस के संबंध में मर्सिया, १६६४ ई० (१०७५ हि०) में लिखित; १४८ शेर।

(७) मलनाड-विजय, १६६४ ई० में लिखित; २२० शेर।

इस काव्य का आरम्भ करते कवि कहता है—

मुझें खूब कामाँकी तौफ़ीक़[१] दे। अछै[२] हक़[३] सो कर मुझपे तहक़ीक़ा[४] दे।
मेरे शेर[५] सों जिन्दा घर हर शऊर[६]। तबीयत[७] कुँ दरिया[८] की नित मौज[९] दे॥

० ० ०

(१) आरंभ—

मेरे मुखते काड इस असर[१०] का कलाम[११]। कि हर हर्फ़[१२] होय मै-पस्ताँ[१३] कुँ जाम[१४]॥
धरनहार असर-हाल[१५] का क़ाल[१६] दे। दिलाँकूँ जम इस कालते हालदे॥
मेरे कौल[१७] अं`बहस[१८] कर सबकी रद। सखुन[१९] कर मेरा आरिफाँ[२०] में सनद[२१]॥

अलीनामा लिखने के लिए सुल्तान की आज्ञा के बारे में नस्रती ने लिखा है —

वले[२२] इस बडे फन[२३] के डुँगर[२४] अँगे। खडा आ अटक कस्द[२५] नाकर अँगे[२६]॥
मेरे पर (तो) यो फिक्र[२७] मुश्किल पडी। तबीयत[२८] चलानेकुँ अक्क़ल[२९] खडी॥
अव्यासों उसी अडके हैरत[३०] में जाँव। करन मुश्किल आसाँ मंग्या हकते[३१] योंं॥
टलीरात बाद अज़[३२] हुआ सुब्ह[३३] वें। अथा तब तलक शहकी दर्गह[३४] में मैं॥
देखत मुझ रुखन[३५] शाह आलमनेवाज़[३६]। बडे लेके खिदमत करना सर्फराज़[३७]॥
मुअम्मे[३८] सों नैं हर इशारत[३९] किये। दिले दिलसों दिलकुँ बशारत[४०] किये॥

---

१. शक्ति, २. रहे, ३. सच, ४. सच्चा, ५. पद्य, छन्द, ६. ज्ञान, ७. विचारों, ८. वायु, ९. गति, १०. प्रभाव, ११. वचन, कविता, १२. अक्षर, १३. मद्यपूजकों, १४. प्याला, १५. प्रभावशाली, १६. कथन, १७. वचन, १८. विवाद, १९. वाणी, २०. ज्ञानियों, २१. प्रमाण, २२. लेकिन, २३. कला, २४. पहाड़, २५. संकल्प, २६. आगे, २७. चिन्ता, २८. मन, २९. कठिनाई, ३०. आश्चर्य, ३१. सत्य भगवान्, ३२. उसके बाद, ३३. प्रातः, ३४. राजदर्बार, ३५. मुंह, ३६. जगत्कृपालु, ३७. भाग्यवान्, ३८. गूढ़, ३९. इशारा, संकेत, ४०. सुसमाचार, कहना।

कह्या मैं कि बंदेमें यो काँ[1] है हद[2] । कहूँ तब जो उस्ताद का होय मदद ।।
देख्या में जो मुज-दिल-तरफ का खयाल । लगा मुज तबीयत[3] की चढने उबाल ।।
समुँदरते शह-फ़ैज़[4] की होके सीर[5] । हुनरका लग्या मेह बरसन अंबीर[6] ।।
गई थी वले[7] ते मेरे हाथते । तबीयत ज़मानेके अतिघातते[8] ।।
दो बाजू[9] मेरे दीनो-दुनियाके जोर । टुटे थे सो था जीव-मुँज ऐन[10] शोर ।।

(२) शरद का वर्णन*—

दी है जमिस्ताँ[11] नो गज़ी[12] दूँगा उचा[13] धुँधकार आज ।
सर्दार हो बादेख़ज़ाँ[14] थँड[15] का रच्या है भार[16] आज ।।
उपट्या हवाका फौज यों शबनम् के गोल्याँ छाँटता ।
डरमूँ[17] अगिनसों झांपले डर राही है ठारेठार आज ।।
ओ आग कोइ मारे तो दम उठती थी हो सब तन ज़बाँ ।
वैसी भी सरकश[18] सर नवा पीली दिसे सद हार आज ।।
बेशक[19] वतन इस जगते मिटजाती आगिन हो बेनिशाँ[20] ।
गर दिलमें अपते आशिकाँ[21] देते न उसकूँ ठार आज ।।
हौज[22] यक हवाका यों दिसै मशरिक़[23] ते मग़रिब[24] लग भरया ।
काँपे फ़लक[25] जों बुडबुडा[26] बैठे तो तिसके ल्हार[27] आज ।।
शबनम्[28] जो उजला छाचसा आ शीरसे[29] जलमें पड्या ।
हर बाई होइ है वहीं हुंडी जमनीर सब यक बार आज ।।
जल ते च हरयक जा-बजा बिल्लोर[30] का दरपन दिसै ।
ऐ चाँद वेगी देखले तिस बीच अपस दीदार[31] आज ।।
हर बर्ग[32] कूँ बारा मारते पीले हुये है पात सब ।
हर यक नगर बाग़े-जहाँ[33] है थंडसे बीमार आज ।।
ना सरफ़राज़ी[34] पा सके दौलत[35] ते थंडकी कोंपली ।
ना बेल अपनी गोदते लंबा करे हथ भार[36] आज ।।
गुलशन[37] के आईने उपर पडता चल्या सर्दी सों ज़ंग ।
हर खारो-खस[38] शबनम् सेती होता है जौहरदार आज ।।
देखे न जों-जों थंडते किस यक[39] कलीकूँ खन्दारु[40] ।

---

१. कहाँ, २. सामर्थ्य, ३. मन, ४. शाह की कृपा, ५. भरा, ६. जल, ७. लेकिन, ८. प्रहार से, ९. बाँह, १०. बिलकुल।

* उ० श०, पृ० २३४ ।

११. सर्दी, १२. नौगजी, १३. उठा, १४. पतझड़ की हवा, १५. ठंड, १६. बहार, १७. डरूँगा, १८. बागी, गर्वी, १९. निस्संदेह, २०. बेपता, २१. प्रेमियों, २२. कुंड, २३. पूर्व, २४. पश्चिम, २५. आकाश, २६. बुलबुला, २७. लहर, २८. ओस, २९. दूध से, ३०. स्फटिक, ३१. दर्शन, ३२. पत्ता, ३३. दुनिया का बाग, ३४. भाग्यशालिता, ३५. सरकार, ३६. बाहर, ३७. फुलवाड़ी, ३८. काँटा-घास, ३९. किसी एक, ४०. हँसते हुए।

नग़मे[1] बिसर जा बुल्बुला हर बनमें हैं बेकार आज।
सूरजके चश्मेका रवाँ[2] आब-आतशी[3] यों जम रह्या।
क्यों सेंकने बस आयगा इतन्याँ कूं यक अंगार आज।।
हूँ मैं तो बेसामाँ[4] अधिक दुश्मन तो है भारी अटल।
पाते सिला[5] इस बाब[6] का शह का धरूँ दरबार आज।।
जिस मेह्रबाके फ़ैज़ ते सब नौबहार इस दौर[7] में।
जिसकी इनायत[8] ते अधिक आलम दिसै गुलज़ार आज।।
सुल्तान आलमबख़्श[9] ओ शाहंशाहे आदिल अली।
हैं यो जहाँ पर्वर[10] अधिक निराधारकूं अधार आज।।
तिस ज़रअफ़शाँ[11] के हथते पुर हैं नजरकी गोद यों।
पातांसों पीले बागका दामन[12] है जो ज़रदार[13] आज।।
सूरज जनमका तन नँगा शह-हथते खलअत[14] पाय तू।
काँटा न आ तिसतन उपर काँपे न फिर यकबार आज।।
मैं इस क़सीदे[15] में सनत[16] कहता हवाकी कै वले[17]।
तिस थंडसों मुखमें ते फुट निकली निछक गुफ्तार[18] आज।।
ऐ नस्रती बेहतर है तुज पहलेही दिल गर्मी ऐतीं।
कह मतला[19] ताज़ा[20] सों फिर वही शेर[21] शक्करबार[22] आज।।

(३) शिवाजी के साथ युद्ध—

भूषण ने यदि शिवाजी की वीरता का वर्णन किया है, तो उसके प्रतिद्वंद्वी अली आदिल के पनाला में १६६१ ई० में शिवाजी पर विजय प्राप्त करने का वर्णन नस्रती ने 'अलीनामा' के प्रथम कसीदे में किया है। पूना और बीजापुर की सीमा पर पनाला एक पहाड़ी किला था। बीजापुर के सेनापति अफ़ज़ल खाँ को धोखे से जब शिवाजी ने मार डाला, तो जोहर के सेनापतित्व में दूसरी सेना भेजी गई। जौहर हाल ही में विद्रोही बनकर क्षमा-पात्र तथा सलाबत खाँ की उपाधि से विभूषित किया गया था। शिवाजी ने पहिले पनाला के दुर्गका आश्रय लिया फिर सलाबत खाँ को अपनी ओर फोड़ लिया। इस पर अली आदिल स्वयं सेना लेकर चला। शिवाजी ने किला छोड़ दिया और पनाला पर बीजापुर की विजय हुई। नस्रती ने अपने इस कसीदे में बादशाह की प्रशंसा शिवाजी की निंदा करते सलाबतजंग के युद्ध का वर्णन और धोखा देना, फिर बादशाह के अभियान और विजय का वर्णन किया है। इसके कुछ अंश हैं—*

---

१. गीत, २. जारी, ३. अग्नि-जल, ४. साधनहीन, ५. पारितोषिक, ६. विषय, ७. युग, ८. कृपा, ९. दुनिया पर दयालु, १०. जगत्पालक, ११. सुवर्णवर्षक १२. किनारा, १३. सुवर्णवाले, १४. दरबारी पोशाक, १५. प्रशंसात्मक पद्य, १६. अलंकार, १७. लेकिन, १८. बातचीत, वाणी, १९. दो आदिम चरण, २०. नया, २१. पद्य, छंद, २२. शक्कर बरसानेवाला।

[* उ० श०, पृ० २३५।]

जबते झलक[१] देख्या अधिक सूरज तेरी तरवारका।
तबते लग्या थर काँपने हो पुर-अरक़[२] यक बार का॥
कोइ बुँद जो तेरे खर्गके पानीते दरियामें पडे।
खा जोश अधिक यक नीर होय तख्ता अखँड यक ग़ारका॥
किसमें तु-ताला[३] के कवी[४] चमते अधिक जम जम[५] दिसै।
जिसमें तु आलमगीर[६] हो आया सिकंदर सारका[७]॥
कोइ मुहरये-सर[८] तुज-अं[९] जाँबाज़[९] नहिं ले जा सके।
जाँ[१०] रज्म[११] के तख्ते पो तूँ शशदर[१२] बँध्या फुल भारका॥
हर फ़स्ल[१३] शहके वस्फ़[१४] की लिखता तो होते कइ बरक़[१५]।
पढ़ता हुं सिरनामा बड़ी यक फतह की तूमार[१६] का॥
अब खम्[१७] ते इस मज्मून[१८] के मतला[१९] नवल पैदा करूँ।
हर हर्फ़[२०] के माने ते ता निकले सुरज झलकार का॥

(क) शिवाजी की निन्दा*--

ऐ शाह आदिल तूँ अली साहेब है सब संसारका।
कुफ्फ़ार-मंजन जग तुम्हें नहिं सूर[२१] कोइ तुज सारका॥
यकसाल ओ बागी सिवा[२२] जगमें शितत[२३] पैदा किया।
है तिफ्ल-मक्तब[२४] मक्र[२५] में शैतान जिस मक्कार[२६] का॥
कोइ खेल उस मक्कारने खेल्या न कजबाज़ी[२७] के बिन।
गोया फ़लक[२८] कजकोल[२९] है साध्या उसी ऐयार[३०] का॥
मरता सो देख उस खिज्र[३१] अगर लेवे बचा अमृत पिला।
वै जाम भर दे जल्लसों फेरे[३२] उधार उपकार का॥
था यक्क-यक[३३] जो जगमें सब ओ गढ़ पनालाकूं बुलंद।
थमने धरति लंगरसे होर अंबरकुँ थाँव अधार का॥
बेतुल्-शरफ़[३४] सों सूरका धरता है नित हम-सायगी।
मर्रीख[३५] सों उसका धनी दावा धरे हक़दार का॥

---

१. चमक, २. पसीन-पसीने, ३. तेरे भाग्य, ४. बलिष्ठ, ५. सदा, ६. चक्रवर्ती, ७. सरीखा, ८. बड़ी गोटी, ९. जान पर खेलनेवाला, १०. जहां, ११. युद्ध, १२. द्वारों का। १३. अध्याय खंड, १४. गुण, १५. पन्ने, १६. ढेर, १७. खम्भे, खुम (घड़े), १८. विषय, १९. गजल की आदि पंक्ति, २०. अक्षर, * उ० श० पृ० २३५, २१. सूर्य, २२. विद्रोही शिवाजी, २३. गड़बड़ी, २४. पाठशाला का बच्चा, २५. फरेब, २६. धोखेबाज, २७. टेढ़ा खेल, २८. आकाश देव, २९. गोल-पात्र, ३०. चालाक। ३१. अमृत का देवता, ३२. लौटाये, ३३. यकायक, ३४. उच्चतम घर नक्षत्र, ३५. मंगल।

जिसके हशम[1] का शबनवीस[2] अकसर अतारद[3] का सगा।
जिसका अलंगी नित धरे ज़बरासों[4] ताता यार का।।
पौंचे पवन पीरी[5] में जाकर गर जवानीमें चढ़े।
अँपड़े[6] न दूजी उम्र लग तिसपर कयास[7] यक बारका।।
नैं बात कें लग मुख नैं क ठार पर पहले जवाँ।
गर नाँव कोइ लेने मँगे तिस राह नाहमवार[8] का।।
दामन[9] में तिस ऐसा ह`क पाले गया है बर्ग[10] एक।
दुनियामें कोइ राज आज लग उस गढ़कुं नैं लड़ने सक्या।।
तिरजुग[11] का दल[12] ले वो जनम खोये ते यक बार का।
जब हाथ उस मक्कारके भेदों[13] से ऐसा गढ़ चढ्या।।
होर यक दग़ाका हो अमल[14] जाने इसी बदकार[15] का।
गढ़ देखकर जान्या कि गढ़ ज्यों काडने आवे मलक[16]।।
तो मुंज तरफ देखे न यों हो लखधनी उस ठारका।।
सामा सों हरयक जिन्स[17] के गढ़पर ज़ख़ीरां[18] यों भरया।
नैं नित पड्या सो गढ़ अजब ओ जाहो भारी भार का।।
मुतलक़[19] तजावुज़[20] हदते करभी शर[21] सों पेश आता[22] चल्या।
शहनेस्त[23] तब करने मंगे पाया[24] वो नाहंजार[25] का।।

(ख) युद्ध का दृश्य*—

खडगाँ खनाखन सूर धर सूराँ के यों बजने लगे।
ज़ोहरा का ज़ोहरा गुल रह्या आवाज़ सुन झलकारका।।
खडगाँ खडगाँ लग अधिक चौंधेर ते यों चिंगियाँ उडियाँ।
ज्यों आगकियाँ बिजलियाँ चमक बरस्याँ बदल अंगार का।।
गुर्जासों मुहरे मान यों कीते परा गंदा[26] दिसन।
गोफनके जों लगते फतर[27] फटता है हुक्क़ा[28] नारका।।
लागी तबर[29] के ज़र्ब[30] सों तफराख अजलके हाथकी।
जमके मखी[31] ते कम न था धबका गुरज़[32] के मारका।।

---

१. दबदबे नौकर, २. रात्रि-लेखक, ३. बुध, ४. जबर्दस्तों, ५. बुढ़ापे, ६. पहुँचे, [७]. खयाल, ८. विषम, ९. किनारे, १०. पत्ता, ११. गरुड़, १२. सेना, १३. रहस्यों, [यु]क्तियों, १४. शासन, १५. कुष्कर्मी, १६. फरिश्ते, देवता, १७. प्रकार, १८. भंडार, ढेर, [१]९. बिलकुल, २०. गुजरना २१. शरारत, २२. के साथ आता, २३. नष्ट, २४. जज, [२]५. कुचरित्र। * उ० श०, पृ० २३६। २६. बिखरे, २७. पत्थर, २८. डब्बा, २९. कुल्हाड़ा, [३]०. चोट, ३१. मक्खी, ३२. गदा।

हर घटमें दिलका धाक सों रहे थे रखट की कीच हो।
हर रगके गुलते था अयाँ[1] फव्वारा लहुके धारका।।
मरत्याँ के लहुके बह्र[2] ते धरती पो जब लहरती धरयाँ।
जीत्याँ पो तुट[3] पड़ने लग्या डूँगर पो डूँगर लहार[4] का।।
लोटा के मछल्याँ पर जर जाले दिसें हर ढूहमें।
थागल[5] के दौड़े के नमन[6] तागा सो हर जुन्नार[7] का।।
चकत्याँ सिराँक्याँ तैरते दिस्त्याँ कँवलके फूलस्याँ।
पंजा झड्या सो दंड था हर तिस दँडलके सार का।।
दीदे बिखरे जा जंगल मुहेर-सुलेमानी धर्या।
संगे - यहूदी हो दिलाँ दामन भरया कुहसार[8] का।।
चोला गगनका अक्स[9] पर सारा कुसुँबा हो रह्या।
जब लाल मखमल सब जमीं ओढे जो लख विस्तार[10] का।।
लहुमें रँगे जब सब कँकर याकूत-रेज़े हो रहे।
जो माँगियाँ दिसते लग्या रंगी हो चूरा गारका।।
छिटक्याँ न थ्याँ लहुक्याँ मगर यो फतह[11] लिखते शाहका।
पाताँ पो बनके आस्माँ अफशाँ[12] किया छिडकार का।।
हो रहे मूर्याँ रुँड मुंड नाबूद[13] सब खँडलाट सों।
जीते हो बेसूरत[14] भुले बोझ आपनी दीदारका।।
लश्करके जमते कम नहीं शहके वज़ीराँ का कटक।
आसफ़[15] के सफ़[16] दे है अधिक हम्ला[17] हरेक सरदार का।।
बीनी[18] पो शहकी फौजके जिसके मलायक[19] पेशरौ[20]।
दमदार पुश्तेबान[21] है जम-जम[22] मदद करतार की।।
इस फौज तालेदारकूँ देखे फ़लक[23] के जब तलक।
बोले कि आलमगीर होय बेशक यो भार अतबार[24] का।।
निकले जिधर शह बाँध रुख फिलहाल[25] उधरते फ़तह[26] भी।
आवे अँगे होने[27] अपें हदिया[28] सो मुल्क आयारका।।
यल्गार[29] शहकी पेशरौ है अक्ल[30] की भी दौड़ते।
ना झांक सकसे[31] बहम जहाँ हो शहधनी तिस ठारका।।

---

१. प्रकट, २. समुद्र, ३. टूट ४. लहर, ५. पेबंद, ६. सूत-सदृश, ७, जनेऊ, ८. पहाड़, ९. प्रतिबिम्ब, १०. लम्बाई-चौड़ाई, ११. विजय, १२. वर्षा, १३. नष्ट, १४. बेरूप, १५. नाम, १६. पंक्ति, १७. आक्रमण, १८. बेन बाजा, १९. फरिश्ते, देवता, २०. अग्रगामी, २१. पृष्ठपोषक, २२. सदा, २३. आकाश, २४. विश्वास, २५. तुरंत, २६. विजय, २७. आगे होने, २८. भेंट, २९. धावा, ३०. बुद्धि, ३१. सकेगा।

अँपड्याँ[1] जो शह आदिल अली जब मुर्तजा-आबादकूँ।
ज़ेरोज़बर[2] जगकूँ किया आवाज़[3] उस-हुंकार का॥
सफ़पर गुनहगारों[4] की तब कायम[5] क़यामत[6] हो रही।
बिसरे यकस यककी मदद पेशआ[7] सबब[8] दुश्वार[9] का॥
जो जाँ[10] अथे सो त्यों च वाँ[11] हैरत सों सारे दँग रहे।
सूरत में हर तन यों दिस्या जों नक़्श[12] है दीवार का॥
शहके ग़ज़ब[13] की त अगिन नहिं सरकशी पर आप लगा।
शह शोर में दिल जा पड्या हर मायमे-अशरार[14] का॥
तहकीक़[15] सब जाने कि अब आखिर तुटे पर आसमाँ।
हरगिज़[16] थमा सकसे[17] न कोइ बल हथके दे आधार का।
यों अल्-अमाँ[18] की हाँक सब चौंधेर[19] ते गढ़ परते[20] उठी।
आजिज़[21] हो काडे मुख पकड़ सुट[22] दे धंदा हथियार का॥
जब शह चढ़े घोड़े उपर यों फ़तह गढ़ ऐसा किये।
तब मुखमें शायाँ[23] के हुआ नित दर्द इस गुफ्तार[24] का।
कहना है धन[25] उस माहकूँ है जिसकूँ ऐसा शह खलफ़[26]।
सो ओ बड़े-साहेब[27] हैं जम[28] पाकर करम[29] करतार का॥
जिस घरकी न्यामत[30] ते जमन पाली गई है सब ज़मीं।
ते आबे-दरिया[31] में असर है तिसकी. . .खारका॥
जिस दिलकूँ कर हुब्बुल-वतन[32] गमती[33] है निस-दिन रास्ते।
होर घर करामत[34] सों ज़खम है तिस-ज़बाँ में प्यारका॥
तिस-मेह्र[35] की नित छांवमें पाती है आसाइश[36] जहाँ।
तिसका करम तो जगकुँ जम[37] आधार है निरधार[38] का॥
जिस कौल साबित[39] कूँ पत्या सीमुर्ग[40] आवे काफ़[41] ते।
रखवाल हो रहे सग-तमन[42] शेरज़ा[43] भी तिस दरबारका॥

---

१. पहुँचा, २. उलट-पुलट, ३. शब्द, ४. पापियों, ५. मौजूद, ६. प्रलय, ७. सामने आया, ८. कारण, ९. कठिन, १०. जहाँ, ११. वहाँ, १२. चित्र, १३. कोप, १४. शरारत की जड़, १५. सचमुच, १६. कदापि, १७. सकेगा, १८. त्राहि-त्राहि, १९. चारों ओर, २०. गढ़ पर से, २१. लाचार, २२. फेंक, २३. शाहजी, २४. बात, २५. धन्य, २६. उत्तराधिकारी, २७. अली आदिल द्वितीय की माँ खदीजा सुल्तान, जो कि गोलकुंडा के सुलतान मुहम्मद कुतुब की लड़की और अब्दुल्ला कुतुब की बहिन तथा साहित्यप्रेमी थी, २८. सदा, २९. दया, ३०. उत्तम भोग, ३१. समुद्र के जल, ३२. देशप्रेम, ३३. पसन्द, ३४. ईश्वरी चमत्कार या दया, ३५. उसकी मुहब्बत, ३६. शोभा, ३७. सदा, ३८. निस्सहाय, ३९. पक्के वादे, ४०. गरुड़, ४१. काकेशस पर्वत, ४२. कुत्ते–सदृश, ४३. शेर-बच्चा।

दुनिया कशाकश[1] कर अगर फाड़े फ़लक[2] के दौर[3] कूँ।
सरिश्ता[4] फिर साँधे उसे तिस-अह्द[5] के यक तारका॥
सह्वन्[6] भी तिसकी बातमें ना फेर[7] होय ज़ाहिर[8] कधीं।
गर याद गुज़रे दिलमें टुक जिसके सचे इक़रार[9] का॥
हैं गर शुजाअत[10] की फ़लक़ उनका ख़लफ़[11] यो सूर[12] है।
जिस-तेश-रोशन ते[13] छिप्या बल[14] कुफ़्र[15] की रिंदकार[16] का॥
जों शबके ख़ुश-नक्क़ाश[17] ने दाने सफ़ेदी के भर्‍या।
कासा[18] सोनेके जलते जब ख़ाली दिस्या ज़ंगार[19] का॥
होनेमें निस ख़ुश जल्वागर[20] शह् शह् गश्त[21] अति शोकसों।
करने हवस ल्या दिलमने[22] किसवत[23] किया ज़रतार[24] का॥
जिसमें अजब शह् सूर सा निकल्या झलकता नूरसों।
चंदर-उपर काले कलँक नहिं रह सक्या अँधकारका॥
चँदना न था बल[25] शरमते गल-गल को पड़ता था चँदर।
ना देख सक सक शअशआ[26] उस मोरकी झलकारका॥
चौंधर[27] हलालाँ[28] मशअलाँ[29] यों भर रह्या सब ठारमें।
जों नूर भार[30] आता है चल गुलनारो-लालाज़ार का॥
चारों रुखन[31] रंग-रसभरे हर भांत बाजे यों बजें।
क़ाज़ी फ़लक[32] का हाल धर परवा सुट्या[33] दस्तार[34] का॥
हर हर क़दम चलते अँगे[35] चंदर हो शहके पाँव तल।
मुँह पर बिछाता था अपें उजला निगट[36] झमकार का॥
उस-शह् तुरंग कूँ देखने निकल्या सो गुलशन[37] ते पवन।
हर दम किया तोह्फ़ा[38] अ` खुश्बूइके महकारका॥
"ऐ शहसवार[39] इस वक्तपर पड़ने शहाबा[40] सों अथे।
करते थे निस हर डगपे तुज बाराँ[41] गुहर ईसार[42] का"॥

---

१. खींचाखींची, २. आकाश, ३. चक्कर, ४. सिलसिला, संबंध, ५. उसके शासन-काल, ६. भूल से, ७. उलटापन, ८. प्रकट, ९. सच्ची कौल, १०. वीरता, ११. उत्तराधिकारी, १२. सूर्य, १३. जिसकी चमकदार तलवारसे, १४. शक्ति, सेवा, १५. अन्-इस्लाम, १६. अधार्मिकता, १७. अच्छे चित्रकार, १८. बड़ा पियाला, कटोरा, १९. तूतिया, २०. प्रकाशमान, २१. गया, २२. दिलमें, २३. पोशाक, २४. जरी, २५. बल्कि, २६. किरणें, २७. चारों ओर, २८. अर्ध चन्द्र-सी, हजारों, २९. मशालें, दीप-यष्टियाँ, ३०. बाहर, ३१. तरफ, ३२. आकाश, ३३. फेंका (पंजाबी), ३४. दर्शन, ३५. आगे, ३६. बिल्कुल, ३७. फ़ुलवाड़ी, ३८. भेंट, ३९. असवार, ४०. ज्वालाएँ, ४१. वर्षा, ४२. त्याग की मोती।

शह शह्न पास आये वहीं ले हदिया अमृतके खड़े।
अक़बाल[1] पेश आया[2] अपें बंदा जो था सरकारका ॥
चँदना न था बल[3] चाँद अपस किसवत[4] दिया था शह्नकूँ।
ता मनकूँ साफ़ी-बख्श[5] होय नज्ज़ारा[6] तिस सिंगारका ॥
जों शमा[7] की फानूसते होती है खूबी[8] जल्वागर[9]।
यों शह्न कूँ रोशन किया शहका दरस अनवार का[10] ॥
अल्हक[11] कि हक़[12] में जगकी जो तौफ़ीक़[13] तुजते आइ है।
आलम[14] बिसरते[15] ना कधीं यो शुक्र तुज उपकारका ॥
तेरे क़ ी[16] ताले[17] की अब सौगंद होय आलममने[18]।
हक्क़ा[19] कि तुज हरदम मदद है हैदरे-क़र्रार[20] का ॥
तुज हुक्म मान्या सो ओही मक़बूल[21] ओ दारैन[22] में।
मर्दूद-आलम[23] है रख्या जिन तुजसों रुख इन्कारका ॥
फ़हमो[24] शुजाअत[25] अक्लो-दिलशह तुज खुदा बख़शिश किया।
बख्तो[26] जवानी का अवल दे बल अपसके प्यारका ॥
तेरी सिफ़त[27] सब वाकई[28] बोल्या हुं आपें जोड[29] में।
कंचन की उत्तम वस्तकूँ क्या काम टंक निखार का ॥
ौहर[30] हुनरका बेबहा[31] तुज-दौरमें क़ीमत धरया।
दौलत[32] ते तुज तज्जार[33] होय जिस लगह इस बैहार[34] का ॥
मुफलिस[35] अथा पन यो रतन पातें हुआ तज्जार में।
तूँ शाह आरिफ़[36] मुश्तरी[37] है हर दुरे-शहवार[38] का ॥
गर तुज-नज़रते यक रतन कुछ बेबहा पावे तो होय।
तारयाँ का खुर्दा[39] ले गगन सर्राफ़[40] मूंज बाज़ार का ॥
दह-पाँच ैत[41] इस भांत में किये हैं तो शौकों क्या हुआ।
मालूम होता शेर अगर कहते सो स विस्तारका ॥
सेवट[42] हुनरमंदी के फ़न[43] कहते क़सीदा[44] होय अयाँ[45]।
करना है ठारेठार अदा[46] क्यों लाज़िमा[47] अशआर[48] का ॥

---

१. प्रताप, २. आगे आया, ३. बल्कि, ४. पोशाक, ५. सफाई देनेवाला, ६. दृश्य, ७. मोमबत्ती, दीप, ८. सुन्दरता, ९. प्रकाशमान, १०. प्रकाशों, ११. सचमुच, १२. पक्ष, १३. भलाई, १४. दुनिया, १५. बिसरेगी, १६. शक्तिशाली, १७. भाग्य, १८. दुनिया में, १९. सचमुच, २०. आक्रमक अली, २१. स्वीकृत २२. उभयलोक, २३. दुनिया का अभागा, २४. समझ, २५. वीरता, २६. भाग्य, २७. गुण, २८. यथार्थ, २९. जोड़जाड़, ३०. मोती, ३१. अनमोल, ३२. धन, राज्य, ३३. व्यापारी, ३४. अ-पराजय, ३५. निर्धन, ३६. ज्ञानी, ३७. खरीदार, ३८. राजमोती, ३९. खुदरा पैसा, ४०. सर्राफी करनेवाला, ४१. शेर, छंद, ४२. अंतिम (गु० छेवट), ४३. कला, ४४. प्रशंसात्मक पद्य, ४५. प्रकट, ४६. प्रकट करना ४७. औचित्य, ४८. शेरों।

उस्तादे-आलम[1] का जो में शागिर्द था कर[2] कमतरीं[3]।
बोल्या हुँ यो ज्यों त्यों बरी मेरे सकत-मिक़दार[4] का।।
कै मूशिगाफ़ी[5] का हुनर मुंज हतमें है पन बस नहीं।
तुर्रा[6] न भाता चीर अधिक जैसे भी नाजुक[7] तारका।।
यह हर्फ़ कहते शह तुझे होते हैं लख मानी[8] समझ।
ऐ शाह आरिफ़[9] इस उपर वाक़िफ़[10] हो सब इसरार[11] का।
ऐ नस्रती मश्गूल[12] हो शहकी दुआके विर्द[13] में।
काफ़ी है दो जगमें तुजे तिल फ़ैज़[14] तिस आसार[15] का।।
है आसमाँ या रब[16] तलक धरती के सरपर सायबाँ[17]।
कायम तलक यो छत्र अछो[18] शह जग के पालनहार का।।

(४) औरंगजेब से युद्ध*—

औरंगजेब की सेना से अली आदिल को लोहा लेना पड़ा था, जिसका वर्णन नस्रती निम्न प्रकार से करता है—

उसी रात अरस्तूय-दौराँ[19] के याँ। दखिनके सब ऐयान[20] थे मेहमाँ।।
सँवारे थे कइ अंजुमन[21] दिलनशीं। ... ...।।
हरेक नामवर[22] ते दिलेराँ[23] की सफ़[24]। अथा यक गमतमें हो बैठ यक तरफ़।।
न थी बिन-खड़ग कुछ गमतकूँ रवाज। न बाज़ी[25] की मज्कूर[26] जाँबाज़ी-बाज[27]।।
कहीं लेके शहनामा[28] शहनामा-स्वाँ[29]। दिलेरी[30] में रुस्तम की खोले ज़बाँ।।
कतेक ले सफ़ीना[31] निज़ामी[32] का हाथ। सिकंदरकी मर्दी[33] के बोलें नुकात[34]।।
दिलेराँ हरेक भात रज्मीय[35] सुन। शुजाअतते होते चलें अति वो गुन।।
फुगें[36] यों तहव्वर[37] सों मर्दाके रंग। खोलें हो ज़िरह[38] क्याँ कड़ियाँ तनपे तंग।।
जेते शेर शम्शेर[39] म्याँना ते काड। देखें तौल हाथां सों धाराँ के बाड[40]।।
दिया शौक़[41] यों सबकूँ जल्दी तमाम। कि गो आ पडेगा मुगल-साथ काम।।
तलक[42] यों कहे आके जासूस[43] भेद। जो धरता है यों दुशमने बद-उमेद[44]।।
बदअंदेश[45] के दिलका जब भेद पाय। सबे शेरमर्दां[46] ने गुस्से में आय।।

---

१. जगद्गुरु, २. इति, ३. अधम, ४. शक्ति के अनुसार, ५. कई बाल की खाल खींचने, ६. कलगी, ७. कोमल, ८. अर्थ, ९. ज्ञानी, १०. जानकार, ११. भेदों, १२. संलग्न, लगा, १३. जप, १४. कृपा, १५. प्रभाव, १६. हे भगवान्, १७. छाया करनेवाला, १८. रहो।

[*उ० श०, पृ० २३९।

[१९. युग का अरस्तू, २०. सामन्त २१. सभी, २२. नामी २३. वीरों २४. पाती, २५. खेल, २६. वर्ण २७. प्राण के खेल के बिना २८. पुस्तक २९. शाहनामा पढ़नेवाला, ३०. वीरता, ३१. पुस्तक, ३२. गंजा (म) का फारसी कवि, (११३९-१२०० ई०), ३३. वीरता, ३४. बातें, रहस्य, ३५. युद्ध-संबंधी, ३६. फूले, ३७. आश्चर्य, ३८. कवच, ३९. तलवार, ४०. तेजी, ४१. उत्साह, ४२. अबतक, ४३. गुप्तचर, ४४. दुष्ट शत्रु ४५. बुरा सोची, ४६. नरसिंह।

"करें तेगसों पेशहस्ती[1] हमें[2] । उतारें उनन सिरते मस्ती हमें ।।
दिलेराँ उठे बोलते 'दीन-दीन'[3] । कहे म्हालदारा[4] कि है ज़ीन-ज़ीन[5] ।।
घड़ी भरमें हो मुस्तअद[6] बेदरंग[7] । सलह[8] बाँध सब रावताँ[9] होर तुरंग ।।
कवी बख्तराँ[10] कोइ सो जोशन[11] बँधे । केते चार आईना[12] रोशन बँधे ।।
ज़िरा वा कुला[13] ने केतक चहल[14] कद । कबायाँ[15] व कबच्याँ[16] तो थ्याँ बेअदद[17] ।।
हुई फौज यों मुस्तअद जिस घड़ी । दमाम्याँ[18] पे चौधरते[19] लकड़ी पड़ी ।।
गगनपर सितारे हुये हाल[20] में । हदरता[21] है सीमाब[22] जों थालमें ।।
जेती भेर वो बरग़म[23] जो बजने लगे । सवालाख पर्वत गरजने लगे ।।
सवाराँ चले मस्त हो तावमें । रखे तेज़ ताज़ी[24] नज़र बाद[25] में ।।
दिसे फौज दरियानमन[26] हर तरफ़ । लगें रस्ते[27] छत्र्याँ के मौजाँ[28] पे कफ़ ।।
जो पीसी गई भारतल सब ज़मीं । वो गर्द आ गगनके तबक[29] में जमी ।।

(क) दिल्ली की सेना*—

कता[30] हूँ एता[31] फौज **देहली**की बात । चली थी दखिन दलते किस घात[32] साथ ।।
कि जिस फौजकूँ देखनेमें समझ । दिसे ना किसे[33] इत्तहा[34] होर उपज[35] ।।
हथ्याँ का अराबा[36] चले मेल-मेल । न्हना जिसमें सरदार असहाब-फ़ील[37] ।।
सरासर[38] अगर भार सारा दिसे । तो यक फौजदार[39] उसमें दारा[40] दिसे ।।
सुबुकमन्सवी[41] होर भारी केते । अथे कै सदी[42] होर हज़ारी[43] केते ।।
यकेक मुल्कके नामआवर जवाँ । दो अस्या[44] सेहास्या[45] सिपह[46] बेगुमाँ[47] ।।
मोगोलाँ केते मुल्को कइ शह्रके । केते हिन्दु कइ **मावरन-नह्र**[48] के ।।
जगताइ[49] **किज़लबाश**[50] **उज्बक**[51] बली । **कंधारी** केते **बल्खी** व **काबुली** ।।
मुरव्वत के मुफ्लिस[52] मुहब्बतके शूम[53] । फ़रासत[54] कूँ तूती नहूसत[55] में बूम[56] ।।
फरेब[57] उनके फन[58] में बड़ा बुर्द[59] है । जनम जिनका इब्लीस[60] शागिर्द[61] है ।।

---

१. हाथ मिलाना, २. हम, ३. धर्म-धर्म, ४. महलदार, ५. चारजामा ६. तैयार, ७. निर्भय ८. हथियार ९. सर्दार, १०. मजबूत, ११. कवच, १२. वर्म, १३. कुलाह, टोप, १४. चालीस, १५. जामा, १६. बकबकी, १७. असंख्य, १८. नगाड़े, १९. चारों तरफ से, २०. तन्मयता, २१. नाचता, २२. पारा, २३. बाजे, २४. अरबी घोड़ा, २५. हवा, २६. समुद्र-सदृश, २७. मार्ग, २८. लहरों, २९. थाल।

* उ० श० पृ० २४०।

३०. कहता है, ३१. इतनी, ३२. भाँति, ३३. किसीको, ३४. अंत, ३५. आदि, ३६. पाँती, ३७. हाथीवाले, ३८. बिलकुल, ३९. सेनानायक, ४०. दारा बादशाह, ४१. छोटे दर्जे-वाले, ४२. सौ के नायक, ४३. हजार के नायक, ४४. दो घोड़ेवाले, ४५. तीन घोड़ेवाले, ४६. सेना, ४७. अनंत, ४८. गंगा-जमुनाका अंतर्वेद, ४९. जगताई (मुगल), ५०. नग्न कबीला, ५१. लाल बाल (ईरानी), तुर्क, ५२. बेमुरौवत, ५३. बेमुहब्बत, ५४. विशालता, ५५. अशुभता, ५६. उल्लू, ५७. धोखा, ५८. कला, शिल्प, ५९. लाभ, ६०. शैतान, ६१. शिष्य।

न छे[१] जिनमें असला[२] मुरव्वत की बोय[३] । करें उससों बद जिसते नेक उनपे होय ।।
बदी बापसों अपनी मीरास[४] जान । बिरादरका खून शीरे-मादर[५] पिछान ।।
देखें कुछ है ज्हाँ फायदा आपकूँ । न छोड़े सगे भाइ होर बापकूँ ।।
अथे मीरज़ा[६] मीर कश्मीरके । गरायब[७] सिपाही भी चौंधेरके ।।
खुरासानियाँ अस्फहानी केते । दमाबंदी वो दामग़ानी केते ।।
कमाँदार कोइ गुर्जबाज़ी[८] में चुस्त[९] । तिरंदाज[१०] कोइ नेज़ाबाजाँ[११] दुरुस्त[१२] ।।
भुखे होके झगड़ेकूं फिरते दिलेर[१३] । लोहे चाँभते दिल न होंय उनके सीर[१४] ।।
खलाल[१५] उनके ताँदाँ का भाला दिसे । गिरा[१६] गुर्ज़[१७] मुखका नेवाला दिसे ।।
केतेक ज़ातके थे रुहेले ओवट । ज़बर्दस्त पंजाबिआँ दिलके घट[१८] ।।
दिलेरीके बिन कुछ न उनमें ओबार[१९] । जनम रहके शहरामें ऐसे गँवार. . . ।।
मुगल हर हुनरमें बड़ा कारसाज[२०] । लड़ाईके फ़न[२१] पर तो अति हीलाबाज[२२] ।।
सब इस धात[२३] फौजाँ खुशारास्ता[२४] । चल्याँ थ्याँ अरूसाँ[२५] हो नौख्वास्ता[२६] ।।
हरेक मर्दका शौक ताज़ा हुआ । लटापट ब-दिल[२७] ज़ौक़[२८] ताज़ा हुआ ।।
अजब फौज़ रंगीं दिल-फ़रोज़[२९] थी । वले[३०] सख्त खूँरेज[३१] जाँ-सोज़[३२] थी ।।

(ख) युद्ध-वर्णन*—

ग़नीमाँ[३३] के भेज्याँ[३४] कुँखाने शिताब[३५] । खुश[३६] आने लग्या मूमें गुर्ग़ाँ[३७] के आब[३८] ।।
कमानाँ रख्याँ दिल कुशाकुश मने[३९] । उबलने लगे तीर तर्कशमने ।।
फुक्याँ तेज़ यों सक्त भाल्याँ में रंग । कि फुकता[४०] है जों बाव लेकर भुजंग ।।
भड़कते तुरंगाँ हो आगाँ दिसे । सवाराँ मुखे रनके बाघाँ दिसे ।।
निकलते हैं जों बाघ नखचीर[४१] कूँ । निकल यों म्हराटे दोनों धेर[४२] सूँ ।।
रकत भुँइपे पड़-पड़ के पामाल[४३] हो । लड़ंतका हंगामा रह्या लाल हो ।।
हज़ाराँ तुरंगाराँ कालख तल[४४] बजा । ज़मीं के धमकते फलक[४५] हिल्ल बजा ।।
जबाँ[४६] लहुकी प्यासी खड़गकी अपार । निकल आई जों म्याँ[४७] के लबतें[४८] बहार[४९] ।।
हरेक मुखते आवाज सुन 'मार-मार' । किया जिव[५०] ने दुश्मनके होठोंमें ठार ।।

---

१. है, २. बिलकुल, ३. मुरव्वतकी गंध, ४. दायभाग, ५. माँ का दूध, ६. मिर्जा, ७. चित्र-विचित्र, ८. गदा चलाने, ९. चालाक, १०. तीर चलानेवाला, ११. भालाबाज, १२. ठीक, १३. वीर, १४. तृप्त, १५. दंत-खोदनी, १६. पड़ा, १७. गदा, १८. छोटे, १९. उबार, २०. कार्यकर, २१. कला, २२. चालाक, २३. भाँति, २४. सुसज्जित, २५. दुल्हनें, २६. नई माँग, २७. दिल से, २८. उत्साह, २९. उत्साहवर्धक, ३०. लेकिन, ३१. खूनी, ३२. प्राणदायक।

*उ० श० पृ० २४२।

३३. शत्रुओं, ३४. प्रेषितों, ३५. जल्दी, ३६. प्रसन्न, ३७. भेड़िया, ३८. पानी, ३९. काटाकाटी में, ४०. फुंफकारता, ४१. शिकार, ४२. दोनों ओर, ४३. बर्बाद, ४४. धरती, ४५. आकाश, ४६. जीभ, ४७. मियान, ४८. ओठ से, ४९. बाहर, ५०. जीव, प्राण।

शरंगेज[1] बाना[2] ते शर-शोर उठ्या । कड़ाकड़ जबूरयाँ ते पुरजोर[3] उठ्या ॥
जो यक दम छुटी पोप हर फ़र्द[4] फ़र्द । उचाया[5] धुआँ बाद[6] हो यक की गर्द ॥
दिसे निसमें तरवार झलके जेती । पकड़ गर्द में उड़ रही है बती ॥
कहे देख हैरान[7] हो अहले-अर्श[8] । मुअल्लक़[9] हवापर बँध्या कौन फ़र्श[10] ॥
मुगल का जो हादी[11] सेव्ता पेस्तदस्त[12] । अगले के था फौज हाथ्या के मस्त ॥
अवल उसपे शेरज़े[13] का पंजा पड्या । सलहपोश[14] दिलपर कड़ाकड़ घड्या ॥
दिलेरा करें नारा[15] यों होके आग । नेस्तान[16] में जों गरजते हैं बाघ ॥
झलकने[17] लगे गुर्ग भाल्याँ में यों । लगी है नेस्तान कूँ आग जों ॥
भुसाँध्याँ ते लहु यों भूँसाँधे पिले । चलें जोशसों आहनी[18] जों नले[19] ॥
कमानाँ[20] की रत[21] जब कशाकश हुई । हवा भरके तीराँ यो तर्कश[22] हुई ॥
छुटी सफते[23] यों तीर यक मुठ दिलेर । उड़े घेत ते जों हज़ाराँ तिलेर[24] ॥
हुआ लाल गीती[25] पकड़ तीर ओज[26] । कहे तूकि टोलाँ की निकली है फौज ॥
लग्या तीर हर तनपे जब बाले-बाल । दिस्या लहु उछलते फवारे[27] का जाल ॥
दिस्या ज़र्रापोशाँ[28] का तीराँ सों हाल । फुगाया[29] है गुस्से सों जों रीछ बाल ॥
चुबे पाखराँ[30] पर जो तीराँ अपार । हुआ हर तुरँग ऐन[31] अफ़ीत-सार[32] ॥
हथ्याँ का हुआ हल्का[33] यों सरबसर[34] । मकोड्याँ[35] के जों फील[36] कूँ आये पर ॥
दमे-तेग[37] ते यों उठे शोला[38] जाग । लगे जाके सूरजके कपड्याँ कुं आग ॥
करे क़ीमा[39] तनकूँ तिरे बेकमाँ[40] । किये कोफ़ता[41] सिरकुं गुर्ज़े गिराँ[42] ॥
कियाँ जब कटार्याँ ने सीन्याँ कु रेश[43] । दिलाँ फांच छोड़े जो खंजरकुं पेश ॥
म्हरा होय सब लहुके शर्बत[44] में मिल । मुरब्बा[45] रह्या होके सीन्याँ में दिल ॥
हरेक तीर एक मार ज़ोहहाक था । करे मग्ज़ख्वारी[46] तो दिल चाक[47] था ॥
शपाशप जो बरछ्यों मुठ्याँ ते खुल्याँ । दियाँ कइ सवारा कुँ उलट्याँ सूल्याँ ॥
पड़ा बार हो जिस गले आ कमंद । निकल भार[48] दीदे[49] पड़े होके मंद ॥
न कोइ किस मदद कर सके तिस घड़ी । हरेक सिरपे आ फेंच अपसें पड़ी ॥
किये मुगल सों कूँ दखिनियाँ ने पाँच । यो पाँचों के गालिब[50] हजारों पे आँच ॥
मिल्याँ बारकूँ यक-ब-यक आके जो । यकेला च आकर भिड्या होके दो ॥

---

१. चिगारी फेंकनेवाला, २. बाण, ३. जबर्दस्त, ४. अलग-अलग, ५. उठाया, ६. हवा, ७. चकित, ८. स्वर्गवाले, ९. लटके, १०. आजम, ११. हिदायत देनेवाला, १२ आगे, १३. शेरबच्चे, १४. कवचधारी, १५. घोष, १६. बाँस के जंगल, १७. चमकने, १८. लोहे, १९. नल, २०. धनुष, २१. समय, २२. तूणीर, २३. पंक्ति से, २४. तीतर, २५. दुनिया, २६. उन्नति, २७. फव्वारे, २८. कवचधारी, २९. फुलाया, ३०. ढालों, ३१. बिलकुल, ३२. भूत-सरीखा, ३३. घेरा, ३४. निरंतर, ३५. कीड़ों, ३६. हाथी, ३७. तलवार की धार, ३८. ज्वाला, ३९. मांसपिण्ड, ४०. बेधनुष, ४१. मांस का, ४२. गदावाले, ४३. विदीर्ण, ४४. रस, ४५. अचार, ४६. बर्बादी, ४७. फटा, ४८. बाहर, ४९. आँख, ५०. विजयी ।

दमे-तेग़ क़ायम[1] क़यामत[2] करे । अजल[3] नाज़िल[4] यकबारा आफ़त[5] करे ।।
अजल का जो जिस मर्द पर ज़ौक़[6] होय । ज़रा[7] की कड़ी मू-ब-मू[8] तौख[9] होय ।।
मुग़ल आयकर घरकूँ मेहमान जान । गये कर यो ताज़ीम[10] खातिर निशान[11] ।।
ज़मीं सद्र[12] रंगीं बना बेदरंग[13] । करे यक-ब-यक तनकु यों रंग-ब-रंग ।। . . .
किते मै-अजल[14] का च पी होके मस्त । हुये दंग सर धो नटे[15] बैठ मस्त ।।
केतक खाके पीने लगे ग़मके अवक[16] । अपस सिरके[17] कास्याँ में भेज्याँ[18] के कश्क[19] ।।
सुरज सख़्त[20] तूफ़ान का एक उबाल । मंग्या चढ़ते चंदर की कश्ती[21] निकाल ।।
हिलावे जो पुरज़ोर[22] आने लगे । तही तोल में डुल्मुलाने लगे ।।
हुआ सब यो अरवाह[23] सों भर रहे । पवन पर अधिक मारते पर रहे ।।

§२४. मीराँजी खुदानुमा (मृ० १६५९ ई०)

सैयद मीराँजी हुसैनी पहिले गोलकुंडा के सुल्तान अब्दुल्ला कुतुबशाह (१६२४-७२ ई०) के दरबार में नौकर थे। एक बार किसी काम से बीजापुर गये, जहाँ उन्हें शाह अमीनुद्दीन आला की संगत में आने का मौका मिला। वह शाहजी के शिष्य हो गये और भागनगर (हैदराबाद) लौटकर सूफियों-जैसा जीवन व्यतीत करते १६५९ ई० (१०७० हि०) में मरे। यहीं मुहल्ला कारवाँ में इनकी समाधि आज भी पूजी जाती है। इन्होंने दक्खिनी हिन्दी में गद्य-पद्य की कई पुस्तकें लिखी हैं। 'चक्कीनामा उर्फान' (ज्ञानचक्की) की छोटी-सी पुस्तिका में उन्होंने चक्की के गीत लिखे हैं, जिनके नमूने* :—

विस्मिल्लाह[24] जाती[25] नाँव। कुरान ऊपर लिया ठाँव। कुल्ले[26] शैयन[27] उसकी छाँव ।।
लाइलाहा[28] कहना इल्लल्लाह[29] में रहना। नबीरसूलसे मनलाना अल्ला अल्ला कहना।
अव्वल अल्ला नाँव सिफ़त[30] जिसका ठाँव। याद है मेरे जी में हरदम तेरा नाँव ।।
ला इलाहा कहना० ।।

और अन्त में —

उर्फां का चक्कीनामा। बोले सैयद खुदाबन्द[31]। पीर ले[32] मुरीद[33] यो समझाना ।।
अल्ला अल्ला कहना इल्लल्लाहमें रहना। नबीरसूलसे मन लाना अल्ला अल्ला कहना ।।

सैयद मीराँजी खुदावन्द खुदानुमा, अर्थात् ब्रह्म और ब्रह्मस्वरूप थे, इसलिए अद्वैतवाद (सूफ़ी-मत, वेदान्त) के विचार रखनेवाले थे। ऐसा विचार इस्लाम में कुफ्र (नास्तिकता) कहे

---

१. स्थापित, २. प्रलय, ३. मृत्यु, ४. उतरकर, ५. संकट, ६. शौक, ७. कवच, ८. रोम-रोम, ९. तख्ती, १०. सम्मान, ११. हृदय-चिह्न, १२. मुख्य, १३. बदरंग, १४. मृत्यु-मदिरा, १५. भागे, १६. आँसू, १७. कठोरे, १८. भेजा, १९. कश्कोल, २०. बड़े, २१. नाव, २२. जबर्दस्त, २३. आत्मा।

* त० उ० म०, पृ० ६४—६५।

२४. भगवान् के नाम से, २५. व्यक्तिगत, २६. सरि, २७. चीजें, २८. नहीं भगवान्, २९. सिवाय अल्लाह के, ३०. ज्ञान, ३१. भगवत्स्वरूप, ३२. गुरु-द्वार, ३३. शिष्य।

जाते हैं, इसलिए वह अपने विचारों को अधिकारि-भेद से ही प्रचार कर सकते थे। 'वजूदिया' (सत्तावाला) उनका ऐसा ही लघु-ग्रंथ (रिसाला) है, जिसमें वह लिखते हैं*—

"विस्मिल्लाहिर्-रहमानिर्-रहीम[1]। ई रिसलिये वजूदिया[2]-अल्लाह मुहम्मद के राज-रम्ज[3] की बातां किसी ना-महरम[4] के अंगे ना बोलना। बोलंगे सो काफ़िर होयंगे व सुनेंगे सो दीवाने होयंगे। उनकूं दीवाने भी न करना अपे काफ़िर भी न होना। ज़बान सों ज़िक्र करना अल्ला-अल्ला। जो ज़बान से कहते हैं, तो दम आवते-जाते अल्ला अल्ला कहना। सारा दिन सारी रात क्या काम करते हैं, सो अल्ला की याद सों करना। यो संभाल कर बरते तो ज़िक्र[5] अलल्ला[6] की यादसों किया। तिसका फ़ायदा क्या? और अल्लाकी याद सों न किया जायाँ[7] गया। जों शरा[8] पीच में किया सो हराम[9] है और दुरुस्त[10] रखे सो हलाल[11] है।...अल्ला हमारे नज्दीक है तनके फ़ेल[12] करते हैं, सो देखता है। बोलते हैं सो सुनता है। बुरा खतरात[13] लाव ना, बुरी बात न बोलना, बुरे फेल न करना।...."

§ २५. तबई (१६७० ई०)

तबई गोलकुंडा में उस समय अपनी प्रतिभा के जौहर दिखला रहा था, जब कि उत्तर में मतिराम और बिहारी सहृदयों को चकित कर रहे थे। इसका संरक्षक अबुलहसन कुतुबशाह—जो तानाशाह के नाम से अधिक प्रसिद्ध है—गोलकुंडा का अन्तिम बादशाह (१६७२-८७ ई०) था। २१ सितम्बर १६८७ ई० को आठ महीनेकी सख्त लड़ाई के बाद विजय कर औरंगज़ेब के पुत्र शाहज़ादा आजम ने तानाशाह को बंदी बनाया। १४ साल दौलताबाद (देवगिरि) में नज़रबन्द रह १७०० ई० में वहीं उसका देहान्त हुआ। तबई इसी अन्तिम कुतुबशाह का दरबारी था। शाह राजूहुसेनी, जो सुल्तान के गुरु थे, तबई के भी भक्तिभाजन थे। एक तरह कह सकते हैं, तबई दक्खिनी-हिन्दी का अन्तिम महाकवि था। आगे होनेवाले वली (औरंगाबादी) को दक्खिनी ही नहीं, उर्दूवाले भी अपना कवि मानते हैं।

तबई की केवल एक पुस्तक 'बहरामो-गुलन्दाम' उपलब्ध है, जिसके १३४० शेरों में कोई भरती का नहीं मालूम होता। इस पुस्तक को तबई ने ४० दिनों में लिखा था† —

किया हूं मैं चालीस दिसवमें किताब। बहुत फिक्र[14] कर रात-दिन बेहिसाब॥
यों नामा पढ़ेंगे तो बहरे खुदा[15]। पढ़ो फ़ातिहा[16] नाम लेकर मेरा॥
गिना बैत-बैतां कु मैं एक जो दिल। हज़ार और हैं तीनसौ पर चहल॥
अथा साल तारीख का खूब नेक। सन यक हजार ओर हश्ताद एक (१०८१)॥
यो नामे कु तबई किया है तमाम। बहक्क़े मुहम्मद[17] अलेहिस्सलाम[18]॥

---

* स० उ० म०, पृष्ठ २५०-५१।

१. कृपालु दयालु अल्लाह, नाम से, २. यह वजूदिया नामक पुस्तक है, ३. रहस्य, भेद, ४. अ-पात्र, ५. स्मरण, ६. अल्लाह के प्रकाश, ७. बर्बाद, ८. धर्मशास्त्र, ९. धर्म-प्रतिषिद्ध, १०. ठीक, ११. धर्मानुमोदित, १२. कर्म, १३. संकट।

† उर्दू-शहपारे, पृ० १११। १४. चिन्ता, १५. खुदा के लिए, १६. कुरान-सूक्त, १७. मुहम्मद के लिए, १८. उसके ऊपर नमस्कार।

बहराम की कथा को लेकर अमीन और दौलत ने भी दक्खिनी में मस्नवियाँ लिखी हैं। किन्तु तबई की मस्नवी उनसे कहीं अच्छी है। तबई ने फारसी किस्से की अन्धाधुन्ध नकल नहीं की है, न केवल कथा सुनाने का खयाल किया है। वस्तुतः उसने उसे एक सुगठित काव्य का रूप दिया है।

तबई के काव्य के नमूने देखें—

(१) मंगलाचरण—

इलाही[1] यो तबई तेरा दास है। दे ईमान[2] इसको तेरा आस है॥
इलाही वचन का मुंजे ताव दे। मेरी जीभकी तेगकूँ आब दे॥

(२) गुरु (शाहराजू)-वन्दना*—

वली तू बड़ा है कि कर शाह राजू। चल आया है शह तेरे घर शाहराजू॥
फलक[3] पर तूँ उड़ता है शहबाज नमनें[4]। करामत[5] की लाशाह-उपर शाहराजू॥
खबर तेरी मालूम नें बेखबरकूँ। खबरदार जाने खबर शाहराजू॥
तुँ मखदूम[6] सैयद मुहम्मदके धनका। बहुत बेबदल[7] है गौहर[8] शाहराजू॥
करामत हुआ सबकुँ मालूम यो ज़ाहिर[9]। तु बातिन[10] में कर यकनज़र[11] शाहराजू॥
दखिन का किया बादशाह बुल्हसनकूँ। तेरा तख्त देकर छतर शाहराजू॥
खड़ा होके खिदमतने[12] तेरी सूरज। उड़ाता कज़न की चँवर शाहराजू॥
किसी का नहीं ऐब चिन्ता[13] तुँ हर्गिज। बड़ा तुझमें हैयो हुनर शाहराजू॥
कदम तेरे पकड़्या हुँ उम्मेद लेकर। मेरे बख्त[14] तेरी नज़र शाहराजू॥
खुदा पास उचा[15] हाथ करता है तबई। दुआ तुजकूँ शामो-सेहर[16] शाहराजू॥

(३) वजही स्वप्न में†—

लग्या में जो यो मस्नवी बोलने। यो मातिया निछल धाल[17] यो रोलने॥
यों वजही मेरे ख्वाब में आयकर। कुछ अपना सुरजनार[18] दिखलायकर॥
सरासर[19] सुन्या जो मेरी मस्नवी। कया[20] "बात तबई तेरी है नवी॥"
हो खुशहाल[21] सुनकर यो वातां मेरी। अपसके ले हाथोंमें हाथां मेरी॥
बड़े प्यारसों अपना यो दे मिसल[22]। सुन्या सो पड़्या ख्वाब[23] से मैं उछल॥

---

१. भगवान्, २. धर्म-विश्वास।

* उ० श० पृ० ११५।

३. आकाश, ४. बाज-जैसे, ५. चमत्कार, ६. स्वामी, ७. अनमोल, ८. मोती, ९. बाहरी, १०. भीतरी, ११. एक दृष्टि, १२. सेवा में, १३. दोष निकालना, १४. बारी, १५. उठा, १६. प्रातः-सायं।

† उ० श०, पृ० १११।

१७. निर्मल जाति, १८. सूर्य-सदृश, १९. जैसे ही, २०. कहा, २१. प्रसन्न, २२. राय, २३. स्वप्न।

(४) काव्य-निर्माण का उद्देश्य*—

कता[1] हूँ सुनो कान धर लोग हो । कहावत मने[2] बात हो आप यो ।।
अगर शेर[3] कोइ खूब कहकर जो लाय । तो खूबाँकूँ[4] सुन रश्क[5] अल्बत्ता[6] आय ।।
यक सकूँ सो यक[7] देख सकते नहीं । यकसकूँ यो यक मान रखते नहीं ।।
अगर खूब जो बोले जो तो वो अहै । अगर जो बुरा बोले तो यों अहै ।।
तबई तूँ ओ काम कर अख्तियार[8] । कि रहे ता कयामत[9] तेरा यादगार[10] ।।

(५) तानाशाह की प्रशस्ति†—

शह अबुलहसन सच तूँ शाहे दखिन । तुजे शाहराजू मदद बुल्हसन ।।
दिया है खुदा पादशाही तुझे । सोहाता है ज़ल्ले-इलाही तुझे ।।
शहंशाह तूँ आज दिन सूर[11] है । तेरे परते शाहा बला दूर है ।।
मलाहत[12] में ज्यों सूर चंदर है तूँ । सलाबत[13] मने ज्यों सिकन्दर है तूँ ।।
तेरा नामका कुत्ब[14] तारा दिसे । तेरा पर्दा मादी[15] फरारा दिसे ।।
दिलोजानते अपने ऐ बादशाह । यो आलम[16] कते[17] तुजकूँ आलमपनाह ।।
रतन है सखावत[18] की तू खानका । भिखारी है हातम तेरे कानका ।।
अदालत[19] में फ़ाज़िल[20] है तूँ शहजवाँ । बराबर नहीं तेरे नौशेरवाँ ।।
तु मर्दी[21] के मैदान का बाघ है । तेरे घरमें दिन रात रंगराग है ।।
शहंशः तूँ राजा अहै छत्रपती । गगन तेरे दरबार का है हती ।।

(६) राजा को आशीर्वाद‡—

तेरे हाथमें शाह-जम[22] जाम[23] अछो[24] । हमेशा बगल[25] में दिलाराम[26] अछो ।।
जगतके शहाँ में तुअ-च[27] नेकनाम । कि दुश्मन तेरा है सो बदनाम अछो ।।
चंदर-सूरके जाम ते आसमाँ । तुजे गुस्ल[28] करनेकूँ हम्माम[29] अछो ।।
अछो सब सलामत[30] अज़ीज़ा तेरे । जहाँ लग अदू[31] हैं सो गुमनाम अछो ।।

(७) कथारंभ‡‡—

रवायत[32] किया राविये[33] नेकनाम[34] । बहुत फिक्र[35] सों यो हिकायत[36] तमाम[37] ।।
अथा रूम के शह्र में बादशाह । .... ।।

---

*उ० श०, पृ० ११२।

१. कहता, २. कहानी में, ३. छन्द, ४. सुन्दरियों को, ५. ईर्ष्या, ६. जरूर, ७. एक को एक, ८. स्वीकार, ९. प्रलय, १०. स्मृति-कीर्त्ति।

† यु० द० म० पृ० ९७।

११. सूर्य, १२. लावण्य, १३. दृढ़ता, १४. ध्रुव, १५. सदा, १६. दुर्लभ, १७. कहते, १८. दानशीलता, १९. न्याय, २०. पूर्ण, २१. बहादुरी।

‡उ. श, पृष्ठ ११२।

२२. जमशेद का, २३. प्याला, २४. रहो, २५. पार्श्व-क्रोड, २६. प्रेमिका, २७. तेरा ही, २८. स्नान, २९. स्नानशाला, ३०. सानंद, ३१. शत्रु।

‡‡यु० द० म०, पृ० ९४।

३२. कथा, ३३. कहनेवाला, ३४. सुनाम, ३५. चिंतन, ३६. कथा, ३७. समाप्त।

ओ शाह भौत मक़बूल[1] आक़िल[2] अथा । सखी[3] हौर फ़ाज़िल ओ कामिल अथा ।।
सवा लाखथे उसकूं तुर्की गुलाम । जो अल्मास था रंग उनका तमाम ।।
जो हब्शी गुलामाँ सवा लाख थे । ओ नीलम[4] की त्यों हुस्न[5] में पाक थे ।।
अगर्चे ओ शाहे-जहाँगीर[6] था । नहीं है कि फ़र्जन्द[7] दिलगीर[8] था ।।
इसी गमसों दिनरात रोता अछै[9] । .... ।।

(८) नख-शिख-वर्णन*—

(१)

अजब सीस पर उस लँबे बाल थे । भुजँग शाख-संदल[10] पर रखवाल थे ।।
जबीं[11] देख उसकी छुपे आफताब[12] । ले मुख पर अपसके रयनका नक़ाब[13] ।।
भवाँ पर उसीके नज़र कर हलाल । किया तनकूं लागिर[14] रयनका नक़ाब ।।
नयन देख आहू[15] परेशान हो । चमन-बीच नर्गिस हो हैरान हो ।।
अजब उसकी आँखोंमें डोरे थे लाल । कि जिन नयन कारन बनाई जो चाल ।।
दो गालाँ सफ़ाकी[16] सना[17] की ना जाय । देखत आशना उसके रशकत[18] लियाय ।।
सिपह खाल[19] नादिर[20] था उस गालपर । भँवर होके बैठा है गुललाल[21] पर ।।
दो लब[22] आबे-हैवाँ[23] से लब्रेज़[24] थे । किया शहद[25] शक्करसों आमेज़[26] थे ।।
अथे दाँत मुख बीच हीरे जड़े । दहन[27] के सदफ़[28] बीच मोती जड़े ।।
जहाँ वो खुशी साथ हँस बोलती । गुलाँ और मोतियाँ कई रोलती ।।
सीनापर दो पिस्तान[29] अन्नार थे । यो दो बुर्जमुश्कीन[30] तातार थे ।।
शिकम[31] मौज-दरियाय-सीमाब[32] है । अगे नाफ़[33] तिस बीच गर्दाब[34] है ।।
चरन देख चंपा खिला बाग-बाग । वह रुख देख लाला हुआ दाग़-दाग़[35] ।।

० ० ० ०

(२)

ओ जुल्फ़ाँ[36] दिलोंके हिंडोले अहैं । ग़लत मैं कया[37] दो सँपोले अहैं ।।
भँवा बागनख होर आँखियाँ हरिन । कि ओ मोहनी है अजब मनहरन ।।

---

१. बहुत पसंद, २. बुद्धिमान्, ३. दाता, ४. हीरा, ५. सौन्दर्य, ६. चक्रवर्ती रा
७. पुत्र, ८. दुःखी, ९. रहे ।

*उ. श. पृ० ११३ ।

१०. चंदनशाखा, ११. ललाट, १२. सूर्य, १३. घूँघट, १४. कृश, १५. हरिण, १६. स्व
१७. प्रशंसा, उपमा, १८. ईर्ष्या, १९. तिल, २०. दुर्लभ, २१. लालफूल, २२. अधर, २३. अ
२४. भरा, २५. मधु, २६. मिश्रित, २७. मुख, २८. मोती, २९. स्तन, ३०. काले, ३१. उ
३२. पारद-समुद्र-तरंग, ३३. नाभि, ३४. भँवर, ३५. दागवाला, ३६. अलक, ३७. कहा ।

ओ गालाँ की सुर्खी सो लालेमें नैं । ओ बालाँ की खुश्बोइ बालेमें नैं ।।
दिसे फूल दो सेवतीके दो कान । चँपेकी कली नाक है दर्मियान ।।
अजायब[1] यो चाहे-ज़नख़दान[2] है । कि गर्क[3] उसमने दीन - ईमान है ।।
दो जोबन सो चोलीके दो हाथ में । जो अम्रीतफल छुप रहे पातमें ।।
अथा पेट जों आरसीनाद[4] साफ । कहूँ क्या झमकता अथा ज्यों शफ़ाफ़[5] ।।

(९) नायक-नायिका का प्रेमालाप *—

बहराम—हुआ मजनूँ बिरहते सुध गँवा में । अथा दाना[6] सो दीवाना[7] हुआ में ।।
तुझे दिलमें छुपाया हूँ अपसके । खराबेमें[8] लगाया हूँ दिवा में ।।
उचाया[9] हुँ तेरे ग़मके[10] पहाड़ाँ । अजब है नैं सीना फटकार मुवा में ।।
सनम[11] तेरे बदल[12] होकर बरहमन । गलेमें अपने भाया[13] जानेवा[14] में ।।
गुझे क्या देखती अज़मा[15] गुलन्दाम । पुराना हूँ नहीं आशिक़[16] नवा में ।।
गुलन्दाम—तुझे हासिल नहीं है बिन गम । नको[17] कर गममें अपना पाँव मुहकम[18] ।।
तेरा दिल हो गया फोड़ा दुखों ते । नहीं इस ज़ख्मका मुंज पास मरहम ।।
मेरे पावों पो सिर तेरा न अँपड़े[19] । करे धनुकी नमन[20] गर तूकमर खम[21] ।।
कधाँ लग गम तु खायगा[22] बोल बारे[23] । मुंजे तू छोड़ दे आज भौत खुर्रम ।।
न पायगा इस मनमें ते तूं मेवा । ··· ··· ···।।

(१०) स्वदेश-प्रेम †—

जे कोइ याद करता न अपना वतन[24] । ओ मर्द है पेरन[25] असलका कफ़न ।।
अगर कोइ गुर्बत[26] में शाही करे । अगर माल होर मिलक[27] लाखाँ धरे ।।
अपसकूँ देखे खोलकर जों अँखियाँ । देवे खाक[28] तनका वतन का निशान[29] ।।
वतन सबकूँ दुनिया में प्यारा अहै । सफ़र[30] है सो जो बादेबाराँ[31] अहै ।।

§ २६. गुलामली (१६८० ई०)

गुलामली गोलकुंडा के अन्तिम कवियों में से था, और अबुल्हसन कुतुब तानाशाह के समय में हुआ था। इसने जायसी की 'पद्मावत' का दक्खिनी में अनुवाद उसके किसी फारसी

---

१. अद्भुत, २. नाभि, ३. मज्जित, ४. ठुड्डी (ठोढ़ी), ५. आकाश की लालिमा,
*उ०शा०, पृ० २४६।

६. बुद्धिमान्, ७. पागल, ८. खंडहर में, ९. उठाया, १०. दुःख के, ११. प्रियतमे, १२. तेरे लिए, १३. पाया, डाला, १४. अनेक, १५. परीक्षा ले, १६. प्रेमी, १७. नहीं, १८. दृढ़, १९. पहुँचे, २०. धनुष की तरह, २१. टेढ़ी, २२. खायेगा, २३. बाले।
†उ० शा०, पृष्ठ २४६।

२४. घर, २५. परिधान, २६. परदेश, २७. सम्पत्ति, २८. मिट्टी, २९. पता, ३०. यात्रा, ३१. वर्षा की हवा।

अनुवाद के सहारे किया था। इसकी उपलब्ध प्रति (इंडिया-ऑफिस) में अधूरी है, जिसमें केवल ६८० शेर हैं। जायसी की पद्मावत के कई अनुवाद फारसी में हुए थे, जैसे —

१. मुल्ला अब्दुश् शकूर बज़मी (१६१८ ई०) का पद्यानुवाद 'पद्मावत' जहाँगीर के शासन-काल में हुआ।

२. आकिलखाँ राज़ी ने 'शमा-पर्वाना' के नाम से औरंगजेब के शासन-काल में १६५८ ई० (१०१९ हि०) में पद्यानुवाद किया। राज़ी १६८० से १७०६ ई० (१०९१–१११८ हि०) तक दिल्ली का राज्यपाल, फारसी का कवि और इतिहासकार था।

इनके अतिरिक्त पद्मावत के फारसी में और भी कितने ही गद्य-पद्य-अनुवाद हुए। गुलामली के सामने बज़मी और राज़ी के अनुवाद मौजूद थे। लेकिन, उसने यह नहीं लिखा, कि किसको उसने अपना आधार बनाया। जायसी ने शेरशाह सूरी की फर्माइश पर पद्मावत को लिखकर १५४० ई० (९४७ हि०) में समाप्त किया था। गुलामली ने मूल ग्रंथ के बारे में इतना ही लिखा है—

यो किस्सा[1] अथा भौत शीरीं-सखुन[2]। हवस[3] करके लाया हुँ दखिनी वचन।।

कविताके नमूने :—

१. तानाशाह की प्रशंसा*—

... ... । शहे बुल्हसन[4] औलिया[5] जाह[6] का।।
कतेक शाह उसका अदालत[7] देखत। हुये जुल्म मुट[8] देख आदिल[9] निपट[10]।।
सखावत[11] में मशहूर जों आफताब[12]। ... ...।।
हरेक इल्म[13] में होर बलागतमने[14]। नहीं कोइ है ता शुजाअत[15] मने।।
सज़ावार[16] अछो[17] उसके तैं...यो राज। मुबारक[18] अछो सल्तनत-तख्त-ताज।।

२. कथारम्भ†—

कि है सब जगत्तर[19] मने सात दीप[20]। सिंगलदीप उसमें का है एक दीप।।
कि ओ दीपमें है सकल पद्मनी। न चित्रिन[21] न हस्तिन नहीं शंखनी।।
सकल दीपके नारका बात है। सुनों मैं कहूँगा ओ किस धात है।।
अथा एक राजा सो भूखन कनीर[22]। सिंगलदीपके मुल्कमें बेनज़ीर[23]।।
निका[24] नाँव कंदर्प सेन (उस) अथा। जगतमें बड़ा राजा उस बिन न था।।

---

१. कथा, २. मधुर काव्य, ३. लालच।

*यु० द० म०, पृष्ठ १२३।

४. अबुलहसन तानाशाह, ५. स्वामी सन्त, ६. दबदबे, ७. न्याय, ८. छोड़, ९. न्यायी, १०. बिलकुल, ११. दानशीलता, १२. सूर्य, १३. विद्या, १४. पूर्णता में, १५. वीरता, १६. योग्य, १७. रहो, १८. मंगल।

†यु० द० म०, पृष्ठ १२३।

१९. जगत्, २०. द्वीप, २१. चित्रिणी, २२. भूषण-जैसा, २३. अनुपम, २४. अच्छा।

न था कुच्छ लश्करकुं उसकी हिसाब । कि जों घनमें तार्‌यांमने माहताब[१]।।
खज़ीना भरी कोठर्‌यां कै हज़ार । जवाहिर की संदूक थी सौ हज़ार।।

३. हिरामन तोता की यात्रा*—

चल्या और कह सात दरिया[२] गुज़र । तमाशे[३] जो देखता हरेक ठार पर।।
बंगालेमें (वाँ) एक खुश[४] बाग था । जो जन्नत[५] की दिल-रश्क[६] सों दाग[७] था।।
उतर वाँ लग्या सैर करनेके तैं । जो मेवेके झाड़ांपे फिरने के तैं।।
वहाँके कदीमी जो राँवी[८] अथे । हिरामनकुं देख आये मिलने वतें[९]।।
देखे जों यो है भौत शीरीं-कलाम[१०] । हुये भौत खुशहाल राँवी तमाम।।

४. हिरामन के सामने पद्मावती की विकलता †—

चल्या उड़कर शाहका ले पयाम[११] । किया शाहज़ादी[१२] कुं जाके सलाम ।।
देखी उसकुं अरराके रोने लगी । चँदरमुख अँजूं[१३] साथ धोने लगी।।
कही "क्यों मेरे सीने-दिल तोड़कर । गया था कहाँ तूं मुंजे छोड़कर।।
कई दिल कया कहुँ यकायक निपट । किया आक़बत[१४] मुंजसेती दिलकुं हट।।
केते प्यारसों तुजकुं पाली हुँ मैं । केता तुज-दुखों आपसों जाली[१५] हुँ मैं।।
हिरामन दिलासा देकर भौत धात । रतनसेनका सब कह्या खोल बात।।

५. कवि के उपदेश‡—

गुलामली जिसके तैं है हया[१६] । जिये हक़[१७] की तौफ़ीक़[१८] सों कोइ धात[१९]।।
अगर जावेगा बाघकन धीट[२०] कर । खड़ा मूं फिरा उस तरफ पेट कर।।
पड़े जा अगर आगमें नागहाँ । होवे ओ अगिन उस-उपर गुल्सताँ[२१]।।

o o o o

गुलामली नई दुनियाँमें वफ़ा[२२] । कधीं[२३] है खुशी होर कधीं है जफ़ा।।
कि जों काँद[२४] का है चुना[२५] जिन्दगी । तो हर्गिज नहीं किसकुं पायंदगी[२६]।।
दुन्याका लेवे काम होइ सिर उपर । फिरे ओ कुतेके नमन[२७] दर-ब-दर[२८]।।
दो दिनका सो जीना न कर पायमाल । तुं सुट[२९] हिर्स कूं जो रहे खुशहाल[३०]।।
गुलामली कह भला हर किसे[३१] । बुरा कहने सों जगमें दुश्मन दिसे।।

---

१. चंद्रमा।

*यु० द० म०, पृष्ठ १२४।

२. समुद्र, ३. दृश्य, ४. अच्छा ५. स्वर्ग, ६. ईर्ष्या, ७. जला, ८. तोते, ९. वहीं, १०. मधुरभाषी।

†यु० द० म०, पृष्ठ १३२।

११. संदेश, १२. राजकुमारी, १३. आँसू, १४. अत्यन्त, १५. अपने को जलाई।

‡उ० श०, पृष्ठ २५४।

१६. जीवन, १७. सत्यभक्त, १८. दया, १९. भाँति, २०. ढीठ, २१. फुलवाड़ी। २२. ईमान, २३. कभी, २४. कीचड़, २५. निर्मित, २६. स्थायित्व, २७. कुत्ते-जैसे, २८. द्वार-द्वार, २९. फेंक, ३०. सुखी, ३१. सबको।

भलाई सेती तूं भला पायेगा। बुराई सों सिरपर बला[1] ल्यायगा॥
होवे कोइ बुरा तुं भलाई न छोड़। बुरा बोल किसकूं अपस-मूं न तोड़।

० ० ० ०

गुलामली जिससों दिल लाइये। बिछुड़ने सों बेहतर जो जिउ जाइये॥
कते[2] खून-दिलसों सो दिल लावना। तो एक तिलमने[3] तोड़कर जावना॥
जनावर के जाने से दुख पाइया। तो इन्सान-खतिर[4] न ग़म खाइया॥

§ २७. इश्रती (१६८२ ई०)

सैयद मुहम्मद खाँ 'इश्रती' के पिता सैयद युसुफ हुसेनी और पितामह सैयद हुसेन थे। सैयद युसुफ भाग्य-परीक्षा करने बसरा (मेसोपोतामिया) से दक्खिन (बीजापुर) पहुँचे। इश्रती अभी १२ साल का ही था, कि उसके पिता का देहान्त हो गया, किन्तु वह पूज्य सैयद (मुसल्मानों के ब्राह्मण) वंश की सन्तान था, इसलिए उसकी शिक्षा-दीक्षा में बाधा नहीं पड़ी। बीजापुर-दर्बार में इश्रती का काफी सम्मान हुआ। जब १६८६ ई० में बीजापुर को औरंगजेब ने अपने राज्य में मिला लिया, तब उसके दरबार में भी इश्रती की बहुत इज़्ज़त हुई। इश्रती दक्खिन का अन्तिम महाकवि है। उसका तरुण समकालीन वली औरंगाबादी तो दक्खिनी और उर्दू का सम्मिलित कवि था। इश्रती की कब्र हैदराबाद गाजीबंडा दरवाजा के बाहर शाहराजू हुसेनी की समाधि के उत्तर में है। इसके खान्दान के लोग अब भी हैदराबाद में मौजूद हैं।

इसकी कृतियों में 'चितलगन', 'दीपक-पतंग' और 'नेहदर्पन' अधिक महत्त्व रखती हैं, यहाँ उसकी कविता के नमूने दिये जाते हैं—

१. पुत्र-वियोग में माता (दीपक-पतंग) *—

बेचारी हो रही तब बेचारी वो माई। बेचार्यां नमन[5] वो कसूं रो[6] हाय हाय॥
लहू घूट ले भरके सीनेमें खार[7]। कलीके[8] नमन दिल रखी नहुँ तलार[9]॥
चँदरघरके घनकी हटीली वो नार। निकल राजके ग़मसों आई बहार[10]॥
सुना मार सिर पीट के हाय-वाय। चँदर में पिरो हर अँजू[11] जल-हवाय[12]॥
कि "ऐ गुल[13] मुजे आग तुज बिन है वन। कि घर तुज सजन बिन दिसे ज्यों सजन॥
जगत्तर[14] में तुजसों मेरा नाम है। कि तुज सूर[15] बिन दिन मेरा शाम है॥
तुसों[16] खाय हस्रत[17] मेरे लालाज़ार[18]। बगर तुज है मुंज सेज में फूल ख़ार॥

---

१. आफत, २. कितने, ३. क्षण में, ४. मनुष्य के लिए।

*उ. श., पृष्ठ २८२।

५. गरीब-से, ६. रोवे, ७. काँटा, ८. कुड्मल के, ९. नख-तलवार, १०. बाहर, ११. आँसू, १२. नहाय, १३. फूल, १४. जगत्, १५. सूर्य, १६. तुझसे, १७. अफसोस, १८. फुलवाड़ी।

ए तुजसों मेरे हौज़[1] में नीर है । तेरे बाज[2] नित खाक[3] मुँज सीर है ।।
ए तुजसों मेरा हासिल[4] हर मुद्दआ[5] । अगिन तुज बिना मुजकूँ बादेसबा[6] ।।
तुसों बख्त[7] हैं ज़ेर[8] मुज ज़ोर[9] में । है तुजबाज आराम मुज गोर[10] में ।।
ए तुज-शमाते बज्म[11] अनवार[12] है । बग़ैर तुज मेरे दिलमने नार[13] है ।।
ए तुजसों है मुँजकूँ राज़ होर नियाज़[14] । न तुज बिन बग़ैरसोज़ दिसताहै साज़ ।।
न हो बेकटर[15] सुट[16] के मुज दिलपो खार । जुदाई के पर्देका ना छोड़ तार ।।
न कर बेवफ़ाई[17] वफ़ादार हो । मेरी देख ज़ारी न बेज़ार[18] हो ।।
हवस[19] इस सफ़रकी तूँ सुट दे एताल[20] । नहीं तो, ले चल मुजकूँ अपने दुँबाल[21] ।।
मुँजे ज़बह कर नैं तो कै मूँद कर । अगर्चे न होय तन लहु बूँद भर ।।
कया राज" ए छँदभरी नाज़नी[22] । डुबाया अजूं-जलमें अब घर केतीं ।।
—दीपक-पतंग

!. प्रेम-पत्र*—

लिख्या दिलके लहू सों यो नामा[23] तुजे । जो तुज बिन दिस्या दिन क़यामत[24] मुजे ।।
तेरी जुल्फ़े-मुश्कीं[25] की सौगंद है । खबेखब में जिस जिवका एक बंद है ।।
कि जबते अँख्याँ लहू भर्याँ ना सबूर[26] । रह्या है तेरे मुखके फुलवनसों दूर ।।
तधांते डुब्या लहु में लाले नमन[27] । जो अज़बस[28] सुटी लहुकी अँजुआँ[29] नमन ।।
लग्या इस रविश बहने लहुका नई । कि ग़ैरत[30] ले जाता है इस पर कहीं ।।
पवन शाहिद[31] है होर सितारे गवाह । कि मुँज दिलकी तंगीपे कर यह निगाह ।।
समज सच तु दो दिन के बिछड़ेका रोग । मुँज आशिक़ उपर जिन सुट्या[32] प्यास भूक ।।
जो दिसता है सुरज अगिनका कुवाँ । है मेरे कलेजेकी आगका धुवाँ ।।
पिरितकूँ खलल[33] क्या है इस बात सों । जो मुँज-दिलकी दर्पन में सो रातमों ।।
सुट्या जानों तेरी पिरित[34] का खियाल । भी किस हूब[35] का नक्श[36] उसमें पड़ना महाल[37] ।।
मुलुक-दिलका तुजसों च पाया है रुच[38] । किसीका हुकुम ना चले इसमें कुछ ।।
तेरा विरह नैं सर्सरी होर निबल । कि जावे मेरे सिरसों भी कें निकल ।।
बिना आजिज़ी[39] नैं जो आशिक़कूँ लाभ । तो अब बातकूँ ना बढ़ा बेहिसाब ।।
न चूक्या जो उसकूँ भी चक है कि जान । पशेमाँ[40] हूँ मेरा उज़र[41] टुक मान ।।

---

१. कुंड, २. तेरे बिना, ३. मिट्टी, ४. प्राप्त, ५. अभीष्ट, ६. प्रातःसमीर, ७. भाग्य, ८. नीचा, ९. जबरदस्ती, १०. कब्र, ११. सभा, १२. प्रकाश, १३. आग, १४. कृपा, १५. क्रूर, १६. छोड़, १७. विश्वासघात, १८. आजिज, १९. लालच, २०. इस समय, २१. पीछे, २२. सुन्दरी।

*उ. श., पृष्ठ २८०।

२३. पत्र, २४. प्रलय, २५. काली अलकें, २६. धैर्य, २७. लाला की भाँति, २८. अत्यन्त, २९. आँसू-सा, ३०. लज्जा, ३१. गवाह, ३२. फेंका, छोड़ा, ३३. बाधा, ३४. प्रेम, ३५. किसी के प्रेम, ३६. प्रतिबिम्ब, ३७. असम्भव, ३८. कामना, ३९. नम्रता, ४०. लज्जित, ४१. प्रार्थना।

अबस की खता होर खुदी[1] का हरफ । नयनजल सों धोकर किया बरतरफ़[2] ।।
भला है जो अब पढ़्यो नामेकुँ बेग । कि ज्यों पर पतिंगे लग ह्र्फांकुँ बेग ।।
सपंद[3] हो जले मुँज-अगिन सों नुक़त[4] । धुआँ[5] ऊद[6] का त्यों निकलता फ़क़त ।।
चँदर त्यों यो सूरज सों ना मुख फिरा । न धर जीभ पर कुछ भला होर बुरा ।।
गिले होर झगड़ेकुँ सब छोड़ कर । सरोकद[7] अपसका इधर मोड़ कर ।।
तमाशा मेरे चखके चश्मेका देख । कि क्योंकर व्हता है तेरा बिरह सेक ।।
तेरा मुख देखें मूख अजुवाँ[8] सों धो । हुआ ताँत तन क्यों निपट चे-हमो ।।
अगर मकड़ी मुँज तनपे जाला तने । मखी त्यों मैं ना हिल सकूँ उसमने[9] ।।
जले चिमटी[10] मुँज बंद-पावों ऊपर । छुड़ा ना सकूँ हिल अपन ठांवसों ।।
वचन विन पराम सों मेरा तन एता । न पावे कधी कोइ ढूंढे जेता ।।
मेरी धड़कुँ हिलने बजुज[11] खाक[12] सों । न कोइ फ़ाम[13] सकता है इदराक[14] सों ।।
इलाही नरम कर तुँ वह संगदिल[15] । देवे मोमियाई[16] मया[17] की वो मिल ।।
भर उसके गुसेकी अगिन की बला । कि जाली है जिन मेरे जिवका घुला ।।
बुझा वस्ल[18] का जल छिनक[19] आसपास । बजुज़ इसके नै कूछ मुँज दिलका आस ।।
कलम दो जबाँ होय घावाँ सेती । मू उसका मेरे दुखकी आहाँ सेती ।।
हुआ काला ज्यों तेरी मुश्की[20] अलक । तो यो दुख अँगे लग सके काँ तलक ।।

—चितलगन

३. सहेलियों द्वारा स्नान-निमन्त्रण*—

अवल सब जल्याँ जाके पद्मिनके घिर[21] । अदब[22] सों रख्या उसके पावाँ पो सिर ।।
जोबनके मेहर[23] सों थी मनमें उमंग । दरया जोशदिल का जवानी तरँग ।।
क्यों "तुजते ऐ शहपरी[24] नेकनाम । सिक्या हँस चलन होर सनोबर क़याम[25] ।।
यो दो दिनकी दुनियामें दुख सब बिमार । अनँद करले सुट[26] फ़िक्र गमते बहार[27] ।।
कि कल परमों की आस चुर हवस । खुशी जग में हमना यही दम है बस ।।
किसे क्या खबर है कि यों आसमाँ । रच्या क्या है पर्दे में बाजी[28] निहाँ[29] ।।
हो गमते मुकत कर लेवें कुछ आज । सुबाकिन देख्या हैं घरे रुच[30] आज ।।
सुबा सासुरे जायगी नेह जोड़ । चले सब सगे होर माँ-बाप छोड़ ।।
हमें तो पिछे गममें रहन च है । बदल गुलके[31] सो खार[32] खाना च[33] है ।।

---

१. अभिमान, २. अलग, ३. एक धूप, ४. बिंदु, ५. धूप का धुआँ, ६. अगर, ७. सरो-सा सीधा शरीरवाला, ८. आँसू, ९. उसमें, १०. चींटी, ११. सिवाय, १२. मिट्टी, १३. समझ, १४. वर्याप्त, १५. कठोरदिल, १६. मोम-सी, १७. माया, १८. मिलन, १९. छिड़क, २०. काली।

*उ. श., पृष्ठ २८४।

२१. पद्मिनी के पास, २२. सम्मान-सहित, २३. यौवन की कृपा, २४. परियों की रानी, २५. ठहरना, २६. छोड़, २७. बाहर, २८. खेल, २९. छिपा, ३०. कामना, सुख, ३१. फूल के, ३२. काँटा, ३३. खाना ही।

वह अछवल चंचल नार सुध ज्ञान धर । सहेलियों की सुन वो वचन कान धर ।।
नज़ाकत[1] सों दिल नैनका नीर कर । कदम सर्व का चखपो पानी के धर ।।
सुरजके नमन[2] जलमें डूब शहपरी । सदफ त्यों[3] च जल्द मोतियाँ सों भरी ।।
डुब्याँ जलमें कमके सकल हूरज़ाद[4] । हुयाँ शाद[5] पायाँ जो अपनी मुराद ।।
डुब उस हौज़में शौक सों खेलतियाँ । अगिन तनपो पानी टँडा मेलतियाँ[6] ।।
कलूलाँ उचा जल यकस यक पो मेल[7] । अपस-दिलकी अतिश पो सुट्याँ थ्याँ तेल ।।

—दीपक-पतंग

४. विवाह-भोज*—

बिछाये चाँदनीका फ़र्श निर्मल । कि जैसा चाँदनी म्याने सफ़ा जल ।।
बिछाये सुज़नियाँ जरबाफ़[8] के साफ़ । है उस गुलपर सुरज बुलबुलकु इन्साफ ।।
रुपेरी और सुनेरी मस्नदाँ पर । सदरमुहरी[9] रखे ज्यों सूर-चंदर ।।
अथे बरदार तकिये बनियाँ बाफ़[10] । परयाँके गाल जैसे नाज़ुक[11] होर साफ़ ।।
सुरँग असमानगिरियाँ थी शफ़क़[12] सी । अथे गुलदार[13] ज्यों घनके तबक़[14] सी ।
लताफ़त[15] का हुआ गुल्शन वो मंदिर । दिवारगिरियाँके खींचे बाड़ ज्यों फिर ।।
रखे फूलाँ सों भर उस ठार गुलदान[16] । रखे थे पान मेती भर तँबूलदान ।।
जडितके शमादाँमें शमा[17] का नूर[18] । नवे चँद त्यों लगनमें धनके पुरनूर ।।
महाफ़ी[19] थे चिरागाँ सात पुरनूर । दिसे थे नयनमें हो रैन के सूर ।।
कँदीलाँके देखत झोंके मोहाने । अँगूराँके झड़े खुशियाँके दाने ।।
दीव्याँसों कटघराँ ऐसे सँवारे । कि ज्यों कौसेकज़ा म्याने[20] सितारे ।।
दिसे हौज़ाँ में उड़ते सो फँवारे । मुकट माकाँसों बाल्याँ[21] कूँ सँवारे ।।
जो आ याकूत[22] की प्याल्याँ में घाले । सुरँग रँग सों दिसे मानंद लाले ।।
तबक बिल्लोर[23] की खुश्बूय सों भर । हज़ाराँ चाँद थे ज्यों भुइँके ऊपर ।।
दिये थे मंडपाँ चौंधेर[24] यों रात । कि घन उस चहल ज्यों बादल किया भात ।।
क़मरका[25] दौर जो दिसनेमें ना आये । वह प्याले बदर[26] से भर-भर को दिखाये ।।
हरीफ़ाँ[27] झेलते जो जाम अधन तर । करे चौगान बाजी ज्यों हवा पर ।।
हवस[28] के जो तुरँगकूँ खूब दौड़ाये । गरम हो लालकर मूँ-खूय[29] भर लाये ।।
दिसें रुख[30] लाल पर बुंद-खुय[31] के सारे । शफ़क़[32] है चाँदपर तिसपर सितारे ।।

---

१. कोमलता, २. सूरज-समान, ३. सीप-सी। ४. अप्सरा-पुत्र, ५. प्रसन्न, ६. डालतीं, ७. डाल,

*उ. श., पृष्ठ २८६, नेहदर्पन ।

८. सोने की बुनी, ९. गिलाफ, १० बरनी के बुने, ११. कोमल, १२. आकाश-चुम्बी लाली, १३. फूलदार, १४. थाल, १५. लालित्य, १६. फूलदान, १७. मोमबत्ती, १८. प्रकाश, १९. बलले, २०. इन्द्रधनु में, २१. बालों, २२. लाल, २३. स्फटिक, २४. चारों ओर, २५. चाँद का, २६. पूर्ण चन्द्र, २७. शत्रु, २८. लाभ-लालसा, २९. रोम में पसीना, ३०. मुख, ३१. पसीने की बूंद, ३२. आकाशी लालिमा।

हुई जब मै[1] सों दिलकूँ शादमानी[2] । तमाशेकी मँगे दिल कामरानी[3] ।।
शबद शीरीं सेती होवे बहुत सुख । परीरुख[4] दिलरुबा[5] सों होइ भँजन सुख ।।
तरबसाज़ी[6] के मुतरिब[7] ताँ लगाये । बहुत कुछ खूब गाये होर बजाये ।।
उनन-आवाज़ के शोले[8] पे रख दिल । पतंग होइ घनपों ज़ोहरा[9] बनमें कोयल ।।
बुलंद आवाज़ पर उनके रख्या ध्यान । चँदर होर सूरसों घनके खुले कान ।।
बजंतर ता पड़ाँ जब नाचने आये । आजायब[10] दिलरुबाई के गताँ लाये ।।
वो जुल्फ़ाँ मुख उपर अपने जो खोले । थे दिल उश्शाक़[11] के डसने सँपोले ।।
नयन मटकाई जो हरयक मदनमस्त । सितारे घनते उस देखत हुये पस्त ।।
उचल गरदान[12] कर जब भाव बतलाय । तलबदाराँ[13] के दिल चाँदी दे ले जाय ।।
छबेल्याँ छतसेती जब चर्ख में आये । भँवर तिस झल सों गोते जलमें खाये ।।
ढलकत्याँ रक़्स[14] में आकर सलक[15] जायँ । गताँ सीमाब[16] के छंदों सों दिखलायँ ।।
करयाँ रक्क़ास[17] हों आशिक़ दिलेबाग [18] । धरयाँ मोराँ के तनपर रश्क[19] का दाग़ ।।
तमाशा देख जब नैनाँ अघाये । कँदूरी[20] बार[21] कर खाना खिलाये ।।
जो कुछ खाने की होवे चीज बेहतर । चुनी थी सब चतुर-ज्ञानी-विचित्तर ।।
रिकाब्याँ भर रखे थे सो क़बूली । तबीयत[22] ने उस अव्वल[23] क़बूली[24] ।।
तमंजन[25] का अथा ले खूब महकार[26] । खुल्या था बनमें गोया हारसिंगार[27] ।।
जो जिनन्याँ बीच खुश्का[28] साफ भरलाय । है गुलचीनी वो अचली[29] का कह्या जाय ।।
ममलादार खिजड़ी थी सोहानी । खिली दिल देख तिस रँग ज़ाफ़रानी ।।
थी नानाँ बीच किसमीसी अरूसी[30] । करन मेहमान के तैं दस्तबोसी[31] ।।
खुल्या था मूँ हरेक बर्क़ी[32] सँबोसा[33] । देवन मेहमानके लबताइँ बोसा[34] ।।
कमाचाँ सों हुई मद्दे-मुकाबिल[35] । करन यो बहस[36] जो है कौन फ़ाज़िल[37] ।।
सुलह कारन[38] उनन सीने पो रख हात । मलाई मूँमें मेहमानाँ कर यक बात ।।
रखे रंगीन कलई[39] नादिर[40] है ठार । अचाराँ होर मुरब्बे ले मज़ादार ।।
दिसें यो तैरते घिउमें चुकंदर । बचे सुरखाब[41] के ज्यों नीर-अन्दर ।।
सफाई सों करम[42] रखते करामात[43] । उननकी गर्मजोशी[44] थी हरेक साथ ।।

---

१. मदिरा, २. प्रसन्नता, ३. सफलता, ४. अप्सरामुखी, ५. मनोहर, ६. संगीत, ७. गायक, ८. ज्वाला, ९. बृहस्पति, १०. अद्भुत, ११. प्रेमी, १२. दुहराना, १३. इच्छुकों, १४. नृत्य, १५. संबद्ध, १६. पारे, १७. नर्त्तकी, १८. हृदयोद्यान, १९. ईर्ष्या, २०. पक्वान्न, २१. बाहर, फैला, २२. मन, २३. प्रथम, २४. स्वीकारा, २५. एक भोजन, २६. सुगन्धित, २७. हर्रासिगार, २८. सूखा भात, २९. एक भोजन, ३०. दुलहनवाली, ३१. हस्तचुम्बन, ३२. पन्नीवाला, ३३. समोसा, ३४. चुम्बन, ३५. सामने, ३६. विवाद, ३७. पंडित, ३८. के लिए, ३९. राँगे के, ४०. दुर्लभ, ४१. जलपक्षी, हंस, ४२. दया, ४३. चमत्कार, ४४. सोत्साह ।

कदूकी हुइ थी गर्दन-फ़राज़ी[1] । न थी रग़बत[2] कुँ उसते बेनियाज़ी[3] ।।
करेली होर चँचोड़ी[4] जो रखे ला । कँदूरी[5] का हुआ सर-सब्ज़[6] मँडवा ।।
दिस्या खुशरंग नज़राँ तल[7] निचला । जल इस झल[8] सों हुआ रैहान[9] काला ।।
देखत तिस सब्ज़[10] रंग महबूब जाना[11] । हुआ मेथी उपर दोना दिवाना ।।
कली दिलकी गिरह कुफ्त्याँ[12] ने खोले । अँगूराँ खाय तिस झल[13] के ग़लोले ।।
जो प्याला दालका सफ़रे[14] पो आया । सँदल[15] तिस-रश्क[16] सों अपसों घिसाया ।।
चमन[17] न्यामत[18] के ऐसे देख सुथरे । जनावर सीख[19] के झाड्याँ सों उतरे ।।
दराजाँ मस्त थे अपनी सदा[20] सों । न थी सुध जों फकड लेते उनन कूँ ।।
बटेराँ, बुल्बुलाँ, सफ़रा[21] था..... । थे कलई नर्गिमी उनतें नशेमन[22] ।।
रिकाब्याँ हौज़खाने[23] घीव ज्यों नीर । लवे, मुर्गाबियाँ[24] त्यों उसमें रह तें ।।
कबाबाँ मुर्ग के याकूत[25] के रंग । हुआ ताजे-खरुस उन-रंगपर दंगाँर ।।
थे मोतीचूर लडुवाँके अंबाराँ । उनन रश्कों सों लहु घोंटते अनाराँ ।।
शकरपारे नज़ाकत[26] सों संवारे । थे सुँदर[27] के अधर-शीरीं[28] ते प्यारे ।।
जलेब्याँ के निछल शीरीपो रख आँख । झजरसे पट्टियाँके शहद[29] रहे झाँक ।।
न कूज़े क़न्द[30] के थे साफ़ कन्दील । बनाये चाँदके बिल्लोर[31] सों झील[32] ।।
देखत फिरनी की प्याली धीर चंदर । गले ज्यों यख़[33] न हो सक उस बराबर ।।
जो कोइ देख्या है वो फालूदा रँगदार । नज़र उसकी ँगा रँग होय गुलज़ार[34] ।।
कर ऐसी धात[35] के न्यामत मुहैया । बैठाये मेहमाँ ताईं[36] ले आ आ ।।
कँदूरी के सफ़ा[37] मैदाँमें जब आय । तुरँगकूँ इश्तहा के अस्त्र बतलाय ।।
मलीदे की कधी टेकाँ पो लाये । कभी हलवेके दल-दलमें फँसाये ।।
अडाई जिभ-नमन पंखेकी दे झाल । पड्या तिस पगमने सेवियाँ केरा जाल ।।
लगा सिरके की उसकूँ तेज महमेज़[38] । चलायेबाँते कर बेगी जिलव-रेज़[39] ।।
वो फुलबनका करे सब[40] सैर यकबार । लिये चुनक रजो कुछ था उनकुँ दरकार ।।
मज़अफ़र के लिये थे जो नवाले[41] । दिसें सदवर्ग[42] के फूलाँमें आले ।।
मिलाकर दालकूँ खुश्के[43] के संगात । करे रबड़ी गुलब्बासी[44] अपस हाथ ।।
जो थे खुशरंग[45] ज्यों याकूत-दाने[46] । गुले औरंग[47] कर कुफ्त्याँकुँ जाने ।।

---

१. सिर उठाना, २. रुचि, ३. बेमुरौवती, ४. चिचिंडा, ५. पक्वान्न, ६. हरा, ७. आँखों में, ८. चमक, ९. बालंगू, १०. हरा, ११. प्राणप्रिय, १२. कुफ्ता, १३. चमक, १४. आहार-विहार, १५. चंदन, १६. तिसकी ईर्ष्या, १७. फुलवाड़ी, १८. सुभोग, १९. कबाब की सीख, २०. शब्द, २१. दस्तरखान, २२. घोंसला, २३. कुंडगृह, २४. पनचिरई, लाल, २५. कुक्कुट, शिखंड, २६. कोमलताएँ, २७. सुन्दरियों, २८. मधुर ओठ, २९. मधु, ३०. मिसरी के कूजे, ३१. स्फटिक, ३२. पिघला, ३३. कृत्तिका (तारे), ३४. फुलवाड़ी, ३५. भाँति, ३६. एकत्रित, ३७. दस्तरखान, ३८. गंध, ३९. प्रकाश-प्रसार, ४०. केसरिया चावल, ४१. ग्रास, ४२. शतपत्र (गेंदा) ४३. फीके चावल, ४४. एक मिठाई, ४५. सुन्दर रंग, ४६. लाल के दाने, ४७. एक भोजन।

कमाँचाँ जिसके हाथां बीच आये । गुले-चंदर के नमने[1] वो सोहाये ।।
कबाबाँ आतिशी-गुल[2] के सों भित्तर । लिये दूर इश्तहा[3] का उनसेती भर ।।
ग़रज़ जिसकूँ हुआ जिस धात[4] राबत[5] । मिले वैसे च वाँ उसताइँ न्यामत ।।
मिठे खाने के जो मैं वस्फ़[6] बोलूँ । कलमसेती झड़ी शर्बतकी खोलूँ ।।
जा खारे[7] की सिफ़त[8] का मैं करूँ काम । सलोन्याँ[9] मुजसेती लेवें नमक-दाम[10] ।।
कँदूरी खर्च कर जब सब अघाने । लगे हर एकके हाथां धुलाने ।।
धुलाकर हाथ दी उनताइँ ले मान[11] । दिये ज्जतसेती हर एक कूँ पान ।।

—नेहदर्पन

५. युद्धक्षेत्र*—

तबल बजते थे होर नरसिंग पुरगम[12] । दमामे हर कधन बजते थे धम-धम ।।
घतर[13] होवे तलक दोधेर[14] के रनसूर । उबलते थे ग़ज़ब[15] सों ज्यों कि समदूर[16] ।।
अथे यों मुन्तज़िर[17] जो होन घत्तर । निकाले म्यान सों कीने[18] का खंजर ।।
खड़ग ले हाथ म्याने[19] एक बारा । करें जौहर[20] अपसका आशिकारा[21] ।।
बड़े हर हाल वो आख़िर हुई रैन । छिप्या कोने में जा आराम होर चैन ।।
दिखाया सूर अपस खंजर का झलकाट । सितार्यों का सकल लश्कर[22] गया न्हाट[23] ।।
हुये दोधेर[24] सेती मुस्तैद[25] दो दल । दिसें ज्यों भुइं पो प्हाड़ होर घन[26] पो बादल ।।
दिलेराँ[27] ने सफ़ाँ[28] आरास्ता कर । दिये थे मर्दुमी[29] की दाद[30] यकसर[31] ।।
पड़े हरतन उपर वाराँ[32] सेती गार[33] । बदल पानीके निकल्या ल्हौका अंगार ।।
लगा छातीसों छाती होके गल[34] जोड़ । सुटे[35] सिर होर सीना हाथ-पग तोड़ ।।
करे गुरज़ाँ[36] के ऐसे धात[37] सों मार । पड़े थे धरति कूँ पाताल लगगार[38] ।।
ज़िरहपोशाँ[39] पड़े हो रनमें पामाल । पड़े ज्यों मीन भुइँ उपराल बेहाल ।।
कर्या यों फोड़ हरयक हाथ का तीर । कि चूम्या हात हर एकस का रहगीर[40] ।।
धनुख जब खींचता हर यक कमाँदार[41] । चला कहता ज़ेहा-ज़ेह[42] उसकूँ सौ बार ।।
दिसे यों पाखराँ[43] मों हस्तिका दल । कि जैसा नीर भर बादल दिया चल ।।
दिसे ज़ख़म्याँ का अकस[44] उसमें रकतसों । दिखाया ज्यों शफ़क़[45] बादलमने[46] मूँ ।।
लड़े दिलमोज[47] गिर-पड़ होके इस धात । दिवान्याँ कूँ हुआ जैसा कि सनपात[48] ।।

---

१. चंद्र-पुष्प की भाँति, २. अग्नि-पुष्प, ३. भूख, ४. प्रकार ५. पसंदी, ६. गुण, ७. नमकीन, ८. गुण, ९. सलोनियाँ, १०. नमक का मोल, ११. सम्मान।

*उ. श., पृष्ठ २८५।

१२. करुणापूर्वक, १३. प्रातः, १४. दोनों ओर, १५. क्रोध, १६. समुद्र, १७. प्रतीक्षा में, १८. डाह, १९. हाथ में, २०. गुण, २१. प्रकट, २२. सेना, २३. भाग, २४. दो तरफ, २५. तैयार, २६. आकाश, २७. वीर, २८. पंक्तियाँ, २९. बहादुरी, ३०. प्रमाण, ३१. अकेले, ३२. प्रहारों, ३३. घाव, दरार, ३४. गले, ३५. फेंके, ३६. गदाएँ, ३७. ढंग, प्रकार, ३८. दरार, गुहा, ३९. कवचधारी, ४०. राही, ४१. धनुर्धर, ४२. शाबाश, ४३. ढाल, ४४. छाया, ४५. आकाश की लाली, ४६. बादल में, ४७. दिल जलाते ४८. सन्निपात।

§२७. जईफ़ी (१६८९ ई०)

शेख दाऊद 'ज़ईफ़ी' गोलकुंडा के अन्तिम दिनों का कवि है। इसके दो पद्य-ग्रंथ 'हिदायात हिंदी' १६८९ ई० (११०० हि०) और 'इश्क-सादिक़' (मस्नवी) उपलभ्य हैं, जिन पर कविता से अधिक धार्मिकता की छाप है। इन ग्रंथों के लिखते समय दक्खिन के मुसल्मानी राज्य मुगल-साम्राज्य में हज़म हो चुके थे। ३६३८ शेरों की पुस्तक 'हिदायात-हिंदी' के अन्त में ज़ईफ़ी लिखता है—

यह दौरे[१] जहाँदार[२] औरंगजेब। कि जिसते हुआ इस ज़माने को जेब[३]।।
शाहंशाह आदिल[४] अहै दर-अमूर[५]। कि बद्अत[६] ज़लालत[७] हुआ जिसते दूर।।
दिया हक-तआला[८] ने यों जिसकूं जस। जो दुश्मन हुआ उस-अँगे ख्वारो-खस[९]।।
धरया सिरपो जो पन शहीफा वां ताज[१०]। दिली होर दखिन का हुआ एक राज।।
अजब[११] फ़तहो-नस्रत[१२] है उसके मँगात। जो कोइ नै किया उससों दावा की बात।।
कि शाहाँ भी अव्वल[१३] हुये हैं तो क्या। न कोइ ज़ोहदो-तक़्वा[१४] में ऐसा दिसा।।
अहै उसमने[१५] भी वली[१६] की सिफ़ात[१७]। कि हो आये जो मूँसों काढ़े सो बात।।
बड़ा दीन-इस्लाम[१८] का कारसाज़[१९]। इलाही तूँ कर उम्र उसकी दराज़।।

और पुस्तक की समाप्ति २२ सितम्बर, १६८९, बृहस्पतिवार को हुई—

ग़रज़[२०] उस ज़मानेमने[२१] शाहके। मसायल[२२] किया दीनके राहके।।
जो तारीख हिज्रत हजार एक सौ (११००)। 'हिदायात हिन्दी' हुआ यो तोबीच।।
इग्यारा सो उसमें भरे थे तमाम। उसी बीच तम्मत[२३] का देख्या मुक़ाम।।
सदी बारवीं का लग्या था बरस। उसी बीच बाजा यो दखिनी जरस[२४]।।
बलेकिन[२५] शाहंशाह दह्र[२६] में। मुबारक[२७] ओ जुल्हज्जके शह्र[२८] में।।
अथी सात तारीख दिन मुश्तरी[२९]। यो नुस्खा[३०] मुरत्तब हुआ खुश्तरी[३१]।।

इस प्रकार ज़ईफ़ी ने ११०० हिज्री (१६८८ ई०) में इस पुस्तक को लिखना आरम्भ किया, और ७ जिल्हजा, ११०१ हि० बृहस्पति के दिन समाप्त किया, (किन्तु ११ सितम्बर, १६९० ई० को बृहस्पति नहीं, सोमवार था)।

अपने और पुस्तक के बारे में ज़ईफ़ी ने लिखा है—

मसायल[३२] यो फ़िक़्हाँ[३३] के असनाद[३४] सों। निकाले किया पढ़के उस्ताद सों।।
कि अकसर ज़बाँ हिन्दकी इस तरफ़। लगे खुश जो पढ़ते हैं दखिनी हरफ़[३५]।।

---

१. युग, काल, २. चक्रवर्ती, ३. शोभा, ४. न्यायी, ५. काम में, ६. कुधर्म, ७. पथभ्रष्ट, ८. भगवान्, महासत्य, ९. तबाह-बर्बाद, १० मुकुट, ११. अद्भुत, १२. विजय, १३. पहिले, १४ संयम-नियम, १५. उसमें, १६. सन्त, १७. गुण, १८. इस्लाम-धर्म, १९. काम करनेवाला, २०. अथ, निदान, २१. समय में, २२. विषय, बातें, २३. समाप्ति, २४. घंटा, २५. लेकिन, २६. समय, २७. शुभ, २८. अरबी, बारहवाँ महीना, २९. बृहस्पति, ३०. पुस्तक, ३१. अधिक अच्छा, ३२. विषय, ३३. अर्थशास्त्र, ३४. प्रमाण, ३५. दक्खिनी भाषा।

इसी वास्ते हदिया[1] यो हिंद कूँ। जो ल्याया दखिन सालके सन्द सों॥
हिदायात-हिन्दी फिकर इसका नाँव। रख्या होर ल्याया हुँ हिंदियाँ के ठाँव॥
कि हिन्दी केरे हैं हिदायात में पो। ... ... ॥
शिफ़ाआत[2] रवैयत का जो काज है। जईफ़ी इसीका च[3] मुहताज है॥
यही इहतियाज[4] अपने दिलमें पकड़। पिरोया हुँ मैं इस रिसाले[5] की लड़॥
लकब[6] उस हुआ शेख दाऊद नाँव। जईफ़ी है उसके तखल्लुस[7] का ठाँव॥
अरबीमें होर फारसीमें। केतेका मसायल जरूर लिख्या देख-देख॥
अरब होर अजम[8] का सखुन[9] पाइया। सो दखिन्याँ कुँ दखिनी सों समझाइया॥

o o o o

हिदायात-हिन्दी का यों सब कलाम[10]। बयाँवार बोलूँ अँगे भी तमाम॥
हजार तीन पर ही जदह (३०१८) हिंदी बैत[11]। कि इल्मे-सलूक[12] होर शरीअत[13]-समेत॥
मुरत्तब[14] करे जब यो नुस्खा तमाम। दुआ मंथिये शेख दाउद नाम॥
छसो के उपर बीस बतियाँ नवी। जो मक़सूद[15] कै कैं न था सो हुई॥

मस्नवी 'इश्के-सादिक' (सच्चा प्रेम) में इस्लाम के पैगम्बर मुहम्मद पर एक अरब स्त्री के सच्चे प्रेम की कथा कही गई है, कहने का ढंग कुछ रूखा-सूखा सा है, जैसे*—

अथा सुन कहूँ नकल[16] उस नारका। जो सगबेत-कदम[17] नार-अवतार[18] का॥
सुन्या हूँ नबी (के) जमानेमें एक। अथा जो मुसलमाँ कोई मर्द नेक॥
नबा आ नबीके सो इस्लाममें। अथा नेक नेकी केरे काममें॥
सो बख्ताँ[19] सों होय देख यारी[20] उसे। मिली एक अजब नेक नारी उसे॥
निछल पाक-पैकर[21] परी-सारखी। परी बल्कि अच्छी न उस सारखी॥

§२८. मुहम्मद अमीन (१६९७ ई०)

यह भी गोलकुंडा के अन्तिम समय में पैदा हुआ। इसने अपने काव्य 'युसुफ-जुलेखा' को औरंगजेब के शासन-काल १६९७ ई० (११०९ हि०) में समाप्त किया। युसुफ-जुलेखा भारतीय और भारत से बाहर के भी बहुत-से मुस्लिम कवियों के काव्य का विषय रहा है। भारत में सर्व-प्रथम खुस्रो देहलवी ने अपना काव्य 'युसुफ जुलेखा' लिखा। संभवतः अमीन ने उसी के आधार पर अपना काव्य रचा। पुस्तक की समाप्ति के बारे में कवि ने लिखा है—

---

१. भेंट, २. सिफारिश, ३. इसी का ही, ४. ध्यान, ५. पुस्तक, ६. पदवी, ७. उपनाम, ८. अरब-भिन्न (ईरान) देश, ९. वाणी, साहित्य, १०. वाणी, साहित्य, ११. हिन्दी-छंद, १२. बर्त्ताव की विद्या, १३. इस्लामी धर्मशास्त्र, १४. तैयार, १५. अभिप्राय।

*यु. द. म., पृष्ठ २३५।

१६. कहीं-कहीं, १७. बृढ़ पग, १८. अद्वितीय नारी, १९. भाग्य, २० दोस्ती, २१. पवित्र शरीर की।

यु. द. म., पृष्ठ ३३८।

इग्यारा सौ उपर जब नौ गुजरे (११०९) । बरस हिज्रते मुहम्मद मुस्तफ़ा के।।
बना चालीस सौ फिर चारद और सौ (४११४) । मैं लिक्खा गोधरी के बीच सुन लो।।
जमादील अवलमें इतवारके रोज़ । अथी तारीख दूजी दे दिल-अफ़रोज़।।

जमीदिउल्-अव्वल ११०९ हिज़री को १७ नवम्बर, १६९७ तारीख और रविवार का दिन था, जबकि यह पुस्तक समाप्त हुई।

अमीन ने अपने ग्रंथ की भाषा गोधरी या गूजरी लिखी है, जिसका अर्थ यही है, कि गुजरात में भी बहुत-से मुसलमान-परिवार थे, जिनकी भाषा हिन्दी थी और जिस तरह दक्खिनी मुसल्मान अपनी हिन्दी को दखिनी कहते थे, उसी तरह गुजराती मुसल्मान उसे गूजरी कहते थे। अमीन ने लिखा है--

आरम्भ में*--

अवल तारीफ़[१] सुन खालिक़[२] की ऐ यार । कि वह दोनों जग का है करनहार।।
सुनो मत्लब[३] रही अब यों अमीका । लिखे गूजरि मने[४] युसुफ-जुलीखा।।

अन्त में†--

ज़माने शाह औरंगज़ेब के में । लिखी युसुफ-जुलेखा कूँ अमी मैं।।
इलाही[५] तूं ऐसा आदिल[६] शहंशाह । रखे जब लग रहे कायम मेहर-माह[७]।।
अमीं ने गूजरी की सो यों कर । कि अपने तैं रहे दुनियाँ के भीतर।।
वजूदी[८] है सो हो जायेगा खाक[९] । नहीं पावे सो धौंदा जीवन पाक।।
निशानी तब रहेगी ए सखुन[१०] है । जो कुछ बोला अमीं मीठी वचन रे।।
अमीं कूँ है उमीद इतनी ऐ यारो । पढ़ो सो फ़ातिहा[११] सो ना विसारो।।
बरक्कत तो तुमारीसों खलासी[१२] । कछु पावे अमीं बेचारा आसी[१३]।।

(क) जुलेखा का प्रेम‡--

देखी सूरत अज़ीजे-मिस्र[१४] की जब । पड़ी धरती उपर पिछडाय[१५] कर तब।।
कि वावेला कि वावेला[१६] कर दाई । बखत[१७] रबने मेरे औंधे लिखाई।।
वे तो कुछ और था एतो है कुछ और । एतो दुश्मन रहे उस दोस्तके ठोर।।
हमें वे कब मिले गम मुझ नयन दरस । अरे है-हात[१८] और अफसोस अफसोस।।
हमें क्योंकर मिलेगा मुजसों बे शाह । हजार अफसोस और सद[१९] आह सद आह।।
गया वह गंज[२०] और यह रह गया साँप । (कि) सूरत देख चढ़ी मुँज धोज और काँप।।

---

*यु० ज० म०, पृ० ३३९।

१. प्रशंसा, २. स्रष्टा, ३. अभिप्राय, ४. गुजराती में।

† वही, पृष्ठ ३४१।

५. भगवान्, ६. न्यायी, ७. सूर्य-चाँद, ८. होनेवाला, ९. मिट्टी, १०. वाणी, ११. कुरान का एक सूक्त, १२. मुक्ति, १३. पापी।

‡ वही, पृष्ठ ३४०-४२।

१४. मिस्र का मन्त्री, १५. पछाड़ खा, १६. हल्ला, १७. भाग्य, १८. हाय-हाय, १९. सौ (शत), २०. खजाना।

जुलेखा की हक़ीक़त[1] अब सुनावे। जुलेखा फिरके युसुफ कौन पावे॥
जुलेखा बेखबर[2] फिरती रती थी। इशक़[3] का घाव वों ऊपर सती[4] थी॥
कबूँ[5] घरमें कधूँ जंगलमें जाती। वे मेहनत[6] के दिनों को यों गँवाती॥
गई थी एक दिन जंगल के भीतर। चली थी उस जगे सों आपने घर॥
अया जब राह युसुफ का बाजार। जुलेखा ने सुन्या तब शोर बसियार॥
लगी पूछन कि "ए क्या शोर है रे। कहाँ मुँझ क्या ऐ दौरा दौर[7] है रे॥"
जुलेखा ने सो तब पर्दा उठाकर। सूरत[8] युसुफकी नजरों बीच ल्याकर॥
पिछाना है वही दिलयार जानी। कि जिसकारन हूँ फिरती थी दिवानी॥
युसुफ (को) देखकर रोई पुकारी। पड़ी हो बेखबर कर करके ज़ारी[9]॥
सवारीकूँ शताबी[10] लेके भागे। जुलेखाकूँ ले आये घरके आगे॥
उतारे घरमने[11] जब हुइ खबरदार[12]। पूछी तब दाईने उसको गुफ्तार॥
"तेरी फिर अक्ल और सुध काँ[13] गई थी। ऐमी तूँ बेखबर क्यूँ हो रही थी॥"
कहा तब "वो गुलाम है यार मेरा। उमी ऊपर है दिलका प्यार मेरा॥

§२९. वज्दी (१७०३ ई०)

शेख वजीहुद्दीन 'वज्दी' करनूल के निवासी औरंगजेब के अन्तिम समय का कवि था। इसने तीन कथा-काव्य (मस्नवियाँ) लिखीं—'तोहफये-आशिकाँ' (१७०३ ई०), 'बागे-जा-फ़िज़ाँ' (१७३२ प्रमोद-उद्यान) और 'पंछीनामा' या 'पंछीवाचा' (१७३२)। इनमें पहिली और तीसरी प्रसिद्ध सूफ़ी सन्त फरीदुद्दीन अत्तार की फारसी मस्नवियों के अनुवाद हैं। वज्दी का दीवान (कविता-संग्रह) भी सुना जाता है। इनके कुछ पद्य इस प्रकार हैं*—

चंचलका आज बिछुड़ा[14] मुज उपर भारी हुआ याराँ।
तो मैं इस दो जगतमेती निराधारी हुआ याराँ॥
हमारी बुत-परस्ती[15] कूँ नहीं समझे अझूँ[16] जाहिद[17]।
बराये-कुफ्र सत दीं कू तु पुजारी हुआ याराँ॥
नको[18] कह वज्दिया अपन्याँ निपट शब-वस्ल[19]—क्याँ वाताँ।
कते हैं लोग सब तुजकूँ कि जुन्नारी[20] हुआ याराँ॥

० ० ० ०

गई है उम्र सब मेरी सदा सूरत-परस्ती में[21]।
सुट्या है हुस्न[22] का मद मुज सो हुशियारी[23] ते मस्ती में॥
निकल जा वज्दिया शेखीके शेव्याँ[24] के झंज[25] मेती।
अगर मक़सूद-खुद[26] हासिल[27] किया है बुत-परस्ती में॥

---

१ दशा, २. बेहोश, ३. प्रेम, ४. सहती, ५. कभी, ६. परिश्रम, ७. दौड़ा-दौड़ी, ८. रूप, ९. रोदन, १०. जल्दी, ११. घर में, १२. होश में, १३. कहाँ।

*त. उ. म., पृष्ठ ६०—६१।

१४. वियोग, १५. मूर्त्ति-पूजा, १६. आज भी, १७. भक्त पुजारी, १८. नहीं ही, १९. मिलन-यामिनी, २०. जनेऊधारी, २१. रूप-पूजा, २२. सौन्दर्य, २३. होश में होना, २४. तरीके, २५. झंझट, २६. अपना लक्ष्य, २७. प्राप्त।

'पंछीवाचा' वज्दी की लोकप्रिय पुस्तक है। इसके लिखने की प्रेरणा के बारे में वह लिखता है*—

था वले[1] जो फारसीमें ओ कलाम[2] । कम समज सकते है उसकूँ खल्केआम[3] ।।
गर्चे मैं यो कुछ नहीं मानी शिनास[4] । काँ मुँजे उसकू समझनेका क़यास[5] ।।
लेकिन इसकू देखकर दिल चुप-न-बोल[6] । यक-ब-यक यों दिल्लमें आया कलोल ।।
जी मुवाफिक[7] फ़हम[8] अपनेके ज़ईफ़[9] । इस किताबे ख़ासा[10] का नज़्मेशरीफ़[11] ।।
क़स्द[12] कर दखिनी जबाँमें लेके आउँ । ता रहे दुनियाँ में मेरा भी (तो) नाँव ।।
पस मदद मँग शेख[13] की अरवाह[14] सों । . . . . ।।
मैं कलम जारी किया औराक़[15] पर । जब हुआ पूरा यो नज़्मे मुख्तसर[16] ।।
नाँव इसका पंछीवाचा मैं किया । यादगारी ख़ल्क़े-आलम[17] पर[18] किया ।।

समाप्त करते हुए—

इसमें आरब मेरा होता है यो काम । शुक्र है जो हुई पंछीवाचा तमाम[19] ।।

कथारम्भ करते कहा गया है †—

एक दिन सब जगके पंछी जानपर । मिलके भइ[20] जमा हो यक ठार पर ।।
शौक सों दिलकी लगे मुर्गोलने[21] । यक-यकसते राज़ दिलका बोलने ।।
नागहाँ[22] बाताँ में निकली बात यों । जे पँख्याँ में बादशा कोई न क्यों ।।
है हरेक फिर्के[23] में हर यक बादशाह । नहिं हुसनकूँ बादशाह सो क्या गुनाह ।।
इस वज़ा[24] पंछी लगे करने विचार । बोल उट्ठा उसमें हुदहुद नामदार ।।
"ऐ अज़ीज़ाँ[25] बात यों करते थे क्या । दिलमें चुप विसवास यों धरने थे क्या ।।
के पड़े हैं इस वज़ा ग़फ़लतमने । कुफ़्र है यो मुल्क होर मिल्लत मने[26] ।।
कुफ़्र[27] सों तोबा[28] करो तोबा करो । बादशा की ज़ातमें[29] शक ना धरो ।।

'पंछीवाचा' के कुछ नमूने ‡—

हिंदुआँ में कोइ राजा था गंभीर । के हुआ महमूद सुल्ताँका असीर[30] ।।
लेके आये ज्यों उसे महमूद-पास । दीनसों कीते नबी[31] के रू-शिनास[32] ।।

---

*यु. व. मँ., पृष्ठ ३६८-६९।

१. लेकिन, २. कृति, काव्य, ३. साधारण लोक, ४. मर्मज्ञ, ५. सामर्थ्य, विचार, ६. मौन, नीरव, ७. अनुसार, ८. समझ, ९. निर्बल, १०. विशेष, ११. उत्तम छंद, १२. इरादा, १३. स्थायी गुरु, १४. आत्मा, १५. पृष्ठों, १६. संक्षिप्त पत्र, १७. दुनिया, १८. हे भगवन्, १९. समाप्त।

†यु. व. म., पृष्ठ ३६८।

२०. हुए, २१. कलरव, २२. संयोग से, २३. वर्गा, २४. प्रकार, २५. प्यारो, २६. जाति में, २७. इस्लाम-विरोध, २८. क्षमापन, २९. व्यक्ति में।

‡ उ. श., पृष्ठ २६६-६७।

३०. बंदी, ३१. पैगम्बर मुहम्मद, ३२. परिचित।

जब हुआ इस्लाम सों ओ आशना[१] । दिल दो आलम[२] सों किया अपने जुदा ।।
एकला जा बैस गोशब के मझार[३] । रात दिन रोने लग्या जब ज़ार-ज़ार[४] ।
कुछ न था काम उसकूँ गर-अज़[५] सोज़ो-आह[६] । रोज़ उसका रातसों बदतर[७] सियाह ।
सोज़ो-ज़ारी जब गये हदसों गुजर । हुइ बज़ा[८] महमूद सुल्ताँ कूँ खबर ।
बस बुला राजाकूँ शाहे-नामदार[९] । मेह्रबानीसों कया[१०] "तूँ क्यों है ज़ार ।
मैं तुजे देऊँगा एता कुछ मुल्को-माल । जे तुँ यक सायत[११] में हो जाये निहाल ।
ऊन को इस धात ऐ राजा गँभीर । दुखमने[१२] अपना नको गालो सरीर" ।
बस लग्या कहने कूँ राजा शाह सों । "मैं रोता नैं जो मुल्को-माल सों ।
सोज़ो-ज़ारी है मुजे इसके सबब । जे क़यामत[१३] मैं करेगा यों च रब[१४] ।
ऐ मेरे बदअहद[१५] बंदे बे-बफ़ा[१६] । किस वज़ा[१७] कीता है तूँ ऐसा जफ़ा[१८] ।
नैं किया तूँ याद मेरा तो लगूँ । तुझमने सुल्तान आया जों लगूँ ।
जब किया लश्करकशी[१९] तेरे पे ओ । आसरा मेरा लिया ऐ ज़िश्त-खू[२०] ।।
नैं किया तूँ याद लश्कर में मुंजे । दोस्त समझूँ या कि दुश्मन कर तुझे ।।
गर लगूँ तुजसों ज़फ़ा मुजसों वफ़ा[२१] । यों वफादारीमने[२२] है क्यों रवा ।।
शर्मसारी[२३] है मुंजे इस बातकी । सोज़[२४] दिनका होर ज़ारी[२५] रातकी ।।

(क) बनावटी आशिक*—

एक आशिक[२६] था दिवाना बेखबर[२७] । सो रह्या था नींदमें यक गौर[२८] पर ।।
अज़-क़ज़ा[२९] माशूक[३०] निकल्या एक वहाँ । नीद में आशिक कूँ देख्या नागहाँ[३१] ।।
पस (वह खत) यक लिखको उसके बंदसों । बाँधकर जाता रह्या आनंदसों ।।
आशिक़ उठकर ओ चिठी देख्या जो खोल । यारके खतसों दिसे उसमें यो बोल ।।
"ऐ दिवाने इस वज़ा[३२] सोता है क्या । उठ जो सौदागर है तूदूकाँ पै जो ।।
होर अगर ज़ाहिद[३३] है तो बेदार रह । बंदगीमें सब अपस हुशियार रह ।
भी जो आशिक है तो सोता है गजब । नींद चखमें आशिकाँके आये कब ।।
मर्द आशिक़ तो सदा बेदार[३४] अछे[३५] । दिनकूँ हैराँ[३६] रातकूँ हुशियार अछै ।।
इश्क़ में सोना तुजे सर सहल[३७] है । आशिक़ी के कस्ब[३८] में ना-अहल[३९] है ।।

---

१. परिचित, २. उभय लोक, ३. कोने, एकान्त, ४. फूट-फूट, ५. सिवाय, ६. जल हाय, ७. अधिक बुरा, ८. अनंतर, ९. नाम, १०. कहा, ११. घड़ी, १२. दुःख में, १३. प्रल १४. भगवान्, १५. असत्यसंध, १६. नमकहराम, १७. प्रकार, १८. जुल्म, १९. सैनि आक्रमण, २०. बदचलन, २१. भक्ति २२. अनुरक्ति में, २३. लज्जित होना, २४. जल २५. रोना।

* उ० श०, पृ० २६७।

२६. प्रेमी, २७. पागल, बेहोश, २८. विचार, २९. दैव से, ३०. प्रियतम ३१. एकाएक, ३२. प्रकार, ३३. भक्त ३४. जाग्रत, ३५. रहे, ३६. परेशान, ३७. आसा ३८. पेशा ३९. अयोग्य।

§ ३०. वली दकनी (१७०५ ई०)

१. कवि

वली के साथ पुरानी दक्खिनी काव्यधारा की एक तरह समाप्ति होती है और उसके स्थान पर उर्दू-काव्यधारा का युग आरम्भ होता है। वह संधिकाल का महान् कवि है। एक समय था, जब वली को ही उर्दू-काव्य का आदिकवि माना जाता था। उर्दू में वली का नाम सबसे पहले आता है। अबतक दक्खिनी काव्य में मस्नवी या कथा-काव्य की प्रधानता थी, किन्तु वली ने पीटी लकीर को छोड़ गजल (स्फुट प्रेम-पदावलि) का रवाज दिया। उसकी गजलें इतनी सरस और चमत्कार-पूर्ण थीं, कि आगे आनेवालों को उसीके पदचिह्नों पर चलना पड़ा। यद्यपि गजलों का प्रारम्भ उससे एक शताब्दी पहिले मुहम्मद कुल्ली कुतुब ने भी किया था, इसलिए इसे वली का नवाविष्कार नहीं कह सकते। दक्खिनी कवियों में शायद ही कोई हो, जो फारसी का पंडित नहीं था। फारसी में गजलों के लिए हाफिज बहुत पहिले ही मशहूर हो गये थे। वली की एक यह भी विशेषता मानी जाती है, कि उसने सर्वप्रथम अपना दीवान ग्रथित किया। यह भी बात ठीक नहीं है कि क्यों मुहम्मद कुल्ली कुतुब ने यह काम पाँच-छह पीढ़ी पहिले ही कर डाला था। हाँ, वली की एक बड़ी विशषता यह जरूर मानी जायेगी, कि इस दक्खिनी कवि के देशी भाषा में लिखे पद्यों के चमत्कार को देखकर औरंगजेब-कालीन दिल्ली के कवि-देवताओं का आसन डगमगा उठा। अभी तक शाहों, शाहजादों तथा उसके दरबार की भाषा फारसी थी, फारसी ही काव्य की भाषा भी समझी जाती थी। कोई सम्भ्रान्त कवि हिन्दी में छन्द जोड़ना अपनी शान के खिलाफ़ समझता था। लेकिन अब उन्हें साफ दिखलाई देने लगा, कि यदि हम नहीं चेते, तो जिस तरह आरवा की कविताओं पर दरबार के लोगों के सर झूम रहे हैं, उसमें वली और उसके चेले बाजी मार ले जायेंगे, और हम मुँह देखते ही रह जायेंगे। वली उसी समय का कवि है, जब कि उत्तर भारत में वृन्दू, लाल, घन आनन्द, नागरीदास हिन्दी-काव्य की श्रीवृद्धि कर रहे थे।

वली का असली नाम वली मुहम्मद था। यह १६८२ ई० (१०९३ हि०) के आसपास औरंगाबाद में पैदा हुआ था, और १७३० ई० (११५५ हि०) में अहमदाबाद (गुजरात) में मरा, जहाँ ही इसकी कब्र है। वली की शिक्षा-दीक्षा गुजरात में हुई, उसका गुजरात से प्रेम था, जैसा गुजरात-वियोग तथा सूरत-वर्णन-सम्बन्धी उसकी कविता से मालूम होता है। पुराने लेखकों ने इसी भ्रम से उसे गुजराती समझा, यद्यपि वह दक्खिन का निवासी था। उसके विचारों के सम्बन्ध में डॉ० सैयद मुहम्मद कादिरी जोर लिखते हैं—

"औरंगाबादी वली मजहबी आदमी नहीं था। प्रख्यात गजलवक्ता हाफिज और गालिब की तरह इसका काव्य भी तुच्छ धार्मिक पक्षपातों से मुक्त है। और, उसने अत्यन्त आशिकी प्रेमपंथी का जीवन व्यतीत किया है। स्पष्ट है कि एक व्यक्ति जिसने खास तौरपर खूबसूरत लड़कों और मद्यपान की अभिलाषा के सम्बन्ध में गजलें लिखी हों, किस तरह धार्मिक समझा जा सकता है। वह एक दुनियादार आदमी और कवि था, और कभी-कभी गालिब की तरह उसके काव्य में सूफीयत (वेदान्त) का रंग झलकता है। यह बिलकुल एक स्वाभाविक बात थी; क्योंकि जो मुसलमान स्वतन्त्रचेता रहना चाहते थे, और अपने सधर्मियों के ताने सुनना नहीं

चाहते थे, अपने आपको सूफ़ी प्रकट करते हैं। उन लोगों को दैनिक धार्मिक कर्त्तव्यों की पाबन्दी नहीं रहती।*

"इससे हमारा अभिप्राय यह नहीं कि वली नास्तिक था। मुसलमानों के दोनों बड़े सम्प्रदाय, अर्थात् सुन्नी और शिया दोनों में से हरेक वली को अपने सम्प्रदाय का गिनता है।... वली की योग्यता के सम्बन्ध में पक्ष-विपक्ष में कितने ही विचित्र तर्क किये गये हैं। यह विचारा जाता है कि उसका अरबी-फारसी का ज्ञान बहुत ही सीमित था और इसी कारण से उसकी कविता में अशुद्ध अरबी और फारसी शब्द पाये जाते हैं। वस्तुतः यह दोषारोपण ठीक नहीं है। वली अपने समय का सच्चा प्रतिनिधि था। उससे यह आशा रखनी कि वह शब्दों का प्रयोग उसी तरह करेगा, जैसा आज किया जाता है, अनुचित है। लखनऊ के कवियों ने उर्दू-कविता में अरबी और फारसी के शब्दों के प्रयोग करने के लिए जो अविद्वत्ता-पूर्ण नियम बनाये थे, वली के समय वह प्रचलित नहीं थे। वली से पहिले के और उसके समकालीन कवि स्वाभाविक कवि थे, जो केवल कविता के रस से आप्लावित होने के लिए पद्य कहा करते थे। उनका उद्देश्य शब्दों और मुहावरों का प्रयोग करके अपनी कविता को अरबी और फारसी भाषा के ज्ञान की किताब बनाना या कोश तैयार करना कदापि नहीं था। और भी, कि वह जिस भाषा का प्रयोग करते थे, वह उनके समकालीनों की बोलचाल की भाषा थी। वह अरबी और फारसी-कोशों से शब्द नहीं लेते थे, बल्कि दिन-प्रतिदिन साधारण तौर पर बोलचाल में जो शब्द इस्तेमाल किये जाते है, उन्हीं को इस्तेमाल करते थे।...वली के दीवान में कई प्रकार की कविता के नमूने है—४५० गजलें, भिन्न-भिन्न प्रकार के बंद, ६ कसीदे, २ मस्नवियाँ, (कथा-काव्य) और २५ रुबाइयाँ (चौपदे) हैं। लेकिन, मीर और गालिब की तरह उसकी प्रसिद्धि निर्भर करती है गजलों ही पर। उनमें कविता के उत्कृष्ट गुण विद्यमान हैं।...प्रेम और शृंगार में उसकी गजलें मीर और दर्द से, स्वतन्त्र विचार में गालिब और हाफिज से और सौन्दर्य-चित्रण में नजीर की गज़लों से मिलती-जुलती है।"

वली के दीवान (काव्य-संग्रह) में ४००० के करीब अर्धालियाँ हैं।

२. कविता

(१) गुजरात-वियोग†—

गुजरातके फिराक[१] सों है ख़ार-ख़ार[२] दिल। बेताब[३] है सूनेमने[४] आतिलबहार[५] दिल॥
मरहम नहीं है इसके जख़मका जहाँमने। शम्शेरे-हिज्र[६] सों जो हुआ है फ़िगार[७] दिल॥
अव्वल[८] सों था ज़ईफ़[९] यह पाबस्ता[१०] सोज़[११] में। ज्यों बात है अगिनके उपर बेकरार दिल॥
इस सैरके नशे सों अवल तर दिमाग था। आख़िरकुँ इस फिराक़ में खींचा ख़ुमार[१२] दिल॥
मेरे सुनेमें आके चमन देख इश्क़ का। है जोशे-ख़ँ[१३] सों तनमें मेरे लालाज़ार दिल॥

---

*उर्दू शहपारे, पृ० १५०, (शब्दों में रूपान्तर करके)।

† उ० श०, पृष्ठ २७०।

१. वियोग, २. काँटा-काँटा, ३. अधीर, ४. शून्य में, ५. आग बरसता, ६. वियोग के खड्ग, ७. घायल, ८. प्रथम, ९. निर्बल, १०. पादनिगडित, ११. जलन, १२. मदालसता, १३. खून के उबाल।

|सिल[1] किया हूँ जगमें सरापा[2] शिकस्तगी[3] । देखा है मुझ शकीबे[4] हों सुब्हेबहार[5] दिल ।।
ज़रत सों दोस्ताँके हुआ जी मेरा गुजर । इशरत[6] के पैरहन[7] कुँ दिया तार-तार दिल ।।
र आशना[8] की याद[9] की गर्मीसों तनमने[10] । हरदममें बेक़रार[11] है मिस्ले-शरार[12] दिल ।।
ब आशिक़ाँ[13] हुज़ूर अछे पाक सुर्खरू[14] । अपना अपस लहूसों किया है फ़िगार दिल ।।
|सिल हुआ है मुजकुँ समर[15] मुज-शिकस्त[16] सों । पाया है चाक-चाक[17] हो शकले-अनार[18] दिल ।।
फसोस है तमाम कि आखिरकुँ[19] दोस्ताँ । इस मैक़दे[20] सों उसके चला सुध बिसार दिल ।।
किन हजार शुक्र वली हक़के फ़ैज़[21] सों । फिर उसके देखनेका है उम्मेदवार दिल ।।

२) सूरत शहर—*

अजब[22] शहरोंमें है पुरनूर[23] यक शह्न । बिला शक[24] वह है जगमें मक़सदे-दह्न[25] ।।
अहै मशहूर उसका नाम सूरत । कि जावे जिसके देखे सब कदूरत[26] ।।
जगतकी आँखका गोया[27] है यह नूर । अछो[28] इस नूरसों हर चश्म-बद[29] दूर ।।
शहर ज्यों मुन्तखिब[30] दीवान[31] है सब । मलाहत[32] की वह गोया खान है सब ।।
सुरज सुन आग उसकी जगमें काँपा । समुंदर मौज जन[33] रग-रगमें काँपा ।।
किनारे उसके यक दरियाय-तपती[34] । कि दुनियाँ देखने कुँ उसके टपती ।।
किया सब तन खलालत[35] सों यह ज्यों अर्क़ । हुआ दरिया[36] अपसके अर्क़में गर्क़ ।।
शहरसों है वह हम-बाजू[37] हमेशा । दरयाँ सों है वह हम पहलू[38] हमेशा ।।
कि आबे-खिज्र[39] की है उसमें तासीर[40] । हवा देती है उसकी याद कश्मीर ।।
अजब किल्ला है व्हाँ यक बाक़रीना[41] । अंगूठीमें दुन्याके ज्यों नगीना ।।
नज़िक किल्लेके बाडाघाट है वाँ । कि दायम गुलरुखाँ[42] की हाट है वाँ ।।
अहै इस हाशिये[43] पर जाय-आराम[44] । तिलस्मी[45] बागवाँ होता है हर शाम ।।
ऐ बुलबुल, पाकबीनी[46] सों नज़र[47] कर । कसाफ़त[48] की नजरसों बस हज़र[49] कर ।।
खुले हैं हर तरफ रुखसार[50] के गुल । हरेक गुल के नज़िक वाँ पर है सुंबुल[51] ।।
जो कोई देखा है उनका बाग-रुखसार[52] । हुआ यक दीद[53] में वह मह्व[54] दीदार[55] ।।
जो हैं वह महज़ तस्वीराते-इख्लास[56] । सो आशिकपर्वरी में हैच[57] हैं खास ।।

---

१ प्राप्त, २. सिर से पैर तक, ३. परास्तता, ४. सन्तोष, ५. बसन्त का प्रातः, . प्रमोद, ७. परिधान, ८. मित्र, ९. स्मृति, १०. शरीर में, ११. अधीर, १२. अंगारे की तरह, ३. प्रेमी, १४. भाग्यशाली, १५. फल, १६. मेरी हार, १७. टुकड़े-टुकड़े, १८. अनार-जैसी, ९. अन्त में, २०. मद्यशाला, २१. सत्य (भगवान्) की दया।

*उ० श०, पृ० २७०।

२२. अद्भुत, २३. प्रकाशपूर्ण २४. निस्संदेह, २५. जग की अभिलाषा, २६. मलिनता, |प, २७. मानो, २८. रहो, २९. कुदृष्टि, ३०. चुना, ३१. संग्रह ३२. मधुरता, ३३. तरंगायित, ४. ताप्ती, नदी, ३५. लज्जा, ३६. समुद्र में, ३७. पास में, ३८. पार्श्व, ३९. अमृत, ०. प्रभाव, गुण, ४१. नियमपूर्वक ४२. गुलाबमुखियाँ, ४३. किनारों, ४४. सुखस्थान, ५. जादू का, ४६. पवित्र दृष्टि, ४७. देख, ४८. मालिन्य, पाप, ४९. संयम, ५०. भाल, १. तमाल-जैसा पौधा, ५२. गाल, ५३. दृष्टि, ५४. विभोर, तन्मय, ५५. दर्शन, ६. प्रेम-मूर्ति, ५७. प्रेमी पर दया में प्रत्येक।

कहाँ है साकिये[१] इल्लास - अंगेज[२] । मुहब्बत की करे मैं[३] मुझ उपर रेज[४] ।।
सफाईसों खिले मुझ-जीवका बाग़ । करूँ उस दर्द-मैंकूँ मरहमे-दाग़[५] ।।
अहै सूरत हकीकत[६] की निशानी । कि हैं मामूर[७] वाँ अहले-मआनी[८] ।।
शराफ़त[९] में यह हैं ज्यों बाबे-मक्का[१०] । तो है सब मुल्क पर उसका जो सिक्का ।।
अगर देखे मुलूकाँ शामो - तबरेज़ । न देखा को ऐसा मुल्क ज़र्खेज़[११] ।।
कि इस भीतर केते ऐसे हैं तुज्जार[१२] । कि कारूँ कूँ नहीं उनके नज़िक बार ।।
एते आतिशपरस्ताँ[१३] की है बस्ती । सिखे नमरुद वाँ आतिशपरस्ती[१४] ।।
फिरंगी[१५] इसमें इत्ते हैं कुलहपोश[१६] । अदद[१७] वाँ जिनकी गिनतीमें है बेहोश ।।
वहाँ साकिन[१८] एते हैं अहले - मज़हब[१९] । कि गिनती में न आवें उनके मुश्रिब ।।
अगर्चे सब है वह इब्नाय-आदम[२०] । वले बीनश[२१] में रंगारंग आलम[२२] ।।
भरी हैं सीरतों[२३]-सूरत[२४] सों सूरत । हरेक सूरत है वाँ तस्वीर मूरत ।।
खतम[२५] है अमूरदाँ[२६] पर ओ सफाई । वले है बेश्तर[२७] हुस्ने-निसाई[२८] ।।
सभा इन्दरकी है हरयक कदममें । छुपा इन्दरसभाको ले अदम[२९] में ।।
किशन की गोपियाँ की नैं हैयह नस्ल[३०] । रहें सब गोपियाँ वह नक्ल[३१] यह अस्ल ।।
हज़ाराँ इस सबब[३२] शैदा[३३] हैं बुल्बुल । कि हैं वाँ गुँचेलब[३४] दायमा[३५] गुल[३६] ।।
न कइ एक रक्क़त सो खींचे शोख[३७] चंचल । वह मुखके बाग कन[३८] दीवार अंचल ।।
नज़र भरकर देखो हर गुलबदनकूँ । कि है पर्दये से बेपर्दा उननकूँ ।।
रहे वाँ आशिक़ाँ[३९] कूँ आम[४०] आवाज़ । कि नैं पर्दाबगैर अज़ - पर्दवे - नाज़[४१] ।।
किसीकूँ नैं नज़रबाज़ी[४२] बिना चैन । खुले हैं रात - दिन सब गर्क़ये- नैन[४३] ।।
शहर भीतर जो आवे मेहनाँ[४४] का दिन । हिंदू की कौम[४५] के अश्नान[४६] का दिन ।।
हरेक जानिब[४७] देखूँ मैं फ़ौज - दर - फ़ौज । तजल्ली[४८] के समुंदर की उठे मौज ।।

(३) एक पथिक का प्रेम*—

लागी है लगन तुमसों छुड़ा कौन सकेगा । है किसमें यह कुदरत[४९] ।।
अजब मुजकुं वतन अपने ले जा कौन सकेगा । कर दिलसों रफ़ाक़त[५०] ।।

---

१. मद्यवितरक, २. प्रेममय, ३. मद्य, ४. छिड़क, ५. जले पर मलहम, ६. सत्यता, ७. भरे, ८. तत्त्वज्ञ, ९. भद्रता, १०. मक्के का द्वार, ११. उर्वर, १२. महासेठ, १३. अग्निपूजक पारसी, १४. अग्नि-पूजा, १५. युरोपियन, १६. टोपधारी, १७. संख्या, १८. निवासी, १९. धर्मवाले, २०. मनु-सन्तान, मानव, २१. देखने में, २२. जगत्, २३. आचरण, २४. रूप, २५. समाप्त, २६. छोकरे, २७. अधिकतर, २८. स्त्रैण सौन्दर्य, २९. प्रलय, ३०. जाति, ३१. कृत्रिम, ३२. कारण, ३३. मुग्ध, ३४. अधर-कलिका, ३५. सदा, ३६. गुलाब, फूल, ३७. ढीठ, ३८. पास ३९. प्रेमी, ४०. सामान्य, ४१. लीला के पर्दे से, ४२. दृष्टिपात, ४३. नयन में मग्न, ४४. त्यौहार ४५. जाति, ४६. स्नान, ४७. और, ४८. सौन्दर्य ।

*उ. शा., पृष्ठ २७५ ।

४९. सामर्थ्य, ५०. मित्रता ।

है नक़्श किनारी का तेरे जामेके ऊपर । ऐ हिन्द के बाँके ।।
दामन[1] कूँ तेरे हाथ लगा कौन सकेगा । नैं ज़ोर नैं ताक़त ।।
हूँ ख़ाक तुम्हारी ही गली का ऐ सिरीजन । नैं काम कफ़न सों ।।
अब मुझकूँ जनाज़े[2] में उठा कौन सकेगा । यों ग़र[3] है हक़ीक़त[4] ।।
मत मारो वली कूँ मैं यह कहता हूँ कहाकर । सुन बात हमारी ।।
इस हिज्र[5] के तूमार[6] कूँ पा कौन सकेगा । बिन ग़म्ज़ा-ज़राफ़त[7] ।।

(४) **अभिलाषा*—**

नको[8] कर आशनाई[9] ग़ैर सों ऐ सीम-तन[10] हर्गिज़ ।
न हो ऐ शमारू[11] हर अंजुमन[12] में शोलाज़न[13] हर्गिज़ ।।
न मिल नायल हो हर तूती[14] सों ऐ शक्करशिकन[15] हर्गिज़ ।
न मिल हर बुल्बुले-मुश्ताक[16] हों ऐ गुलबदन[17] हर्गिज़ ।।
हरेक गुलशन[18] में ज्यों नर्गिस न खोरे अपने नयन हर्गिज़ ।।
फपीहाँ[19] खल्क़[20] के सारे तुजे शीरी-वचन[21] कहते ।
पेशानी[22] रोज़-रोशन[23] और ज़ुल्फ़[24] काली-रयन कहते ।।
मुबस्सिर[25] हो जवाहरके तुजे (सब) दर अदन[26] कहते ।।
जहाँके गुलरुखाँ[27] सारे तुझे नाजुक-बदन[28] कहते ।।
तु हर पलकाँके काँटाँपर न रख अपने चरन हर्गिज़ ।।
सदा मुश्ताक़[29] है तूबा[30] तेरे क़द[31] ज्यों सनोबर[32] का ।।
तजल्ली[33] में तेरा यह मुख अहै ख़ुर्शीद[34] महशर का ।।
दहन[35] तेरा सो ख़ैर-अंजाम[36] है यह जामे-कौसर[37] का ।
तु बेशक रूह[38] हक जगमें खुलासा[39] चार अंसर[40] का ।।
बजुज़[41] तुज रूह के क़ायम[42] न हो जगका बदन[43] हर्गिज़ ।।३।।
दो रुखसार[44] ते रोशन यह दो अनवर[45] सितारे हैं ।
तेरे चंचल नयन आगे चिका क्या चेकारे[46] हैं ।।
अज़ीज़ाँ[47] मिस्रके सारे तेरी खातिर सँवारे हैं ।।

---

१. अंचल, २. अरथी, ३. यदि, ४. सत्य ५. वियोग, ६. राशि, ७. कटाक्ष-लालित्य ।

*उ० श० पू०, २७६ ।

८. नहीं, ९. मित्रता, १०. रुपहला शरीर, ११. दीपमुख, १२. सभा, १३. ज्वलित, ४. तोता, १५. शक्कर तोड़नेवाला, मधुर, १६. प्रेमी बुलबुल, १७. गुलाब-मुख, १८. फुल-ाड़ी, १९. वाणी-निपुण, २०. दुनिया, २१. मधुरवचन, २२. ललाट, २३. प्रकाशमान िन, २४. अलक, २५. प्रभाववाला, २६. स्वर्ग में, २७. गुलाबमुखियाँ, २८. कोमलांगी, ९. प्रेमी, मुग्ध, ३०. कल्पवृक्ष, ३१. आकृति, ३२. पद्मवृक्ष, ३३. सौन्दर्य, ३४. प्रलय, ५. मुख, ३६. परिणाम, फल, ३७. स्वर्ग-निर्झर का प्याला, ३८. आत्मा, ३९. सार, ०. महाभूत, ४१. बिना, ४२. मौजूद, स्थायी, ४३. शरीर, ४४. गाल, ४५. प्रकाशमान, ६. किस काम के, ४७. मंत्री, सुन्दर ।

जुलेखा से केते आशिक[1] तें पर जीव वारे हैं ।।
न कर मसकत[2] हरेक युसुफ़का यह चाहेज़क़न[3] हर्गिज़ ।।
तु है महबूब[4] आलमका वले[5] आलम[6] सों हो यकसू[7]।
तु महबूबाँ में उन्का[8] है नको[9] दिखला किसी को रू[10] ।।
जो आतिशदाँ[11] किया दिलकूँ बी लेजा वाँ जुल्फ़ अंबर[12] तू ।।
बग़ैर-अज़[13] ईद मत दिखला किसीकूँ मह हलाल[14] अबरू[15] ।।
न मिल महताब[16] में भी किससों ऐ चंदरबदन हर्गिज़ ।।

(५) सुन्दर से*—

मत गुस्सेके शोले[17] सों जलतेकूँ जलाती जा।
टुक मेह्र[18] के पानी सों यह आग बुझाती जा ।।
तुज चाल की कीमतसों नै दिल है मेरा वाक़िफ़[19] ।।
ऐ नाज़-भरी[20] चंचल टुक भाव बताती जा ।।
इस रैन अँधेरी में मत भूल परों निस सों।
टुक पाँवके बिछुओंकी आवाज़ सुनाती जा ।।
मुज दिलके कबूतर कुँ फकड़ा है तेरी लट ने।
यह काम धरम का है टुक इसकूँ छुड़ाती जा ।।
तुज मुखकी परस्तिश[21] में गइ उम्र मेरी सारी ।
ऐ बुतकी वचन हारी इस बुतकुँ बचाती जा ।।
तुज इश्कमें दिल चलकर जोगी की लिया सूरत ।।
यकबार अरे मोहन छाती सों लगाती जा ।।
तुज घरकी तरफ सुंदर आता है वली दायम्[22]।
मुश्ताक़[23] है दर्शन का टुक दरस दिखाती जा ।।

(६) विरह की नार†—

यह विरहकी तार क्यों के जावे । चलने की पुकार क्यों के जावे ।।
जाँदार की पार क्यों के जावे । दिले यार[24] को छौं[25] क्यों के जावे ।।
जख्मी[26] है, शिकार क्यों के जावे ।।
भरता हुँ जहाँ वो जग सों हज़ार । इस बंदमें[27] आ हुआ हूँ लाचार[28] ।।
क्योंकर हो विरहमें मस्त हुशियार[29] । जब लग न मिले शराबे-दीदार[30] ।।

---

१. प्रेमी, २. निवासी, ३. ठोडी का गड्ढा, ४. प्रियतम, ५. लेकिन, ६. दुनिया, ७. एक ओर, ८. दिव्य, ९. नहीं, १०. मुख, ११. अग्निधारी, १२. सुगंधित रत्न, १३. बिना, १४. खण्ड-शशि, १५. भ्रू, १६. चाँद।

*उ० श०, पृष्ठ २७७।

१७. ज्वाला, १८. दया, १९. जानकार, २०. लीलामयी, २१. पूजा, २२. सदा, २३. मुग्ध।

†यु. व. म., पृष्ठ ४८८। २४. प्रियतमा के हृदय, २५. छाया, २६. घायल, २७. बँधा, २८. बेबस, २९. होश में, ३०. दर्शन-मदिरा।

अंखियाँका खुमार[१] क्यों के[२] जावे ।।

जब इश्ककी फौजने आइ घेरा । हैराँ हुआ हवास[३] मेरा ।।
उस दिनसों हुआ हुं तेरा चेरा । यकसाँ[४] है हमेशा हुस्न[५] तेरा ।।
जन्नतसों बहार[६] क्योंके जावे ।।

यह दिल तेरे देखने को रोवै । हर शामो- सुबह में तिल[७] न सोवै ।।
यह उम्र[८] अज़ीज़[९] ग़म[१०] में खोवै । आँखों की अगर मदद न होवै ।।
मुझ दिलका ग़ुबार[११] क्यों के जावे ।।

आशिक़ की यही है जगमें वानाँ[१२] । माशूक़[१३] के नाँव पर बिकानाँ ।।
नैं काम हरेक का इसमें आना । मुमकिन[१४] नहीं अब वली का आना ।।
है आशिक़े - ज़ार[१५] क्योंके जावे ।।

(७) **प्रियतम से***—

ऐ यारे मन बहला हैगा । बीच उसके बहुत जफ़ा[१६] हैगा ।।
जाने-मन[१७] उस परउ फ़िदा[१८] हैगा । ....मुब्तला[१९] हैगा ।।
इश्कबाजों[२०] बी शका[२१] हैगा ।।

जाने-मन इस तरफ[२२] तुँ आया कर । एक दो बात खुश[२३] सुनाया कर ।।
हर किसीकूँ गले न लाया कर । बात कह कर सभी भुलाया कर ।।
इसमों[२४] तेरा बहुत भला हैगा ।।

जाने-मन हरकहुँ[२५] फिरा मत कर । सुख़न-बन[२६] कहूँ सुना मत कर ।।
बाँका[२७] वो गुंडा[२८] सों मिला मत कर । इन दखलबाज़[२९] कूँलिया मत कर ।।
ज़ाँकि[३०] बसियार[३१] बेहुदा हैगा ।।

तुहमताँ[३२] लोग करते हैं मुझपर । सब तेरे वास्ते सुने दिलबर[३३] ।।
तू मेरा यार (है) किसी सों न डर । लाख तलवार गिर पड़े सिरपर ।।
सिर तेरे राहपर फ़िदा हैगा ।।

वर्ना[३४] खींचूँ (कभू) जो मैं तलवार । मुल्क हिन्दोस्ताँ करूँ गुलजार[३५] ।।
जिसके सिरपर लगाके मारूँ वार । एकसों दो करूँ वो दो सों चार ।।

---

१. मदालसता, २. कैसे, ३. चेतना, ४. एक समान, ५. सौन्दर्य, ६. बाहर, ७. पल, ८. आयु, ९. प्रिय, १०. रंज, ११. धूल, १२. भेस, १३. प्रियतम, १४. संभव, १५. दुःखी प्रेमी ।

*यु. द. म., पृष्ठ ४८९–९० ।

१६. अत्याचार, १७. मेरे प्राण, १८. नौछावर, १९. फँसा, २०. प्रेम-जुआड़ियों, २१. चतुर २२. इस ओर, २३. अच्छी, २४. इसमें, २५. सर्वत्र, २६. बुरी बात, २७. बदमाश, २८. गुंडा, २९. बीच में दखल देनेवालों, ३०. जहाँ पर कि, ३१. बहुत, ३२. बदनामी, ३३. मनोहर, ३४. नहीं तो, ३५. फुलवाड़ी ।

तेग़ मेरी सों ला-फ़ना[1] हैगा।।
दर-कफ़ेयार[2] क़ाफ़िया तंग[3] अस्त[4]। यारे-मन दीदन श्-[5] बसे[6] रंगऽस्त[7]।।
शुक्र अल्ला[8] कि यार हमरंग[9] अस्त। यारेमन दर-जहाँ[10] अजब रंगऽस्त।।
रंग-बा-रंग[11] आशना[12] हैगा।।
याद मेरा है हमचुँ[13] शीरीं[14] बर[15]। सारे खुशसूरतों में हैगा नर[16]।।
नाम रक्खा हुँ मैं जिसका अज़कर[17]। मददे-आँ[18] अस्त[19] मुर्तजा[20] हैदर[21]।।
दिलरुबा[22] बूय-दिलरुबा[23] हैगा।।
ऐ वली तूं मिसाल[24] सीमीं बर[25]। हमचुँ[26] जोगी हो गश्तअम्[27] दर-दर।।
यार मेरा जो हैगा जादूगर। सेह्र[28] आँखों सेती किया मुझपर।।
निगह[29] उसकी में क्या बला हैगा।।

§ ३१. वली वेल्लोरी (१७२४ ई०)

१. कवि

वली औरंगाबादी के समकालीन इस वली का नाम सैयद मुहम्मद फ़ैयाज था। इसके बारे में प्रोफेसर ज़ोर ने लिखा है*—

"दखिन में दो कवि हुए है, जिनका उपनाम वली था। जिससे प्रायः भ्रम पैदा हो जाया करता है।...इसमें सन्देह नहीं कि दखिन में एक ही समय दो कवि ऐसे हुए, जिनका उपनाम वली था, किन्तु एक कवि पश्चिमोत्तर भाग, अर्थात् सूबा औरंगाबाद (मराठवाड़, हैदराबाद) का निवासी था और दूसरा दक्षिण पू ' (आन्ध्र) में रहता था, जो अब मद्रास प्रदेश में सम्मिलित है। यद्यपि एक ही समय में दोनों की उन्नति हुई, किन्तु वह स्वयं एक दूसरे के अस्तित्व को जानते नहीं थे। वेल्लोर का वली बहुत धार्मिक आदमी था और अपने जीवन में कवि के रूप में उसे कोई यश नहीं मिला। इसके विरुद्ध औरंगाबाद का वली अपने समय में मद्रास और हैदराबाद से गुजरात और उत्तरी हिन्द तक में मशहूर था। यह औरंगाबाद का ही वली है, जिसने दिल्ली तक सफर किया और जो एक उर्दू-शायर के रूप में बहुत मशहूर है।"

वली वेल्लोरी पेशेवर कवि नहीं था। इसका जन्म वेल्लोर के इलाके में हुआ था, और पहिले सातगढ़ (मद्रास) के सूबेदार हिरासतखाँ के अधीन सैनिक नौकरी करता था। उसके

---

१. अविनाशी, २. प्रियतम की हथेली में, ३. बेबसी, ४. है, ५. उसके दाँतों में, ६. बहुत, ७. रंग है, ८. भगवान् को धन्यवाद, ९. समान रंगवाला, १०. संसार में, ११. एक-एक रंग से, १२. परिचित, १३. ऐसा, १४. माधुर्य, १५. लानेवाला, १६. बढ़-चढ़कर, १७. नाम, १८. उसकी सहायता, १९. है, २०. इष्ट, अभिलषित, २१. विदारक सिंह (हजरत अली), २२. मनोहर, २३. मनोहर (प्रियतम) की सुगंध, २४. उपमा, २५. चाँदी-जैसा, २६. मानों, यथा, २७. गया हूँ, २८. जादू, २९. दृष्टि।

*उ. श., पृष्ठ १४४। (कठिन शब्दों के हिन्दी-पर्याय हमारे हैं।—ले०)

बाद वह कड़पा चला गया और वहाँ के सूबेदार (प्रान्तपाल) नवाब अब्दुल् मजीदखाँ का बड़ा ही मित्र बन गया, जिसने बहुत सम्मान करते हुए उसे सिघोट में एक ऊँचे पद पर नियुक्त किया। सिघोट वही शहर है, जहाँ इब्ननिशाती के 'फूलवन' का सुन्दर हस्तलेख लिखा गया। वली की मृत्यु १७३७ ई० (११५० हि०) से पहिले अरकाट में हुई। वहीं मुहल्ला असदपुर में उसकी कब्र है। इसने अपना अन्तिम जीवन जागीर चटपेट्टा में बिताया।

२. कृतियाँ

वली वेल्लोरी के दो काव्य-ग्रंथों का पता लगा है—

(१) 'रतन व पदम'—

यह उसी रतनसेन और पद्मिनी की कथा पर आधारित है, जिसे जायसी ने अपनी पद्मावत के लिए लिया, और शायद वली को जायसी के प्रसिद्ध काव्य से भी प्रेरणा मिली। स्प्रिंगर ने इस काव्य की एक प्रति नवाब मैसूर (टीपो सुल्तान) के पुस्तकालय में सौ वर्ष पहिले देखी थी, किन्तु अब वह उपलब्ध नहीं है। यह ४००० अर्धालियों का एक अच्छा बड़ा काव्य था। इसकी कुछ पंक्तियाँ है *—

खुदाया[१] तु है पाक[२] पर्वरदगार[३]। निरंकार वो आधारो अच्छे उतार[४]॥

अपने आश्रयदाता के बारे में लिखा है †—

हिरासतखां अमीर यक नामवर था। सकूनतगाह[५] उसकूँ सात गढ़ था॥
अथा ओ अहल-दर्द[६] वो नेक-आमाल[७]। रफ़ाक़त[८] में अथा मैंउसकेखुशहार॥
क़ज़ारा[९] वाँसों हों किस्मतसों बर्खास्त[१०]। सो आया मै तरफ कड़पाके घर ख्वास्त॥
नवाब अब्दुलमजीद इब्न[११]अब्दुल्हमीद[१२]एक। अथा वाँ नामवर सूबा सईद[१३] एक॥
सो ओ बहरे-शुजा[१४] पर्वाना लिखकर। सलुक (दे) नौकराँ में मन्सबत[१५] कर॥
तऐयन[१६] कर मुज सिघवट रवाना। किया वह साहेबे-शीरीं जमाना[१७]॥
सो हस्बुल्हुक्म[१८] मैं सिघवट को आया। रंगारंग वाँ तमाशे मैंने पाया॥

(२) 'रौज तुश्शुहदा'—

रौज़तुश्शुहदा (धर्मवीरों की कहानी) वली की दूसरी कृति ५५०० अर्धालियों की विशाल मस्नवी (कथा-काव्य) है। मुल्ला हुसेन वायज़ काशफी ने इसी नाम से एक पद्य-ग्रंथ लिखा था,

---

*'दकन में उर्दू', नसीरुद्दीन हाशमी, हैदराबाद, १९३६ ई०, पृष्ठ २३०–३१।

१. हे भगवान्, २. पवित्र, ३. पालक, ४. अवतार, अद्वितीय।

†त० श० म०, पृ० १४६।

५. निवास-स्थान, ६. पीड़ित जन, ७. सु-कर्म, ८. मित्रता, ९. संयोग से, १०. बहिष्कृत, ११. इच्छा, १२. अब्दुल हमीद का सूत्र, १३. सूबा अधिकारी, १४. वीरतापूर्वक, १५. संबंधित, १६. नियुक्त, १७. मधुर समयवाला, १८. आज्ञानुसार।

वली ने उसीके आधार पर अपना काव्य लिखा। मूल फारसी और इस किताब में दस अध्याय हैं। इसलिए उसे 'दह-मज्लिस' भी कहा जाता है। इसके दस अध्याय हैं*—

१. मुहम्मद की मृत्यु।
२. मुहम्मद-पुत्री फातिमा की मृत्यु।
३. मुहम्मद-जामाता अली की वीरगति।
४. फातिमा-पुत्र हुसेन की वीरगति।
५. हुसेन के चचेरे भाई अक़ील-पुत्र मुस्लिम हानी और उन्सपुत्र मुहम्मद की वीरगति।
६. मुस्लिम के लड़कों की वीरगति।
७. हुसेन की मक्का से कर्बला तक की यात्रा और वीरगति।
८. हुसेन के साथियों की वीरगति।
९. हुसेन के पुत्र और सम्बन्धियों की वीरगति।
१०. कर्बला-युद्ध-सम्बन्धी कुछ घटनाएँ।

कुछ लेखकों के खयाल में यह पुस्तक मर्सियों (शोकांजलियों) का संग्रह है, किन्तु इसके शीर्षकों को देखने से पता चलता है, कि यह किताब रसूल-वंशजों के युद्धों और वीरगतियों का इतिहास है। दूसरी दक्खिनी मस्नवियों की भाँति यद्यपि यह पुस्तक बिलकुल धार्मिक रंग में लिखी गई है, तो भी काव्य के गुणों और विशेषताओं का इसमें अभाव नहीं है।

इस ग्रंथ की प्राचीनतम प्रति पुस्तक लिखने के दो वर्ष बाद १७६६ ई० (११३९ हि०) में लिखी गई, जो हैदराबाद के नवाब सालारजंग के पुस्तकालय में मौजूद है। पुष्पिका में लिखा है†—

"सन ११३७ हिजरी किताब दखिनी 'रौज़ा' दरबयान इमाम हुसेन...तस्नीफ मीर वली फ़ैयाज़ साहब सज्जाद मनू हर कर्दऽअन्द।...कातिबुल् हुरूफ़ सैयद वजहुल्ला हैदरी वल्द सैयद बड़े मनू चोहरी दर-मुकाम एल्लोर रोज यकशंबा बवक्त सेहपहर बातारीख इज्जा ज़ीहेजा सन ११३९ हिजरी मुताबिक ११३६ फसली[1]।"

मंगलाचरण करते कवि ने लिखा है—

करूँ नामे[2] कूँ बिस्मिल्ला[3] सों आगाज़[4]। अछूँ[5] ता मैं फसाहत सों सरफ़राज़[6]॥
सराऊँ[7] क्या उसे जिन यक सखुन[8] में। बँद्या जीव दमके रिश्ते[9] सों बदनमें॥

और अन्त में—

किया हूँ खत्म[10] जब यो दर्दका काल[11]। इग्यारा सौ पै था सैतीसवाँ साल[12]॥

* त० उ० म०, पृष्ठ ५८–५९। † वही।

१. रविवार, २० जुलाई, १९२७ ई०, २. पुस्तक, ३. भगवान् के नाम से, ४. आरंभ, ५. रहूँ, ६. भाग्यशाली, उन्नतशिर, ७. सराहना करूँ, ८. वाणी, ९. श्वास के सम्बन्ध में, १०. समाप्त, ११. दुःख-भरी कथा, १२. सन् १७२४ ई०।

ज़माना[१] मेहदिया[२] आखिर-ज़माँ[३] का । अथा उस बाइस[४] अम्नो-अमाँ[५] का ॥
वली अब रख रक़म[६] होर ख़त्म कर बात । ... ...॥

(१) द्वितीय अध्याय में फातिमा के बारे में लिखा है*—

करूँ मैं मज्लिसे-दोयम[७] (कुँ) पुरग़म[८] । वफाते-फातिमा[९] कर कर मुरक्कम[१०] ॥
तवल्लुद[११] बोलना लाज़िम[१२] (है) अव्वल । मुनाक़िब[१३] तिस लगा करना मुसल्सल ॥
खदीजा[१४] सों जो औलादे-पयम्बर[१५] । अथे सब दो पिसर[१६] होर चार दुख़्तर[१७] ॥
न्हनी थी फ़ातिमा सब दुख़्तराँ में । व अछता[१८] चाँद यों सब अख़्तरा[१९] में ॥
शिकम में माँ के थी जों उनकुँ आराम । रखे हज़रत ने उनकूँ फातिमा नाम ॥
नबूवत[२०] सौंपनेके पाँचवी साल । वलादत[२१] का हुआ नज़्दीक ज्यों साल॥
खदीजा ने बशारत[२२] यों सुनाये । कबीले की जनाँकूँ सब बुलाये ॥

(२) हुसेन के जन्म का वर्णन†—

वली हो रौज़तुश्शुहदा[२३] का माली । न यकदम फ़िक्र कर मज्लिस सों खाली[२४] ॥
नवा गुल[२५] मदह[२६] के गुलशन[२७] सों लाकर । करे भी शाहकी मज्लिस मुअत्तर[२८] ॥
शिकारी था अक़ीदे[२९] का सचा एक । नबीकूँ ला दिया आहू-बचा[३०] यक ॥
कबूल[३१] उसकूँ शहे-आलम[३२] ने फरमाय[३३] । जो इतने में हसन[३४] मज्लिसमें आय ॥
देखे आहूबचा हज़रत कने[३५] दो । हसनकूँ खुश किया है दिलमने[३६] वो ॥
उसी साअत[३७] नबीने उस हिरनकूँ । करम फ़रमा[३८] के बख़्शे हैं हसन कूँ ॥
यकायक आ हुसेन जुल्करामात[३९] । हसनकूँ खेलने देखे हरिन साथ ॥
पूछे "ऐ भाइ, यह तुम काँसों[४०] लाये । हिरनका यो बचा तुम कासों लाये" ॥
हसन ने कह "हरिन कर प्यार मुजकूँ । दिये हैं जद्दबुज़र्गवार[४१] मुँजकूँ" ॥
नबी सों कय हुसेन आ दौड़ करनैं । "हरिन उनकुँ दिये तुम मजकूँ को नैं" ॥
यही छंद[४२] ले करें तकरार[४३] फिर फिर । नबी[४४] के साथ ऊपर पाँवों पो पड़कर ॥
तसल्ली[४५] शाहज़ादे कूँ कई धात । करें हज़रत रख उसके सिर उपर हात ॥
हुए नज्दीक जो शहज़ादा रोये । "हरिन नैं हात कि दीगर...होये" ॥

---

१. युग, २. पैगम्बर मेहदी, ३. अन्तिम युग, ४. कारण, ५. शान्ति, ६. लेख।

* यु० द० म०, पृष्ठ ३५६।

७. द्वितीय सभा ८. शोक-पूर्ण, ९. मुहम्मद-पुत्री फातिमा की मृत्यु, १०. लिखित, ११. जन्म, १२. उचित, १३. सगुण, १४. लगातार, १५. पैगम्बर की सन्तान, १६. पुत्र, १७. कन्या, १८. रहता, १९. तार, २०. पैगम्बरी, ऋषित्व, २१. जन्म, २२. सुसमाचार।

† उ० श०, पृष्ठ २७८–७९।

२३. धर्मवीरों की समाधि, २४. रिक्त, २५. फूल, २६. प्रशंसा, २७. फुलवाड़ी, २८. सुगन्धित, २९. श्रद्धा, ३०. हरिण-शिशु, ३१. स्वीकार, ३२. जगराज, ३३. श्रीमुख से वचन कहा, ३४. मुहम्मद-नाती, ३५. हजरत के पास, ३६. दिल में, ३७. घड़ी, ३८. कृपा करके, ३९. चमत्कारी, ४०. कहाँ से, ४१. मान्य पुरखा, ४२. बहाना, ४३. झगड़ा, ४४. पैगम्बर, ४५. धीरज।

जो यक हरिनी ने बच्चा लेके हमराह[१] । पुकारी (आयकर) मस्जिदपो नागाह ।।
दे लेने बच्चाकूँ...उनकी डाल । दिखाने लाइ हज़रत - पास फ़िल्हाल[२] ।।
सलाम आकर फ़साहत[३] की ज़बाँसों । लगी कहने रसूले-उन्स जाँ सों[४] ।।
"बचे ते थे...उनमें एक धरकर । शिकारी छीन ले या कैंद कर कर ।।
रहा था उनमें...एक खुशनूद[५] । जंगलमें मैं पिलाती थी उसे दूध ।।
निदा[६] इतने में आया आसमाँ सों । पैगंबर पास ले जा इस बचेकं ।।
कि शहज़ादा हरिन मंगता खड़ा है । हरिन के साथ शौक[७] उसकूँ बड़ा है ।।
मुबादा[८] गर होयें उसके नयन नम[९] । फरिश्त्याँ पर होयेगा अर्श के गम ।।
निदा (सुन) इज्तराबी[१०] इज्तराबी । बजा लाई हूँ खिदमत में शिताबी ।।
न होर उसके आँख्याँ सो हम्द-अल्ला । अँजू[११] रुखसार[१२] पाया है नहीं राह ।।"
यो सुन सब दिलमें ग़म का बीज बोये । जेते हज्ज़ारे[१३]- मजलिस थे सो रोये ।।
दुआ हरिनी कूँ हज़रत ने किये तां । बचा ले शाहज़ादेकूँ दि तो ।।
अज़ीज़ाँ[१४] सब फरिश्ते हो पैगंबर । न चाहें जिस अजूँ बहनेकूँ मुख पर ।।
जे कोई कर उसके सिर पर ज़ख्मकाँरी[१५] । किये है लहू कूँ रुखसारों[१६] पो जारी ।।
वो रोशन[१७] मूँ जिनोंके करके सर[१८] खूँ । रगे-खुर्शीद[१९] कूँ कहते हैं गुलगूँ ।।
उनोंपर क्या अछे रुख रूमियाही[२०] । अछैगा किस वज़ा[२१] क़हराँ[२२] इलाही[२३] ।।
रवा[२४] है यो पियारा मुस्तफ़ा[२५] । हुये हैरान दश्ते - करबला[२६] का ।।
कि जिसका बाप अछै[२७] साक़ीये-कौसर[२८] । रवा है वह तपे पानी न पाकर ।।
सिफ़त[२९] उसका है सब आलम[३०] पे मालूम । ज़माने के है वो दफ़नर[३१] पो मालूम ।।

(३) हुसेन घायल*—

वलेकिन[३२] शाहका वो दबदबा देख । सलावत[३३] होर आली[३४] मर्तबा देख ।।
क़दम शोखी[३५] सों आगे ना रखे कोई । न अँखियाँ खोलकर मुखपर देखे कोई ।।
नो हो नाचार तब सब नाबकाराँ[३६] । लगे करने कुँ शहपर तीरबाराँ[३७] ।।
तुरंग उपर सों उतरे शाह शब्बीर[३८] । कि ना तेज़ी[३९] कुँ नाहक ना लगे तीर ।।
अो था जद्दो-पिदर[४०] की यादगारी[४१] । कलर[४२] कै कै करूँ चुप उसकी ख्वारी[४३] ।।

---

१. साथ, २. तत्काल, ३. लालित्य, ४. प्राणों से प्यारे, ५. राजी, प्रसन्न, ६. वाणी, ७. प्रेम, ८. शायद, ९. गीली, १०. जल्दी, ११. आँसू, १२. गाल, १३. उपस्थित, १४. प्यारे, १५. गहरा घाव, १६. गालों, १७. प्रकाशित, १८. सिर का खून, १९. सूर्य, २०. मुख-कालिमा, २१. प्रकार, २२. कोप, २३. भगवान्, २४. उचित, २५. अभिलषित, वरण किये गये, मुहम्मद, २६. कर्बला की मरुभूमि, २७. रहे, २८. स्वर्ग-निर्झर-जल को पिलाने-वाला, २९. प्रशंसा, गुण-गान, ३०. दुनिया, ३१. इतिहास।

*यु. द. म., पृष्ठ ३६३।

३२. किन्तु, ३३. दृढ़ता, ३४. उच्च, ३५. चंचलता, ढिठाई, ३६. दुष्ट, ३७. बाणवर्षा, ३८. सुन्दर इमाम हुसेन, ३९. घोड़े, ४०. पुरखा (नाना) पिता, ४१. स्मृति, ४२. व्यर्थ, ४३. विनाश।

देखे जब काफ़िराँ[1] ने शाहज़ादा । तुरँगकूँ सुट[2] हुआ है यक पियादा ।।
दिलावर हो लगे भाने[3] कूँ तीराँ । लगे शह चुप खड़े खानेकूँ तीराँ ।।
पेशानीपर[4] लग्या यक तीर कारी[5] । उखाड़े सो हुआ लहु वाँसे जारी ।।
भरा ... लहूकने[6] उस हात सर्वर[7] । भरै उस लहुकूँ ले मुख सात स र ।।
रकतमें चेहरेये - पुरनूर[8] पेशानी । हुआ था ज्यों शफ़क़[9] में सूरपानी ।।
कहते थे यों च में[10] उस लाल मुख सात । कहूँगा जद[11] मों अपने जा मुलाक़ात ।।

(४) हुसेन की मृत्यु*—

चरिंदे सब जँगलके हो दुखारे । खड़े रोते थे चरना छोड़ सा ।।
पहाड़ाँ शोरसों फाड़े थे मीना । खड़े थे सिरमों कर पग-लग पसीना ।।
दर्याँ में के घराँ सब छोड़ अपने । लगे खुश्की पो आ मछल्याँ (मो) तपने ।।
किसीपर शाहकी था प्यास का ग़म । किसीपर शहके था मरनेका मातम[12] ।।
दुन्याँमें भर रह्या था शोर सारा । हुआ था दर्दो - ग़म[13] हर शै[14] पो न्यारा ।।
खियाई[15] क्यों हमामे - वा - वफ़ा[16] कूँ । बुझाई क्यों चिराग़े - मुस्तफ़ा[17] कूँ ।।
गया क्यों आज ओ सुल्ताने-आलम[18] । बलुकहज़रतसों मिला था जाने आलम[19] ।।
पड्या क्यों आज औंधा तख्तेशाही[20] । हुआ क्यों आज आलम पर तबाही[21] ।।
जहाँमें सब क़यामत[22] का बजा सूर[23] । लगे मौजां सो खलबलने कूँ समदूर[24] ।।
गुबारे - सुर्ख[25] होकर आशकारा[26] । जगतपर छा गया था सब अँधारा ।।
जमीं सब लाल थी होरआसमाँलाल । मँग्या[27] होने कुँ सब कुदरत[28] पो जंजाल[29] ।।
फरिश्ते हाथमें लें गुर्ज - आहन[30] । खड़े थे फ़ोड़ने धनकूँ खना खन ।।

(५) हुसेन के सगे-सम्बन्धियों का कतल †—

वज़ाँ[31] तारिक़ का बेटा एक उमर था । जदीके[32] फन[33] में खरसा[34] बेखबर था ।।
उनें अकबरका आतीवार खाया । जहन्नुम[35] में पिदर[36] कूँ जा मिलाया ।।
दुजा था तलहा कर तारिक़का फ़र्जन्द[37] । अथा मलऊन[38] हाथी सा तनोमन्द[39] ।।
जल अपने बाप होर भाई के ग़मसों । तुरत शहजादे पर धाया मनम्[40] कूँ ।।

---

१. विधर्मियों, २. छोड़ (पंजाबी), ३. पाने (पंजाबी), डाले, ४. ललाट पर, ५. गहरा, ६. रुधिर में, ७. सरदार, ८. प्रकाशमय, प्रभास्वर, ९. प्रातः समय, संध्या-लालिमा, १०. इसी बीच, ११. नाना (मुहम्मद)।

*यु. द. म., पृष्ठ ३५७।

१२. शोक, १३. दुःख, १४. बातचीत, १५. गँवाया, १६. सत्यनिष्ठ, १७. पैगम्बर मुहम्मद (का दीपक), १८. विश्व के राजा, १९. विश्व के प्राण, २०. राजसिंहासन, २१. बरबादी, २२. प्रलय, २३. नरसिंहा, २४. समुद्र, २५. लाल धूलि, २६. प्रकट, २७. चाहा, २८. प्रकृति, शक्ति, २९. झगड़ा, ३०. लौह-गदा।

†यु. द. म., पृष्ठ ३५७।

३१. इसके पश्चात्, ३२. पैतृक, ३३. कला, ३४. गदहे-सा, ३५. नर्क, ३६. पिता, ३७. पुत्र, ३८. पातकी, ३९. हट्टा-कट्टा, ४०. प्रहार।

सो अकबर का गरेबाँ[1] हातसों धर। मँग्या[2] था खींचकर सुटने[3] जमी पर॥
तलक[4] अकबर जलाली कर हुन साथ। सुटे मलऊन के गर्दन उपर हाथ॥
पकड़ कूवतसेती ऐसा मरोड़ा। जो गर्दन की रँगा होर हाड़ तोड़ी॥
पछीं उन ज़ीनसों ने खीच काड़ी। उचा[5] कर ज़ोरसों भुईंपर पछाड़ी॥
देखत अकबरकी मर्दी होर बरज़ोर। लईना[6] के पड़्या सब दिलमने शोर॥
मँग्या मिस्र[7] ने तो शम्शेर[8] काड़ी। तलक अकबर ने भी शम्शेर झाड़ी॥
खड्ग ओ सामें उसके जा लग्या सो। कट्या काफ़िर कमर लग हो गया दो॥
उपत यो दोहजाराँ सार यकबार। कये अकबरपो हमला करके हंकार॥
इधरकूँ भी किये अकबर ने हम्ला। कुत्यांपर ज्यों कि शेरे नर ने हम्ला॥...
जब अकबर यो बशारत[9] बापसों पाइ। सो फिर खुशबख्त हो मैदानपर धाइ॥
तलग बे रहम मूज्याँ[10] का सरबदल। गये तन्हा अली अकबर उपर चल॥
सगाँ[11] उस शेरकूँ दरम्यानमें घेर। लगे भाने[12] सना होर गुर्जा शम्शेर॥

§ ३२. हाशिम अली (१७३७ ई०)

१. कवि

इस कवि के जन्मस्थान के बारे में विवाद है। कुछ लोग इसे बुरहानपुर (मध्यप्रदेश) का कहते हैं। भीतरी गवाही गुजरात का भी बतलाती है। हाशिम अली मर्सिया (शोकांजलि) कहनेवाला कवि है, इसने मर्सिया छोड़ दूसरे विषयों पर कलम नहीं उठाई। इमाम हुसेन के शहीद होने पर शोक के आँसू बहाना मुसलमानों में, विशेषकर शिया लोगों में, बहुत पुरानी परिपाटी है। ईरान में सदियों पहिले ऐसे काव्य बने। भारत (उर्दू) में अनीस मर्सिया के सर्वश्रेष्ठ उस्ताद माने गये हैं। दक्खिन के गोलकुंडा, बीजापुर दोनों राजवंश शिया थे। इसलिए ताज़ियादारी का वहाँ बहुत रवाज था। मर्सिया पढ़ना ताज़ियादारी का एक आवश्यक अंग था। हाशिम अली ने जीवन भर मर्सिया लिखे। इसके २३८ मर्सियों का संग्रह 'दीवान हुसेनी' के नाम से मिला है। भीतरी साक्षियों से मालूम होता है, कि हाशिम अली १७३५ ई० (११४९ हि०) और १७५५ ई० (११६९ हि०) में मौजूद था और इस प्रकार दूलह, गिरिधर कविराय का समकालीन था।

हाशिम अली की जीवनी के बारे में कोई बात मालूम नहीं—उसके निम्नांकित पद्यों से मालूम होता है, कि जीवन के कड़वे तजुर्बों से उसे काफी पाला पड़ा था*--

---

१. कंठांचल, २. चाहा, ३. फेंकने, (पंजाबी), ४. जबतक, ५. उठा, ६. पापियों, धिक्कृतों, ७. पद, ८. तलवार, ९. सुसमाचार, १०. आततायियों, ११. कुत्ते, १२. पाने (पंजाबी), डालने।

*उ.श., पृष्ठ १६६।

हाशिम अली ज़माना में मेह्रो-वफ़ा[1] यहीं। दिल हाय[2] पुर-नफ़ाक़[3] में सिदक़ो-सफ़ा[4] नहीं ॥
हर्गिज[5] नहीं मुरौवत व शर्म व हया[6] नहिं। इस दर्द की दवा कुँ बगैरज[7] खुदा नहिं॥
फरियाद[8] या मुहम्मद व या मुर्तजा अली।
जिन्दगी दुनियाको है हाशिम अली ख्वाब-ओ खियाल[9]।
जा रह्या सोयाँ वो चूका जागना हैगा कमाल[10] ॥
हे लहद[11] की नींद भारी आज तूँ उसकूँ सम्हल।
ता जगावें सुबहे-महशर[12] तुजको आसाँनीद सों ॥

कवि की अभिलाषाएँ*—

या हुसेन, ऐ खामस[13] आले अबा। अर्ज[14] हैंगे पाँच मतलब[15] ऐ शहा ॥
अव्वल है हा आरजू दिलमें मुदाम[16]। लुत्फ[17] सों अपनी जियारत[18] कूँ बुला ॥
दूसरा जब तई[19] हयाते इस्तआर[20]। रख मुझे बे मिन्नते[21] खल्के-खुदा[22] ॥
तीसरा होना कबूली[23] वरगहत[24]। यो सखुन[25] लिखना मेरी तेरी सना[26] ॥
चारमीं यह हाजिरां[27] वह ज़ाकिरां[28]। तुमसो पावें अपने दिलकी मुद्दआ[29] ॥
है तुजे मन्सब[30] शफाअत का नसीब[31]। पांचवां मुजकूँ कयामत में छुड़ा ॥

और भी†—

हश्र[32] के दीवान[33] से जब नूरचश्मे-मुस्तफ़ा[34]।
रौज़ये-रिज्वाँ[35] कूँ भेजेंगे मुहिब्बाँ[36] कु छुड़ा ॥
यादकर हाशिम अली तुझकूँ कहीं रोजे-जज़ा[37]।
वह हमारा कमतरी[38] मद्दाह[39] शायर काँ गया ॥

कवि हरसाल मर्सिया लिखता था और भावावेश के साथ‡—

तुझकूँ हाशिम अली हुसेन सरूर[40]। हर बरस मर्सिया लिखाते हैं ॥४९॥
लिखूँ कहाँ तलक में बयाने-सितम[41]। मुजे हर बरस लेके तीरे-क़लम[42] ॥१६३॥
कहाँ तक मैं लिखूँ इस गम की बाताँ। कि दिलके जोशसों पुर-खाँ[43] है आँखाँ ॥१३७॥
आज हाशिम अली लिखा ग़मसों। भरके अंझू[44] लोहू सों सारे नयन ॥

---

१. प्रेम, सत्यनिष्ठा, २. मनों (बहुवचन), ३. द्वेषपूर्ण, ४. सत्य, शुद्धता, ५. कदापि, ६. लज्जा, ७. विना, ८. पुकार, ९. स्वप्न और कल्पना, १०. निपुणता, ११. कब्र, १२. प्रलय की सुबह।

*उ. श., पृष्ठ १६४। १३. पंचम, १४. निवेदन, १५. अभिप्रेत, १६. सदा, १७. कृपा, १८. दर्शन, १९. लिए, २०. प्रकट, २१. प्रार्थना, २२. ईश्वर-पूजा, २३. स्वीकार, २४. तेरे सम्मुख, २५. वाणी, २६. प्रशंसा, २७. उपस्थित, २८. जपी, २९. उद्देश्य, ३०. पदवी, ३१. प्राप्त।

†उ. श., पृष्ठ १६५-६६। ३२. प्रलय, ३३. न्यायालय, कार्यालय, ३४. मुहम्मद की नेत्र-ज्योति, ३५. स्वर्गोद्यान, ३६. मित्रों, ३७. न्याय-दिन, प्रलय-दिन, ३८. अधम, ३९. प्रशंसक।

‡वही, पृष्ठ १६५-६६। ४०. हर्ष, ४१. अत्याचारी की कथा, ४२. लेखनी के बाण। ३४. रुधिराक्त, ४४. आंसू।

प्रोफेसर ज़ोर ने हाशिम अली के मर्सिया के बारे में लिखा है*--

"हाशिम अली ने केवल वेदी पर बैठकर पढ़ने ही के लिए मर्सिये नहीं लिखे, बल्कि उसे मुहर्रम मास के साधारण रीति-रिवाज का भी ख़याल रखना पड़ा। दर्शन, चालीसवाँ के अतिरिक्त . . . ताज़िया ले जाते समय रास्ते में पढ़ते हुए जाने के लिए भी उसने पृथक् मर्सिये लिखे। . . . हाशिम अली एक अच्छा मर्सियागो (शोकांजलि-रचयिता) था। यद्यपि मिर्ज़ा, गुलामी और कादिर के कुछ मर्सियों के सामने दीवान-हुसेनी में कोई मर्सिया मौजूद नहीं है, तथापि हाशिम अली की सिद्धहस्तता और उच्चकोटि के शायर होने में सन्देह नहीं किया जा सकता और उसके कथनानुसार--

शेरे-हाशिम अली हुये मशहूर। नें है दीवानकी किताब हनोज[१]॥

कोई आश्चर्य नहीं, अगर वह दीवान हुसेनी के संगृहीत होने से पहिले ही सुप्रसिद्ध हो चुका हो।

२. कविता के नमूने

(१) कासिम की वीरगति—

(क) हसन के पुत्र कासिम की बीबी सकीना से अभी-अभी शादी हुई थी। मृत्यु के मुख में जाते पति के साथ सकीना का वार्त्तालाप बहुत ही करुणापूर्ण है†--

जलवा[२] से उठके रनकूं चला तब कही दुल्हन। दामन[३] पकड़ कर लाजसों अँझुआं[४] भरे नयन॥
"कैसी यो कदखुदाई[५] वो कैसी है यो बरात। आता फ़िराक[६] तुममों यह जलवा की आज रात॥
धरकूं न ले गये हो न बोले हो हमसों बात। देखा नहीं जमाल[७] कूं भरके नयन नयन मेरा॥
इस कर्बलाके बनमें अकेली मैं क्यों रहूं। तुम बाज[८] में जहाँ में फिर उमेद क्या धरूं॥
जदे[९] के मदीना क्यों कि[१०] मैं इस ठार से फिरूं। तुज अपने सात लेके दिखाओ वतन मेरा॥
जाते हो छोड़ रनकी तरफ मुझकूं तुम रुला। नै शर्मका हनोज यह सरसों[११] घूंघट खुला॥
करते नहीं मुहब्बत व जाते मया[१२] भुला। इस जिन्दगीसों आज भला है मरन मेरा॥
शोला[१३] लगा है दिलमने इस गमका क्या करूं। मुजकूं रवा[१४] हुआ है अगर जहर खा मरूं॥
दूरी[१५] में हाय तेरी मैं दिन-रैन क्यों भरूँ[१६]। फुर्कत[१७] की आगसेती जलेगा बदन मेरा॥"
कासिम खड़ा था रोते नैंन सों दुल्हनके सात। गमनाक[१८] अपना देखके दामन दुल्हनके हात॥
तब आहे-दर्दनाक[१९] सों बोला दुल्हनके सात। "हुँ बोस्ताने-राहत[२०] वो सर्वे-चमन[२१] मेरा॥
मजकूं नहीं है तेरी जुदाई[२२] का इख्तियार[२३]। तेरे फ़िराक सात में जाता हुँ अश्कबार[२४]॥

---

*उ. श., पृष्ठ १६५। १. आज भी।

†वही। पृष्ठ २९६। २. सोहागरात, ३. अंचल ४. आँसू, ५. विवाह, ६. वियोग, ७. सौन्दर्य, ८. तेरे विना, ९. नाना, १०. कैसे, ११. सिर से, १२. माया, स्नेह, १३. ज्वाला, १४. विहित, उचित, १५. वियोग, दूरस्थिति, १६. कैसे काटूं, १७. वियोग, १८. दुःखपूर्ण, १९. पीडा-पूर्ण हाय-हाय, २०. सुखोद्यान, २१. उद्यान के सरोवृक्ष, २२. वियोग, २३. शक्ति, २४. प्रकट।

में क्या करूँ सलाह[1] नहीं हुक्म-कर्दगार[2]। हक़ने[3] किया है रनमें मुकर्रर[4] रहन मेरा
है दाग़[5] दिलमें तेरी जुदाई का क्या करूँ। नै है उमेद रनसे फिर आकर तुझे मिलूँ॥
जो कुछ हुआ है मुकदरों[6] में रास्ती[7] कहूँ। वादा[8] हुआ है हश्र[9] में तुमसे मिलन मेरा॥

(ख) कासिम और सकीना की इसी विदाई का वर्णन गुलामी की लेखनी से भी सुनिए*—

दोहरा ग़म आके घेरेगा शाहे-जमनकूँ[10] आज। जल्वा[11]में क्यों बिठाये हैं इब्नेहसुन[12]कूँ आज॥
घूँघट नें सोग आन पड़ेगा दूल्हनकूँ आज। "कासिम खुदाके वास्ते मत जा तूँ रनकूँ आज॥
गल्ताँ[13]बखूँ[14]हुये है सब अहवाब-ओ-अक़रबा[15]। बाँधे कमर जे-वह्ले[16] शहादत[17] वह मुक्तदा[18]॥
कासिमने इज्ने-हर्ब[19] तलब[20] करके यों कहा। "अमूँ[21] न जाओ रन को रजा[22]दो हमनकूँ आज॥
रहलत[23] के दिन पिदर[24] यो वसीयत किया हजे। तुजपर निसार[25] होने नसीहत किया मुजे॥
ताकीद[26] करके कामकी रुख़सत[27] किया मुजे।" यह सुन अँझूँ[28]से शह[29]ने किये पुर-नयनकूँ आज॥
बोले अगर तुजे यों वसीयत किया पिदर। हकमें तेरे मुजे भी जो कै[30] वह नामवर॥
लाऊँ वजा[31] मैं हुक्मे-बिरादर[32] तूँ सब्र[33] कर। यो बात कह तलब किये[34]सर्वर[35]बहनकूं आज॥
ख़ेमा[36] में अपने लाया वह दुल्हनकूँ नौजवाँ। हल मनमुबारिज[37]अहले-सितम[38] बोले नागहाँ॥
दस्ते अरूस[39] छोड़के कासिम हुये रवाँ[40]। बोले "खुदाकूँ सौंप चला हूँ तुमनकूँ आज॥
दामन[41] पकड़ अरूस[42] लगी रोने ग़म सेती। कहती मया[43] अभी से उठाते हो हम सेती॥
बोले कि "शोखी[44]करते हैं आदा[45]सितम[46]सेती। जाकर हटाऊँ फिर्कये-दोजख़-वतन[47]कूँ आज"॥
कहने लगी कि "होते हो या इब्ने-अम[48] जुदा। बेकस अकेली छोड़ मुझे दुख में मुब्तला[49]॥
तुमकूँ करें शहीद मुबादा[50] यह इश्तिया। बेवा हो तरसती रहूँ फिर मैं मिलनकूँ आज"॥
नौशा[51] कहै कि जीते फिरेंगे नहीं हमन। दुनिया के बीच फिरके मिलेंगे नहीं अपन॥
महशर[52] उपर है वादये-दीदार[53] जाने-मन[54]। होना है पारा-पारा हमारे बदनकूँ आज॥
पूछी कि रोजे-हश्रमें पाऊँ तुम्हें कहाँ। दिल भरके मुख तुमारा नहीं देखा दरजहाँ[55]॥
क्योंकर पिछानूँ मुझकूँ बता जाओ कुछ निशाँ। टुक बैठो ना कि सुन लो यह मीठे बचनकूँ आज॥

---

१. मर्जी, २. कर्त्ता (भगवान्) की आज्ञा, ३. सत्य (भगवान्) ने, ४. निश्चित, ५. जलन, ६. भाग्य, ७. सच, ८. वचन, ९. प्रलय-दिन।

* उ. श., पृष्ठ २९७।

१०. युग के राजा, ११. सोहागरात, १२. हसन-पुत्र कासिम, १३. छटपटाना, लवफद, १४. रुधिर में, १५. सगे-सम्बन्धी, १६-१७. वीरगति-प्राप्ति के लिए, १८. नायक, इमाम, १९. युद्ध-कष्ट, २०. इच्छा, २१. चचा, २२. अनुमति, २३. कूच, मृत्यु, २४. पिता (हसन), २५. निछावर, २६. जोर देकर कहना, २७. विदा, २८. आँसू, २९. राजा (हुसेन), ३०. कहा, ३१. पूरा, ३२. भाई (हसन) की आज्ञा, ३३. धीरज, ३४. बुलाया, ३५. सरदार, हुसेन, ३६. तम्बू ३७. लड़ाका, ३८. जालिम, ३९. दुलहन का हाथ, ४०. प्रस्थित, ४१. अंचल, ४२. दुलहन, ४३. स्नेह, ४४. ढिठाई, ४५. शत्रुगण, ४६. जुल्म, ४७. नरकवाले पन्थ, ४८. चचा का पुत्र, ४९. फँसे, ५०. शायद, ५१. दुल्हा, ५२. प्रलय-दिन, ५३. दर्शन-वचक, ५४. मेरे प्राण, ५५. दुनिया में।

यारां क्यों यह ग़मका निपट बेशुमार है । बेहतर जे-तूल किस्सा[1] ग़मे - इख्तियार[2] है ।।
लानत[3] वो जालिमांकु हजारां हज़ार है । जो दुख दिये हैं इश्रते[4] शाहेजमन[5] कूँ आज ।।
है शश जहत[6] में ग़म अहे - बेकस[7] का बरमला[8] । रोते हैं उन्सो -जिन मलायक दरी अज़ा[9] ।।
हर्गिज न रख तूँ खौफ[10] ग़ुलामी जे-हासिदाँ[11] । आले-अबाम[12] ते तू मदद माँग हर जमा ।।
दिखलावें कर्बला तुजे आखिर दो सर्वरां[13] । जो आरजू[14] है कह तूँ हुसेन-ओ-हसनसों आज ।।

(२) असगर की वीरगति*—

कर्बला की निर्मम हत्याओं में हुसेन के छोटे बच्चे असगर की हत्या भी है । बनी-उमेया के लिए अली और फातिमा की औलाद सबसे खतरे की चीज थी, इसलिए वह उनका नामो-निशान नहीं छोड़ना चाहते थे । हुसेन की लड़की सकीना (कासिम की बीबी) विधवा हुई, हुसेन का बेटा असगर यजीद के जल्लादों के हाथ मारा गया । हुसेन की बीबी शह्रबानू—जो साथ ही ईरान के अन्तिम सासानी शाह यज्दगिर्द तृतीय की लड़की थी—असगर की मृत्यु पर विलाप करती है—

(क) बाले असगर केतें बुलाती रही । सुना यह पालना झुलाती रही ।।
झूला तेरा पड़ाँ रहा खाली । डोरी मूज हातमें हिलाती रही ।।
हाय क्यों रूठकर गया मुजसों । मेरे प्यारे के तैं मनाती रही ।।
भूल क्यों तूँ चला मया[15] मेरी । 'आ रे असगर' तुजे बुलाती रही ।।
मैं सुलाती थी जब लगा छाती । आँचल अपना तुजे उढ़ाती रही ।।
रात - दिन मैं कभूँ न दी रोने । करके बातों तुजे हँसाती रही ।।
था वरसगाँठ का तुजे अरमान[16] । लाल जामाँ तेरा सिलाती रही ।।
कासिम आया है जब मियाने[17] कूँ । मैं तमाशा तुझे दिखाती रही ।।
ल्हो मरा क्यों तेरा चँदरमुख है । जिसकूँ हाथों से मैं बुलाती रही ।।
दूध पीता मेरा गया बाले । ग़मसों छाती मेरी भर आती रही ।।
तुजकूँ भाती न थी अंधारी रात । तेरी खातिर दिवा जलाती रही ।।
करके तावीज[18] दिल ऊपर रखती । बदनजर[19] से तुजे छिपाती रही ।।
क्यों न आखिर[20] हुई उमर मेरी । तुज बिना हैफ[21] मुज हयाती[22] रही ।।
आज पुरखूँ[23] कफ़न तेरा असग़र । आज सूखा दहन[24] तेरा असग़र ।।
लाल है गुलबदन[25] तेरा असग़र । हैफ़ यो बालापन तेरा असग़र ।।
क्यों है जुल्फ़ा[26] के बाल तारों-तार[27] । क्यों गले से लोहू के जारी धार ।।

---

१. लंबी कथा से, २. संक्षिप्त दुःख, ३. धिक्कार, ४. आनन्द, ५. युग के राजा, ६. छहों दिशाएँ, ७. बेबस राजा, ८. प्रकट, ९. इस दुःख में आदमी जिन और फरिश्ते, १०. भय, ११. ईर्ष्यालुओं, १२. फातिमा-अली-हसन-हुसेन, १३. सरदार, १४. अभिलाषा।

*उ. ह., पृष्ठ २९४।

१५. स्नेह, १६. अभिलाषा, १७. ब्याहने, १८. जंतर, १९. कुदृष्टि, २०. समाप्त, २१. शोक, २२. जीवन, २३. रुधिराक्त, २४. मुँह, २५. पुष्पतनु, गुलाबी शरीरवाला, २६. अलकें, २७. बिखरे।

तुजकूँ सोते कभू न लगती वार। हैफ़ यो बालपन तेरा असग़र॥
उठ गलेका लोहु धुलाऊँ में। नींद आती तुजे सुलाऊँ में॥
चल तेरा पालना झुलाऊँ में। हैफ़०॥
क्यों जुदा मुज सेती किये तुजकूँ। फिर मैं गोदी लिये फिरूँ किसकूँ॥
क्यों न लागी बला तेरी मुजकूँ। हैफ़०॥
अल्ला - अल्ला किया तुजे पाला। मनमें यों था करूँगी विस्मिल्ला॥
हाय तेरा गया जिया वाला। हैफ़०॥
किसका अब पालना झुलाऊँगी। लोली[1] देके किसे सुलाऊँगी॥
किसकूँ छाती सेती लगाऊँगी। हैफ़०॥

(ख) कवि ग़ुलामी ने भी शह्रबानू के विलाप पर लेखनी चलाई है*—

जुल्म किया है कठिन है-है फ़लक[2] क्या किया। शहसों छुड़ाया वतन है-है फ़लक क्या किया॥
अब मैं झुलाऊँ किसे छाती लगाऊँ किसे। दूध पिलाऊँ किसे है-है०॥
निकली मैं जब अज़-वतन[3] कैसी हुई थी सगुन। ग़ुम हुये सारे रतन है-है०॥
लोहू में अकबर[4] मेरा जख़मी-बदन है पड़ा। तन हुआ सिरसों जुदा है-है०॥
हात मेरा ज़ार[5] है जीवना दुस्वार[6] है। आबदीन बीमार है, है-है०॥
आई तो आई कहाँ बेटी ब्याही कहाँ। मेरा जँवाई[7] कहाँ है-है०॥
मेरी सकीना निढाल प्यास सों है खस्ता-हाल[8]। क्या करूँ ऐ जुल्जलाल[9] है-है०॥
शह मेरा मारा पड़ा कोइ नैं वाली मेरा। बेवा हुई ऐ ख़ुदा फ़लक क्या किया॥

ग़ुलामी ने और भी लिखा है†—

बानू पे कर्बलामें कैसा यह दुख पड़ा है। गोदों मैं प्यारा असग़र बिन दूद मर चला है॥
होर राँड़ बैठी बेटी दामाद[10] मर चुका है। सिरका चतर[11] भी ढलना कोइ दमको आ रहा है॥
समझाना उस बची[12] का इस वक्त क्या मुसीबत। बाबा[13] बिना तड़पता और तश्नगी[14] की शद्दत[15]।
"ऐ बेटी तेरे बाबा खाने गये ज़ियाफ़त"। मासूम[16] का यह सुनकर दहचंद[17] जी जला है॥
कहने लगी कि "अम्मा, है-है यह क्या गज़ब है। मरती हुँ भूख सेती प्यासोंसे जाँबलब है॥
ज्याफ़त[18] में गये बाबा मुज बिन सोक्या सबबहै। बाबाने मुजपे शायद शफ़क़त कूँ कम किये है॥
मुजसें कभू न करते बाबा मेरी जुदाई। असग़र कूँ ले गये हैं मुझसे मया उठाई॥
बावर[19] न हाइ जो तुमकूँ बतलाउँ काँ है भाई। असग़रका पालना भी खाली देखा पड़ा है॥
रो-रो हरम मियाँसें उस तिल्फ[20] कूँ मनाते। हर यकले भरके उसकूँ छाती सेतीं लगाते॥

---

१. लोरी। *उ. श., पृष्ठ २९९। २. आकाश, भाग्य, ३. घर से, ४. हुसेन का बड़ा पुत्र, ५. बुरा, ६. कठिन, ७. जैनुल आबदीन हुसेन का लड़का, और फातिमा का एक मात्र नामलेवा, ८. अति पीड़ित, ९. सुन्दर।

†वही, पृष्ठ २९९–३००। १०. जामाता, ११. छत्र, १२. बच्ची, १३. पिता, १४. प्यास, १५. कड़ी, १६. बेगुनाह, १७. दसगुना, १८ बड़ी दावत, १९. विश्वास, २०. शिशु।

कहते थे "तेरे बाबा अब कोइ घड़ीमें आते । वल्लाह[1] साथ शहके असगर नहीं गया है ॥
समजा कते हैं हारे पन[2] करते नैं वह बाबर । कहते "जो ले गये नैं दिस्ता नहीं क्यों असगर ॥
लाचार हो कहे तब अहले-हरम[3] ने यकसर । असग़रकी लाश लाकर उसको दिखा दिया है ॥
भाई को देख रोते दौड़े हैं भर[4]में लेने । हर रोज़ की तरह से लागे हैं बोसा[5] देने ॥
कहते "क्यों आज भाई, नैं उठता दूद पीने । क्यों उसके पैरहन[6] कूँ ताजा लहु लगा है" ॥
यह मर्सिया लिखा जब ऐ दोजहाँके मौला[7] । सीने सेती धड़ककर गमका उठा है गोला ॥
सब ज़ाकिराँ[8] में कमतर[9] है खस्तादिल[10] गुलामी । दो दाद[11] जल्द हरचंद[12] है आसियाँ[13] में नामी ।

(ग) हाशिम अली ने इसी विषय पर कहा है*—

"जाऊँ किधर मैं क्या करूँ यह गोद खाली ले फिरूँ ।
फिर 'अस्गर अस्गर' मै कहुँ किसका झुलाऊँ पालना ॥
यह देख मेरा हाल तुँ तोड़ी है सिरके बाल तूँ ।
मैं दिलकी हालत क्या कहुँ किसका झुलाऊँ पालना ॥
थे खेलने के दिन तेरे क्या उम्र क्या थी सिन[14] तेरी ।
नैं चैन मुजकँ बिन तेरे किसका झुलाऊँ पालना ॥
यह बहन तेरी गमगुसार[15] बैठी है रोते ज़ारज़ार ।
तूँ उठ सकीना कर पुकार किस० ॥

(३) कर्बला—

इस्लाम के पैगम्बर की सन्तानों पर यह जुल्म मुसल्मान कर्बला में ढा रहे थे, उसका वर्णन हाशिम अली के मुँह से सुनें†—

फिर घटा हुइ ग़मके बादल की गगनपर आशकार[16] । कर्बलामें मेघ बरसे लोहुके धारा बेशुमार ॥
तेग चमके सिर उपर बिजली के मानिन[17] बारबार । क्या समाँ है-ह पड़ा सारा जहाँ म्याने-अधार[18] ॥
नाराहा[19] कड़के गरजकर आज नग़मे-सूर[20] हैं । चौतरफ़ घनघोर है लहुकी बरसती है फुहार ॥
नै निकलता है सुरज सोये नहीं सुखके भवन । खून दिलसों जहाँ तलक देखे टपकते है नयन ॥
तर हुये है अश्कबारी[21] सों लर्जते हैं बदन । आह का हर दम हुआ हैगा दिलोंसेती पुकार ॥

(४) फातिमा-विलाप—

पैगम्बर की प्यारी बेटी तथा हसन-सेन की माँ फातिमा का पुत्र-शोक पर विलाप††—

आया मुहर्रम[22] उड़ता धुलारा । होता है आलम इस ग़ममें सारा ॥
खैरुन्निसा[23] ने तब यों पुकारा । मेरा हुसेना नाहक्क़[24] मारा ॥

---

१. भगवान्, २. लेकिन, ३. अन्तःपुरिकाएँ, ४. गोद में, ५. चुम्बन, ६. परिधान, ७. स्वामी, ८. जपी, ९. छोटा, १०. अकिंचन, दिल टूटा, ११. शाबाशी, १२. चाहे कितना ही, १३. पापियों ।

*यु. व. म., पृष्ठ ६४७ । १४. आयु, १५. हमदर्द । †उ. श., पृष्ठ २९६ । १६. प्रकट, १७. भाँति, १८. अंधकार में, १९. शक, २०. प्रलय के नरसिंह की आवाज, २१. अश्रुपूर्ण ।

††उ. श., पृष्ठ २९६ । २२. मुहर्रम का महीना, जिसमें इमाम हुसेन मारे गये । २३. नारीश्रेष्ठ, २४ अन्यायपूर्वक ।

है - है हुसेना तेरी जवानी । था कुत्ब[1] तारा तेरी पेशानी ॥
दूजा नहीं था कोई जगमें सानीं । मेरा हुसेना० ॥
तब तश्नगीसों तूँ तिलमिलाया । सातो समुन्दर तब खलबलाया ॥
नें ज़ालिमाँ ने पानी पिलाया । मेरा हुसेना० ॥
तूँ अर्श[2] का था रोशन सितारा । तेरा शरफ़[3] था सब आशकारा[4] ॥
है आज तेरा सिर तनसों न्यारा । मेरा हुसेना० ॥

(५) हुसेन के परिवार की दुर्गति—

हुसेन और उनके साथियों के हत्याकांड के बाद आततायियों ने उनके परिवार के साथ जो जुल्म किया, उसे भी सुनिए*—

ले गये, आज किधर ताजे-शहीदाँ[5] कहाँ । रनमें तन सों जुदा कर सरे-सुल्ताँ[6] कहाँ ॥
काँ किये जुल्फे - मुअंबर[7] कूँ परेशान कहाँ । नेज़ा - ऊपर किवा ज़ालिमने नुमायाँ[8] कहाँ ॥
ज्यों शफ़क़[9] बीच हवेदा[10] देखो खुर्शीद[11] मुदाम्[12] । लहूभरा नेज़ा[13]-उपर था सरेपुरनूरे-इमाम्[14] ॥
सरखोलेजाते यतीमां केते ज़ारी[15] सों तमाम । यह क़यामत[16] है सर-ऊपर वह शफ़ीआन[17] कहाँ ॥
शामियां शामकँ[18] जाते थे लिये अहले-हरम[19] । सर-उपर रहमें करते थे सभी ज़ोरों-सितम[20] ॥
हाय कैसे थे मुसलमान न मुहम्मदसों शरम । कुफ़्र[21] के काम किया जो, उसे ईमान कहाँ ॥
जलती धूपाँ में यतीमाँकूँ दिये रजे-सफ़र । न खोरिश है न पोसिश न कोई लेता खबर ॥
राह-मंज़िल[22] में न था तोशा मगर खूने-जिगर[23] । शहक़ाम[24] उनका रफ़ीक़[25] हो रहा सामान यहाँ ॥
एक दिन शाम[26] तलक देखी न बस्ती का निशाँ । वह यजीदाँ[27] रहे हैराँ कि हुई रात अयाँ[28] ॥
सब हरम[29] रोते कहे "हाय नहीं हमकूँ मकाँ । कां रहा जदां[30] का मदीना यो बयाबान[31] कहाँ ॥
चौतरफ देख जंगल में कि मिल जाय पनाह[32] । जाँरहें-अहले-हरम[33] और सरे-सुस्तां[34] केसिपह[35] ॥
केते सायत[36] वह फिरे हाल हुआ सबका तबाह । पाये एक किलये-यहुदी[37] का मुसलमान कहां ॥
तब खड़े रहके पुकारे वहाँ सर्दारे - हिसार[38] । "है यजीदी सभी लश्कर यों खड़ा खोल किवाड़ ॥
यक रात हम कूँ तेरे किलामेंलाके उतार । सुब्रह में लेके चलेंगे तेरा इहसान[39] कहाँ" ॥

---

१. ध्रुव, २. स्वर्ग, ३. कृपा, ४. प्रकट ।

*यु. द. म., पृष्ठ ६४९ ।

५. वीरों का मुकुट, ६. राजाओं का सरदार, ७. अंबर-गंधी अलकें, ८. प्रकट, ९. आकाश की लाली, १०. प्रकट, ११. सूर्य, १२. सदा, १३. भाला, १४. इमाम का प्रकाश, १५. रोदन, १६. प्रलय, १७. पाप क्षमा करनेवाला, १८. शाम (सिरिया) के निवासी, १९. अन्तःपुरिकाएँ, २०. जोर-जुल्म, २१. अधर्म, २२. रास्ते के पड़ाव, २३. हृदय-रक्त, २४. दुःख, २५. साथी, २६. सिरिया, २७. हुसेन के शत्रु म्वाविया-पुत्र यजीद के आदमी, २८. प्रकट, २९. अन्तःपुरिकाएँ, ३०. नाना, ३१. मरुकान्तार, ३२. शरण, ३३. अन्तःपुर की स्त्रियाँ, ३४. सुल्तान (हुसेन) का मुंड, ३५. सेना, ३६. घड़ी, ३७. यहूदी का दुर्ग, ३८. दुर्गपाल, ३९. उपकार ।

समकालीन कवि

हासिम अली ने अपने समकालीन मर्सियाभाषी शायरों का स्मरण करते कहा है*—

हजार हैफ़[१] नै शायराने-दखिन[२]। सो रूही ब मिर्जा ओ क़ादिर नहीं ।।

इनमें कुछ के मर्सिये हैं —

(क) रूही†—

आज ग़मनाक[३] है चमनके गुल[४] । बल्कि दिल चाक है समन के[५] गुल ।।
ग़मज़दा सीनये-दाग़[६] हैराँ हैं । नर्गिस-ओ-लाला यास्मन[७] के गुल ।।
यो न लाले शिफ़क[८] के दिसते हैं । लहूमें डूबे हैं सब गगन के गुल ।।
जब सुने शह[९] की बात मज्लिसमें । जल बुझे शमा[१०] अंजुमन[११] के गुल ।।
नक्शे -पा[१२] देख दिल हबस रखता । सिरपे रखनेकूँ तुज चरन के गुल ।।
खुश लगे तुज-तबा[१३] से ऐ रूही । दिलके बागाँमने सखुन[१४] के गुल ।।

(ख) मिर्जा (१७३७ ई०)††—

स्प्रिंगर के अनुसार मिर्जा अबुल्कासिम सुल्तान अबुल-हसन कुतुब (तानाशाह) का दरबारी था। जब उसके स्वामी कैद कर लिये गये, तब वह अब्दुल्लागंज के करीब हैदराबाद में फ़कीरी की जिन्दगी बसर करने लगा। उसकी कुछ शोकांजलियाँ—

शह[१५] पर यों जिस दिन धिरया मातम[१६] रह्या जगमें यों सोज[१७] ।।
तब मुहर्रम[१८] की दहम[१९] पारीख था होर जुमा[२०] रोज ।।
शहकने[२१] चालीस प्यारे तीस होर दो थे सवार ।।
जालिमाँ[२२] के दलमने तब थे सवाराँ बीस हजार ।।

० ० ० ०

(६) हुसेन की वीरगति†††—

जख़म[२३] तनऊपर जब लगे बेहिसाब । परे सर्वर[२४] उस रनमें ज्यो आफ़ताब[२५] ।।
उठ्या शोर हर शै[२६] सों उस वक्तपर । गया हांक यो अर्श[२७] के तख्त[२८] पर ।।
धुआँ आहका उस गगन लग गया । सुरज गमसों शोला[२९] हो सब जल गया ।।

---

*उ. श., पृष्ठ १६१। १. शोक, २. दक्खिन के कवि।

† उ. श., पृष्ठ ३१४।

३. शोकपूर्ण, ४. उद्यान के फूल, ५. चमेली, ६. दिल के घाव, ७. चमेली, ८. रक्तिमा, ९. हुसेन, १०. दीपक, ११. सभा, १२. पद-चिह्न, १३. तेरे मन, १४. वाणी।

††यु. द. म., पृष्ठ १८९।

१५. हुसेन, १६. शोक, १७. जलन, संताप, १८. महीना, १९. दसवीं, २०. शुक्र, २१. हुसेन के पास, २२. अत्याचारी।

†††वही, पृष्ठ १९०।

२३. घाव, २४. सरदार, २५. सूर्य, २६. प्रत्येक वस्तु, २७. स्वर्ग, २८. सिंहासन, २९. ज्वाला।

न कुलसून, जेनबकूँ ताकत रह्या । न कुछ शह्रबानू के राहत[1] रह्या ॥
जेते अहले - मासूम[2] हो रहे यतीम[3] । खड्या[4] सब ऊपर या जफ़ा[5] होर अज़ीम[6] ॥

० ० ० ०

बाद - ज़[7] उमर साद सराँ[8] रनते लिया है । सब सर वो सवाराँके हवाले[9] सो किया है ॥
तब शामकी जानिब ले चले अहले-हरम[10] कूँ । बदबख़्त[11] यज़ीद पासकने ज़ुल्मों-वफा सों ॥
यों सब वो सिराँ हो हरम सात लिया है । मंजिल[12] ओ-मुकामाँ केते उस रहमें किया है ॥

(ग) क़ादिर (१७३६ ई०)*—

हुआ शोहरत[13] मुहर्रममें यो ग़म[14] है शाहअली[15] का ।
कि है फर्जन्द[16] प्यारा वह दोनों आलम[17] के वाली[18] का ॥
छुपा है दीन[19] का चंदर कि जिसके सोगसों जगपर ।
फ़लक[20] हर मुल्क में ताने शम्याना[21] रात काली का ॥
सितारे सब यह कुदस्याँ[22] ने मिलाकर गगन ऊपर ।
हुसेनके उर्स[23] कूँ बांधे मँडप मोतियाँकी जाली का ॥
नहीं यो अश्के[24]-शब्नम[25] सों खुले हैं आहके गुल हो ।
देखो ग़मके चमन म्याने[26] लताफत[27] ग़मके मानी[28] का ॥
क़यामत[29] कांपना क़ादिर तजुल्जुल[30] अब करे ज़ाहिर ।
मुजे तक़वा[31] तब आखिर है हुसेन सर्वर से वाली[32] का ॥

० ० ० ०

मुहर्रम यो ग़म है कहल[33] हाय-हाय । हुआ शोर मातम[34] सकल हाय-हाय ॥
शफ़क़[35] में रँग्या सूरका पैरहन[36] । भिगाकर गगनमें अँचल हाय-हाय ॥
हुसेनाकूँ कहाँ दे पोसलाय नबी । करें प्यार सबते अवल हाय-हाय ॥
हुसेनाकी खिदमतकूँ सुरज खवास[37] । किरन का करे मोरछल हाय-हाय ॥
उननपर जुलुमके सितारे गिरे । किमिर्रीख़[38] जेहरा[39] ज़ौहल[40] हाय-हाय ॥
रोवें फ़ातिमा होर ख़दीजा नबी । यो तक़दीर उनकी अजल[41] हाय-हाय ॥
नबीके घरांका दिया गुल हुआ । खुदाया[42] तूँ कर यो अदल[43] हाय-हाय ॥

---

१. सुख, २. निरपराध, ३. अनाथ, ४. पड़ा, ५. अत्याचार, ६. महान्, ७. इसके बाद, ८. शिरों, ९. सपुर्द, १०. अन्तःपुर की, ११. अत्याचार, १२. पड़ाव ।

*उ. श., पृष्ठ ३१६ । १३. प्रसिद्ध, १४. शोक, १५. महाराजा, १६. संतान, १७. शोक, १८. स्वामी, १९. धर्म, २०. आकाश, भाग्य, २१. तम्बू, २२. फरिश्ते, २३. उत्सव, २४. आँसू, २५. ओस, २६. उद्यान में, २७. लालित्य, २८. अर्थ, २९. प्रलय-दिन, ३०. कम्पन, ३१. धीरज, ३२. स्वामी, ३३. कठिन, ३४. शोक, ३५. रक्तिमा, ३६. परिधान, ३७. सेवक, ३८. मंगल, ३९. शुक्र, ४०. सनीचर, ४१. मृत्यु, ४२. हे भगवान्, ४३. न्याय ।

कि शह-उपर जुल्म नाहक़[1] बेगुनाह । तो महशर[2] के सफ़[3] में खजल[4] हाय-हाय ।।
सदा गमसों रोता खड़ा कादिरा । दुन्या ख्वाब झूठा सहल[5] हाय-हाय ।।*

§ ३३. क़यासी (१७५१ ई०)

१. कवि

सैयद अब्दुल्ला उपनाम क़यासी अठारहवीं सदी के मध्य का दक्खिनी कवि है। इसका कथा-काव्य 'सौदागर की बीबी' पलासी के अंगरेजी-महाविजय के सात साल पहिले लिखा गया†—

हुये सात सौ बैत चोदा पे सात[6] । मुरत्तम हुआ है यो नकल[7] बात ।।
अथा सन इग्यारा सौ चौसठ साल । ब तारीख ग्यारा ओ माहे शवाल[8] ।।
सैयद अब्दुल्ला करके मेरा है नाँव । तखल्लुस[9] कयासी किकर डाल नाँव ।।

२. कविता

'सौदागर की बीबी' (ज़ौजये-ताजिर) का कथा-संक्षेप है—एक सौदागर था। उसकी बीबी अत्यन्त सुन्दरी थी। सौदागर परदेश गया। बहुत समय तक नहीं लौटा। जीवन-यात्रा चलाना कठिन हुआ। अन्तमें बीबी ने एक मोम का पुतला बनाया और उसके द्वारा जौहरियों को ठगकर अपने प्राणों और सतीत्व की रक्षा की††—

रहती नित इश्रत[10] में ओ मनहरन । मरद जाके गुज़रे[11] सो केते क़रन[12] ।।
मुरत्तब[13] हुई घरकी खर्ची तमाम[14] । हुआ भार[15] का बल्कि कुछ एक दाम[16] ।।
न आया है तब लग भी खाविन्द[17] ओ । सो उस धनमें बेहद फिकरमंद हो ।।
अथी दाई घरमें सो उसकूं बुलाइ । कही "क्या फिकर अब करे बोल दाइ ।।
धनी जाको घरका हुये भौत रोज । न आया है अब लग खबर नै हनोज[18] ।।
न खानेकी बाकी[19] रह्या है यहाँ । करें फिक्र[20] क्या कुछ तरद्दुत[21] बना" ।।
कही दाइ "बीबी, करें क्या इलाज । न कुछ फिक्र चलती है अल्ला के बाज[22] ।।
किसी तौर अब ज़िन्दगी काटना । कहीं पीसना - कूटना - कातना" ।।
कही सुनको उस-बातकूं मोहनी । "अछी बात बोली अरी माजनी ।।
बड़ा खर्च घरका एती जान यो । होवे क्यों मजूरीमें गुज़रान[23] यो ।।

---

१. अन्याय से, २. प्रलय, ३. पाँती, ४. लज्जा, ५. विष। *दकन में उर्दू (नसीरुद्दीन हाशिमी, हैदराबाद, १९३६, पृ० २९५)।

†यु. द. म., पृष्ठ ५१०; ११ शंवाल, ११६४ हिज्री को २ सितंबर १७५१ था। ६. ७२१, ७. लेख, ८. बुध, २ सितम्बर १७५१ ई०, ९. उपनाम।

††उ. श., पृष्ठ २९०–९२। १०. आनन्द, मौज, ११. बीते, १२. युग, १३. समाप्त, १४. सारी, १५. बाहर, १६. कर्ज, १७. पति, १८. अबतक, १९. बचा, २०. चिंता, २१. उपाय, २२. बिना, २३. निर्वाह।

करे फिक्र ऐसी कि दरहाल[1] कुछ । होवे घरका गुजरान हर हाल कुछ"।।
कही दाई "बीबी, मेरी बात सुन । न होता है कुछ अब मेरे हात सुन।।
जो कुछ फिक्र करना सो अब तूँच कर" । एता बोल रही चुपके मूँ मोच[2] कर।।
सुन इस बातकूँ नार उस तिलमने[3] । करी यक अँदेशा[4] अपस दिल मने।।
बजाँ मोम दो तीन पेका मँगाइ । मों उस मोमका एक पुतला बनाइ।।
कि ऐसा बनाई ओ नादिर[5] बचा । जे कोइ देख बोले है आदमी सचा।।
अजब[6] सनअती सो बनाई उसे । कि कपड़े ओ बस्ताँ पिनाई उसे।।
कही "जाँ अहै जौहरीकी दुकान । ऐ दाई लेजा मुजकूँ वाही ठिकान।।"
बचेकुँ लेकर आपने गोद बीच । संवार सिर उपर ऊपर बुर्केकुँ वैं च[7]।।
लेकर दाइ कूँ साथ निकली बहार[8] । चली डोलती ठुमके सों गुलअजार[9]।।
चली पेशखिदमत[10] अँगे होके दाइ । जहाँ जौहरी थे वहाँ लेको आइ।।
सो आ छबि सों दूकानमें बैठ नार । कही जौहरी कुँ "ऐ दूकानदार।।
तेरे पास मोती बड़े मोल के । है कुछ बेबहा[11] कीमती तोलके।।
देखा" जौहरी सो वहीं सुध विसार । तअज्जुब[12] हो दिलमें किया यों विचार।।
अजब नूर बख्शा[13] है इसकूँ खुदा । है किस घरकी बीबी या शहकी दवा।।
ओ बे-उज्र होकर रख्या दर[14] जरूर[15] । केतक वज़ा[16] के लाको मोती हुज़ूर[17]।।
ओ मोती सबोंमें अथे नामदार । रखी मोल उनका चुका तीन हजार।।
पूछा "लाल-हीरे हैं तेरेकने[18] । कहया नै हीरे लाल-मेरेकने"।।
केतक धातके ओ जवाहर ले आय । बहुत बेबहा बेश[19] नादिर[20] ले आय।।
हीरा उनमेंते यक हजार चारका । लिये लाल आठ हज्जार का।।
हुये पैसे तीनों के पन्द्रह हजार । बजाँ जौहर्याँ कूँ कही यों ओ नार।।
"जवाहर में देती हुँ दाई के हात । तुमें तीन आदमियों देउ इसके सँगात।।
जवाहर लेकर घरकुँजाती है दाइ । तुमारे जो पैसे दिलातीहै दाइ।।
कि मैं बैठती हूँ ओ फिर आये लग । तुमारे जो पैसे यहाँ ल्याय लग"।।
कबूले[21] सुन इस वातकूँ जोहर्याँ । अपसके दे साथ तीन आदमियाँ।।
चली दाइ लेकर ओ तीनों के तैं । शहरके गली होर कूच्याँ मैं ँ।।
केतक वक्त लाग शह्र सारा फिराइ । मौत करके माँदे सो यक ठार लाइ।।
बड़ा एक कूचे में भडकल[22] अथा[23] । वो तीनों कुँ उस जाय ऊपर बिठा।।
कही "यो अछो घरमें जाती हूँ मैं । तुमारे ये पैसे ले आती हुँ मैं।।"
बिठा उनकुँ होर आप भडकल के पार । ओ भडकल-अँदर राह थे तीन-चार।।

---

१. तत्काल, २. मीच, मूँद, ३. क्षण में, ४. विचार, ५. अद्भुत, ६. विचित्र, ७. वहाँ ही, ८. बाहर, ९. गुलाबी गालवाली, १०. शोभा-सहित, ११. अनमोल, १२. अद्भुत, १३. प्रदान किया, १४. द्वार, १५. जरूरी, १६. प्रकार, १७. सम्मुख, १८. तेरे पास, १९. बढ़िया, २०. दुर्लभ, २१. स्वीकार, २२. महल, २३. था (हता)।

सो यक बाटते जौक़[1] सों घरको गइ। जवाहर रख आरामसों बैठ रही॥
केतेक बेर लग बैठकर हो हलाक[2]। लगे मारने बाबरे होके बाँग॥
न ओ दाइ है नाँ जवाहर न माल। लगे पीटने[3] सर-उपर खाक[4] डाल॥
तब औरों कूँ पूछे यो किसका है घर"। कहेलोग "सब बाटका है ये दर"॥
कहे "गइ दग़ा दे को हमना ओ राँड। हमें[5] काँसों खाविन्द[6] कूँ देलें वाँड[7]॥"
चलो जाय जल्दी सों दूकान लग। जो बीबी ओ मक्कार की है तलक॥
हो हैबतजदा[8] दाइ की आस छोड़। लगे आने दूकानकूँ अपने दौड़॥
बजाँ[9] इस बज़ा[10] सों हुआ वाँ सबब[11]। बरे[12] याँ हुआ सो सुनो हाल अब॥
सुला नार उस ार बच्चे के तें। कहीं "इस्तजा कर को आती हुँ मैं"॥
बचा सो रह्या है सो पुरनींद[13] हो। न बैठे मखी त्यों उड़ाते रहो॥
एता बोलकर वाँसे ज्यों आइ भार[14]। चली ना पछीं फिरको देख एकबार॥
निसंक वेगसों आपने घरकुँ आइ। हुई जमा-खातिर अपें होर दाइ॥

§३४. बाकर आगाह (१७४५-१८०५ ई०)

१. कवि

आगाह का नाम मुहम्मद बाकर था। इनके पू ंज अरबी सौदागर थे, जो व्यापार के सम्बन्ध से कारोमंडल (चोलमंडल) के समुद्र-तट पर बस गये। इस्लाम के आरंभ से ही जहाँ एक ओर ग़ाजी तलवार की सहायता से इस्लामी राज्य और धर्म का प्रसार करते थे, वहाँ मुस्लिम फकीर ज्ञान-भक्ति, अद्वैतवाद, संयम द्वारा इस्लाम धर्म में काफिरों को दीक्षित कर रहे थे। सौदागर (व्यापारी) भी व्यापार के साथ धर्म-विस्तार में हाथ बँटा रहे थे। मलाया, जावा, सुमात्रा में इस्लाम का प्रचार मुस्लिम व्यापारियों ने किया। यही काम आगाह के पूर्वजों ने कारोमंडल तट पर किया। पीछे इनके पूर्वज बीजापुर में आकर बस गये। १६८२ ई० में बीजापुर के पतन के बाद इनके पिता मुहम्मद मुर्त्तुज़ा वेल्लोर में आ गये, जहाँ १७४५ ई० (११५८ हि०) में आगाह का जन्म हुआ। इन्होंने विद्याध्ययन वेल्लोर और त्रिचिनापल्ली में किया और अरबी, फारसी, उर्दू में खासी विद्वत्ता प्राप्त की। अरबी और फारसी की इनकी कविताओं के दीवान मौजूद हैं। अरबी, फारसी और दक्खिनी मिलाकर कुल ३०३ ग्रंथ इन्होंने रचे। ६२ साल की उम्र में १८०५ ई० (१२२० हि०) में इनका देहान्त हुआ। इनकी कब्र मद्रास में है। मुंशी सदासुखलाल, पण्डित लल्लूलाल, मुंशी इंशाअल्ला और सदल मिश्र जिस समय अपनी रचनाएँ कर रहे थे, उसी समय आगाह सुदूर दक्षिण में लेखनी चला रहे थे। १५ साल की उम्र से कविता शुरू की। २६ वर्ष की उम्र में १७७१ ई० (११८४ हि०) से उन्होंने दक्खिनी में लिखना शुरू किया।

---

१. हर्ष, २. परेशान, ३. डालने, ४. मिट्टी, ५. हम लोग, ६. स्वामी, ७. उधार, ८. भयभीत, ९. इसके बाद, १०. प्रकार, ११. कारण, १२. अब, १३. निद्रापूर्ण, १४. बाहर।

२. कृतियाँ

दक्खिनी में इन्होंने १७ पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें 'हश्त-बहिश्त' (आ स्वर्ग) मुख्य है। नकी सत्रह पुस्तकें हैं—

. अक़ायदनामा
. तोहफतुन्निसा
. हश्त-बहिश्त (८ भाग)
. रियाजुल्जनाँ (मुहम्मद-परिवार) ३०९९ बैत
. महबूबुल्कुलुब (गौस पीर की जीवनी) ४०६३ बैत
. हाशिया मनदर्पन (मनदर्पनसार)
. तोहफ़ये-अहबाब
. मेराजनामा
. हिदायतनामा
१०. गुल्ज़ारे-इश्क
११. रूपसिंगार
१२. दीवान-आगाह
१३. रौज़तु-ल्-इस्लाम
१४. फ़रायद-दर-अक़ायद
१५. रियाजु-स्-सैर
१६. खम्सा मुत्बह्हरा
१७. फ़िर्कहाय-इस्लाम

'अक़ायदनामा' (सिद्धान्तिका) शायद आगाह की पहिली १५०० बैतों की दक्खिनी स्तक है, जिसमें आगाह ने लिखा है*—

कहा नैं मैं कभी दखिनीमें अशआर[१] । मुँजे है शेर कहनेसे बहुत आर[२]॥
वले[३] यह नज्म बोल्या बिज्ज़रूरत[४] । पड़े[५] ता उसको हर उम्मी[६] व औरत॥

आगाह की दक्खिनी में उपनाम बाक़र था†—

तु रख बाकर उपर नित प्यार अपना। इनायत कर उसे दीदार[७]॥

अरबी में उनका उपनाम आगाह बतलाया जाता है, किन्तु आगाह न अरबी भाषा का ब्द है, न गाफ (ग) के अभाव के कारण उसे अरबी में लिखा जा सकता है। अपनी फारसी विताओं में उन्होंने जरूर यही उपनाम रखा है—

'हश्त-बह्हिश्त' आगाह की सबसे बड़ी पुस्तक है, जिसमें प्रायः ८६५० बैत अर्धालियाँ) हैं। हश्त-बहिश्त वस्तुतः आठ ग्रंथों का संग्रह है, जिसका विषय है पैगम्बर हुम्मद का वृत्तान्त —

---

*त. उ. म., पृष्ठ ७७। १. पद्य, २. संकोच, ३. लेकिन, ४. आवश्यकता के कारण, . पढ़े, ६. अनपढ़।

†त. उ. म. पृष्ठ ८९, "पंद्रहवें साल से शेर के साथ उल्फत (प्रेम) रखता है, अगर्चे शेर म कहता है, इसकी वास्ते तखल्लुस (उपनाम) मुद्दत लग मुकर्रर नें किया था। जब ११८४-५ हि० (१७७०-७१ ई०) में बाज रसायल हश्त-बहिश्त के मंजम (पद्यबद्ध) किया,...बाकर ..तखल्लुस रखा।...११९४ हि० (१७८० ई०)...दीवान अरबी के समय तखल्लुस पना आगाह मुकर्रर किया। इस तखल्लुस को अशआर अरबी व फारसी में लाया।"

—यु० द० म० पृ० ४३६-३८।

७. दर्शन।

१. मनदीपक—मुहम्मद का प्रकाश।

२. मनहरन—मुहम्मद के लिए भविष्यद्वाणियाँ।

३. मनमोहन—मुहम्मद का जन्म।

४. जगमोहन—मुहम्मद के कर्म-स्वभाव, आठ वर्ष से मृत्यु तक की जीवनी।

५. आरामदिल—सुन्दर आचरण।

६. राहतजान—मुहम्मद के गुण।

७. मनदर्पन—मुहम्मद के चमत्कार।

८. मनजीवन—मुहम्मद-भक्त।

बाक़र ने 'हश्त-बहिश्त' के हर भाग पर गद्य में बड़ी भूमिकाएँ लिखीं, जो इन्शाअल्ला, लल्लूलाल के समय की दक्खिनी गद्य के अच्छे नमूने हैं, यद्यपि उनमें कवित्व लाने की कोशिश नहीं की गई है। इनके कुछ उदाहरण हैं* —

"छ रिसाले[१]. . .११८५ और ११८६ (१७७१-७२ ई०) में बने है। पीछे उसके बहुत ढील हुई। क्या वास्ते कि यक रफ़ीक़[२]. . .कि इन रिसालोंका तालिब[३]. . .था, सो रहलत[४] कया।. . .आखिर इब्तिदा[५] सन एक हजार और दो सौ और छै (१७९१ ई०) में रिसाला 'मनदर्पन' और रिसाला 'मनजीवन' बनाने का इत्तिफ़ाक़[६] हुआ।. . .इन आठ रसायल[७] में तख-मीनन[८] आठ हजार और छे सौ और पचास बैत हैं। सुखियों[९] के साथ नौ हचार बैत होंगे।. . . इन सब रिसालों में शायरी नैं किया हूँ, बल्कि साफ-व-सादा[१०] कहा हूँ और उर्दूकी भाका में नहीं कहा, किस वास्ते कि रहनेवाले यहाँ के उस भाका से वाक़िफ़[११] नहीं हैं। ऐ भाई, यह रिसाले दखिनी ज़बान में हैं करकर[१२] सहल और सरसरी न जाने, क्या वास्ते कि बड़े मातबर[१३] कुतुब[१४] से तहकीक करके लिखा हूँ।"

१. मनदीपक—"रिसाला अव्वल[१५] का नाम मनदीपक है। इस रिसाला में हज़रत मुहम्मद. . .के नूर-मुकद्दस[१६] का जिक्र है†।. . .

२. मनमोहन—"इस रिसालेमें हज़रत. . .के हालात[१७] का बयान है, यानी[१८] जो मोजिज़ात[१९] के मुद्दते-हमल[२०] और बलादत[२१] और दूध छुड़ाई और खुर्दसाली[२२] में हज़रत. . . से जाहिर[२३] हुये, उस हद[२४] तक कि हज़रत. . .की आठ बरसकी उम्र हुई है ††।". . .

मनदर्पन से कवि के सम्बन्ध में निम्न सूचनाएँ मिलती हैं ††† —

---

*त. उ. म., पृष्ठ ७९-८६।

१. पुस्तकें, २. मित्र, ३. इच्छुक, ४. मौत, ५. आरंभ, ६. संयोग, ७. पुस्तकें, ८. प्रायः, ९. शीर्षक, १०. स्पष्ट, सरल, ११. परिचित, १२. इति, १३. विश्वसनीय, १४. ग्रंथ, १५. प्रथम, १६. पवित्र आकाश।

† वही, पृष्ठ ८०।

१७. अवस्थाओं, १८. अर्थात्, १९. चमत्कार, २०. गर्भकाल, २१. जन्म, २२. छुटपन, शैशव, २३. प्रकट, २४. सीमा।

†† वही, पृष्ठ ८२।

††† त. उ. म., पृष्ठ ८४।

थे बारा सो के उपर छे बरस जब[1] । हुआ यह नुस्खये[2]-दिलकश[3] मुरत्तब[4] ।।
मैं हूँ किस हालमें तूँ जानता है । मैं हूँ किस जंजालमें पहिचानता है ।।
हैं मेरी मुश्किलाँ सब तुजकूँ मालूम । है मेरी कुल्फ़ताँ[5] सब तुजकूँ मफ़हूम[6] ।।
हुआ हूँ सब तरफसे मैं उदासी । न कर ऐसे निरासे कुँ निरासी ।।
हुआ हूँ ज़ोफ़[7] व बीमारी से हैराँ । तबीबाँ[8] पास नैं है मेरे दरमाँ[9] ।।
हुई आज़िज[10] दवा मेरी दुआ भी । हुई आजिज़ मेरी ताक़त ग़िज़ा[11] भी ।।
मेरा खातिर[12] परागंदा[13] हुआ है । निपट दुनियासेती गंदा हुआ है ।।
ज़ईफ़ी[14] से हुआ हूँ मैं ज़मींगीर[15] । नहीं कुछ सूझती है मुजकूँ तदबीर ।।
मुदाम[16] इस फिक्र[17] में ह यह कमीना[18] । कि चलता सिरसे जावे ता-मदीना[19] ।।
हुँ रहनेसों यहाँ के भौत बेज़ार[20] । बहुत इस बातसे पाता हूँ आज़ार[21] ।।
हुआ है कुफ्र[22] का याँ गर्म बाजार[23] । मुसल्मानाँ उपर है सख्त दुश्वार[24] ।।
समाँ[25] याँ मुश्किल उनपर आ खड़ा है । पहाड़ उनके सिर ऊपर आ पड़ा है ।।
किधर जावें कि यह लश्कर हैं तेरे । अगर हैं नेक-हो-बद चाकर हैं तेरे ।।
अगर्चे हैं बद्याँ[26] इनके घनेरे । वले[27] बेशुबहा[28] कहलाते हैं तेरे ।।
मेरी औलाद[29] कूँ सरसब्ज[30] कर तूँ । रख अपने दीन[31] पर साबित[32] उनोकूँ ।।
दे उनको खूबियाँ[33] दोनों जहाँ[34] की । दे उनकूँ न्यामताँ सिर[35] ओ अयाँ की ।।
मेरे भायाँ के तें बा यकसर औलाद[36] । हमेशा दीन होर दुनियाँमें रख शाद[37] ।।

'हश्त-बहिश्त' को समाप्त करते हुए मनजीवन में लिखते हैं * —

तमत[38] बिल्-खेर[39]. रसायल 'हश्त-बहिश्त'. . . मिन्-तस्नीफ़[40] मौलवी मुहम्मद बाकर आगाह शाफ़ई[41] बीजापुरी एलोरी. . . बतारीख[42] दोयम शहर रबीउ-स्-सानी रोज़ दोशंबा सन् १२०९ हि० † ।"

---

१. १२०६ हिजरी, (१७९१ ई०), २. ग्रंथ, निबन्ध, ३. मनोहर, ४. निर्मित, ५. कष्ट ६. मालूम ७. निर्बल, ८. चिकित्सक, ९. चिकित्सा करनेवाले, १०. निराश, बेकार, ११. भोजन, १२. दिल, १३. परेशान, १४. निर्बलता, बुढ़ापा, १५. धरती पकड़ना, १६. सदा, १७. चिन्ता, १८. अधम, १९. मदीना, अरब तक, २०. दुःख, २१. दुःख, २२. अधर्म, २३. बहुप्रचार, २४. कठिन, २५. स्थिति, २६. बुराइयाँ, २७. किन्तु, २८. निस्सन्देह, २९. सन्तान, ३०. हरा-भरा, समृद्ध, ३१. धर्म, ३२. दृढ़, ३३. गुण, २४. उभयलोक, ३५. गुप्त, ३६. अकेली संतान, ३७. प्रसन्न, सुखी ।

*वही, पृष्ठ ८६ । ३८. समाप्ति, ३९. निर्विघ्न, ४०. अष्ट स्वर्ग की पुस्तकें, कृति, ४१. एक सुन्नी सम्प्रदाय, ४२. तारीख, अक्तूबर, १७९४ ई०, दिन रविवार ।

†'हश्त-बहिश्त' सन् १२६२ हि० (१८४५ ई०) में राजकिशन प्रेस में तथा सन् १२७० हि० (१८५३ ई०) में अज़ीजिया प्रेस (हैदराबाद) में छप चुका है ।

३. कवित्व

बाकर ने बहुत-सी पुस्तकें लिखी हैं, उनकी कृतियों में कवित्व का अभाव है, इसे वह स्वयं स्वीकार करते थे। किन्तु, दक्खिनी कविता के अन्तिम कवि होने के कारण उनका महत्त्व भी है। हश्त-बहिश्त पैगम्बर मुहम्मद पर लिखी गई है, और इसके लिखने में लेखक ने इस्लाम के बहुत-से प्रामाणिक ग्रंथों से सहायता ली है। पैगम्बर मुहम्मद के जो चित्र बाकर ने खींचे हैं, उनमें से कुछ के नमूने देखिए *--

(१) प्रथम अनुयायी--

अवल रोज[१] ख़दीजा खातूँ[२]। लाई ईमान[३] मुकद्दम[४] सबसूँ॥
भी[५] उसी रोज वल बवक्ते[६] असर[७]। लाये ईमान हैदर[८] सफ़दर[९]॥
बाद[१०] ज़ैद-ो-अबूज़र वो बलाल। लाये तरतीब[११] से ईमान फ़िल्हाल[१२]॥

(२) मुहम्मद और युद्ध--

इस्लाम के पैगम्बर स्वयं शान्तिप्रिय थे, यद्यपि वह चरम अहिंसा के अनुयायी नहीं थे†--

और उसी साल हुआ फ़र्ज़[१३] जहाद[१४]। उस शहंशाहके ऊपर रख तू याद॥
उसके गज़वात[१५] थे सब सत्तावीस। कि अथा उनमें शह[१६] नफ़से-नफ़ीस[१७]॥
हुई दस जंगमें ऐ यार लड़ाई। बाकी जंगोंमें नही हुई ऐ भाई॥
जो लडायाँ में गया नहीं वह रईस[१८]। हुये दस सालमें बाके[१९] सब॥

(३) मुहम्मद की शरीराकृति--

मियाने[२०] अथे शाह के सिर के बाल। ख़म[२१]-ो-सीधे पन[२२] बीच ऐ जग-उजाल॥
दराज़ी[२३] में पौंचे थे काँदे कने[२४]। यों आय है अकसर[२५] हदीसाँ मने[२६]॥
कभी सिर मुँड़ाया नैं ओ नामदार[२७]। मगर[२८] हजके अय्याम[२९] में एक बार॥
दिया बाँट असहाब[३०] कूँ सबके बाल। रखे सब उसे अपने जीके मिसाल[३१]॥
ओ सरबर कें सीस भर बाल थे। दिलाँ सैद[३२] करने के जाल थे॥
निहायत[३३] थे खुश्बू[३४] ओ मूये-सियाह[३५]। है कहना उसे मुश्क-ो-अंबर[३६] गुनाह[३७]॥
भी है यक खायत[३८] में इस धात[३९] से। कि धोता था सिर पे के पात से॥
भी सुन्नत[४०] अहै बाल रखना तमाम[४१]। निगाह[४२] उसकी करना वह सुब्ह-ो-शाम[४३]॥

---

*यु. द. म., पृष्ठ ४३८।

१. पैगम्बर होने के प्रथम दिन, २. खदीजा मुहम्मद की प्रथम पत्नी, ३. धर्म-स्वीकार, ४. प्रथम, ५. और, ६. समय, ७. अपराह्न, ८. अली, ९. पंक्ति-भेदक, १०. अनन्तर, ११. क्रमशः, १२. तत्काल।

†वही, पृष्ठ ४३९। १३. कर्त्तव्य, १४. धर्मयुद्ध, १५. लड़ाइयाँ, १६. मुहम्मद, १७. स्वयं, १८. सरदार, १९. घटित, २०. मझोले, २१. बंकिम, २२. किन्तु, २३. लंबाई, २४. कंधे के पास, २५. प्रायः, २६. स्मृतियों में, २७. कीर्तिशाली, २८. किन्तु, २९. समय, ३०. मित्र-मंडली, ३१. प्राणसम, ३२. शिकार, ३३. अत्यन्त, ३४. सुगंधित, ३५. काले बाल, ३६. कस्तूरी और अंबर, ३७. पाप, ३८. परम्परा, ३९. भाँति, ४० धर्मानुगत, ४१. सारा, ४२. दृष्टि, ४३. प्रातः-सायं।

(४) मुहम्मद के उदार गुण—

सखावत[१] में कोइ उसके सानी[२] नहीं । न था जूद कूँ उसके कडका[३] कहीं ।।
सवासो दिया ऊँट रोज़े-हनी[४] । गरीबाँकुँ ओ खल्क का नूर-ऐन[५] ।।
बकौले-हवाज़न[६] दिया छे हज़ार । दिरम[७] ओ शहंशाह् आली तबार ।।
नवे यक[८] मुसल्मानकूँ ओ बे-बदल[९] । दिया यक जँगल भरकू बकरी सकल ।।
कहा "क़ौम[१०] कूँ जाको ऐ गुमरहाँ[११] । मुहम्मद उपर लाओ ईमान जान ।।
सखावत[१२] कुँ उसकी नहीं इन्तिहा[१३] । यो ज़ाहिर सखावत है मुद्दआ[१४] ।।
मैं रहमत[१५] का उसकी कश क्या बयान । सराया[१६] है उसकूँ खुदा और कुरान. . . ।।
भी जाता अथा शह् मरीज़ाँ[१७] के घर । भी होता था हाज़िर[१८] जनाज़े[१९] उपर ।।
बुलाता अगर कोइ ज्याफ़त[२०] लिये । तो जाता शहंशाह घर उसके चल ।।
कोइ असहाब[२१] सों गर न आता नज़र[२२] । बहुत पूछता था उसे जिद्द[२३] कर ।।
मुसाफ़िर कुँ पौंचाने जाता था ओ । कोई आया तो लेता अथा आगे हो ।।
मन[२४] ऐ भाइ, स`र[२५] कूँ शाम–सेहर[२६] । तक़ैयद[२७] न था कोइ खाने उपर ।।
तकल्लुफ़[२८] में उसके न था गर्मजोश[२९] । जो पाता अथा उसकुँ करता था नोश[३०] ।।
जो खाते थे अहलेमदीना[३१] सकल । वही नोश करता अथा शह् नवल[३२] ।।

(५) मुहम्मद का पहनावा*—

अथा[३३] पैरहन[३४] शहकने[३५] दो सतर । भी कपड़े सफ़ेद ए गरामी गुहर[३६] ।।
यही कहता था अकसर[३७] वह गुल-उमेद[३८] । "करो लाज़िम अपने पो कपड़े सफ़ेद ।।
है पाक़ीज़ा[३९] वो खूब तर[४०] वह लिबास । पैनो तुम शामो-सेहर[४१] वह लिबास[४२] ।।
पिनाओ उसे अपने अह्या[४३] के तैं । भी तकफ़ीं[४४] करो उसमें मूये के तैं ।।

---

१. दानशीलता, २. समान, द्वितीय, ३. कभी, ४. एक दिन, ५. दुनिया की सच्ची आँख, ६. हवाज़िन के कथनानुसार, ७. यूनानी सिक्का (ड्राख्म, द्रम्य, द.म), ८. उच्च कुलीन, ९. अनुपम, अनमोल, १०. जाति, ११. पथभ्रष्टों, १२. दानशीलता, १३. अन्त, १४. उद्देश्य, प्रयोजन, १५. दया, १६. सराहा, १७. रोगियों, १८. उपस्थित, १९. अन्त्येष्टि, २०. भोज, २१. मित्र-मंडली, २२. दृष्टि, २३. आग्रह, २४. ऐ मेरे भाई, २५. सर्दार, मुहम्मद, २६. प्रातः-सायं, २७. बंधन, २८. बनावट, २९. बहुमान, ३०. भोजन, ३१. मदीनावाले, ३२. राजा।

*वही, पृष्ठ ४४१। ३३. था (हुता), ३४. परिधान, ३५. शाह के पास, ३६. मोती, ३७. प्रायः, ३८. आशा-पुष्प, ३९. उचित, ४०. अच्छा-अच्छा, ४१. सायं-प्रातः, ४२. पोशाक, ४३. जीवन, ४४. मृतक-संस्कार।

§ ३५. तुराब दखनी (१८४० ई०)

'मसनवी तुराब दखनी', 'रिसाला बारा बहार' आदि काव्य-ग्रंथों को तुराब ने लिखा। अब भी हैदराबाद में इनके गीतों को गाते फकीर भीख माँगते हैं। इनकी कविताओं में लोकगीत का रस आता है। १८४० ई० में लिखी 'बाराबहार' के नमूने हैं—

सुना हूँ गुलशनाबाद[1] एक नगर था।
वहाँ एक महजबीं गुलरू[2] का घर था।।
निहायत हुस्न[3] में औतार[4] थी ओ।
कुल पंचार में खूँखार थी ओ।।
अथी यों पाकदामन पारसा नार।
नमाज़ाँ पंच वक्ताँ होर ज़िक्र चार।।
कभी नागा नहीं करती थी अक्सर।
चतुर सब औरताँ में थी विचित्तर।।
खसम राज़ी रज़ामन्द सब क़बीला।
न जाने औरताँ का मक्र[5] व हीला।।
अछै हिलमिल हमेशा ओ खसम सूँ।
के ज्यूँ है आशना[6] साबित-क़दम[7] सूँ।।
कभी कोई नई हुआ आजुर्दा-खातिर[8]।
अथी खुश-खल्क ओ दिलबर बज़ाहर[9]।।
जहाँ आवाज़ ना-महरम[10] का आवे।
वो तोबा कर वहाँ सूँ अटली जावे।।
उँचा घूँघट न सारा मुँह को खोले।
न बाताँ शोखमिल शोखियाँ सूँ बोले।।
वलेकिन सरोक़द नाज़ुक बदन थी।
सकल खूबाँ[11] मने जादू-नयन थी।।
कमान-अब्रू निगह खंजर पलक तीर।
अदा सैफ़े[12] दुधारा जुल्फ़ ज़ंजीर।।
सरोपा नाज़नीं दिलदार दिलबर।
वला थी, जुल्म थी, ज़ालिम, सितमगर।।
कहाँ लग उस परी-रू[13] को मैं सराऊँ।
दिले आशिक सिरा कर क्यों जलाऊँ।।

---

१. फूलनगर, २. चन्द्रमुखी, गुलाबमुखी, ३. सौन्दर्य, ४. अनुपम, ५. छल, ६. जानकार, ७. दृढ़ पग, ८. व्याकुलचित्त, ९. प्रकट, १०. देखने के अयोग्य, ११. सुन्दरियाँ, १२. दुधारी तलवार, १३. अप्सरामुखी।

गया था नौकरी को उसका ख़ाविन्द।
अकेली घर में थी दिलदार दिलबन्द॥
हुये थे दिन जो कोइ शातिर[1] न आया।
खबर भी खैरियत की कोई न लाया॥
पर उस नगर में ओ गुलबदन नार।
कहीं मारे गया या ओ बीमार॥
कहे फिर दाइ को ओ यों बुला कर।
"बुला मुल्ला को दाई जल्द जाकर॥
भौत दिन सों नहीं आई ख़बर है।
न जाने क्या सबब उनके उपर है॥
ओ अब लग नौकरी किसकी किये नैं।
जो घर की कुछ खबर हरगिज लिये नैं॥
या कईं लश्कर में जा सँपड़े[2] हैं रन में।
या कईं अटके हैं शौक़े-रागो-रँग में॥
या कोई सौकन ने दिल उनका बहलाई।
या किसके जा हुये हैं घर-जँवाई॥
भौत जादूगराँ राँडाँ वहाँ हैं।
उनों जाकर रहे चाकर वहाँ हैं॥
मेरे बिन यक घड़ी रहता नहीं था।
मेरे बिन बात कईं करता नहीं था॥
अता भेजा नई झूटी किताबत।
किया है जाके शायद वाँ की औरत॥
किया तो खूब है जीता रहे ओ।
खबर आई तो उसकी बस है देखो॥"
सुनी यो बात सो दाई चली भार[3]।
बेचारी नार कूँ करने गिरफ्तार॥
जहाँ पड़ते थे लड़के भौत से मिल।
वहाँ बैठा था मुल्ला एक फ़ाज़िल[4]॥
ले तसबीह हात में करता ज़िकर[5] था।
लगन के दर्द सूँ ओ बेख़बर था॥
रखे शमला चीरा बाँधे मदूर।
करे सानी शरीअत काम अक्सर॥
सुनावे सब कतें मसला - मसाअल।

---

१. चालाक, २. पहुँचे, ३. बाहर, ४. विद्वान्, ५. सुमिरन।

करी तसलीम जाकर उसको दाई।
हक़ीक़त बोल ख़त लिखने बुलाई॥
सुना सो दाई सूं मुल्ला ने यो बात।
चला लेकर क़लम दावात संगात॥
ख़बर बीबी को दे आया है मुल्ला।
कह बीबी "उसे घर में बुला ल्या"॥
उनें बुत घर[1] में गोशा[2] कर बुलाई।
बिछौना करके परदे कन बिठाई॥
अपी बैठी सुँदर परदे के अन्दर।
बुला मुल्ला कूँ अपने घर के भीतर॥
बिठा परदे कने मुल्ला बिचारा।
मुनो वारी लगन का यक नज़ारा॥
गँवाया पारसा की पारसाई।
किया जुहद[3]-वो-रिया[4] की जग-हँसाई॥
पूछा ले हाथ में मुल्ला वो खामा[5]।
"हक़ीक़त क्या लिखूँ सो वो नामा[6]॥"
देखा तो ओ परी-रू झाँकती थी।
ग़रूरे हुस्न में ज्यों मदमती थी॥
हुये एक बार जो चक[7]-चार दोनों।
रहे हैरत सूं हो लाचार दोनों॥
यकायक देख दीवाना हुआ तब।
लगा कहने को "बोलो क्या लिखूं अब"?
कहे ओ नाज़नीं सब अपना अहवाल।
न समजी ओ हुआ सो देख बेहाल॥
हक़ीक़त सब सुना बोली सो सुन्दर।
कहा........भी क्या लिखूँ गर॥
कहे भी ओ परी सो करके तकरार।
"देखो फिर क्या लिखूँ" बोला गिरिफ्तार॥
कही दो चार बार उस कनें तब।
समज के दिल मने दीवाना है तब॥
देखी तो कुछ भी पड़ता है न लिखता।
चुपी चुप "क्या लिखूँ" कह कर बिलखता॥

---

१. मूर्त्ति-गृह, २. पर्दा, ३. सदाचार, ४. ढोंग, ५. कलम, ६. पत्र, ७. चक्षु।

क़लम यक हात और यक हात क़िरतास[१]।
बैठा हैरतज़दा[२] परदे के है पास॥
कही तब दाई कूं गुस्से में आकर।
"तू दीवाने कू क्यों लाई बुला कर॥
गया था काँ तेरा तब होश दाई।
जो ऐसे मस्त दीवाने कूँ लाई"॥
कही तब दाई "मैं लाई थी सयाना।
इता दिसता हुआ उजड़ा दिवाना॥
भला-चंगा सो मुल्ला ओ दिस्या तब।
बिसर सब होश दीवाना हुआ अब॥
लगा अब के अभी मैं उसको शैतान।
हुआ यक बारगी बदबख़्त मस्तान॥
हमारे शह्र में था ओ ई च नामी।
भौत आलम तो करता है गुलामी॥
मुआ सब फ़ाज़िलों में ओ बड़ा है।
न जानो क्या सबब उस पर खड़ा है॥
है सारे मुल्क में उसका पुकारा।
जो करता ख़ूब है सदक़ा[३]-उतारा॥
जहाँ लग भौत शैतानाँ ख़बीसाँ[४]।
उतरते उसके तावीज़ाँ सों यक साँ॥
मुए तलपट की सब सुन कर भलाई।
मुँडीकाटे को मैं लिखने बुलाई॥
मुए के जिव[५] के गुन मैं जानती क्या?
करेगा यो किकर मैं पछानती क्या?"
कहा तब दाई को "दे उसको जाने।
भौत आलम में हैं स्याने - दिवाने"॥
कही तब दाई "मियाँ तुम भार जाओ।
नको चुप क्या लिखूँ कर गुल मचाओ॥
बुला लेउँ तुम तो तब नईं थे दिवाने।
भले चंगे दिसे तब मुजको स्याने॥
यकायक क्या हुआ मैं तुम पो वारी।
बिसर कर अक़ल क्यों गइ है तुमारी॥
बड़े फ़ाज़िल तुमें मुल्ला कला[६] कर।

---

१. कागज, २. चकित, ३. नौछावर, ४. भूत-प्रेत, ५. दिल, ६. कहला।

भई किस अछर का पकड़ा तुमको छर।।
भला अब जाओ अपने घर को प्यारे।
हुआ क्या तुमको मैं वारी तुमारे''।।
बिसर शमला उठे कुमला के मुल्ला।
रहा नईं याद तसबी[1] औ मुसल्ला[2]।।
क़लम - दावात सुर उसी जागे सारा।
उठा सो 'क्या लिखूँ' कर हाँक मारा।।
चल्या ओ 'क्या लिखूँ' करता बिचारा।
लगा जब इश्क़ का सैफ़े[3] दुधारा।।
पड्या आलम में उसका 'क्या लिखूँ' नाम ?
रहा होकर खाक गोई गुलफ़ाम।।
नहीं हरगिज़ कहीं खाता था खाना।
था फिरता 'क्या लिखूँ' कहता दिवाना।।
सुने यो बात जो शागिर्द सारे।
नँगे पावाँ च दौड़े सब बिचारे।।
देखे उस्ताद कते कर क़दम बोस।
लगे मलने को सारे दस्ते अफ़सोस।।
के ऐ साहेब-करम, फ़य्याज़े - आलम्।
येता किस पास जाना दर्स को हम।।
तुमे काँ गये थे खत लिखने की खातिर।
यकायक क्या गिरा है तुमने पर।।
—मस्नवी तुराब दखनी

१. जप-माला, २. पूजासन, ३. दुधारी तलवार।

शब्दानुक्रमणिका

ख

झ

ट

ठ